आगम-साहित्य रत्न-मालाया श्चतुर्थं रत्नम्

स्थविर-पुंगव श्री विसाहगणि महत्तर-प्रणीतं, सभाष्यं

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर-विरचितया

विशेष-चूर्ण्या समलंकृतम्

द्वितीयो विभागः

उद्देशकाः १-९

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द्र जी महाराज

मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"

आगम-प्रतिष्ठान

सन्मति-ज्ञान पीठ आगरा

आत्म-निवेदन

मानव-मन में चिरकाल से सकलित सकल्पों की सिद्धि, मानव के तदनुरूप सत्सा
साधन-परिज्ञान एव अथक परिश्रम से होती है। साहित्य साधना का यही मूल मत्र मेरे जी
को सदा प्रगति की ओर बढ़ाता रहा है।

श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज की विमल यश-रश्मिया
मानस को चिरकाल से आलोकित कर रही थी, पर उनके ब्यावर-वर्षावास से पूर्व जब
सुना कि उपाध्याय श्री जी मरुधरधरा को पावन करने के लिए पधार गए हैं, तब मेरा ह
हर्ष-विभोर हो गया।

उनके महामहिम व्यक्तित्व का स्पष्ट और विशद परिचय—मुझे "मधुकर" जी महा
ने कराया, क्योकि वे ब्यावर-वर्षावास में उपाध्याय श्री के ज्ञानामृत का निरन्तर पान क
रहे थे।

अजमेर वर्षावास से पूर्व उपाध्याय कवि श्री जी के दर्शनो का पुण्यमय लाभ
पुष्कर मे मिला। वह दिवस मेरे जीवन का पवित्रतम दिवस था। पुष्कर में अल्प सम
संपर्क से ही मुझे कवि श्री जी के दार्शनिक मस्तिष्क का, सरस कवि मानस का और वि
व्यक्तित्व का साक्षात्कार हो गया। फिर तो सादडी सम्मेलन में, सोजत सम्मेलन मे, जोध
के संयुक्त वर्षावास में और भीनासर के सम्मेलन में, कवि श्री जी के उर्वर एवं ज्योति
मस्तिष्क ने जो विचार क्रान्ति पैदा की, उससे आज कौन अपरिचित है? कवि श्री जी
विराट मानस में सबको सहज स्नेह से आत्म-जन बनाने की अपार क्षमता है।

ज्ञान और विचार के इस अधि देवता ने एक ओर अपने अगाध ज्ञान से समाज
पुरातन मानस को प्रभावित किया, तो दूसरी ओर समाज के उदीयमान अकुरो को भी अ
ज्ञान के जल से सहज स्नेह के साथ सींचा है। इसका अर्थ-यह है, कि कवि श्री जी पुराने अ
नये युग की सन्धि हैं, बेजोड़ कड़ी हैं। उनके जीवन की अमर देन है—समाज सघटन।

मैं अपने साहित्यक जीवन के प्रारम्भ से ही आगम-साहित्य के सम्पादन के लि
उत्साहित रहा हूँ। आगम साहित्य की सेवा मेरे जीवन की विशेष अभिलाषा रही
परन्तु मैं युगानुरूप अपनी एक नयी पद्धति से ही आगम साहित्य की सेवा करना चाहता थ
अपनी इस साध को पूरा करने के लिए मुझे अतीत में बहुत कुछ श्रम करना पडा है। मैं आग
का विषय-क्रम से वर्गीकरण करने का कार्य करीब ७-८ वर्ष पूर्व से कर रहा हूँ,
सुसम्बद्ध करने के लिए मुझे किसी बहुश्रुत के सहयोग की अपेक्षा थी।

कविश्री जी के जयपुर वर्षावास में इसी शुभ संकल्प को लेकर मैं उनकी पवित्र सेवा में रह चुका हूँ। परन्तु उनका स्वास्थ्य ठीक न रहने से मैं पूरा लाभ नही ले सका। मेरे मन की चिर साध ज्यों की त्यों बनी रही। परन्तु मैं निराश और हताश नही हुआ, क्योकि "आशा मानव की परिभाषा" यह मेरे जीवन का संबल रहा है। अस्तु अपने संकलित आगम साहित्य को अन्तिम मूर्त रूप देने की प्रवल भावना से ही मैं हरमाडा से आगरा पुनः कवि श्री जी की पुनीत सेवा में उपस्थित हुआ।

आगमो के वर्गीकरण का कार्य साधारण नही है, अपितु यह एक चिरसमय-साध्य महान् कार्य है, परन्तु कवि श्री जी के दिशा-दर्शन से काफी सफलता मिली है, उसका एक भाग लग-भग तैयार हो चुका है, और वह देर-सवेर में प्रकाशित भी होगा।

निशीथ भाष्य एवं निशीथ चूर्णी का सम्पादन जिसकी मुझे स्वप्न में भी कल्पना नही थी, वह भी कवि श्री जी की प्रेरणा, दिशा दर्शन और उत्साह का ही शुभ परिणाम है। अन्यथा यह महान् कार्य कहाँ और मेरी अल्प शक्ति कहाँ ?

आगरा प्रस्थान से पूर्व मेरे सामने अनेक विकट समस्याएँ थी, जिसमें श्रद्धेय गुरुदेव फतेहचन्द्र जी म० की अस्वस्थता मुख्य थी। परन्तु गुरुदेव ने मुझे आगरा जाने के लिए केवल प्रेरणा ही नही दी, बल्कि हृदय के सहज स्नेह से शुभाशीश भी प्रदान की। उनके शुभाशीर्वाद के बिना मेरा आगरा आना संकल्प-मात्र स्वप्न ही बना रहता। अत. मै अपने मानस की सम्पूर्ण भक्ति के साथ गुरुदेव का अभिनन्दन करता हूँ। साथ ही गुरुदेव की सेवा का भार मुमुक्षु पं० मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज ने स्वीकार करके महान् ज्ञान-यज्ञ के लिए जो सेवाएँ अर्पित की हैं इसके लिए भी मै उनका हृदय से आभारी हूँ।

श्रद्धेय अमोलकचन्द्र जी महाराज की प्रेरणा, उत्साह और सहयोग भी मेरे जीवन में चिरस्मणीय बना रहेगा। निशीथ-चूर्णि के प्रस्तुत प्रकाशन में सब से बलवती प्रेरणा आपकी ही रही है। मैं अपने निकट सहयोगी मुनि श्री चाँदमल जी की सेवा को भी नही भूल सकता उनकी सक्रिय सेवा भी मेरे कार्य मे एक विशेष स्मरणीय रहेगी।

दिनांक
श्री पार्श्वजयंती
१६-१२ सन् १६५७
लोहामंडी, आगरा।

मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

किस के कर-कमलों में ?

जिन का स्नेह-सिक्त वरद - हस्त,
मेरे सिर पर सदा से रहा है।
जिन का वात्सल्य मेरी सयम यात्रा का,
सबल सवल और सुखद पाथेय रहा है।

जिन का मनो लोक गगन-सा विशाल,
विराट और शारदी प्रभा से भी शुभ्र है।
जिन का हृदय पर-वेदना में कुसुमादपि कोमल,
और अपनी सयम साधना में वज्रादपि कठोर है।

जिन का तप. पूत जीवन पवित्र है,
जिनका आचार निर्मल एव शुद्ध है।
जिन का विचार उच्चतर, और
वाणी मधुर, सरस एव स्निग्ध है।

अपने उन परम-पवित्र,
परम-गुरु, परम-श्रद्धेय।
श्री फतेहचन्द जी म० को,
सभक्ति सविनय समर्पित।

—मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

प्रकाशकीय

निशीथ भाष्य तथा चूर्णि का यह दूसरा खण्ड है। प्रथम खण्ड में केवल पीठिका तक का अंश है, अत वह आकार मे कुछ छोटा रह गया है। किन्तु प्रस्तुत खण्ड प्रथम उद्देशक से लेकर नवम उद्देशक तक है, अतः पीठिका की अपेक्षा काफी बड़ा बन गया है।

हमे आशा नही थी कि सम्पादन तथा प्रकाशन का कार्य इतनी तीव्र गति से चल सकेगा। परन्तु सौभाग्य से इस दिशा में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है, जिसके फलस्वरूप यह दूसरा खण्ड शीघ्र ही पाठकों की सेवा मे उपस्थित किया जा रहा है।

अनेक स्थानो से इस महान् ग्रन्थ की माँग-पर-माँग आ रही हैं। बहुत शीघ्र प्रकाशित करने के लिए प्रेरणा भी कुछ कम नही मिल रही है। हम स्वयं भी शीघ्रता हैं। किन्तु यह एक अतीव दुरूह एवं जटिल साहित्यिक कार्य है। अतः इस क्षेत्र मे शीघ्रता से नही किन्तु धीरता से चलने की आवश्यकता है। फिर भी हम यथासाध्य शीघ्रता में के लिए प्रयत्न-शील है,। आशा है, अगले खण्ड भी यथा शीघ्र ही पाठकों की सेवा में उपस्थित किए जा सकेंगे।

विजयसिंह दूगड़
मत्री—सन्मति ज्ञान-प.ठ आगरा

विषयानुक्रम

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

चतुर्थ उद्देशक

पंचम उद्देशक

षष्ठ उद्देशक

सप्तम उद्देशक

अष्टम उद्देशक

नवम उद्देशक

अशुद्धि-शोधन—

प्रस्तुत भाग के पृष्ठ २११ पर सूत्र दशवाँ मुद्रण मे छूट गया है, वह इस प्रकार है :—

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिचा सज्झायं पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥ सू० १० ॥

निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवरश्रीजिनदासमहत्तरविरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

द्वितीयो विभागः

उद्देशकाः १-६

ण हु होति सोयितव्वो, जो कालगतो दढो चरित्तम्मि ।
सो होइ सोयितव्वो, जो संजम-दुब्बलो विहरे ॥१७१७॥

लद्धूण माणुसत्तं, संजम-चरणं च दुल्लभं जीवा ॥
आणाए पमाएत्ता, दोग्गति-भय-वड्ढगा होंति ॥१७१८॥

—भाष्यकार.

अर्हम्

नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

आचार्य प्रवर श्री विसाहगणी-विनिर्मितं, सभाष्यम्

आचार्य श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया
विशेष चूर्ण्या समलंकृतम्

प्रथम उद्देशकः

[1]भणिओ णामणिप्फण्णो णिक्खेवो –

इदाणिं सुत्तालावगणिप्फण्णो णिक्खेवो अवसरपत्तो वि सो ण णिक्खिप्पति।

कम्हा ? लाघवत्थं।

अत्थि इतो ततियं अणुओगदारं अणुगमो त्ति।

तहिं णिक्खित्ते इह णिक्खित्तं, इह णिक्खित्ते तहिं णिक्खित्तं, तम्हा तहिं चेव णिक्खिविस्सामि। तं च पत्तं ततियमणुओगद्दारं अणुगमोत्ति। सो य अणुगमो दुविहो – सुत्ताणुगमो णिज्जुत्तिअणुगमो य। सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं अक्खलियादि गुणोवेयं, णिज्जुत्ति अणुगमे तिविहो, तं जहा – णिक्खेव-णिज्जुत्ती उवोग्घाय-णिज्जुत्ती सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती य। णिक्खेव-णिज्जुत्ती आदितो आरब्भ-जाव-सुत्तालावगणिप्फण्णो णिक्खेवो एत्थंतरा जे च णामाति-णिक्खेवा कता ते सव्वे णिक्खेव-णिज्जुत्तीए, जे य वक्खमाणा। गता णिक्खेवणिज्जुत्ती।

---

१ पीठिकायामिति।

इदाणिं उवोग्घायणिज्जुत्ती –

सा जहा – सामाइयज्झयणे इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगता –

गाहाओ—उद्देसे १ णिद्देसे २ अ, निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे य ६ ।

कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९, नये १० समोआरणा ११ ऽणुमए १२ ।।१।।

किं १३ कतिविहं १४ कस्स १५, कहिं १६ केसु १७ कहं १८ किच्चिरं १९ हवइ काल ।

कइ २० संतर २१ मविरहियं २२, भवा २३ गरिस २४ फासण २५ निरुत्ति २६ ।।२।।

यथासभवमिहाप्यनुगन्त या ।

इदाणिं सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती – सुत्त फुसतीति सुत्तफासिया । सा पुण सुत्ते उच्चारिए भवति, अणुच्चारिए किं फुसइ, तम्हा सुत्ताणुगमो जो य सण्णासितो, सुत्तालावगो ठावितो, सुत्तफासिया-णिज्जुत्ती य तिण्णि वि समगं वुच्चति ।

तत्थ सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं अखलिय अमिलिएत्यादि –

संहिता य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो ।
चालणा य पसिद्धी य, छव्विहं विद्धि लक्खण ।।१।।

तत्थ सुत्ताणुगमे संहितासूत्रम् –

जे भिक्खू हत्थकम्मं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ ।।सू०।।१।।

इदाणिं सुत्तालावगो भणणति – "जे" त्ति पदं, "भिक्खु" पय, "हत्थ" पदं, "कम्मं" ति पद, "करेति" पदं, "करेंतं" पदं, "वा" इति पदं, "सातिज्जति" त्ति पदं ।

इदाणिं पदत्थो भणणति –

जे त्ति य खलु णिद्देसे, भिक्खू पुण भेदणे खुहस्स खलू ।
हत्थेण जं च करणं, कीरति तं हत्थकम्मं ति ।।४९७।।

'जे" इति निद्देसे, "खलु" विसेसणे, किं विशिनष्टि ? भिक्षोर्नान्यस्य, "भिदि" विदारणे "क्षुध" इति कर्मण आख्यान, ज्ञानावरणादिकर्म भिनत्ती ति भिक्षुः, भावभिक्षोर्विशेपणे पुनः शब्द', "हत्थे" त्ति हन्यतेऽनेनेति हस्तः, हसति वा मुखमावृत्ये ति हस्तः, आदाननिक्षेपादिसमर्थो शरीरैकदेशो हस्तोऽतस्तेन यत् करणं व्यापारेत्यर्थः, स च व्यापार. क्रिया भवति, अतः सा हस्तक्रिया क्रियमाणा कर्म भवतीत्यर्थ. । "साइज्जति" साइज्जणा दुविहा—कारावणे अणुमोदणे एस पयत्थो गओ ।

इदाणिं सुत्तफासिया-णिज्जुत्ती अत्थ वित्थारेति –

णामं ठवणा भिक्खू, दव्व-भिक्खू य भाव-भिक्खू य ।
दव्वं सरीरभविओ, भावेण तु संजओ भिक्खू ।।४९८।।

नाम-स्थापने पूर्ववत् । दव्व-भिक्खू दुविहो—आगमओ णो आगमओ य । आगमतो भिक्खुशब्दार्थज्ञो । तत्रचानुपयुक्तः अनुपयोगो द्रव्यमिति कृत्वा ।

णोआगमतो अस्य व्याख्या – दव्वपच्छद्धं । "दव्व" मिति णोआगमतो द्रव्य-भिक्षु. प्रतिपाद्यते – सरीरग्रहणात् ज्ञशरीर-द्रव्यभिक्षु भव्यशरीर-द्रव्यभिक्षुश्च भविउ त्ति ज्ञशरीर-भव्यशरीर-व्यतिरिक्त. एगभविओ

बद्धाउओ अभिमुहणामगोओ य । एगभविओ, जो अणंतरं उव्वट्टित्ता बितिए भवे भिक्खू होहिति । बद्धाउओ जत्थ भिक्खुभाव वेदिस्सति तत्थ जेण आउणामगोयाति कम्माति बद्धाति । अभिमुह-णाम-गोओ पव्वजाभिमुहो सपट्ठितो ।

अहवा – ज्ञशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्तो द्रव्यभिक्षु शाक्य-तापस-परिव्राजकादि । च शब्दो – समुच्चये । इदाणिं भावभिक्खू "भावेण तु" भावग्गहणा भावभिक्षु, तु शब्दो भेद दर्शने, को भेद ? इमो – आगमतो णोआगमतो अ । आगमओ जाणए उवउत्ते भावभिक्खू भवति । णोआगमतो सजतो, स एगीभावेण जातो सयत मूलुत्तरगुणेष्वित्यर्थ. । इह भावभिक्खुणा अधिकार. ॥४९८॥

इदाणिं हत्थो भणति –

णामं ठवणा हत्थो, दव्वहत्थो य भावहत्थो य ।
मूलुत्तरो य दव्वे, भावम्मि य कम्मसंजुत्तो ॥४९९॥

णाम-स्थापने पूर्ववत् । द्रव्यहस्तो तृतीयपादेन व्याख्यायते, स च पाद एवमवतीर्यते आगमतो णोआगमतो य । आगमतो जाणए अणुवउत्तो, णोआगमतो हत्थसद्दजाणगस्स शरीरगं, तं हस्तशब्दं प्रति द्रव्यं भवति, भूतभावत्वात् । भव्यशरीर हत्थसद्दं अहुणा ण ताव जाणति किंतु जाणिस्सति, तदपि हस्त-शब्दं प्रतिद्रव्य भवति, भाविभावत्वात् । ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तो द्रव्यहस्त. मूलगुणनिव्वत्तितो उत्तरगुण-निव्वत्तिओ य । मूलगुणनिव्वत्तिओ मृताख्ये शरीरे, जो पुण कट्ठलेप्पचित्तकम्मादिसु सो उत्तरगुणनिव्वत्तितो, द्रव्यमिति गतार्थ एव, च शब्दो समुच्चते । इदाणिं भावहत्थो – आगमतो जाणए उवउत्ते, णोआगमओ "भावम्मि य कम्मसंजुतो" आदाणनिक्षेपक्रियाकर्मणा च युक्तो भावहस्तो भवति, च शब्दाज्जीवप्रदेशाधिष्ठितश्च । भावहस्तेनाधिकारेत्यर्थ ॥४९९॥

इदाणिं कम्मं भणति –

कम्मचउक्कं दव्वे, संतं उक्खेव तुन्नगादी वा ।
भावुदओ अट्ठविहो, मोहुदएणं तु अधिकारो ॥५००॥

कम्मसद्दो चउव्विहो – णामादिणिक्खेवो । णाम-ट्ठवणाओ पूर्ववत् । सव्वं घोसेऊण ज्ञशरीर-भव्यशरीर-व्यतिरिक्तं । द्रव्यकम्म दुविहं – दव्वकम्मं नोदव्वकम्म च । दव्वकम्मं णाम जे कम्मवग्गणाए णाणावरणादिजोग्गा पोग्गला कम्मत्तेण परियास्यन्ति ण ताव गच्छन्ति ।

अहवा – दव्वकम्मं "सत" त्ति संतमिति ज्ञानावरणादिबद्धं ण ताव उदयमागच्छति त सतं दव्वकम्मं भणति । णोदव्वकम्मं ति उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुंचनं-प्रसारणं-गमनं, "तुण्णगादि" तुण्णगमिति वत्थच्छिदे पुण णवकरणं तुण्णणमिति भण्णति, आदि सद्दातो कुंभकार-रहकार-तंतुगार-लोहगारादि । गतं दव्वकम्मं ।

इदाणिं भावकम्मं । तं दुविहं – आगमतो णोआगमतो य । आगमतो उवउत्तो णोआगमतो अ भावकम्म "भावुदओ उ अट्ठविहो" – णाणावरणादिआण कम्माणं जो णाणावरणादितेण भावुदओ अनुभावेत्यर्थं, तं भावकम्म भण्णति । इह पुण कतमेण कम्मुदएण अधिकारो ? भण्णति – मोहस्सुदएण अधिकार. प्रयोजनमित्यर्थः ॥५००॥

जं भावहत्थेण कम्मं करेति तं भणति हत्थकम्मं ।

त पुण दुविहं हत्थकम्मं । जतो भणति –

तं दुविहं णातव्वं, असंकिलिट्ठं च संकिलिट्ठं च ।
जं तं असंकिलिट्ठं, तस्स विहाणा इमे होंति ॥५०१॥

"तद" इति हत्थकम्मं संवज्झति । "दुविह" मिति दुभेद । "णायव्व" मिति बोधव्वं । के ते दो भेदा ? भण्णंति – संकिलिट्ठ असंकिलिट्ठं च । अदुष्टात्मचित्तस्य यत् कर्म तत् असकिलिट्ठं, तत्प्रति पक्षतो संकिलिट्ठं । च शब्दो भेदप्रदर्शको । ज तं पुव्वाभिहियं असंकिलिट्ठ, जगारुद्दिट्ठस्स तगारेण णिद्देसो, विहाणा-इति भेदा, "इमे" इति वक्ष्यमाणा भवन्ति ॥५०१॥

छेदणे[1] भेदणे[2] चेव, घसणे[3] पीसणे[4] तहा ।
अभिघाते[5] सिणेहे[6] य, काये[7] खारो[8] दियावरे ॥५०२॥

वक्ष्यमाणस्वरूपा एषा गाहा । छेदणं झुसिरे अज्झुसिरे वा करेति, एवं भेदादिएसु वि । एक्केक्कं पुणो अणंतरे परंपरे य ॥५०२॥

एवं भेदेषु विवरितेष्विद प्रायश्चित्तम् –

अज्झुसिर-झुसिरे लहुओ, लहुया गुरुगो य हुंति गुरुगा य ।
संघट्टण परितावण, लहुगुरुगऽतिवातणे मूलं ॥५०३॥

अज्झुसिरे अणंतरे लहुगो, झुसिरे अणंतरे लहुगा, अज्झुसिरे य परंपरे गुरुगो, झुसिरे य परंपरे गुरुगा बहुतरदोषत्वात् गुरुतरं प्रायश्चित्तं, परम्परे शस्त्रग्रहणाच्च संक्लिष्टतरं चित्तं, अतो परंपरे गुरुतरं प्रायश्चित्तं । एयं सुद्धपदे पच्छित्तं ।

असुद्धपदे पुण इणमण्णं "संघट्टण" पच्छद्धं ।

बेइंदियाणं संघट्टेइ लहुगा, परितावेइ चउगुरुं, ([1]उपद्रवयति षट्लघु ।

त्रीन्द्रीन् संघट्टयति चतुगुरु, परितापयति षट्लघु, अपद्रावयति षट्गुरु ।

चतुरिन्द्रियान् संघट्टयति षट्लघु, परितापयति षट्गुरु, अपद्रावयति छेदः ।

पंचेन्द्रियान् सघट्टयति षट्गुरु, परितापयति छेदः) पंचेंदिय अइवाए इति मूलं, शेषं उपयुज्य वक्तव्यम् ॥५०३॥

इदमेवार्थं सिद्धसेनाचार्यो वक्तुकाम इदमाह –

एक्केक्कं तं दुविहं अणंतरपरंपरं च णातव्वं ।
अट्ठाणट्ठा य पुणो, होति अणट्ठाय मासलहू ॥५०४॥

"एक्केक्कमिति छेदादिया पदा संवज्झंति "तद" इति छेयादि एवं संवज्झति । "दुविहं" दुभेयं अणंतरं-परंपरं, च सद्दो समुच्चए, पुणो एक्केक्कं दुविहं "अट्ठाणट्ठा" य । अर्थः प्रयोजनं, अणट्ठो निःप्रयोजनं, अणट्ठाए छेदणादि करेंतस्स असमायारिणिप्फण्णं मासलहुं ॥५०४॥

१ कोष्ठकान्तर्गत पाठः पूनासत्कप्रतौ न विद्यते ।

अज्झुसिराणंतरे लहु, गुरुगो तु परंपरे अज्झुसिरम्मि ।
झुसिराणंतर लहुगा गुरुगा य परंपरे अहवा ॥५०५॥

एतीए गाहाए पिट्ठतो अहवा सद्दो पउत्तो; अहवा सद्दातो एतेसु चेव छेदणादिसु अज्झुसिर-झुसिर-अणंतर-परपरेसु प्रकारवाचकत्वात् ।

अहवा – शब्दस्य इमं पच्छित्तं अज्झुसिरे अणंतरे मासलहु, परंपरे मासगुरुं अज्झुसिरे चेव । झुसिरे अणंतरे चउलहु, परंपरे चउगुरुं झुसिरे चेव ॥५०५॥

कहं पुण छेदणं, अणतरे परंपरे वा संभवति ?

णह-दंतादि अणंतरं, पिप्पलगादि परंपरे आणा ।
छप्पइगादि संजमे, छेदे परितावणा ताए ॥५०६॥दा०गा०॥

णहेहिं दंतेहिं वा जं छिंदति तं अणंतरे छेयो भण्णनि, आदिग्गहणातो पायेण, परंपरे छेदे पिप्पलगेण, आदिग्गहणातो [1]पाइल्लग छुरिय-कुहाडादीहिं च । "आण" त्ति अणंतरपरंपरेण छिंदमाणस्स तित्थगर-गणहराणं आणाभंगो कतो भवति, आणाभगे य चउगुरुगं, अणवत्थपसगेण तं दट्ठूण अण्णे वि करेंति छेदादी, तत्थ वि चउलहुगा मिच्छत्तं च जणयति । एते अच्छंता छेदणादि [2]सिट्ठरेहिं अच्छति, ण सज्झाते, एत्थ वि चउलहुआ (अ "इत्यपि") वत्थे छिज्जंते छप्पइगादि छिज्जंति । एस से संजमविराहणा । आदिसद्दातो अणंतरपरंपर-छेदणादिकिरियासु छज्जीवणिकाया विराहिज्जंति । तत्थ से छक्कायपच्छित्तं । अह छेदणादिकिरियं करेंतस्स हत्थपादादि छेज्जेज, ततो आयविराहणा, तत्थ से चउगुरु ।

अहवा "परितावणाए" त्ति परितावमहादुक्खेत्यादि गिलाणारोवणा । ५०६॥ "छेयणे" त्ति गयं ।

इदाणिं भेयणादि पदा भण्णंति –

एमेव सेसएसु वि, कर-पातादी अणंतरे होंति ।
जं तु परंपरकरणं, तस्स विहाणा इमे होंति ॥५०७॥

"एमेव" जहा छेयणपदे, 'सेसएसु" त्ति भेयणादिपदेसु तेसु अणंतरं दरिसावयंति, "करपाया" पसिद्धा, आदिसद्दातो जाणुकोप्परजंघोरु घेप्पंति । एवं जहा संभव भेदणादिपएसु अणंतरकरणं जोएयव्वं । "जं तु परंपरकरणं" ति जं पुण भेयणादिपदेसु परंपरकरणं तस्स विहाणा भेदा इमे भवन्तीत्यर्थः ॥५०७॥

कोणयमादी भेदो, घंसण मणिमादियाण कट्ठादि ।
पट्टे वरादिपीसण, गोफणधणुमादि अभिघाओ ॥५०८॥

कोणओ लगुडो भण्णति, आदिसद्दाओ उवललेट्ठुगादि, तेहिं घडगादिभेदं करेति । भेदे त्ति गतं ।

घसणमिति घसणदारं गहियं – तत्थ परंपरे मणियारा साणीए घसंति लगुडेण वेधं काउं । आदिसद्दातो मोत्तिया । कट्ठादि त्ति चंदणकट्ठाओ घरिसादिसु घृष्यन्ति । घंसणे त्ति गतं ।

पट्ट त्ति गंधपट्टातो तत्थ वरा प्रधाना गंधा पीसिज्जंति । पीसण त्ति गतं ।

---

१ (प्रत्यं० "विरचिते इति") २ फावडा=मिट्टी खोदने का एक साधन । ३ चेष्टादिभिः ।

गोफणा चम्मदवरगमया पसिद्धा, ताए लेट्टुग्रो उवलग्रो वा घत्तिज्जंति, सो अभिघातो भण्णति, धणूण वा कंडं । अभिघाओ त्ति गयं ॥५०८॥

अहवा अभिघाओ इमो होइ –

विधुवण णंत कुसादी, सिणेह उदगादि आवरिसणंतु ।
काओ उ विंबसत्थे, खारो तु कलिंचमादीहिं ॥५०९॥

विधुवणो [1]वीतणगो, "णंतं" वत्थं, तेहिं वीयंतो अभिघातं करेति पाणिणं । कुसो दब्भो, तेण [2]मज्जणातिसु अभिघातं करेति । अभिघाउ त्ति गयं ।

"सिणेह त्ति" सिणेहद्दारं, उदगं पाणीयं, तेण आवरिसणं करेति । आदिसद्दातो घय-तेल्लेण वा । सिणेह त्ति गतं ।

"काउ" त्ति काओ सरीरं, "विंबि" त्ति बिंबयं तेण णिल्लेवकादि कायं णिव्वत्तेति, "सत्थे" त्ति-शस्त्रेण परंपरकरणभूतेण पत्रच्छेदादिषु कायं निवर्तयन्ति । काये त्ति गतं ।

अज्झुसिरे वा खारं छुभति, तं पुण परंपराहिकारे अणुवट्टमाणे "कलिंचमादीहिं" ति कलिंचे— वंसकप्परी ताए छुभति । खारे त्ति गतं ॥५०९॥

एक्केक्का उ पदाओ, आणादीया य संजमे दोसा ।
एवं तु अणट्ठाए, कप्पति अट्ठाए जतणाए ॥५१०॥

एक्केक्काओ छेदादिपदाओ आणाभंगो अणवत्थकरणं मिच्छत्तजणयं आयविराहणा संजमविराहणा य । एते दोसा अणट्ठाए करेंतस्स भवंति । मूलदारगाहाए "अवरे" त्ति अन्यान्यपि एतज्जातीयानि गृह्यन्तेत्यर्थः

अहवा – उस्सग्गातो अवरो अववातो भण्णति, कप्पति जुज्जते कर्तुं, अर्थः प्रयोजनं, कारणे प्राप्ते, नो अयत्नेन यत्नेनेत्यर्थः ॥५१०॥

असती अधाकडाणं, दसिगाधिकछेदणं व जतणाए ।
गुलमादि लाउणालो, कप्परभेदो वि एमेव ॥५११॥

असति अभावो अहाकडा अपरिकम्मा दसिया छिंदियव्वा, पमाणाहिकस्स वा वत्थस्स छेदणं जयणे ति, जहा – आयसंजमविराहणा ण भवति, भेदणद्दारे गुलग्गहणं पिंडगस्स वा भेदो, "लाउनालो"— वींटी सा अहिकरणभया भिज्जति, संजती वा हत्थकम्मं करिस्सति । "कप्परं" कवालं, तं वा अहिकरणभया भिज्जति, एमेव त्ति जयणाए ॥५११॥

घंसणाववाओ –

अक्खाणं चंदणस्स वा, घंसणं पीसणं तु अगतादि ।
वग्घादीणऽभिघातो, अगतादि य ताव सुणगादि ॥५१२॥

"अक्खा" पसिद्धा तेसिं विसमाण समीकरणं, चंदणस्स वा परिडाहे घंसणं, पीसणद्दारे पीसणं अगतस्स अण्णस्स वा कस्सति कारणेण, अभिघातो गोप्फण्णेण धणुएण वा वग्घादीण ऽभिभवंति अभिघाओ कायव्वो । अगतस्स वा पताविज्जंतस्स सुणगादि वा अभिपडंता लेट्ठुणा धाडेयव्वा ॥५१२॥

---

१ वीजनकम् । २ स्नानादि । ३ 'मणीए'' इत्यपि ।

सिणेहे अववाओ –

बितियदवुज्झणजतणा, दाहेणं देहभूमि सिंचणता ।
पडिणीयाऽसिवसमणी, पडिमा खारो तु सेल्लादी ॥५१३॥

"वितिय" अववायपदं, "दवं" पाणगं, तं उज्झति जयणाए आवरिसंतो ।

अहवा – वितिए त्ति तृपा डाहे वा सरीरस्स देह सिंचति [1]गिलाण परिणीए वा सीतलट्ठया भूमि सिंचति । "काए" त्ति कोइ गिहत्थो पडिणीतो [2]तस्य प्रतिकृतिं कृत्वा मन्त्रं जपेत्ता विद्यावद् भद्रीभूतः । असिवे वा असिवप्रशमनार्थं प्रतिमा कर्तव्या । "खारो" त्ति वितियपदे अणंतरपरपरे छुभिज्ज अज्झुसिरे वा झुसिरे वा, तत्थ झुसिरे दरिसावयति "खारो तु सेल्लादि" त्ति । सेल्ल वालमयं झुसिरं, त खारे छुभति, किं खारो संजाओ न वि त्ति ॥५१३॥ असकिलिट्ठं कम्मं भणियं ।

इदाणिं संकिलिट्ठं भण्णति –

जं तं तु संकिलिट्ठं, तं सणिमित्तं च होज्ज अणिमित्तं ।
जं तं सणिमित्तं पुण, तस्सुप्पत्ती तिधा होति ॥५१४॥

जं ति अणिद्दिट्ठ, तं ति, पूर्वाभिहितं, तु शब्दो संकिलिट्ठविसेसणे । तस्स संकिलिट्ठस्स दुविहा उप्पत्ती-सणिमित्ता अणिमित्ता य । णिमित्तं हेऊ वक्खमाणस्सरूवो, अणिमित्तं निरहेतुक । ज त सणिमित्तं तस्सुप्पत्ती वहिरवत्थुमवेक्ख भवति ॥५१४॥

पुनरवधारणे चोदग आह – णणु कम्मं चेव तस्स णिमित्त, किमण्णं बाहिरणिमित्तं घोसिज्जति ?

आचार्याह –

कामं कम्मणिमित्तं, उदयो णत्थि उदओ उ तव्वज्जो ।
तहवि य वाहिरवत्थुं, होति निमित्तं तिमं तिविधं ॥५१५॥

कामं अनुमतार्थे, किमनुमन्यते ? कर्मणिमित्तो उदय इत्यर्थः । न इति प्रतिषेधे उदय· कर्मवर्ज्यो न भवतीत्यर्थः । तथापि कश्चिद् बाह्यवस्त्वपेक्षो कर्मोदयो भवतीत्यर्थः । तिविध बाह्यनिमित्तमुच्यते ॥५१५॥

सद्दं[1] वा सोऊणं, दट्ठुं[2] सरितुं[3] व पुव्वभुत्ताइं ।
सणिमित्तऽणिमित्तं पुण, उदया[1]हारे सरीरे[2] य ॥५१६॥

गीतादि विसयसद्दं सोउं, आलिंगणातित्थीरूवं वा दट्ठुं, पुव्वकीलियाणि वा सरिउं, एतेहिं कारणेहिं सणिमित्तो हूदओ । अणिमित्तं पुण, पुणसद्दो अणिमित्तविसेसणे, कम्मुदओ आहारेणं सरीरोवचया, च सद्दो भेदप्रदर्शने ॥५१६॥

"सद्दं वा सोऊणं" ति अस्य व्याख्या –

पडिबद्धा सेज्जाए, अतिरित्ताए व उप्पता सद्दे ।
वहियावणिग्गतस्सा, सुणणा विसउब्भवे सद्दे ॥५१७॥

---

[1] भक्तप्रत्याख्यानिन दाहाभिभूतं । [2] तस्योपशमनीं ।

दव्वभावपडिबद्धाए सेज्जाए विसओब्भवसद्दं सुणेज्ज, "अतिरित्ताए व" त्ति अतिरित्ता घंघसाला, वहिया वसहीओ वियारभूमादि णिग्गतो वा विसउब्भवं सद्दं सुणेज्जा ॥५१७॥

"पडिबद्धा सेज्जाए य" त्ति अस्य व्याख्या –

पडिबद्धा सेज्जा पुण, दव्वे भावे य होति दुविधा तु ।
दव्वम्मि पट्ठिवंसो, भावम्मि चउव्विहो भेदो ॥५१८॥

प्रतिबद्धा युक्ता संश्लिष्टा इत्यर्थः । सेज्जा वसही । स संयोगो द्विविधो–द्रव्ये भावे च । द्रव्यप्रतिबद्धा पट्ठिवंसो वलहरणं, तेन प्रतिबद्धा एगमोब्भा इत्यर्थः । भावप्रतिबन्धे चउव्विहो भेदो ॥५१८॥

इमो –

पासवणट्ठाणरूवे, सद्दे चेव य हवंति चत्तारि ।
दव्वेण य भावेण य, संजोगे चउक्कभयणाउ ॥५१९॥

पासवणं काइयभूमी, ठाणमिति इत्थीण अच्छणठाणं, रूवमिति जत्थ वसहीठिएहिं इत्थीरूवं दीसति, सा रूव-प्रतिबद्धा । "सद्दे त्ति" जत्थ वसहीए ठितेहिं भासा-भूसण-रहस्ससद्दा सुणिज्जंति, सा सद्दपडिबद्धा । एस चउव्विहो भावपडिबधो भणितः ।

इदाणिं दव्वपयस्स भावपदस्स य संयोगे चउक्कभयणा कायव्वा ।

इमा भयणा –

दव्वओ पडिबद्धा, भावओ पडिबद्धा ।
दव्वओ पडिबद्धा, ण भावओ ।
भावओ पडिबद्धा, ण दव्वओ ।
ण दव्वतो पडिबद्धा, ण भावतो पडिबद्धा ॥५१९॥

एवं चउभंगे विरचिते भण्णति –

चउत्थपदं तु विदिण्णं, दव्वे लहुगा य दोस आणादी ।
संसद्देण विबुद्धे, अधिकरणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०॥

"चउत्थं पदं" चउत्थो भगो समनुज्ञातः, तत्र स्थातव्यमित्यर्थः । "दव्वे" त्ति दव्वतो, ण भावतो द्वितीयभगेत्यर्थः । तत्थ सुद्धपदे वि चउलहुगा । आणा-अणवत्थ-मिच्छत्त विराहणा य भवन्ति ।

इमे य अण्णे दोसा "ससद्देण" पच्छद्धं । साधुसद्देण असजया विबुद्धा अधिकरणाणि करेंति । अह साहू अधिकरणभया णिसचारा तुण्हिक्का य अत्थंति तो सुत्तऽत्थाणं परिहाणी ॥५२०॥

कालस्याग्रहणे स्वाध्यायस्य अकरणात् इमं से पच्छित्तं –

सुत्तऽत्थावस्सणिसीधियासु वेलथुतिसुत्तणासेसु ।
लहुगुरु पण पण चउ लहुमासो लहुगा य गुरुगा य ॥५२१॥

एयस्स पुव्वद्धेण अवराहा । पच्छद्धेण पच्छित्ता जहसंखं । सुत्तपोरिसिं ण करेंति मासलहुं । अत्थपोरिसिं ण करेंति मासगुरुं । "आवस्सिणिसीहि" ताण अकरणे पणगं । "वेल" त्ति आवस्सगवेलाए

आवस्सगं न करेति चउलहु। अधिकरणभया अविधीए करेति। आवस्सगे कते थुतीओ ण देति मासलहु। सुत्तणासे चउलहु। अत्थणासे चउगुरुं ॥५२१॥

"संसद्देण विबुद्धे अहिकरणं" ति अस्य व्याख्या –

आउज्जोवणवणिए, अगणि कुटुंबी कुकम्म कुम्मरिए।
तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२२॥

साधुसद्देण विबुद्धा "आउ" त्ति पाणियस्स गच्छंति। "उज्जोवणं" ति गावीणं पसरणं सगडादीणं वा पयट्टणं। "कच्छपुडियवाणिओ" वापारे गच्छति। लोहारादी उट्ठेउं अग्गीकम्मेसु लग्गंति। कुटुंबिया साधु-सद्देण विच्छुद्धा (विबुद्धा) खेत्ताणि गच्छंति। कुच्छियकम्मा कुकम्मा मच्छबंधगादयो मच्छगाण गच्छति। जे कुमारेण मारेंति ते कुमारिया, जहा "खट्टिका", महिसं दामेउण लउडेहिं कुट्टंति ताव जाण सूणा सिघमारगा वा। समणा जग्गंति त्ति तेणा ओसरंति। मालाकारो करंड घेत्तूणारामं गच्छति। उब्भामगो पारदारिको, सो उब्भामिगा समीवातो गच्छति। पंथिया पंथं पयट्टंति। जंते त्ति जंतिया जंते वाहेंति ॥५२२॥

अहिकरणभया तुण्हिक्का चेट्ठा करेंति, तो इमे दोसा –

आसज्जणिसीहियावस्सियं च ण करेंति मा हु बुज्झेज्जा।
तेणा संका लग्गण, संजम आया य भाणादी ॥५२३॥

आसज्जं णिसीहियं आवस्सियं च ण करेंति, मा असंजया बुज्झिस्सति, तमेव तुण्हिक्कं अतितं णिग्गच्छंतं वा अण्णो साधू तं तेणगं संकमाणो जुद्धं लग्गेज्जा, तो जुज्झंतो संजमविराहणं आयविराहणं वा करेज्जा, भायणभेदं, आदिसद्दातो अण्णस्स साहुस्स हत्थं पादं विराहेज्जा, तम्हा एतद्दोसपरिहरणत्थं दव्व-पडिवद्धाए ण ठायव्वं ॥५२३॥

इदानिं अस्यैव द्वितीयभंगस्स अववायं ब्रवीति –

अद्धाण णिग्गतादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए।
गीतत्था जतणाए, वसंति तो दव्वपडिवद्धे ॥५२४॥

अद्धाण णिग्गता एवं प्रतिपन्ना "आदि" सद्दातो असिवादिणिग्गता वा "तिक्खुत्तो" तिण्णि वारा दव्वभावे हि अपडिवद्धं मग्गिऊण असति त्ति अलाभे चतुर्थभंगस्येत्यर्थः। गीतत्था सुत्तत्था जयणाए दोसपरि-हरणं, "तो" त्ति कारणदीवणे कारणेण वसंति दव्वपडिवद्धे त्ति ॥५२४॥

"गीयत्था जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

आपुच्छण आवस्सग, आसज्ज णिसीहिया य जतणाए।
वेरत्तिय आवासग, जो जाधे चिंधणदुगम्मि ॥५२५॥

आपुच्छणं जयणाए करेंति साधू, कातियभूमिं णिग्गच्छंतो अण्णं साहुं आपुच्छिउं णिग्गच्छति, सो य छिक्कमेत्तो चेव उट्ठेउं डंडगहियत्थो दुवारे चिट्ठति, जाव सो आगतो एसा आपुच्छणजयणा। आवस्सगं आसज्जं णिसीहीयं च हियएण करेज्ज जहा वा ते ण सुणेंति। "वेरत्तियं" त्ति वेरत्ति अकालवेलाए जो जाहे चेव सो ताहे कालभूमिं गच्छति, तुसिणीया आवस्सगं जयणाए करेंति, जो वा जत्थ ठितो करेति।

अहवा जाहे पभायं गिहत्था उट्ठिता ताहे आवस्सयं थुतीओ वि जयणाए करेंति "चिंधणदुगम्मि त्ति

चिधंति लक्खेंति, सुत्तुद्देसगादिसु 'दुगं" सुत्तं अत्थो य, तत्थ जं वेरत्तियं करेंताण संकितं तं दिवा पुच्छतीत्यर्थः ।।५२५।।

जयणाहिगारे अणुवट्टमाणे इम पि भण्णति –

जणरहिते वुज्जाणे, जयणा सद्दे य किमु य पडिबद्धे ।
ढड्ढरसराणुपेहा, ण य संधाडेण वेरत्ती ।।५२६।।

जणरहिते उज्जाणे वसंता सद्दे जयणं करेंति, मा हु दुपद-चउप्पद-पक्खि-सरिस्सिवादि बुज्झेज्जा, जति जणरहिते एस जयणा दिट्ठा किमंग पुण दव्वपडिबद्धाए, सो पुण साहु ढड्ढरसद्दो सो वेरत्तियं करेंतो अणुप्पेहाए सज्झायं करेति, ण य संघाडेण वेरत्तियं करेति ।।५२६।। गतो वितियभंगो साववातो ।

इदाणिं ततियभंगो "भावओ पडिबद्धा णो दव्वओ" एस भण्णति –

भावम्मि उ पडिबद्धे, चतुरो गुरुगा य दोस आणादी ।
ते वि य पुरिसा दुविहा, भुत्तभोगी अभुत्ता य ।।५२७।।

भावपडिबद्धाए ट्ठायमाणाणं पच्छित्तं इमं – "चउरो" त्ति चत्तारि चउगुरुगा पासवणादिसु, आणादिणो य दोसा भवंति ।' जे पुण ते भावपडिबद्धाए वसहीए ठायति ते दुविहा पुरिसा – भुत्तभोगा अभुत्तभोगा य । जे इत्थिभोगं भुंजिउं पव्वइया ते भुत्तभोगा, इतरे कुमारगा ।।५२७।।

भावपडिबद्धाए पासवणादिसु चउसुवि पदेसु सोलसभंगा कायव्वा ।

जओ भण्णति –

भावम्मि उ पडिबद्धे, पण्णरसपदेसु चउगुरु होंति ।
एक्केक्काओ पदातो, दोसा आणादी सविसेसा ।।५२८।।

"भावम्मि उ पडिबद्धे" त्ति एत्थ वयणे[1] सोलस भंगा दट्ठव्वा । ते य इमे – पासवणपडिबद्धा ठाणपडिबद्धा रूवपडिबद्धा सद्दपडिबद्धा – १ एस पढमभंगो । एस पासवण-ट्ठाण रूव-पडिबद्धा णो सद्द पडिबद्धा एवं सोलस भंगा कायव्वा । एवं रचिएसु पच्छित्तं विज्जइ । आदि भंगाओ आरब्भ-जाव-पण्णरसमो ताव चउगुरुं भवति । आदेसे वा पढमभगे चउगुरुगा, एवं जत्थ भगे जति पदाणि विरुद्धाणि तति चउगुरुगा, सोलसमपदं सुद्धं । एक्केक्काउ पदाउ" त्ति एक्केक्कभंगाउ त्ति वुत्तं भवति आणादिदोसा भवंति । "सविसेस" त्ति दव्वपडिबद्ध समीवाओ सविशेषतरा दोषा भवंतीत्यर्थः ।।५२८।।

१

	पासवण-पडिवद्धा,	ठाण-पडिवद्धा,	रूव-पढिवद्धा,	सद्द-पडिवद्धा	
	१	१	१	१	
१	पासवण-पडिवद्धा,	ठाण-पडिवद्धा,	रूव-पडिबद्धा,	णो सद्द-पडिवद्धा	९ — ० — १ — १ — १
२	१ ,, ,,	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१० — ० — १ — १ — ०
३	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	११ — ० — १ — ० — १
४	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१२ — ० — १ — ० — ०
५	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१ ,, ,,	१३ — ० — १ — १ — ०
६	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१४ — ० — ० — १ — १
७	१ ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१५ — ० — ० — ० — १
८	१ ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	१६ — ० — ० — ० — ०

इदाणिं पासवणादिपदाणं अन्योन्यारोपणं क्रियते –

ठाणे नियमा रूवं, भासा सद्दो उ भूसणे भइओ ।
काइय ठाणं णत्थी, सद्दे रूवे य भय सेसे ॥५२९॥

जत्थ ठाणं तत्थ रूवं भासासद्दो य णियमा भवंति, भूसणसद्दो [1]भतितो, जेण रंडकुरंडातो य अणाभरणियाओ भवंति । पासवणे पुण ठाणं णत्थि, जत्थ कातियभूमी पडिबद्धा तत्थ ठाणं णत्थि, भासा-सद्दो भूसणसद्दो रूवं च "भय" त्ति भयणिज्जं कयाइ भवंति कयाइ ण भवंति । सेसे त्ति एतान्येव शब्दादीनि शेषाणीत्यर्थः ॥५२९॥

जत्थ साहूणं असंजतीण य एगा काइयभूमी सा पासवणपडिबद्धा तत्थ दोसा भणंति –

आयपरोभयदोसो, काइयभूमीए इच्छऽणिच्छंते ।
संका एगमणेगे, वोच्छेदे पदो सतो जं च ॥५३०॥

"आय" त्ति – साधुः अप्पणेण खुब्भति । "पर" त्ति इत्थिया साहुम्मि खुब्भति । "उभय" ति साघू इत्थीए, इत्थीया साधुम्मि । एते आत्मपरोभयदोषाः काइयभूमौ भवंतीत्यर्थः । "इच्छऽणिच्छंते" त्ति जइ इत्थिया साहुम्मि खुब्भति तं जइ पडिसेवति तो वयभंगो । अह णेच्छति तो उड्डाहं करेति । एवं उभयथापि दोषः । अह साघू इत्थीए खुब्भति तो सा इत्थी इच्छेज्ज वा अणिच्छेज्ज वा । जति अणिच्छा तो उड्डाहं करेति – एस मे समणो वाहति । "संक" त्ति इत्थिया पविट्ठा काइयभूमीए.पच्छा साहू पविट्ठतो तया एगे संकति किं मण्णे एताणि तुरियाणि ।

अहवा – अणायारे एगे संकति अणेगा वा, एगमणेगे वा वोच्छेदं करेति वसहिमादीणं । पदुट्ठो वा गेण्हणकड्ढणववहारादि करेज्ज ॥५३०॥

जत्थ गिहत्थीणं संजयाण य एगं ठाण तत्थिमे दोसा –

दुग्गूढाणं छण्णंगदंसणे भुत्तभोगिसतिकरणं ।
वेउव्वियमादीसु य, पडिबंधुड्डंचगा संका ॥५३१॥

"दुग्गूढं" दुगोवियं दुण्णियत्थं दुपाउय वा छण्णंगं उरुगादि ताणि दट्ठुं भुत्तभोगिणं स्मृतिकरणं भवति । "वेउव्वियमि" ति महत्प्रमाणं ।

अहवा – वेउव्विय मरहट्ठविसए सागारियं वज्झति, तत्थ वेंटको कज्जति अंगुलिमुद्दिगावत्, सा य अगारी तारिसेण पडिसेवियपुव्वा तस्स य साहुस्स सागारियं वेउव्वियं तत्थ पडिबंधं जाति, "उड्डंचगो वा" कुंठितं करेति, अगारी वा सकति – किं मण्णे एस साघू सागारियं दंसेति, प्राय सो मां प्रार्थयतीत्यर्थः । लोगो वा संकति ण एते साघू ॥५३१॥

किंचान्यत् –

अगुत्ति य बंभचेरे, लज्जाणासो य पीतिपरिवड्ढी ।
साधु तवो वणवासो, णिवारणं तित्थपरिहाणी ॥५३२॥

---

[1] भजनावान्=स्याद्वा न वेत्यर्थः ।

एगट्ठाणे बंभचेरस्स अगुत्ती भवति । परोप्परो य लज्जाणासो अभिक्खदंसणे वा पीतिपरिव. लोको उभ्रसवचनेन ब्रवीति—साधु ! तवो वणवासो । रातादि निवारणं यथा—मा एतेसिं मज्झे कोति पव्व एवं तित्थवोच्छेदो भवतीत्यर्थः ॥५३२॥

रूवपडिबद्धाए इमे दोसा, साधू अगारीणं इमं पेक्खेति –

चंकम्मियं ठियं जंपियं च विप्पेक्खित्तं च सविलासं ।
आगारे य बहुविधे, दट्ठुं भुत्तेयरे दोसा ॥५३३॥

"चंकम्मितं" गतिविभ्रमं ठिता उब्भाकडित्थभगेण मितं गच्छति, हंसी वा जंपति महुरं, कोइला वा, विप्रेक्षितं निदीक्षितं तच्च भ्रूक्षेपसहितं, सविस्मितं मुखं प्रहसितं सविलासं, एवमादि स्त्रीणां बहुविधानाकारानलंकृतान् दृष्ट्वा भुक्तभोगिनां स्मृतिकरणं भवति । "इतरे" अभुत्तभोगी, तेषां कोतुकं भवति, न चेव अम्हेहिं माणुस्सगा कामभोगगुणा भुत्ता, एवं तेसिं पडिगमणादओ दोसा भवंति ॥५३३॥

ताओ वा इत्थीओ ते साहुणो णाणादिसितो तत्थ ठितो दट्ठूण एवं संकेज्जा –

जल्लमलपंकिताण वि, लावण्णसिरी तु जहासि देहाणं ।
सामण्णम्मि सुरूवा, सतगुणिया आसि गिहवासे ॥५३४॥

"जल्लो" कद्दिमभूतो, "मलो" उव्वट्टितो फिट्टति, पंकिता णाम तेण जल्लमलेन ग्रस्ताः, "लावणं" सरीरसोभा, लावणमेव श्री लावणश्री, जहा – अस्य साधोर्देहे शरीरे अनभ्यंगादिभावेन युक्तस्यापि समणस्स भावो सामण्णं तस्सिं सुरूपता लक्ष्यते यदा पुनर्गृहवासे अभ्यंगभावेन युक्तमासीत्तदा समीपतः शतगुणा सुरूपता आसीत् ॥५३४॥

सद्दपडिबद्धाते दोसा –

गीताणि य पढिताणि अ, हसिताणि य मंजुला य उल्लावा ।
भूसणसद्दे राहस्सिएण सोतूण जे दोसा ॥५३५॥

स्त्रीणां गीताणि, विदुषस्त्रीणां च पठितानि श्रुत्वा, सविकारहसिताणि च, मनं ज्वलयन्ति मनं क्षोभयन्ति ये उल्लावा तांश्च श्रुत्वा, वलयनूपुरशब्दांश्च, रहसि भवा राहस्सिगा, पुरुषेण स्त्री भुज्यमानायां स्तनितादिशब्दान् करोति, ते रहस्यशब्दास्तान् श्रुत्वा ये भुक्ताभुक्तसमुत्था दोसा भवंति तानाचार्यः प्राप्नोति । यस्य वा वसेन तत्र स्थिता ।

अहवा "ये दोस" त्ति – पावति तं निप्फण्णं पायच्छित्तं भवति ॥५३५॥

इत्थियाओ वा साधूण सद्दे सुणंति –

गंभीरविसदफुडमधुरगाहओ सुस्सरो सरो जहसिं ।
सज्झायस्स मणहरो, गीतस्स णु केरिसो आसी ॥५३६॥

"गंभीरो" साणुणादी, विसदो व्यक्तः, "फुडो" अभिधेयं प्रति स्पष्टः, "मधुरो सुखावहः, सुभगत्वादर्थऽऽग्राहणसमर्थो ग्राहकः, शोभनस्वरो यथा अस्य साधोः स्वाध्यायं प्रति मनं हरतीति मनोहरः । जया पुण वीसत्थो गिहत्थकाले गेयं करोति उ ततो किण्णरो इव आसी ॥५३६॥

पुरिसा य भुत्तभोगी, अभुत्तभोगी य ते भवे दुविधा ।
कोऊहण सितीकरणुब्भवेहिं दोसेहिमं कुज्जा ॥५३७॥

ते पुण पुरिसा दुविहा – भुत्तभोगी अभुत्तभोगी य । स्मृतिकरणा कौतुकदोषा तेहिं दोसेहिं पणेहिं इमं कुज्जा ॥५३७॥

पडिगमण अण्णतित्थिय, सिद्ध संजति सलिंगहत्थे य ।
अद्धाण वास सावय, तेणेसु य भावपडिबंधो ॥५३८॥

"पडिगमणं" उण्णिक्खमणं, अण्णउत्थिएसु वा जाति, "सिद्धपुत्तिं" वा पडिसेवति, संजतीं वा सलिंगे ठितो पडिसेवति, हत्थकम्म वा करेति । तम्हा एयद्दोसपरिहरणत्थं ण तत्थ ठाएज्जा । भवे कारणं जेण तत्थ ठाएज्जा "अद्धाण" पच्छद्धं । अद्धाणं पडिवन्ना वा, वासं वा पडति, बहिं वा गामस्स सावयभयं सरीरोवकरणतेणा वा एतेहिं कारणेहिं भावपडिबद्धे ठायति ॥५३८॥

तं पुण इमाए जयणाए ठाएंति –

विहिणिग्गतो तु जतितुं, पडिबद्धे दव्वजोतिरुक्खाहे ।
ठायंति अह उ वासं, सावयतेणे य तो भावे ॥५३९॥

विहिणिग्गता सुद्धवसहि-अभावे दव्वपडिबद्धाए ठायति । तस्स अभावे जोइपडिबद्धाए । तस्स अभावे बहिया रुक्खहेट्ठे ठायंति

अहवा – वुट्ठी सपडइ, सावयभय वा, बाहिरे तेणगभयं वा तो भावपडिबद्धाए ठायंति ॥५३९॥

तत्थ वि इमा जयणा –

भावंमि ठायमाणो, पढमं ठायंति रूवपडिबद्धे ।
तहियं कडगचिलिमिली, तस्सऽसती ठंति पासवणे ॥५४०॥

भावपडिबद्धाए ठायमाणा पढमं ठायंति रूवपडिबद्धाए, पुव्व-भणिय-दोसपरिहरणत्थं अंतरे कडय-चिलमिली वा अंतर देंति । 'तस्सऽसति" त्ति रूवपडिबद्धाए, तस्स असतीए पासवणपडिबद्धाए । तत्थ वि पुव्वदोसपरिहरणत्थं मत्तए वोसिरिउ अण्णत्थ परिट्ठवें ॥५४०॥

असती य मत्तगस्सा, णिसिरणभूमीए वावि असतीए ।
वंदेण बोलपविसण, तासिं वेलं च वज्जेज्ज ॥५४१॥

असति पासवणमत्तगस्स अण्णाए वा काइयभूमीए असति "वंदेण" वंदणबोलं रोलं करेंता "विसंति" प्रविशंतीत्यर्थः । "तासिं" त्ति अगारीणं जा वोसिरणवेला तं वज्जेंति ॥५४१॥

पासवणपडिबद्धाए असतीए सद्दपडिबद्धाए ठायति । सो य सद्दो तिविहो – भूसण-भासा-रहस्ससद्दो य ।

तत्थ वि पढमं इमेसु –

भूसणभासासद्दे, सज्झायज्झाण णिच्चमुवयोगे ।
उवकरणेण सयं वा पेल्लण अण्णत्थ वा ठाणे ॥५४२॥

दिवा

पढमं भूसणसद्दपडिवद्धाए, पच्छा भासासद्दे । तत्थ पुव्वभणिय-दोसपरिहरणत्थं इमा रिव भण्णति —समुदिया महतसद्देण सज्झायं करेंति, झाणलद्धि वा झायंति, एतेष्वेव नित्यमुपयोगं । पुव्व भासासद्दपडिवद्धाए असति, ठाण-पडिवद्धाए वा ठायति । तत्थ वि पुव्वभणियदोसपरिहरणत्थं जयणा "उवकरणे" पच्छद्धं । उवगरणं विप्पगिण्णं तहा ठाएंति जहा तेसिं ठाणओ ण भवति, सयं वा वि गिण्णा होउ पेल्लंति । अणत्थ वा ठाणे गंतुं दिवसतो अच्छति ॥५४२॥

ठाणपडिवद्धाए असति रहस्ससद्दपडिबद्धाए ठंति –

परियारसद्दजयणा, सद्दवते तिविध-तिविध-तिविधेया ।
उद्दाण-पउत्थ-सहीणभत्ता जा जस्स वा गरुई ॥५४३॥

पुरिसेण इत्थी परियारिया पडिभुंजमाणि त्ति वुत्तं भवति, जं सा सद्दं करेति तत्थ [1]जयणा कायव्वा । "सद्दवए" त्ति सद्दतो तिविहा – मंदसद्दा मज्झिमसद्दा तिव्वसद्दा य । वएण तिविहा – थेरी मज्झिमा तरुणी य । एक्केक्का तिविहा – [2]उद्दाणभत्तारा [3]पउत्थभत्तारा [4]साहीणभत्तारा य । एवं परूवियासु ठाइयव्वं इमाए जयणाए – पुव्वं उद्दाणं भत्ताराए थेरीए मंदसद्दाए । ततो एतेण चेव कमेण एतासु चेव थेरीसु मज्झिमसद्दासु । ततो एतेण चेव कमेण एतासु चेव थेरीसु तिव्वसद्दासु । ततो उद्दाण-पउत्थपतियासु । ततो एतासु चेव जहक्कमेण मज्झिमासु मंदसद्दासु । ततो एतासु चेव जहक्कमेण तिव्व-सद्दासु । तओ साहीणभत्तरासु थेरीसु मदसद्दासु जाव तिव्वसद्दासु । [ततो सभोइयासु थेरी मज्झिमासु जहासंखं । तओ-सभोइयासु तरुणित्थीसु मंदमज्झिमतिव्वसद्दासु जहसंख ।]

अहवा – "जा जस्स वा गरुगीय" त्ति – जा इत्थी जस्स साहुस्स माउलदुहियादिया भव्वा सा गरुगी भण्णति । सा (स) तं (तां) परिहरति ।

अहवा "गरुगि" त्ति जो जस्स सद्दो रुचति तिव्वादिगो तेण जुत्ता गुरुगी भण्णति, सो तं तां परिहरति ॥५४३॥

अहवा इमो कमो अण्णो –

उद्दाणपरिट्ठविया, पउत्थ कण्णा सभोइया चेव ।
थेरीमज्झिमतरुणी, तिव्वकरी मंदसद्दा य ॥५४४।

इह गाहाए "कण्णा" सद्दो बधाणुलोमाओ मज्झे कओ एस आदीए कायव्वो । "कण्णा" – अपरिणीया, "उद्दाण-भत्तारा" भत्तारेण परिठविता, पवासिय-भत्तारा, साहीण-भत्तारा सभोइया भण्णति । एयाओ जहासंखेण थेरी-मज्झिम-तरुणी । एवं परूवियासु इमो कमो – पुव्वं कण्णाए थेरीए । ततो कण्णाए कप्पट्ठियाए । ततो मज्झिमकण्णाए । ततो उद्दाण-परिट्ठवण-पउत्थ-थेरीसु जहासंखं । ततो एतासु चेव मज्झिमासु । ततो एतासु चेव तरुणीसु । तओ सभोतिअथेरीए मद-मज्झिम-तिव्वसद्दाए जहसंखं । ततो मज्झिमाए सभोतियाए तिविहसद्दाय जहासंखं । ततो तरुणित्थीए सभोइयाए तिविहसद्दाए जहासंखं । एव सामण्णजयणाए भणियं । विसेसेणं पुण जस्स जं अप्पदोसतरं तत्थ तेण ठायव्वं ॥५४४॥

---

१ स्वाध्यायकरणादिका । २ अपद्राणभर्तृका । ३ प्रोषितभर्तृका । ४ स्वाधीनभर्तृका ।

पासवणादिपडिबद्धासु "सिद्धसेनायरिएण" जा जयणा भणिया त चेव सखेवग्रो "भद्दबाहू" भण्णति –

पासवणमत्तएगं, ठाणे अण्णत्थ चिलिमिली रूवे ।
सज्झाए झाणे वा, आवरणे सद्दकरणे व ॥५४५॥

पुव्वद्ध कंठ । इमा सद्दे जयणा "सज्झाए" त्ति । अस्य व्याख्या – ॥५४५॥

वेरग्गकरं जं वा वि, परिजितं बाहिरं च इतरं वा ।
सो तं गुणेइ सुत्तं, झाणसलद्धी उ झाएज्जा ॥५४६॥

वेरग्गकरं ज सुत्तं तं पढति, जहा तं सद्दं न सुणेति ।

ज वा वि सुट्ठु परिचियं अखलिय आगच्छति तं पुण अगबाहिर पण्णवणादि इतरं अंगपविट्ठं आयारादि जस्स साहुस्स एतेसिं अण्णतर आगच्छति सो तं गुणे ति सुत्तं । "झाणेव" त्ति अस्य व्याख्या-झाणसलद्धी झायति ॥५४६॥

"आवरणे सद्दकरणे य" त्ति –

दोसु वि अलद्धि कण्णावरेंति तह वि सवणे करे सद्दं ।
जह लज्जियाण मोहो णसति जयणातकरणं वा ॥५४७॥

"दोसु वि" त्ति झाणे पाढे वा जो अलद्धि कण्णा आवरति आवरेंति त्ति वुत्तं भवति । तह वि जइ सद्दं सुणेति ताहे सद्द करेति तहा जहा तेसिं लज्जियाण मोहो णासति – किमेय भो ! विगुत्ता ण पस्ससि अम्हे ! जइ तह ण ठाति तो जयणाए करेति । पेच्छ भो ! इंददत्ताइ सोमसम्मा इमो अम्ह पुरग्रो विगुत्तो अणायारं सेवति ॥५४७॥ गतो ततियभगो ।

इदाणिं पढमो भंगो भण्णति –

उभयो पडिबद्धाए, भयणा पन्नरसिगा तु कायव्वा ।
दव्वे पासवणम्मि य, ठाणे रूवे य सद्दे य ॥५४८॥

उभग्रो पडिबद्धा णाम दव्वेण य भावेण य, तत्थ पण्णरस भगा कायव्वा, इमेण पच्छद्धकमेण दव्वत्तो पडिबद्धा, णो भावतो पासवणादिसु, एस ण घडति उभयतो अप्रतिबद्धत्वात्, एवं अण्णे वि सोलस ण घडंति, उभयतो अप्रतिबद्धत्वादेव ॥५४८॥

जे पनरस उभयपडिबद्धा तेसु ठायमाणस्स इमे दोसा –

उभयो पडिबद्धाए, ठायंते आणमादिणो दोसा ।
ते चेव होंति दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥५४९॥

उभयतो दव्व-भावपडिबद्धाए ठायमाणस्स आणादिणो दोसा । जे य बितियततियभगेसु दोसा समुदिता ते पढमभंगे दोसा भवंति । जं तेसु बितियततियभगेसु अववातपद त चेव पढमभगे भवति ॥५४९॥ गम्रो पढमभंगो । सद्दं वा सोउणं "ति दार गतं" ।

"अइरित्ताए च उप्पता सद्दे" त्ति दारं प्राप्तं । अस्य व्याख्या –

जुत्तप्पमाण अतिरेग हीणमाणा य तिविध वसधी ।
अप्फुण्णमणप्फुण्णा, संबाधा चेव णायव्वा ॥५५०॥

वसही तिविधा – जुत्तप्पमाणा, अतिरित्तप्पमाणा, हीणप्पमाणा । जा साहूहिं संथारगप्पमाणं गेण्हमाणेहिं अप्फुण्णा वाविय त्ति वुत्तं भवति, सा जुत्तप्पमाणा । जा अणफुण्णा सा अतिरेगा, जत्थ संबाहाए ठाएंति सा हीणप्पमाणा णायव्वा ॥५५०॥

तीसु वि विज्जंतीसुं, जुत्तप्पमाणाए कप्पती ठाउं ।
तस्स असती हीणाए, अतिरेगाए य तस्सऽसती ॥५५१॥

एतासु तीसु वि विज्जंतीसु पढमं जुत्तप्पमाणाए ठायव्वं । तस्सासती हीणप्पमाणाए । तस्स असती अतिरेगप्पमाणाए ठायव्वं ॥५५१॥

तत्थ जुत्तप्पमाणाए हीणप्पमाणाए य सद्दस्स असंभवो । अइरित्तप्पमाणाए सद्दसभवो । जतो भणति –

अतिरित्ताए ठिताणं, इत्थी पुरिसो य विसयधम्मट्ठी ।
उज्जुगमणुज्जुगा वा, एज्जाही तत्थिमो उज्जू ॥५५२॥

अइरित्तप्पमाणाए ठिताणं इत्थी पुरिसो य विसयधम्मट्ठी तत्थागच्छेज्जा स्त्रीपरिभोगार्थीत्यर्थः । सो पुण पुरिसो दुविहो – उज्जू अणुज्जू वा आगच्छेज्जा, मायावी अमायावि त्ति वुत्तं भवति ॥५५२॥

अतिरित्तवसहिठिताणं जइ इत्थी पुरिसो य आगच्छेज्ज, तो इमा सामायारी –

पुरिसित्थी आगमणे, अवारणे आणमादिणो दोसा ।
उप्पज्जंती जम्हा, तम्हा तु निवारए ते उ ॥५५३॥

अइरित्तवसहीए जइ इत्थी पुरिसो य आगच्छति तो वारेयव्वा । अह न वारेति तो चउगुरुं । आणादिणो य दोसा भवंति । तम्हा दोसपरिहरणत्थं ताणि वारेयव्वाणि ॥५५३॥

"तत्थिमो उज्जु" त्ति अस्य व्याख्या –

अम्हे मो आदेसा, रत्तिं वुच्छा पभाए गच्छामो ।
एसा य मज्झभज्जा पुट्ठो पुट्ठो व सा उज्जू ॥५५४॥

जो इत्थिसहितो पुरिसो आगओ सो एवं भणेज्जा – "अम्हे मो आदेसा" पाहुण त्ति वुत्तं भवति, इह वसहीए रत्तिं वसिउं पभाए गच्छिस्सामो, सा य इत्थिया मज्झं भज्जा भवति । एवं पुच्छितो वा अपुच्छितो वा कहेज्जा उज्जू ॥५५४॥

अहवा इमो उज्जू.–

अण्णो वि होइ उज्जू, सब्भावे णेव तस्स सा भगिणी ।
तंपि हु भणंति चित्ते इत्थी वज्जा किमु सचेट्ठा ॥५५५॥

"अण्णो" त्ति अणेण पगारेणं उज्जू भवति। सो वि य पुच्छिओ वा भणति एस मे इत्थिगा भगिणी भवति। सा य तस्स परमत्थेणेव भगिणी "सब्भावेणे" त्ति वुत्तं भवति। "तं पि हु" त्ति तदिति तं भगिनिवादिनं ब्रुवंति "[1]अम्हं चित्तकम्मे वि लिहिया इत्थी वज्जणिज्जा, किं पुण जा सचेयणा, तो तुमं इओ गच्छाहि" अपि पदार्थे संभावने, किं संभावयति ? यदिति भगिनिवादिन एवं ब्रुवंति किमुत भार्यावादिनं "हु" यस्मादर्थेत्यर्थं ॥५५५॥

स भज्जावादी भणति "ण वट्टए अम्हं सह गिहत्थेहिं वसिउं"।

किं च –

बंभवतीणं पुरतो, किह मोहिह पुत्तमादिसरिसाणं।
ण वि भइणी इ जुज्जति, रत्तिं विरहम्मि संवासो ॥५५६॥

बंभव्वतं धरेति जे "बंभवती" ताण पुरओ अग्गउ त्ति वुत्तं भवति, "कह" केणप्पगारेण, "मोहिह" अणायारं पडिसेविस्सह, प्रायसो पिता पुत्रस्याग्रतो न अनाचारं सेवते। माउं वा।

अहवा "आदि" त्ति आदिसद्दाओ भाउं माउं पिउं वा। एवं तुमं पि पुत्तमादिसरिसाणं पुरतो कहं अणायारं पडिसेवसीत्यर्थः। जो भगिणिवादी सो एवं पण्णविज्जति "ण वि" पच्छद्धं। भगिण्या सह रात्रौ "विरहिते" अप्पगासे वसिउं न युज्यतेत्यर्थः ॥५५६॥

इअ अणुलोमण तेसिं, चउक्कमयणा अणिच्छमाणेहिं।
णिग्गमण पुव्वदिट्ठे ठाणं रुक्खस्स वा हेट्ठा ॥५५७॥

"इय" एवं, "अणुलोमणा" अणुण्णवणा पण्णवण त्ति, तेसिं कीरइ। पण्णविज्जंता वि जति णेच्छंति णिग्गंतुं, तदा "चउक्कमयणा" चउभंगो कज्जति—[2]पुरिसो भद्दगो, इत्थी वि भद्दिया। एवं चउभंगो। जं जत्थ भद्दतरं तं अणुलोमिज्जति। जइ णिग्गच्छति, तो रमणिज्जं। अह बितिय-ततिय-भंगेसु एगतरग्गाहतो अणिच्छंताणं, चउत्थे उभयओ अभद्रत्वात्। अणिग्गच्छताणं णिग्गमणं साहूणं "पुव्व दिट्ठे त्ति" जं पुव्वदिट्ठं सुण्णघरादि तत्थ ठायंति। सुण्णघरा अभावओ गामबहिया रुक्खहेट्ठा वि ठायंति, ण य तत्थ इत्थिसंसत्ताए चिट्ठंति ॥५५७॥

अह बहिया इमे दोसा –

पुढवी ओस सजोती, हरित तसा तेण उवधि वासं वा।
सावय सरीरतेणग, फरुसादी जाव ववहारो ॥५५८॥

बहिया गामस्स रुक्खहेट्ठाओ आगासे वा सचित्तपुढवी ओसा वा पडति, अण्णा वा सजोतिया वसही अत्थि, हरियकाओ वा, तसा वा पाणा, तहावि तेसु ठायंति, ण य तेहिं सह वसंति।

अहवा – बहिया उवहितेणा, वासं वा पडति, सीहाति सावयभयं वा, सरीरतेणा वा अत्थि, अण्णा

---

१ चित्त भित्तिं न निज्झाए – दश० अ० ८ गा० ५५/१।

२ (१) पुरिसो भद्दगो, इत्थी वि भद्दिया।
(२) पुरिसो भद्दगो, इत्थी अभद्दिया।
(३) इत्थी भद्दिया, पुरुसो अभद्दगो।
(४) पुरिसो अभद्दगो, इत्थी वि अभद्दिया।

य णत्थि वसही, ताहे ण वहिया वसंति, तत्थेवऽच्छति । फरुसवयणेहिं णिट्ठुरा बेंति, जाव ववहारो वि तेण समाणं कज्जति ।।५५८।।

एवं वा वीहावेंति –

अम्हेदाणि विसेहिमो, इड्ढिमपुत्त बलवं असहमाणो ।
णीहि अणिते बंधण, उवट्ठिते सिरिघराहरणं ।।५५९।।

साहू भणंति—अम्हे खमासीला, इदाणिं विविहं विशिष्टं वा सहेमो विसहिमो, जो तत्थ आगारवं साहू सो दाइज्जति, इमो साहू कुमारपव्वतितो, सहस्सजोही वा, मा ते पंतावेज्ज, इड्ढिपुत्तो वा राजादीत्यर्थः, बलवं सहस्सजोही, असहमाणो रोसा बला णीणेहिति, ततो वरं सयं चेव णिग्गतो । जति णिग्गतो तो लट्ठं, अह ण णीति तो सव्वे वा साहू एगो वा बलवं तं बंधति । इत्थी वि जइ तडफडेति तो सा वि बज्झति । "उवट्ठिए" त्ति गोसे, मुक्काणि राउले करणे उवट्ठिताणि तत्थ कारणियाण ववहारा दिज्जति, सिरिघराहरण-दिट्ठंतेण । जइ रण्णो सिरिघररयणावहारं करेंतो चोरो गहितो तो से तुब्भे कं दड पयच्छह ? ते भणंति—सिरं से घेप्पति, सूलाए वा भिज्जए । साहू भणंति—अम्ह वि एस रयणावहारी अव्वावातिओ मुहा मुक्को वंधणेण । ते भणंति—के तुब्भ रतणा ? साहू भणति—णाणादी, कह तेसिं अवहारो ? अणायारपडिसेवणातो अपथ्यानगमनेत्यर्थः ।।५५९।। गतो उज्जू ।

इदाणिं अणुज्जू भण्णति –

अम्हे मो आएसा, ममेस भगिणि त्ति वदति तु अणुज्जू ।
वसिया गच्छीहामो, रत्तिं आरद्ध निच्छुभणं ।।५६०।।

ताए घयसालाए ठिताणं सइत्थी पुरिसो आगतो भणति – अम्हे मो "आदेसा" – पाहुणा, एषा स्त्री मे भगिनी, न भार्या, एवं ब्रवीति अरिजु, इह वसित्ता रत्तिं पभाए गमिस्सामो । एवं सो अणुकूलछम्मेण ठिओ । "रत्तिं आरद्धे" त्ति रत्तिं सो इत्थियं पडिसेवेउमारद्धो तो वारिज्जति । तह वि अट्ठायमाणे णिच्छुभणं पूर्ववत् ।।५६०।।

णिच्छुब्भंतो वा रुट्ठो –

आवरितो कम्मेहिं, सत्तू इव उवट्ठिओ थरथरिंतो ।
मुंचति अ भिंडियाओ, एक्केक्कं भेऽतिवाएमि ।।५६१।।

"आवरिओ" प्रच्छादितः, क्रियते इति कर्म ज्ञानवरणादि, अहितं करोति, कर्मणा प्रच्छादित्वात् । कहं ? जेण साहूणं उवरिं सत्तू इव उवट्ठितो रोसेण थरथरेंतो कंपयंतो इत्यर्थः, वातितजोगेणं मुंचति [1]भिंडिया-ओ ताणि उ पोक्काउ त्ति वुत्तं भवति, भे युष्माकं एकैकं व्यापादयामीत्यर्थः ।।५६१।।

एवं तंमि विरुद्धे –

णिग्गमणं तह चेव उ, णिद्दोसं सदोसऽणिग्गमे जतणा ।
सज्झाए झाणे वा, आवरणे सद्दकरणे य ।।५६२।।

"णिग्गमणं" ताओ वहीहो, तह चेव जहा [2]पुव्वं भणियं, जति वहिया णिद्दोसं । अह सदोसं अतो अणिग्गमा तत्थेवऽच्छंता जयणाए अच्छति । का जयणा ? "सज्झाए" पच्छद्धं । [3]पूर्ववत् कण्ठ्यं ।।५६२।।

---

१ पूतकारा । २ गा० ५५७/३ । ३ गा० ५४५/३,४ ।

एवं पि जयंताणं कस्सति कामोदग्रो भवेज्जा, ग्रोइण्णे य इमं कुज्जा –

कोउहलं च गमणं, सिंगारे कुड्डछिद्दकरणे य ।
दिट्ठे परिणयकरणे भिक्खुणो मूलं दुवे इतरे ॥५६३॥
लहु गुरु लहुया गुरुगा, छल्लहु छग्गुरुयमेव छेदो य ।
करकम्मस्स तु करणे, भिक्खुणो मूलं दुवे इतरे ॥५६४॥

दो वि गाहाग्रो जुगवं गच्छति। कोउहल से उप्पण्णं "कहमणायार सेवंति ?" त्ति, एत्थ मासलहुं । ग्रह से ग्रभिप्पाग्रो उप्पज्जति "ग्रासण्णे गतुं सुणेमि"; ग्रचलमाणस्स मासगुरुं; 'गमण' ति पदभेदे कए चउलहुग्रं । सिंगारसद्दे कुड्डकडंतरे सुणेमाणस्स चउगुरुं । "करणादि" कुड्डछिद्दकरणे छल्लहु; तेण छिद्देण ग्रणायारं सेवमाणा दिट्ठा छग्गुरुं । करकम्म करेमि त्ति परिणते छेदो । ग्राढत्तो करकम्म करेउ मूलं भिक्खुणो भवति । 'दुवे" त्ति ग्रभिसेगायरिया, तेसिं "इयरे" त्ति ग्रणवट्ठपारंचिया ग्रतपायच्छित्ता भवति । हेट्ठा एक्केक्कं हुसति ।

ग्रहवा – कोऊग्रादिसु सत्तसु पदेसु मासगुरुविवज्जिता मासलहुगादि जहासंखं देया, सेस तहेव कठं ॥५६३–५६४॥

सीसो पुच्छति – कहं साहू जयमाणो एव ग्रावज्जति ?

भण्णति –

वडपादवउम्मूलण तिक्खमिव विजलम्मि वच्चंतो ।
सद्देहिं हीरमाणो, कम्मस्स समज्जणं कुणति ॥५६५॥

जहा वडपादग्रो ग्रणेगमूलपडिवद्धो गिरिणतिसलिलवेगेणं उम्मूलिज्जति एव साहू वि णतिपूरेण वा तिक्खेण कयपयत्तो वि जहा हरिज्जति, विगत जलं "विज्जलं" सिढिलकर्दमेत्यर्थः, तत्थ कयपयत्तो वि वच्चंतो पडति, एवं साहू वि ।

"सद्देहिं" पच्छद्धं – विसयसद्देहिं भावे हीरमाणे कम्मोवज्जणं करोतीत्युक्तम् ॥५६५॥ "[1]ग्रतिरित्तवसहीए" त्ति दारं गतं –

इदाणिं वहिया णिग्गतस्स दारं पत्तं –

वेयावच्चस्सट्ठा, भिक्खावियारातिणिग्गते संते ।
भूसणभासासद्दे, सुणेज्ज पडियारणाए वा ॥५६६॥

उवस्सयाग्रो वहिं णिग्गमो इमेहिं कारणेहिं – गिलाणस्स ग्रोसहपत्थभोयणादिनिमित्तं । एवमादि वेयावच्चट्ठा । "णिग्गग्रो", भिक्खायरियं वा णिग्गतो ग्रादिसद्दातो वियार-सज्झायभूमिं वा णिग्गतो समाणो भूसणसद्दं वा, भासासद्दं वा, परियारणासद्दं वा सुणेज्ज । पुरिसेण इत्थी परिभुज्जमाणा जं सद्दं करेति एस परियारणासद्दो भण्णति ॥५६६॥

तत्थ भुत्तऽभुत्ताणं संजमविराहणादोसपरिहरणत्थं इमं भण्णति –

भारो विलवियमेत्तं, [2]सव्वे कामा दुहावहा ।
तिविहम्मि वि सद्दम्मी, तिविह जतणा भवे कमसो ॥५६७॥

---

१ गा० ५१७/२ । २ उत्त० ग्रध्य० १३ गा०१६/४ ।

वलयादिभूसणसद्दे भूसणसद्दं वा आभरणभारो त्ति भण्णति। मित-मधुर-गीतादिभासासद्दे विलवियंति भण्णति प्रवसित-मृतभर्तारंगुणानुकीर्तनारोदिनीस्त्रीवत् । परियारसद्दे "सव्वे कामा दुहावह" त्ति दुक्खं आवहंतीति दुक्खावहा दुक्खोपार्जका इत्यर्थः । तिविह भूसणादिसद्दे एस जयणा भणिता जहाकमसो ॥५६७॥ "सद्दं वा सोऊणं" ति दारं गतं ।

इदाणिं "दट्ठूणं" ति दारं भण्णत्ति –

आलिंगणावतासण, चुंबण परितारणेतरं वा वि ।
सच्चित्तमचित्ताण व, दट्ठूणं उप्पता मोहो ॥५६८॥

पुरिसेणित्थी स्तनादिषु स्पृष्टा आलिगता, वाहाहिं अवतासिता, मुखेन चुंबिता, सागारियसेवणं "परियारणं" "इतरं" गुज्झप्पदेसो ; एताणि रूवाणि सचित्ताणि वा अचित्ताणि वा [1]चित्र-कर्मलेप्यादिषु दृष्ट्वा मोहोत्पत्तीत्यर्थः ॥५६८॥ "दट्ठुं" ति दारं गतं ।

इदाणिं "[2]सरिउं" त्ति दारं भण्णति –

हासं दप्पं च रतिं, किड्डं सहभुत्त आसिताइं च ।
सरिऊण कस्स इ पुणो, होज्जाही उप्पता मोहे ॥५६९॥

किंचि इत्थियाहिं समं हसितं आसी । इत्थीहिं सह हत्थो (रंडा रती) दप्पो ।

अहवा – णिद्धगादि भारियाए परिहासेण बला थणोरुघट्टणं दप्पो । रतीं ति वा कामो भुत्तो, किड्डं पासगादिभिः, एगभायणे सहभुत्तं, आसियं एगासणे णिसण्णाणि तुयट्टाणि वा ठिताणि । एवमादियाणि पुव्वभुत्ताणि सरिऊण कस्स ति साहुस्स मोहोदओ होज्ज ॥५६९॥

जत्थ दट्ठूणं मोहो उप्पज्जति, तत्थिमा जतणा ––

दिट्ठीपडिसंहारो, दिट्ठे सरणे विरग्गभावणा भणिता ।
जतणा सणिमित्तम्मी होतऽणिमित्ते इमा जतणा ॥५७०॥

आलिंगणावतासणादिसु दिट्ठीपडिसंहारो कज्जति । दिट्ठेसु हासदप्परइमाइसु पुव्वभुत्तेसु सवणे वेरग्गमादियासु भावणासु अप्पाणं भावेति । भणिया जयणा सणिमित्तम्मि । सनिमित्तमोहोदओ गओ ।

इदाणिं अणिमित्तं भण्णति । होइ अणिमित्ते इमा परूवणा जयणा य ॥५७०॥

अणिमित्तस्स तिविहो उदओ – कम्मओ आहारओ सरीरओ य । तत्थ कम्मोदओ इमो –

छायस्स पिवासस्स व, सहाव गेलण्णतो वि किसस्स ।
वाहिरणिमित्तवज्जो, अणिमित्तुदओ हवति मोहे ॥५७१॥

"छाओ" भुक्खिओ, "पिवासितो" तिसितो, सहावतो किसो सरीरेण गेलण्णतो वा किसो, एरिसस्स जो मोहोदओ, वाहिरं सद्दादिगं णिमित्तं, तेण वज्जितो अणिमित्तो एस मोहोदओ ॥५७१॥ कम्मोद-उत्ति गत्तं ।

---

१ आचा० श्रुत० २ चू० २ सू० १७१ । २ गा० ५१६/२ ।

इदाणि [1]आहारोदओ त्ति भण्णति –

आहारउब्भवो पुण, पणीतमाहारभोयणा होति ।
वाईकरणाऽऽहरणं, कल्लाणपुरोध उज्जाणे ॥५७२॥

आहारपच्चओ मोहुब्भवो "पुण" विसेसणे, "पणीतं" गलतणेहं, आहार्यंते इति आहारः, प्रणीताहारभोजनाद् मोहोद्भवो भवतीत्यर्थ. । कथं ? उच्यते "वातीकरण" त्ति । पणीयाहारभोयणाओ रसादि वुड्ढी जाव सुक्कंति ; सुक्कोवचया वायुप्रकोपः, वायुप्रकोपाच्च प्रजननस्य स्तब्धताकरणं, अतो भण्णति वाईकरणं ।

अहवा पणीयाहारो वाजीकरणं दप्पकारकेत्यर्थः ।

इहोदाहरणं –

"कल्लाण पुरोहउज्जाणे" त्ति कंपिल्लपुरं णगर । ब्रह्मदत्तो राजा । तस्स कल्लाणगं णाम आहारो । सो वरिसेण णिप्फिज्जति । तं च इत्थिरयणं चक्की य भुंजंति । तव्वइरित्तो अण्णो जइ भुंजति, तो उम्माओ भवति । पुरोहितो य तमाहारमभिलसति । पुणो पुणो रायाणं भणति – चिरस्स ते रज्ज लद्धं, अदिट्ठकल्लाणोसि, जेण सारीरियमाहारं ण देसि कस्स ति । राइणा रूसिएण भणिओ – कल्लं णातित्थिवग्ग सहिओ णिमंतिओ सि । राइणा उज्जाणे जेमाविओ । तेहिं मोहुदओ गोधम्मो समाचरितो । एवं पणीयाहारेण मोहुदओ भवति त्ति ॥५७२॥ "आहारोदउ" त्ति गत ।

इदाणि [2]"सरीरोदउ त्ति भणति –

मंसोवचया मेदो, मेदाओ अट्ठि-मिंज-सुक्काणं ।
सुक्कोवचया उदओ, सरीरचयसंभवो मोहे ॥५७३॥

आहारातो रसोवचओ । रसोवचयाओ रुहिरोवचओ । रुहिरोवचया मंसोवचओ । मंसोवचया मेदोवचओ । एवं कमेण "मेदो" वसा "अट्ठी" हड्डं, मिज्जं मेज्जुल्लउ त्ति वुत्तं भवति, ततो सुक्कोवचओ, सुक्कोवच्चयाओ मोहोदओ भवति । एवं सरीरोवचयसभवो मोहोदओ भवतीत्यर्थः ॥५७३॥ गतं "सरीरोदए" त्ति दार । एव सणिमित्तस्स अनिमित्तस्स मोहुदयस्स उप्पण्णस्स झाणज्झयणादीहिं अहियासणा कायव्वा । अट्ठायमाणे –

णिव्वितिगणिव्वले ओमे, तह उद्धट्ठाणमेव उब्भामे ।
वेयावच्चा हिंडण, मंडलि कप्पट्ठियाहरणं ॥५७४॥

णिव्वीतियमाहारं आहारे ति । तह वि अठायमाणे णिव्वलाणि मंडगचणगादी आहारेति । तह वि अठायमाणे ओमोदरियं करेति । तह वि ण ठाति चउत्थादि-जाव-छम्मासियं तवं करेति ; पारणए णिव्वलमाहारमाहारेति । जइ उवसमति तो सुदरं । अह णोवसमति "ताहे" उद्धट्ठाण महंतं करेति कायोत्सर्गमित्यर्थः । तह वि अठायमाणे उब्भामे भिक्खायरिए गच्छति ।

अहवा – साहूण 'वीसामणा" ति वेयावच्चं कराविज्जति । तह वि अठायमाणे देसहिंडगाणं सहाओ दिज्जति । एत्थ हेट्ठिल्लपया उवरुवरि दट्ठव्वा, एव अगीतत्थस्स । गीतत्थो पुण सुत्तत्थमडलिं दाविज्जति ।

---

१ गा० ५१६ । २ गा० ५१६ ।

अहवा – गीतत्थस्स वि णिव्वितिगादि विभासाए दट्ठव्वा ।

नोदक आह – जति तावागीयत्थस्स निव्वीयादि तवविसेसा उवसमो ण भवति तो गीयत्थस्स कह सीयच्छायादिठियस्स उवसमो भविस्सति ?

आचार्याह – पैशाचिकमाख्यानं श्रुत्वा गोपायनं च कुलवध्वास्संयम योगैरात्मा निरन्तरं व्यापृतः कार्यः

"कप्पठियाहरणं" ति –

एगस्स कुडुंबिगस्स धूया णिक्कम्मवावारा सुहासणत्था अच्छति । तस्स य अब्भंगुव्वट्टण-ण्हाण-विलेवणादिपरायणाए मोहुब्भवो । अम्मधातिं भणति । आणेहि मे पुरिसं । तीए अम्मधातीए माउए से कहियं । तीए वि पिउणो । पिउणा वाहिरत्ता भणिया । पुत्तिए ! एताओ दासीओ सव्वधणादि अवहरंति, तुमं कोठायारं पडियरसु, तह त्ति पडिवन्नं, सा-जाव-अण्णस्स भत्तयं देति, अण्णस्स विंत्ति, अण्णस्स तदुला, अण्णस्स आयं देक्खति, अण्णस्स वयं, एवमादिकिरियासु वावडाए दिवसो गतो । सा अतीव खिण्णा रयणीए णिवण्णा अम्मधातीते भणिता – आणेमि ते पुरिसं ? सा भणेति – ण मे पुरिसेण कज्जं, णिद्दं लहामि । एव गीयत्थस्स वि सुत्तपोरिसिं देंतस्स अतीव सुत्तत्थेसु वावडस्स कामसंकप्पो ण जायइ । भणियं च "[1]काम ! जानामि ते मूलं" सिलोगो ॥५७४॥

एवं तु पयतमाणस्स उवसमे होति कस्सइ ण होति ।
जस्स पुण सो ण जायइ, तत्थ इमो होइ दिट्ठंतो ॥५७५॥

"एवं" णिव्वीतियादिप्पगारेण जयमाणस्स य साहुस्स उवसमो वि होति, कस्स वि ण होति । जस्स पुण साहुस्स सो मोहोवसमो ण जायति; तत्थ अणुवसमे इमो दिट्ठतो कज्जति ॥५७५॥

तिक्खम्मि उदयवेगे, विसमम्मि वि विज्जलम्मि वच्चंतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जध पावती पडणं ॥५७६॥

गिरिणईए पुण्णाए कयपयत्तो वि पुरिसो तिक्खेण उदगवेगेण हरिज्जति; एवं निम्नोन्नतं विसमं विगतजलं विज्जलं एतेसु कयपयत्तो वि पडणं पावति ॥५७६॥

अस्य दृष्टान्तस्योपसंहारः क्रियते –

तह समण सुविहियाणं, सव्वपयत्तेण वी जयंताणं ।
कम्मोदयपच्चइया, विराधणा कस्सइ हवेज्जा ॥५७७॥

"तह" तेण प्रकारेण, समो मणो समणो, सोभणं विहियं आचरणमित्यर्थः, सव्वपयत्तेण णिव्वीतियाति वा चणाति जोगेण जयंताणं वि कर्महेतुकचारित्रविराहणा कस्यचित् साधोर्भवेदित्यर्थः । एवं सो उदिण्णमोहो अदढधिती असमत्थो अहियासेउं ताहे हत्थकम्मं करेति ॥५७७॥

पढमाए पोरिसीए, बितिया ततिया तहा चउत्थीए ।
मूलं छेदो छम्मासमेव चत्तारिया गुरुगा ॥५७८॥

---

१ महाभारते ।

पढम-बितिय-ततिय-चउत्थीए पोरिसीए य जहक्कमेण हत्थकम्मं करेंतस्स पच्छित्तं – मूल छेदो छग्गुरु चउग्गुरुगा य ॥५७८॥

अस्या गाथाया व्याख्या –

णिसिपढमपोरिसुब्भव, अदढधिती सेवणे भवे मूलं ।
पोरिसि पोरिसि सहणे, एक्केक्कं ठाणगं हसति ॥५७९॥

रातो पढमपोरिसीए मोहुब्भवो जाओ, तम्मि चेव पोरिसीए अदढधितिस्स हत्थकम्मं करेंतस्स मूलं भवति । अह पढमपोरिसिं सहिउ बितियपोरिसिए हत्थकम्मं करेति छेदो भवति । अह दो पोरिसिए सहिउं ततिए पोरिसिए हत्थकम्म करेति छग्गुरुगा । अह तिण्णि पोरिसिओ अहियासेउ चउत्थे पहरे हत्थकम्मं करेति ङ्का । एवं पोरिसिहाणीए स्थानह्रासो भवतीत्यर्थः ॥५७९॥

बितियम्मी दिवसम्मि, पडिसेवंतस्स मासितं गुरुगं ।
छट्ठे पच्चक्खाणं सत्तमए होति तेगिच्छं ॥५८०॥

एव रातीए चउरो पहरे अहियासेउ बितियदिवसे पढमपोरिसीए मासगुरुं । एव पचमं पायच्छित्तट्ठाण ।

एवं पडिसेविता अपडिसेवित्ता वा अण्णस्स साहुस्स कज्जे कहेज्जा । ते य कहिते इमेरिसमुवदिसेज्जा छट्ठे पच्चक्खाणं "पच्छद्धं" ॥५८०॥ (व्याख्या अग्रेतनासु गाथासु)

पडिलाभणऽट्ठमम्मी, णवमे सड्ढी उवस्सए फासे ।
दसमम्मि पिता पुत्ता, एक्कारसम्मि आयरिया ॥५८१॥

"छट्ठे पच्चक्खाणं" एतप्पभितीण इमं पच्छित्तं –

छट्ठो य सत्तमो या, अथसुद्धा तेसु मासियं लहुगं ।
उवरिल्ले जं भणंति, बुड्ढस्सऽवि मासियं गुरुगं ॥५८२॥

छट्ठसत्तमा अहासुद्धा णाम न दोषयुक्तं उपदेशं ददतीत्यर्थः । जे पुण ण गुरूपदेशो सेच्छाए भणति तेण तेसिं मासलहुं पायच्छित्तं । उवरिल्ले त्ति पडिलाभणादि तिण्णि "ज भणति" त्ति सदोषमुपदेश ददति तेण तेसिं तिण्ह वि मासगुरुं पच्छित्तं । पिता वुड्ढो तस्स वि मेहुणपल्लि णयंतस्स मासगुरु "अवि" संभावणे, अण्णस्स वि ॥५८२॥

"[1]छट्ठे पच्चक्खाणं" त्ति अस्य व्याख्या –

संघाडमादिकधणे, जं कतं तं कतमिदाणि पच्चक्खं ।
अविसुद्धो दुट्ठवणो, ण सुज्झ किरिया से कातव्वा ॥५८३॥

संघाडइल्लसाहुस्स अण्णस्स वा कहिय – जहा मे हत्थकम्म कत । सो भणति – ज कतं त कतमेव, इदाणिं भत्तं पच्चक्खाहि, किं ते भट्ठपइण्णस्स जीविएणं ।

१ गा० ५८०/३, उत्तरार्धं ।

"[1]सत्तमतो होइ तेगिच्छं" अस्य व्याख्या –

"अविसुद्धो" पच्छद्धं। जहा अविसुद्धो दुट्ठवणो रप्फगादि, किरियाए विणा ण विसुज्झति-ण णप्पति, एवं तुभए जं कयं तं कतमेव इदाणिं णिव्वीतियातिकिरियं करेहि जेणोवसमो भवति ॥५८३॥

"[2]पडिलाभऽट्ठमे" अस्य व्याख्या –

पडिलाभणा तु सड्ढी, कर सीसे वंद ऊरु दोच्चंगे।
मूलादि उम्मज्जण, ओकड्ढण सड्ढिमाणेमो ॥५८४॥

तथैवाख्याते इदमाह "सड्ढी" श्राविका, सा पडिलाभाविज्जति। तीए पडिलाभंतीए ऊरुए ठिए पात्रे अहाभावेण अब्भुवेच्च वा चालिते ऊरुअं मज्झेण ओगलति दोच्चगाती तओ सा सड्ढी करेण फुसति, सीसेण वंदमाणी पादे फुसेज्जा। इत्थीफासेण य बीएणिसग्गो हवेज्जा ततोवसमो स्यात्।

"[3]णवमे सड्ढी उवस्सए" अस्य व्याख्या "मूलादि" पच्छद्धं। मूलं आदिग्गहणातो गडं अण्णतरं वा तदणुरूव रोगमुक्कडं कज्जति, ततो सड्ढी आणिज्जति उवस्सयं, तस्स वा घरे गम्मइ, ततो सा उम्मज्जति-स्पृशति उकड्ढणं गाढतर, तेण इत्थिसंफासेण बीयणिसग्गो भवे ॥५८४॥

"[4]दसमम्मि पितापुत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

सण्णातपल्लि णेहिण, मेहुणि खुड्डंतणिग्गमोवसमो।
अविधितिगिच्छा एमा, आयरियकहणे विधिक्कारे ॥५८५॥

तथैवाख्याते दसमे ब्रवीति खंतं भणाति – तुब्भे दो वि पितापुत्ता सण्णायपल्लिं गच्छह सण्णायग-गामं ति वुत्तं भवति, तत्थ "मेहुणिया" माउलदुहिया, "खुड्डंत" त्ति उत्प्रासवयणेहिं भिण्णकहाहिं परोप्परं हत्थसफरिसेण कीडंतस्स बीयणिसग्गो, ततोवसमो भवति। अविधितिगिच्छा एसा भणिया।

"[5]इक्कारसमंमि आयरिया" अस्य व्याख्या—"आयरियकहणे विधिक्कारो"। तह चेव अक्खाते भणइ तुमं आयरियाणं कहेहि, ज ते भणंति तं करेहि एस एक्कारसमे विहीए उवएसो। तेण सो णिद्दोसो ॥५८५॥

अहवा कोति भणेज्जा – इमेहिं हत्थकम्म कारविज्जति –

[6]सारुवि-सावग-गिहिगे, परतित्थि-णपुंसए य सुयणे य।
चतुरो य होंति लहुगा, पच्छाकम्मम्मि ते चेव ॥५८६॥

सारूविगेण, सारूविगो सिद्धपुत्तो, सावगेण वा, गिहिणा मिच्छादिट्ठिणा वा, परतित्थिएण वा, "नपुंसए सुयणेय" त्ति अण्णे एए चेव चउरो पुरिसनपुंसया, एतेहिं हत्थकम्म कारविज्जति। एतेहिं कारवेमाणस्स पत्तेयं चउलहुया भवति। विसेसिया [7]अंतपदे दोहि वि गुरुगा। (एवं पुरिसनपुंसगेसु वि)। अह ते हत्थकम्मं करेउं उदगेण हत्था धोयंति एयं पच्छाकम्मं। एत्थ से चउलहुयं। ते चेव चउलहुगा भूवतोऽपि भवन्तीत्यर्थः।

अहवा – "नपुंसए" त्ति काउं चउगुरुअं। एस अण्णो आदेसो ॥५८६॥

---

१ गा० ५८०/४। २ गा० ५८१/१। ३ गा० ५८१/२। ४ गा० ५८५/३। ५ गा० ५८५/४।
६ बृह० उद्दे० ७ भाष्यगाथा ४९३९। ७ "तपः कालाभ्याम्"।

अहवा – कोति भणिओ अभणितो वा इत्थियाहिं हत्थकम्म कारवेज्ज ।

एसेव कमो णियमा, इत्थीसु वि होति आणुपुव्वीए ।
चउरो य हुंति गुरुगा, पच्छाकम्मंमि ते लहुगा ॥५८७॥

एसेव "कमो" पकारो जो पुरिसाण सारूवियादी भणितो "णियमा" अवस्सं सो चेव पगारो इत्थीसु वि भवति । णवरं – चउगुरुगा भवति । तह चेव विसेसिता । पच्छकम्मि ते चेव चउलहुया भवंति ॥५८७॥

इदाणिं ज [1]सुत्ते भणियं "करेंत वा सातिज्जति" त्ति अस्य व्याख्या –

अणुमोदणकारावण, दुविधा साइज्जणा समासेणं ।
अणुमोदणे तु लहुओ, कारावणे गुरुतरो दोसो ॥५८८॥

सातिज्जति स्वादयति, कर्मबन्धमास्वादयतीत्यर्थः, सा सातिज्जणा दुविहा – अणुमोयणे कारावणे य । "समासो" संक्षेप ।

सीसो पुच्छत्ति – एतेसिं कारावण अणुमतीणं कयरम्मि गुरुतरो दोसो भवति ?

आचार्याह – "अणु" पच्छद्धं । अणुमोदणे लहुतरो दोसो, कारावणे गुरुतरो दोसेत्यर्थः ॥५८८॥

कारावण अणुमतीणं किं सरूवं ? भण्णति –

कारावणमभियोगो, परस्स इच्छस्स वा अणिच्छस्स ।
काउं सयं परिणते, अणिवारण अणुमती होइ ॥५८९॥

एवं भणति – तुमं अप्पणो य अण्णस्स वा हत्थकम्मं करेहि त्ति, आत्मव्यतिरिक्तस्य परस्यैवं इच्छस्स वा अणिच्छस्स वा बलाभिओगा हत्थकम्मं करावयतो कारावणा भणति त्ति । इमं अणुमतिसरूवं- "काउ" पच्छद्धं जो सयं अप्पणो हत्थकम्मं काउं परिणतो त अनिवारेंतस्स अणुमती भवति ॥५८९॥
भणितं साधूण ।

इदाणिं संजतीणं भण्णति –

एसेव कमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होति कायव्वो ।
पुव्वे अवरे य पदे, जो य विसेसो स विण्णेओ ॥५९०॥

एसेव "कमो" पगारो, संजतीण वि "णियमा" अवश्य निर्ग्रन्थीना भवतीत्यर्थः । "पुव्वपदं", उस्सग्गपदं, "अवरपद" अववादपदं तेसु जो विसेसो सो विण्णेयो ॥५९०॥

इमं पच्छित्तं –

दोण्हं पि गुरू मासो, तवकालविसेसितस्स वा लहुओ ।
अंगुलिपादसलाया दिओ विसेसोत्थ पुरिसा य ॥५९१॥

"दोण्ह पि" त्ति – साहु साहुणीणं ।

---

1 प्रथम सूत्रे ।

अहवा – कारावणे अणुमतीते य मासगुरू पच्छित्तं ।

अहवा – कारावगस्स मासलहु तवगुरुगं । अणुमतीते य मासगुरू कालगुरुं । इमो पुण संजतीणं हत्थकम्मकरणं विसेसो, अंगुलीए वा हत्थकम्मं करेइ, पादे वा पण्हियपदेसे, अण्णतर दोद्धियणालादि वधिउं करेति । अण्णस्स वा पायंगुट्ठगेण पलंबगेण वा अण्णतराए वा कट्ठसलागाए, एस विसेसो । "पुरिसा य" जहा पुरिसाण इत्थीओ तहा ताण पुरिसा । गुरुगादित्यर्थः ॥५६१॥

जे भिक्खू अंगादाणं कट्ठेण वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

"अंगं" सरीरं सिरमादीणि वा अंगाणि, तेसिं आदाणं अंगादाणं प्रभवो प्रसूतिरित्यर्थः । तं पुण अंगादाणं मेढ्ं भणति। तं जो अण्णतरेण कट्ठेण वा "कलिंचो" वसकप्परी, "अंगुली" पसिद्धा, वेत्रमादि सलागा, एतेहिं जो संचालेति साइज्जति वा तस्स मासगुरुगं पच्छित्तं ।

इदाणिं णिज्जुत्तीए भणति –

अंगाण उवंगाणं, अंगोवंगाण एयमादाणं ।
एतेणंगातताणं, अणातणं वा भवे बितियं ॥५६२॥

अंगाणि अट्ठ – सिरादी, "उवंगा" कण्णादी, अंगोवंगा णखपव्वादी, एतेसिं "एयं आदाणं" कारण-मिति । एतेण एयं अंगादाणं भण्णति ।

अहवा – अणायतणं वा भवे बितियं णाम ॥५६२॥

"अंगाणं" ति अस्य व्याख्या –

सीसं उरो य उदरं, पट्ठी बाहा य दोण्णि ऊरूओ ।
एते अट्ठंगा खलु, अंगोवंगाणि सेसाणि ॥५६३॥

"सिरं" प्रसिद्धं, "उरो" स्तनप्रदेशः, "उदरं" पेट्टं, "पट्ठी" पसिद्धा, दोण्हि बाहातो, दोण्हि ऊरूओ । एताणि अट्ठगाणि । "खलु" अवधारणे भणितः । अवसेसा जे ते उवंगा अंगोवगा य ॥५६३॥

ते इमे य –

होंति उवंगा कण्णा, णासऽच्छी जंघ हत्थपाया य ।
णह केस मंसु अंगुलि, तलोवतल अंगुवंगा तु ॥५६४॥

कण्णा, णासिगा, अच्छी, जंघा, हत्था, पादा, य एवमादि सव्वे उवगा भवति । णहा वाला श्मश्रु अंगुली हस्ततलं, हत्थतलाओ समंता पासेसु उण्णया उवतलं भण्णाति । एते नखादि सव्वे अगोवंगा इत्यर्थः ॥५६४॥

तस्स सचालणसंभवो इमो –

संचालणा तु तस्सा, सणिमित्तऽणिमित्त एतरा वा वि ।
आत-पर-तदुभए वा, अणंतर परंपरे चेव ॥५६५॥

तस्ये ति मेढ्रस्य संचालणा सणिमित्ते मोहोदए अनिमित्ते वा। सणिमित्ते "सद्दं वा सोउणं, दट्ठु सरिउं व पुव्वभुत्ताइ [1]पूर्वसूत्रे यथा, तथा व्याख्यातव्यमिति। अनिमित्ते "उदयाहारे सरीरे य" इदमपि प्रथमसूत्र एव व्याख्यातव्यम्। "इतरा वा वि" त्ति सणिमित्ता णिमित्तवज्जा। सामण्णेण सव्वावि चालणा तिविधा–अप्पाणेण परेण वा उभएण वा। एक्केक्का दुविधा–अणतरा परपरा वा। अणतरेण हत्थेण, परपरेण कट्ठादिणा ॥५९५॥

"[2]एतरा वा वि" त्ति अस्य व्याख्या –

उट्ठ-णिवेसुल्लंघण-उव्वत्तण-गमणमादिए इतरा।
ण य यट्ठणवोसिरितुं, चिट्ठति ता णिप्पगलं जाव ॥५९६॥

उट्ठेंतस्स, णिसीएंतस्स वा, लंघणीयं वा उल्लघेंतस्स सुत्तस्स वा, उव्वत्तणादि करेंतस्स गच्छंतस्स वा, आदिसद्दातो पडिलेहणादि किरियासु। एवमादि इतरा सचालणा। सण्णं काइय वा वोसिरिउ न संचालेति। काइयपडिसाडणणिमित्तं ताव चिट्ठइ जाव सय चेव णिप्पगलं। अणतरपरंपरेण सचालेमाणस्स मासगुरू आणादिणो य दोसा भवति ॥५९६॥

जे भिक्खू अंगादाणं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

"सवाहति" एक्कसि, "परिमद्दति" पुणो पुणो, सा संवाहणा सणिमित्ता वा अणिमित्ता वा पूर्ववत्। आणादिविराधणा सच्चेव।

जे भिक्खू अंगादाणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीए वा [3]अब्भंगेज्ज मक्खेज्ज वा अब्भंगेतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

"तेल्लघृता" पसिद्धा, वसा अयगर-मच्छ-सूकराणं अब्भगेति एक्कसि, "मक्खे" ति पुणो पुणो।

अहवा – थेवेण अब्भगणं, बहुणा मक्खणं, उवट्टणासूत्रे धोवणासूत्रे सणिमित्त अणिमित्ता य पूर्ववत्, साइज्जणा तहेव, आणातिविराहणा पूर्ववत्।

जे भिक्खू अंगादाणं कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ परिवट्टेइ वा, उव्वट्टेंतं वा परिवट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

"कक्कं" उव्वलणय, द्रव्यसयोगेण वा कक्कं क्रियते, किंचिल्लोद्दं (लोध्रं) हट्टद्रव्य, तेण वा उव्वट्टे ति, पद्मचूर्णेन वा, "ण्हाण" ण्हाणमेव।

अहवा – उवण्हाणयं भण्णति, तं पुण माषचूर्णादि, सिणाणं-गधियावणे अंगाघसणयं वुच्चत्ति, वण्णओ जो सुगधो चंदणादिचूर्णानि जहा वड्ढमाणचुण्णो पडवासवासादि वा, सनिमित्तऽनिमित्ते तहेव उव्वट्टे ति एक्कसि, परिवट्टे ति पुणो पुणो।

जे भिक्खू अंगादाणं सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

---

१ गा० ५१६/१-२। २ गा० ५९५/२। ३ अभ्यग=मालिश।

सीतमुदकं सीतोदकं, "वियडं" ववगयजीवियं, उसिणमुदकं उसिणोदकं, "वियडं" च ववगयजीवियं, "उच्छोले ति" सकृत्, "पधोवणा" पुणो पुणो ।

जे भिक्खू अंगादाणं णिच्छल्लेति, णिच्छल्लेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

णिच्छल्ले ति त्वचं अवणेति, महामणिं प्रकाशयतीत्यर्थः ।

जे भिक्खू अंगादाणं जिंघति जिंघंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जिघ्रति नासिकया आघ्रातीत्यर्थः । हत्थेण वा मलेऊणं लंवणं च जिंघति ।

एतेसिं संचालणादीणं जिंघणावसाणाणं सत्तण्हवि सुत्ताणं इमा सुत्तफासविभासा –

संवाहणमब्भंगण, उव्वट्टण धोवणे य एस कमो ।
णायव्वो णियमा तु, णिच्छलण-जिंघणाए य ॥५६७॥

संवाहणा सूत्रे अब्भंगणासूत्रे उव्वट्टणासूत्रे धोवणासूत्रे एस गमो त्ति – जो संचालणासूत्रे भणिओ सो चेव य प्पगारो णायव्वो "णियमा" अवश्यं णिच्छल्लणजिंघणासूत्रे च ॥५६७॥

एतेसु चेव सत्तसु वि सुत्तेसु इमे दिट्ठंता जहक्कमेण –

सीहाऽऽसीविस-अग्गी, भल्ली वग्घे य अयकर-णरिंदे ।
सत्तसु वि पदेसेते, आहरणा होंति णायव्वा ॥५६८॥

संचालणासुत्ते दिट्ठंतो – सीहो सुत्तो संचालितो जहा जीवियंतकरो भवति । एवं अंगादाणं संचालियं मोहुब्भवं जणयति । ततो चारित्तविराहणा । इमा आयविराहणा – सुक्कक्खएण मरेज्ज । जेण वा कट्ठाइणा संचालेति तं सविसं उमुत्तिल्लयं वा खयं वा कट्ठेण हवेज्जा ।

संवाहणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – जो आसीविसं सुहसुत्तं संबोहेति सो विबुद्धो तस्स जीवियंतकरो भवति । एवं अंगादाणं पि परिमद्दमाणस्स मोहुब्भवो, ततो चारित्तजीवियविणासो भवति ।

अब्भंगणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – इयरहा वि ताव अग्गी जलति किं पुण घतादिणा सिच्चमाणो । एवं अंगादाणे वि मक्खिज्जमाणे सुट्ठुतरं मोहुब्भवो भवति ।

उव्वट्टणासुत्ते इमो दिट्ठंतो "भल्ली" शस्त्रविशेषः, सा सभावेण तिण्हा किमंग पुण णिसिया । एवं अंगादाणसमुत्थो सभावेण मोहो दिप्पति, किमंग पुण उव्वट्टिते ।

उच्छोलणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – एगो वग्घो, सो अच्छिरोगेण गहिओ, संबद्धा य अच्छी, तस्स य एगेण वेज्जेण वडियाए अक्खीणि अंजेऊण पउणीकताणि, तेण सो चेव य खद्धो। एवं अंगादाणं पि सो (सुट्ठु) इतर चारित्रविनाशाय भवतीत्यर्थः ।

णिच्छल्लणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – जहा अयगरस्स सुहप्पसुत्तस्स मुहं वियडेति, तं तस्स अप्पवहाय भवति । एवं अंगादाणं पि णिच्छल्लियं चारित्रविनाशाय भवति ।

जिंघणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – "णरिंदे" त्ति । एगो राया तस्स वेज्जपडिसिद्धे अंबए जिंघमाणस्स अंबट्ठी वाही उद्धाइतो, गंधप्रियेण वा कुमारेणं गंधमग्घायमाणेण अप्पा जीवियाओ भंसिओ । एवं अंगादाणं जिंघमाणो संजमजीवियाओ चुओ अणाइयं च संसारं भमिस्सति त्ति । सत्तसु वि पदेसु एते आहरणा भवंतीत्यर्थः ॥५६८॥ भणिओ उस्सग्गो ।

इदाणिं अववातो भण्णति –

वितियपदमणप्पज्झे, अपदंसे मुत्तसक्कर-पमेहे ।
सत्तसु वि पदेसेते वितियपदा होंति णायव्वा ॥५९९॥

"वितियपदं" अववायपद अणप्पज्झो अनात्मवश. ग्रहगृहीत इत्यर्थः । सो संचालण- ... "तदस्सियाणं" ति— "गायए" पच्छद्धं । ...नं प्रत्यनीका- ...षा कता करेज्जा । अपदंसो-पित्तारुअं, मुत्तसक्करा पाषाणकः, पमेहो रोगो सतत काथियं ज्झरंतं अच्छति । पदेसु सत्तसु वि जहासंभव भाणियव्वा ॥५९९॥ भणिय संजयाण ।

इदाणिं संजतीण –

एसेव गमो णियमा, संचालगवज्जितो उ अज्जाणं ।
संवाहणमादीसुं, उवरिल्लेसुं छसु पदेसुं ॥६००॥

एमेव प्पगारो सव्वो णियमा संचालणासुत्तविवज्जिओ संवाहणादिसु उवरिल्लेसु छसु वि सुत्तेष्वित्यर्थ. ॥६००॥

जे भिक्खू अंगादाणं अण्णयरंसि अचित्तंसि ... सुक्कपोग्गले णिग्घाएति निग्घायंतं वा सातिज्जति ॥सू०

अन्नयर णाम बहुणं परूवियाणं ... तरंसि अणुप्पवेस... पवेसिऊण सुक्कपोग्गले [१]णिग्घाएति ... , सच्छिद्रअंणतरे अचित्त नाम जीव-विरहितं, सवतीति सोत तत्र अंगाद...

इदाणिं ... ज्जुत्ती –

अच्चित्तसोत तं पुण, देहे पडिमाजुतेतरं चेव ।
दुविधं तिविधमणेगे, एक्केक्के तं पुणं कमसो ॥६०१॥

"अच्चित्त" जीवरहित "सोतं" छिद्रं, पुणसद्दो भेदप्पदरिसणे, तं अचित्तसोतं तिविहं – देहजुयं पडिमाजुयं चेयरं च । एक्केक्कस्स पुणो इमे भेदा कमसो दट्ठव्वा – देहजुत्तं दुविह, पडिमाजुत्तं तिविहं, इतरं अणेगहा ॥६०१॥

तत्थ जं देहजुअं तं दुविहं इमं –

तिरियमणुस्सित्थीणं, जे खलु देहा हवंति जीवजढा ।
अपरिग्गहेतरा वि य, तं देहजुतं तु णायव्वं ॥६०२॥

तिरियइत्थीणं मणुयइत्थीणं जे देहा जीवजढा भवन्ति, "खलु" अवधारणे, ते पुण सरीरा अपरिग्गहा "इतरा" सपरिग्गहा, सचेतणं सपरिग्गहं अपरिग्गह उवरि वक्खमाणं भविस्सति । एयं देहजुतं भवतीत्यर्थः ॥६०२॥

इदाणिं पडिमाजुत्त तिविहं परूविज्जति –

तिरियमणुयदेवीणं, जा य पडिमा [३]अओ सन्निहिओ ।
अपरिग्गहेतरा वि य, तं पडिमजुतं तु णायव्वं ॥६०३॥

---

१ पूर्वोक्तेषु । २ गालयतीत्यर्थं । ३ अउ सन्निहितिउ (प्रत्यन्तरे) ।

सीतमुदकं सीतोदकं, "पडिमा देविपडिमा य असन्निहियाओ [1]सन्निहियाओ। असण्णिहिया दुविहा- "उच्छोले ति" सकृत, "पवो परिग्गहा य। जं एयविहाणठियं तं पडिमजुत्तं ति णातव्वं ॥६०३॥

जे भिक्खू इतरं अणेगविह पच्चिज्जति –

णि०
जुग-छिड्ड-णालिया-करग गीवेमाति सोतगं जं तु ।
देहच्चाविवरीतं, तु एतरं तं मुणेयव्वं ॥६०४॥

जुगं वलिद्दाण खंघे आरोविज्जति लोगपसिद्ध तस्स छिड्डं अण्णतर वा, णालिया वस-णलगादीणं छिड्डं, करगो [2]पाणियभडयं, तस्स गीवा छिड्डं वा एवमादि सोतग। देह सरीरं, अच्चयंति तामिति अच्चा प्रतिमा, तेसिं विवरीतं अण्णंति वुत्तं भवति। इह पुण असन्निहिय अपरिग्गहेसु अधिकारो। जं एरिसं तं इतरं मुणेयव्वमित्यर्थः ॥६०४॥

एतेसिं सोआणं अण्णतरे जो सुक्कपोग्गले णिग्घाति तस्स पच्छित्तं भण्णति –

मासगुरुगादि छल्लहु, जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे ।
अपरिग्गहितऽच्चित्ते अदिट्ठदिट्ठे य देहजुते ॥६०५॥

देहजुए अपरिग्गहिते अच्चित्ते जहण्णए अदिट्ठे मासगुरुं। दिट्ठे चउलहु। [3]अड्ढोवकतीए चारियव्वं। मज्झिमे अदिट्ठे चउलहुअ। दिट्ठे चउगुरुं। उकोसते अदिट्ठे चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहुअं ॥६०५॥ तिरियमणुयाण सामण्णेण देहजुअं अपरिग्गहियं भणिय।

इदाणिं तिविह-परिग्गहियं भण्णति –

चउलहुगादी मूलं, जहण्णगादिम्मि होति अच्चित्ते ।
तिविहेहिं परिग्गहिते, अदिट्ठदिट्ठे य देहजुते ॥६०६॥

इमा वि अड्ढोवक्कंती चारणिया देहजुते अचित्ते [4]पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे चउलहुयं। दिट्ठे चउगुरुयं। कोडंबिय परिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहु। दंडियपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे छल्लहुयं, दिट्ठे छग्गुरुय। एतेण चेव कमेणं तिपरिग्गहे मज्झिमए चउगुरुगादि छेदे ठाति। एतेण चेव कमेणं तिपरिग्गहे उक्कोसए छल्लहुआदि मूले ठाति ॥६०६॥ भणिय देहजुअं।

इदाणिं पडिमाजुअं भण्णति –

पडिमाजुते वि एवं, अपरिग्गहि एतरे असण्णिहिए ।
अचित्तसोयसुत्ते, एसा भणिता भवे सोधी ॥६०७॥

पडिमाजुयं पि एवं चेव भाणियव्वं। जहा देहजुअं अचित्तं अपरिग्गहं तहा पडिमाजुअं असण्णिहियं अपरिग्गहियं। जहा देहजुअं अचित्तं सपरिग्गहं तह पडिमाजुअ असिण्णिहियं सपरिग्गहियं भाणियव्वं। इतरेसु पुण जुगच्छिड्डणालियादिसु मासगुरुं। एत्थ सुत्तनिवातो एसा अचित्तसोयसुत्ते सोही भणिया ॥६०७॥

---

१ अनधिष्ठित-साधिष्ठिता। २ झारी ति भाषाया। ३ प्राजापत्य=लोक। ४ अर्धापक्रांत्या।

णीससंत्. णासामुहेसु जो वायू तेण पुप्फजीवस्स संघट्टणादी भवति। "तदस्सियाणं" ति— तम्मि पुप्फे ये आश्रिता अलिकादयः तेषां च संघट्टणादि संभवति। इमा आयविराहणा "आयए" पच्छद्धं। आयविराहणा कयाइ विसपुप्फं भवति तेण मरति, "तब्भावियं" ति तेण विसेण भावितं तद्भावितं प्रत्यनीकादिना. "अमच्चो" चाणक्को, तदुवलक्खितो दिट्ठंतो, जहा – तेण चाणक्केण जोगविसभाविता गंधा कता सुबुद्धिमंत्रिवधाय। इदमावश्यके गतार्थम्।

इदाणिं अववातो –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा पयागरादिसु।
वाधी हवेज्ज कोयी, विज्जुवदेसा ततो कप्पे ॥६१७॥

अणपज्झो जिघेज्जा, "अणपज्झो" अजाणमाणो जिंघति, "अप्पज्झो" वा जाणमाणो। "पयागरादिसु" त्ति रातो जग्गियव्वं तत्थ किं चि एरिसं पुप्फफलं जेण जिंघिएण णिद्दा ण एति। आदिसद्दातो वा निद्रालाभे वा निद्रालाभनिमित्तं जिंघति। वाही वा को ति जिंघिएण उवसमति। तं विज्जुवदेसा जिंघति ॥६१७॥

इमेण विहिणा –

अचित्तमसंबद्धं, पुव्विं जिंघे ततो य संबद्धं।
अचित्तमसंबद्धं, सचित्तं चेव संबद्धं ॥६१८॥

अचित्तदव्वे गधं असंबद्धं नासिकाग्रे "पुव्वं" ति पढम जिंघति, ततो तं चेव अचित्तं संबद्धं, ततो सचित्तं असंबद्धं, ततो सचित्तं संबद्धं जिंघति ॥६१८॥

जे भिक्खू पदमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा अण्णउत्थिएण वा-
गारत्थिएण वा करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

पदं पदाणि, तेसिं मग्गो पदमग्गो सोपाणा, संकमिज्जति जेण सो संकमो काष्ठचारेत्यर्थः। अवलंबिज्जति त्ति जं तं अवलबणं, सो पुण वेतिता मत्तालंबो वा, वागारो समुच्चयवाची, एते अण्णतित्थिएण गिहत्थेण वा करावेति तस्स मासगुरुं आणादिणो य।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

पदमग्गसंकमालंबणे य, वसधी संबद्धमेतरा चेव।
विसमे कद्दम उदए, हरिते तसपाणजातिसु वा ॥६१९॥

[1]पयमग्गो त्ति अस्य व्याख्या –

पदमग्गो सोवाणा, ते तज्जाता व होज्ज इतरे वा।
तज्जाता पुढवीए, इट्टगमादी अतज्जाता ॥'६२०॥'

---

१ गा० ६१९/१।

पदानां मार्गः पदमार्गः, सो पुण मग्गो सोवाणा, ते दुविहा – तज्जाया "इतरे" अतज्जाया, तम्मि जाता तज्जाता पुढविं चेव खणिऊण कता, न तम्मि जाया अतज्जाया इट्टगपासाणादीहिं कता। एक्केक्का वसहीए संबद्धा "इतरा" असंबद्धा। संबद्धा वसहीए लग्गा ठिता, असंबद्धा अंगणए अग्गपवेसदारे वा, तं पुण विसमे कद्दमे वा उदए वा [1]हरिएसु वा जातेसु तसपाणेसु वा घणसंसत्तेसु करेति ॥६१९-६२०॥

[2]इदाणिं "संकमो" त्ति अस्य व्याख्या –

दुविधो य संकमो खलु, अणंतरपतिट्ठितो य वेहासे।
दव्वे एगमणेगो, चलाचलो चेव णायव्वो ॥६२१॥

संकमिज्जति जेण सो संकमो, सो दुविहो – "खलु" अवधारणे, अणंतरपइट्ठितो जो भूमीए चेव पइट्ठितो, वेहासो जो खभेसु वा वेलीसु वा पतिट्ठितो। एक्केक्को दुविहो – एगंगिओ य, अणेगंगिओ य – एकानेकपट्टकृतेत्यर्थः। पुनरप्येकैको चलस्थिरविकल्पेन नेयः। तदपि विषमकर्दमादिषु कुर्वन्तीत्यर्थः ॥६२१॥

'[3]आलंबणेति' अस्य व्याख्या –

आलंबणं तु दुविहं, भूमीए संकमे य णायव्वं।
दुहतो व एगतो वा, वि वेदिया सा तु णायव्वा ॥६२२॥

एतस्स चेव संकमस्स अवलंबणं कज्जति। तं अवलंबणं दुविहं – भूमीए वा संकमे वा भवति। भूमीए विसमे लग्गणणिमित्तं कज्जति। संकमे वि लम्बणनिमित्तं संकज्जति। सो पुण दुहओ एगओ वा भवति। सा पुण "वेइय" त्ति भण्णति मत्तालंबो वा ॥६२२॥

एते सामण्णतरं, पदमग्गं जो तु कारए भिक्खू।
गिहिअण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥६२३॥

"एतेसिं" पयमग्गसंकमावलंबणाणमण्णयरं जो भिक्खू गिहत्थेण वा अन्नतित्थिएण वा कारवेति सो आणादीणि पावति ॥६२३॥

इमे दोसा –

खणमाणे कायवधो, अच्चित्ते वि य वणस्सतितसाणं।
खणणेण तच्छणेण व, अहिदद्दुरमाइआ घाए ॥६२४॥

तम्मि गिहत्थे अन्नतित्थिए वा खणंते छण्हं जीवनिकायाणं विराहणा भवति। जइ वि पुढवी अचित्ता भवति तहावि वणस्सतितसाणं विराहणा।

अहवा – पुढवीखणणे अहिं दद्दुरं वा घाएज्जा। कट्ठं वा तच्छंतोऽब्भंतरे अहिं उंदरं वा घाएज्जा ॥६२४॥ एसा संजमविराहणा।

आयाए हत्थं वा पादं वा लूसेज्जा। अहिमादिणा वा खज्जेज्जा। जम्हा एते दोसा तम्हा न तेहिं कारवेज्जा।

---

१ वीलेसु वा प्रत्य०। २ गा० ६१९/१। ३ गा० ६१९/१।

अववाएण कारवेज्जा –

वसही दुल्लभताए, वाघातजुताए अथव सुलभाए।
एतेहिं कारणेहिं, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६२५॥

दुल्लभा वसही मग्गंतेहिं वि ण लब्भति।

अहवा – सुलभा वसही किन्तु वाघातजुता लब्भति। ते य दव्वपडिवद्धा भावपडिवद्धा जोतिपडिवद्धेत्यादि। पच्छद्ध कंठं ॥६२५॥

सयं करणे ताव इमेरिसो साहू करेति –

जिइंदियो घिणी दक्खो, पुव्वं तक्कम्मभावितो।
उवउत्तो जती कुज्जा, गीयत्थो वा असागरे ॥६२६॥

इंदियजये वट्टमाणो जिइंदिओ, जीवदयालू घिणी, अण्णोण्णकिरियाकरणे दक्खो, "पुव्व" मिति गिहत्थकाले, तक्कम्मभावितो णाम तत्कर्माभिज्ञ स च रहकारचरणिपुत्रेत्यादि, "यती" प्रव्रजित., स च उपयुक्त. कुर्यात्, मा जीवोपघातो भविष्यति। एव ताव तक्कम्मभावितो गीयत्थो, तस्स अभावे अगीयत्थो तक्कम्मभावितो, तस्स अभावे तक्कमाऽभावितो गीयत्थो, तस्स अभावे अगीयत्थो अ, एते सव्वे वि असागरे करेंति ॥६२६॥

जया तेहिं पदमग्गसंकमालंवणेहिं कज्जं समत्तं, तदा इमा समाचारी –

कतकज्जे तु मा होज्जा, तओ जीवविराधणा।
मोत्तुं तज्जाय सोवाणे, सेसे वि करणं करे ॥६२७॥

"कते" परिसमत्ते कज्जे मा जीवविराधणा भवे, "ततो" तस्मात् साधुप्रयोगात्. अतो तज्जाते सोवाणे मोत्तुं सेसे वि "करणं" विणासणं कुज्जा। तज्जाए ण विणासे त्ति, मा पुढविक्काइयविराहणा भविस्सति ॥६२७॥

अववायमुस्सग्गे पत्ते अववाओ भण्णति –

वितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणई भवे असहू।
वाघाओ व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६२८॥

"वितियपदं" अववातो तेण सयं न करेति, गिहिणा कारवेति। कह ? भण्णति – सयं अणिउणो, णिउओ वा केणइ य रोगातकेण असहू, सहुणो वा "वाघातो" विग्घं, तं च आयरियगिलाणादि पओअणं, "परो" गिहत्थो। जता अप्पणा पुव्वभिहियकारणातो असमत्थो ताहे तेण कारावेउं कप्पते ॥६२८॥

तेसिं गिहत्थाण कारावणे इमो कमो –

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए व असण्णी।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६२६॥

"पच्छाकडो" पुराणो, पढमं ता तेण कराविज्जति। तस्स अभावे साभिग्गहो गिहीयाणव्वतो सावगो। ततो णिरभिग्गहो दंसणसावगो। तओ अथाभद्दएण असण्णिगिहिणा मिथ्यादृष्टिना। पच्छा-

कडादि परतित्थियादि चउरो दट्ठव्वा । एतेसिं पुण पुव्वं गिहिणा कारवेयव्वं । पच्छा परतित्थिणा अप्पतर-पच्छकम्मदोसातो ॥६२९॥

जे भिक्खू दगवीणियं अण्णउत्थिएहिं वा गारत्थिएहिं वा-
करेति करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

"दगं" पाणी तं "वीणिया" वाहो, दगस्स वीणिया दगवीणिया ।

विकोवणाणिमित्त णिज्जुत्तिकारो भणति –

वासासु दगवीणिय, वसधी संबद्ध एतरे चेव ।
वसतीसंबद्धा पुण, वहिया अंतोवरि तिविधा ॥६३०॥

वासासु दगवीणिया कज्जति । सा दुविहा – वसहीए संबद्धा, "इतरा" असंबद्धा । वसहीसंबद्धा तिविहा – वहिया अंतो उवरिं च ॥६३०॥

इम तिविहाए वि वक्खाणं –

णिच्चपरिगले बहिता, उम्मिज्जण अंतो व उदए वा ।
हम्मियतलमाले वा, पणालछिड्डं व उवरिंतु ॥६३१॥

जा सा वसहीसंबद्धा वहिया सा निच्चपरिगलो । जा सा अंतो संबद्धा ता भूमी उम्मज्जति । सिरा वा उप्पिलिंगा वा वासोदगं वा छिड्डेहिं पविट्ठं । जा सा उवरिसंबद्धा सा ' हम्मियतले" हम्मतले डायालोवरि, मंडविगाछादितमाले वा वासोदगं पविट्ठं, डायाले वा पणालछिड्डं ॥६३१॥

वसधी य असंबद्धा, उदगागमठाणकद्दमे चेव ।
पढमा वसधिणिमित्तं, मग्गणिमित्तं दुवे इतरा ॥६३२॥

वसहिं असंबद्धा तिविहा – उदगस्स आगमो उदगागमो, वसहिं तेण आगच्छति पविसति त्ति । अंगणे वा जत्थ साहुणो अच्छति । तं "ठाणं" उदगं एति । णिग्गमपहे वा उदगं एति तत्थ कद्दमो भवति । तत्थ पढमा जा वसहि, तेण पविसति तीए अण्णतो दगवाहो कज्जति, मा वसहिविणासो भविस्सति । इयरासु दुसु जा अंगणं एति जा य णिग्गमपहे एता अण्णतो दगवीणिया कज्जति, मा उदगं ठाहि ति तं च संसज्जति । तत्थ अनिंतणिताणं तसपाणविराहणा कद्दमो वा होहि ति । मग्गणिमित्तं णाम मग्गो रुज्झिहि ति उदगेण कद्दमेण वा वसहिअसंबद्धासु वि दगवीणिया कज्जति ॥६३२॥

एते सामण्णतरं, दगवीणिय जो उ कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, अयगोलसमेण आणादी ॥६३३॥

"अयं" लोहं, तस्स "गोलो" पिंडो, सो तत्तो समंता डहति, एवं गिहि अण्णतित्थिओ वा समंततो जीवोवधाती, तम्हा एतेहिं ण कारवे दगवीणिया ॥६३३॥

एगट्ठिया इमे –

दगवीणिय दगवाहो, दगपरिगालो य होंति एगट्ठा ।
विणयति जम्हा उदगं, दगवीणिय भणते तम्हा ॥६३४॥

पुव्वद्धे एगट्ठिया, पच्छद्धे दगवीणियणिरुत्तं ॥६३४॥

गिहिअण्णतित्थिएहिं दगवीणिय कारवेंतस्स इमे दोसा –

आया तु हत्थ पादं, इंदियजायं व पच्छकम्मं वा ।
फासुगमफासुदेसे सव्वसिणाणे य लहु लहुगा ॥६३५॥

"आय" इति आयविराहणा । तत्थ हत्थ पाद वा लूसेज्जा । इंदियाण अण्णतर वा लूसेज्जा । अहवा – "इंदियजाय" मिति बेइंदियादिया ते विराहेज्जा । पच्छाकम्मं वा करेज्जा । तत्थ फासुएणं देसे मासलहुं, सव्वे चउलहुं । अफासुएणं देसे सव्वे वा चउलहु ॥६३५॥

अप्पणो करेंतस्स एते चेव दोसा ।

कारणेण करेज्ज वि दगवीणिय । किं कारणं ? इमं –

वसही दुल्लभताए, वाघातजुताए अहव सुलभाए ।
एतेहिं कारणेहिं, कप्पति ताहे सयं करण ॥

पूर्ववत् कंठा ।

दगवीणियाए अकरणे इमे दोसा –

पणगाति हरितमुच्छण, संजम आता अजीरगेलण्णे ।
वहिता वि आयसंजम, उवधीणासो दुगंछा य ॥६३६॥

"पणगो" उल्ली समुच्छइ, आदिग्गहणातो बेइंदियादि समुच्छंति, हरियक्काओ उट्ठेति । एसा संजमविराहणा । आयविराहणा सीतलवसहीए भत्तं ण जीरति, ततो गेलण्ण जायति । एते वसहिसबद्धाए दगवीणियाए अकज्जमाणीए दोसा । वसहि असंबद्धाए बहिया इमे दोसा – उदगागमे ठाणे अग्गदारे [1]चिलिच्चिले लूसति आयविराहणा, सजमे पणगा हरिता बेइदिया वा उवहिविणासो, कद्दमेण मलिणवासा दुगुंछिज्जंति ॥६३६॥

कारणे गिहिअण्णतित्थिएहिं वि कारविज्जति –

[2]बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६३७॥
पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६३८॥

दो वि पूर्ववत् कठाओ ।

जे भिक्खू सिक्करगं वा सिक्कणंतगं वा अण्णउत्थिएण वा-
गारत्थिएण वा कारेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

---

१ आर्द्र । २ द्वितीयपद प्रणालवत् गा० ६२८–६२९ ।

"सिक्कगं" पसिद्धं, जारिसं वा परिव्वायगस्स । सिक्कगणंतओ उ पोणओ उच्छाडणं भण्णति, जारिसं कावालिस्स [1]भोयगुग्गुलि एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ति वित्थरो –

सिक्कगकरणं दुविधं, तस-थावर-जीव-देह-णिप्फण्णं ।
अंडग-वाल य कीडग, [2]ण्हारू वज्झादिग तसेसु ॥६३९॥

तं सिक्कगं दुविधं – तसथावरजीवदेहणिप्फण्णं । तत्थ तसणिप्फण्णं अणेगविहं "अंडयं" हंसगब्भादि "वालयं" उण्णियं उट्टियं च, "कीडगं" पट्टकोसिगारादि, "ण्हारू वज्झा" पसिद्धा ॥६३९॥

इदाणिं थावरणिप्फण्णं अणेगविहं –

थावरणिप्फण्णं पुण, पोंडमयं वागयं पयडिमयं ।
मुंजमयं वच्चमयं, कुस-वेत्तमयं च वेलुमयं ॥६४०॥

"पोंडयं" कप्पासो, "वाग" सणमादी 'पयडी", णालिएरि[3]चोदयं, "मुंजं" सरस्स छल्ली, "वच्चगो"- दब्भागिती तणं, "कुसो" दब्भो, "वेत्तो" पाणियवंसो, "वेणू" थलवंसो ॥६४०॥

एतेसामण्णतरं, तु सिक्कयं जो तु कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थितेण व, सो पावति आणमादीणि ॥६४१॥

[4]पूर्ववत् कंठा । तम्हा सिक्कयं ण कारवेज्जा, अणुवकरणमिति काउं ॥६४१॥

बितियपदे कारवेज्ज वि –

सिक्कगकरणे कारणानि –

बितियपद-वूढ-ज्झामित, हरियऽद्धाणे तहेव गेलण्णे ।
असिवादि अण्णलिंगे, पुव्वकताऽसति सयं करणं ॥६४२॥

सव्वोवधी दगवाहेण वूढो ।

अहवा – सव्वो णिव्वुडो उत्तरंतस्स ।

अहवा – दड्ढो ।

अहवा – सव्वो हरितो तेणएहिं ।

अहवा – अद्धाणे सिक्कयं घेप्पेज्जा, काएण वा पल्लिमादिभिक्खायरियाए गमेज्ज ।

अहवा – परिव्वायगादि परलिंगं करणओ करेज्ज, तत्थ सिक्कएण पयोजणं होज्जा, गिलाणस्स ओसहं निक्खवेज्ज, असिवगहितो वा परलिंगं करेज्ज, अतरंता वा वंतरं वा मोहणट्ठं वा ।

एतेहिं कारणेहिं दिट्ठं सिक्कयणग्गहणं । तं पुव्वकयं गेण्हियव्वं, असति पुव्वकतस्स ताहे सयं करेयव्वं ॥६४२॥

---

१ सुगंध द्रव्यम् । २ स्नायु=नस । ३ त्वचा । ४ सू० ११ गा० ६२३ ।

बितियपदमणिउणे वा णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६४३॥

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६४४॥

[1]पूर्ववत् ॥५४८॥

अह सिक्कयंतयं पुण, सिक्कतओ पोणओ मुणेयव्वो ।
सो जंग-भंगिओ वा, सण-पोत्त-तिरीडपट्टमओ ॥६४५॥

सिक्कयंतयं णाम तस्सेव पिहणं, मा तत्थ संपातिमा पडिस्संति, सो तु "पूगड" त्ति देसीभासाते वुच्चति । सो दुविहो – तस-थावरदेहणिप्फण्णो "जंगिओ" अंडगादी, "भंगिओ" अदसिमादी, "सणो" वाणो, "पोत्तं" पसिद्धं, "तिरीडपट्टो" रुक्खतया ॥६४६॥

एते सामण्णतरं, उ पोणयं जो तु कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, कीरंते कीत व छक्काया ॥६४६॥

[2]कंठा ॥।६४६॥

सिक्कंतो जे तसा उद्दवेति, अप्पाणं वा विवेज्जा तत्थ गिलाणारोवणा –

बितियपदवुड्ढज्झामिय, हरियऽद्धाणे तहेव गेलण्णे ।
असिवादी परलिंगे, पुव्वकताऽसति सयं करणं ॥६४७॥

[3]कंठा पूर्ववत् ॥६४७॥

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६४८॥

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६४९॥

बितिओ वि य आएसो, सिहणंतग-वत्थअंतकम्मं ति ।
तं दुल्लभवत्थम्मी, देसम्मी कप्पती काउं ॥६५०॥

"आदेशः" प्रकारः, सिहणंतगस्स दसावत्थस्स अंते कम्मं अंतकम्मं वत्थंतकम्मदसातो वुणति त्ति वुत्तं भवति । अववादतो दुल्लभवत्थे देसे तं करेउं कप्पति ॥६५०॥

जे भिक्खू सोत्तियं वा रज्जुयं वा चिलिमिलिं वा अण्णउत्थिएण वा-
गारत्थिएण वा कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

---

१ गा० ६२८–६२९ । २ गा० ६२३ । ३ गा० ६४२ ।

सुत्ते भवा सोत्तिया वस्त्रकम्बल्यादिका इत्यर्थः । रज्जुए भवा रज्जुग्रा दोरको त्ति वुत्तं भवति ।

सुत्तमयी रज्जुमयी, वागमयी चेव दंड-कडगमयी ।
पंचविध चिलिमिली खलु, उवग्गहकरी भवे गच्छे ॥६५१॥

सुत्तेण कता "सुत्तमयी", तं वत्थं कंबली वा । रज्जुणा कता रज्जुमती, सो पुण दोरो । वागेसु कता वागमयी, वागमयं वत्थं दोरो वा वक्कलं वा वत्थादि । दंडो वंसाती । कडमती वंसकडगादि । एसा पंचविहा चिलिमिणी गच्छस्स उवग्गहकारिया घेप्पति ॥६५१॥

सुत्तमयचिलिमिणीए पमाणप्पमाणं गणणप्पमाणं च इमं –

हत्थ-पणगं तु दीहा, ति-हत्थ-रुंदो (ओ) ण्णिया असती खोमा ।
एय पमाणं गणणे,–क्कमेक्कगच्छं च जा वेढे ॥६५२॥

पंचहत्थाणि "दीहा","रुंदा" विच्छिण्णा तिण्णि हत्था, उस्सग्गेणं ताव एस उण्णियाए खोम्मियाए, ताए वि एवं चेव प्पमाणं । गणणप्पमाणेणं एक्केक्कस्स साहुस्स । पाडिहारिया वा जा गच्छं वेढिति सा एक्का चेव अणियतप्पमाणा ॥६५२॥

इदाणिं रज्जुमती –

असतुण्णि-खोम-रज्जू, एगपमाणेण जा तु वेढेति ।
कडहू वागादीहि, तु पोत्तऽसति भए व वक्कमयी ॥६५३॥

तत्थ पुव्वं उण्णिओ दोरो । असति खोमिओ । सो दीहत्तणेण पंचहत्थो एक्केकस्स साहुस्स गणावच्छेतिय-हत्थे वा एक्को चेव जो गच्छं वेढेइ । कडभू रुक्खो, तस्स वक्कलं भवति, वागेहिं वा वुतं । खोमियाए असती वागमयी, तस्स वि प्पमाणं [1]पूर्ववत् ॥६५३॥

इदाणिं दंडमती –

देहहिको गणणेक्को, दुवारगुत्ती भएउ दंडमयी ।
संचारिमा तु चतुरो, भयमाणे कडगऽसंचारी ॥६५४॥

"देहं" सरीरं, तप्पमाणाओ अधितो दंडतो, सो पुण समए णालिया भण्णति । एक्केक्कस्स साहुस्स सो एक्केक्को भवति । सावयादिभए दुवारगुत्तीकरणं तेहिं देहाहिदंडएहिं [2]किडिया कज्जति । आदिमा चउरो वसहीओ वसहिं, खेत्ताओ वा खेत्तं संचरंति । कडगमती माणे भयणिज्जा असंचारिमा य ॥६५४॥

किं पुण कज्जं चिलिमिणीए ? इमं सुणसु –

सागारिय[1]-सज्झाए[2] पाणदय[3]-गिलाण[4]-सावयभए[5] वा ।
अद्धाण[6]-मरण[7]-वासासु[8] चेव सा कप्पती गच्छे ॥६५५॥
पडिलेहोभयमंडलि, इत्थीसागारिएत्थ सागरिए ।
पाणा-लोगज्झाए, मच्छियडोलादिपाणट्ठा ॥६५६॥

१ चिलिमिलीवत् । २ लघुद्वारम् चिलिमिलिओ ।

भए सारोवहिं चिलिमिणिं दाउं पडिलेहज्जति । सागारिए उड्डाहरक्खणत्थं भोयणमंडलीए चिलिमिली दिज्जति । इत्थीरूवपडिबद्धाए चिलिमिली दिज्जति । जम्रो रुधिर वच्चकार्ति ततो चिलिमिलिं दाउं सज्झाम्रो कज्जति । जं दिसं मुत्तपुरिसाति घाणी म्रागच्छति तं दिसिं चिलमिलिं काउ सज्झाम्रो कज्जति । ज दिस मच्छिडोलादि पाणा म्रागच्छति ततो चिलिमिली दिज्जति ॥६५६॥

उभयो-सह-कज्जे वा, देसी वीसत्थमादि गेलण्णे ।
श्रद्धाणे छण्णाऽसति, भत्तोवधि सावते तेणे ॥६५७॥

गिलाणो पच्छण्णे उभयं काइयसण्णा वोसिरति । श्रोसहं वा दिज्जति । "देसि" त्ति—जत्थ देसे डागिणीणमुवद्दवो तत्थ गिलाणो पच्छण्णे घरिज्जति । वीसत्थो वा गिलाणो अच्छइ पच्छण्णे । श्रद्धाण-पडिवण्णगा य पच्छण्णस्स असति चिलिमिणिं दाउ भत्तट्ठं करेंति । सारोवहिं वा पडिलेहृति । सावयतेणातिभए दंडमतीए दारं पिहेंति ६५७॥

छण्ण-वह-णट्ठ-मरणे, वासे उज्झंखणीए कडम्रो उ ।
उल्लुवहिं विरल्लेंति, व अंतो बहि कसिण इतरं वा ॥६५८॥

जाव मतम्रो ण परिट्ठविज्जति ताव पच्छण्णे घरिज्जति । श्रद्धाणे वा जाव थंडिल न लब्भति तावऽच्छति तो मतो [1]वुज्झति । जम्रो "उज्झंखणीए" ति तत्तो कडगचिलिमिली दिज्जति । वासासु वा उल्लुवहिं विरल्लेंति दोरे जहासंख अत-बहि-कसिण-इतरं वा ॥६५८॥

पंचविधचिलिमिणीए, पुव्वकताए य कप्पती गहणं ।
असती पुव्वकताए, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६५९॥

कंठा ॥६५९॥

बितियपदमणिउणे वा, निउणे वा होज्ज केणई असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६६०॥
पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६६१॥

पूर्ववत् कंठा ॥६६०–६६१॥

जे भिक्खू सूतीए उत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा-
कारेति, कारेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू पिप्पलगस्स उत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा-
कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू णहच्छेयगस्सुत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा-
कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

---

[1] आच्छाद्यते ।

जे भिक्खू कण्णसोहणगस्सुत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा-
कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

सूतीमादीयाणं, उत्तरकरणं तु जो तु कारेज्जा ।
गिही अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥६६२॥

कंठा ॥६६२॥

उवग्गहिता सूयादिया, तु एक्केक्क ते गुरुस्सेव ।
गच्छं व समासज्जा, अणायसेक्केक्क सेसेसु ॥६६३॥

सूती पिप्पलओ णहच्छेयणं कण्णसोहणं उवगहितोवकरणं । एते य एक्केक्का गुरुस्स भवंति, सेसा तेहिं चेव कज्जं करेंति । महल्लगच्छं व समासज्ज अणायसा अलोहमया वंससिंगमयी वा सेससाहूणं एक्केक्का भवति ॥६६३॥

किं पुण उत्तरकरणं ? इमं –

पासग-मट्टिणिसीयण-पज्जण-रिउकरण उत्तरं करणं ।
सुहुमं पि जं तु कीरति, तदुत्तरं मूलणिव्वत्ते ॥६६४॥

"पासगं" बिलं वड्ढिज्जति, लण्हकरणं, "मट्टिणिसियणं" णिसाणे, "पज्जणं" लोहकारागारे, "रिजु" उज्जुकरणं । एयं सव्वं उत्तरकरणं ।

अहवा – मूलणिवत्ति उवरिं सुहुममवि जं कज्जति तं सव्वं उत्तरकरणं ॥६६४॥

सूतीमादीयाणं णिप्पडिकम्माण कप्पती गहणं ।
असती णिप्पडिकम्मे, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६६५॥

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा सेवती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६६६॥

पच्छाकड साभिग्गह, निरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णातित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६६७॥

पूर्ववत् ॥६६७॥

जे भिक्खू अण्णट्ठाए सूतिं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए पिप्पलगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए कण्णसोहणगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए णहच्छेयणगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

सूयिमण्णट्ठाए तु, जे भिक्खू पाडिहारियं जाते ।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६६८॥

"अणट्ठा" णिप्पओयणे, पडिहरणिज्ज "पाडिहारियं" ॥६६८॥

इमे दोसा –

णट्ठे हित विस्सरिते, तदण्ण दव्वस्स होति वोच्छेदो ।
पच्छाकम्मपवहणं, धुवावणं वा तदट्ठस्स ॥६६९॥

हत्थाओ चुता णट्ठा, तेणेहिं [1]हिता, कहिं पि मुक्का ण जाणए वीसरिता । तद्दव्वअण्णदव्वस्स वा तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स वोच्छेयं करेज्जा । पच्छाकम्म अण्णं घडावेति असुतिसमणेण वा छिक्का धोवति । अवहृत वा अण्णं वा धोवावेति । धुवावणं दव्वावेति ॥६६९॥

आणाए वोच्छेदे, पवहण किण पच्छकम्म पच्छित्ता ।
गुरुगा गुरुगा लहुगा, लहुगा गुरुगा य जं चऽण्णं ॥६७०॥

आणादी पचपदा एतेसु जहासख । पायच्छित्ता पच्छद्धेणं ॥६७०॥

जे भिक्खू अविहीए सूइं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अविहीए पिप्पलगं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू१॥२४॥

जे भिक्खू अविहीए णहच्छेयणगं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अविहीए कण्णसोहणयं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सूइं जाइत्ता वत्थं सेव्विस्सामि त्ति-
पादं सिव्वति, सिव्वंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू पाडिहारियं पिप्पलयं जाइत्ता वत्थं छिंदिस्सामि त्ति-
पायं छिंदति, छिंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू पाडिहारियं णहच्छेयणयं जाइत्ता नखं छिंदामि त्ति-
सल्लुद्धरणं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं कण्णसोहणगं जाइत्ता कण्णमलं णीहरिस्सामि त्ति-
दंतमलं वा णखमलं वा णीहरेति णीहरावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३०॥

का अविधी ? इमा –

वत्थं सिव्विस्सामी, ति जाइउं पादसिव्वणं कुणति ।
अहवा वि पादसिव्वण, काहेंतो सिव्वती वत्थं ॥६७१॥

कठा ॥६७१॥

तं दट्ठूण सयं वा, अहवा अण्णेसिं अंतियं सोच्चा ।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥६७२॥

---

[1] हृता ।

सूति-सामिणा अविहीएसिव्वंतो सयमेव दिट्ठो अण्णस्स वा समीवे सुतं । "ओभावणा" अण्णस्स पुरओ खिंसति, "अग्गहणं" साहूण अणायरं करेति । दुविहो वोच्छेदो – तद्दव्वण्णदव्वाणं ; तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स ॥६७२॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए सूइं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति वा ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए पिप्पलयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए णहच्छेयणयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए कण्णसोहणयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

अहगं सिव्विस्सामीति, जाइउं सो य देति अण्णेसिं ।
अण्णो वा सिव्विहिती, सो सिव्वणमप्पणा कुणति ॥६७३॥

अप्पणो अट्ठाए जाएउं अण्णस्स अलद्धियसाहुस्स देति । ताणि वा कुलाणि जस्स साहुस्स उवसमंति तस्स णामेण मग्गिउं अण्णो सिव्वेति ॥६७३॥

को दोसो ? इमो –

तं दट्ठूण सयं वा, अहवा अण्णेसि अंतियं सोच्चा ।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥६७४॥

कंठा ॥६७४॥

जे भिक्खू सूतिं अविहीए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३५॥

सूर्यि अविधीए तू, जे भिक्खू पाडिहारियं अप्पे ।
तक्कज्जसंघणं वा, कुज्जा छक्कायघातं वा ॥६७५॥

जं ताए सूतीए कज्जं तं "तक्कज्जं," गहणप्पणेण वा छक्कायघायं करेज्जइ ॥६७५॥

इदाणिं[1] चउण्ह वि सुत्ताण विधी भण्णति –

तम्हट्ठा जाएज्जा, जं सिव्वे कस्स कारणा वा वि ।
एगतरमुभयतो वा, अणुण्णवेउ तधा भिक्खू ॥६७६॥

"अट्ठाए जाएज्जा", जं वा वत्थादि सिव्वे तदट्ठाए जाएज्जा । जस्स साहुस्स कज्जं तण्णामेण जाएज्जा । अप्पणो परस्सुभयट्ठा वा जाएज्जा । जहा काउकामो तहा अक्खिउं जातियव्वं । एस परमत्थो ॥६७६॥

---

१ सूचि आदि की याचना अविधियाचना अन्यार्थ याचना और अविधिप्रत्यर्पण ए चारसूत्र ।

अप्पणे विधी भणति -

गहणंमि गिण्हिऊणं, हत्थे उत्ताणगम्मि वा काउं ।
भूमीए व ठवेतुं, एस विही होती अप्पिणणे ॥६७७॥

गहणं पासओ तम्मि सय गेण्हिऊण अणिएणं (अण्यग्रभागेन) गिहत्थस्स अप्पेति । एवं संजयपओगो ण भवति। उत्ताणगम्मि वा हत्थे वितिरिच्छ अणिएण वा ठवेति। एव भूमीए वि ठवेति ॥६७७॥

एतेसिं चउण्ह वि सुत्ताण इमे बितियपदा -

लाभालाभपरिच्छा, दुल्लभ-अचियत्त-सहस अप्पिणणे ।
चउसु वि पदेसु एते, अवरपदा होंति णायव्वा ॥६७८॥

साहू खेत्तपडिलेहगा गता किं सूती मग्गिता लब्भति ण व त्ति अणट्ठाए मग्गेज्जा । पत्तसिवणट्ठाए दुल्लभाओ सूतीओ वत्थसिवणट्ठमवि [1]णीयाए पत्तं सिव्विज्जति, तं पुण जयणाए सिव्वेति जहा ण दीसति । कोइ सभावेण अचियत्तो साहू सो ण लब्भति, तस्स वा णामेण ण लब्भति, ताहे अप्पणो अट्ठाए जाइउ तस्स देज्जा "सहस" अणाभोएण वा अविहीए अप्पिणेज्जा ॥६७८॥

जे भिक्खू अविहीए पिप्पलगं पच्चप्पिणति,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू अविहीए णहच्छेयणगं पच्चप्पिणइ,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू अविहीए कण्णसोहणयं पच्चप्पिणइ,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

पिप्पलग णहच्छेदण, सोधणए चेव होंति एवं तु ।
णवरं पुण णाणत्तं, परिभोगे होति णातव्वं ॥६७९॥

एव पिप्पलग-णहच्छेदण-कण्णसोहणे य एक्केक्के चउरो सुत्ता । अत्थो पूर्ववत् ॥६७९॥

परिभोगविसेसो इमो -

वत्थं छिंदिस्सामि त्ति जाइउं पादछिंदणं कुणति ।
अहवा वि पादछिंदण, काहिंतो छिंदती वत्थं ॥६८०॥

[2]ताओ गाहाओ -

णक्खे छिंदिस्सामि त्ति, जाइउं कुणति सल्लमुद्धरणं ।
अहवा सल्लुद्धरणं, काहिंतो छिंदती णक्खे ॥६८१॥

---

१ आनीतया सूच्या । २ सूचिसूत्रवत्, गाथा - ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७ ।

पिप्पलग-णक्खच्छेयणाणं अप्पणे इमा विही –

मज्झेव गेण्हिऊण, हत्थे उत्ताणयम्मि वा काउं ।
भूमीए वा ठवेतुं, एस विधी होति अप्पिणणे ॥६८२॥

उभयतो धारणसंभवाओ मज्झे गिण्हिऊण अप्पेति । सेस कंठं ॥६८२॥

कण्णं सोधिस्सामि त्ति जाइउं दंतसोधणं कुणति ।
अहवा वि दंतसोधण, काहेंतो सोहती कण्णे ॥६८३॥

[1]ताओ चेव गाहाओ –

लाभालाभपरिच्छा, दुल्लभ-अचियत्त-सहस-अप्पिणणे ।
[2]बारससु वि सुत्तेसु अ, अवरपदा होंति णायव्वा ॥६८४॥

कंठा ॥६८४॥

जे भिक्खू लाउय-पादं वा दारु-पादं वा मट्टिया-पादं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठवेति वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुहुममवि नो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरइ, वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

दोद्धियकं तुंबघटितं, मृन्मयं कपालकादि, परिघट्टणं [3]णिम्मोअणं, सठवणं मुहादीणं, जमावणं विसमाण समीकरणं । "अल" पज्जत्तं सक्केति अप्पणो काउं ति वुत्तं भवति । "जाणइ" जहा ण वट्टति अण्णउत्थियगारत्थिएहिं कारावेउं जाणाति वा, सुत्तं सरति एस अम्ह उवएसो पच्छित्तं वा सरइ,"अण्णमण्णा" गिहत्थऽण्णउत्थिया, ताण "वितरति" प्रयच्छति कारयतीत्यर्थः ।

अहवा–गुरुः पृष्ट साधुभिर्यथागृहस्थान्यतीर्थिकैर्वा कारापयामः, ततः प्रयच्छते अनुज्ञां ददातीत्यर्थः ।

भणिओ सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्तिवित्थरो भण्णति –

लाउयदारुयपाते, मट्टियपादे य तिविधमेक्केक्के ।
बहुयप्पअपरिकम्मे, एक्केक्कं तं भवे कमसो ॥६८५॥

एकैकं त्रिविध – बहु-अप्प-अपरिकम्ममिति । पुनरप्येकैकं त्रिविधं जघन्यादि ।

अहवा – द्वितीयमेकैकवचनं निगमनवाक्यमाहुः ॥६८५॥

परिकम्मणमुक्कोसं, गुणेहि तु जहण्णतं पढमपातं ।
वितियं दोहि वि मज्झं, पढमेण विवज्जिओ ततिए ॥६८६॥

---

१ सूचि सूत्रवत् । २ याचना के चार, अविधि से याचना के चार, अन्यार्थ याचना के चार, और अविधि से प्रत्यर्पण के चार, एवं बारह । ३ निर्मापण ।

पढमं बहुपरिकम्मं, तं गुणेहिं जहण्णं, आत्मसंयमोपघातबहुत्वात् । अप्पपरिकम्मं बितियं, तं गुणेहिं मज्झिमं, अल्पात्मसंयमोपघातत्वात् । अपरिकम्मं ततियं, त गुणेहिं उक्कोसं, जतो पढमस्स विवज्जए-वट्टति, आत्मनो संयमस्स चानुपघातित्वात् ।।६८६।।

बहुअप्पअहाकडाण किं सरूव ? इमं –

अद्धंगुला परेणं, छिज्जंतं होति सपरिकम्मं तु ।
अद्धंगुलमेगं तू, छिज्जंतं अप्पपरिकम्मं ।।६८७।।

अद्धंगुलापरेण छिज्जत बहुपरिकम्मं भवति । जाव अद्धगुल ताव अप्पपरिकम्मं ।।६८७।।

जं पुव्वकतमुहं वा, कतलेवं वा वि लब्भए पादं[1] ।
तं होति अहाकडयं, तेसि पमाणं इमं होति ।।६८८।।

अहाकडं ज पुव्वकयमुह, कयलेव त कुत्तियावणे लब्भति, णिण्हगो वा देति, पडिमापडिणियत्तो समणोवासगो वा देति, तं पादं दुविह – पडिग्गहो मत्तओ वा ।।६८८।।

पडिग्गहो इमो –

तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च माणस्स मज्झिमपमाणं ।
एत्तो हीण जहण्णं, अतिरेगतरं तु उक्कोसं ।।६८९।।

कठा ।।६८९।।

उक्कोस-तिसा-मासे, दुगाउ अद्धाणमागतो साधू ।
चउरंगुलं तु वज्जे, भत्तपाणपज्जत्तियं हेट्ठा ।।६९०।।

जेट्ठो आसाढो अ उक्कोस-तिसा-मासा भवंति । उवरिं चउरंगुल वज्जेत्तु हेट्ठा भरियं पज्जत्तियं भवति ।।६९०।।

एवं चेव पमाणं, सविसेसतरं अणुग्गहपवत्तं ।
कंतारे दुब्भिक्खे, रोहगमादीसु भइयव्वं ।।६९१।।

"सविसेसतर" बृहत्तरं गच्छानुग्रहाय प्रवर्तते उद्ग्राह्यते इत्यर्थं । "कंतार" अडवी, दुब्भिक्खे रोहगे वा अच्छंताण, "भजना" सेवना परिभोगमित्यर्थः ।।६९१।।

इदाणिं मत्तओ –

भत्तस्स व पाणस्स व, एगतरागस्स जो भवे भरितो ।
पज्जो साहुस्स तु एतं किर मत्तअपमाणं ।।६९२।।

[जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तयपमाणं ।
दो सु वि दव्वगहणं, वासा-वासासु अहिगारो ।।

यद्वा –

सूवोदणस्स भरिउं, दुगाउ अद्धाणमागओ साहू ।
भुंजइ एगट्ठाणे, एवं किर मत्तगपमाणं ।।]

---

१ कोष्ठान्तर्गतं गाथाद्वयं पूनासत्कप्रतौ नोपलभ्यते ।

कंठा ।।६६२।।

पडिग्गहो मत्तगो वा इमेहिं गुणेहिं जुत्तो –

वट्टं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।
हुंडं वाताइद्धं, भिण्णं च अधारणिज्जाइं ।।६६३।

आगारेण "वट्टं" उच्छायपृथुत्वेन समं तमेव मिज्जमाणं "समचउरंसं" भण्णति । "थिरं" दृढं अविलियंति, अपाडिहारियं थावरं, वण्णं सलक्खणं धारिणिज्जमेयं । इमं अधारिणिज्जं – उच्छाय पृथुत्वेन असमं हुंडं, वाताइद्धं त्रोप्पडुय अनिष्पन्नमित्यर्थः, भिण्णं च अधारणेज्जा एते ।।६६३।।

[1]सुत्तफासिया इमे –

परिघट्टण णिम्मोयण, तं पुण अंतो व होज्ज बाहिं वा ।
संठवणं मुहकरणं, जमणं विसमाण समकरणं ।।६६४।।

बहि अंतो वा मोयफेडणं परिघट्टणं, सेसं कंठं ।।६६४।।

पढम-बितियाण करणं, सुहुममवी जो तु कारए भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ।।६६५।।

"पढमं" बहुपरिकम्मं, "बितियं" अप्पपरिकम्मं, सेसं कंठं ।।६६५।।

जम्हा एते दोसा, तम्हा –

घट्टित संठविते वा, पुव्वं जमिते य होति गहणं तु ।
असती पुव्वकतस्स तु, कप्पति ताहे सयंकरणं ।।६६६।।

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ।।६६७।।

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ।।६६८।।

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेणुसूइयं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेति वा संठवेति वा जमावेति वा अलमप्पमणो करणयाए सुहुममवि नो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरति, वियरंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

"दंडो" बाहुप्पमाणो, "लट्ठी" आयप्पमाणा, "अवलेहणिया" वासासु कद्दमफेडिणी क्षुरिकावत्, "वेणू" वंसो, तम्मती सूती, परिघट्टणं अवलिहणं, संठवणं पासयादिकरणं, जमावेति उज्जुगकरणं ।

१ निज्जुत्ति ।

डंडग विडंडए वा, लट्ठि विलट्ठी य तिविध तिविधा तु ।
वेलुमय-वेत्त-दारुग, बहु-अप्प-अहाकडा चेव ॥६९९॥

एगेण तिविहसद्देण वेलुमयादी; बितियेण तिविहसद्देण बहुपरिकम्मादि ॥६९९॥

तिण्णि उ हत्थे डंडो, दोण्णि उ हत्थे विदंडओ होति ।
लट्ठी आतपमाणा, विलट्ठि चतुरंगुलेणूणा ॥७००॥

कंठा ॥७००॥

अद्धंगुला परेणं, छिज्जंता होंति सपरिकम्मा उ ।
अद्धंगुलमेगं तू, छिज्जंता अप्पपरिकम्मा ॥७०१॥

पूर्ववत् ॥७०१॥

जे पुव्ववड्ढिता वा, जमिता संठवित तच्छिता वा वि ।
होंति तु पमाणजुत्ता, ते णायव्वा अहाकडगा ॥७०२॥

पूर्ववत्[1] ॥७०२॥

किं पुण लट्ठीए पओअणं ? इमं –

दुपद-चतुप्पद-बहुपद, णिवारणट्ठाय रक्खणाहेउं ।
अद्धाण-मरणभय-वुड्ढवासवट्ठंभणा कप्पे ॥७०३॥

"दुपया" मणुस्सादि, "चउप्पदा" गाविमादि, बहुपया गडयगोम्हिमादि। अद्धाणे पलंबमादि वुज्झति, मतो वा वुज्झति, बोहिगादिभये वा पहरणं भवति, वुड्ढस्स वा अवट्ठंभणहेउं लट्ठी कप्पति घेत्तुं ॥७०३॥

पढमबितियाण करणं, सुहुममवी जो तु कारए भिक्खू ।
गिहि अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥७०४॥

घट्टितसंठविते वा, पुव्विं जमिताए होति गहणं तू ।
असती पुव्वकयाए, कप्पति ताहे सयं करणं ॥७०५॥

[2]परिघट्टणं तु णिहणं मूलग्गा-पव्वमादिसंठवणं ।
उज्जूकरणं जमणं, दंडगमादीण सव्वेसिं ॥७०६॥

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥७०७॥

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिएण व गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥७०८॥

---

१ गा० ६८८ भावसाम्यम्। २ गा० ६९४ भावसाम्यम्।

उडुबद्धे रयहरणं, वासावासासु पादलेहणिया ।
वडउंबरे पिलक्खू, तेसि अलंभम्मि अंबिलिया ॥७०६॥

उडुबद्धे रयहरणेण पादप्पमज्जणं कज्जति, वासासु पायलेहणियाए कद्दमो अवणिज्जति ; सा भवति वडमती उंबरमती पिप्पलो "पिलक्खू" [1]तं मई । एतेसिं अलमे अबिलियमती ॥७०६॥

बारसअंगुलदीहा, अंगुलमेगं तु होति विच्छिण्णा ।
घणमसिणणिव्वणा वि य, पुरिसे पुरिसे य पत्तेयं ॥७१०॥

"घणा" अज्झुसिरा, "मसिणा" लण्हा, "णिव्वणा" खयवज्जिया, पुरिसे पुरिसे य एक्केक्का भवति ॥७१०॥

एक्केक्का सा तिविधा, बहुपरिकम्मा य अप्पपरिकम्मा ।
अप्परिकम्मा य तधा, जलभावित एतरा चेव ॥७११॥

जलमज्झ[2]उसिते कट्ठे जा कज्जति सा जलभाविता । इतरा अभाविता ॥७११॥

अद्धंगुला परेणं, छिज्जंती होति सपरिकम्मा तु ।
अद्धंगुलमेगं तू, छिज्जंती अप्पपरिकम्मा ॥७१२॥

जा पुव्ववड्ढिता वा, जमिता संठवित तच्छिता वा वि ।
लब्भति पमाणजुत्ता, सा णातव्वा अधाकडया ॥७१३॥

पढमबितियाण करणं, सुहुममवी जो तु कारए भिक्खू ।
गिहि अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥७१४॥

वड्ढितसंठविताए, पुव्विं जमिताए होति गहणं तु ।
असती पुव्वकडाए, कप्पति ताहे सयं करणं ॥७१५॥

बितियपदमणिउणे वा, णिउणेवा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥७१६॥

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दय य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिएण व, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥७१७॥

[3]ताओ चेव गाहाओ सुत्तत्थं ।

वेलुमयी लोहमयी, दुविधा सूयी समासओ होति ।
चउरंगुलप्पमाणा, सा सिव्वणसंधणट्ठाए ॥७१८॥

---

१ तन्मयी । २ उच्छ्रिते । ३ पूर्ववत् गा० ७०४ से ७०८ ।

लोहमती सूती साहुणा ण घेत्तव्वा परं आयरियस्स एक्का भवति, सेसाण वेलुमती सिंगमती वा गणणप्पमाणेण एक्केक्का भवति। पमाणप्पमाणेण चतुरंगुला भवति। किं कारण घेप्पति? इमं – तुण्णणं, उक्कड्डयकरणं वा सिव्वणं, दुगातिखडाण सवण ॥७२०॥ कंठा।

एक्केक्का सा तिविधा, बहुपरिकम्मा य अप्पपरिकम्मा।
अपरिकम्मा य तधा, णातव्वा आणुपुव्वीए ॥७१६॥

अद्धंगुला परेणं, छिज्जंती होति सपरिकम्मा तु।
अद्धंगुलमेगं तू, छिज्जंती अप्पपरिकम्मा ॥७२०॥

जा पुव्ववड्ढिता वा, पुव्वं संठवित तच्छिता वा वि।
लब्भति पमाणजुत्ता, सा णायव्वा अधाकडगा ॥७२१॥

पढमवितियाणकरणं, सुहुममवी जो तु कारए भिक्खू।
गिहि अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥७२२॥

घट्टित संठविताए, पुव्वं जमिताइ होति गहणं तु।
असती पुव्वकडाए, कप्पति ताहे सयं करणं ॥७२३॥

वितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥७२४॥

पच्छाकडसाभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी।
गिहि अण्णतित्थिएण व, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥७२५॥

[1]सव्वाओ पूर्ववत्।

जे भिक्खू पायस्स एक्कं तुंडियं तड्डेइ, तड्डेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

"तुंडिय" थिग्गलं, देसी भासाए सामयिगी वा एस पडिभासा, तड्डेति [2]लाए त्ति वुत्तं भवति।

लाउयदारुयपादे, मट्टियपादे य तड्डणं दुविधं।
तज्जातमतज्जाते, तज्जा एगे दुवे इतरे ॥७२६॥

लाउ आदि एक्केक्कं दुविधं तड्डणं—तज्जातमतज्जातं। लाउस्स लाउयं तज्जातं, सेसा-दारुमट्टिय। दो अतज्जाता। एवं सेसाण वि समाणं एक्केक्कं तज्जायं, असमाणा दो अतज्जाया ॥७२६॥

एतेसामण्णयरं, एगतराएण जो उ तड्डेज्जा।
तिण्हं एगतराए, विज्जंताणादिणो दोसा ॥७२७॥

---

१ ताओ चेव गाहाओ ७०४ से ७०८। २ लग्गइ।

एतेसिं पादाणं एगतरेविविज्जमाणे जो अण्णतरं पादं अण्णतरेणं तड्डेति तस्स आणादिणो दोसा, मासगुरुं च से पच्छित्तं ।।७२७।।

कारणओ तड्डेज्जा वि । किं पुण कारणं ? इमं –

संतासंतऽसतीए, अथिर-अपज्जत्तऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेहऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ।।७२८।।

"संतं" विज्जमाणं, "असंतं" अविज्जमाणं, "असती" अभावो । इमा "संततो असती"— "अथिरं" दुब्बलं, जइ भिक्खागहणं कज्जति तो भज्जति, पाडिहारियं वा अथिरं, तं [1]अथक्के उद्दालिज्जति, अत्थि पादं किं तु अप्पज्जतियं । एसा अप्पणिज्जे संतासती । इमा गारत्थिएसु अत्थि अगारत्थिएसु लाउआ, ते ण लब्भंति, डंडिएण वा पडिसिद्धं, अणेसणिज्जाणि व लद्धाणि, जत्थ वा विसए अत्थि दोद्धिया तत्थंतरा वा असिवादिएहिं ण गम्मति ।।७२८।।

एसा संतासती भणिया । असिवादि वक्खाणं इमं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भएण आगाढे ।
सेहे चरित्त सावत भए व असिवादियं एतं ।।७२९।।

जत्थ भूमीए पादाणि अत्थि तत्थंतरा वा इमे दोसा-असिवं ओमोयरिया वा रायदुट्ठं वा बोधियभयं वा । आगाढसद्दो पत्तेयं संबज्झति । सेहाण व तत्थ उवस्सग्गो भवति, तत्थ व सेहा पडुप्पणा ततो न गंतव्वं, चरित्तं पडुच्च तत्थ इत्थि दोसा, एसणादोसा वा । सावयभयं वा । अण्णो य परिरयेण पंथो नत्थि ।।७२९।। एसा सव्वा संतासती भणिता ।

इमा असंतासती –

भिण्णे व ज्झामिते वा, पडिणीए तेण सावयादीसु ।
एतेहिं कारणेहिं, णायव्वाऽसंततो असती ।।७३०।।

"झामियं" दड्ढं पडिणीएण वा, हरितं तेणेण वा, आदि सद्दातो भिक्खयरेण वा हरिए । पुव्वपादं एतेहिं कारणेहिं ण हूअं, अण्णं च से णत्थि, पादभूमीए वि पादा णत्थि, अणिप्फण्णत्तणाउ ।।७३०।

संतासंतसतीए, कप्पति तज्जात तड्डणं काउं ।
तज्जातम्मि असंते, इतरेण वि तड्डणं कुज्जा ।।७३१।।

एसा संतासंतसतीए दुविहाए असतीए तड्डेज्जा वि । तं पुण तड्डणं तज्जा-एतरं । पुव्वं तज्जाएण असतीते अतज्जाएण वि ।।७३१।।

जे भिक्खू पायस्स परं तिण्हं तुंडियाणं तड्डेति,
तड्डंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४२।।

परं चतुर्थेन न तड्डुए । अववाउस्सग्गियं सुत्तं ।

तिण्हं तु तड्डियाणं, परेण जे भिक्खु तड्डए पादं ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ।।७३२।।

---

१ अप्रस्तावे ।

संतासंतसतीए, अथिर-अपज्जत्तऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७३३॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भएण आगाढे ।
सेहे चरित्त सावय, भए व असिवादियं एतं ॥७३४॥

भिण्णे व झामिते वा, पडिणीए तेण सावयादीसु ।
एतेहिं कारणेहिं, णायव्वा संततो असती ॥७३५॥

संतासंतसतीए, परेण तिण्हं न तड्डए पायं ।
एवंविहे असंते, परेण तिण्हं पि तड्डेज्जा ॥७३६॥

जे भिक्खू पायं अविहीए बंधइ, बंधेंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४३॥

तिविधम्मि वि पादम्मी, दुविधो बंधो तु होति णातव्वो ।
अविधी विधी य बंधो, अविधीबंधो इमो तत्थ ॥७३७॥

णवरं – "एवंविधे असंते त्ति अच्छिद्दं लाउआदि तिविह विहिबंधेण बधिज्जइ ।
तत्थ इमो विधि –

सोत्थियबंधो दुविधो, अविकलितो तेण-बंधो चउरंसो ।
एसो तु अविधिबंधो, विहिबंधो मुद्दि-णावा य ॥७३८॥

दुविहो सोत्थियबंधो वतिकलितो, इतरो अविकलितो समचउरंसो कोणेसु भिण्णो । ⊠
वतिकलितो एगतो दुहतो वा । एगतो इमो ⊟ दुहतो इमो ⧖ प्रतीतस्तेनबन्धः, स चायम् । ⌘
एते सव्वे अविधिबंधा । विधिबंधो इमो प्रतीतः मुद्दिय सठितो ४, णावाबधसंठितो ६ ॥७३८॥

एत्तो एगतरेणं, जो पादं अविधिणा तु बंधेज्जा ।
तिण्हं एगतराणं, सो पावति आणमादीणि ॥७३९॥

कंठा ॥७३९॥

सुत्ते अत्थावत्तितो अणुन्नाय । आयरियो अत्थतो पडिसेधयति –

विहिबंधो वि ण कप्पति, दोसा ते चेव आणमादीया ।
तं कप्पती ण कप्पति, णिरत्थयं कारणं किं तं ॥७४०॥

विधिबंधो वि ण कप्पति, जतो तत्थ वि आयसंजमविराहणा दोससंभवो ।
चोयग आह – णणु सुत्ते अत्थावत्तिअऽभिहियं तं कप्पति ?
आयरियो आह – ण कप्पति ।
चोयग आह – णणु सुत्तं णिरत्थयं ? । .

आयरियाह – सकारणं सुत्तं।

चोयग आह – किं त ? ॥७४०॥

आयरियाह –

संतासंतसतीए, अथिर अपजत्तऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेहऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७४१॥

संतासंतसतीए, कप्पति विहिणा तु बधितुं पादं ।
दुब्बलदुल्लभपादे, अविधीए वि बंधणं कुज्जा ॥७४२॥

जे भिक्खू पायं एगेण बंधेण बंधइ, बंधंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४४॥

उस्सग्गेण ताव अबंधणं पात्रं घेत्तव्व। एगबंधणमपि करेंतस्स ते चेव आणादिणो दोसा। शेषं सभाष्यं पूर्ववत्।

एगेणं बंधेणं, पादं खलु बंधए जे भिक्खू ।
विधिणा व अविधिणा वा, सो पावति आणमादीणि ॥७४३॥

संतासंतसतीए, परेण तिण्हं न बंधए पायं ।
एवंविहे असंते, परेण तिण्हं वि बंधेज्जा ॥७४४॥

अहवा – दुब्बल दुल्लभपादे, बधेणेगेण बंधे वा ॥७४४॥ शेषं पूर्ववत्।

जे भिक्खू पायं परं तिण्हबंधाणं बंधइ, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०४५॥

अववाउस्सग्गियं सुत्तं, दोसा ते चेव, मासगुरुं च से पच्छित्त।

[1]तिण्हं तू बंधाणं, परेण जे भिक्खू बंधती पादं ।
विहिणा वा अविधिणा वा, सो पावती आणमादीणि ॥७४५॥

संतासंतसतीए, अथिर-अपज्जत्तऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७४६॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भएण आगाढे ।
सेसे चरित्त सावय, भए व असिवादियं एतं ॥७४७॥

भिण्णे व ज्झामिते वा, पडिणीए तेण सावयादीसु ।
एतेहिं कारणेहिं, णायव्वा संततो असती ॥७४८॥

संतासंतसंतीए, परेण तिण्हं न बंधियव्वं तु ।
एवंविधे असंते, परेण तिण्हं पि बंधिज्जा ॥७४९॥

---

१ अस्या गाथायाः परं गाथाचतुष्टयं नास्ति चूर्णौ, किन्तु "सव्वगाहाओ पूर्ववत्" इति लिखितमस्ति।

एवं ताव दिट्ठं अतिरेगबंधणं, तं पुण केवतिय काल [२]अवलक्खणं धरेयव्वं ? अतो सुत्तमागय –

जे भिक्खू अतिरेगं बंधणं पायं दिवड्ढाओ मासाओ परेण धरेइ,
धरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

दिवड्ढमासातो परं धरेंतस्स आणादिणो दोसो, मासगुरुं च से पच्छित्तं । ण केवलमतिरेगबंधण-मलक्खण दिवड्ढातो पर ण धरेयव्व । एगबन्धेण वि अलक्खण दिवड्ढातो पर न धरेयव्व – कंठा ।

अवलक्खणेगबंधं, दुग-तिग-अतिरेग-बंधणं वा वि ।
जो पायं परियट्टइ, परं दिवड्ढाओ मासाओ ॥७५०॥

कंठा ॥७५०॥

जो एगबंधणादि धरेति तस्स इमे दोसा –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तहा दुविहं ।
पावति जम्हा तेणं, अण्णं पादं वि मग्गेज्जा ॥७५१॥

तित्थयराणं आणाभगो, अणवत्था – एगेण धारितं अण्णो वि धरेति, मिच्छत्तं – ण जहावातिणो, तहाकारिणो, आयसजमविराहणा वक्खमाणगाहाहिं ॥७५१॥ अतिरेगबंधणमलक्खणे अण्णे वि सूतिता अलक्खणा ।

हुंडं सबलं वाताइद्धं, दुप्पुत्तं खीलसंठितं चेव ।
पउमुप्पलं च सवणं, अलक्खणं दड्ढ दुव्वण्णं ॥७५२॥

समचउरंसं जं न भवति तं हुड, कृष्णाविचित्तलाणि जस्स त सबल, अणिप्फण्णं वाताइद्ध ओप्पड-यंति वुच्चति । जं ठविज्जंतं उद्धं ठायति चालियं पुण पलोट्टति त दुप्पुत्तं । जं ठविज्जत ण ठाति तं खीलसठितं । जस्स अहो णाभी पउमागिती उप्पलागिती वा त पउमुप्पल । कटकादिखय सव्वणं । एताणि अलक्खणाणि । दड्ढदुवण्णाणि य दड्ढ अग्गिणा, पचवण्णोववेय दुव्वण्ण एकस्मिन्नपि न पततीत्यर्थ. ।

अहवा – प्रवालांकुरसन्निभं सुवण्णं सेसा सव्वे दुव्वण्णा अणिट्ठा इत्यर्थः ।

अहवा – अलक्खणं एगबंधणादी जं वा एयवज्ज आगमे अणिट्ठ ॥७५२॥

इमा चरित्त-विराहणा –

हुंडे चरित्तभेदो, सबले चित्तविब्भमो ।
दुप्पुत्ते खीलसंठाणे, गणे व चरणे व णो ठाणं ॥७५३॥
पउमुप्पले अकुसलं, सव्वाण वणमादिसे ।
अंतो बहिं च दड्ढे, मरणं तत्थ वि णिद्दिसे ॥७५४॥

उवकरण-विणासो णाण दंसण-चरित्त-विराहणा, सरीरस्स जं पीडा भवणं त सव्वमकुसलं भवति । सेसं कंठं ॥७५४॥

२ अपलक्षणं पात्रम् ।

दुव्वणम्मि य पादम्मि, णत्थि णाणस्स आगमो ।
तम्हा एते ण धारेज्जा, मग्गणे य विधी इमो ॥७५५॥

अवलक्खणेग बंधे, सुत्तत्थकरेंत मग्गणं कुज्जा ।
दुग-तिग-बंधे सुत्तं, तिण्हुवरि दो विवज्जेज्जा ॥७५६॥

हुंडादिलक्खणेगबघपातेण गहिएण सुत्तत्थपोरिसीओ करेंतो जहा भत्तपाणं गेवेसेति तहा सलक्खण मभिण्णं च पातं उप्पाएति । दुग-तिग-बधणे सुत्त-पोरिसिं काउ अत्थ-पोरिसिवेलाए मग्गति भिक्खं च हिंडतो तिण्हं जं परेणं बद्ध अतोवहिं वा दड्ढ णाभिभिण्ण वा जं एतेसु सुत्तत्थपोरिसीओ वज्जेति, सूरुग्गमाओ जाव भिक्ख पि हिंडतो मग्गति ॥७५५–७५६॥

केरिसं पादं ? केण वा कमेण ? त केत्तिय वा कालं मग्गियव्वं ? –

चत्तारि अधाकडए, दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण परं मग्गेज्जा, दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥७५७॥

चत्तारि मासा अहाकडयं पायं मग्गियव्वं, जाहे तं चउहिं वि ण लद्धं तदुवरि दो मासा अप्पपरिकम्मं मग्गियव्वं, जाहे तं पि ण लब्भति ताहे बहुपरिकम्म दिवड्ढमास मग्गेजा ॥७५७॥

किं कारणं ? जाव तं अद्धमासेण परिकम्मिज्जति ताव वासाकालो लगति ।

कम्हा ? तम्मि परिकम्मणा णत्थि ।

एवं वि मग्गमाणे, जति पातं तारिसं ण वि लभेज्जा ।
तं चेवऽणुकड्ढेज्जा, जावऽण्णं लब्भती पादं ॥७५८॥

जारिसं आगमे भणिय सलक्खणं, जति तारिसं ण लभेज्जा तं चेव अणुकड्ढेज्जा ॥७५८॥ भणिया परिकम्मणा उस्सग्गेण अववातेण य ।

इदाणिं तस्सेव पायस्स बधणं जाणियव्वं । किं च तं वत्थं ? तेणिमं सुत्तं –

जे भिक्खू वत्थस्स एगं पडिताणियं देइ, देंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४७॥

वासयती ति वत्थं, च्छाएति त्ति वुत्तं भवति । पडियाणिया थिग्गलयं छंदंतो य एगट्ठं, तं जो तज्जातं अतज्जात वा देति सो आणाति-विराहणं पावति, मासगुरुं च से पच्छित्तं ।

कतिविहं वत्थं ? णिज्जुत्ती वित्थारेति –

जंगिय-भंगिय-सणयं, पोत्तं च तहा तिरीडपत्तं च ।
वत्थं पंच-विकप्पं, ति-विकप्पं तं पुणेक्केक्कं ॥७५९॥

जंगिय-भंगिय दो वि वक्खाणेति –

उण्णोट्टे मियलोमे, कुयवे किट्टे य कीडए चेव ।
जंगविधी अतसी पुण, भंगविधी होति णायव्वा ॥७६०॥

---

१ इमा गाथा – नास्ति चूर्णौ ।

ऊरणीरोमेसु तुण्णियं, उट्टरोमेसु उट्टियं, मियाण लोमेसु मियलोमिय, कुतकिट्टा वि रोमविसेसा चेव देसंतरे, इह अप्पसिद्धा ।

अण्णे भणंति – कुतवो वरक्को तो किट्टिसं एतेसिं चेव अवघाडो । कीडयं वडय पट्टोति । एते सव्वे वि जंगमसत्ताण अवयवेहिंतो णिप्फण्णा जगविही । अतसमादि भंगियविही ॥७६०॥

सणमाई वागविही, पोत्तविही पोंडयं समक्खातं ।
पट्टो य तिरीडस्सा, तया विधी सा समक्खाया ॥७६१॥

सणमादी वागो, पोत्तं पोंडयं [1]वमणिनिप्पन्नमिति वुत्तं भवति, पट्टो तिरीड - रुक्खस्स तया सा तया विही समक्खाया ॥ ६१॥ एतेसिं जो अवकिट्टो तं किट्टिस ।

पंचपरूवेऊणं, पत्तेयं गिण्हमाणसंतंम्मि ।
कप्पासिया य दोण्णि तु, उण्णिय एक्को तु परिभोए ॥७६२॥

एसा "भद्दबाहु" सामिकता गाहा । पुव्वगाहादुगेण पचण्ह वि सरूवं परूवित । त "संतम्मि" त्ति लब्भमाणेसु "पत्तेय" पंचसु वि "गेण्हमाणे" त्ति दो कप्पासिया एगो उण्णिओ गेण्हियव्वो । एतेसिं परिभोगे विवच्चासो न कज्जति । वासत्ताणं मोत्तूण एगस्स उण्णियस्स णत्थि परिभोगो ॥७६२॥

कप्पासियस्स असती, वागयपट्टो य कोसिकारे य ।
असती य उण्णियस्सा, वागय-कोसेज्जपट्टे य ॥७६३॥

जो कप्पासियं ण लभेज्जा ताहे कप्पासियट्ठाणे वागमयं गेण्हेज्जा । तस्सासइ पट्टमय गिण्हइ । तस्सासति कोसियारमयं गिण्हति । एवं कप्पासित असतीते भणित । जाहे उण्णियं न लब्भति ताहे उण्णियट्ठाणे वागमयं घेप्पति, तस्सासति कोसियारमयं, तस्सासति पट्टमय ॥७६३॥

इदाणिं परिभोगो –

अब्भंतरं च बाहिं, बाहिं अब्भिंतरे करेमाणो ।
परिभोगविवच्चासे, आवज्जति मासियं लहुयं ॥७६४॥

दो पाउणमाणस्स कप्पासियमब्भंतरे परिभुंजति, उण्णियं बाहिं परिभुंजति । एस विहीपरिभोगो । अविहीपरिभोगो पुण कप्पासियं बाहिं उण्णियं अतो । एस परिभोग-विवच्चासो असामायारिणिप्फन्नं च से मासलहुं ॥७६४॥

एक्कं पाउरमाणे, तु खोमियं उण्णिए लहू मासो ।
दोण्णियपाउरमाणो, अंते खोम्मी बहिं उण्णी ॥७६५॥

एक्क खोमियं पाउणति । उण्णियमेगं न पाउणिज्जति । अह पाउणति मासलहु च से पच्छित्तं । पच्छद्धं कंठं ॥७६५॥

खोमियस्स अतो उण्णियस्स य बहिं परिभोगे इमो गुणो –

छप्पइयपणगरक्खा, भूसा उज्झायणा य परिहरिता ।
सीतत्ताणं च कतं, तेण तु खोमं न बाहिरतो ॥७६६॥

---

१ कपास ।

कप्पासिए छप्पतिया ण भवंति इतरहा बहू भवति। पणओ उल्लियंतो, उण्णिए पाउणिज्जमाणे मलीमसं, तत्थ मलीमसे उल्ली भवति, सा विहिपरिभोगेण रक्खिता भवति। बाहिं खोमिएण पाउ एण वि "भूसा" भवति, विधिपरिभोगेण सा वि परिहरिया। वत्थ मलक्खमं न कंबली, मलीमसा य कंबली दुग्गंधा, विहिपरिभोगेण सा वि [1]"उज्झातिया" पडिहरिया। पडिगब्भा कबली ति "सीयत्ताणं" कयं भवति। एतेहिं कारणेहिं खोमं ण बाहिं पाउणिज्जति त्ति विकप्प ॥७६६॥

तं पुणो वि एक्केक्क त्ति एयस्स इमं वक्खाणं –

जं बहुधा छिज्जंतं, पमाणवं होति संधिजंतं वा।
सिव्वेतव्वं जं वा, तं वत्थं सपरिकम्मं तु ॥७६७॥

जं बहुहा छिज्जतं सधिज्जत वा पमाणपत्तं भवति, बहुहा वा जं सिव्वियव्वं, तं वत्थं बहुपरिकम्मं ॥७६७॥

जं छेदेणेगेणं, पमाणवं होति छिज्जमाणं तु।
संधण-सिव्वण-रहितं, तं वत्थं अप्पपरिकम्मं ॥७६८॥

जं एगच्छेदेण पमाणवं भवति दसाओ वा परिछिदियव्वा तं अप्पपरिकम्मं, "संधण" दोण्ह खंडाणं सिव्वणं, उक्कुइय तुण्णणाति ॥७६८॥

जण्णेव छिंदियव्वं, संधेयव्वं व सिव्वियव्वं च।
तं होति अधाकडयं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥७६९॥

जं पुण छिंदण-सिव्वण-संधण-रहितं तं अहाकडं। बहुपरिकम्मादि एक्केक्क जहण्णमज्झिमुक्कोसयं भवति ॥७६९॥

पढमे पंचविधम्मि वि, दुविधा पडिताणिता मुणेयव्वा।
तज्जातमतज्जाता, चतुरो तज्जात इतरे वा ॥७७०॥

इह पण्णवणं प्रति बहुपरिकम्मं "पढमं"। त च जंग-भंगादी पंचविधं। तत्थ कारणमासज्ज गहिते दुविधं पडियाणियं देज्जा तज्जातमतज्जायं। जंगियस्स भगियादि चउरो अतज्जाता, जगिय असमाणजातित्तणओ, एगा तज्जाया। एवं सेसाणमवि चउरोऽतज्जाया इतरा एगा तज्जाता।

अहवा – एक्केक्कं वत्थं वण्णओ पंचविधं, तत्थ समाणवण्णा तज्जाया, चउरो अतज्जाता ॥७७०॥

एतेसामण्णतरे, वत्थे पडियाणियं तु जो देज्जा।
तज्जातमतज्जातं, सो पावति आणमादीणि ॥७७१॥

एतेसिं जंगियादिवत्थाणं किण्हादिवत्थाणं वा अण्णतरे, तज्जातमतज्जायं जो पडियाणियं देइ सो आणाति पावति ॥७७१॥

---

१ उज्झायणा।

तम्हा आणादिदोसपरिहरणत्थं ग्रहाकडं घेत्तव्वं । ग्रहाकडस्स –

संतासंतसतीए, अथिर-अपज्जतऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७७२॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भएण आगाढे ।
सेहे चरित्तसावय भए व असिवादियं एतं ॥७७३॥

भिन्नेव ज्झामिते वा, पडिणीए तेण सावयातीसु ।
एतेहिं कारणेहिं, णायव्वा संततो असती ॥७७४॥

संतासंतसतीए, कप्पति पडियाणिता तु तज्जाता ।
असती तज्जाताए, पडिताणियमेतरं देज्जा ॥७७५॥

संतासंतसतिमातिकारणेहिं कप्पति तज्जाया पडियाणिया दाउं । असति तज्जाताए "इतरा" – अतज्जाता वि दायव्वा ॥७७२–७७५॥

जे भिक्खू वत्थस्स परं तिण्हं परिताणियाणि देति,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

वत्थेणं परं तिण्हं देति, देंतस्स मासगुरुं पच्छित्तं । दिट्ठा एगा पडियाणिया 'कारणे, पसंगा बहुइम्रो दाहिति, तेणिमं सुत्तं भण्णति ।

पडियाणियाणि तिण्हं, परेण वत्थम्मि देति जे भिक्खू ।
पंचण्हं अण्णतरे, सो पावति आणमादीणि ॥७७६॥

कारणे जाव तिण्णि ताव देया, तिण्ह परतो चउत्थो ण देयो । जगियाति पंच किण्हवण्णाति वा पंच देंतस्स आणादयो दोसा ॥७७६॥

कारणतो पुण तिण्हं परतो वि दिज्जा ।

किं तं कारण ? उच्यते –

[1]संतासंतसतीए, दुब्बल हीणे अलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७७७॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भएण आगाढे ।
सेहे चरित्तसावय, भए व असिवादियं एतं ॥७७८॥

भिण्णे व ज्झामिते वा, पडिणीए तेण सावयादीसु ।
एतेहिं कारणेहिं, णायव्वा संततो असती ॥७७९॥

---

१ एतन्मध्यगतपाठो नास्ति चूर्णौ ।

संतासंतसतीए, परेण तिण्हं ण ताणियव्वं तु ।
एवंविधे असंते, परेण तिण्हं पि ताणिज्जा ॥७८०॥

सव्वाओ गाहाओ कंठा ॥७८०॥

जे भिक्खू अविहीए वत्थं सिव्वइ, सिव्वंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

दिट्ठा पडियाणिया, सा असिव्विया ण भवति, एवं सिव्वणं दिट्ठं । तं पुण काए विहीए ? एतेणाभिसंबंधेणिमं सुत्तं "जे भिक्खू अविहीए सिव्वति" तस्स मासगुरु पच्छित्तं ।

पंचविधम्मि वि वत्थे, दुविधा खलु सिव्वणा तु णातव्वा ।
अविधिविधीसिव्वणया, अविधी पुण तत्थिमा होति ॥७८१॥

दुविहा सिव्वणा – अविधिसिव्वणा विधिसिव्वणा य । तत्थ अविहिसिव्वणा इमा ।

गग्गरग[1] दंडिवलित्तग[2]-जालेगसरा[3]-दुखील[4]-एक्का[5] य[6] ।
गोमुत्तिगा[7] य अविधी, विहि झसंकटा[1] विसरिगा[2] ॥७८२॥

गग्गर सिव्वणा जहा संजतीणं, डंडिसिव्वणी जहा गारत्थाणं । जालगसिव्वणी-जहा[1] वरक्खाइसु एगसरा, जहा संजतीण पयालणीकसासिव्वणी णिब्भंगे वा दिज्जति । दुक्खीला संधिज्जंते उभओ खीला देति । एगखीला एगतो देति । गोमुत्तासंधिज्जंते इओ इओ एक्कसिं वत्थं विंधइ । एसा अविधीविधि झसंकंटा सा संधणे भवति, एक्कतो व उक्कुइते संभवति, विसरिया सरडो भण्णति ॥७८२॥

एत्तो एगतरीए, अविधिविधीए तु जो उ सिव्वेज्जा ।
पंचण्हं एगतरं, सो पावति आणमाईणि ॥७८३॥

सुत्तत्थपलिमंथो, जं च पडिलेहा ण सुज्झति संजमविराहणा । कारणे पुण विधीए, पच्छा अविधीए व सिव्वेज्जा ॥७८३॥

[2]चउरो गाहाओ –

जे भिक्खू वत्थस्सेगं वा फालियगंठितं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू वत्थे एगमपि फालिगंठिं देति, देंतस्स मासगुरु पच्छित्तं ।

[3]चउरो गाहाओ अत्थ वि पुव्व कमेण भणियाओ ।

पंचण्हं अण्णतरे, वत्थे जो फालिगंठियं देज्जा ।
सिव्वणगंठे कमतो, सो पावति आणमाईणि ॥७८४॥

तं किमत्थं देति सिव्वणं ? गंठि त्ति काउं मा सुट्ठुतरं फिट्टिस्सति । जति करेति आणातिणो य दोसा ॥७८४॥

गहणं तु अधाकडए, तस्सऽसतीए उ अप्पपरिकम्मे ।
तस्सऽसइ सपरिकम्मे, गहणं तु अफालिए होति ॥७८५॥

---

१ जहा रहचक्कादिसु, एगसरा इत्यपि । २, २३२-३३-३४-३५ । ३, २३२-३३-३४-३५ ।

तस्सऽसति फालितम्मि, गहणं जं एगगंठिणा बज्झे ।
तस्सऽसति दुगतिगं पी, तस्सऽसती तिण्हवि परेणं ॥७८६॥ कंठा

जे भिक्खू वत्थस्स परं तिण्हं फालिगंठियाण करेति ;
करेंतं वा सातिज्जति ॥५१॥

जे भिक्खू वत्थस्स एगं फालियं गण्ठेइ, गण्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू वत्थस्स परं तिण्हं फालियाणं गण्ठेइ,
गण्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू वत्थं अविहीए गंठेति; गण्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू अतज्जाएणं गवेसेइ, गवेसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू वत्थे तिण्ह परं देंतस्स मासगुरुं, आणादिणो दोसा ।

तिण्हुपरि फालियाणं, वत्थं जो फालियं पि संसिव्वे ।
पंचण्हं एगतरे, सो पावति आणमादीणि ॥७८७॥

संतासंतसतीए, अथिर अपज्जतऽलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥७८८॥

[1]असिवे ओमोयरिए, "ताओ चेव गाहाओ कंठाओ ॥७८८॥

तं पुण गहणं दुविधं, तज्जातं चेव तह अतज्जातं ।
एक्केक्के एक्केक्कं, तज्जाति चतुरो अतज्जाए ॥७८९॥

जगमादि एक्केक्के समाणजातीय एक्केक्क तज्जायं । असमाणा चउरो अतज्जाता, वण्णतो वा। तज्जातमतज्जात ॥७८९॥

जं जारिसयं वत्थं, वण्णेणं जारिसं व जं होति ।
तारिसतज्जातेणं, गहणेणं तं गहेतव्वं ॥७९०॥ कंठा

बितियपदमणप्पज्झे, गहेज्ज अधिकोवितेव अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, असती सरिसस्स दोरस्स ॥७९१॥

खित्तादिचित्तो अणप्पवसो, सेहो वा अविकोविओ, जाणओ वा गीयत्थो । असति सरिसदोरस्स अतज्जाएणं गंथेज्जा ॥७९१॥

जे भिक्खू अइरेगगहियं वत्थं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेति;
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

१, २३४-३५ ।

जे भिक्खू अतिरेगगहित वत्थ परं दिवड्ढमासातो धरेज्जा तस्स आणाई, मासगुरुं च से पच्छित्तं ।

अवलक्खणेगगहितं, दुग-तिग-अतिरेग-गंठिगहियं वा ।
जो वत्थं परियट्टइ, परं दिवड्ढाओ मासाओ ॥७६२॥

कंठा ॥७६२॥

जो धरेइ –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, अण्णं वत्थं वि मग्गेज्जा ॥७६३॥

अवलक्खणस्स इमे दोसा – कंठा ॥७६३॥

अवलक्खणो उ उवधी, उवहणती णाणदंसणचरित्ते ।
तम्हा ण धरेयव्वो, कारण विधिमग्गणा य इमा ॥७६४॥

कारणे पुण धरेयव्वो । इमाए विधीए सलक्खणो उवधी मग्गियव्वो ॥७६४॥

अवलक्खणेगगहिते, सुत्तत्थ करेंति मग्गणं कुज्जा ।
दुगतिगबंधे सुत्तं, तिण्हुवरिं दो वि वज्जेज्जा ॥७६५॥

दुगतिगगहिते सुत्तं करेति अत्थं वज्जेति । चउरादिसु गहितेसु सुत्तत्थे दो वि वज्जेत्ता मग्गति ॥७६५॥

इदाणिं अहाकडप्पबहुपरिकम्माणं कालो भण्णति –

चत्तारि अहाकडए, दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण पर वि मग्गेज्जा, दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥७६६॥

एवं वि मग्गमाणे, जदि वत्थं तारिसं ण वि लभेज्जा ।
तं चेवऽणुकड्ढेज्जा, जावऽण्णं लब्भती वत्थं ॥७६७॥

पूर्ववत् ॥७६७॥

जे भिक्खू गिहधूमं अण्णउत्थिएण वा गारित्थिएण वा परिसाडावेइ,
परिसाडावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

आणादि, मासगुरुं च से पच्छित्त ।

कम्हा घर-धूमं सो घेप्पति ?

घरधूमोसहकज्जे, दद्दु किडिभेदकच्छुअगतादी ।
घरधूमम्मि णिबंधो, तज्जातिअ सूयणट्ठाए ॥७६८॥

"दद्दू" पसिद्धं "किडिभ" जंघासु कालाभं रसियं वहति "कच्छू" पामा, अगतादिएसु वा छुब्भति । घर-धूमे सुत्तणिबंधो, तज्जाइयसूयणट्ठा कतो । तज्जादियगहणातो अण्णे वि रोगा सूतिता, तेसु जे ओसहा ताणि

अण्णउत्थिएण गेण्हावेंतस्स एतदेव पच्छित्त, अचित्त तज्जाइयसूयणं वा अण्णेसु वि रोगेसु किरिया कायव्वा ॥७९८॥

तं अण्णतित्थिएणं, अहवा गारत्थिएण साडावे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥७९९॥

पूर्ववत् ॥७९९॥

गारत्थिअण्णउत्थिएसु इमे दोसा –

हत्थेण अपावेंतो, पीढादि चले जिए सकायं वा ।
भंडविराधण कणुए, अहि-उंदुर पच्छकम्मे वा ॥८००॥

भूमीठितो हत्थेहिं अपावेंतो पीठात्ति चलं ठवेत्तु तत्थारोढु गेण्हति, तम्मि चले पवडतो पिपीलिया-दिजिए विराहेज्जा, सकाए वा हत्थादि विराहेज्जा, भंडगाणि वा विराहेज्जा, अच्छीसु कणुय पडेज्जा, अहि उंदुरेण वा खज्जेज्जा, गारत्थऽण्णउत्थिया य पच्छाकम्म करेज्ज । तम्हा ण तेहिं गेण्हावे ॥८००॥

अप्पणा चेव –

पुव्वपरिसाडितस्स, गवेसणा पढमताए कायव्वा ।
पुव्वपरिसाडितासति, तो पच्छा अप्पणा साडे ॥८०१॥

पुव्वपरिसाडियं ण लब्भति तो पच्छा अप्पणा साडेति जयणाए, जहा पुव्वभणिया दोसा ण भवति ॥८०१॥

कारणे पुण तेहिं वि साडावेति –

बितियपद होज्ज असहू, अहवा वि सहू पवेस ण लभेज्जा ।
अधवा वि लब्भमाणे, होज्जा दोसुब्भवो कोयी ॥८०२॥

अप्पणा असहू, घरे वा पवेसं ण लब्भति, अगारी वा तत्थ पविट्ठ उवसग्गेति, अण्णो वा को ति हियणट्ठा दिएहिं दोसुब्भवो होज्जा । एवमादिकारणा अवेक्खिउं कप्पति ॥८०२॥

कप्पति ताहे गारत्थिएण अधवा वि अण्णतित्थीणं ।
पडिसाडण काउं जे, धूमे जतणा य साहुस्स ॥८०३॥

गारत्थिअण्णउत्थिएण घरधूमं साडावेउ कप्पति ॥८०३॥

जे भिक्खू पूइकम्मं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति, तं सेवमाणे आवज्जति मासियं पडिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥५८॥

वावण्णं विणट्ठ कुहितं पूतिं भण्णति । इह पुण समए विसुद्धं आहारादि अविसोधिकोटीदोसजुएणं सम्मिस्सं पूतितं भण्णति ।

पूतीकम्मं दुविधं, दव्वे भावे य होति णायव्वं ।
दव्वम्मि छगण धम्मिय, भावम्मि य बादरं सुहमं ॥८०४॥

"पुती" कुहित, "कम्म" मिति आहाकम्मं, समए तस्यानिष्टत्वात्, तत् पूति, यदपि तेन संसृष्टं तदपि पूति, इह तु संसृष्टं परिगृह्यते। तं पि दुविधं – दव्वे भावे य। दव्वे धम्मियदिट्ठंतो, देवायणे गोट्ठि णिउत्तो धम्मितो, तेण उस्सवतिहिणिमित्तं उवलेवणछगणमोहारंतेण समिति वल्ल-चण-यव तिमीसं पाणगपुरीसं गहितं, तव्वतिमिस्सेण छगणेण देवायणमुवलित्तं, गोट्ठियागमो, घाणअग्घायणं, वल्लचणयदंसणं, तं सव्वभवणेत्तु पुण्णमण्णेण लिपणं। तत्थ छगणं अपूइ सण्णाति पूतितं। पूतिणा संसट्ठं तदपि पूतिरित्यर्थः। भावपूतियं दुविधं – बादरं सुहुमं च ॥८०४॥

तत्थिमं सुहुमं –

> इंधणधूमे गंधे, अवयवमादी य सुहुमपूईयं।
> जेसिं तु एत वज्जं, सोधी पुण विज्जते तेसिं ॥८०५॥

"इंधणं" दारुय, तस्स धूमो इधणधूमो, सो आहाकम्मे रन्धमाणे लोगं फुसति, तेण छिक्क सव्व पूतीयं भवति। गंधपोग्गलेहिं वा छिक्क सव्व पूतीतं। धूमगंधवज्जेहिं वा सुहुमावयवेहिं छिक्क पूतीत भवति। एय सव्वं सुहुम ॥८०५॥

सीसो पुच्छति – तं कि वज्ज, अवज्ज ?

आयरियाह – जेसिं तु पच्छद्ध। गत सुहुमं।

> बादरपूतीयं पुण, आहारे उवधि वसधिमादीसु।
> आहारपूइयं पुण, चउव्विहं होति असणादी ॥८०६॥
> अहवाऽऽहारे पूती, दुविधंतु समासतो मुणेयव्वं।
> उवकरण पूति पढमं, बीयं पुण होंति आहारे ॥८०७॥

बादरं तिविधं – आहार, उवहिं, सेज्जा। आहारपूतितं चउव्विह – असणादितं समासतो दुविधं- आहारे उवकरणे य। तत्थ जं तं रद्धंतस्स वा दिज्जतस्स उवकारं करेति तं उवकरणपूतितं ॥८०६–८०७॥

तं च इमं –

> चुल्लुक्खलियं डोए, दव्वी छूढे य मीसियं पूतिं।
> डाए लोणे हिंगू, संकामण फोड संधूमे ॥८०८॥

पुव्वद्धे उवकरणपूतितं, पच्छद्धे आहारपूतितं गहितं। तं कहं पुण चुल्लुखलियाण संभवो ? संघभत्तेसु संघणिमित्तं चुल्ली कज्जति, सा ऽऽहाकम्मिया, तेण आहाकम्मित-कद्दमेण अप्पणो पुव्वकताए चुल्लीए फुंडगं सठवेति, एसा पूतिया चुल्ली। आहाकम्म-पूतियासु दोसु वि चुल्लीसु अप्पमोवक्खडेति, तत्थ ण कप्पति, उवकरणपूतितं काउं, उत्तिण्णं कप्पति। उक्खलिया थाली, जा साधुणिमित्तं घडिया सा आहाकम्मिया, जा पुव्वं आयट्ठे कडा आहाकम्मियकद्दमेण फुड्डतिता सा पूती एआसु दोसु आयट्ठे रद्धं, तत्थत्थं ण कप्पति, उवकरणपूतितं ति काउं छब्बगादिसु अण्णत्थ उक्किरिउं कप्पति। साहुणिमित्तं छेत्तुं डोअदव्वी घडिया आहाकम्मिया, आयट्ठा घडिया णवा, भग्गो गंडो, साहुणिमित्तं कते गडे पूतिता, एतेसु विसुद्धभत्तमज्झे छूढेसु दुट्ठोव णत्र ति मिस्सत्तातो उवकरणपूतियं। तेसु तत्थ ठिएसु अण्णेणवि देति न कप्पति।

अहवा – 'छूढेय मीसियं पूर्ति" ति । एयस्स इम वक्खाण—दीहिचुल्ली, कतासु उक्खासु पढमउक्खाए आहाकम्म, वितिय-चउत्थादिसु आयट्ठ उवक्खडेति, पढम दव्वीए घट्टेउ वितियचउत्थासु छोढुं घट्टेति पूतिमीसं भवति, उवकरणाहारसभवाउ मीसं । उवकरणपूतितं गतं ।

इदाणिं आहारपूतितं –

"डागो" पत्तसागो, सो संघट्टादिकारणो कम्रो । संघट्टा लवण वट्टियं, सघट्टा हिंगु पल्लालिय, एताणि त्थोवं त्थोवं अप्पणो रद्धमाणे छुब्भति । एतं आहारपूतियं ।

जत्थाहाकम्मं रद्धं त सकामेउं अप्पणो रवेति पूतियं भवति । उवरि घूमणेण धोवित 'फोडित" भण्णति । तं संघट्टा तलियं अप्पणो रद्धेमाण छुभति पूतितं । "संघूमे" त्ति संघट्टा अगाल घूवो कतो अप्पणो वि तम्मि चेव भायणं ठवेति, तत्थविलादि छुभति तं पूइत ॥८०८॥

इदाणिं अविसोधिकोडीए अकप्पकरणविधाणं भण्णति –

लेवेहिं तीहिं पूतिं, कप्पते सुद्ध तिण्ह व परेण ।
तेण परं सेसेसुं, जावतियं फासते पूतिं ॥८०९॥

जत्थुक्खाए आहाकम्म कय तत्थेगदिणेण ततो वारा अप्पणट्ठा उवक्खडेति ति-दिणेण वा, तिसु वि लेवेसु पूतितं भवति । तं पूतित जत्थ भायणे गहिय तं कयकप्पं सुज्झति । कप्पपमाणपदरिसणत्थं तिण्ह उ परेणं चउत्थे कप्पे सुज्झति, सह तेन कल्पोदकेनेत्यर्थ ।

अहवा – "तिण्ह व परेण", वकारो विकप्पदरिसणे, णिरवयवं तिसु, सावयवं तिण्ह व परेणेत्यर्थः । "तेण परं" ति चतुर्थकल्पात् परत', परशब्दोऽत्र आरं वाची ति सेसा वि पढमकप्पा, तिसु जं पुट्ठं तं सव्वं पूतियं, ण केवलं आहाकम्मेण पुट्ठं पूतितं, पूतिएण वि पुट्ठं पूइमित्यर्थः ।

अहवा – ततः ततियकप्पापरतो सेसेण चउत्थकप्पेण पुट्ठं जावतियं त सव्व पूतितं ण भवतीति वाक्यशेष । एष एव गतार्थो । रन्धनकल्पेष्वेव वक्तव्यः ॥८०९॥

इदाणिं उवधिपूतितं –

उवही य पूतियं पुण, वत्थे पादे य होति नायव्वं ।
वत्थे पंचविहं पुण, तिविहं पुण होति पादंमि ॥८१०॥

उवधिपूतितं दुविह—वत्थे पादे य । वत्थे जगिताइ पंचविधं । लाउआति पादे तिविध । वत्थे आहाकम्मकडेण सुत्तेण सिव्वति थिग्गल वा देति, पाए वि सीवति थिग्गलं वा देति ॥८१०॥

इदाणिं वसहिपूतियं –

वसधीपूतियं पुण, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
एक्केक्कं सत्तविधं, णेतव्वं आणुपुव्वीए ॥८११॥

वसहिपूतितं दुविधं—मूलगुणे उत्तरगुणे य । मूलगुणे सत्तविह चउरो मूलवेलीओ, दो धारणा, पट्टिवंसो य । उत्तरगुणे सत्तविधा – वंसग कडण ओकंपण-छावण-लेवण-दुवार-भूमिकम्मे य । एत्थ अण्णतमे छ-फासुआ कट्ठा, सत्तमं आहाकम्मिय छुब्भति ॥८११॥

एवं पूतितसंभवो । पूतितं गेण्हंतस्स संजमविराहणा, असुद्धगहणातो देवया पमत्तं छलेज्ज, आयविराहणा अजिण्णे वा गेलण्णं भवेज्ज ।

बितियपदेणं आहारपूतितं गेण्हेज्ज –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, गहणं आहारपूतीए ॥८१२॥ पूर्ववत्

उवहिपूतितं इमेहिं कारणेहिं गेण्हेज्जा –

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं तु उवधिस्स ॥८१३॥ कंठा

पातपूतितं इमेहिं कारणेहिं गेण्हेज्जा –

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं भवे पादे ॥८१४॥

वसहिपूइते इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
वसधी-वाघातो वा, असती वा वसहि गहणं तु ॥८१५॥

असिवगहिता वसहिं ण लब्भंति, पूइए ट्ठायंति । ओमे पूइतवसहिट्ठिया भत्तं लभंति । रायदुट्ठे णिलुक्का अच्छंति । भए वि एवं गेलण्णे ओसहकारणादि ट्ठिया ण लब्भति वा अण्णा, सुद्धवसहि – वाघाए पूतिताए ठायति । असति वा सुद्धाए पूइयाए ठायंति । एवमादि असिवादिकारणे वहिता सावतादि भए जाणिऊण अंतो पूतिताए ठायंतीत्यर्थः ॥८१५॥ ग्रंथाग्रं – १०९५ उभयं ५५९५ (५३९५) ।

विसेस-णिसीहचुण्णीए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ।

द्वितीय उद्देशकः

भणिओ पढमो उद्देसो। इदाणिं अवसरपत्तो बितिओ भण्णति। पढम-बितित-उद्देसगाण-संबंधकारिणी इमा गाहा –

भणिया तु अणुग्घाया, मासा ओघातिया अहेदाणिं।
परकरणं वा भणितं, सयकरणमियाणि बितियम्मि ॥८१६॥

पढमउद्देसए गुरुमासा भणिता। अह इदाणिं बितिए लहुमासा भण्णंति।
अहवा – पढमुद्देसे परकरणं णिवारियं, इह बितिए सयकरणं निवारिज्जति ॥८१६॥

अहवा ऽयं संबंधः –

अहव [1]ण हेट्ठऽणंतर-सुत्ते घर-धूमसाडणं भणितं।
रयहरणेण पमज्जित, तं केरिसमेस संबंधो ॥८१७॥

बिति-उद्देसगपढमसुत्तातो हेट्ठा जं सुत्तं तं च पूइतं सुत्तं, तस्स अणंतरसुत्ते घर-धूमसाडणं भणियं, तं रओहरणेण साडिज्जति। तं रओहरणं इमं भण्णति ॥८१७॥

अहवा ऽयं संबंधः –

उवकरणपूतियं पुण, भणितं [2]अधमवि होति उवकरणं।
करकम्मादिपदे वा, इहमवि हत्थस्स वावारो ॥८१८॥

पढमुद्देसगस्स अंतसुत्ते उवकरणपूइतं भणितं। इह बितिय आदिसुत्ते उवकरणं चेव भण्णति।

अहवा ऽयं संबंधः –

पढमुद्देसग-आदिसुत्ते "करो" हत्थो, तस्स वावारो भणितो। इहावि दारुदंड-पाय-पुंछणकरणं हत्थव्यापार एव ॥८१८॥

अनेन संम्बन्धेनायातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदमादिसूत्रम् –

जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुंछणयं करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

---

१ वाक्यालंकारे। २ अधः अपि।

"जे" त्ति णिद्देसे, "भिक्खू" पूर्वोक्त, दारुमश्रो दंडश्रो जस्स तं दारुदडय, पादे पुंछति जेण त पादपुंछणं पट्टय-दुनिसिज्जवज्जिय रश्रोहरणमित्यर्थः। तं जो करेति, करेंत वा सातिज्जति तस्स मासलहु पच्छित्तं। एस सुत्तत्थो।

एयं पुण सुत्तं अववातियं।

इदाणि णिज्जुत्ति-वित्थरो –

पाउंछणगं दुविधं, उस्सग्गियमाववातियं चेव।
एक्केक्कं पि य दुविधं, णिव्वाघातं चा वाघातं ॥८१९॥

"पाउछणं" रश्रोहरणं, त दुविध – उस्सग्गियं आववातियं च। उस्सग्गियं दुविधं – णिव्वाघातितं वाघातियं च। आववातितं पि य दुविध – णिव्वाघातित वाघातितं च ॥८१९॥

एतेसिं वक्खाणमियाणि भण्णति –

जं तं णिव्वाघातं, तं एगंगियमुण्णियं तु णायव्वं।
वाघाते उट्टियं पि य, [1]सणवच्च य मुंज पिच्चं च ॥८२०॥

ज उस्सग्गितं णिव्वाघातितं तं एगगियं। एगगि उण्णियं भवति। इदाणि उस्सग्गे वाघातियं भण्णति – ज तस्सेव अणेगंगाश्रो उण्णिदसाश्रो। असति तस्सेव उट्टदसाश्रो। असति तस्सेव सणदसाश्रो। असति तस्सेव वच्चपिच्चदसाश्रो। वच्चश्रो, तणविसेसो दर्भाकृतिर्भवति। असति तस्सेव मुजपिच्चदसा मुजो पिच्चिउ त्ति वा, विप्पिउ त्ति वा, कुट्टितो त्ति वा एगट्ठं। असति उण्णियस्स उट्टितपट्टतो एगगदसो। एगंगासति उण्णिय-उट्ट-सणादिदसा चारेयव्वा। एते उस्सग्गित-वाघातप्रकारा अभिहिता इत्यर्थः ॥८२०॥

इदाणिं अववातिक दुविधं भण्णति –

आवातं तध चेव य, तं णवरि दारुदंडगं होति।
वाघाते अतिरेगो, इमो विसेसो तहिं होति ॥८२१॥

जहा उस्सग्गित णिव्वाघातं उण्णिदस, वाघातितं च उट्टादिदसं भणितं, आववातितं तथा वक्तव्यमित्यर्थः। रश्रोहरणपट्टयदुण्णिसेज्जवज्जिय दारूदंडयमेव तं भवति। उस्सग्गियआववातितवाघाते अइरेगो इमो अण्णो वि दसाविसेसो भवति ॥८२१॥

उवरिं तु मुंजयस्सा, कोसेज्जय-पट्ट-पोत्त-पिंछे य।
संबंधे वि य तत्तो, एस विसेसो तु वाघाते ॥८२२॥

रश्रोहरणपट्टे दारुदडे वा मुंजदसा भवति। मुजदसाऽसति कोसेज्ज दसा, कोसेज्जा [2]वडश्रो भण्णति, तस्सासति दुगुल्लपट्टदसा, पट्टदसासति पोत्तदसा, पोत्तदसासति मोरंगपिछदसा। 'संबंधे वि य तत्तो" त्ति ततः कोसेतकादिविकप्पेसु वि संबंधासबंधविकप्पेण रश्रोहरणविकल्पा कार्या, [3]आद्य भेदानामभावादित्यर्थः ॥८२२॥

---

१ बृहत्कल्प उद्दे० २ सू० २५। शरस्तम्भः तं कुट्टयित्वा तदीयो यः क्षोदस्तं कतयन्ति। ततस्तैः वच्चकसूत्रैः मुजसूत्रैश्च गोपा शबारको व्यूयते प्रावरणास्तरणानि च देशविशेषमासाद्य कुर्वन्ति। अतस्तन्निष्पन्नं रजोहरणं वच्चक-विप्पकं मुजविप्पकं वा भण्यते। २ टसरः इति भाषाया। ३ पश्य गा० ८२९ चूर्णि।

चतुर्भंगार्थनिरूपणार्थं गाथाद्वयमाह् –

जं तं णिव्वाघातं, तं एगं उण्णियं तु घेत्तव्वं ।
उस्सग्गियवाघातं, उट्टियसणवच्चमुंजं च ॥८२३॥

पूर्वार्धेन प्रथमभंगार्थः पश्चार्धेन द्वितीयभंगार्थः ॥८२३॥

णिव्वाघातववादी, दारुगदंडुण्णियाहिं दसियाहिं ।
अववातियवाघातं, उट्टियसणवच्चमुंजदसं ॥८२४॥

पूर्वार्धेन तृतीयभंगार्थः । पश्चार्धेन चतुर्थभंगार्थः ॥८२४॥

एवमेते चउरो भंगा विशेषार्थप्रदर्शनार्थमन्येनाभिधानप्रकारेण प्रदर्श्यन्ते –

अहवा उस्सग्गुस्सग्गियं च उस्सग्गओ य अववातं ।
अहवादुस्सग्गं वा, अववाओवाइयं चेव ॥८२५॥

उस्सग्गियणिव्वाघातादि चउरो जे भेया त एव चतुरः उत्सर्गोत्सर्गादि द्रष्टव्याः ॥८२५॥

प्रथम-द्वितीयभंगप्रदर्शनार्थं, तृतीय-चतुर्थभंगप्रतिषेधार्थं चेदमाह् –

एगंगि उण्णियं खलु, असती तस्स दसिया उ ता चेव ।
तत्तो एगंगोट्टी, उण्णियउट्टियदसा चेव ॥८२६॥

एगंगियउण्णियं संबद्धदसागं जं तं उस्सग्गुस्सग्गितं । इदाणिं उस्सग्गाववातितं भण्णति । असति संबद्धदसागस्स उण्णिय-पट्टए उण्णियदसा लातिज्जंति, तस्सासति एगंगियं उट्टियं, तस्सासति उट्टियपट्टए उण्णियदसा, तस्सासति उट्टियपट्टए उट्टियदसा, तस्सासति उण्णियपट्टए सणादिदसा सव्वा णेया ॥८२६॥

जओ भण्णति –

एवं सण वच्च मुंज चिप्पिते कोस-पट्ट-दुगुले य ।
पोत्ते पेच्छेय तहा, दारुगदंडे बहू दोसा ॥८२७॥

असति उण्णियपट्टयस्स उट्टियपट्टए सणादिदसा सव्वा णेया । उट्टियपट्टासति सणयं एगंगियं । तस्सासति सणपट्टए उण्णियादिदसा णेया । वच्चगे वि एगंगियं उण्णियादिदसा सव्वा चारेयव्वा । एव मुंजादिसु वि । णवरं – पिच्छे पट्टय ण भवति ।

चोदग आह् – णणु सणवच्चगादिपट्टगेसु कोसेज्जपट्टगादिदसा अणाइण्णा ।

[1]आयरियाह् – ता एव वरं, ण दारुडयं पादपुंछणं ।

कहं ? जतो दारुअदंडे बहू दोसा ॥८२७॥

के ते दोसा ? इमे –

इयरहवि ताव गरुयं, किं पुण भत्तोग्गहे अधव पाणे ।
भारे हत्थुवघातो, पडमाणे संजमायाए ॥८२८॥

---

१ पश्य गा० ८२४ ।

"इहरह" त्ति विणा भत्तपाणेण स्वभावेन गुरुरित्यर्थं. । "किं" मित्यतिशये, "पुनः" विशेषणे । जतो पडिग्गहे भत्तं वा पाणं वा गहितं तदा पुव्वं गुरु ततो गुरुतरं भवतीत्यर्थ. । गुरुत्वाद्धस्तोपघातः, पडमाणं गुरुत्वात् जीवोपघातं करोति, पादोवरि आतोवघातं वा, च सद्दा आणादओ दोसा । तम्हा दारुदंडयं पादपुंछणं न गेण्हियव्वं ॥८२८॥ कारणओ गेण्हेज्जा ।

इमे य ते कारणा –

संजमखेत्तचुया वा, अद्धाणादिसु हिते व णट्ठे वा ।
पुव्वकतस्स उ गहणं, उण्णिदसा जाव पिच्छं तु ॥८२९॥

जत्थ आहारोवहिसेज्जा काले वा सति सततं अविरुद्धो उवहि लब्भति, तं संजमखेत्तं, ताओ असिवातिकारणेहिं चुता । सेसं कठं ॥८२९॥

वेलुमओ वेत्तमओ, दारुमओ वा वि दंडगो तस्स ।
रयणी पमाणमेत्तो, तस्स दसा होंति भइयव्वा ॥८३०॥

दसा तस्स भाज्जा । कथं ? यद्यऽसौ त्रयोविंशांगुल तदा णवांगुल दसा । अथासौ चतुर्विंशांगुल तदा अष्टांगुला दसा । यद्यसौ पंचविंशांगुलः तदा सप्तांगुला दसा । दंडदसाभ्या अहाकडे एकतमे द्वितीयं भजनीयमित्यर्थः ॥८३०॥

तं दारुदंडयं-पादपुंछणं जो करे सयं भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८३१॥ कंठा

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेधतो य जतणा इमा तत्थ ॥८३२॥

उस्सग्गियस्स पुव्विं णिव्वाघाते गवेसणं कुज्जा ।
तस्सऽसती वाघाते, तस्सऽसती दारुदंडमए ॥८३३॥

तम्मि वि णिव्वाघाते, पुव्वकते चेव होति वाघाते ।
असती पुव्वकयस्स तु, कप्पति ताहे सयं करणं ॥८३४॥

तम्मि वि आववातिते णि वाघाते पुव्वकए गहणं, पच्छा वाघातपुव्वकए गहणं । असति पुव्वकतस्स पच्छा सयं करणं ॥८३४॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं गेण्हति, गेण्हंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

गहियं सत अपरिभोगेन धारयति ।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं वितरइ, वितरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

अण्णमण्णस्स साधोर्ग्रहणं पतिपुट्ठे "वियरति" ग्रहणानुज्ञां ददातीत्यर्थः ।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परिभाएति, परिभाएंतं वा सातिज्जति।।सू०।।५।।

विभयणं दानमित्यर्थः ।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

परिभोगो तेन कार्यकारणमित्यर्थः ।

एसेव गमो णियमा, गहणे धरणे तहेव य वियारे ।
परिभायण परिभोए, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।८३५।। कंठा

काउं सयं ण कप्पति, पुव्वकतंपि हु ण कप्पती घेत्तुं ।
धरणं तु अपरिभोगो, वितरण पुट्ठे पराणुण्णा ।।८३६।।

परिभायणं तु दाणं, सयं तु परिभुंजणं तदुपभोगो ।
गहणं पुव्वकतस्स उ, सयं परिकप्पते य धरणादी ।।८३७।।

गहण णियमा पुव्वकयस्स, धारणादिपदा पुण चउरो सयं कते, परकते वा भवंति । सूत्राणि पंच । (उद्दे० २ सू० २ से ६) ।।८३७।।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७।।

आणादि, आयसंजमविराहणा, मासलहु पच्छित्तं ।

उस्सग्गित-वाघातं, अहवा तं खलु तहेव दुविधं तु ।
जो भिक्खू परियट्टइ, परं दिवड्ढाउ मासातो ।।८३८।।

उस्सग्गियवाघातादि तिण्णि वि परं दिवड्ढातो मासा उवरि कड्ढंतस्स दोसा इमे –

सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं तथा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, अण्णं पाउंछणं मग्गे ।।८३९।।

"अण्णं" ति उस्सग्गियणिव्वाघातियं ।।८३९।।

इतरह वि ताव गरुयं, किं पुण भत्तोग्गहे अहव पाणे ।
भारे हत्थुवघातो जति पडणं संजमाताए ।।८४०।।

पूर्ववत् । तेण गुरुणा दंडपादपुंछणेण हत्थोवघाएहिं घेप्पति, पडंतं वा पायं विराहेज्जा, तत्थ अणागाढाति विराहणा, छक्कायविराहणा वा करेज्ज ।।८४०।।

तम्हा पर दिवड्ढाओ मासातो ण वोढव्वं, अण्णं मग्गियव्व इमाए जयणाए –

उस्सग्गियवाघाते, सुत्तत्थ करेति मग्गणा होति ।
बितियम्मि सुत्तवज्जं, ततियम्मि तु दो वि वज्जेज्जा ।।८४१।।

"बितियं" अववायुस्सग्गि, "ततियं" अववातावघातितं ।।८४१।।

चत्तारि अधाकडए, दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण पर वि य मग्गेज्जा, दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥८४२॥
एवं वि मग्गमाणे, जदि अण्णं पादपुंछणं न लभे ।
तं चेवऽणुकड्ढेज्जा, जावऽण्णं लब्भती ताव ॥८४३॥

[1]पूर्ववत् ॥८४३॥

एसेव गमो णियमा, समणीणं पादपुंछणे दुविधे ।
णवरं पुण णाणत्तं, चप्पडओ दंडओ तासिं ॥८४४॥

दुविहं—उस्सग्गियं अववातितं च । तासिं दंडए विसेसो हत्थकम्मादिपरिहरणत्थं चप्पडओ कज्जति, न वृत्ताकृतिरित्यर्थः ॥८४४॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणयं विसुयावेइ,
विसुयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

विसुआवणसुक्कवणं, तं वच्चयमुंजपिच्चसंबद्धे ।
तं कढिण दोसकारण, ण कप्पती सुक्कवेतुं जे ॥८४५॥

तं विसुआवणं पडिसिज्झति । वच्चयमुंजयचिप्पिएसु तद्दसिएसु वा, ते य सुक्का अतिकढिणा भवंति पमज्जणादिसु य ॥८४५॥

चोदक आह – तद्दोसपरिहारत्थिणा सव्वहा ण कायव्वमेव ?

आचार्याह – न इति उच्यते –

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेधतो य जतणा इमा तत्थ ॥८४६॥

एवमादिकारणेहिं कायव्वं इमाए जयणाए ॥८४६॥

उस्सग्गियस्स पुव्विं, णिव्वाघाते गवेसणं कुज्जा ।
तस्सऽसती वाघाते, तस्सऽसती दारुदंडमए ॥८४७॥

कंठा ॥८४७॥ मा जीवविराहणा भविस्सति । अतो ण उल्लेति ण वा सुक्कवेति । कारणओ उल्लेज्जा –

बितियपदे वासासू, उदुबद्धे वा सिय त्ति तिमेज्जा ।
विसुयावण छायाए, अद्धातवमातवे मलणा ॥८४८॥

वासाकाले वग्घारियवुट्ठिकायम्मि सग्गामपरग्गामे भिक्खादिगतस्स उल्लेज्जा । उदुबद्धे "वा-सिय" त्ति स्यात् कदाचित् ॥८४८॥

---

[1] उद्दे० १ गा० ७५२, ७५३ ।

कथं ? उच्यते –

उत्तरमाणस्स णर्दि, सोधेंतस्स व दवं तु उल्लेज्जा ।
पडिणीयजलक्खेवे, धुवणे फिडिते व्व [1]सिण्हाए ॥८४९॥

पडिणीएण वा जले खित्ते सव्वोवहि कप्पे वा तं धोतुं, पंथातो वा फिडियस्स उप्पहे उत्तरणेसु ओसाए उल्लेज्ज ॥८४९॥

असुक्खवेंतस्स इमे दोसा –

कुच्छणदोसा उल्लेण [2]दावितकज्जपूरणं कुणति ।
उंडा य पमज्जंते, मलो य आऊ ततो विसुवे ॥८५०॥

उल्ले असुक्खवेंतस्स[3] कुहए पमज्जणकज्जं च ण करेति । अह उल्लेण पमज्जति तो दसंतेसु गोलया पडिवज्झंति, मलिणे य वासासु आउवघो भवति। एवं दोसगणं णाउं [4]विसुआवे ति छायाए। जति ण सुक्खेज्ज तो "अद्धायवे" देति, तह वि असुक्खते "आयवे" सुक्खवेति, अंतरंतरे "मलेउं" पुणो आयवे ठवेति, एवं जाव मृक्ख मृदुकारणत्वात् ॥८५०॥

जे भिक्खू अचित्तपइट्ठियं गंधं जिंघति, जिघंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

णिज्जीवे चंदणादिकट्ठे गधं जिंघति मासलहु ।

जो गंधो जीवजढो, दव्वं मीसो य होति अच्चित्तो ।
संबद्धासंबद्धा य, जिंघणा तस्स णातव्वा ॥८५१॥

सर्वा निर्युक्तिः [5]पूर्ववत् ।

जे भिक्खू पदमग्गं वा संकमं वा आलंबणं वा सयमेव करेति;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

पूर्ववत्, णवरं मासलहु परकरणवज्जणं च। शेषं सनिर्युक्तिकं पूर्ववत्[6] ।

जे भिक्खू दगवीणियं सयमेव करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

सभाष्यं पूर्ववत्[7] ।

जे भिक्खू सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

सभाष्यं पूर्ववत्[8] ।

जे भिक्खू सोत्तियं वा रज्जुयं वा (चिलिमिलिं वा) सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

---

१ हिम करा । २ दर्शितकार्यः । ३ कुथिते । ४ गा० ८४८ उत्तरार्धं व्या० । ५ (प्र०उ०सू० १०) । ६ (प्र० उ० सू० ११) । ७ (प्र० उ० सू० १२) । ८ (प्र० उ० सू० १३) ।

सभाष्यं पूर्ववत्[1]।

जे भिक्खू सूईए, उत्तरकरणं सयमेव करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू पिप्पलयस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णहच्छेयणस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू कण्णसोहणयस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

सभाष्यं पूर्ववत्[2]।

जे भिक्खू लहुसगं फरुसं वयति, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

"लहुसं" ईषदल्पं स्तोकमिति यावत् "फरुसं" णेहवज्जियं अण्णं साहुं वदति भाषतेत्यर्थः।

तं च फरुसं चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य लहुसगं भवे फरुसं।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८५२॥

एतेसिं दव्वखेत्तकालाणं जहासंखं इमं वक्खाणं ॥८५२॥

दव्वम्मि वत्थपत्तादिएसु खेत्ते संथारवसधिमादीसु।
काले तीतमणागत, भावे भेदा इमे होंति ॥८५३॥

वत्थादिमपस्संतो, भणाति को णं सुवती महं तेणं।
खेत्ते को मम ठाए, चिट्ठति मा वा इहं ठाहि ॥८५४॥

आदिग्गहणेणं डगलग-सूतिपिप्पलगादओ वि घेप्पंति। दव्वे वत्थपत्तादिएसु त्ति अस्य व्याख्या – वत्थपत्तसूइगादि अप्पणोच्चिया अपस्संतो एवं भणाति – महं अत्थि त्ति काउं इस्साभावेण को णिद्दं लभति ? इस्साभावेण वा महं तेण[3] हडं एवं दव्वओ लहुसयं फरुसं भासति। खेत्तओ लहुसयं फरुसं तस्स संथारभूमीए कं चिट्ठयं पासित्ता भणति "को ममं संथारभूमीए ठाति अप्पं जाणमाणो"।

अहवा – मा मम संथारभूमीए ठाहि ॥८५४॥

"काले तीतमणागते" त्ति अस्य व्याख्या –

गंतव्वस्स न कालो, सुहसुत्ता केण बोधिता अम्हे।
हीणाहियकालं वा, केण कतमिणं हवति काले ॥८५५॥

---

१ (प्र० उ० सू० १४)। २ (प्र० उ० सु० १५-१६-१७-१८)। ३ हृतम्।

ते साहुणो पए गंतुमणा ततो उट्ठविज्जंतो भणति – गंतव्वस्स ण कालो, अज्ज वि सुहसुत्ता, केण वेरिएण अवण्णेण पडिबोहिया अम्हे ।

अहवा – हीणं अधियं वा कालं केण कयमिणं तं च इमं भवति काले "हीणातिरित्ती" ॥८५५॥

गंतव्वोसह-पडिलेह-परिण्णा-सुवण-भिक्ख-सज्झाए ।
हीणाहि वितहकरणे, एमादी चोदितो फरुसं ॥८५६॥

गिलाणस्स ओसहट्ठाए गंतव्वे हीणातिरित्तं ।

अहवा – आयरियपेसणादिणिमित्ते गिलाणोसहोवओगे वा पच्चूसावरण्हेसु पडिलेहणं पडुच्च, "परिण्णे" त्ति जेण पोरिसिमादियपच्चक्खाय तस्स पारिउकामस्स भत्तादीणं वा गंतुकामस्स उग्घाडा णवे त्ति भत्तपच्चक्खायस्स वा समाहिपाणगादि आणेयव्वा हीणाधिकं कतं, पादोसियं वा काउं सुविणे सुविउ कामाणं, भिक्खं वा हिंडिउं कामाण, सज्झाए पट्ठवणावेलं पडुच्च कालवेलं वा, एवमाइसु कारणेसु हीणाधियं करेंतो चोइओ फरुसं वएज्जा ॥८५६॥

अहवा इमो फरुसवयणुप्पाए प्पगारो –

गच्छसि ण ताव कालो, लभसु धितिं किं तडप्फडस्सेवं ।
अतिपच्छासि विबुद्धो, किं ज्झसितं पएतव्वं ॥७५७॥

गुरुणा पुव्वं संदिट्ठो ओसहातिगमणे अण्णं तत्थेव गंतुकामं साधु पुच्छति - गच्छसि ? सो पुच्छित-साधु फरुसं वयति – ण ताव कालो, लभसु धितिं, किं तडप्फड सेवं ।

अहवा – सो चेव पुच्छिओ भणति पच्छद्धं कंठं ।

एस गाहत्थो पडिलेहणादिपदेसु जत्थ जत्थ जुज्जते तत्र तत्र सर्वत्र योज्यम् ॥८५७॥

अहवा – दव्वादिणिमित्तं एवं फरुस भासति –

वत्थं वा पायं वा, गुरूण जोगं तु केणिमं लद्धं ।
किं वा तुमं लभिस्ससि, इति पुट्ठो बेति तं फरुसं ॥८५८॥

एगेण अभिग्गहाणभिग्गहेण साधुणा गुरुपाओग्गं वत्थं पत्तं संथारगादि उग्गमियं, तमण्णेण साहुणा दिट्ठं, तेण सो उग्गमेंतसाहू पुच्छिओ - केणुग्गमित ? सो भणति – मया, किं वा त्वं क्षमः पापाणावलद्धो[1] अलद्धिमान् लप्स्यसि, एवं फरुसमाह ॥८५८॥

इदाणिं खेत्तं पडुच्च –

खेत्तमहायणजोग्गं, वसधी संथारगा य पाओग्गा ।
केणुग्गमिता एते, तहेव फरुसं वदे पुट्ठो ॥८५९॥

क्षेत्रेऽप्येवम् ॥८५९॥

---

१ अनादरे ।

इदाणिं तीतमणागतकालं पडुच्च –

उडुवास सुहो कालो, तीतो केणेस [1]जो इओ अम्हं । ॥१४॥
जो एस्सति वा एस्से, तहेव फरुसं वदे अहवा ॥८६०॥

"उडु" त्ति उडुबद्धकालो, "वास" त्ति वासाकालो ।

अहवा – "उडु" त्ति रिउ तस्मिन् वास· सुखेन उडुवाससुख: । शेपं कंठ्यं ॥८६०॥

दव्वादिसु पच्छित्तं भणति –

दव्वे खेत्ते काले, मासो लहुओ उ तीसु वि पदेसु ।
तवकालविसिट्ठो वा, आयरियादी चउण्हं पि ॥८६१॥

दव्वखेत्तकालनिमित्तं फरुसं वयंतस्स पत्तेयं मासलहुं । अघवा मासो चेव आयरियस्स दोहिं गुरुं । उवज्झायस्स तवगुरु । भिक्खुस्स कालगुरु । खुड्डगस्स दोहिं लहू ॥८६१॥

इदाणिं भाव फरुसं –

भावे पुण कोधादी, कोहादि विणा तु कहं भवे फरुसं ।
उवयारो पुण कीरति, दव्वाति समुप्पती जेणं ॥८६२॥

पुणसद्दो विसेसणे, किं विशेषयति ? भण्णति – दव्वादिएसु वि कोहादिभावो भवति ; इह तु दव्वादिणिरवेक्खो कोहादिभावो घेप्पति । एव विसेसयति । दव्वादिसु कोहादिणा विणा फरुसं ण भवति ।

चोदग आह – तो किमिति दव्वादि फरुस भन्नति भावफरुसमेव न भन्नइ ?

आचार्याह – द्रव्यादीनां उपचारकरणमात्रं, यतस्ते क्रोधादय द्रव्यादिसमुत्था भवतीत्यर्थ ॥८६२॥

भावफरुस-उप्पत्तिकारणभेदा इमे –

आलत्ते वाहित्ते, वावारित पुच्छिते णिसट्ठे य ।
फरुसवयणम्मि एए, पंचेव गमा मुणेयव्वा ॥८६३॥

"[1]आलत्ते वाहित्ते वावारित" एषां त्रयाणां व्याख्या –

आलावो देवदत्तादि, किं भो त्ति किं व वंदे त्ति ।
वाहरणं एहि इओ, वावारण गच्छ कुण वा वि ॥८६४॥ कंठा

[2]"पुच्छ-णिसट्ठाण" दुवेण्ह वि इमा व्याख्या –

पुच्छा कताकतेसुं, आगतवच्चंत आतुरादीहिं ।
णिसिरण हिंडसु गेण्हसु, भुंजसु पिअ वा इमं भंते ॥८६५॥ कंठा

---

१ गा० ८६३ । २ गा० ८६३ ।

ते चसु आलवणादिपदेसु एक्केक्के पदे इमे –

केण वेरिएण छप्पगारा णेया –

तुसिणीए हुंकारे, किं ति च किं चडकरं करेसि त्ति ।
किं णिव्वुती ण देसी, केवतियं वावि रडसि त्ति ॥८६६॥

पुरिसो पुरिसेणालत्तो तुसिणीयादिछण्हपदाण अन्नतरं करेति । एवं वाहितो वि, वावारिओ वि, पुच्छिओ वि, निसिट्ठो वि । ते य पुरिसा इमे – आयरिओ, १ उवज्झाओ, २ भिक्खू, ३ थेरो, ४ खुड्डो य ५ । एते आलवंतगा आलप्पा वि एते चेव । संजतीओ वि पचेव । त जहा – पवत्तिणी, १ अभिसेया, २ भिक्खुणी, ३ थेरी, ४ खुड्डी य ५ ॥८६६॥

इयाणि आयरिएण आलवणादिसु जं पच्छित्तं, तं इमाए गाहाए गहितं –

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो लहुगा य होंति गुरुगा य ।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥८६७॥

एयं चेव पच्छित्तं चारणप्पओगेण इमाहिं दोहिं गाहाहिं दंसिज्जइ –

आयरिएणालत्तो, आयरिए सोच्च तुसिणीए लहुओ ।
रडसि त्ति छग्गुरुंतं, वाहित्ते गुरुयादि छेदंतं ॥८६८॥

लहुयादी वावारिते, मूलंतं पुच्छिए गुरू णवमं ।
णिस्सट्ठे छसु पदेसु, छल्लहुगादी उ चरमंतं ॥८६९॥

पप्पायरियं सोधी, आयरियस्सेव एस णातव्वा ।
एक्केक्कगपरिहीणा, पप्पभिसेगादि तस्सेव ॥८७०॥

तस्येति आचार्यस्य । तेसिं इमो चारणप्पओगो आयरिएणायरिओ आलत्तो जदि तुसिणीओ अच्छति, तो से मासलहुं । हुंकारं करेइ मासगुरुं । किं त्ति भासति चउलहु । किं चडगरं करेसि त्ति भासति चउगुरुं । किं णिव्वुत्ति ण देसि त्ति भासति छल्लहुयं । केवइयं रडसि ति भासति छग्गुरुयं ।

आयरिएणायरिओ वाहित्तो तुसिणीयादिसु मासगुरुगादि छेदे ठाति ।

आयरिएणायरिओ वावारितो तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउलहुगाइ मूले ठायति ।

आयरिएणायरिओ पुच्छिओ तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउगुरुगादि अणवट्ठे ठायति ।

आयरिएणायरिस्स निसिट्ठं तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउलहुगाइ पारंचियं ठायति ।

एवं आयरिओ उवज्झायं आलवति । तत्थ आलवणादिनिसिट्ठं तेसु पंचसु पएसु चारणियापओगेण गुरुभिन्नमासाढत्तं अणवट्ठे ठायति ।

आयरिएण भिक्खु आलत्तो-तत्थ वि पंचसु छसु पएसु तत्थ वि चारणियप्पओगेण लहुअभिन्न-मासाढत्तं मूले ठायति ।

आयरिएण थेरा आलत्ता गुरुअवीसराइंदिए आढत्ते छेदे ठायति ।

आयरिएण खुड्डा आलत्ता लहुअवीसराइंदियआढत्तं छग्गुरुए ठायति ॥८७०॥

इयाणिं उवज्झाय-भिक्खू-थेर-खुड्डाणं चारणिया भन्नति ।

तत्थिमा गाहा –

आयरिआ अभिसेओ, एक्कगहिणो तदेक्किणा भिक्खू ।
थेरे तु तदेक्केणं, थेरा खुड्डा वि एक्केणं ॥८७१॥

इमा चारणिया – उवज्झाओ आयरियं आलवति । एवं उवज्झाओ उवज्झायं, उवज्झाओ भिक्खुं, उवज्झाओ थेरं, उवज्झाओ खुड्डं ।

सव्वचारणप्पओगेण एक्केक्कपदहीणं पण्णरसगुरुयराइंदियाढत्तं अणवट्ठे ठायइ ।

भिक्खू वि तदेगपदहीणो सव्वचारणप्पओगेणं लहुपण्णरसराइंदियाढत्तं मूले ठायति ।

थेरो वि तदेक्कपदहीणो सव्वचारणप्पओगेण गुरुदसराइंदियाढत्तं छेदे ठायति ।

खुड्डो वि तदेक्कपदहीणो सव्वचारणप्पओगेण लहुदसराइंदियाढत्तं छग्गुरुए ठायति ॥८७१॥

इदाणिं संजतीण पच्छित्तं भन्नति, तत्थिमा गाहा –

भिक्खुसरिसी तु गणिणी, थेरसरिच्छी तु होति अभिसेगा ।
भिक्खुणि खुड्डसरिच्छा, गुरु लहु पणगादि दो इतरे ॥८७२॥

आयरिओ पव्वत्तिणिं आलवति सा तुसिणीयादि पदे करेति; तत्थ से पच्छित्तं भिक्खुसरिसं; तं च उवजुज्जिय दट्ठव्वं ।

जहा थेरे आलवंते आयरियादीण पच्छित्तं, तहा आयरिएणालत्ताए अभिसेयाए पच्छित्तं दट्ठव्वं ।

जहा खुड्डायरियाईण पच्छित्तं तहा आयरिय भिक्खुणीए दट्ठव्वं ।

जहा आयरिओ थेरिं आलवति सा तुसिणीयादिपदेसु सव्वचारणप्पओगेण गुरुअपंचदसराइंदियाढत्तं छल्लहुए ठायति ।

आयरिओ खुड्डिं आलवति तदा सव्वचारणप्पओगेण लहुपंचदसराइंदियाढत्तं चउगुरुए ठायति ।

उवज्झाओ पव्वत्तिणिमाइयासु सव्वचारणप्पओगेण गुरुदसराइंदियाढत्तं छेदे ठायति ।

भिक्खू पव्वत्तिणिमाइयासु लहुदसराइंदियाढत्तं छग्गुरुए ठायति ।

थेरो पव्वत्तिणिमाइयासु गुरुगपणगाढत्तं छल्लहुए ठायति ।

खुड्डो पव्वत्तिणिमाइयासु लहुगपणगाढत्तं चउगुरुए ठायति । इतरग्गहणा थेरी खुड्डी य दट्ठवा ।

जहा आयरियादओ पव्वत्तिणिमादियासु चारिया तहा पव्वत्तिणिमादियाओ वि आयरियादिसु चारेयव्वा, सव्वचारणप्पओगेण पच्छित्तं तहेव, पव्वत्तिणिमाइया पव्वत्तिणिमाइयासु पच्छित्ता जहायरिय-पव्वत्तिणिमादिसु तहा वत्तव्वा । इत्थं पुण जत्थ जत्थ मासलहुं तत्थ तत्थ सुत्तनिवाओ, भिक्खुसदृशी गणिणीरिति वचनात् सर्वत्र भिक्षुस्थानात् प्रथमं प्रवर्तते ॥८७२॥

फरुसवयणे इमे दोसो –

एतेसामण्णयरं, जे भिक्खू लहुसगं वदे फरुसं ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८७३॥

(नास्तिचूर्णिः) ॥८७३॥

कारणओ पुण भासेज्जा वि –

बितियपदमणप्पज्झे, अपज्झे वा वइज्ज खरसज्झे ।
अणुसासणावएसा, वएज्ज व वि किं चि ण दुाए ॥८७४॥

खित्ताइचित्तो भणेज्ज वा, आयरियादि [1]खरसज्झो वा भणेज्जा, अन्नहा न वाइ । मृदू वि अणुसासणं पडुच्च भणेज्ज, टक्क-मालव-सिंधुदेसिया सभावेण फरुसभासी पडगादि वा वि किं चि तीव्वो फरुसवयणेण सो य फरुसावितो असहमाणो गच्छइ ॥८७४॥

जे भिक्खू लहुसगं मुसं वएति; वए तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

"मुसं" अलियं, ' लहुसं-अल्पं, तं वदओ मासलहु ।

तं पुण मुसं चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य लहुसगं मुसं होति ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८७५॥

"णाणत्तं" विसेसो, "आणुपुव्वीए" दव्वादिउवन्नासकमेण वक्खाणं ॥८७५॥

इमे दव्वादि उदाहरणा –

दव्वम्मि वत्थपत्तादिएसु खेत्ते संथारवसधिमादिसु ।
काले तीतमणागत, भावे भेदा इमे होंति ॥८७६॥

पढमपादस्स वक्खाणं –

मज्झ पडो णेस तुहं, ण यावि सोतस्स दव्वतो अलियं ।
गोरस्सं व भणंते, दव्वभूतो व जं भणति ॥८७७॥

वत्थं पादं च सहसा भणेज्जा, मज्झेस ण तुज्झं, सहसा गोरश्वं ब्रूवते, द्रव्यभूतो वा अनुपयुक्त इत्यर्थः. ॥८७७॥

अहवा दव्वालियं इम –

वत्थं वा पादं वा, अण्णेणुप्पाइयं तु सो पुट्ठो ।
भणति मए उप्पाइयं, दव्वे अलियं भवे अहवा ॥८७८॥

---

[1] खरसाध्य' ।

वत्थपादादि अण्णेणुग्गमिश्रा अण्णो भणइ मए उप्पाइया ॥८७८॥ दव्वश्रो अलियं गयं ।

खेत्तओ [1]"संथारवसतिमादीसु" अस्य व्याख्या –

णिसिमादीसम्मूढो, परसंथारं भणाति मज्झेसो ।
खेत्तवसधी व अण्णेणुग्गमिता बेति तु मए त्ति ॥८७९॥

"णिसि" त्ति राईए अंधकारे सम्मूढो परसंथारभूमिं अप्पणो भणइ; मासकप्पपाउग्गं वा वासावासपाओग्गं वा खित्तं वसही रिउखमा, अण्णेणुग्गमिया भणाति मए त्ति ॥ ८७९ ॥ खित्तओ मुसावाओ गओ ।

[2]"काले तीतमणागए" त्ति अस्य व्याख्या –

केणुवसमिओ सड्ढो, मए त्ति ण था सो तु तेण इति तीए ।
को णु हु तं उवसामे, अणातिसेसी अहं वस्सं ॥८८०॥

एक्को अभिग्गहमिच्छो एगेण साहुणा उवसामिओ। अन्नो साहू पुच्छिओ केणेस सड्ढो उवसामिओ? अन्नया विहरंतेण मए त्ति । एवं "तीए" एगो अभिग्गहमिच्छो अरिहंतसाहुपडिणीओ, साहूण य [3]समुल्लावो को णु तं उवसामेज्ज । तत्थ एको साहू अणातिसतो भणति – सो य अवस्सं मया उवस्सं मया उवसामियव्वो । एवं एष्यकालं प्रति मृषावाद. ॥८८०॥

अहवा कालं पडुच्च इमो मुसावादो –

तीतम्मि य अट्ठम्मी, पच्चुप्पण्णे यऽणागते चेव ।
विधिसुत्ते जं भणितं, अण्णातणिस्संकितं भावे ॥८८१॥

तीतमणागतपडुप्पन्नेसु कालेसु जं अपरिन्नायं तं निस्संकियं भासंतस्स मुसावातो भवति । "विधिसुत्त" दसवेयालिय, तत्थ वि वक्कसुद्धी, तत्थ जे कालं पडुच्च मुसावादसुत्ता ते इह दट्ठव्व ॥८८१॥

"[4]भावे भेदो इमो" त्ति अस्य व्याख्या –

पयला[1] उल्ले[2] मरुए[3], पच्चक्खाणे[4] य गमण[5] परियाए[6] ।
समुद्देस[7] संखडीओ[8] खुड्डग[9] परिहारिय[10] मुहीओ[11] ॥८८२॥

अवस्सगमणं[12] दिस्सासु[13], एगकुले[14] चेव एगदव्वे[15] य ।
पडियाक्खित्ता गमणं[16], पडियाखित्ता य भुंजणं[17] ॥८८३॥

दोऽवि गाहा जहा पेढे [5]पूर्ववत् ॥८३॥

दव्वादिमुसावायं भासतस्स किं भवइ ?

---

१ गा० ८७६ । २ गा० ८७६ । ३ संबंधि मृषा । ४ गा० ८७६ । ५, २९८-२९९ द्वा० ।

आयरियाह –

एतेसामण्णयरं, जो भिक्खू लहुसयं मुसं वयति ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८८४॥

कंठा ॥८८४॥

कारणओ भासेज्जा वि –

बितियपदं[1] उड्डाहे, संजमहेउं[2] व बोहिए[3] तेणे[4] ।
खेत्ते[5] वा पडिणीए[6], सेहे[7] वा वादमादीसु[8] ॥८८५॥

१—उड्डाहरक्खणट्ठं, जहा केण ति पुट्ठो – तुब्भ लाउएसु समुद्देसी ? ण व त्ति वत्तव्वं ।

२—"संजमहेउ" अत्थि ते केति मिया दिट्ठा ? दिट्ठेसु वि न दिट्ठ त्ति वत्तव्वं ।

३—"बोधिता" मिच्छा, तेसिं भीओ भणिज्ज – "एसो खंधावारो एति" त्ति ।

४—तेणेसु "एस सत्थो एति" त्ति, "अवसरह" ।

५—"खेत्ते" धीयार (जाइ) भाविए "बंभणो अहमि" त्ति भासए, जत्थ वा साहू न नज्जंति तत्थ पुच्छितो भणति सेय परिव्वायगा मो ।

६—कोइ कस्सइ साहुस्स पदुट्ठो, सो य तं न जाणति, ताहे भणेज्जा "नाहं सो, ण वा जाणे, परदेसं वा गओ" त्ति भणेज्जा ।

७—सेहं वा सण्णायगा पुच्छंति – तत्थ भणिज्जा "नत्थेरिसो ण जाणे, गतो वा परदेसं" ।

८—वादे असंतेणा वि परवादिं निगिण्हिज्जा ॥८८५॥

जे भिक्खू लहुसगं अदत्तमादियइ, आदियंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

"लहुसं" थोवं, "अदत्तं" तेण्णं, "आदियणं" गहणं, "साइज्जणा" अणुमोयणा, मासलहुं पच्छित्तं ।

अदत्तं दव्वादि चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य लहुसगं अदत्तं तु ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८८६॥

दव्व-खेत्त-कालाणं इमं वक्खाणं –

दव्वे इक्कडकढिणादिएसु खेत्ते उच्चारभूमिमादीसु ।
काले इत्तरियमवी अजाइत्तु चिट्ठमाईसु ॥८८७॥

वणस्सतिभेदो "इक्कडा" लाडाणं पसिद्धा । कढिणो वंसो आदिग्गहणातो अवलेहणिया दारुदंड-पादपुंछणमादि एते अणणुन्नाते गिन्हति ।

खेत्तओ अदत्तं गिन्हति उच्चारभूमि आदि, आदिग्गहणाओ पासवणलाउअणिल्लेवणभूमीए अणणुन्नवित्ता उच्चाराती आयइ । खित्तओ अदत्तं गतं ।

काले "इत्वरं" स्तोकं अणणुन्नवित्ता चिट्ठति । भिक्खादि हिंडतो जाव वासं वासति [1]वितिच्छं वा पडिच्छति, अद्धाणे वा, अणणुण्णवेत्ता रुक्खहेट्ठासु चिट्ठति, निसियति, तुयट्टति वा । दव्वातिसु तिसु वि मासलहुं ॥८८७॥

इदाणिं भावे अदत्तं –

भावे पाउग्गस्सा, अणणुण्णवणाइ तप्पढमताए ।
ठायंते उडुबद्धे, वासाणं वुड्ढवासे य ॥८८८॥

उडुबद्धे वासासु वा वुड्ढावासे वा [2]तप्पढमयाए पायोग्गाऽणणुन्नवणभावेण परिणयस्स दव्वादिसु चेव भावओ लहुसं अदत्तं । उडुवासवुड्ढेसु जं जोग्गं तं पाउग्गं भण्णति ॥८८८ ।

लहुसमदत्तं गेण्हंतस्स को दोसो ? इमो –

एतेसामण्णयरं, लहुसमदत्तं तु जो तु आतियइ ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८८९॥

कारणतो गेण्हतो अपच्छित्ती अदोसो य –

अद्धाणे गेलण्णे, ओमसिवे गामाणुगामिमतिवेला ।
तेणा सावय मसगा, सीतं वासं दुरहियासं ॥८९०॥

अद्धाणाओ निग्गतो परिसंतो गामं वियाले पत्तो ताहे अणणुण्णवितं इक्कडाति गेण्हेज्ज, वसहीए वि अणणुण्णवियाए ठाएज्ज । आगाढगेलण्णे तुरियकज्जे खिप्पामेव अणणुण्णवितं गेण्हेज्ज । ओमोयरियाए भत्तादि अदिण्णं सयमेव गेण्हेज्ज । असिवगहिताणं न कोति देति ताहे अदिण्णं तणसंथारगादि गेण्हेज्ज । गामाणुगामं दूइज्जमाणा वियाले गामं पत्ता जइ य वसही ण लब्भति ताहे बाहिं वसंतु, मा अदत्तं गेण्हंतु, अह बाहिं दुविधा तेणा – सिंघाति वा सावया, मसगेहिं वा खज्जिजति, सीयं वा दुरहियासं, जहा उत्तरावहे अणवरतं वा वासं पडति ॥८९०॥

एतेहिं कारणेहिं, पुव्वं उ घेत्तु पच्छणुण्णवणा ।
अद्धाणणिग्गतादी, दिट्ठमदिट्ठे इमं होति ॥८९१॥

एतेहिं तेणातिकारणेहिं वसहिसामिए दिट्ठे अणुण्णवणा, अदिट्ठे अद्धाण निग्गयादि [3]सयणसमोसिगाइ अणुण्णवेत्तुं घरसामिणा अदिण्णं उ घेत्तुं पच्छा घरसामियमणुण्णवेंति ॥८९१॥

इमेण विहाणेण –

पडिलेहणऽणुण्णवणा, अणुलोमण फरुसणा य अधियासे ।
अतिरिच्चणंमि दायण, णिग्गमणे वा दुविध-भेदो ॥८९२॥

"पडिलेह" त्ति अस्य व्याख्या –

अब्भासत्थं गंतूण पुच्छणा दूरयत्तिमा जतणा ।
तद्दिसमेत्तपडिच्छण, पत्तम्मि कहिं ति सब्भावं ॥८९३॥

---

१ वा तिगिच्छं प्रतीक्षते । २ परिणाम । ३ पडोसी ।

सो घरसामी जदि खेत्तं खलगं वा गतो जति अब्भासे तो गंतुं अणुण्णविज्जति। अह दूरं गतो ताहे संघाडओ णार्मांचिधेहिं आगमेउं तं दिसं अदूरं गंतुं पडिक्खति जाहे सहू (साहू) समीवं पत्तो ताहे सब्भावो कहिज्जति। जहा तुज्झ वसहीए ठियामो त्ति ॥८९३॥

इदाणिं तुमं अणुजाणसु। जति दिट्ठदिण्णा तो लट्ठं। अह से सुवियत्तं न देति वा ताहे अणुलोम-वयणेहिं पण्णविज्जति –

अणुसासणं सजाती, सजातिमेवेति तह वि तु अट्ठंते।
अभियोगणिमित्तं वा, बंधण गोसे य ववहारो ॥८९४॥

जहा गोजाती गोजातिमंडलच्चुतो गोजातिमेव जाति; आसण्णे वि णो महिस्सादिसु ठिंतिं करेति एवं वयं पि माणुसमेवेमो। जति तहवि ण देति फरुसाणि वा भणति, ताहे सो फरुसं ण भण्णति; अधिया सिज्जइ। जइ तह वि णिच्छुभेज्ज ततो विज्जाए चुण्णेहिं वा वसी कज्जति, णिमित्तेण वा आउंटाविज्जति। तस्सास'ति रुक्खमातिसु बाहिं वसंतु; मा य तेण समं कलहेंतु।

अह बाहिं दुविहभेओ – आय – संजमाण, उवकरण – सरीराण वा, संजम – चरित्ताण वा, पण्णवणं च [1]अतिरिच्चते लंघतेत्यर्थः। ताहे भण्णति – अम्हे सहामो, जो एस आगतिमंतो एस रायपुत्तो ण सहिस्सति एस वा सहस्सजोही सोवि कयकरणो किं चि करणं दाएति; जहा "विस्सभूतिणा मुट्ठिप्पहारेण खंधम्मि कविट्ठा पाडिया"। एस [2]दायणा। तह वि अट्टायमाणे बंधिउं ठवेंति जाव पभायं। सो य जइ रायकुलं गच्छति तत्थ तेण समाणं ववहारो कज्जति। कारणिआणं अग्गतो भणति – अम्हेहिं रायहियं आचिट्ठंतेहिं बद्धो। जइ अम्हे बाहिं मुसिता सावएहिं वा खज्जंता तो रण्णो अहियं अयसो य भवंतो। परकृतनिलयाश्च तपस्विनः, रायरक्खियाणि य तवोवणाणि, ण दोषेत्यर्थः ॥८९४॥

जे भिक्खू लहुसएण सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पादाणि वा कण्णाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोवेज्ज वा; उच्छाल्लेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

"लहुसं" स्तोकं याव तिण्णि पसती सीतोदगं सीतलं, उसिणोदगं उण्हं "वियडं" ववगतजीवं। एत्थ सीतोदगवियडेहिं सपडिवक्खेहिं चउभंगो। सुत्ते य पढम-ततियभंगा गहिया। दो हत्था हत्थाणि वा, दो पादा पादाणि वा, बत्तीसं दंता दंताणि वा, आसए, पोसए य, अण्णे य इंदियमुहा, मुहाणि वा, "उच्छोलणं" धोवणं, तं पुण देसे सव्वे य। णिज्जुत्तिवित्थरो इमो –

तिण्णि पसती य लहुसं, वियडं पुण होति विगतजीवं तु।
उच्छोलणा तु तेणं, देसे सव्वे य णातव्वा ॥८९५॥

गतार्थाः ॥८९५॥

आइण्णमणाइण्णा, दुविधा देसम्मि होति णायव्वा।
आइण्णा वि य दुविधा, णिक्कारणओ य कारणओ ॥८९६॥

---

[1] गा० ८९२। [2] गा० ८९२।

देसे उच्छोलणा दुविहा-आइण्णा अणाइण्णा य। साधुभिराचर्यते या सा आचिर्णा, इतरा तद्विपरीता। आइण्णा दुविधा – कारणे णिक्कारणे य ।।८९६।।

जा कारणे सा दुविधा –

भत्तामासे लेवे, कारणणिक्कारणे य विवरीयं।
मणिबंधादिक्करेसु, जेत्तियमेत्तं तु लेवेणं ।।८९७।।

तत्थ भत्तामासे "मणिवंधादिकरेसु" त्ति असणाइणा लेवाडेण हत्था लेवाडिया ते मणिवंधातो ज व धोवति, एसा भत्तामासे। इमा लेवे "जेत्तियमेत्तं तु लेवेणं" ति असज्झातिय मुत्तपुरीसादिणा जति सरीराव-यवेण चलणादि गातं लेवाडितं तस्स तत्तियमेत्तं धोवे। एसा कारणओ भणिता। णिक्कारणे तव्विवरीय त्ति।।८९७।।

एतं खलु आइण्णं, तव्विवरीतं भवे अणाइण्णं।
चलणादी जाव सीरं, सव्वस्मि होतऽणाइण्णं ।।८९८।।

भत्तमासे लेवे य इमं आइण्णं, तव्विवरीयं - देसे सव्वे वा, सव्वं अणाइण्णं ।।८९८।।

तत्थ देसे इमं आइण्णं –

मुह-णयण-चलण-दंता, णक्क-सिरा-बाहु वत्थिदेसो य।
परिडाह दुगुंछावत्तियं च उच्छोलणा देसे ।।८९९।।

मुह-णयणादियाण केसि चि दुगुंछाप्रत्ययं परिदाघप्रत्ययं वा देसे सव्वे वा उच्छोलणं करोतीत्यर्थः ।।८९९।।

वक्ष्यमाणषोडशभंगमध्यात् अमी अष्टौ घटमाना; शेषा अघटमाना :

आइण्ण लहुसएणं, कारणणिक्कारणे वऽणाइण्णे।
देसे सव्वे य तधा, बहुएणेमेव अट्ठपदा ।।९००।।

आइण्णलहुसकारणदेसे एष प्रथमः। एष एव णिक्कारणसहितः द्वितीयः। अनाचीर्णग्रहणात् तृतीय - चतुर्थौ गृहीतौ। लहुसणिक्कारण देसेत्यनुवर्तते, चतुर्थे विशेषः सर्वमिति वक्तव्यम्। जहा लहुसपए चउरो भंगा तहा बहुएण वि चउरो सव्वे अट्ठ। एव-शब्दग्रहणात् तृतीय चतुर्थ पंचम षष्ठ भंगविपर्यासः प्रदर्शितः ।।९००।।

वक्ष्यमाणषोडशभंगक्रमेण घटमानाघटमानभंगप्रदर्शनार्थं लक्षणम् –

जत्थाइण्णं सव्वं, जत्थ व कारणे अणाइण्णं।
भंगाण सोलसण्हं, ते वज्जा सेसगा गेज्झा ।।९०१।।

यस्मिन् भंगे आचीर्णग्रहणं दृश्यते तत्रैव यदि सर्वग्रहणं दृश्यते ततः पूर्वापरविरोधान्न घटते असौ भंगः। यत्र वा कारणग्रहणे दृष्टे अनाचीर्णं दृश्यते असावपि न घटते। एते वर्जयित्वा शेषा ग्राह्याः ।।९०१।।

सोलसभंगरयणगाहा इमा –

आइण्णे लहुसकारण, देसेतरे भंग सोलस हवंति।
एत्थं पुण जे गेज्झा, ते वोच्छं सुण समासेण ।।९०२।।

इतरग्रहणात् अणाइण्णवहुसणिक्कारणसव्वमिति एते पदा दट्ठव्वा ॥९०२॥

अमी ग्राह्या – पढमो –

पढमो ततिओ एक्कारो वारो तह पंचमो य सत्तमओ ।
पण्णर सोलसमो वि य, परिवाडी होति अट्ठण्हं ॥९०३॥

पढमो, ततिओ, एक्कारसो, वारसो, पंचमो, सत्तमो य, दो चरिमा य यथोद्दिष्टक्रमेण स्थापयितव्या इमं ग्रथमनुसरेज्ज ॥९०३॥

आइण्णलहुसएणं, कारणणिक्कारणे वि तत्थेव ।
णाइण्ण देससव्वे, लहुसे तहिं कारणं णत्थि ॥९०४॥

आइण्ण लहुसएणं कारणे इति प्रथमः। णिक्कारणे तत्थेव त्ति आइण्ण लहुसे अनुवर्तमाने णिक्कारणं द्रष्टव्यम्। द्वितीयो भंग। पढम-बितिएसु देसमिति अर्थाद् द्रष्टव्यम्। पश्चार्द्धेन तृतीयचतुर्थभगौ गृहीतौ। अणाइण्णं तृतीये देसे, चतुर्थे सर्वं। लहुसमित्यनुवर्तते। ततियचउत्थेसु कारणं णत्थि ॥९०४॥

इदाणिं पंचमादि भंग प्रदर्शनार्थं गाथा –

आइण्णे वहुएणं, कारणणिक्कारणे वि तत्थेव ।
णाइण्णदेससव्वे, [1]वहुणा तहिं कारणं णत्थि ॥९०५॥

पंचमे वहुएण आइण्णं कारण। "तत्थेव" त्ति आइण्णवहुएसु अणुवट्टमाणेसु छट्ठे निक्कारणं द्रष्टव्यमिति। पचमछट्ठेसु देसमिति अर्थाद्द्रष्टव्यमिति। सत्तमाष्टमेसु अणाइण्ण। सप्तमे देस। अष्टमे सव्वं। वहुसमित्यनुवर्तते, कारण नास्त्येवेत्यर्थः ॥९०५॥

प्रथमभंगानुज्ञार्थं शेषभंगप्रतिषेधार्थं च इदमाह –

आइण्णलहुसएणं, कारणतो देसे तं अणुण्णातं ।
सेसा णाणुण्णाया, उवरिल्ला सत्तवि पदा उ ॥९०६॥

आइण्णलहुसएणं कारणे देसे। एस भगो अणुन्नातो। उवरिमा सत्त वि पडिसिद्धा भंगा ॥९०६॥

द्वितीयादिभंगप्रदर्शनार्थं इदमाह –

आइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण देसओ भवे बितिओ ।
णाइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण देसओ तइओ ॥९०७॥
णाइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण सव्वतो चउत्थो उ ।
एवं वहुणा वि अण्णे, भंगा चत्तारि णायव्वा ॥९०८॥

आइण्णे लहुसएणं णिक्कारणे देसे एस बितियभंगो। अणाइण्णे लहुसे णिक्कारणे देसे ततियभंगो। अणाइण्णे लहुसे णिक्कारणे सव्वतो चउत्थभगो। एव वहुणा वि अण्णे चउरो भंगा कायव्वा ॥९०८॥

---

१ वहुसे।

पढमभंगो सुद्धो, सेसेसु इम पच्छित्तं –

[1]सुद्धो लहुगा तिसु दुसु, लहुओ चउलहू य अट्ठमए ।
पच्छित्ते परिवाडी, अट्ठसु भंगेसु एएसु ॥६०६॥

[2]सुत्तणिवातो बितिए, ततिए य पदम्मि पंचमे चेव ।
छट्ठे य सत्तमे वि य, तं सेवंताऽऽणमादीणि ॥६१०॥

बितिय-ततिय-पंचम-छट्ठ-सत्तमेसु भगेसु सुत्तणिवातो मासलहु । चउत्थऽट्ठमेसु चउलहुं । तमिति देसस्नान वा सेवंतस्स आणा अणवत्थ मिच्छत्तविराधणा भवति ॥६१०॥

ण्हाणे इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, तप्पडिबंधो य गारव विभूसा ।
परिसहभीरुत्तं पि य, अविस्सासो चेव ण्हाणम्मि ॥६११॥

ण्हायंतो छज्जीवणिकाए वहेति । ण्हाणे पडिबधो भवति – पुनः पुनः स्नायतीत्यर्थः अस्नानसाधु-शरीरेभ्य. निर्मलशरीरो अहमिति गारवं कुरुते, स्नान एव विभूषा अलकारेत्यर्थ. । अण्हाणपरीसहाओ वीहति तं न [3]जिनातीत्यर्थं । लोकस्याविश्रम्भणीयो भवति ॥६११॥ एते सस्नानदोषा उक्ता ।

इदाणिं कप्पिया –

बितियपदं गेलण्णे अद्धाणे वा तवादिआयरिए ।
मोहतिगिच्छभिओगे, ओमे जतणा य जा जत्थ ॥६१२॥

गिलाणस्स सिंचणादि अते वा सर्वस्नान कर्तव्य । अद्धाणे श्रान्तस्य पादादि देसस्नान सर्वस्नानं वा कर्तव्यं । वादिनो वादिपर्षदं गच्छतो पादादि देसस्नानं सर्वस्नानं वा आचार्यस्य अतिशयमिति कृत्वा देसस्नान सर्वस्नान वा। मोहतिगिच्छाए किढियादि सड्ढियाभिगमे वा देसादिस्नानं–सर्वस्नानं वा करोति । रायाभियोगे सुट्ठुल्लसियातिकारणेसु रायंतेउरादि अभिगमे देशादिस्नान कर्तव्यम् । ओमे उज्जलवेसस्स भिक्खा लब्भति रक्को वा मा भणिहिति । जा जतणा, जत्थ पाणए ण्हाणपाणे वा, सा सर्वा कुज्जा ॥६१२॥

जे भिक्खू कसिणाइं चम्माइं धरेति; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

कसिणमत्र प्रधानभावे गृह्यते । तं च कसिण इम चउव्विह –

सकल-प्पमाण-वण्णं, बंधण-कसिणं चतुत्थमजिणं तु ।
अकसिणमट्ठादसगं, दोसु वि पादेसु दो खंडा ॥६१३॥

कसिणं चउव्विहं – सकलकसिणं, पमाणकसिणं, वण्णकसिण, बंधणकसिणं ज्ञातव्वं भवति । एय चउव्विहं वि न कप्पइ पडिग्गहिउं ।

चोदग आह – जइ एवं तो जं अकसिणं चम्मं तं अट्ठदसखंडं काउं दोसु वि पादेसु परिहाअव्व । एस दारगाथा अत्थो ॥६१३॥

---

१ नास्तीमा गाथा चूर्णौ, २ सूत्रोक्तम् । । ३ जयति ।

सकलकसिणाए वक्खाणं –

एगपुड-सगल-कसिणं, दुपडादीयं पमाणओ कसिणं ।
कोसग खल्लग वग्गुरी, खपुसा जंघऽद्धजंघा य ॥६१४॥

एगपुडं-एगतलं अखंडियं सकलकसिणं भण्णति । दोमादि तला जीए उवाहणाए, एसा पमाणतो कसिणा । पमाणकसिणाधिकारे इमे वि अण्णे कसिणा तलपडिबद्धा-अद्धं जाव खल्लया जीए उवाहणाए सा [1]अद्धखल्ला, एवं समत्तखल्ला[2] । खवुसा[3] पदाणि चक्कपादिगा च, [4]वग्गुरी छिण्णपुडी, सुक्कजंघाए अद्धं जाव [5]कोसो अद्धजंघा, जाणुयं जाव समत्तजंघा ॥६१४॥

पादस्स जं पमाणं, तेण पमाणेण जा भवे कसणी ।
मज्झम्मि तु अक्खंडा, अण्णत्थ व सकलकसिणं तु ॥६१५॥ कंठा

पमाण-वण्ण-बंध-कसिणाण वक्खाणं –

वण्णड्ढ-वण्णकसिणं, तं पंचविधं तु होति णातव्वं ।
बहुबंधणकसिणं पुण, परेण जं तिण्ह बंधाणं ॥६१६॥

यच्चर्म वर्णेनाऽढ्यमुज्ज्वलमित्यर्थः तद्वर्णकृत्स्नं । स कृष्णादि पंचविधः ॥६१६॥

वग्गुरि-खवुस-अद्धजंघा-समत्तजंघाए अ वक्खाणं इमं –

दुगपुड-तिगपुडादी, खल्लग-खपुस-द्धजंघ-जंघा य ।
लहुओ लहुया गुरुगा, वग्गुरि गुरुगा य जति वारे ॥६१७॥

उवरिं तु अंगुलीओ, जा छाए सा तु वग्गुरी होति ।
खवुसा उ खलुगमेत्तं, अद्धं सव्वं च दो इतरा ॥६१८॥

"दो इतरा"-अद्धजंघ-समत्तजंघा य ॥६१८॥

इदाणिं पच्छित्तं भण्णति –

सकलकसिणं । गाहा ॥

लहुओ लहुया दुपडादिएसु गुरुगा य खल्लगादीसु ।
आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥६१९॥

सकलकसिणे मासलहुं । दुपडादिसु चउलहुआ । चउगुरुगा इमेसु अद्धखल्ला समत्तखल्ला खवुसा वग्गुरी अद्धजंघा समत्तजंघा य; सव्वेसु चउगुरुगा ॥६१९॥

---

१ या पादार्धमाच्छादयति सा अर्धखल्लका । २ या च सम्पूर्णपादमाच्छादयति सा समस्तखल्लका । ३ या घुटकं पिदधाति सा खपुसा । ४ या पुनरंगुलिं च्छादित्वा पादावुपरिच्छादयति सा वागुरा । ५ यत्र तु पाषाणादिषु प्रतिस्खलिताः पादनखा मा भज्यन्तामितिवुद्धयाङ्गुलिरंगुष्ठो वा प्रक्षिप्यते स कोशकः ।

(आणाइआ य दोसा, सयमविराहणा आयविराहणा य । तत्थ कमणीहिं परिहिआहिं पीपीलिआ-दिअविराहणा सयमविराहणा वद्धे छिन्ने पक्खलणा आयविराहणा पमत्तं वा देवया छलेज्जा ।) ॥६१६॥

उवाणहाधिकारे इमेसु पच्छित्तं भण्णति –

अंगुलिकोसे पणगं, सकले सुक्के य खल्लए लहुओ ।
बंधणवण्णपमाणे, लहुगा तह पूर पुण्णे य ॥६२०॥

अंगुट्ठंगुलिकोसे पणगं । उवाणहाए अपडिबद्धे सुक्कखल्लाए मासलहुं । पूरपुण्णाए चउलहुं । वण्णड्ढे चउलहु । बंधणकसिणे य चउलहुं अद्धखल्लादिसु चउगुरुगमभिहितं ॥६२०।

तद्विशेषणार्थमिदमाह –

अद्धे समत्तखल्लग, वग्गुरि खपुसा य अद्धजंघा य ।
गुरुगा दोहि विसिट्ठा, वग्गुरिए अण्णतर एवं ॥६२१॥

अद्धखल्ला, समत्तखल्ला, खवुसा, अद्धसमत्तजंघा य दो वि एक्कं चेव ट्ठाणं, एतेसु चउसु तवकालविसिट्ठं चउग्गुरुगं । वग्गुरिए तवकालाणं अण्णतरं गुरुअं दायव्वं ॥६२१॥

इदाणिं प्रायश्चित्तवृद्धिप्रदर्शनार्थं इदमाह –

जत्तियमित्ता वारा, तु बंधए मुंचए तु जतिवारा ।
सट्ठाणं ततिवारे, होति विवड्ढी य पच्छित्ते ॥६२२॥

अंगुलिकोसगं जत्तिया वारा बंधति मुयति वा तत्तिया चेव पंचरातिंदिया भवंति । एवमन्यत्रापि सट्ठाणं तत्तिया वारा भवति । "होति विवड्ढी य पच्छित्ते" त्ति एक्कं पणगादि सट्ठाणं, बितियं आणाभंग-प्रत्ययं ङ्का=४ गुरु; । तइयमनवस्था प्रत्ययं ङ्का। चतुर्थं मिथ्यात्वजननप्रत्ययं ङ्का । डंकणादि आयविराहणादि प्रत्ययं - ङ्का । संजमे कायविराहणा णिप्फण्णं च एवं पच्छितस्स वुड्ढी ।

अहवा – अभिक्खपडिसेवणातो उवरि ट्ठाणंतरवुड्ढी भवति ॥६२२॥

सुत्तनिवातप्रदर्शनार्थं इदमाह –

सुत्तणिवातो सगलकसिणं भितं जो तु गेण्हती भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६२३॥ कंठा

इदाणिं, उपानत्क दोषप्रदर्शनार्थं इदमाह –

गव्वो[१] णिम्मद्दवता[२], णिरवेक्खो[३] णिद्दओ[४] णिरंतरता[५] ।
भूताणं[६] उवघातो, कसिणे चम्मंमि छ दोसा ॥६२४॥ द्वा० गा०

"गव्वो णिमद्दवे" त्ति दो दारा ।

आसगतो हत्थिगतो, गव्विज्जति भूमितो तु कमणिल्लो ।
पादो तु समाउक्को, कमणी तु खरा अधियभारा ॥६२५॥

जहा पदचारिल्लं पडुच्च आसगतो गव्विजति, तं पडुच्च हत्थारूढो गव्विज्जति, एवं [1]अणुवाहतो कमणिल्लो गविज्जति। पादो मृदुत्वान्न तथा जीवोपघाताय यथा उपानत्का कठिणा अधिकभाराक्रान्ता जीवोपघाताय भवति ॥६२५॥

इदाणिं "[2]णिरवेक्ख" त्ति दारं –

कंटादी पेहंतो, जीवे वि हु सो तहे पेहेज्जा।
अत्थि महं ति य कमणी, णावेक्खति कंटए ण जिए ॥६२६॥

अणुवाहणो कटादी पेहंतो जीवा वि पेहेज्जा। स – उवाहणो पुण निरपायत्वादात्मनो न कंटकाद्यपेक्षते, अतो जीवेष्वपि निरपेक्षः ॥६२६॥

इदाणिं "[3]णिद्दए" त्ति दारं –

पुव्वं अदता भूतेसु, होति बंधति कमेसु तो कमणी।
जायति हु तदब्भासा, सुदआलुस्सा वि णिद्दयता ॥६२७॥

"पुव्वं" आदौ "अदया" निर्दयत्व यदा आत्मनो मनसि कृतं भवति। तदा कमेसु कमणीओ बंधति। "तदब्भासा" सुदयालुस्स वि पुरिसस्स एवं निद्दयता जायति ॥६२७॥

इदाणिं "[4]निरंतर" त्ति दारं –

अवि अंवखुज्ज पादेण पेल्लितो अंतरंगुलगओ वा।
मुच्चेज्ज कुलिंगादी, न य कमणीपेल्लिओ जियइ ॥६२८॥

"अवि" संभावणत्थे, "अवकुज्ज" पादतलमध्यं, तेन "पेल्लितो" आक्रान्तः, अंगुष्ठांगुल्यंतरं अंतरंगुल अपि च, अणुवाहणस्स एतेसु पदेसु ठितो न मारिज्जति, ण य उवाहणाहिं णिरंतरं भूमिफुसणाहिं अक्कंतो जीवति ॥६२८॥

इदाणिं "[5]भूयाणं उवघातं" त्ति दारं –

किह भूताणुवघातो, ण होहिति पगतिदुब्बलतणूणं।
सभराहि पेल्लिताणं, कक्खलफासाहिं कमणीहिं? ॥६२९॥

"किह" त्ति केन प्रकारेण, "भूता" जीवा, "उपघातो" पीडा व्यापादनं वा पगति सभाव, दुब्बलं अदढं "तनुः" शरीरं, "सभराहि" पुरुषभाराक्रान्ताभिः, "पेल्लितो" आक्रान्तः कठिनस्पर्शन[6]देहाभिः उपानत्काभिः। शिष्यो वक्तव्यः "त्वरितं आख्यायता", "कथं उपघातो न भविष्यतीत्यर्थः?" ॥६२९॥

अववादे पुण कारणे घेत्तव्वा, जतो भण्णति –

अद्धाणे[1] गेलण्णे[2], अरिसा[3] असहू[4] य घट्टभिण्णेयं[5][6]।
दुब्बलचक्खू[7] बाले[8], अज्जाणं[9] कारणज्जाए[10] ॥६३०॥

---

१ अनुपानहं पुरुषं विलोक्य। २ गा० ६२४। ३ गा० ६२४। ४ गा० ६२४। ५ गा० ६२४।
६ "देहाहिं" प्रत्यन्तरे।

"अद्धाणे गेलण्णे" त्ति वक्खाणेति –

कंटाहिसीतरक्खट्ठता विहे खउसमादि जा गहणं ।
ओसह-पाण गिलाणे, अहुणुट्ठित भेसयट्ठा वा ॥६३१॥

अद्धाणपडिवण्ण कंटक-अहि-सीय-रक्खट्ठता कोस जाव खवुसअद्धजंघसमत्तजघातो वि घेतव्वातो ।

अहवा–अणाणुपुव्वीए खवुसं आदिकाउं सव्वे वि भेदा घेत्तव्वा । गिलाणोसहं पाउं पुढवीए ण ठवेति पाए, मा सीताणुभावा तो जीरेज्ज, अहुणुट्ठितो गिलाणो, अग्गिबलणिमित्तं, गिलाणट्ठा वा तुरियं ओसहट्ठ गंतव्वं ॥६३१॥

इदाणिं "अरिसिल्लादीणि" तिण्णि दाराणि –

अरिसिल्लस्स व अरिसा, मा खुब्भे तेण बंधए कमणी ।
असहुमवंताहरणं, पाओ घट्टो व गिरिदेसे ॥६३२॥

अरिसिलस्स मा पादतलदौर्बल्यादर्शक्षोभो भवेदिति । असहिष्णुः राजादि दीक्षितः सुकुमारपादः असक्तः उपानत्काभिर्विना गंतुं ।

एत्थ दिट्ठतो — उज्जेणीए अवंतिसोमालो । गिरिदेसे चंकमओ तलाइं घट्टयंति गिरिदेसे वा ण सक्कति विणा उवाणहाहिं चंकमिउं ॥६३२॥

"भिएण" कुट्ठाति तिण्णि दारा युगवं वक्खाणेति –

कुट्ठिस्स सक्करादीहि वा विभिण्णो कमो तु मधुला वा ।
बालो असंवुडो पुण, अज्जा विह दोच्च पासादीं ॥६३३॥

भिण्णकुट्ठियस्स पादा कट्ठसक्करकंटगादीहिं दुक्खविज्जति, पादे गंडं "महुला" भण्णति, सा वा उट्ठिता । बालो असंवुडो जत्थ तत्थ वा पादे छुभति । विह अद्धाणं तत्थ जता अज्जाओ णिज्जंति, दोच्चं चोरातिभयं तत्थ वसभा कमणीओ कमेसु काउं पंथं मोत्तूणं पासट्ठिता गच्छन्ति । सव्वाणि वा उप्पहेण गच्छंति । आइसहाओ सव्वे वि उम्मग्गेण गच्छंति । जो चक्खुस्सा दुब्बलो सो वेज्जोवएसेण कमेसु कमणीओ पिणद्धि । जं पाएसु अब्भंगणोवाहणाइ परिकम्मं कज्जति तं चक्खुवगारगं भवति । जओ उत्तं –

"दंताना मंजनं श्रेष्ठं, कर्णानां दन्तधावनम् ।
शिरोऽभ्यंगश्च पादानां, पादाभ्यङ्गश्च चक्षुषाम् ॥"

इदाणिं कारणजाए त्ति दारं –

कुलमादिकज्ज दंडिय, पासादी तुरियधावणट्ठा वा ।
कारणजाते वण्णे, सागारमसागरे जतणा ॥६३४॥

कुल-गण-संघकज्जेसु, दंडिया वा ओलग्गणे, तुरियधावणे स्मरणाचारभूतवत् कमणी कमेसु बंधति, अन्यत्र वा कारणे आयरियपेसणे वा, तुरिए वा सहाओ दारगाहत्थ । चसहसूइए सम्मद्दारे उदगागणि-चोर-

सावयभएसु वा णस्संतो, जत्थ सागारियदोसो णत्थि तत्थ जयणा। जत्थ पुण सागारिया उड्डाहेंति तत्थ अवणउं गामादिसु पविसति।

अहवा – मोरंगादि चित्तियाओ सागारियाउ त्ति काउं ण गेण्हति, उणुब्भडातो गेण्हति ॥६३४॥

एवं अद्धाणादिकारणेसु गेण्हमाणस्स वण्णकसिणे कमो भण्णति –

पंचविह-वण्ण-कसिणे, किण्हं गहणं तु पढमओ कुज्जा।
किण्हम्मि असंतम्मी, विवन्नकसिणं तहिं कुज्जा ॥६३५॥

पंचविहे वण्णकसिणे पुव्वं कण्हं गेण्हति। तम्मि असंते लोहियादि गेण्हति। तस्स वि असते तेल्लमादीहिं विवण्णकरणं करेति, मा उड्डाहिस्सति लोगो रागो वा भविस्सति ॥६३५॥

सगलप्पमाणवंधणकसिणेसु विही भण्णति –

[1]कसिणं पि गेण्हमाणो, झुसिरगहणं तु वज्जए साहू।
बहुबंधणकसिणं पुण, वज्जेयव्वं पयत्तेणं ॥६३६॥

सकलकसिणं पमाणकसिणं गेण्हमाणो झुसिरं वज्जते। बहुबंधणकसिणं पयत्रो वज्जते ॥६३६॥

तं बंधणमिम –

दोरेहि व वज्झेहि व, दुविहं तिविहं च बंधणं तस्स।
कित-कारित-अणुमोदित, पुव्वकतम्मी अहिकारो ॥६३७॥

दोरेण वा वध्रेण वा दो तिण्णि वा बंधे करेति। कसिणं वा अकसिणं वा सयं ण करेति, अण्णेण वा ण कारवेति, कीरंतं णाणुमोदति। "पुव्वंकत" अहाकडए अधिकारो ग्रहणमित्यर्थः ॥६३७॥

ते पुण दो तिण्णि वा बंधा भवति –

खलुगे एक्को बंधो, एक्को पंचंगुलस्स दोण्णेते।
खलुगे एक्को अंगुट्ठे, वितिओ चउरंगुले ततिओ ॥६३८॥

खलुगे [2]गले वध्रबंधो एगो, अगुट्ठअगुलीणं च एगो, एते दोण्णि। खलुहए एगो, अंगुट्ठे वितिओ, चउरंगुलीए ततिओ ॥६३८॥

जो पुण सयं करेति कारवेति अणुमोदेति वा तत्थ पच्छित्तं –

सयकरणे चउलहुआ, परकरणे मासियं अणुग्घायं।
अणुमोदणे वि लहुओ, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥६३९॥

आणादिणो य दोसा, सयंकरणे अ उड्डाहो [3]पदकरः संभाव्यते ॥६३९॥

अकसिणसगलग्गहणे, लहुओ मासो तु दोस आणादी।
वितियपदघेप्पमाणे, अट्ठारस जाव उक्कोसा ॥६४०॥

---

१ "किण्हंमि" कृष्णवर्णमपि गृण्हन् शुषिरग्रहणं साधुः प्रयत्नतो वर्जयेद् इति बृहत्कल्पे उद्दे० ३ सू० ५–६ भाष्यगाथा ३८६८। २ घुटके। ३ चर्मकरः।

सकलादिचउप्पएसु सोलसभंगा । तत्थेस अट्ठमो भंगो पमाण-वण्ण-बंधणेहिं अकसिणं सगलकसिणं पुण । एत्थ से मासलहुं । स्पष्टः सूत्रनिपातः । गेण्हंतस्स आणादिणो दोसा । अद्धाणकारणेसु बितियपदेण घेप्पमाणे सोलसभंगो ग्रहीतव्यो, मध्ये खंडिता इत्यर्थः ।

अत्राह चोदक – दुखंडादि उक्कोसेणं जाव णव खण्डा एगा, दोसु वि अट्ठारस ॥६४०॥

इदमेवाभिप्रायं चोदकः व्याख्यानयति –

जदि दोसा भवंतेते, जहुत्ता कसिणाऽजिणे ।
अत्थावत्तीए सूएमो, एरिसं दाइ कप्पति ॥६४१॥

"अजिनं" चर्म, तम्मि कसिणे धरिज्जमाणे जदि एवं दोसा भवंति, तो अत्थावत्तीए "सूएमो"-जाणामो, "दाइ" त्ति अभिप्रायदर्शनं, ईदृशं कल्पते ॥६४१॥

अकसिणमट्ठारसगं, एगपुडविवण्ण एगबंधं च ।
तं कारणंमि कप्पति, णिक्कारणधारणे लहुओ ॥६४२॥

एष षोडशभंगो गृहीतः पूर्वार्धेन, तदपि कारणे णिक्कारणधरणे लहू ॥६४२॥

चोदग एवाह –

जति अकसिणस्स गहणं, भागे 'काउं कमे तु अट्ठरसा ।
एग पुड विवण्णेहि य, तेहिं तहिं बंधए कज्जे ॥६४३॥

जति अकसिणं घेप्पति तो जहाहं भणामि तहा घेप्पउ । दो उवाहणाओ अट्ठारसखंडे काउं एगपुडविवण्णं च जत्थ जत्थ पाद-पदेसे आबाहा तहिं तहिं कज्जे एगदुगादिखण्डे बंधति ॥६४३॥

कहं पुण अट्ठारसखण्डा भवति, भण्णति –

पंचंगुलपत्तेयं, अंगुट्ठमहे य छट्ठखंडं तु ।
सत्तममग्गतलम्मी, मज्झट्ठमपण्हिगा णवमं ॥६४४॥

पंचंगुलपत्तेयं पंचखंडा । अंगुट्ठगस्स अहो छट्ठं खडं । अग्गतले सत्तमं खडं । मज्झतले अट्ठमं खंडं । पण्हियाए णवमं खंडं । एवं बितिउवाहणाए वि णव । एवं सव्वे वि अट्ठारसखण्डा भवंति ॥६४४॥

एवं चोदकेनोक्ते आचार्याह –

[2]एवंतियाण गहणे, मुंचंते वा वि होति पलिमंथो ।
बितियपदघिप्पमाणे, दो खंडा मज्झपडिबद्धा ॥६४५॥

एवंतियाण खंडाणं गहणमोयणे सुत्तत्थाणं पलिमंथो भवति ॥६४५॥

पुव्वद्धस्स वक्खाण –

पडिलेहा पलिमंथो, णदिमादुदए य मुंच बंधंते ।
सत्थ - फिट्टण तेणा, अंतरवेधे य डंकणता ॥६४६॥

---

१ कमेण अट्ठदस इति प्रत्यन्तरे । २ एवंतीयाण गहणे होति पलिमंथो, पाठान्तरं – एतावतां खण्डानां ग्रहणे मासलघुप्रायश्चित्तमसमाचारीनिष्पन्नमित्यर्थः ।

जाव अट्ठारसखंडा दुसंकं पडिलेहेति ताव सुत्तत्थे पलिमंथो, णदिमादिउदगेण उत्तरंतो जाव मुयति उत्तिण्णो य जाव बंधति ताव सत्थातो फिट्टति । तम्रो तेणेहि ओदुब्भति, अदेसिको वा अडविपहेण गच्छति, तत्थ वि तरच्छ-वग्ध-अत्थभिल्लादिभय[1] बहुखंडंतरेसु वा कंटगेसु विज्झडितं किज्जति वा । बहुबन्धघस्सेण वा डंको होज्जा ।

चोदगाह - ता कह खंडिज्जति ?

आचार्याह - पच्छद्धे - वितियपदे जता घेप्पति तदा मज्झतो दो खंडा कीरति । एवं अधिकरणादि-दोसा जढा ॥६४६॥

तम्मज्झे बंधणं दुविध -

तज्जातमतज्जातं, दुविधं तिविधं च बंधणं तस्स ।
तज्जातम्मि व लहुम्रो, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥६४७॥

तं पुण तलबधणं पादबंधणं वा दुविधं - तज्जातमतज्जातं । तज्जातं बद्धेहि, अतज्जातं दोरेहिं । अतज्जाएण बंधमाणे मासलहु, णिक्कारणे तज्जाएण वि मासलहुं, आणादिणो य दोसा भवति ॥६४७॥

जे भिक्खू कसिणाइं वत्थाइं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

सदसं प्रमाणातिरिक्तं कृत्स्नं भवति । एष सूत्रार्थः ।

इदाणिं निर्युक्तिविस्तरः -

दव्वे खेत्ते काले, भावे कसिणं चउव्विहं वत्थं ।
दव्वकसिणं तु दुविधं, सगलं च पमाणकसिणं च ॥६४८॥

दव्वकसिणं दुविह - सगलकसिण पमाणकसिणं च ॥६४८॥

तत्थ सगलकसिणं इमं -

घण - मसिणं निरुवहतं, जं वत्थं लब्भए सदसियागं ।
एगं तु सगलकसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥६४९॥

"घणं" तंतूहिं समं, "[2]मसिण" कलं मोडिय वा, "णिरुवहत" ण अजणखंजणोवलित्तं वा अग्गिविदड्ढ मूसगखइयं वा । जं एरिसं सदसं लब्भति तं सगलकसिणं । तं पुण "जहण्णं" मुहपोत्तियाइ, "मज्झिमं" पडलादि, 'उक्कोसं" कप्पादि ॥६४९॥

इदाणिं पमाणकसिणं -

वित्थारायामेणं, जं वत्थं लब्भते समतिरेगं ।
एयं पमाणकसिणं, जहण्णियं मज्झिमुक्कोसं ॥६५०॥

"वित्थारो" पोहच्चं, "आयामो" देघत्त, जं वत्थ जहाभिहियपमाणओ समतिरेग लब्भति तं पमाणकसिणं भण्णति । तं पि तिविहं जहण्णाइ ॥६५०॥

---

१ शस्त्रम् । २ कोमलम् ।

इदाणिं खेत्तकसिण –

जं वत्थं जंमि देसम्मि, दुल्लभं अग्घियं च जं जत्थ ।
तं खेत्तजुअं कसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥९५१॥

जं वत्थं जम्मि खेत्ते दुल्लभं, जत्थ वा खेत्ते गत अग्घितं भवति, अग्घियं णाम बहुमोल्लं, त तेण कसिणं भवति । यथा पूर्वदेशजं वस्त्रं लाटविषय प्राप्य दुर्लभं अर्घितं च । तदपि त्रिविध जघन्यादि ॥९५१॥

इदाणिं कालकसिण –

जं वत्थं जम्मि कालम्मि, अग्घियं दुल्लभं च जं जम्मि ।
तं कालजुअं कसिणं, जहण्णगं मज्झिमुक्कोसं ॥९५२॥

ज वत्थं जम्मि काले अग्घित, जम्मि काले दुल्लभ, तम्मि चेव काले कालकसिणं भवति । तदपि त्रिविधं – जघन्यादि । गिम्हे जहा कासाइ, सिसिरे पावाराति, वासासु कुंकुमादि खचित ॥९५२॥

इदाणिं भावकसिणं –

दुविधं च भावकसिणं, वण्णजुअं चेव होति मोल्लजुअं ।
वण्णजुअं पंचविधं, तिविधं पुण होति मोल्लजुअं ॥९५३॥

भावकसिणं दुविधं – वण्णतो मोल्लतो य । वण्णेण पंचविधं । मोल्लओ जहण्णमज्झिमुक्कोस ॥९५३॥

तत्थ वण्णतो इमं –

पंचण्हं वण्णाणं, अण्णतराण जं तु वण्णड्ढं ।
तं वण्णजुअं कसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥९५४॥

वर्णाढ्यं यथा – कृष्णं मयूरग्रीवसन्निभं, नीलं सुकपिच्छसन्निभं, रक्तं इन्दगोपसन्निभं, पीतं सुवर्णवत् शुक्लं शंखेंदुसन्निभं । तमेवंविधं वण्णकसिणं । तदपि त्रिविध जघन्यादि ॥९५४॥

इदाणिं दव्व-खेत्त-कालकसिणेसु पच्छित्तं भण्णति –

चाउम्मासुक्कोसे, [1]मासिय मज्झम्मि पंच य जहण्णे ।
तिविधम्मि वि वत्थम्मि, तिविधा आरोवणा भणिता ॥९५५॥

उक्कोसेसु, दव्व-खेत्त-काल-कसिणेसु पत्तेय चउलहुआ । मज्झिम - दव्व - खेत्त - काल - कसिणेसु पत्तेयं मासलहुं । जहण्णेसु दव्व-खेत्त-काल-कसिणेसु पत्तेयं पणग, तिविहे जहण्णादिगे, तिविधा दव्वादिगा आरोवणा भणिया ॥९५५॥

अहवा – तिविधा आरोवणा चउलहुमासो पणगं ।

दव्वादि तिविहकसिणे, एसा आरोवणा भवे तिविधा ।
एसेव वण्णकसिणे, चउरो लहुगा व तिविधे वि ॥९५६॥

पूर्वार्धं गतार्थम् । एसेव वण्णकसिणे भणिता ।

---

१ मासो प्र० ।

अहवा – वण्णकसिणे जहण्णमज्झिमुक्कोसए तिविधे वि रागमिति कृत्वा चउलहुअं चेव ।

अहवा – विसेसो एत्थ कज्जति । उक्कोसे दोहिं गुरु, चउलहुं । [1]मज्झिमे तवगुरु जहण्णे दोहिं लहुं ।।९५६।।

इदाणिं मुल्लकसिण –

मोल्लजुतं पुण तिविधं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।
जहण्णे अट्ठारसगं, सतसाहस्सं च उक्कोसं ।।९५७।।

मुल्लभावकसिणं तिविधं – जहण्ण-मज्झिमुक्कोसं । जस्स अट्ठारस रूवया मुल्ल तं जहण्ण-कसिण । सतसहस्समुल्ल उक्कोस-कसिणं । सेस विं मज्झ मज्झिमकसिण ।।९५७।।

इम पुण कतमेण रूवएण पमाण ? भण्णति –

दोसाभरगा दीविच्चगाउ सो उत्तरापधे एक्को ।
दो उत्तरापधा पुण, पाडलपुत्ते हवति एक्को ।।९५८।।

"साहरको" णाम रूपकः, सो य दीविच्चिको । तं च दीवं सुरट्ठाए दक्खिणेण जोयणमेत्तं समुद्दमवगाहित्ता भवति, तेहिं दोहिं दिव्विच्चगेहिं एक्को उत्तरापहको भवति, तेहिं एक्को पाडलिपुत्तगो भवति ।।९५८।।

अहवा –

दो दक्खिणापहावा, कंचीए णेलओस दुगुणो उ ।
एक्को कुसुमणगरओ, तेण पमाणं इमं होति ।।९५९।।

दक्खिणापहगा दो रूपगा कंचिपुरीए एक्को णेलओ भवति, "नेलको" रूपकः, स नेलओ दुगुणो एगो "कुसुमपुरगो" भवति, कुसुमपुरं "पाडलिपुत्तं", अनेन रूपकप्रमाणेन अष्टादशकादिप्रमाणं ग्रहीतव्यम् । मूलवड्ढीओ पच्छित्तवड्ढी भवति ।।९५९।।

अट्ठारसवीसा य, अउणपण्णा य पंच य सयाइं ।
एगूणगं सहस्सं, दसपण्णासा सतसहस्सं ।।९६०।।
चत्तारि छच्चलहुगुरु, छेदो मूलं च होति बोधव्वं ।
अणवठप्पो य तहा, पावति पारंचियं ठाणं ।।९६१।।
अट्ठारसवीसा य, सतमड्ढातिज्जा य पंच य सयाइं ।
सहसं च दस सहस्सा, पण्णास तहा सतसहस्सं ।।९६२।।

एतेसु जहासंखेण पच्छित्तं -

लहुओ लहुया गुरुगा छम्मासा होंति लहुगगुरुगा य ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ।।९६३।। कंठा

1 मध्यमे अन्यतरगुरुकमिति बृहत्कल्पे उद्दे० ३ भाष्यगाथा ३८८९ ।

अहवा –

अट्ठारसवीसा य, पण्णास तथा सयं सहस्सं च ।
पण्णासं च सहस्सा, तत्तो य भवे सयसहस्सं ॥९६४॥
चउगुरुग छच्च लहु, गुरु छेदो मूलं च होति बोद्धव्वं ।
अणवट्ठप्पो य तहा, पावति पारंचियं ठाणं ॥९६५॥

अष्टादशक रूपकमूल्ये चतुर्गुरवः, विंशतिमूल्ये षट्लघवः, पंचाशत् मूल्ये षट्गुरवः, शतमूल्ये छेदः, सहस्रमूल्ये मूलं, पचाशत् सहस्रमूल्ये अनवस्थाप्यं । शतसहस्रमूल्ये पाराचिकं ।

एयं तु भावकसिणं, केण विसेसो उ दव्वभावाणं ।
भण्णति सुणसु विसेसं, इणमो फुडपागडं एत्थं ॥९६६॥

एयं मुल्लकसिणं ।

एवं दव्वादिकसिणे वक्खाए चोदगाह – द्रव्यभाववस्त्रयोर्विशेष नोपलभामहे कुतः ?

उच्यते – यो द्रव्यस्य वर्णः स भाव उच्यते, न च भावमन्तरेण अन्यद् द्रव्यमस्तीति, अतो नास्ति विशेष. ॥९६६॥

आचार्याह –

कज्जकारणसंबंधो, दव्ववत्थं तु आहितं ।
भावतो वण्णमायुत्तं, लक्खणादी य जे गुणा ॥९६७॥

कार्यं पटः, कारणं तन्तवः तयोः संबंध., यत् तंतुभिरातानवितानत्वं, तद् द्रव्यवस्त्रमुच्यते ।

कृष्णादिवर्णमृदुत्वश्लक्षणादयश्च गुणा भाववस्त्रमुच्यते । इदं द्रव्यनयाभिप्रायादुच्यते-द्रव्ये आधारभूते वर्णादयो गुणा भवन्तीत्यर्थः ॥९६७॥

इमं वा भाववत्थं –

अहवा रागसहगतो, वत्थं धारेति दोससहितो वा ।
एवं तु भावकसिणं, तिविधं परिणामणिप्फण्णं ॥९६८॥

रागेण वा धरेति दोसेण वा तं भावकसिणं, परिणामतो तिविधं – रागदोसेहिं जहण्णेहिं जहण्णं, मज्झिमेहिं मज्झिम, उक्कोसेहिं उक्कोसं । इहापि पच्छित्तं पूर्ववत् ॥९६८॥

सुत्तणिवातप्रदर्शनार्थम् –

सुत्तणिवातो कसिणे, चतुव्विधे मज्झिमम्मि वत्थम्मो ।
जहण्णे य मोल्लकसिणे, तं सेवंतम्मि आणादी ॥९६९॥

चउव्विहे मज्झिमे दव्व-खेत्त-कालवण्ण-भावकसिणे य जहण्णे य मुल्लकसिणे मासलहुं चेव ॥९६९॥

सकल-कसिणे य प्रमाणातिरित्ते य इमे दोसा –

भारो भयपरियावण, मारणमधिकरण अधियकसिणम्मि ।
पडिलेहाणालोवे, मणसंतावो उवादाणं ॥९७०॥

भारो भवति पमाण-कसिणेण । श्रद्धाण पवण्णस्स अप्पणो चेव भयं भवति, भारेण वा परितावित्जति। पमाणकसिणे य वत्थणिमित्ते मारिज्जति । हरिए अहिकरणं भवति । अधिकसिणे एते दोसा । सगलकसिणे य एते चेव । इमे अण्णे सागारियभया ण पडिलेहिज्जति तया तित्थकराणाए लोवं करेति, हरिते मणसंतावो, सेहस्स उण्णिक्खमंतस्स उवादाणं भवति ॥९७०॥

गोमियगहणं अण्णे, सिरुंभणं धुवणकम्मबंधो य ।
ते चेव हुंति तेणा, तण्णिस्साए अहव अण्णे ॥९७१॥

गोमिया [1]सुकिया, कसिण-वत्थ-णिमित्तं तेहिं घेप्पंति । एतेसिं पि अत्थि त्ति अण्णे वि साहुणो रुब्भंति । धुवणकाले य महंतो आयासो तत्थ परितावणादि दोसा । बहुणाऽतिद्रवेण धोव्वति, अणुवएसकारिणो कम्मबंधो य । एते चेव गोम्मियादि अण्णपहेण गंतु, तेणा भवति । तण्णिस्साए-तेहिं वा पेरिया अण्णे भवंति । अधवऽण्णे चेव तेणया सगलकसिणस्स भवंति ॥९७१॥

एत्थ दिट्ठंतो –

एगो राया आयरिएण उवसमितो । सो सव्वं गच्छं कंबलरयणेहिं पडिलाभिउं उवट्ठितो । आयरिएहिं णिसिद्धो "ण वट्टति" त्ति । अतिणिबंधा एगं गहितं । भणाति पाउएणं हट्टमग्गेण गच्छह । तहा कयं । तेणगेण दिट्ठा । रातिं आगंतुं तेणगेण भणिय - जति ण देह वत्थं रायदिण्णं तो भे सिरच्छेयं करेमि । आयरिएण भणियं – खंडियं । दंसेह । दसिय । रुट्ठो भणेति – सिव्विउं देह । अण्णहा भे मारेमि । तं च सिव्विउं दिण्ण ।

विधिप्रदर्शनार्थं इदमाह –

कसिणे चतुव्विधम्मी, इति दोसा एवमादिणो होंति ।
उप्पज्जंते तम्हा, अकसिणगहणं ततो भणितं ॥९७२॥

दव्वादिगे चउव्विहे कसिणे जतो एवमादिदोसा उप्पज्जंति तम्हा ण घेत्तव्वं, अकसिणं गहियव्वं ॥९७२॥

तं च इमं –

भिण्णं गणणाजुत्तं, च दव्वतो खेत्त-कालतो उचियं ।
मोल्ललहुवण्णहीणं, च भावतो तं अणुण्णातं ॥९७३॥

"भिण्ण" मिति अदसागं। गणाए तओ कप्पा । जं च जस्स गणणापमाणं वुत्तं तं तेण जुत्त गेण्हति ।

अहवा–जुत्तमिति स्वप्रमाणेन दव्वतो [2]थूरं अगरहियं, खेत्तकालाओ जणे उचियं सव्वजणभोग्गं । मुल्लओ अप्पमुल्लं । वण्णहीणं भावतो एरिसं अणुण्णायं ॥९७३॥

कारणे कसिणं पि गेण्हेज्जा –

बितियपदे जावोग्गहो, गणचिंतगउचियदेस गेलण्णे ।
तब्भाविए य तत्तो, पत्तेयं चउसु वि पदेसु ॥९७४॥

---

१ शुल्कपालाः । २ अदशाकम् ।

"बितियपदे" त्ति अववादपदेण, "जावुग्गहो" त्ति चिरा चरियाए णिग्गतो आयरिओ जा ण णियत्तति ता दसाओ ण छिज्जंति। गणचिंतगो वा धरेति, ओमादिसु [1]केवडियहेउं घतादि घेप्पति। दव्वतो अववातो गतो। इदाणि खेत्तओ "उचितदेसे" तस्मिं देसे उचित कसिणं, सव्वजणो तारिसं परिभुजति। कालओ अववाओ "गेलण्णे" जाव गिलाणो ताव कसिणं धरेति तं पाउणिज्जंतं [2]ण ण्हसति। भावतो अववाओ "तब्भाविए य तत्तो" रायादि दिक्खिओ, ओढण-परिहाणेसु कसिणवत्थभाविओ ण तस्स खंडिज्जति। दव्वादिएसु चउसु वि पदेसु पत्तेयं अववाओ भणिओ ॥६७४॥

[3]जे भिक्खू अभिण्णाइं वत्थाइं धरेति, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू लाउयपायं वा दारुयपायं वा मट्टियापायं वा सयमेव परिघट्टेइ वा संठवेइ वा जमावेइ वा परिघट्टेंतं वा संठवेंतं वा जमावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

भाष्यं यथा प्रथमोद्देशके तथाऽत्रापि। तत्र परकरणं प्रतिषिद्धं। इह तु स्वयं करणं प्रतिषिध्यते।

[4]लाउय-दारुय-पादे, मट्टिय-पादे य तिविधमेक्केक्के।
बहु-अप्प-अपरिकम्मे, एक्केक्कं तं भवे कमसो ॥६७५॥

[5]परिकम्म० १ (६८६) अद्धं० २ (६८७) जं पुव्व० ३ (६८८) तिण्णि वि० ४ (६८९) उक्कोस० ५ (६९०) एवं चेव० ६ (६९१) भत्त० ७ (६९२) वट्टं० ८ (६९३) परिघट्ट० ९ (६९४) पढम० १० (६९५) एता गाहा दस।

घट्टितसंठविताणं, पुव्विं जमिताण होतु गहणं तु।
असती पुव्वकताणं, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६७६॥

बीतिय० (६९७) पच्छा० (६९८) एताओ चेव गाहाओ।

जे भिक्खू दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसूइयं वा सयमेव परिघट्टेइ वा, संठवेइ वा, जमावेइ वा, परिघट्टेंतं वा, संठवेंतं वा, जमावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

इदमपि प्रथमोद्देशकवद् वक्तव्यम्।

डंडग विडंडए वा, लट्ठि विलट्ठी य तिविध तिविधा तु।
वेलुमय वेत्त-दारुग, बहु-अप्प-अहाकडे चेव ॥६७७॥

---

१ केणतियहेतुना। २ न सरति। ३ एतदनन्तरकं सूत्रं नास्ति चूर्णौ। ४ "लाउय०" इत्यारभ्य "एताओ चेव गाहाओ" इत्यन्तं नास्ति चूर्णौ। ५ प्रथमोद्देशके एकोनचत्वारिंशत् सूत्रे।

तिन्नि उ हत्थे०	(प्र. उ. ७००)	अद्धं गु०	(७०१)	जे पुव्व०	(७०२)
दुपय०	(,, ७०३)	पढम०	(७०४)	घट्टिय०	(७०५)
परिघ०	(,, ७०६)	बितिय०	(७०७)	पच्छा०	(७०८)
उड्डबद्धे०	(,, ७०९)	बारस०	(७१०)	एक्केक्का०	(७११)
अद्धंगुल०	(,, ७१२)	जा पुव्व०	(७१३)	पढम०	(७१४)
घट्टिय०	(,, ७१५)	वितियपद०	(७१६)	पच्छा०	(७१७)
वेणुमयी०	(,, ७१८)	एक्केक्का०	(७१९)	अद्धंगु०	(७२०)
जा पुव्व०	(,, ७२१)	पढम०	(७२२)	घट्टिय०	(७२३)
बितिय०	(,, ७२४)	पच्छा०	(७२५)		

जे भिक्खू णियग-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

नियकः स्वजनः, स साधुवचनाद् गवेषयति, तेनान्विष्टं याचितं गवेसियं गृण्हातीत्यर्थ. एस सुत्तत्थो ।

अधुना निर्युक्तिविस्तरः ।

संजतणिए गिहिणिए, उभयणिए चेव होइ बोधव्वे ।
एते तिण्णि विकप्पा, णियगम्मी होंति णायव्वा ॥६७८॥

जो गिहत्थो पादं गवेसाविजति सो निजत्वेनान्विष्यते । साधोर्यस्य तत् पात्रमस्ति गृहिणः (वा) संजतणिए णो गिहि-णीए, एवं ठाणक्कमेण चउभगो कायव्वो । चतुर्थः शून्यः । ततियभंगे जइ वि संजयस्स णिओ तहावि गिहिणा मग्गावेति ॥६७८॥

इमेहिं कारणेहिं –

आसण्णतरो भयमायतीतकारोवकारिता चेव ।
इति णीयपरे वा वी णीएण गवेसए कोयी ॥६७९॥

स्वजनत्वेनासन्नतरो भजस्वितरो वा भाति, वा आयतिं सयस्स करेति, उपकारेण प्रत्युपकारेण वा प्रतिबद्धः इति कारणोपप्रदर्शने, परशब्द एष्यत्सूत्रस्पर्शने आद्यत्रयभंगप्रदर्शनार्थः ॥६७९॥

एत्तो एगतरेणं, णितिएणं जो गवेसणं कारे ।
भिक्खू पडिग्गहम्मी, सो पावति आणमादीणि ॥६८०॥

तिण्हं भंगाणं एगतरेणावि जो पडिग्गहं गवेसइ सो पावति आणमादीणि ॥६८०॥

दाउमप्रियं तथाप्येवं ददाति –

लज्जाए गोरवेण व, देइ णं समूहपेल्लितो वा वि ।
मित्तेहि दावितो वा, णिस्सो लुद्धो विमं कुज्जा ॥६८१॥

बहुजणमज्झे मग्गितो लज्जाए ददाति । जेण मग्गितो तस्स गोरवेण देति । बहुजणमज्झे मग्गितो बहुजणेण वुत्तो देति । मित्ताण पुरओ मग्गिओ मित्तेहिं भणिओ देति । "णिस्सो" दरिद्रः, तम्मि वा भायणे लुद्धो इमं कुज्जा ॥६८१॥

पच्छाकम्मपवहणे, अचियत्ता संखडे य दोसे य ।
एगतरमुभयतो वा, कुज्जा पत्थारतो वा वि ॥६८२॥

तं दाउं अप्पणा विसूरंतो अण्णस्स भायणस्स मुहकरणं कोरणाति पच्छाकम्मं करेति । अण्णं वा अपरिभोगं पवाहेज्जा, संजए गिहत्थे वा अचियत्तं करेज्ज, अचियत्तेण जहासंभवं वित्तिवोच्छेदं करेज्ज, साहुणा गिहत्थेण वा सद्धि दाविउ त्ति तो असंखडं करेज्ज, साहुस्स गिहत्थस्स वा उभओ वा पउसेज्ज, पत्थारओ वा सव्वसाहूणं पदुसेज्ज । पत्थारओ वा डहण-घाय-मारणादि सयं करेज्ज कारवेज्ज वा ॥६८२॥

कारणओ पुण गिहिणा मग्गावेउं कप्पेज्ज –

संतासंतसतीए, अथिर अपज्जत्तलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥६८३॥

"संतं" विज्जमानं, "असंतं" अविज्जमानं । संतेसु चेव विसूरति, असंतेसु वा विसूरेइ । तत्थ संतासंती इमा अथिरं हुडं अपज्जत्तं वा अत्थि गिहकुलेसु वा ण लब्भति, रायादिणा वा पडिसेधिए ण लब्भति, अणेसणिज्जा वा लब्भंति, असिवादीहिं वा, संततो असती ॥६८३॥

असिवादी इमं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं भवे पादो ॥६८४॥

भाणभूमीए अतरा वा असिवं, एव ओमरायदुट्ठभया वि, गिलाणो ण सक्केति पादभूमिं गंतुं, दुल्लभपत्ते वा देसे, राइणा वा पडिसिद्धा, परिसाए संतासंतीए गिहिगविट्ठस्स गहणं भवे ॥६८४॥

असंतासंती इमा –

भिण्णे व ज्झामिते वा, पडिणीए साणतेणमादीसु ।
एएहिं कारणेहिं, णायव्वाऽसंततो असती ॥६८५॥

भिण्णं, "झामियं" दड्ढं, पडिणीयसाणतेणमादीहिं हडं, अण्णं व णत्थि, एवं असतो असंतासंती गया ॥६८५॥

दुविहा ऽसतीए इमं विधिं कुज्जा –

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणा कुज्जा ।
तो पच्छा जतणाए, णीएण गवेसणं कारे ॥६८६॥

दुविहा ऽसतीए पुव्वमप्पणा गवसेणं कुज्जा, सयमलब्भमाणे पच्छा जयणाए णितेण गवेसावते ॥६८६॥

अहवा गविट्ठे अलद्धे इमा विही –

पुव्वोवट्ठमलद्धे, णीयमपरं वा वि पट्ठवे तूणं ।
पच्छा गंतुं जायति, समणुव्वूहंति य गिही वि ॥६८७॥

पुव्वं संजएण गविट्ठं ण लद्ध ताहे संजतो नियं परं वा पुव्वं तत्थ पट्ठवेति, गच्छ तुम तो पच्छा अम्हे गमिस्सामो, तुज्झयपुरओ तं मग्गिस्सामो, तुमं उवबूहेज्जासि-''जतीणं पत्तदाणेण महतो पुण्णखवो वज्झति,'' उववूहिते जति ण लब्भति पच्छा भणेज्जासु वि "देहि" त्ति एवं पदोसादयो दोसा परिहारिया भवंति ।।६८७।।

जे भिक्खू पर-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२८।।

"परः" अस्वजनः भगचतुष्कादि शेप पूर्वसूत्रवत् द्रष्टव्यम् ।

संजयपरे गिहिपरे उभयपरे, चेव होंति वोद्धव्वे ।
एते तिन्नि विकप्पा, नायव्वा होंति उ परंमि ।।६८८।।

(६८० - ६८१ - ६८७ - १६४ - १६५ - १६६ - १६७ - १६८ - १६९ - १७० ताओ चेव गाहाओ)

जे भिक्खू वर-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२९।।

"वर" शब्दप्रतिपादनार्थमाह –

जो जत्थ अचित्तो खलु, पमाणपुरिसो पधाणपुरिसो वा ।
तम्मी वरसद्दो खलु, सो गामियरट्ठितादी तु ।।६८९।।

जो पुरिसो जत्थ गामणगरादिसु अच्चंते, अचितो वा, खलुशब्द अवधारणाय, गामणगरादि-कारणेसु पमाणीकतो, तेसु वा गामादिसु धणकुलादिणा पहाणो, एरिसे पुरिसे वरशब्दप्रयोगः । सो य इमो हवेज्ज "गामिए" त्ति गाममहत्तर. "रट्ठिए" त्ति - राष्ट्रमहत्तर । आदिसद्दातो भोइयपुरिसो वा शेषं पूर्ववत् ।।६८९।। एत्तो० (६८०) पच्छा० (६८२) संता० (६८३) असिवादि० (६८४) भिन्नेव०(६८५) ताओ चेव गाहाओ ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
एत्तो पच्छा जयणाए, वरं गविट्ठं पि कारेज्जा ।।६९०।।

जे भिक्खू वल-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३०।।

"वलं" सारीरं जनपदादि वा –

जो जस्सुवरिं तु पभू, बलियतरो वा वि जस्स जो उवरिं ।
एसो वलवं भणितो, सो गहवति सामि तेणादि ।।६९१।।

"जो" त्ति य. पुरुप. यस्य पुरुपस्योपरि प्रभुत्व करोति सो वलवं भण्णति ।

अहवा – अप्रभू वि जो वलवं सो वि वलवं भण्णति । सो पुण गृहपति. गामसामिगो वा तेणगादि वा । शेषं पूर्ववत् ।।६९१।।

एत्तो० (६८०) पच्छा० (६८२) संता० (६८३) असिवे० (६८४) भिन्नेव० (६८५) ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
तो पच्छा उ वलवता, जयणाए गवेसणं कारे ।।६९२।।

जे भिक्खू ल व-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३१।।

दाणफलं लविऊणं पडिग्गहं मग्गति –

दाणफलं लवितूणं, लावावेतु गिहिग्रण्णतित्थीहिं ।
जो पादं उप्पाए, लव-गविट्ठं तु तं होति ॥९९३॥

दाणफलं ग्रप्पणा कहेति । गिहिग्रण्णतित्थिएहिं वा कहावेत्ता जो पादं उप्पादेति एयं लव-गविट्ठं भण्णति ॥९९३॥

तस्सिमे विहाणा –

लोइय-लोउत्तरियं, दाणफलं तु दुविधं समासेणं ।
लोइयणेगविधं पुण, लोउत्तरियं इमं तत्थ ॥९९४॥

समासतो दुविधं दाणफलं – लोइयं लोउत्तरियं च । लोइयं ग्रणेगविहं – गोदानं भूमीदानं भक्तप्रदानादि ।

लोउत्तरियं इमं ॥९९४॥

ग्रण्णे पाणे भेसज्ज-पत्त-वत्थे य सेज्ज संथारे ।
भोज्जविधे पाणरोगे, भायण भूसा गिहा सयणा ॥९९५॥

ग्रण्णपाणादियाण सत्तण्हं पच्छद्धेण जहासंखं फला – ग्रण्णदाणे भोज्जविही भवति, पानकदाने द्राक्षापानकविधी, भेसजदाणे ग्रारोग्यविधी, पत्तदाणेण भायणविधी, वत्थदाणेण विभूसणविधी, सेज्जादाणेण विविहा गिहा, संथारगदाणेण भोगंगादि सेज्जाविहाणा भवंति ॥९९५॥

संखेवग्रो वा फल इमं –

ग्रथवा वि समासेणं, साधूणं पीति - कारग्रो पुरिसो ।
इह य परत्थ य पावति, पीतीग्रो पीवरतरीग्रो ॥९९६॥

ग्रहवासद्दो विकप्पवायगो, "समासो" संखेवो, साधूणं भत्तपाणेहि पीतीमुप्पाएंतो इहलोए परलोए य पीवरातो पीतीग्रो पावति । "पीवरं" प्रधानं, 'तर' शब्दः ग्राधिक्यतरवाचक', सर्वजनाधिक्यतरा-प्रीतीः प्राप्नोतीत्यर्थः ॥९९६॥ शेष पूर्ववत् । एत्तो एगतरेणं० (९८०) पच्छाकम्मेय० (९८२) संतासंत० (९८३) ग्रसि० (९८४) मिस्से० (९८५) ताग्रो चेव माहाग्रो ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
एतो पच्छा जयणाए, लवं-गविट्ठं पि कारेज्जा ॥९९७॥

णवरं –

एसेव गमो णियमा, दुविधे उवहिम्मि होति णायव्वो ।
पुव्वे ग्रवरे य पदे, सेज्जाहारे वि य तहेव ॥९९८॥

दुविहे उवकरणे – ग्रोहिए उवग्गहिए य । उस्सग्गववाएहिं एसेव गमो । सेज्ज - ग्राहारेसु वि एसेव विही भाणियव्वो ॥९९८॥

जे भिक्खू णितियं अग्गपिंडं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

"णितियं" ध्रुवं सासयमित्यर्थः, "अग्रं" वरं प्रधानं ।

अहवा – जं पढमं दिज्जति सो पुण भत्तट्ठो वा भिक्खामेत्तं वा होज्जा, एस सुत्तत्थो ।

अधुना निर्युक्तिविस्तरः –

णितिए उ अग्गपिंडे, णिमंतणोवीलणा य परिमाणे ।
साभाविए य एत्तो, तिण्णि य कप्पंति तु कमेणं ॥९९९॥

णितियऽग्गा सुत्ते वक्खाया । गिहत्थो णिमंतेति, साहू उपीलण्णं करेति, साहू चेव परिमाणं करेति, साभावियं गिहत्थो देति । तिण्णि आइल्ला ण कप्पति, साभाविय कप्पति ॥९९९॥

णिमंतणोवीलणपरिमाणाणं इमाओ तिण्णि वक्खाणगाहाओ –

भगवं ! अणुग्गहंता, करेहि मज्झं ति भणति आमं ति ।
किं दाहिसि जेणट्ठो, गतस्स तं दाहि ति ण वत्ति ॥१०००॥

दाहामि त्ति य भणिते, तं केवतियं व केच्चिरं वा वि ।
दाहिसि तुमं ण दाहिसि, दिण्णादिण्णे य किं तेण ॥१००१॥

जावतिएणट्ठो मे, जच्चिय कालं च रोयए तुब्भं ।
तं तावतियं तच्चिर, दाहामि अहं अपरिहीणं ॥१००२॥

गिही णिमंतेति "भगवं ! अणुग्गहं करेह, मज्झ घरे भत्तं गेण्हह" । साहू भणति "करेमिणुग्गहं, किं दाहिसि ?" गिही भणति "जेण मे अट्ठो" । साहू उवीलणं करेमाणो भणति – घर गयस्स तं दाहिसि ण वा । गिहिणा "दाहामि" त्ति य भणिते साहू परिमाणं कारवेंतो भणति "तं परिमाणओ केवतियं केवच्चिरं वा कालं दाहिसि ? प्रथमपादोत्तरं आह" दाहिसि तुमं, ण दाहिसि ?" दत्तमपि तत् अदत्तवद् द्रष्टव्यम्, स्वल्पत्वात् । गृहस्थ. द्वितीयपादोत्तरमाह "जावतिएण भत्तेण अट्ठो मे जावतियं वा कालं तुब्भट्ठो ।" गिही पुणो भणति – किं बहुणा भणिएणं जं तुब्भं रोयते दव्वं जावतियं जत्तियं वा कालं तमहमपरिहीणं अपरिसंतो दाहामि त्ति ॥१००२॥

णिमंतणोप्पीलणपरिमाणेसु वि मासलहुं पच्छित्तं ।

चोदग आह –

साभावितं च उचियं, चोदगपुच्छाण पेच्छमो कोयि ।
दोसो चतुव्विधम्मी, णितियम्मि अग्गपिंडम्मि ॥१००३॥

साभावियं जं अप्पणो अट्ठा रद्ध, उचित दिणे दिणे जत्तियं रज्झतं ।

चोदको भणति – एरिसे साभाविए णिमंतणोपीलणपरिमाणे य चउव्विहे वि अग्गपिंडे दोसं ण पेच्छामो ॥१००३॥

आचार्याह –

साभावि णितियकप्पति, अणिमंतणोवीलअपरिमाणे य ।
जं वा वि सामुदाणी, तं भिक्खं दिज्ज साधूणं ।।१००४।।

साभावियं भत्तट्ठा रद्धं, तं नितितं दिणे दिणे अनिमंतियस्स अणोपीलिय अपरिमाणकडं च । जं वा वि सामुदाणीसामान्यं गृहपाकपक्वं तं णिमंतणोपीलणादीहि भिक्खामेत्तमवि अकप्पं, अण्णहा साहूणं कप्पं ।।१००४।।

साभावियउचिए वि णिमंतणाकप्पतिएहि इमे दोसा –

णिप्फण्णो वि सअट्ठा, उग्गमदोसा उ ठवितगादिया ।
उप्पज्जंते जम्हा, तम्हा सो वज्जणिज्जो उ ।।१००५।।

अप्पट्ठा वि णिप्फण्णे ठवियगादि उग्गमादि दोसा भवंति । निकाचितोऽहमिति अवश्यं दातव्यं, कुंडगादिसु स्थापयति । तस्मान्निमंत्रणादि पिण्डो वर्ज्यः ।।१००५।।

ओसक्कण अहिसक्कणं, अज्झोयरए तहेव णेक्कंती ।
अण्णत्थ भोयणम्मि य, कीते पामिच्चकम्मे य ।।१००६।।

अवस्सं दायव्वे अतिप्पए साहुणो आगच्छंति, रंधियपुव्वस्स उसक्कणं करेज्ज, उस्सूरे आगच्छंति त्ति अहिसक्कणं करेज्ज । अज्झोयरयं वा करेज्ज । णिक्काउ त्ति काउं जति ते अण्णत्थ णिमंतिया तहा वि तदट्ठाए किणेज्ज वा पामिच्चेज्ज वा आहाकम्म वा करेज्ज ।।१००६।।

कारणे पुण णिकायणापिंडं गेण्हेज्ज ।

इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भये व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीतत्थे ।।१००७।।

असिवग्गहितो ण लब्भति, णिमंतणाइएसु वि गेण्हेज्ज ।

अधवा – असिवे कारणठितो असिवग्गहिय कुलाणि परिहरंतो असिवाओ असंथरंतो अगहियकुलेसु अपावंतो, निमंतणा वीलणादिसु वि गेण्हेज्ज । ओमे वि अप्फचंतो । एवं रायदुट्ठे भएसु अच्छंतो गच्छंतो वा गिलाणपाउग्गं वा णिमंतणादिएसु गेण्हेज्जा । अद्धाणे रोहए वा अप्फच्चंतो गीतत्थो पणगपरिहाणीए जाहे मासलहुं पत्ते ताहे णीयग्गपिंडं गेण्हति ।।१००७।।

जे भिक्खू णितियं पिंडं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३३।।
जे भिक्खू णितियं अवड्ढभागं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३४।।
जे भिक्खू णितियं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३५।।
जे भिक्खू णितियं अवड्ढभागं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३६।।

"पिंडो" भत्तट्ठो, "अवड्ढो" तस्सद्धं, "भागो" त्रिभागः, त्रिभागद्धं "अवड्ढ" भागो ।

एसेव गमो णियमा, णिइते पिंडम्मि होतऽवड्ढे य ।
भागे य तस्सुवड्ढे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१००८॥

पिंडो खलु भत्तट्ठो, अवड्ढपिंडो उ तस्स जं अद्धं ।
भागो तिभागमादी, तस्सद्धमुवड्ढभागो य ॥१००६॥

गतार्था एव ॥१००६॥

जे भिक्खू णितियं वासं वसति; वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

उडुबद्ध वासासु अतिरिक्तं वसतः णितियवासो भवति ।

इदानिं निर्युक्तिमाह –

दव्वे खेत्ते काले, भावे णितियं चउव्विहं होति ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१०१०॥

दव्व-खेत्त-काल-भावेसु णितियं चउव्विहं। एतेसिं "नानात्व" विशेषं, तमानुपूर्व्या वक्ष्ये ॥१०१०॥

संजोगचतुष्कभंगप्रदर्शनार्थमाह –

दव्वेण य भावेण य, णितियाणितिए चतुक्कभयणा उ ।
एमेव कालभावे, दुयस्स व दुए समोतारो ॥१०११॥

दव्वतो णितिए, खेत्ततो णितिए, एवं चउभंगो कायव्वो ।

तत्थ पढमभंगभावणा –

संथारगाइ दव्वाणि कालदुगातीताणि तम्मि चेव खेत्ते परिभुजंतो णितितो भवति, पढमभंगो ।

संथारगाति दव्वाणि कालदुगातीताणि अण्णम्मि खेत्ते णेउं परिभुजति, बितियभंगो ।

तम्मि चेव खेत्ते अण्णे संथारगादि गेण्हति, ततियभंगो ।

नितियं पडुच्च चउत्थभंगो सुण्णो । एवं कालभावेसु वि चउभंगो कायव्वो ।

कालओ वि णियए भावओ वि णियए । ङ्क । तत्थ पढमभंगो कालदुगातीतं वसति सड्ढादिसु भावपडिबद्धो पढमभंगो । कालदुगातीतं वसति ण सड्ढादिसु रागपडिबद्धो बितियभंगो । कालदुगणिग्गतस्स वि सड्ढातिसु भावपडिबद्धो, ततियभंगो । चतुर्थः शून्यः । "दुयस्स व दुवे समोयारो" त्ति – कालभाव – दुगस्स दव्व-खेत्तदुए समोतारः ॥१०११॥

कालो दव्वऽवतरती, जम्हा दव्वस्स सो तु पज्जाओ ।
भावो खेत्ते जम्हा, ओवासादीसु य ममत्तं ॥१०१२॥

कालो दव्वे समोतरति, जम्हा सो दव्वपज्जातो । एत्थ दव्वकालेसु चउभंगो भावेयव्वो । भावो खेत्ते समोतरति, जम्हा ओवासाइसु भावपडिबधो भवति । एत्थ वि खेत्तभावेसु चउभंगो भावेयव्वो ।

खेत्तकालचउभगे इमा भावणा –

तम्मि य खेत्ते मासातीतं वसति; पढमभंगो ;

चरिमं उडुवद्धितं जत्थ मासकप्पं ठिया तत्थेव वासं ठियाणं बितियभंगो।

अन्यकाल (ला) प्राप्तेरिति। अण्णं भागं पडिवसभं वा संकमंतस्स [1]सच्चेव भिक्खायरिया ततियभंगो। चतुर्थः शून्यः॥१०१२॥

जो दव्वणितितो सो इमे पडुच्च –

परिसाडिमपरिसाडी, संथाराहारदुविहमुवधिम्मि।
डगलग-सरक्ख-मल्लग, मत्तगमादीसु दव्वम्मि॥१०१३॥

संथारो दुविहो – परिसाडी अपरिसाडी य, आहारेंतेसु चेव कुलेसु गेण्हति, दुविहो य उवही – ओहितो उवग्गहितो य, पासवण-खेल-सण्णाणं तिण्णि मत्तया॥१०१३॥

कालदुगातीतादीणिं, संथारादीणि सेवमाणा उ।
एसो तु दव्वणितिओ, पुण्णेवंतो वहिं णेंतो॥१०१४॥

एते संथारगादिदव्वे कालदुगातीते अपरिहरतो णितितो भवति। सबाहिरियंसि वा खेत्ते अंतो मासकप्पे पुण्णे ते चेव संथारगादि बहिं णिंतो दव्वणितितो भण्णति॥१०१४॥

इदाणिं खेत्तणितितो –

ओवासे संथारे, विहार-उच्चार-वसधि-कुल-गामे।
णगरादि देसरज्जे, वसमाणो खित्ततो णितिए॥१०१५॥

संथारगो वासे।

अहवा – संथारो पृथक् परिगृह्यते, विहारो सज्झायभूमी, उच्चारो सन्नाभूमि, (वसति) कुलगामादी ण मुंच्चति, पुनः पुनः तेष्वेव विहरति। एस खेत्ते णितिओ॥१०१५॥

इदाणिं कालणितिओ –

चाउम्मासातीतं, वासाणुदुवद्ध मासतीतं वा।
वुड्ढावासातीतं, वसमाणे कालतोऽणितिते॥१०१६॥

उदुवासकालातीतं वसंतो कालणितिओ, वुड्ढणिमित्तं बहुकालेण वि णितिओ ण भवति वुड्ढकार्य-परिसमाप्तौ उपरिष्टाद्वसन् नितिओ भवति॥१०१६॥

इदाणिं भावणितिओ –

ओवासे संथारे, भत्ते पाणे परिग्गहे सड्ढे।
सेहेसु संथुएसु य, पडिवद्धे भावतो णितिए॥१०१७॥

जे सेहा ण तावत् प्रव्रजंति पूर्वापरेण संथवेण संथुताओ वासादिसु सव्वेसु रागं करेंतो भावपडिवद्धो भवति॥१०१७॥

---

[1] तत्थे

वसधी ण एरिसा खलु, होहिति अण्णत्थ णेव संथारे।
ण य भत्त मणुन्नविधि (विही) सड्ढा सेहादि वऽण्णत्थ ॥१०१८॥

अण्णत्थ एरिसा वसधी णत्थि त्ति रागं करेति। एवं सथारगभत्तपाणसड्ढसेहादिसु वि ॥१०१८॥

इदाणिं दव्व-खेत्त-काल-भावेसु पच्छित्तं भण्णति –

उक्कोसोवधिफलए, देसे रज्जे य वुड्ढवासे य।
लहुगा गुरुगा भावे, सेसे पणगं च लहुगो तु ॥१०१९॥

दव्वं पडुच्च उक्कोसोवहीए फलए य चउलहुआ। खेत्तं पडुच्च देसरज्जेसु चउलहुआ। कालं पडुच्च वासातीते वुड्ढवासातीते य चउलहुआ। रागेण भावे सव्वत्थ चउगुरुगा। संथारगवज्जेसु तणेसु डगल-छार-मल्लएसु य पणग। सेसेसु दव्वादिएसु प्रायसो मासलहुयं ॥१०१९॥

सुत्तणिवातो णितिए, चतुव्विधे मासियं जहिं लहुगं।
उच्चारितसरिसाइं, सेसाइं विगोवणट्ठाए ॥१०२०॥

चउव्विहे दव्वादिणियते जत्थ मासलहुं तत्थ सुत्तणिवातो। सेसा पच्छित्ता शिष्यस्य विकोवणट्ठा भणिता ॥१०२०॥

कारणओ पुण दव्वादि चउव्विहं पि णितियं वसेज्ज।

ते इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे।
गेलण्ण उत्तमट्ठे, चरित्तसज्झाइए असती ॥१०२१॥

वहिं असिवं वट्टति अतो कालदुगातीतं पि एगखेत्ते वसेज्ज, वहिं ओमरायदुट्ठबोहियभए वा आगाढे वसेज्ज। उत्तिमट्ठपडियरगा वा वसेज्ज, वहिया चरगादिसु चरित्तदोसा अतो वसेज्ज, वहिं वा सज्झातो ण सुज्झति, अतो सज्झायणिमित्तं वसेज्ज। असति वा वहिं मासकप्पपायोग्गाणं खित्ताणं तत्थेव वसे ॥१०२१॥

चोदगाह – एगखित्ते कालदुगातीतं वसमाणा कह सुद्धचरणा ?

आचार्याह –

एगक्खेत्तणिवासी, कालातिक्कंतचारिणो जति वि।
तह वि य विसुद्धचरणा, विसुद्धमालंबणं जेणं ॥१०२२॥

एगखेत्ते कालदुगातिक्कंतं पि वसमाणा तहावि णिरइयारा जतो विसुद्धालंबणावलबी, ज्ञानचरणाद्य वाऽऽलंबनम् ॥१०२२॥ किंच –

आणाए ऽमुक्कधुरा, गुणवड्ढी जेण णिज्जरा तेणं।
मुक्कधुरस्स मुणिणो, ण सोधी संविज्जति चरित्ते ॥१०२३॥

आण त्ति – तित्थकरवयणं, जहा तित्थकरवयणातो णितितं ण वसति, तहा तित्थकरवयणाओ चेव कारणा णियतं वसति। स एवं आणाए सजमे अमुक्कधुरो चेव। अमुक्कधुरस्स य णियमा णाणादिगुणपरिवुड्ढी,

जेण य तस्स गुणपरिवुड्ढी तेण णिज्जरा विउला भवति । जो पुण तप्पडिपक्खे वट्टति तस्स सोही चरित्तस्स ण विज्जति ॥१०२३॥

इदाणिं गतोऽप्यर्थः स्फुटतरः क्रियते –

गुणपरिवुड्ढिणिमित्तं, कालातीते ण होंति दोसा तु ।
जत्थ तु वहिता हाणी, हविज्ज तहियं न विहरेज्जा ॥१०२४॥

कालदुगातिक्रान्तं ज्ञानादिगुणपरिवृद्धिणिमित्तं वसतो न दोषः । जत्थ पुण बहिं विहरतो णाणादीणं हाणी हवेज्ज ण तत्थ विहरेज्ज इत्यर्थः ॥१०२४॥

जे भिक्खू पुरे संथवं पच्छा संथवं वा करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

"संथवो" थुती, अदत्ते दाणे पुव्वसथवो, दिण्णे पच्छासथवो । जो तं करेति सातिज्जति वा तस्स मासलहुं ।

अहवा – सयणे पुव्वपच्छसंथवं करेइ ।

अत्र निर्युक्तिमाह –

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य संथवो मुणेयव्वो ।
आत-पर-तदुभए वा, एक्केक्के सो पुणो दुविधो ॥१०२५॥

साहू आत्मसंस्तवं करोति, साहू परस्य संस्तव करोति, साहू उभयस्यापि संस्तवं करोति ।

अहवा – आत्मना सस्तवं करोती ति आत्मसंस्तवः । साहू गिहत्थ थुणति, एष आत्मस्तवः । गिहत्थो साधु थुणति एष परस्तवः । दो वि परोप्परं एष उभयस्तवः । एतेसिं एक्केक्को पुण दुविहो – संतासतो य ॥१०२५॥

दव्वे खेत्ते काले संथवो इमो –

दव्वे पुट्ठमपुट्ठो, परिहीणधणा तु पव्वयंती उ ।
खेत्ते कतरा खेत्ता, कम्मि वए ते दिक्खितो काले ॥१०२६॥

दव्वसंथवो परेण पुच्छितो "तुम सो ईसरो ?" आमं ति भणाति । सो पुण तहा संतो वा असतो वा पुच्छितो भणाति "अमुकणामधेयं तुमं इस्सरं ण याणसि तो एवं भणसि" परिहीणधणा "पव्वयंति" त्ति । परिहीणधणो दरिद्रेत्यर्थः । एवं परेण णिंदितो [1]समुत्तइतो परं णिभं काउं अप्पाणं पि थुणाति यथा भवानैश्वर्ययुक्तः तथा अहमप्यासी ।

खेत्तसंथवो–"कतरातो तुमं खेत्ततो पव्वतितो" एवं पुट्ठो भणति तुज्झ चेव सहदेसी, कुरुक्षेत्राद्वा ।

इदाणिं कालतो – कम्मि [2]वदे दिक्खितो । भणाति तुमं चेव सरिसव्वतोऽहं ।

अहवा – प्रथम वयंसि णिविट्ठो[3] णिविस्समाणो[4] वा ॥१०२६॥

१ गर्वितो (दे०) । २ वयसि । ३ उद्वाहिते सति प्रव्रजितः । ४ स्थापितविवाहदिने सति प्रव्रजितः ।

भावे सथवो दुविधो – सयणे वयणे य, सयणे ताव इमो ।

सयणे तस्स सरिसओ, आमं तुसिणीए पुच्छितो को वा ।
आउट्टणा णिमित्तं, वयणे आउट्टिओ वा वि ॥१०२७॥

केणइ पुच्छिओ "जो सो इंददत्तभाया पव्वइतो सो तुम सरिसो दीससि ।" सो भणाति – आमं, तुसिणीओ वा अच्छति । भणति वा – को एरिसाणि पुच्छति ।

इदाणिं वयणसंथवो – अदत्ते दाणे पुव्व करेति, आउट्टणाणिमित्त वरं मे [1]आउट्टिता इट्ठदाणं देहिति । दाणेण वा दत्तेण आराहितो पच्छा वयणसथवं करेति ॥१०२७॥ एस संखेवो भणितो ।

इदाणिं वित्थरो, संखेवभणियस्स वा इम वक्खाण ।

तत्थ दव्वसथवो इमो चउसट्ठिप्पगारो –

धण्णाइं रतणथावर, दुपद चतुप्पद तहेव कुवियं च ।
चउवीसं चउवीसं, तिय दुग दसहा अणेगविधं ॥१०२८॥

धण्णादियाणं कुविय-पज्जवसाणाण छण्ह पच्छद्धेण जहासखं संखा भणिता ॥१०२८॥

धण्णाइ चउव्वीसं, जव-गोहुम-सालि-वीहि-सट्ठिया ।
कोद्दव-अणया-कंगू, रालग-तिल-मुग्ग-मासा य ॥१०२९॥

बृहच्छिरा कंगू, अल्पतरशिरा रालक. ॥१०२९॥

अतसि हिरिमंथ तिपुड, णिप्फाव अलसिंदरा य मासा य ।
इक्खू मसूर तुवरी, कुलत्थ तह धाणग-कला य ॥१०३०॥

"अतसि" मालवे पसिद्धा, "हिरिमंथा" वट्टचणगा, "त्रिपुडा" लगवलगा, "णिप्फाव" चावल्ला अलिसिंदा" चवलगारा य, "मासा" पंडरचवलगा, "धाणगा" कुथुभरी, "कला" वट्टचणगा ॥१०३०॥

रयणाइ चतुव्वीसं, सुवण्ण-तवु-तंब-रयत-लोहाइं ।
सीसग-हिरण्ण-पासाण-वेरमणि-मोत्तिय-पवाले ॥१०३१॥

"रयतं" रुप्पं, "हिरण्णं" रूपका, "पाषाण" स्फटिकादयः, "मणी" सूरचन्द्रकान्तादयः ॥१०३१॥

संख-तिणिसागुलु चंदणाइं वत्थामिलाइं कट्ठाइं ।
तह दंत-चम्म-वाला, गंधा दव्वोसहाइं च ॥१०३२॥

"तिणिस" रुक्खकट्ठा, "अगलुं" अगरुं, यानि न म्लायन्ते शीघ्रं तानि अम्लातानि वस्त्राणि, "कट्ठा" शाकादिस्तंभा, "दन्ता" हस्त्यादीनां, "चम्मा" वग्घादीणं, "वाला" चमरीण, गधयुक्तिकृता गंधा, एकागं औषधं द्रव्यं । बहुद्रव्यसमुदायादौषधं ॥१०३२॥

---

१ आराधिताः ।

तिविधं थावरं –

भूमि-घर-तरुगणादि, तिविधं पुण थावरं समासेणं ।
चक्कारबद्धमाणुसदुविधं पुण होति दुपयं तु ॥१०३३॥

भूमी पक्खेल्ला, घरं खात्तोसियमुभयं, "तरुगणा" आम्रवणारामादि तिविधं, दुपदं दुविधं, रहादि अरगवद्धं, मानुषं च । दसविधं चउप्पदं ॥१०३२॥

गावी उट्टी महिसी, अय एलग आस आसतरगा य ।
घोडग गद्दभ हत्थी, चतुप्पदा होंति दसधा तु ॥१०३४॥

कुप्पोवकरणं णाणाविहं आसतरगा वेसरा –

णाणाविहं उवकरणलक्खण कुप्पं समामतो होति ।
चतुसट्ठिपडोगारा, एवं भणितो भवे अत्थो ॥१०३५॥

कुप्पोवकरणं "णाणाविहं" अणेगलक्खणं । तच्च कंसभंडं लोहभांडं ताम्रमयं मृन्मयादि च । २ ह्ल २ ह्ल, ३, २, १०, १ = एष सर्वोऽपि सपिंडितो चतुः षष्टिप्रकारोऽभिहितः ॥१०३५॥

आत्म-पर-सथवोपसंहार - णिमित्तमाह –

चउसट्ठिपगारेणं, जधेव अट्ठेण उवचितो सि त्ति ।
किं अप्पसंथवेणं, कतेण एमेव अह यं पि ॥१०३६॥

यथा त्वं चतुःषष्टिप्रकारेणोपपेतः तथाऽहमप्यासम्, किं चात्मसंस्तवेनेति ॥१०३६॥

इदाणिं खेत्तसंथवो –

तं अम्ह सहदेसी, एगग्गामेग-णगरवत्थव्वो ।
पुण्णाओ खेत्ताओ, अम्हे मो वच्चिमो व त्ति ॥१०३७॥

गिहिणा पुच्छितो, कम्मि देसे अज्जो ! उप्पण्णो ?, साहू भणति - कुरुखेत्ते । गिही भणाति अम्ह सहदेसी, एगगाम - णगर - उप्पण्णो । गिहिणा पुच्छिओ कहिं गम्मति - साहू भणति - कुरुखेत्ते ।.१०३७॥

जइ भणति लोइयं तू, पुण्णं खेत्तं तहिं भवे गुरुगा ।
अह आरुहतं अम्ह वि, जणजम्मादी तहिं लहुओ ॥१०३८॥

एवं जइ लोइयं पुण्णखेत्तं भणाति तो चउगुरुं । लोउत्तरे लहुओ ॥१०३८॥

इदाणिं कालसंथवो गिहिणा पुच्छिओ - कम्मि वए पव्वतिओ ? भणाति –

एवइयं मे जम्मं, परियाओ वा वि मज्झ एवतिओ ।
मयणसमत्थो णिविट्ठो, णिविस्समाणो पसूतो वा ॥१०३९॥

एवइओ मे जम्मो, पव्वज्जाए वा एवतितो, मयणसमत्थो वा पव्वइतो, "णिविट्ठो" परिणीओ "णिव्विसमाणो" विवाहदिणे ठविए, "पसूओ" पुत्तो जाओ ॥१०३९॥

इदाणिं भावसंथवो –

दुविधो उ भावसंथवो, संबंधी वयणसंथवो चेव ।
एक्केक्को वि य दुविधो, पुव्विं पच्छा व णातव्वो ॥१०४०॥

दुविहो भावसंथवो – वयणे सयणे य । पुण एक्केक्को दुविहो – पुव्वि पच्छा य ॥१०४०॥

सयणसंथवो इमो –

[1]मातपिता पुव्वसंथवो, सासू ससुरादियाण पच्छा तु ।
गिहिसंथवो संबंधं, करेति पुव्विं व पच्छा वा ॥१०४१॥

एतं पुव्वावरसंथवं दाणकालाओ पुव्विं वा पच्छा वा करेज्जा ॥१०४१॥

तं सयणसथवं [2]वयणाणुरूवं करेति ।

आतवयं च परवयं, णातुं संबंधए तदणुरूवं ।
मम एरिसया माया, ससा व सुण्हा व णत्तादी ॥१०४२॥

आयवयं परवयं च णाऊणं घडमाणं तदणुरूवं करेति । जारिसी तुमं, एरिसी मम माया "ससा" – भगिणी, पुत्तस्स पुत्तो णत्तुओ ॥१०४२॥

एत्थ इमे दोसा –

अद्धिति दिट्ठी पण्हय, पुच्छा कहणं ममेरिसी जणणी ।
थणखेवो संबंधो, विधवा सुण्हा य दाणं च ॥१०४३॥

साहू गहियभिक्खो वि अद्धितिं पुणो वि पण्हुत-णयणो अगारिं णिरिक्खमाणो पुच्छिओ भणति 'तुमे सरिसी मे माता, सा तुमे दट्ठु सुमरिया" । सा भणाति – अहं ते माता । एस मातीसंबंधो । तीसे य सुण्हा घरे विहवा अच्छति । ताहे संबंधं करेज । गिहत्थी वा साहु दट्ठु अधितिं करेति, साहुणा पुच्छिता भणति – तुमे सरिसओ मे पुत्तो घराओ णिग्गओ, तुमं दट्ठु मे सुमरितो" साहू भणति – अहं ते पुत्तो ; अहं वा सो । एव सव्वसयणसंथवेसु वत्तव्वं ॥१०४३॥

पच्छा संथवदोसा, सासू विधवादि धूतदाणं च ।
भज्जा ममेरिसि त्ति य, सज्जं घातो व भंगो वा ॥१०४४॥

सासूसंथवे विधवं धूतं ददाति । भज्जासथवे सज्जघात लभति । चरित्तभंगो वा भवति ॥१०४४॥

सयणसंथवे इमे अण्णे दोसा भवंति –

मायावी चडुयारो, अम्हं ओभावणं कुणति एसो ।
णिच्छुभणाती पंतो, करेज्ज भद्देसु पडिबंधो ॥१०४५॥

---

१ मातिपिति २० । २ वयाणु ।

अमायं मायमिति भणमाणो मायावी, भिक्खणिमित्तं वा चाडु करेति, ण णज्जति को वि दासादी मातिसंबंधं करेमाणो लोगे अम्हं ओभावणं करेति। पंतो रुट्ठो णिच्छुभणाति करेज्ज। भद्दो पुण पडिबंधं करेज्ज ॥१०४५॥

इदाणिं वयणसंथवो –

गुणसंथवेण पुव्विं, संतासंतेण जो थुणेज्जाहि ।
दातारमदिण्णम्मी, सो पुव्वो संथवो होति ॥१०४६॥

संतेण असतेण वा गुणेण जो दाणे अदिण्णे थुणति सो पुव्वसथवो ॥१०४६॥

सो पुण इमो –

सो एसो जस्स गुणा, वियरंति अवारिया दसदिसासु ।
इहरा कहासु सुणिमो, पच्चक्खं अज्ज दिट्ठो सि ॥१०४७॥

जाणंतो अजाणंतो य तस्समक्खं अण्णं पुच्छति सो एसो इंददत्तो। गिहत्थो भणति जो कयमो ? साहू भणति – जस्स दाणादिगुणा अणिवारिया वियरंति। "इहरा" इति अन्नाहनि प्रत्यक्षभावमुक्ता कहासु सुणिमो अज्जं पुण जणवयस्स देंतो पच्चक्ख दिट्ठोसि ॥१०४७॥

पच्छासंथवो पुण इमो –

गुणसंथरेण पच्छा, संतासंतेण जो थुणिज्जाहि ।
दातारं दिण्णम्मी, सो पच्छासंथवो होति ॥१०४८॥ कंठा

दाणदिण्णे इमो गुणसंथवो –

विमलीकतऽम्ह चक्खू, जधत्थतो विसरिता गुणा तुज्झं ।
आसि पुरा णे संका, [1]संपति णिस्संकितं जातं ॥१०४९॥

अज्ज तुमे दिट्ठे विमलीकयं चक्खू। जहत्थया य दाणादिगुणा विसरिया तुज्झं, पुरा दाणादिगुणेसु संका आसि, इदाणिं णिस्सकियं जायं ॥१०४९॥

पच्छित्तमियाणिं एतेसु –

सुत्तणिवातो णियमा, चतुव्विधे संथवम्मि संतम्मि ।
मोत्तूण सयणसंथव, तं सेवंतंमि आणादी ॥१०५०॥

सुत्तणिवातो दव्वादि चउव्विहे संथवे संतम्मि मासलहुं, मोत्तूण सयणसंथवं। सयणसंथवे पुण इमं पुरिस-संथवे चउलहुं, इत्थी-संथवे चउगुरुं। चउव्विहे वि दव्वातिए सथवे आणादिया दोसा ॥१०५०॥

कारणे पुण संथवं करेज्जा वि –

अधिकरणरायदुट्ठे, गेलण्णऽद्धाणसंभमभए वा ।
पुरिसित्थी संबंधे, समणाणं संजतीणं च ॥१०५१॥

---

1 इदाणिं।

इदमेवार्थं दर्शयन्नाह –

दोण्णेगतरे काले, जं खेत्ता खेत्तणंतरं गमणं।
एतं णिव्वाघातं, जति खेत्तातिक्कमे लहुगा ॥१०६२॥

"जति खेत्तातिक्कमे" ति णिक्कारणे जतिया मासकप्पपायोग्गा खेत्ता लंघेति तत्तिया चउलहुआ भवंति ॥१०६२॥

इदाणि वाघातेण मासकप्पपाओग्ग वोलेउं अण्णं खेत्त संकमइ, ण य दोसो, इमे य ते वाघायकारणा –

वाघाते असिवाती, उवधिस्स व कारणा व लेवस्स।
बहुगुणतरं च गच्छे, आयरियादी व आगाढे ॥१०६३॥

असिवगहियं खेत्तं वोलति। आदिसद्दाओ वा सज्झाओ तत्थ ण सुज्झति, उवही वा तत्थ ण लब्भति लेवो वा, अण्णतो अण्णम्मि लब्भति त्ति वोलति। गच्छे वा बहुगुणतरं, साणपडिणीया णत्थि, तिण्णि वा भिक्खावेलाओ अत्थित्ति, अतो वोलंति। आयरियादीण वा इह पाउग्गं णत्थि, अतो वोलंति। आगाढेहिं वा कारणेहिं वोलति ॥१०६३॥

ते च आगाढकारणा इमे –

दव्वे खेत्ते काले, भावे पुरिसे तिगिच्छ असहाए।
सत्तविहं आगाढं, णायव्वं आणुपुव्वीए ॥१०६४॥

दव्वं जोग्गं ण लब्भति, खेत्ते खलु खेत्तपडिणिमादीया।
कालम्मि ण रितुक्खमं, भावे गिलाणादीण णवि जोग्गं ॥१०६५॥

पुरिसो आयरियादी, तेसिं अजोग्गं तिगिच्छिगा णत्थि।
णत्थि सहाया व तहिं, आगाढं एव णातव्वं ॥१०६६॥

दव्वं स्वतन्त्रं अविरुद्धं जोग्ग ण लब्भति, खेत्ततो त अतीव खुल्लखेत्तं, कालतो तं अरितुक्खमं, भावे गिलाणादिजोग्गं ण लब्भति। पुरिसा आयरियमाती तेसिं तं अकारग खेत्तं। तिगिच्छा तत्थ वेज्जा णत्थि। 'असहाय" त्ति सहाया तत्थ णत्थि। सत्तविह आगाढकारणेण वोलेउं मासकप्पजोग्गं अण्णं गच्छंतीत्यर्थः ॥१०६६॥

एतेहिं कारणेहिं, एगदुगंतर-तिगंतरं वा वि।
संकममाणो खेत्तं, पुट्ठो वि जती ण ऽतिक्कमति ॥१०६७॥

कारणेण संकंतो पुट्ठो वि दोसेहिं ण दोसिल्लो भवति, यतो, यस्माद् तीर्थंकराज्ञा नातिक्रामंतीत्यर्थः ॥१०६७॥

णिक्कारणगमणंमि, जे च्चिय आलंबणा तु पडिकुट्ठा।
कज्जम्मि संकमंतो, तेहिं च्चिय सुद्धो जतणाए ॥१०६८॥

णिक्कारणगमणे जे आलंवणा आयरियादी पडिसिद्धा, कज्जे तेहिं चेव जयणाए संकमंतो सुज्झति - अपच्छित्ति भवति ॥१०६८॥

एत्थ जे कारणिया तेहिं अधिकारो, णिक्कारणिया गच्छता चेव लग्गति ।

एवं विहरताणं संथवो इमो –

कुलसंथवो तु तेसिं, गिहत्थधम्मे तहेव सामण्णे ।
एक्केक्को वि य दुविहो, पुव्विं पच्छा य णातव्वो ॥१०६९॥

तं कुलं सथुतं, संथुयं णाम लोगजत्ता परिचिय । गिहिधम्मे वा ठितस्स, सामण्णे वा ठितस्स । एक्केक्को दुविहो—गिहिधम्मे ठितस्स पुव्विं पच्छा वा, सामण्णे ठितस्स पुव्विं पच्छा वा ॥१०६९॥

अस्यैव व्याख्या –

अम्मा पितुमादी उ, पुव्वं गिहिसंथवो य णायव्वो ।
सासूसुसरादीओ, पच्छा गिहसंथवो होति ॥१०७०॥ कंठा

सामण्णे ठियस्स पुव्वि पच्छा संथुता इमे –

सामण्णे जे पुव्विं, दिट्ठा भट्ठा व परिचिता वा वि ।
ते हुंति पुव्वसंथुय, जे पच्छा एतरा होंति ॥१०७१॥

सामण्णप्रतिपत्तिकालात् पूर्वपश्चाद्वा ॥१०७१॥

अहवा सामण्णकाले चेव चिंतिज्जति ॥

अण्णया विहरंतेणं, संथुता पुव्वसंथुता ।
संपदं विहरंतेणं, संथुता पच्छसंथुता ॥१०७२॥

अतीतवर्तमानकाल प्रतीत्य भावयितव्यम् ॥१०७२॥

एतेसामण्णतरं, कुलम्मि जो पविसति अकालम्मि ।
अप्पत्तमतिक्कंते, सो पावति आणमादीणि ॥१०७३॥

एतेसिं पुव्वपच्छसंथुयकुलाणं अण्णतर कुल अपत्ते भिक्खाकाले, अतिक्कंते वा भिक्खाकाले पविसति, सो आणादि दोसे पावति ॥१०७३॥

दुविहविराहणा य । तत्थ संजमे इमा –

सड्ढी गिहि अण्णतित्थी, करेज्ज तं पासितुं अकालम्मि ।
उग्गमदोसेगतरं, खिप्पं से संजतट्ठाए ॥१०७४॥

सड्ढी श्रावकः, गिही अधाभद्रक, रत्तपडादि, पुव्वपच्छसंथुतो वा । एते अपर्याप्त काले पर्यटन्तं दृष्ट्वा उग्गमदोसेगतरं खिप्पं संजयट्ठाए करेज्ज ॥१०७४॥

कहं पुण उग्गमदोसा भवे ?

पुव्वपयावितमुदए, चाउलछुभणोदणो व पेज्जा वा ।
आसण्णपूवि सत्तुअ, कयण उच्छिण्ण समिमादी ॥१०७५॥

साधू आगमणकालातो पुव्व तत्तमुदग साहुणो आगते दट्ठुं तम्मि चेव तत्तोदए चाउले छुभेज्ज सिग्घं ओदणं पेज्जं वा, एवं कम्मं करेज्ज । आसण्ण पूवियघराओ वा पूवे किणेज्ज, सत्तू कूरं वा किणेज्जा । सव्वाणि वा उच्छिंदेज्जा पुव्वो सुअकणिकाए वा समितिमे करेज्ज ॥१०७५॥

कम्मं इमं । अतिक्कते –

एमेव अतिक्कंते, उग्गमादी तु संजमे दोसा ।
संकाइ दुविधकाले, कोई पदुट्ठो व ववरोवे ॥१०७६॥

पुव्वद्ध कंठ । दुविहकाले अपत्तमक्कते अकालेत्ति काउ सकति । तेणं चारिय मेहुणट्ठे वा दूतित्तणेण वा, पदुट्ठो ववरोवेज्ज वा हणेज्ज वा भत्तोवहिसेज्जाण वा वोच्छेय करेज्ज ॥१०७६॥

इदाणिं उपनयनिमित्तमाह –

अप्पत्तमइक्कंते, काले दोसा हवंति जम्हेते ।
तम्हा पत्ते काले, पविसिज्ज कुलं तहारूवं ॥१०७७॥

अप्पत्तमतिक्कते जम्हा पविसंते एते दोसे पावति तम्हा पत्ते भिक्खाकाले तहारूव कुलं पविसेज्ज । एए वि पत्तो तेसिं दरसाव ण देति, अन्नत्थ ठायति ॥१०७७॥

भवे कारण अवेलाए वि पविसेज्ज ।

बितियपदमणाभोगे, अतिक्कमंते तहेव गेलण्णे ।
असिवे ओमोदरिते, रायदुट्ठे भए व आगाढे ॥१०७८॥

अणाभोगो अन्नाल । सो साधू ण जाणइ एत्थ गामे मम पुव्वसथुता अत्थि, अतो पविसति ।

अहवा – सो वोलेउमणो सिग्घं दोसिणातिणिमित्तं पविसेज्ज । गिलाणस्स वा तेसु परं लब्भति तं च खीराति अतो पविसति । ओमे अपत्ते दोसीणणिमित्तं अप्फच्चितो वा अइक्कंते संथुयकुलेसु हिंडति । रायदुट्ठे मा दीसिहि ति तेण अकाले हिंडति । बोहिगादिभए वा दोसीणातिघेत्तुं णस्सति, णट्ठो वा उस्सूरमागतो गेण्हति ॥१०७८॥

अण्णत्थ वा आगाढे अणाभोगपविट्ठो इमं विहाणं करेति –

संथरमाणमजाणंतपविट्ठो कुणति तत्थ उवओगं ।
मा पुव्वुत्ते दोसे करेज्ज इहरा उ तुसिणीओ ॥१०७९॥

जति अजाणतो संथुयकुले पविट्ठो, जति य संथरति तो उवओगं करेति । पुव्वुत्तदोसपरिहणट्ठताए सजयट्ठा कीरत वारेति परिहरति वा । इहरा असंथरतो संजयट्ठा कीरतं दट्ठुं पि ण वारेति, तुसिणीओ अच्छति ॥१०७९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिए वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए णिक्खमति वा अणुपविसति वा णिक्खमंतं वा अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

अण्णतीर्थिकाश्चरक-परिव्राजक-शाक्याजीवक-वृद्धश्रावकप्रभृतय., गृहस्था-मरुगादि भिक्खायरा, परिहारिओ मूलुत्तरदोसे परिहरति ।

अहवा – मूलुत्तरगुणे धरेति आचरतीत्यर्थ. । तत्प्रतिपक्षभूतो अपरिहारी ते य अण्णतित्थियगिहत्था ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा गिहिणा अहवा वि अण्णतित्थीणं ।
परिहारियस्स अपरिहारिएण सद्धिं पविसिउं जे ॥१०८०॥

"सद्धिं" समानं युगपत् एकत्र ॥१०८०॥

आधाकम्मादीणिकाए सावज्जजोगकरणं च ।
परिहारित्तपरिहरं, अपरिहरंतो अपरिहारी ॥१०८१॥

षड्जीवनिकाए सावज्जं मनादियोगत्रयं करणत्रयं च ॥१०८१॥

गाहावतिकुलं अस्य व्याख्या –

गाह गिहं तस्स पती, उ गहपत्ती सुत्तपादे जधा वणिओ ।
पिंडपादे वि तधा, उभए सण्णातु सामयिगी ॥१०८२॥

गाह त्ति वा गिहंति वा एगट्ठं, तस्येति गृहस्य पतिः प्रभुः स्वामी गृहपतीत्यर्थः । दारमपत्यादि समुदाओ "कुलं पिंडवायपडियाए" त्ति अस्य व्याख्या "पिंडो" असणादी, गिहिणा दीयमाणस्स पिंडस्य पात्रे पातः अनया प्रज्ञया ॥१०८२॥

एत्थ दिट्ठंतो –

जहा वालंजुअ वणिउ वलंजं घेत्तुं गामं पविट्ठो । अण्णेण पुच्छिय किं णिमित्तं गामं पविट्ठोसि ? भणाति – सुत्तपायपडियाए वण्णपायपडियाए त्ति । तहेव पिंडवायपडियाए त्ति । किं च–इद सूत्रं लोग-लोगोत्तर उभयसंज्ञाप्रतिबद्धं किंचित् स्वसमयसंज्ञाप्रतिबद्धं भवति ।

"अणुपविसति" अस्य व्याख्या –

चरगादिणियट्टेसुं, पागेव कते तु पविसणं जं तु ।
तं होतणुप्पविसणं, अणुपच्छा जोगतो सिद्धं ॥१०८३॥

"अनु" पश्चाद्भावे, चरगादिसु सण्णियट्टेसु पच्छा पागकरणकालतो वा पच्छा । एवं अनुशब्दः पश्चाद्योगे सिद्धः ॥१०८३॥

एत्तो एगतरेणं, सहितो जो पविसती तु भिक्खस्स ।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥१०८४॥

गिहत्थेण समं अहिकरणं उप्पण्णं तस्स उवसमणट्ठताए, पुण पुव्व चउव्विहं पि दव्वातियं संतं करेति, पच्छा असंतं पि। एवं रायदुट्ठे वि उवसमणट्ठता। गिलाणोसहणिमित्तं वा, अद्धाणसंभमभएसु [1]संताणट्ठया वा, "पुरिसित्थि" त्ति एएहिं कारणेहिं संजताण संजतीण वा पुरिसित्थिसंबंधो भवेज्ज ॥१०५१॥

वय-सयणक्रमप्रदर्शनार्थं इदमाह –

वयसंथवसंतेणं, पुव्व थुणे पुरिससंथवेण ततो।
तो णातित्थिगतेण व, भोइयवज्जं च इतरेणं ॥१०५२॥

पुव्विं वयसंथवेण संतेणं, पच्छा पुरिससथवेण पुव्वावरेण संतेणं, तो पच्छा णातित्थिगतेणं सतेणं, ततो भोइयवज्जं इतरेण पच्छासंथवेण सतेण, ततो पच्छा वयणादि असंतेण ॥१०५२॥

पुव्वे अवरे य पदे, एसेव गमो उ होइ समणीणं।
जह समणाणं गरुई, इत्थी तह तासिं पुरिसा तु ॥१०५३॥

संजतीणं एसेव गमो। जहा समणाणं इत्थी गरुगी तहा समणीणं पुरिसा [2]गुरुगा ॥१०५३॥

जे भिक्खू समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दुइज्जमाणे पुरे संथुयाणि वा पच्छा संथुयाणि वा कुलाइं पुव्वामेव भिक्खायरियाय अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

भिक्षुः पूर्ववत् समाणो नाम समधीनः अप्रवसितः। कोऽसौ वुड्ढावासः? वसमाणो उदुबद्धिए अट्ठमासे वासावास च णवमं, एयं णवविह विहारं विहरंतो वसमाणो भण्णति। अनु पश्चाद्भावे गामातो अण्णो गामो अणुगामो दोसु पाएसु सिसिरगिम्हेसु वा रीइज्जति त्ति। पुरे संथुता मातापितादी, पच्छासंथुता ससुराती, कुलशब्द· प्रत्येक, भिक्खाकालातो पुव्विं, अप्राप्ते भिक्खाकालेत्यर्थं.। अनुप्रवेशो पच्छा, भिक्खाकाले अतिक्रान्तेइत्यर्थं.। एवं अप्राप्ते अतिक्रान्ते च पविसंतं साइज्जति अनुमोदते, मासलहु से पच्छित्त। एस सुत्तत्थो।

इदाणिं णिज्जुत्तिवित्थरो –

समाणे वुड्ढवासी, वसमाणे णवविकप्पविहारी।
दूतिज्जंता दुविधा, णिक्कारणिया य कारणिया ॥१०५४॥

कारण-णिक्कारणे वक्ष्यति। शेष गतार्थमेव ॥१०५४॥

इमे णिक्कारणिया –

आयरियसाधुवंदण, चेतिय णीयल्लगा तहासण्णी।
गमणं च देसदंसण, णिक्कारणिए य वइगादि ॥१०५५॥

आयरियसाहुचेइयाण च वंदणणिमित्तं गच्छंति, सण्णीणं दंसणत्थ, भोयणवत्थाणि वा लभिस्संति गच्छति, अपुव्वदेसदंसणत्थं गच्छति, वजितादिसु वा खीराद्यं लभिस्सामि त्ति गच्छति ॥१०५५॥

---

१ संतानार्थं दीक्षार्हपुत्रदानार्थम्। २ चतुर्गुरुस्थानीयं प्रायश्चित्तम्।

आयरियमाह –

अप्पुव्व-विचित्त-बहुस्सुता य परिवारवं च आयरिया ।
परिवारवज्जसाहू, चेतियऽपुव्वा अभिणवा वा ॥१०५६॥

अपुव्वा मे आयरिया विचित्ता णिरतिचारचरित्ता बहुस्सुया विचित्तसुया य बहुसाहु - परिवुडा य, एरिसे आयरिए वंदामि । साहुस्स वि एते चेव गुणा। णवरं - परिवारो वज्जिज्जति। चेतिया चिरायतणा अपुव्वा य। अहवा अभिणवा कया ॥१०५६॥

दत्थी हामि व णीए, सण्णीसू य भोयणादि लब्भामो ।
देसो व मे अपुव्वो, वइगादिसु खीरमादीणि ॥१०५७॥ कंठा

णिक्कारणे विहरतस्स इमे दोसा –

अद्धाणे उव्वाता, भिक्खूवहि तेण साण पडिणीए ।
[1]ओमाण अभोज्जघरे, थंडिल्लऽसती य जे जं च ॥१०५८॥

अद्धाणे समो भवति, भिक्खा वसहिं ण लब्भति। उवहिसरीरतेणा भवति। साणपडिणीएसु खज्जए(अ) हंमए वा हिंडंताणं सपक्खपरपक्खोमाणं भवति। अभोज्जघरे पवयण - हीलणा भवति । असति थंडिल्लस्स पुढवी मादिजीवे विराहेति। जे दोसा, जं च एतेसु परितावणादिणिप्फण्णं पच्छित्तं, सव्वं उवउज्जिउ वक्तव्यम् ॥१०५८॥

संजमतो छक्काया, आत कंटट्ठिवातखुलगा य ।
उवधि अपेह हरावण, परिहाणी जा य तेण विणा ॥१०५९॥

णिक्कारणओ अडंतो छक्कायविराहणं कुणति । एस संजमविराधणा । कंटट्ठिहिं वा विज्झति, वातखुला वा भवंति, एस आयविराहणा सागारियभया परिस्सतो वा पमादेण वा उवहिं न पडिलेहेति, हरावेइ वा । उवहिम्मि अवहरिए य जातेण विणा परिहाणी तणअग्गिगहणसेवणादि जं करिस्सति तं सव्वं पच्छित्तं वत्तव्वं ॥१०५९॥

वेलातिक्कमपत्ता, अणेसणादातुरा तु जं सेवे ।
पडिणीयसाणमादी, पच्छाकम्मं च वेलम्मि ॥ १०६०

भिक्खावेला अतिक्कंतपत्ता अप्फवंता अणेसणं पि लेज्जा, तं णिप्फण्णं पच्छित्तं । पढमबितिएसु वा परीसहेसु आउरा जं सेवे तं णिप्फण्णं । पडिणीतेण हते साणेण वा खतिए आयविराहणाणिप्फण्णं । अवेले भिक्ख हिंडंतस्स पच्छाकम्मदोसा भवंति । संकातिया य दोसा तेणट्ठे मेहुणट्ठे वा भवति ॥१०६०॥

इदाणिं कारणिया भण्णंति –

कारणिए वि य दुविधे, णिव्वाघाते तहेव वाघाते ।
निव्वाघाते खेत्ता, संकंती दुविधकालम्मि ॥१०६१॥

कारणिओ दुविहो – णिव्वाघाते वाघाते य । तत्थ णिव्वाघाते इमो – उदुवासकप्पे वा वासा कप्पे वा समत्ते खेत्तातो खेत्तसंकंती ॥१०६१॥

---

१ ओमाण=अपमान ।

एत्तो एगतरेण गिहत्थेण वा अण्णतित्थिएण वा समं पविसंतस्स आणातिया दोसा आयसंजम-विराहणा ॥१०८४॥

ओभावणा पवयणे, अलद्धिमंता अदिण्णदाणा य।
जाणंति च अप्पाणं, वसंति वा सीसगणिवासं ॥१०८५॥

पडरंगादिएसु सद्धिं हिंडंतस्स पवयणोभावणा भवति। लोगो वयति पंडरंगादिपसायओ लभति। सय न लभति। असारप्रवचनप्रपन्नत्वात्।

अधवा लोगो वदति – अलद्धिमंता य परलोगे वा अदिण्णदाणा आत्मानं न विदति। सूद्रा इति पडरंगादिशिष्यत्वमभ्युपगता वसति, अतो एभिः सार्द्धं पर्यटन्ते। किं चान्यत् ॥१०८५॥

अधिकरणमंतराए, अचियत्ता संखडे पदोसे य।
एगस्सऽट्ठा दोण्हं, दोण्ह व अट्ठाए एगस्स ॥१०८६॥

गिही अयगोलसमाणो ण वट्टति भणितु एहि, णिसीद, तुयट्ट, वयाहि वा। भणतो अधिकरणं। गिहत्थो अलद्धी साहू लद्धी तो साहुस्स अंतराय, अह सजतो अलद्धी तो गिहत्थस्स अतरायं जेण सम हिंडति, दातारस्स वा अच्चियत्तं। किं मया समं हिंडसि त्ति अधिकरण भवे। असखडे उण पदुट्ठो अवस्स अगणिणा हिंडेज्ज, पंतावणादि वा करेज्ज, एगस्स गिहिणा णीणिओ दोण्ह वि देज्ज, तं चेव अंतराय अचियत्ताए सखडाती य साहुस्स करेज्ज, दातारस्स वा करेज्ज, उभयस्स वा कुज्जा। दोण्ह वा अट्ठा णीणिय एगस्स देज्ज, साहुस्स गिहत्थस्स वा ते चेव अतरातातो दोसा ॥१०८६॥

जतो भण्णति –

संजयपदोसगहवति, उभयपदोसे अणेगधा वा वि।
णट्ठे हित विस्सरिते, संकेगतरे उभयतो वा ॥१०८७॥

संजयगिहिउभयदोसा इति गतार्थं एव। 'अणेगहा व" त्ति अस्य व्याख्या – णट्ठे दुपदचतुप्पद अपए वा एतेसु चेव हडेसु वत्थादिएसु वा विसुमरिएसु साधु गिहिं वा एगतरं संकेज्ज उभयं वा। किह पुणाति सकेज्ज ? एते समणमाहणा परोप्परं विरुद्धा एगतो अडति, ण एते जे वा ते वा, णूण एते चोरा चारिया वा कामी वा, दुपयादि वा अवहडमेएहिं। जम्हा एते दोसा तम्हा गिहत्थऽण्णतित्थीहिं सम भिक्खाए ण पविसियव्वं ॥१०८ ॥

वितियपदेण कारणे पविसेज्जा वि जतो –

बितियपदमंचियंगी, रायदुट्ठो सहत्थगेलण्णे।
उवधीसरीरतेणग, पडिणीते साणमादीसु ॥१०८८॥

'अंचियं" दुब्भिक्खं। एतेसु अचियादिसु एतेहिं गिहत्थण्णतित्थीहिं सम भिक्खा लब्भति अण्णहा न लब्भति, अतो तेहिं समाण अडे। सो य जति अहाभद्दो णिमतेइ वा अहाभद्दएण पुण समाणं दो तिण्णि घरा अण्णहा ते चेव सखडादी। रायदुट्ठे सो रायवल्लभो गिलाणस्सोसह-पत्थभोयणाति सो दव्वावेति अण्णहा ण लब्भति। भिक्खायरिय वा वच्चतस्स उवहिसरीरतेणारक्खपडिणीयसाणे वा वारेति। आदिसद्दातो गोणसूयराती ॥१०८८॥

पविसतो पुण इमा विही –

पुव्वगते पुरओ वा, समगपविट्ठो व अण्णभावेणं ।
पच्छाकडादि मरुगादिणाति पच्छा कुलिंगीणं ॥१०८९॥

गिहत्थ अण्णतित्थिएसु पुव्वपविट्ठे सयं वा पुव्व पविट्ठो "अण्णभावे" त्ति एरिसं भावं दरिसति जेण ण णज्जति, जहा एतेण समाण हिंडति ।

अडतस्स य इमो विही –

पुव्व पच्छाकड-मरुएसु, तओ पच्छाकड-अण्णलिंगीसु, तओ अहाभद्दमरुएसु, तओ अहाभद्दमण्ण-लिंगिणा । अहाभद्दए वि एस चेव कमो ॥१०८९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिए वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा णिक्खमइ वा पविसइ वा; णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

सण्णावोसिरणं वियारभूमी, असज्झाए सज्झायभूमी जा सा विहारभूमी, मा उब्भामगपोरिसी भण्णति ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा गिहिणा अधवा वि अण्णतित्थीणं ।
परिहारियस्स ऽपरिहारिएण गंतुं वियाराए ॥१०९०॥ कंठा
एत्तो एगतरेणं सहितो जो गच्छती वियाराए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥१०९१॥ कंठा
वीयारभूमिदोसा, संका अपवत्तणं कुरुकुयाय ।
दव अप्पकलुसगंधे, असती व करेज्ज उड्डाहं ॥१०९२॥

वियारभूमीए पुरिसापातसंलोअदोसा । संकाए वा ण पवत्तति । अपवत्तंते य । [1]मुत्तणिरोहो०– गाहा । [2]अय. शल्या० श्लोकः । मट्टियाए बहुदवेण य कुरुकुया कारेयव्वा । एत्थ उच्छोलणउप्पीलणादी-दोसा । अह कुरुकुयं ण करेति उड्डाहो । अप्पेण वा दवेणं कलुसेण वा दवेणं णिल्लेवेंतं दट्ठु चउत्थ रसियादिणा वा गंधिल्लेण अभावे वा दवस्स अणिल्लेविते जणपुरओ उड्डाहं करेज्ज ॥१०९२॥

जम्हा एते दोसा तम्हा तेहिं सद्धिं ण गतव्वं । अववादपए पत्ते वच्चेज्ज –

वीयारभूमि असती, पडिणीए तेणसावतभए वा ।
रायदुट्ठे रोधग-जतणाए कप्पते गंतुं ॥१०९३॥

अण्णओ वियारभूमीए असति जतो ते गिहत्थअण्णत्थिया वट्टंति ततो वएज्जा जतो अणावातमसंलोअं तओ पडिनीततेणसावयवोधितदोसा अंतरे तत्थ वा थंडिल्ले गतस्स, अतो गिहत्थेहिं समं गच्छे, ते निवारेंति । रायदुट्ठे रायवल्लभेण समाणं गम्मइ । रोहए एगा चेव सण्णाभूमी, एरिसेहिं कारणेहिं जयणाए गम्मति ॥१०९३॥

१ बृह० उद्दे० ३ भा० गा० ४३८० ।

२ अय. शल्या महाराज !, अस्मिन् देहे प्रतिष्ठिता । वायु-मूत्र-पुरीषाणां, प्राप्तं वेगं न धारयेत् ॥

सा य इमा जयणा –

पच्छाकड-वत-दंसण-असंणि-गिहिए तहेव लिंगीसु ।
पुव्वमसोए सोए, पउरदवे मत्तकुरुया य ॥१०९४॥

पुव्वं पच्छाकडेसु गिहियाणुव्वएसु तेसु चेव दंसणसावएसु, ततो एसु चेव कुतित्थिएसु, ततो असण्णि-गिहत्थेसु, ततो कुलिंगिएसु अमण्णीसु सव्वासु, सव्वेसु पुव्वं असोयवादिसु, पच्छा सोयवादीसु, दूरं दूरेण परम्मुहो वेलं वज्जंतो पउरदवेणं मट्टियाए य कुरुकुयं करेंतो अदोसो ॥१०९४॥

एमेव विहारब्भी, दोसा उड्डंचगादिया बहुधा ।
असती पडिणीयादिसु, बितियं आगाढ-जोगिस्स ॥१०९५॥

विहारभूमीए वि प्रायसः एत एव दोषा, उड्डंचकादयश्च अधिकतरा, बहव· अन्ये उड्डंचका कुट्टिदा उड्डाहेंति वा वंदनादिसु । प्रत्यनीकादि द्वितीयपदं पूर्ववत् ।

चोदगो भणति – जत्थेत्तिया दोसा तत्थ तेहिं समाणं गंतु वितियपदेण वि सज्झाओ मा कीरउ ।

आयरियो भणति – आगाढजोगिस्स उद्देससमुद्देसादओ अवस्सं कायव्वा उवस्सए य असज्झाइयं वहिं पडिणीयादि अतो तेण समाणं गंतुं करेंतो सुद्धो ॥१०९५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जति; दूइज्जंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४२॥

ग्रामादन्यो ग्राम. ग्रामानुग्र.म । शेषः सूत्रार्थः पूर्ववत् ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा, परिहारिस्सा तु अपरिहारीणं ।
गिहिअण्णतित्थिएण व, गामणुगामं तु विहरित्ता ॥१०९६॥ कंठा

एत्तो एगतरेणं, सहितो दूइज्जति तु जे भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥१०९७॥

दुडु गतौ, "दूइज्जति" त्ति रीयति गच्छतीत्यर्थः । रीयमाणो तित्थकराणं आण भजेति । अणवत्थं करेति । मिच्छत्तं अण्णेसिं जणयति । आयसंजमविराधण पावति ॥१०९७॥

इमं च पुरिसविभागेण पच्छित्तं –

मासादी जा गुरुगा, मासो व विसेसिओ चउण्हं पि ।
एवं सुत्ते सुत्ते, आरुवणा होति सट्ठाणे ॥१०९८॥

अगीयत्थभिक्खुणो गीयत्थभिक्खुणो उवज्झायस्स आयरियस्स एतेसिं चउण्ह वि मासादि गुरुगत

अहवा – मासलहुं चेव कालविसेसियं ।

अहवा – अविसेसिय चेव मासलहु ।

चोदगाह – किं णिमित्तमिह सुत्ते पुरिसविभागेण पच्छित्तं दिण्णं ?

आचार्याह – सर्वसूत्रप्रदर्शनार्थं । सुत्ते सुत्ते पुरिसाण सट्ठाणपच्छित्त दट्ठव्व ॥१०९८॥

इमा संजमविराहणा –

संजतगतीए गमणं, ठाण-णिसीयणा तुअट्टणं वा वि ।
वीसमणादि यणेसु य, उच्चारादी अवीसत्था ॥१०९९॥

जहा संजओ सिग्घगतीए मदगतीए वा वच्चति तहा गिहत्थो वि तो अधिकरणं भवति । तण्हाछुहाए वा परिताविज्जति तं णिप्फण्णं । वीसमंतो सचित्तपुढवीकाए उद्धट्ठाणं निसीयणं तुयट्टणं वा करेति । भत्तपाणादियणे उच्चारपासवणेसु य सागारिउ त्ति काउ अवीसत्थो ॥१०९९॥

साहु-णिस्साए वा गच्छतो फलादि खाएज्जा अहिकरणं । साहू वा तस्स पुरओ वितियपदेण गेण्हेज्जा, परितावणाणिप्फण्ण पादपमज्जणादि वा करेज्जा, तत्थ वि सट्ठाण ।

अह करेति उड्डाहो । भाष्यकारेणैवायमर्थोउच्यते –

मासादी जा गुरुगा, भिक्खु वसभाभिसेग आयरिए ।
मासो विसेसिओ वा, चउण्ह वि चतुसु सुत्तेसु ॥११००॥

अत्थंडिलमेगतरे, ठाणादी खद्ध उवहि उड्डाहो ।
धरणणिसग्गे वातोभयस्स दोसा ऽपमज्जरओ ॥११०१॥

साहुणिस्साए गिहत्थो गिहत्थणिस्साए वा साहू अथंडिल्ले ठाएज्ज, खद्धोवहिणा भारदुदुह त्ति उड्डाहं करेति, धरणणिसग्गे वायकाइयसण्णाएण उभयहा दोसो, पमज्जंतस्स उड्डाहो अपमज्जंताण य विराहणा । जम्हा एते दोसा तम्हा ण गच्छेज्जा ॥११०१॥

वितियपदं अद्धाणे, मूढभयाणंतदुट्ठणट्ठे वा ।
उवधी सरीरतेणग, सावतभय दुल्लभपवेसो ॥११०२॥

अद्धाणे सत्थिएहिं समं वच्चति, पंथाओ वा मूढो दिसातो वा मूढो साहू-जाव-पधे उयरंति । पंथमयाणंतो वा जाणगेहिं सम गच्छेज्ज, रायदुट्ठे वा रायपुरिसेहिं सम गच्छे, बोधिकादिभया णट्ठो वा तेहिं समाण णिद्दोसो हवेज्ज, तेणगभए वा गच्छे, सावयभए वा अणम्मि वा गरदेसरज्जे दुल्लभपवेसे तेहिं समं पविसेज्ज, अण्णहा ण लब्भति ॥११०२॥

जत्थ पुण नगरादिसु विहरति तत्थ अच्छतो णिततो भवति ।

तेहिं समाणं गच्छतो इमा जयणा –

णिब्भए पिट्ठतो गमणं, वीसमणादी पदा तु अण्णत्थ ।
सावत-सरीर-तेणग-भएसु तिट्ठाणभयणा तु ॥११०३॥

णिब्भए पिट्ठओ गच्छति, पिट्ठतो ठिता सव्व पमज्जणाति सामायारि पउजति, वीसमणाती पदा जति असंजतो थंडिले करेति तो संजया अण्णथंडिले ठायंति, तेण सावयभय जइ पिट्ठतो तो मज्झतो पुरतो वा गच्छंति ॥११०३॥

जे भिक्खू अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता पुप्फगं पुप्फगं आइयइ, कसायं कसायं परिट्ठवेइ; परिट्ठवेंतं वा सातिज्जंति ॥सू०॥४३॥

अन्यतरग्रहणात् अनेके पानका. प्रदर्शिता भवंति, खड-पानक-गुल-सक्करा-दालिम-मुद्दिता-[1]चिंचा-दिपाने जातग्रहणात् प्रासुक, पडीत्युपसर्गं । ग्रह आदाने, विधिपूर्वक गृहीत्वा, पुप्फं णाम अच्छ वण्णगंधरसफा-सेहिं पधाणं, कसायं स्पर्शादिप्रतिलोममप्रधानं कषायं कलुषं बहलमित्यर्थः । स्वसमयसंज्ञाप्रतिबद्धं इदं सूत्रम् । एवं करेंतस्स मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

अहुणा णिज्जुत्ती –

जं गंधरसोवेतं, अच्छं व दवं तु तं भवे पुप्फं ।
जं दुब्भिगंधमरसं, कलुसं वा तं भवे कसायं ॥११०४॥ कंठा

घेत्तूण दोण्णि वि दवे, पत्तेयं अहव एक्कतो चेव ।
जे पुप्फमादिइत्ता, कुज्ज कसाए विगिंचणतं ॥११०५॥

दोण्णि वि पुप्फ कसायं च एगम्मि व भायणे पत्तेगेसु वा भायणेसु [2]पुप्फमाइत्ता कसाय-परिट्ठवणं करेज्ज तस्स मासलहु ॥११०५॥

इमे दोसे पावेज्ज –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, पुव्व कसाए तरं पच्छा ॥११०६॥

आयसंजमविराहणा-पुव्वं कसायं पिवे, इतरं पुप्फं पच्छा ॥११०६॥

जो पुप्फ पुव्विं पिवे कसायं परिट्ठवेति तस्सिमे दोसा –

तम्मि य गिद्धो अण्णं, णेच्छे अलभंतो एसणं पेल्ले ।
परिठाविते य [3]कूडं, तराण संगामदिट्ठंतो ॥११०७॥

अच्छदवे गिद्धो अण्णं कसायं णेच्छति पातु, तं कसाय परिट्ठवेतु पुणो हिंडंतस्स सुत्तादिपलिमथो । अच्छं अलभंतो वा एसणं पेल्लेज्ज आयविराहणातिता य बहुदोसा, कलुसे य परिट्ठविए कूडदोसो, जहा कूडे पाणिणो वज्झंति तहा तत्थ वि मच्छियाती पडिवज्झति, अण्णे य तत्थ बहवे पयंगाणि पतति । पिपीलिगाहि य ससज्जति । एवं बहु तमघातो दीसति ।

एत्थ संगामदिट्ठंतो – तत्थ कलुसे परिट्ठविए मच्छियाओ लग्गति, तेसिं घरकोइला धावति, तीए वि मज्जारी, मज्जारीए सुणगो, सुणगस्स वि अण्णो सुणगो, सुणगणिमित्तं सुणगसामिणो कलहेंति । एवं पक्खापक्खीए संगामो भवति ।

जम्हा एते दोसा तम्हा णो पुप्फं आदिए कसाय परिट्ठवेति ।

इमा सामायारी – वसहिपालो अच्छतो भिक्खागयसाहू आगमणं णाउं गच्छमासज्ज एक्कं दो तिण्णि वा भायणे उग्गाहति तो जो जहा साधुसंघाडगो आगच्छति तस्स तहा पाणभायणाउ अच्छतेसु भायणेसु परिग्गालेति । एवं अच्छं पुढो कज्जति कलुसं पि पुढो कज्जति । त कसायं भुत्ते वा अभुत्ते वा पुव्वं पिवति तम्मि णिट्ठिते पच्छा पुप्फ पिवंति ॥११०७॥

---

१ चिंचा=इमली । २ भक्षयित्वा । ३ जाल ।

पुप्फस्स इमे कारणा –

आयरियअभावित पाणगट्ठता पादपोसधुवणट्ठा ।
होंति य सुहं विवेगो, सुह आयमणं च सागरिए ॥११०८॥

आयरियस्स पाण-यतणा । एवं अभावियसेहस्स वि उत्तरकालं पाणट्ठता पायुपोसं अपानद्वारम्, एतेसिं धुवणट्ठा । उच्चरियस्स य सुहं विवेगो कज्जति । ण कूडाति दोसा भवंति । सागारिए य आयमणादि सुहं कज्जति ॥११०८॥

भाणस्स कप्पकरणं, दट्ठूणं बहि आयमंता वा ।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥११०९॥

अच्छं भायणकप्पकरणं भवति । बहुले पुण इमे दोसा – वसहीए बहिं चंकमणभूमीए वा बहिं आयमंते दट्ठु सागारिओ लोगमज्झे ओभावणं करेज्ज, सव्वपासडीणं इमे अहम्मतरा, असुचित्वात् । अग्गहणं वा करेज्ज सर्वलोगपाखंडधर्मातीता एते अग्राह्याः । अणादरो वा अग्गहणं । दुविहं वोच्छेद करेज्ज–तद्द्रव्याण्य-द्रव्ययो. । तद्द्रव्यं पानकं, अन्यद्रव्यं भक्तवस्त्रादि ।

अहवा – तस्य साधो·, अन्यस्य वा साधो , ॥११०९॥

अववाएण पुण परिट्ठवेंतो वि सुद्धो, जतो –

वितियपद दोण्णि वि बहू, मीसे व विगिंचणारिहं होज्जा ।
अविगिंचणारिहे वा, जवणिज्ज गिलाणमायरिए ॥१११०॥

दो वि बहू पुप्फं [1]कसायं वा णज्जति जहा अवस्सकायं परिट्ठविज्जति । जइ वि तं पिज्जति ताहे तं ण पिवति, पुप्फं पिवति । एस पत्तेयगहियाणं विही ।

अह मीसं गहियं, तत्थ गालिए पुप्फं बहुयं कसायं थोवं, ताहे तं परिट्ठविज्जति पुप्फं पिवति ।

अहवा – कसायं विगिंचणारिहं होज्जा अणेसणिज्जति, ताहे परिट्ठविज्जति ।

अहवा – अविगिंचणारिहं पि जं आयरियातीण जा(ज)वणिज्जं ण लभति । एवं परिट्ठवेंतो सुद्धो· ॥१११०॥

विगिंचणारिहस्स वक्खाण इमं –

जं होति अपेज्जं जं वऽणेसियं तं विगिंचणरिहं तु ।
विसकतमंतकतं वा, दव्वविरुद्धं कतं वा वि ॥११११॥

"अपेय" मज्जमांसरसादि, "अणेसणिय" उग्गमादि दोसजुत्तं ।

अहवा – अपेय इमं पच्छद्धेण विससंजुत्तं, वसीकरणादिमतेण वा अभिमतिय । दव्वविरुद्धं - जहा खीरविलाणं ॥११११॥

---

१ विचितुं ।

[1]जे भिक्खू अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता सुब्भिं सुब्भिं भुंजइ, दुब्भिं-दुब्भिं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

सुभं - सुब्भी, असुभ - दुब्भी, शेष पूर्ववत् ।

वण्णेण य गंधेण य, रसेण फासेण जं तु उववेतं ।
तं भोयणं तु सुब्भिं, तव्विवरीयं भवे दुब्भिं ॥१११२॥

जं भोयणं वण्णगंधरसफासेहिं सुभेहिं उववेतं त सुब्भि भण्णति, इतर दुब्भिं ॥१११२॥

अहवा –

रसालमवि दुग्गंधिं, भोयणं तु न पूइतं ।
सुगंधमरसालं पि, पूइयं तेण सुब्भि तु ॥१११३॥

रसेण उववेयं पि भोयणं दुब्भिगंध ण पूजितं दुब्भिमित्यर्थः । अरसालं पि भोयणं सुभगंधजुत्तं पूजितमित्यर्थ. ॥१११३॥

घेत्तूण भोयणदुगं, पत्तेयं अहव एक्कतो चेव ।
जे सुब्भिं भुंजित्ता, दुब्भिं तु विगंचणे कुज्जा ॥१११४॥

सुब्भि दुब्भि च भोयणं एक्कतो, पत्तेय वा घेत्तु जो साहू सुब्भिं भोच्चा दुब्भिं परिट्ठवेति तस्स मासलहुं ॥१११४॥

इमे य दोसा –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, दुब्भिं पुव्वेतरं पच्छा ॥१११५॥ कंठा

इमे य दोसा –

रसगेहि अधिक्खाए, अविधि सइंगालपक्कमे माया ।
लोभे एसणघातो, दिट्ठंतो अज्जमंगूहिं ॥१११६॥

'रसेसु गेही भवति । अण्णसाहूहिं तो अहिगं खायति । भोयण-पमाणतो अहिगं खायति । एगओ गहियस्स उद्धरित्तु सुभ खायति इतरं छड्डेति । कागसियालअखइयं० [2]कारग गाहा । एव अविही भवति ।

इंगालदोसो य भवति । रसगिद्धो गच्छे अ धितिं अलभंतो गच्छाओ पक्कमति अपक्रमतीत्यर्थः । मायी मंडलीए रसाल अलभंतो भिक्खागओ रसाल भोत्तुमागच्छति । "[3]भद्दक-भद्दकं भोच्चा विवण्णं विरसमाहारेत्यादि" । रसभोयणे लुद्धो एसणं पि पेल्लेति ।

एत्थ दिट्ठंतो –

अज्जमंगू आयरिया बहुस्सुया बहुपरिवारा मथुरं आगता । तत्थ सड्ढेहिं घरिज्जंति ता कालंतरेण ओसण्णा जाता । काल काऊण भवणवासी उववण्णो साहुपडिबोहणट्ठा आगओ । सरीरमहिमाए अद्धकताए

---

१ एतत् सूत्रम् (२-४४) मुद्रितसूत्रप्रतौ, (२-४३) सूत्रस्यांके वर्तते, च (२-४३) अंकतमं सूत्र (२-४४) सूत्रस्यांकेऽस्ति । २ नास्तीमा गाथा भाष्ये । ३ दश० अ० ५ उ० २ ।

जीहं णिल्लालेति । पुच्छिओ को भवं ? भणाति - अज्जमंगू हं । साधू सड्ढा य अणुसासिउं गतो। एते दोसा ।

पडिपक्खे अज्जसमुद्दा ।

ते रसगिद्धीए भीता एक्कतो सव्वं मेलेउं भुंजंति, तं च "[1]अरसं विरसं वा वि, सव्वं भुंजे ण छड्डए" । सूत्राभिहितं च कृतं भवति ॥१११६॥

"[2]रसगिहि" त्ति अस्य व्याख्या –

> सुब्भी दढग्गजीहो, णेच्छति [3]छातो वि भुंजिउं इतरं ।
> आवस्सयपरिहाणी, गोयरदीहो उ उज्झिमिया ॥१११७॥

"इतर" दुब्भिं, तं लभंतो वि सुब्भिं भत्तणिमित्तं दीह भिक्खायरियं अडति । सुत्तत्थमादिएसु - आवस्सएसु परिहाणी भवति । दुब्भियस्स "उज्झिमिया" परिट्ठावणिया ॥१११७॥

अधिक्खाए" त्ति अस्य व्याख्या–

> मणुण्णं भोयणज्जायं, भुंजंताण तु एकतो ।
> अधियं खायते जो उ, अहिक्खाए स वुच्चति ॥१११८॥

मनसो रुचितं मनोज्ञ, "भोअणं" असणं, जातमिति प्रकार – वाचकः, साधुभि. सार्द्धं भुजतः जो अधिकतरं खाए सो अधिक्खाओ भण्णए ॥१११८॥

जम्हा एते दोसा –

> तम्हा विधीए भुंजे, दिण्णम्मि गुरूण सेस रातिणितो ।
> भुयति करंबेऊणं, एवं समता तु सव्वेसिं ॥१११९॥

का पुण विही ? जाहे आयरियगिलाणबालवुड्ढआदेसमादियाणं उक्कट्ठियं पत्तेयगहियं वा दिण्णं सेसं मंडलिरातिणिओ सुब्भि दुब्भि दव्वाविरोहेण करंबेउं मंडलीए भुजति । एवं सव्वेसिं समता भवति । एवं पुव्वुत्ता दोसा परिहरिया भवति ॥१११९॥

कारणओ परिट्ठवेज्जा –

> वितियपदे दोण्णि वि बहू, मीसे व विगिंचणारिहं होज्जा ।
> अविगिंचणारिहे वा जवणिज्जगिलाणमायरिए ॥११२०॥

[4]पूर्ववत् कण्ठा ॥११२०॥

> जं होज्ज अभोज्जं जं, चऽणेसियं तं विगिंचणरिहं तु ।
> विसकयमंतकयं वा, दव्वविरुद्धं कतं वा वि ॥११२१॥

[5]पूर्ववत्। ११२१॥

जे भिक्खू मणुण्णं भोयणजायं पडिगाहेत्ता बहुपरियावन्नं सिया, अदूरे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया संता परिवसंति, ते

---

१ दश० अ० ५ उ० १-२ । २ भा० गा० १११६ । ३ छातो=बुभुक्षित. । ४ भा० गा० १११० । ५ भा० गा० ११११ ।

अणापुच्छिया अणिमंतिया परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा साति-ज्जति ॥सू०॥४५॥

जं चेव सुब्भिसुत्ते सुब्भिभोयणं वुत्त तं चेव मणुण्णं ।

अहवा – भुक्खत्तस्स पंत पि मणुण्णं भवति । अट्ठम - छट्ठ - चउत्थ - आयविलेगासणियाण [1]ओमच्छग परिहाणीए हिंडताणं असह्, सहूण जहाविधीए [2]दिण्णुच्चरिय । बहुणा प्रकारेण परित्यागमावन्नं बहुपरियावन्नं भण्णति । ण दूरे अदूरे आसण्णमित्यर्थ । "तत्थ" त्ति स्ववसधीए स्वग्रामे वा [3]सभुजंते संभोइया, समणुण्णा उज्जयविहारी ।

चोदगाह – संभोइयगहणातो चेव अपरिहारिगहणं सिद्धं, किं पुणो अपरिहारिगहणं ?

आचार्याह – चउभगे द्वितीयभंगे सातिचारपरिहरणार्थं । "संत" इति विद्यमान. ।

जं चेव सुब्भिसुत्ते, वुत्तं तं भोयणं मणुण्णं तु ।
अहवा वि [4]परिब्भुसितस्स मणुण्णं होतिं पंतं पि ॥११२२॥

"[5]परिब्भुसितो" बुभुक्षित. । शेषं गतार्थम् ॥११२२॥

आचार्यो विधिमाह –

जावतियं उवयुज्जति, तत्तियमेत्ते तु भोयणे गहणं ।
अतिरेगमणट्ठाए, गहणे आणादिणो दोसा ॥११२३॥

परिमाणतो जावतितं उवउजति तप्पमाणमेव घेत्तव्व । अतिरेग गेण्हते लोभदोसो, परिट्ठावणिय-दोसो य, आणाइणो य दोसा, संजमे पिपीलियादी मरंती, आयाए अतिबहुए भुत्ते विसूचियादी, तम्हा अतिप्पमाण ण घेत्तव्वं ॥११२३॥

चोदग आह –

तम्हा पमाणगहणे, परियावण्णं णिरत्थयं होती ।
अधवा परियावण्णं, पमाणगहणं ततो अजुतं ॥११२४॥

तस्मादिति जति प्पमाणजुत्तं घेत्तव्वं तो परियावण्णगहणं णो भवति, सुत्तं णिरत्थय । अह परियावण्णगहण तो पमाणगहणमजुत्त अत्थो णिरत्थतो ॥११२४॥

अह दोण्ह वि गहणं –

एवं उभयविरोधे, दो वि पया तू णिरत्थया होंति ।
जह हुंति ते सयत्था, तह सुण वोच्छं समासेणं ११२५॥

अहवा – दो वि पदा णिरत्थया ।

---

१ दे० = अधोमुख । २ दिण्णं सत् उच्चरित णाम उत्तीर्णं स्यात् । ३ तो जे ते (प्र०) । ४ कोपे परिब्भुसित । ५ परिज्झुसित (प्र०) परिज्भुसित (सा०) ।

आचार्याह – पच्छद्ध ॥११२५॥

आयरिए य गिलाणे, पाहुणए दुल्लभे सहसदाणे ।
पुव्वगहिते व पच्छा, अभत्तछंदो भवेज्जाहि ॥११२६॥

जत्थ सड्ढाइठवणा कुला णत्थि तत्थ पत्तेयं सव्वसघाडया आयरियस्स गेण्हति । तत्थ य आयरिओ एगएगसंघाडगाणीत गेण्हति, सेस परिट्ठावणिय भवति । एवं गिलाणस्स वि सव्वे संदिट्ठा सव्वेहिं गहियं । एवं पाहुणे वि ।

अहवा – को इ संघाडतो दुल्लभ-दव्वखीरातिणा णिमंतितो सहसा दातारेण भायणं महत भरियं । एवं अतिरित्तं ।

अहवा – भत्ते गहिए पच्छा अभत्तछंदो जातो । एवं वा अतिरेगं होज्ज ॥११२६॥

एतेहिं कारणेहिं, अतिरेगं होज्ज पज्जयावण्णं ।
तमणालोएत्ताणं, परिट्ठवेंताण आणादी ॥११२७॥

जं तुमे चोइय पज्जतावण्णं तमेतेहिं कारणेहिं हवेज्ज । तमेवं पज्जत्तावण्णं अणालोएत्ता अणिमंतेत्ता परिट्ठवेति तस्स आणादी मासलहुं च पच्छित्तं ॥११२७।

इमे य परिचत्ता –

वाला वुड्ढा सेहा, खमग-गिलाणा महोदरा एसा ।
सव्वे वि परिच्चत्ता, परिट्ठवेंतेण ऽणापुच्छा ॥११२८॥

वाला वुड्ढा ऽभिक्खछुहा पुणो वि जेमेज्ज, सेहा वा अभाविता पुणो वि जेमेज्जा, खमगो वा पारणगे पुणो जेमेज्ज, गिलाणस्स वा तं पाउग्ग, महोदरा वा मंडलीए ण [1]उवउट्टा जेमेज्जा, आदेसा वा तेहि आगता होज्ज, अद्धाणखिन्ना वा ण जिमिता पुणो जेमेज्ज । तत्थ अणापुच्छित्तुणं परिट्ठवेंतो एते सव्वे परिच्चत्ता ॥११०२८॥

इमं पच्छित्तं –

आयरिए य गिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमग-पाहुणए ।
गुरुगो य बाल-वुड्ढे, सेहे य महोयरे लहुओ ॥११२९॥

जति तेण भत्तेण विणा आयरिय-गिलाण-विराधणा भवति तो आणितस्स अणापुच्छा परिट्ठवेंतस्स चउगुरुगा, खमए पाहुणए य चउलहुगा, बाले वुड्ढे गुरुगो, सेहे महोदरे लहुओ ॥११२९॥

चोदग आह –

जदि तेसिं तेण विणा, आबाधा होज्ज तो भवे चत्ता ।
णीते वि हु परिभोगो, भइतो तम्हा अणेगंतो ॥११३०॥

---

१ उट्टा (प्र०) ।

"जति तेसिं" आयरियादीणं तेण भत्तेण विणा परितावणाती पीला हवेज्ज तो ते चत्ता हवेज्ज, जति णीए [1]परिभोगः स्यात्[2], तस्मादनेकान्तत्वात् तेषामानीयमानेनावश्यं दोष इत्यर्थः ॥११३०॥

आचार्याह –

भुंजंतु मा व समणा, आतविसुद्धीए णिज्जरा विउला ।
तम्हा छउमत्थेणं, णेयं अतिसेसिए भयणा ॥११३१॥

अभुक्तेऽपि साधुभि. आत्मविसुद्धचा नयतः विपुलो निर्जरालाभो भवत्येव । छद्मनि स्थित. – छद्मस्थ अनतिशयी तेनावश्यं नेयं । सातिसतो पुण जाणित्ता "भुंजइ" तो णेति, अण्णहा ण णेति ॥११३१॥

चोदग आह – आयविसुद्धीए अपरिभुजते कहं निर्जरा ?

आचार्यो दृष्टान्तमाह –

आतविसुद्धीए जती, अविहिंसा-परिणतो सति वहे वि ।
सुज्झति जतणाजुत्तो, अवहे वि हु लग्गति पमत्तो ॥११३२॥

यथा आत्मविशुद्धचा यतिः प्रव्रजित न हिंसा अहिंसा तद्भावपरिणत. यद्यपि प्राणिनं वाघयति तथापि प्राणातिपातफलेन न युज्यते, यतनायुक्तत्वात् । पमत्तो पुण भावस्य अविशुद्धत्वात् अवहंतो वि पाणातिपातफले लग्गति त्ति ॥११३२॥

दिट्ठंतोवसंहारमाह –

एमेव अगहितम्मि वि, णिज्जरलाभो तु होति समणस्स ।
अलसस्स सो ण जायति, तम्हा णेज्जा सति बलम्मि ॥११३३॥

अगहिते वि भत्तपाणे आयविसुद्धीओ णेंतस्स णिज्जरा विउला भवति । जो पुण अलसदोसजुत्तो तस्स सो णिज्जरालाभो ण भवति । तस्मान्निर्जरालाभार्थिना सति बले नेयं ॥११३३॥

तत्थिमो कमो भणति –

तम्हा आलोएज्जा, सक्खेते सालए इतरे पच्छा ।
खेत्तंतो अण्णगामे, खेत्तवहिं वा अवोच्चत्थं ॥११३४॥

"आलोएति" कहयति, "सक्खेते" स्वग्रामे, "सालए" स्वप्रतिश्रये जेट्ठिया संभोतिया ते भणाति – इमं भत्तं जइ अट्ठो मे तो घेप्पउ । जइ ते णेच्छंति ताहे अण्णे भणाति । "इतरे पच्छा" स्वग्रामे वा अण्णप्रतिश्रये, जति ते वि णेच्छंति ताहे सखेत्ते अण्णगामे, जति ते पि णेच्छति ताहे खेत्तवहि अण्णगामं कारणतो णिज्जति । एवं [3]अवोच्चत्थं णेति । कारणे अण्णसंभोतिएसु वि एस चेव कमो ॥११३४॥

उवक्कमकरणप्रतिषेवार्थम् –

आसण्णुवस्सए मोत्तुं, दूरत्थाणं तु जो णए ।
तस्स सव्वे व बालादी, परिच्चायविराधणा ॥११३५॥

---

१ भजितः स्यात् । २ तो प्रायश्चितमपि स्यात् प्र० । ३ अवोच्चत्थ=अव्यत्यय=अविपरीत ।

आसण्णे मोत्तुं जो दूरत्थाणं पक्खवाएण णेति तस्स सा चेव बालातिविराहणा पुव्वुत्ता ॥११३५॥

स्वजनममीकारप्रतिषेधार्थम् –

ण पमाणं गणो एत्थं, ण सीसो णेव णातत्तो ।
समणुण्णता पमाणं तु, कारणे वा विवज्जओ ॥११३६॥

मूलभेदो गणो, गच्छो वा गणो, सो अत्र प्रमाणं न भवति । मम सीसो मम स्वजन. इदमपि प्रमाणं न भवति । समणुण्णता संभोगो सोऽत्र प्रमाणं । कारणे पुण आसण्णे मोत्तु दूरे णेति, संभोतिए वा मोत्तुं अण्णसंभोतियाण वि णेति । तं पुण गिलाणाति कारणं बहुविहं ॥११३६॥

अववाएण अणेंतो सुद्धो –

वितियपद होज्जमणं, दूरद्धाणे सपच्चवाए य ।
कालो वाऽतिक्कमता, सुब्भी लंभे व तं दुब्भिं ॥११३७॥

"अप्पं" स्तोकं अणेंतो विसुद्धो, दूरं वा अद्धाणं दूरे आसण्णे वा सपच्चवाए ण णेति, जाव आदिच्चो अत्थमेति, तेहिं वा सुब्भिं लद्ध, तं च पारिट्ठावणियं दुब्भिं, एवमादिकारणेहिं अणेंतो विसुद्धो अपच्छित्ती ॥११३७॥

जे भिक्खू सागारियं पिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू सागारियं पिंडं गिण्हइ, गिण्हंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

सागारिओ सेज्जातरो, तस्सपिंडो ण भोत्तव्वो । जो भुजति तस्स मासलहु ।

सागारिउ त्ति को पुण, काहे वा कतिविधो व सो पिंडो ।
असेज्जतरो व काहे, परिहरितव्वो व सो कस्सा ॥११३८॥

दोसा वा के तस्सा, कारणजाते व कप्पते कम्हि ।
जतणाए वा काए, एगमणेगेसु घेत्तव्वो ॥११३९॥

एताओ दारगाहाओ

"[1]सागारिउ" त्ति अस्य व्याख्या –

सागारियस्स णामा, एगट्ठा णाणवंजणा पंच ।
सागारिय सेज्जायर, दाता य[2] धरे तरे वा वि ॥११४०॥

एगट्ठा एकार्थ-प्रतिपादका शक्रेन्द्रपुरन्दरादिवत् । "वजणा" अक्खरा ते णाणाप्पगारा जेसिं अभिधाणाणं ते अभिधाणा णाणावंजणा, जहा – घडो पडो । एते पच पश्चार्द्धेनाभिहिता ॥११४०॥

(१) क. पुनः सागारिको भवतीति चिन्तनीयम् ।

(२) कदा वा स शय्यातरो भवति ।

(३) कतिविधो वा "से" तस्स पिंड ।

१ सागारिकपदमेकार्थिकनामभिः प्ररूपणीयम् । २ तरे घरे चेव – बृहत्कल्पे उद्दे० २ भाष्यगाथा ३५२१ ।

(४) अशय्यातरो वा कदा भवति ।

(५) कस्य वा संयतस्य संबंधी स सागारिकः परिहर्तव्यः ।

(६) के वा तस्य सागारिकपिण्डस्य ग्रहणे दोषाः ।

(७) कस्मिन् वा कारणे जाते असौ कल्पते ।

(८) कया वा यतनया सपिण्ड. ।

(९) एकस्मिन् वा सागारिके अनेकेषु द्वित्र्यादिषु सागारिकेषु ग्रहीतव्यः ।

इति द्वारगाथाद्वयसमासार्थः ।

सागारिय – सेज्जाकर-दातारा तिण्णि वि जुगवं वक्खाणेति –

अगमकरणादगारं, तस्स हु जोगेण होति सागारी ।
सेज्जा करणा सेज्जाकरो उ दाता तु तद्दाणा ॥११४१॥

"अगमा" रुक्खा, तेहिं कतं "अगारं" घर, तेण सह जस्स जोगो सो सागारिउ त्ति भण्णति । जम्हा सो सिज्जं करेति तम्हा सो सिज्जाकरो भण्णति । जम्हा सो साहूण सेज्जं ददाति तेण भण्णति सेज्जादाता ॥११४१॥

इदाणिं "धरेति" त्ति –

जम्हा धरेति सेज्जं, पडमाणीं छज्ज-लेप्पमादीहिं ।
जं वा तीए धरेती, णरगा आयं धरो तेणं ॥११४२॥

जम्हा सेज्जं पडमाणिं छज्ज-लेप्पमादीहिं धरेति तम्हा सेज्जाधरो ।

अहवा – सेज्जादाणपाहण्णतो अप्पाणं णरकादिसु पडत धरेति त्ति तम्हा सेज्जाधरो ॥११४२॥

इदाणिं "तरे" त्ति–

गोवाइतूणं वसधिं, तत्थ ठिते यावि रक्खितुं तरती ।
तद्दाणेण भवोघं, तरति सेज्जातरो तम्हा ॥११४३॥

सेज्जाए संरक्खणं संगोवणं, जेण तरति काउं तेण सेज्जातरो ।

अहवा – तत्थ वसहीए साहुणो ठिता ते वि सारक्खिउं तरति, तेण सेज्जादाणेण भवसमुद्दं तरति त्ति सिज्जातरो ॥११४३॥ सेज्जातरो त्ति दार गत ।

इदाणिं "[1]को पुण त्ति" दारं –

सेज्जातरो पभू वा, पभुसंदिट्ठो व होति कातव्वो ।
एगमणेगो व पभू, पहुसंदिट्ठो वि एमेव ॥११४४॥

को सेज्जातरो पहू, सो दुविहो–पभू वा पभुसंदिट्ठो वा । पहू एगो अणेगे वा । पहुसदिट्ठो एगो अणेगा वा ॥११४४॥

---

१ भा० गा० ११३८ ।

सागारियसंदिट्ठे, एगमणेगे चतुक्कभयणा तु ।
एगमणेगा वज्जा, णेगेसु तु ठावए एक्कं ॥११४५॥

एत्थ संदिस्संतए य संदिट्ठेसु य चउरो भगा । १ एक्को पहू एक्कं संदिसति । २ एगो पहू अणेगे संदिसति । एवं चउभंगो । एगो वा सेज्जातरो अणेगा वा सेज्जातरा वज्जेयव्वा । अववाए अणेगेसु ठावए एगं । एतं उवरि वक्खमाणं ॥११४५॥ 'को पुण" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]काहे त्ति" –

अणुण्णवितउग्गहंऽगण - पाउग्गाणुण्ण अइगए ठविए ।
सिज्जाय भिक्ख भुत्ते, णिक्खित्ताऽऽवासए एक्के ॥११४६॥

एत्थ णेगमणय-पक्खासिता आहु ।

एक्को भणति – अणुण्णविए उवस्सए सागारिओ भवति ।

अण्णो भणति – जता सागारियस्स उग्गह पविट्ठा ।

अण्णो भणति – जता अगण पविट्ठा ।

अण्णो भणति – जता पाउग्गं तणडगलादि अणुण्णवित ।

अण्णो भणति – जता वसहिं [2]पविट्ठा

अण्णो भणति – जदा दोद्धियादिभडयं दाणाति कुलट्ठवणाए वा ठवियाए ।

अण्णो भणति – जता सज्झाय आढत्ता काउं ।

अण्णो भणति – जता उवओगं काउं भिक्खाए गता ।

अण्णो भणति – जता भुंजिउमारद्धा ।

अण्णो भणति – भायणेसु निक्खित्तेसु ।

अण्णो भणति – जता देवसियं आवस्सयं कत । एकशब्द प्रत्येक योज्य ॥११४६॥

पढमे वितिए ततिए, चउत्थ जामम्मि होति वाघातो ।
णिव्वाघाते भयणा, सो वा इतरो व उभयं वा ॥११४७॥

अण्णो भणति – रातीए पढमे जामे गते ।

अण्णो भणति – वितिए ।

अण्णो भणति – ततिए ।

अण्णो भणति – चउत्थे ।

आयरियो भणति – सव्वे एते अणादेसा एव होंति । "वाघातो" त्ति "अणुण्णवितउग्गहऽगणादिसु-जाव-णिक्खित्तेसु" दिवसतो चेव । वाघाएण अण्णं वसहिं अण्णं वा खेत्त गताण सो कस्स सागारिओ भवति ?

१ गा० ११३८ । २ अइगया ।

आवस्सगादिएसु रातो पढम-वितिय-ततिय चउत्थजामेसु तव्वसहिवाघाएण बोहितातिं भएसु य तत्थ अवसतो ण सागारिओ भवतीत्यतः सर्वे अनादेशा इत्यर्थः। "णिव्वाघाए भएण" त्ति जति ण गता णिव्वाधाएण, रत्तिं तत्थेव वुत्था, तो भयणा, सो वा सेज्जायरो, इतरो वा अण्णो उभय वा ॥११४७॥

"[1]सो वा इतरो व" त्ति अस्य व्याख्या –

जति जग्गंति सुविहिता, करेंति आवासगं तु अण्णत्थ ।
सेज्जातरो ण होति, सुत्ते व कते व सो होति ॥११४८॥

'यदि' इत्यभ्युपगमे, रातीए चउरो वि पहरे जग्गंति, सोभणविहिता "सुविहिता" साधव इत्यर्थः। अहोरत्तस्स चरमावस्सगं अण्णत्थ गतु करेंति स सेज्जातरो न भवति। जत्थ राउ ट्ठिता तत्थेव सुत्ता तत्थेव चरिमावस्सय कयं तो सेज्जातरो भवति ॥११४८॥

"[2]उभयं वा" अस्य व्याख्या –

अण्णत्थ वसीऊणं, आवासग चरिममण्णहिं तु करे ।
दोण्णि वि तरा भवंती, सत्थादिसु अण्णहा भयणा ॥११४६॥

अण्णत्थ वसिउ चरिउ आवस्सयं जदि करेंति अण्णत्थ तो दो वि सेज्जातरा भवति। इद च प्रायस. सार्थादिषु संभवति "अण्णह" त्ति गामादिसु वसतस्स भयणा ॥११४६॥

सेज्जायरस्स सा य भयणा इमा –

असति वसधी य वीसुं, वसमाणाणं तरा तु भइतव्वा ।
तत्थ ऽण्णत्थ व वासे, छत्तच्छायं च वज्जेंति ॥११५०॥

जत्थ संकुडा वसही ण सव्वे साहवो मायंति तत्थ वीसुं अण्णवसहीए अद्धतिभागादि आगच्छति। एवं वसमाणाणं सेज्जातरा भइयव्वा। सा य भयणा इमा – जे [3]सुए आगता ते जति तत्थेव कल्लदिणे सुत्तपोरिसिं काउं आगच्छति तो दो वि सेज्जायरा। अह मूलवसहिं आगम्म करेंति तो सेज्जातरो ण भवति। लाटाचार्याभिप्रायात् तत्थ वा अण्णत्थ वा वसतु। "छत्तो" आयरिओ, तस्स छायं वज्जेंति – जत्थायरिओ वसति स सेज्जायरो वज्जो। सेसा असेज्जातरा ॥११५०॥ "काहे" त्ति दारं गतं।

इदाणिं "कतिविहो व सो पिंडो त्ति"–

दुविह चउव्विह छव्विह, अट्ठविहो होति बारसविधो वा ।
सेज्जातरस्स पिंडो, तव्वतिरित्तो अपिंडो उ ॥११५१॥

दुविह चउव्विह छव्विह च एगगाहाए वक्खाणेति –

आधारोवधि दुविधो, विदु अण्ण पाण ओहुवग्गहिओ ।
असणादि चउरो ओहे, उवग्गहे छव्विधो एसो ॥११५२॥

आहारो उवकरण च एस दुविहो। वे दुया चउरो त्ति, सो इमो – अण्णं पाण ओहिय उवग्गहिय च। असणादि चउरो ओहिए उवग्गहिए य, एसो छव्विहो ॥११५२॥

---

१ गा० ११४७। २ गा० ११४७। ३ अ दिने। ४ गा० ११३८।

इमो अट्ठविहो –

असणे पाणे वत्थे, पाते सूयादिगा य चउरट्ठा ।
असणादी वत्थादी, सूयादि चउक्कगा तिण्णि ॥११५३॥

असणे पाणे वत्थे पादे, सुती आदि जेसिं ते सूतीयादिगा – सूती पिप्पलगो नखरदनी कण्णसोहणयं । इमो बारसविहो – असणाइया चत्तारि, वत्थाइया चत्तारि, सूतियादिया चत्तारि, एते तिण्णि चउक्का बारस भवंति ॥११५३॥

इमो पुणो ग्रपिंडो –

तण-डगल-छार-मल्लग, सेज्जा-संथार-पीढ-लेवादी ।
सेज्जातरपिंडेसो, ण होति सेहोव सोवधि उ ॥११५४॥

लेवादी, आदिसद्दातो कुडमुहादी, एसो सव्वो सेज्जातरपिंडो ण भवति । जति सेज्जायस्स पुत्तो धूया वा वत्थपायसहिता पव्वएज्जा सो सेज्जातरपिंडो ण भवति ॥११५४॥

इदाणिं "असेज्जातरो व काहे" त्ति दारं –

आपुच्छित-उग्गाहित, वसधीतो णिग्गहोग्गहे एगो ।
पढमादी जा दिवसं, वुच्छे वज्जेज्जऽहोरत्तं ॥११५५॥

एत्थ नैगमनय-पक्षाश्रिता आहुः ।

एगो भणति – जदा खेत्तपडिलेहएसु गएसु आयरिएणं अण्णोवदेसेण पुच्छितो भवति ।

[1]उच्छू वोलति त्ति गाहा ।

तदा असेज्जातरो भवति ।

अण्णो भणति – णिग्गंतुकामेहि उग्गाहिएहिं असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – वसहीओ जाहे णिग्गता ।

अण्णो भणति – सेज्जायरोग्गहातो जाहे णिग्गता । एगशब्दः प्रत्येकं । "पढमाति जाव दिवसं" ति – अणुग्गए सूरिए णिग्गता सूरोदयाओ असेज्जातरांमच्छति ।

अण्णो भणति – सूरुग्गमे णिग्गताण जाव पढमपहरो ताव सेज्जातरो बितियाइसु असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव दो जामा ताव सेज्जातरो, परतो असज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव तिण्णि जामा ताव सेज्जातरो परतो असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव दिवसं ताव सेज्जातरो परतो असेज्जातरो भवति ।

पढमाति जाव दिवसं अस्य व्याख्या "वुच्छे वज्जेज्जा" येनोक्तं "पढमपोरिसीए सूरोदयाओ आरब्भ-जाव-चउत्थो पहरो ताव ण कप्पति परतो रातीए अचिंता" ।

अस्माकं आचार्याह – कुत एतत् ?

---

[1] उच्छू वोलंति वइं, तुंबीओ जायपुत्तभंडाओ ।
वसभा जायत्थामा, गामा पव्वाय चिक्खल्ला ॥ वृह० उ० १ भा० गा० १५३६ ।

चोदगाह –

अग्गहणं जेण णिसिं, अणंतरेगंतरा दुहिं च ततो ।
गहणं तु पोरिसीहिं, चोदग ! एते अणाएसा ॥११५६॥

यस्मात् रात्रौ अग्रहणं अस्माकं तस्मादचिंता । अणंतर-एगंतर-दुअतरपोरिसीहिं जे गहणमिच्छंति एते सव्वे एवंवादी ।

अहवा – अन्यथाऽभिधीयते "आपुच्छियउग्गाहिय वसहीओ णिग्गतोग्गहे" जंति गमणविग्घमुप्पण्णं ठिएसु य कह असेज्जातरो भवति ? जे पुण पढमादि पहरविहागेण असेज्जातरमिच्छति तेसिं सूरत्थमणविणिग्गयाण ।

आचार्याह – चोदक ! एते सव्वे अणाएसा, इमो आदेसो वुच्छे—वज्जेज्जऽहोरत्त, ण पहरविभाग-परिकप्पणाए विसेसो को वि अत्थि ।

जतो भणति "[1]अग्गह" –

आचार्याह – अतो जेण अणंतर-एगतर-दुअंतराहिं पोरिसीहिं गहणमिच्छति । हे चोदक ! अस्मात् कारणा एते सर्वे अनादेशा । एतं आयरियवयण ।

इमो आएसो – जावतिएण असेज्जातरो भवति । जहण्णेण चउजामेहिं गतेहिं उक्कोसेण बारसहिं । कह चउरो जामा ? सूरत्थमणवेलाए दिवसतो णिग्गताणं रयणीए चउरो जामा । सूरुग्गमे असेज्जातरो गत ॥११५६॥

सूरत्थमणम्मि तु णिग्गताण दोण्ह रयणीण अट्ठ भवे ।
देवसिय मज्झ चउरो, दिणणिग्गत बितिय सा वेला ॥११५७॥

उक्कोसेण इम – ण सूरत्थमणे राओ णिग्गता रातीए चउरो जामा, पभाए दिवसस्स चत्तारि जामा, बीयरातिए चत्तारि, एव बारसण्ह जामाणं अते उक्कोसेण असेज्जातरो । एस एक्को आदेसो ।

इमो बितिओ "वुच्छे वज्जेज्ज अहोरत्तं" ति अस्य व्याख्या – "दिणणिग्गय बितिय सा वेला" । सूरुदए दिवसतो णिग्गता बितिय – दिवसे ताए चेव वेलाए असेज्जातरो, एव अहोरत्तं वज्जियं भवति । असेज्जातरो व काहे त्ति दार गय ॥११५७॥

इदाणिं "[2]परिहरियव्वो व सो कस्से" ति दारं –

लिंगत्थस तु वज्जो, तं परिहरतो व भुंजतो वा वि ।
जुत्तस्स अजुत्तस्स व, रसावणो तत्थ दिट्ठंतो ॥११५८॥

साधुगुणवज्जिओ जो लिग धरेति तस्स जो सेज्जातरो तस्स पिंड सो भुंजउ, मा वा भुंजउ तहावि वज्जो ।

चोदगो भणति – साहुगुणेहि अजुत्तस्स कम्हा परिहरिज्जिइ ?

आयरिओ भणइ – साहुगुणेहिं जुत्तस्स वा अजुत्तस्स वा वज्जणिज्जो ।

---

१ भा० गा० ११५६ । २ गा० ११३८ ।

एत्थ दिट्ठंतो "रसावणो" रसावणो नाम मज्जावणो। मरहट्ठविसए रसावणे मज्ज भवतु मा वा भवतु तहावि तत्थ ज्झयो बज्झति, त ज्झय दट्ठु सव्वे भिक्खायरियादी परिहरंति "अभोज्जमि" ति काउं। एवं अम्ह वि साधुगुणेहिं जुत्तो वा अजुत्तो वा भवति, रयहरण ज्झओ जतो दीसति त्ति काउ परिहरंति दार ॥११५८॥

"[1]दोसा वा के तस्स" त्ति दार -

तित्थंकरपडिकुट्ठो, आणा-अण्णाय-उग्गमो ण सुज्झे।
अविमुत्ति अलाघवता, दुल्लभ सेज्जा य वोच्छेदो ॥११५९॥

"तित्थकरपडिकुट्ठो त्ति" अस्य व्याख्या - तित्थगरा ऋषभादय. तेहिं पडिकुट्ठो प्रतिषिद्ध ॥११५९॥

पुर-पच्छिमवज्जेहिं, अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं।
भुत्तं विदेहएहि य, ण य सागरियस्स पिंडो तु ॥११६०॥

"पुरिमो" रिसभो, "पच्छिमो" वद्धमाणो, एते दो वि मोत्तु. "अवि" सम्भावणे, तेसि मज्झिमगाण बावीसाए जिणिंदाणं आहाकम्म भुत्तं "लेसेण" ति सुत्तादेसेण, महाविदेहे खेत्ते जे साहू तेहिं अ सुत्तादेसेण कम्म भुत्तं, ण य सागारियस्स पिंडो। एवमसौ प्रतिषिद्ध.।

"[2]आणाए" व्याख्या -

सव्वेसि तेसि आणा, तप्परिहारीण गेण्हता ण कया।
अण्णातं च ण जुज्जति, जहिं ठिता तत्थ गिण्हतो ॥११६१॥

तं सेज्जातरपिंड परिहरंति जे ते तप्परिहारी। ते य [3]तित्थकरा। तेसि सव्वेसि सेज्जायरपिंडं गेण्हता आणा ण कता भवति।

"[4]अण्णाय उच्छंति" अस्य व्याख्या — पच्छद्धं जेसि चेय घरे ठितो तेहिं नेव घरे ठितो तहिं चेव गेण्हतस्स अण्णायउंछं ण घडतीत्यर्थं ॥११६१॥

"[5]उग्गमो ण सुज्झति" अस्य व्याख्या -

बाहुल्ला गच्छस्स तु, पढमालियपाणगादिकज्जेसु।
सज्झायकरणआउट्टिया करे उग्गमेगतरं ॥११६२॥

गच्छाणं बहुत्तेणं बाहुल्ला, गच्छे साहु-बहुत्तणेण वा बाहुल्ला, पढमालियपाणमट्ठता पुणो पुणो पविसतेसु उग्गमदोसेगतरं करेज्ज।

अहवा स्वाध्यायमता साधवो करणचरित्तमता साहवो एव आउट्टिया उग्गमदोसे करेज्ज ॥११६२॥

"[6]अविमो त्ति" व्याख्या — अविमो त्ति भाव· अविमुक्तिः गृद्धिरित्यर्थं।

दव्वे भावेऽविमुत्ती, दव्वे वीरल्ल ण्हारुबंधणता।
सउणग्गहणाकड्ढण पइद्धमुक्के वि आणेति ॥११६३॥

१ गा० ११३९। २ गा० ११५९। ३ पढमचरमतित्थयरसाहूणं। ४ गा० ११५९। ५ गा० ११५९। ६ गा० ११५९।

अविमुक्तिः दुविधा – दव्वे भावे य। दव्वे वीरल्लसउणिदिट्ठंतो [1]वीरल्लो ओलायगो सो ण्हारु तंतीति पायबद्धो जत्थ तित्तिराति सउणो दीसति तत्थ मुचति, तम्मि सउणं गहिते जदा उप्पत्तिओ तदा तंतीउ आगड्ढियागयस्स हत्थतले मंसं दिज्जति। एवं सुभाविओ मंसपरिद्धो[2] वि णावि ण्हारुणीए सउण घेत्तुं आगच्छति। ॥११६३॥

इयाणि भावाविमोत्ती –

भावे उक्कोस-पणीत-गेहितो तं कुलं ण छड्डेति।
ण्हाणादी कज्जेसु वि, गतो वि दूरं पुणो एति ॥११६४॥

"भावे" त्ति भावअविमुत्ती उक्कोसदव्वे खीरातिए "पणीत" घृतं जेसु कुलेसु लब्भइ ते कुले न छड्डेइ गेहिओ।

अहवा – तित्थगर-पडिमाणं ण्हवणपूया रहजत्ताइसु कुलाइकज्जेसु वा दूरं पि गओ पुणो ते कुले एति गेहिओ ॥११६४॥

इयाणि "अलाघवे" त्ति अस्य व्याख्या – लघुभावो लाघवं, न लाघव अलाघव, बहूपकरण-मित्यर्थ.। तं अलाघवं इमं दुविहं –

उवधी-सरीरमलाघव, देहे णिद्धादिविहितसरीरो।
संघंसण सासभया, ण विहरति विहारकामो वि ॥११६५॥

उवही सरीरे य अलाघवशब्द. प्रत्येकं योज्यः। "देहे" त्ति सरीरालाघवं भण्णति–घयखीरातिणिद्ध-ज्झवहारेणं अविहरेंतो परिवूढसरीरो णिसज्जणसघसणभया सासभया वा ण विहरति विहरणकामो वि ॥११६५॥

उवकरणालाघवं इम –

सागारिपुत्त-भाउग-णत्तुग-दाणमतिखद्ध भारभया।
ण विहरति ओम सावत णिय-ऽगणि-भाणए दोत्ति ॥११६६॥

सागारिओ सेज्जातरो, पुत्त भाय पुत्तस्स पुत्तो णत्तुओ, "दाणं" ति एतेहिं बहु सूवकरण दत्त, तब्भारभया तेणभया वा वोढुमसमत्थो य ण विहरति विहारकामो वि। "ओम" ति अण्णया दुब्भिक्ख जातं, सो य साहू ण विहरति।

सावगेण चिंतियं "अम्हे ता बहुपुत्तणत्तुयादिपडिबद्धा ण विहरामो एस साहू किं ण विहरति ?" णूण बहूवकरणपडिबद्धो तेन न विहरइ। तओ तेण सावएण साहुस्स भिक्खादिविणिग्गयस्स सव्वोवकरण संगोवेउं मायाविणा होउं उवस्सओ अगणिणा पलीविओ। साहू आगओ हा कट्ठं करेति, बहूवकरणं दड्ढं।

सावगं पुच्छति – किं चि अवणीय ?

सो भणति – ण सक्कियं, परं दो भायणे अवणीते।

बितियदिणे साहू भणइ – गच्छामि णं जओ सुभिक्खं।

सावएण भणियं – अवस्स सुभिक्खीभूते पुणो एज्जसु। पडिवण्णो।

पुणो आगयस्स सब्भावो कहिओ। उवकरणं च से दिण्णं। एते दोसा अलाघवे ॥११६६॥

---

१ श्येनपक्षी। २ पगिद्धो प्र०। ३ गा० ११५९।

इदाणि "[1]दुल्लभसेज्ज" त्ति अस्य व्याख्या –

वासा पयरणगहणे, दोगच्चं अण्ण आगते ण देमो ।
पयरण णत्थि ण कप्पइ, असाधु तुच्छे य पण्णवणा ॥११६७॥

एगम्मि णगरे सेट्ठिघरे एगनिवेसणे पंचसइओ गच्छो वासासु ठितो । सो य रोज्जातरो अण्णाविओ पण्णविओ वा घरे भणाति – जति साहू घरातो भिक्खकाले पढमं तुच्छेण रिक्केण भायणेण निग्गच्छंति तो अमगल भवति। ततो सव्वसाहूणं दिणे दिणे भिक्ख देज्जाहि। ते साधवो प्रोमकारणे तम्मि सेट्ठिसेज्जायरकुले दिणे दिणे एक्केक्को साहुसघाडओ पढमं पयरण भिक्खं गेण्हति । ते साहु पुण्णे वासाकाले गता । तस्स य कालेण दोगच्च दरिद्दता जाता । अण्णे साहवो आगया वसहिं मग्गति । सो भणाति अत्थि वसही, ण पुण देमो ।

साधुहि भणियं – किं कारणं ण देसि ?

सो भणाति – पयरण णत्थि, तेण ण देमो । साहू भणंति ण कप्पति अम्ह पयरणं घेत्तु ।

सो भणाति – जइ साहू मम घराओ तुच्छेण रित्तेण भायणेण णिग्गच्छंति अमंगलं भवति । ताहे सो पण्णविओ, वसही य दिण्णा । एते दोसा ॥११७७॥

इदाणि "[2]वोच्छेदे" त्ति अस्य व्याख्या –

थल-देउलियट्ठाणं, सति कालं दट्ठु दट्ठु तहिं गमणं ।
णिग्गते वसही भुंजण, अण्णं उब्भामगा ऽऽउट्टा ॥११६८॥

एगो गामो तस्स मज्झे थल । तम्मि थले गामेण मिलित्तु देउल कत । तत्थ साहू ठिता, सो सव्वो गामो सेज्जातरो । ते य साहू भिक्खाकाल पडियरता जत्थ जत्थ घरे गति काल देक्खति तत्थ तत्थ गच्छति । एव ण किं चि वुल दिणे दिणे छुट्टति । एवं ते गिहत्था णिव्विण्णा । गतेसु तेसु साहुसु देवकुलिया भग्गा । मा अण्णो वि कोवि ठाहिति । एवं सेज्जाविच्छेदो भवति ।

अण्णम्मि एरिसे थलग्गामे अण्णे साहू ठिता । ते मग्गामे ण हिंडंति, बहिं भिक्खायरियं करेंति सज्झायपरा य अच्छति । आउट्टो लोगो, णिमतेति, साहू भणति – बालादीण कज्जे य गेच्छामो । एवं कज्जे सुलभ भवति, ण य वसहि-वोच्छेओ ॥११६८॥ "दोसा वा के तस्स" त्ति दारं गत ।

इदाणि [3]कारणजाते च कप्पति कम्हि" त्ति अस्य व्याख्या –

दुविधे गेलण्णम्मि, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णायं ॥११६९॥

दुविधं आगाढाणागाढं गेलण्णं ॥११६९॥

तत्थ –

तिपरिरयमणागाढे, आगाढे खिप्पमेव गहणं तु ।
कज्जम्मि छंदिया घेच्छिमो त्ति ण य वेंति उ अकप्पं ॥११७०॥

---

१ गा० ११५६ । २ गा० ११५६ । ३ गा० ११३६ ।

अणागाढे तिन्निवारा आहिंडिउ जति न लद्धं गिलाणपाउग्गं ततो चउत्थवाराए सेज्जातरपिंडं गेण्हति । आगाढे पुण गेलण्णे – खिप्पमेव सेज्जातरपिंडगहणं करेंति ।

"णिमंतणे" त्ति दारं –"छंदिता" नाम णिमतिता भणंति "जया कज्जं तया घिच्छामो" ण य साहू भणंति – जहा तुम्ह पिंडो अम्हं ण कप्पति ।।११७०।।

अहवा – छंदिया एवं भणंति ।

जं वा असहीणं तं, भणंति तं देहि तेण णे कज्जं ।
अतिणिब्बंधे व सतिं (सइं), घेत्तूण पसंग वारेंति ।।११७१।।

ज द्रव्यं, वा विकल्पप्रदर्शने, "असहीण" ति घरे णत्थि त, साहू भणति – अमुग दव्व देहि तेण दव्वेण अम्ह [2]भारियं कज्जं ।

अहवा – सेज्जातरस्स ग्राहं प्रति अतिणिवधे "सइ" तु सकृद्ग्रहणं कुर्वन्ति । तमेव कारणे सकृद् गृहीत्वा प्रसगं णिवारयंतीत्यर्थः ।।११७१।।

"[3]दव्वदुल्लभे" त्ति अस्य व्याख्या –

दुल्लभदव्वे च सिया, संभारघयादि घेप्पते तं तु ।
असिवोमे पणगादिसु, जति ऊणमसंथरे गहणं ।।११७२।।

दुल्लभदव्वं अण्णत्थ ण लब्भति, स्याद् अवधारणार्थे, बहुदव्व-संभारेण कतं घृत तेल्लं वा खीरादि वा गिलाणट्ठा सेज्जातरघरे घेप्पज्ज । "असिवे[4] ओमे[5] य" अण्णओ पणगादि जतिऊण जाहे न संथरेति ताहे सेज्जातरकुले गहणं करेति ।।११७२।।

"[6]पदोसे" त्ति रायदुट्ठे अस्य व्याख्या –

उवसमणट्ठ पउट्ठे सत्थो वा जाव ण लभते ताव ।
अच्छंता पच्छण्णं गेण्हंति भये[4] वि एमेव ।।११७३।।

पउट्ठस्स रण्णो उवसमणट्ठा अच्छता भत्तपडिसेहे सेज्जातरपिंड गेण्हति । णिव्विसताण वा जाव सत्थो ण लब्भति ताव पच्छण्णा अच्छता मा अडते राया रायपुरिसा वा दच्छिति, अतो अंतो सेज्जातरकुले गेण्हंति । बोधियतेणेसु सग्गामे अलब्भते भिक्खायरिय च गतु ण सक्कंति अतो सेज्जातरकुले गेण्हति ।।११७३।।

"[7]जयणाए वा काए" त्ति अस्य व्याख्या –

तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चउद्दिसिं मग्गिऊण कडजोगी ।
दव्वस्स तदुल्लभया, सागारि णिसेवणा दव्वे ।।११७४।।

सक्कोसजोयणब्भतरे सग्गामपरग्गामेसु ततो वारा तिक्खुत्तो मग्गिऊणं एवं समततो कए जोगे जाहे ण लब्भति भिक्खं दुल्लभदव्व वा ताहे सागारियदव्वं णिसेविज्जति भुज्जते इत्यर्थ. ।।११७४।। एगस्स सेज्जातरस्स विहाणं गतं ।

---

१ गा० ११६६ । २ अत्यावश्यकम् । ३ गा० ११६६ । ४ गा० ११६६ । ५ गा० ११६६ । ६ गा० ११६६ । ७ गा० ११३६ ।

"[1]इदाणि एगमणेगेसु घेत्तव्वो" त्ति अस्य व्याख्या –

१ २ ३ ४ ५ ६

णेगेसु पिता-पुत्ता, सवत्ति वणिए घडा वए चेव ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥११७५॥

अणेगसेज्जातरेसु इमे विहाणा – पितापुत्ताणं सामण्णं घरं देवकुल वा तम्मि पउत्थे, [2]सवित्तिणी-सामण्णं वा, बहुवणीयसामण्णं वा, एगम्मि वा अणेगहा ठिते त्ति । घडा गोट्ठी सामण्णं, वए गोकुले गोवालग-घणियसामण्णं खीरादी, एतेसिं पियापुत्तादियाण सरूपं, वक्ष्ये ॥११७५॥

पितापुत्त त्ति एते दोवि दारा जुगवं वच्चंति ।

एतेसिं इमे दारा –

१ २ ३

पियपुत्तथेरए वा, अप्पभुदोसा य तम्मि तु पउत्थे ।
४
जेट्ठादि अणुण्णवणा, पाहुणए जं विहिग्गहणं ॥११७६॥

[3]पियपुत्तथेरए वा अस्य व्याख्या –

दुप्पभिति पितापुत्ता, जहिं होंति पभू ततो भणति सव्वे ।
णातिक्कमंति जं वा, अपभुं व पभुं व तं पुव्वं ॥११७७॥

दुप्पभिति पितापुत्ताणं जे पभू दो तिण्णि वा ते सव्वे अणुण्णवेंति, ज वा पभु वा णातिक्कमति तं पुव्वं अणुण्णवेंति ॥११७७॥

"[4]अप्पभुदोसा य" अस्य व्याख्या –

अप्पभु लहुओ दिय णिसि चउ णिच्छूढे विणास गरहा य ।
असधीणम्मि पभुम्मि तु, सधीण जेट्ठादणुण्णवणा ॥११७८॥

जइ अप्पभु अणुण्णवेंति मासलहुं, दिया जइ पभू णिच्छुभति चउलहुं, राओ चउगुरुं, राओ णिच्छूढा तेण सावएहिं विणासं पावेज्जा, दिया रातो वा णिच्छूढा अण्णतो वसहिं मग्गता लोगेण गरहिज्जंति किं वो सुमेहिं कम्मेहिं घाडिया । अम्हे वि ण देमो ।

"[5]तम्मि उ पउत्थे जेट्ठादि अणुण्णवणा" अस्य व्याख्या – पश्चार्द्धं । पभू पिता जदि असहीणो पविसितो जो जेट्ठो पुत्तो सो अणुण्णविज्जति । ततो अणुजेट्ठादि सव्वे वा पभू तो जुगव । ज वा णातिक्कमति तं पुव्वं । एव बहु-भेदे तहा अणुण्णवेति जहा दोसो ण भवति ॥११७८॥

"[6]पाहुणए" त्ति अस्य व्याख्या –

पाहुणयं च पउत्थे, भणंति मित्तं व णातगं वासे ।
तं पि य आगतमेत्तं, भणंति अमुगेण णे दिण्णं ॥११७९॥

---

१ गा० ११३९ । २ गृहे सपत्नि । ३ गा० ११७५ । ४ गा० ११७६ । ५ गा० ११७६ । ६ गा० ११७६ ।

पभुम्मि [1]पउत्थे तस्स य "[2]अब्भरहितो पाहुणश्रो श्रागश्रो सो श्रणुण्णविज्जति ।

श्रहवा – मित्तो श्रणुण्णविज्जति । स्वजनो वा मे श्रणुण्णविज्जइ । तं पि य पभू श्रागयमेत्तं एवं भणंति – श्रम्हट्ठा [3]गो श्रमुगेण दिण्णो । सो य इट्ठणामग्गहणे कते ण धाडेति ॥११७६॥

श्रप्पभुम्मि इमा विधी –

> श्रप्पभुणा तु विदिण्णे, भणंति श्रच्छामु जा पभू एति ।
> पत्ते तु तस्स कहणं, सो तु पमाणं ण ते इतरे ॥११८०॥

श्रप्पभू श्रणुण्णविश्रो भणति – श्रहं ण याणामि, ताहे साहू भणंति – जा पभू एति ता श्रम्ह ठाग पयच्छ । एव श्रप्पभुणापि दिण्णे श्रच्छति श्रागते पहुम्मि तस्स जहाभूतं कहेंति, कहिए तो सो धाडेति वा देति वा स तत्र प्रमाण भवति, ण ते इतरे – श्रप्पभुणो प्रमाणमित्यर्थं ॥११८०॥

"[4]जं विहिगहण" ति – ज विहीते गहण तं श्रणुण्णातं श्रविहि-गहण णाणुण्णाय ।

> इति एस श्रणुण्णवणा, जतणा पिंडो पभुस्स वज्जो तु ।
> सेसाणं तु श्रपिंडो, सो चिय वज्जो दुविधदोसा ॥११८१॥

एस श्रणुण्णवणा, जयणा भणिया ।

इदाणिं सेज्जातरपिंडजयणा – जो पभू तस्स सेज्जातरो त्ति काउ घरे भिक्खापिंडो वज्जो । सेसाणं श्रपहूण घरे ण सेज्जातरपिंडो तो वि सो वज्जो, भद्द-पत-दोसपरिहरणत्थं ॥११८१॥ "पियापुत्त" त्ति गयं ।

इदाणिं "[5]सवित्तिणि" त्ति दारं –

> एगे महाणसम्मी, एगतो उक्खित्त सेसपडिणीए ।
> जेट्ठादि श्रणूण्णवणा, पउत्थे सुतजेट्ठ जाव पभू ॥११८२॥

श्रस्या पश्चार्धस्य तावत् पूर्वं व्याख्या – पभुम्मि पउत्थे जा जेट्ठतरी भज्जा तमणुण्णवेंति । तस्सासति श्रणुजेट्ठाती । जस्स वा सुतो जेट्ठो । श्रपुत्तमाया वि जा पभू तं वा श्रणुण्णवेंति ॥११८२॥

इणमेवत्थं किंचि विसेसियं भण्णति –

> तम्मि श्रसधीणे जेट्ठा, पुत्तमाता व जाव से इट्ठा ।
> श्रध पुत्तमायसव्वा, जीसे जेट्ठो पभू वा वि ॥११८३॥

तम्मि घरसामिए श्रसहीणे पवसिते जा जेट्ठा पुत्तमाता सा श्रणुण्णविज्जति ।

श्रह दो वि जेट्ठा पुत्तमाताश्रो य जा इट्ठतरा सा श्रणुण्णविज्जति ।

श्रह सव्वातो जेट्ठाश्रो, सपुत्ताश्रो, इट्ठाश्रो य तो जीसे पुत्तो जेट्ठो सा श्रणुण्णविज्जति ।

श्रह जेट्ठो वि श्रप्पभू तो कणिट्ठयपभू माता वि श्रणुण्णविज्जति ।

श्रहवा जेट्ठा वा श्रजेट्ठा वा पुत्तमाता इतरा वा जीए दि[illegible] खर्चस्स देज्ज [illegible] तमणुण्णवेंति ।

एसा श्रणुण्णवणा ॥११८३॥

---

१ प्रोषिते । २ पूज्यः । ३ भूमि । ४ गा० ११७६ । ५ गा० ११[illegible] ७ । ५ पूर्णे मासकल्पे संप्रो[illegible] -पाथेय ।

इमा पिंडगहणे विही –

असधीणे पभुपिंडं, वज्जंती सेसएसु भद्दादी ।
साधीणे जहिं भुंजति, सेसेसु व भद्दपंतेहिं ॥११८४॥

[1]असहीणे सेज्जातरे जा पभुसवित्तिणी तीए पिंड वज्जेंति । सेस-सवित्तिणि-घरेसु ण सेज्जातरपिंडो, भद्द-पंतदोसणिमित्तं तेसु वि परिहरंति ।

अहवा – साहिणो सेज्जातरो तो जत्थ भुजति तत्थ वज्जणिज्जो, सेसेसु ण पिंडो, दु-दोसाय परिहरंति ।

एवं [2]पच्छद्धं गाहाते वक्खाणिय ।

इदाणिं पुव्वद्धं वक्खाणिज्जति "एगे महाणसम्मि एगतो उक्खित्त सेसपडिणीए" त्ति ।

इमा भंगरयणा –

एगत्थ रद्धं, एगत्थ भुत्तं । एगत्थ रद्धं, वीसु भुत्त ।
वीसु रद्ध, एगत्थ भुत्तं । वीसु रद्धं, वीसु भुत्तं ।

एक्के महाणसम्मि एक्कतो त्ति एगओ रद्ध, एगओ त्ति भुत्त, एस पढमभगो ।

उक्खित्तसेसपडिणीते त्ति उक्खित्तं अतिणीय भोजनभूमीए वीसु रद्ध । एस ततियभगो ।

बितिय-चउत्था भंगा अवज्जणिज्ज त्ति काउं ण गहीता ।११८४।।

एतेसु भंगेसु इमा गहणविधी –

एगत्थ रंधणे भुंजणे य वज्जंति भुत्तसेसं पि ।
एमेव विसू रद्धे भुंजंति जहिं तु एगट्ठा ॥११८५॥

पढमभगे भुत्तसेस घर पडिणीय त पि वज्जेंति, "एमेव विसू रद्धे" त्ति ततियभगे वि एव चेव । एय असहीणे भत्तारे ।।११८५।।

साहीणे पुण इमो विही –

णियमं च अणिययं वा, जहिं तरो भुंजती तु तं वज्जं ।
सेसेसु न गेण्हंती, संखोभगमादि पंता वा ॥११८६॥

णितियं एगभज्जाए घरे दिणे दिणे भुजति, अणितिय वारएण भुजति । एवं णितिय अणितिय वा जहिं सेज्जातरो भुजति त वज्जणिज्ज, सेसभज्जाघरेसु ण सेजातरपिंडो । तहावि ण गेण्हति, मा भद्दपंतदोसा होज्जा । भद्दो संखोभगाती करेज्ज, पंतो दुट्ठिट्ठधम्मा णिच्छुभेज्ज ॥११८६॥ सवत्तिणि त्ति गतं ।

इदाणिं "[3]वणिए" त्ति दारं –

तेस ंमि अव्वोच्छिण्णे, सव्वं जंतम्मि जं तु पायोग्गं ।
तं पि [2] ... डि अडवी, असती य घरम्मि सो चेव ॥११८७॥

---

[1] गा० ११३६ । [2] गृह... ८२ । [3] गा० ११७५ ।
[1] ... गा० ११७६ ।

एस पुरातणा दारत्थगाहा । सेज्जातरो [1]वणिज्जेण गंतुकामो सकोस-जोयणखेत्तस्स अतो बहिं वा णिग्गमएण ठिओ, दोसु वि घरेसु जत्थ वा ठितो भत्तादी अव्वोच्छिन्नं आणिज्जति णिज्जती य तदा सेज्जातरपिंडो त्ति ण घेत्तव्वं । "जंतम्मि" पट्ठिते तद्दिणमण्णदिण-णीय वा सव्वं घेप्पति, सर्वशब्दस्यातिप्रसंगाद्यत्रायोग्यमित्यर्थ. ।।११८७।।

इणमेवत्थ विसेसियमाह –

णिग्गमणादि बहिठिते, अंतो खेत्तस्स वज्जए सव्वं ।
बाहिं तद्दिणणीतं, सेसेसु पसंगदोसेणं ।।११८८।।

"[2]दोसु वि" त्ति अस्य व्याख्या – सेज्जातरो णिग्गमएण खेत्तस्स अतो बहिं ताव ठितो, अतो ठियस्स तद्दिणणीअमण्णदिणणीय वा सव्व सेज्जातरपिंडउ त्ति वज्जते । खेत्तबहिं ठियस्स सेज्जायरो त्ति काउं तद्दिणणीयं सेज्जातरपिंडो । सेसदिणणीयं जं परियासिय तत्थ वा उवसाहिय ण सेज्जायरपिंडो, ण पुण गेण्हंति, भद्दगतिदोसनिवृत्यर्थम् ।।११८८।।

"[3]अव्वोच्छिन्न" त्ति अस्य व्याख्या :–

ठितो जदा खेत्तबहिं सगारो, असणादियं तत्थ दिणे दिणे य ।
अच्छिण्णमाणिज्जति निज्जते वा, गिहा तदा होति तहिं विवज्जं ।।११८९।।

खेत्तबहिठियस्स सेज्जायरस्स असणादी त दिणे दिणे अव्वोच्छिण्णं आणिज्जति घराओ, ततो य घर णिज्जति तदा सव्वं वज्जणिज्ज ।।११८९।।

"[4]सव्वं जतम्मि" अस्य व्याख्या –

बाहिठितपट्ठितस्स तु, सयं च संपत्थियता तु गेण्हंति ।
तत्थ तु भद्दगदोसा, ण होंति ण य पंतदोसा तु ।।११९०।।

खेत्तबहिट्ठतो जाए वेलाए संपट्ठितो तद्दिणमण्णदिणणीत वा देंतस्स सव्व घेप्पति, सय वा साहुणो [5]पट्ठिता सव्व गेण्हति, ण य तत्थ भद्दपतदोसा भवति, पुनर्ग्रहणाभावादित्यर्थः ।।११९०।।

[6]खंधे - संखडि - अडवी तिण्णि वि एगगाहाते वक्खाणेति –

अंतो बहि कच्छ-पुडादि ववहरंते पसंगदोसा तु ।
देउल जण्णगमादी, कट्ठादऽडविं च वच्चंते ।।११९१।।

सेज्जातरो खेत्तस्स अंतो बहिं वा गहियलंजो कच्छपुडओ होउं-कक्खपदेसे पुडा जस्स स कच्छपुडओ-"गहिओभयमुत्तोलि" त्ति वुत्तं भवति, सबल जेण ववहरतो साहूणं जइ दधिखीरादि दवावेति, जइ खेत्तंतो बहिं वा जणवदसामण्णं पत्तेयं वा सखडिं वा करेज्जा; देवउलजण्णग-तलागजण्णगादि एत्थ वा देज्ज. अडविं वा कट्ठच्छेदणादि णिमित्तं गहिय-[7]पच्छयणो गच्छतो अतो बहिं वा खेत्तस्स देज्ज. एतेसु तिसु वि सेज्जातरपिंडणिद्धारणत्थं भण्णति ।।११९१।।

---

[1] वाणिज्येन । [2] गा० ११८७ । [3] गा० ११८७ । [4] गा० ११८७ । [5] पूर्णे मासकल्पे संप्रस्थिताः बृह० क० उद्दे० २ भा० गा० ३५७१ । [6] गा० ११८७ । [7] पच्छदन=पाथेय ।

तद्दिणमण्णदिणं वा, अंतो सागारियस्स पिंडो तु ।
सव्वेसु बाहि तद्दिण, सेसेसु पसंगदोसेणं ॥११६२॥

तिसु वि खेत्तब्भंतरे तद्दिणमण्णदिणं वा णीयं सव्वं सेज्जातरपिंडो भवति । "सव्वेसु" त्ति खध-सखडिमडविहारेसु बाहिं खेत्तस्स तद्दिणसतयं सेज्जायरपिंडो, सेसदिणसंतयं ण पिंडो । पसंगदोसा पुण ण घेप्पति ।

[1]"असती य घरम्मि सो चेव" त्ति अस्य व्याख्या –

"असति" त्ति सयं सपुत्तबंधवो घरे णत्थि त्ति अण्णविसयट्ठितो वि सो चेव सेज्जातरो "अण्णविसयट्ठितस्स वा सो चेव घरे पिंडो" एसेवत्थो भण्णति ॥११६२॥

[2]दाऊण गेहं तु सपुत्तदारो, वाणिज्जमादी जदि कारणेहिं ।
तं चेव अण्णं च वदेज्ज देसं, सेज्जातरो तत्थ स एव होति ॥११६३॥

घरं साहूण दाउं सपुत्तपसुदारो वाणिज्जमादिकारणे तं वा देसं अण्णं वा देसं गतो तत्थ वि ठितो, जति तस्स घरस्स सो सामी तथा सो चेव सेज्जातरो ॥११६३॥

इदाणिं "[3]घड" त्ति दार –

महतरअणुमहयरए, ललितासण-कुडुग-दंडपतिए य ।
एतेहिं परिगहिता, होंति घटाओ तया कालं ॥११६४॥

"महत्तरअणुमहत्तरे[4]" त्ति अस्य व्याख्या –

सव्वत्थपुच्छणिज्जो, तु महत्तरो जेट्ठमासणधुरे य ।
तहियं तु असण्णिहिते, अणुमहतरतो धुरे ठाति ॥११६५॥

सव्वेसु उप्पज्जमाणेसु गोट्ठिकज्जेसु पुच्छणिज्जो, गोट्ठिभत्त-भोयणकाले जस्स जेट्ठमासणं धुरे ठविज्जति सो महत्तरो भण्णति । मूलमहत्तरे असण्णिहिते जो पुच्छणिज्जो धुरे ठायति सो अणुमहत्तरो ॥११६५॥

[5]"ललिय-कडुय-दडपतिए य इमं वक्खाणं –

भोयणमासणमिट्ठं, ललिते परिवेसिता दुगुणभागो ।
कडुओ उ दंडकारी, दंडपती उग्गमे तं तु ॥११६६॥

ललियासणियस्स आसणं ललियं इट्ठं कज्जति, परिवेसिया इत्थिया कज्जति, इट्ठभोयणस्स दुगुणो भागो दिज्जति । दोसावण्णस्स गोट्ठियस्स दंडपरिच्छेयकारी कडुगो भण्णति । तं दड उग्गमेति जो सो दडपती भण्णति, सो चेव दडओ भण्णति ॥११६६॥ एतेहिं पंचहिं परिग्गहिता तदा पुव्वकाले घडातो आसि ।

घडाए अणुण्णविही भण्णति –

उल्लोमाणुण्णवणा, अप्पभुदोसा य एक्कओ पढमं ।
जेट्ठादि अणुण्णवणा, पाहुणए जं विधिग्गहणं ॥११६७॥

---

१ गा० ११८७ । २ उपेन्द्रवज्रा । ३ घडा = गोष्ठय. (वृ० क० उद्दे० २ भा० गा० ३५७४) ।
४ गा० ११६४ । ५ गा० ११६४ ।

दडग-कडुय-ललियासणियादिप्पडिलोमं अणुण्णवेंतस्स अप्पभुदोसा भवंति, तम्हा सव्वे एक्कतो मिलिया अणुण्णविज्जंति, महत्तरादि वा पंच। एवं चत्तारि तिण्णि दो जति मिलिया ण लब्भति तो पढम जेट्ठमहत्तरं, पच्छा अणुमहत्तरादि अणुण्णविज्जति। महत्तरादिसु घरे असतेसु जो वा जस्स पाहुणओ अब्भरहितो मित्तो ण यगो वा सो अणुण्णविज्जति। जं विहीए गहिय, तं अणुण्णायं, अविधीए णो ॥११९७॥

अस्यैवार्थस्य व्याख्या –

उल्लोम लहु दीय णिसि तेणेक्क-पिंडिते अणुण्णवणा।
असहीणे जिट्ठादि व जति व समाणा महत्तरं वा ॥११९८॥

जति पडिलोम अणुण्णवेति तो मासलहु, पहू जति दिवसतो णिच्छुब्भति तो चउलहू, रातो चउगुरु, जम्हा एते दोसा तम्हा ते सव्वे एक्कतो मिलिए अणुण्णवए। असहीणे त्ति – सव्वपिंडियाण [1]असतीए जेट्ठमहत्तरादिगिहेसु अणुण्णवेइ, तिप्पभिति वा मिलिया अणुण्णवए, महत्तरं वा एक्कं ॥११९८॥

इदाणिं "[2]वए" त्ति दारं –

वाहिं दोहणवाडग, दुद्ध-दही-सप्पि-तक्क-णवणीते।
आसण्णम्मि न कप्पति, पंचपदे [2]बाहिरे वोच्छं ॥११९९॥

जति सेज्जातरस्स गामतो वहिं वाडगे गावीओ जत्थ दुज्झंति सो दोहण-वाडगो तत्थ दोहणवाडए दुद्ध दहियं णवणीयं सप्पि तक्क च एते पंच दव्वा आसण्णखेत्तब्भतरे सेज्जायरपिंडो त्ति न कप्पति ॥११९९॥

एते चेव खीरातीपचपदे गहणविधी भण्णति –

णिज्जंतं मोत्तूणं, वारग भति दिवसए भवे गहणं।
छिण्णो भतीय कप्पति, असती य घरम्मि सो चेव ॥१२००॥

णिज्जंतं सेज्जातरगोउलातो दुद्धातीणि पच दव्वाणि घर णिज्जंताणि ताणि मोत्तु सेज्जातरपिंडो त्ति काउं, जं अण्णं तत्थेव गोउले परिभुज्जति तं ण होति सेज्जातरपिंडो, न पुण कप्पति, भद्दातिदोसा उ। जद्दिवस पुण भयगस्स वारगो तद्दिवसं सेज्जातरपिंडो ण भवति, तहावि सेज्जातरस्स अवेक्खातो अग्गहण। गोवालग "भती" वृत्तिः, ताए छिन्नो विभागो गोवसत्तो त्ति काउं कप्पति। "असती य घरे" त्ति जइ णगराइसु साहूण सेज्जं दाऊण सेज्जातरो अप्पणो घर मोत्तु सपुत्तदारो वइयाए अच्छेज्ज तहावि सो चेव सेज्जातरो ॥१२००॥

पूर्वगाथार्थोच्यते –

वाहिरखेत्ते छिण्णे, वारगदिवसे भतीय छिण्णे य।
सोऊण सागरिपिंडो, वज्जे पुण भद्दपंतेहिं ॥१२०१॥

खेत्तस्स वाहिरओ जो छिण्णो-विभागो सेज्जातरघरे ण णिज्जति, गोवालगवारगदिवसे वा सव्वो दोहो प्रतिदिवस वा वृत्तिभागो छिण्णो। एते सेज्जातरपिंडा ण भवति, भद्दपतेहिं पुण वज्जो ॥१२०१॥

---

१ अस्वाधीनेत्यर्थ. बृहत्कल्पे उद्दे० २ भा० गा० ३५७८। २ "वाहिरतो वोच्छं", क्वचित् "उवरिं वोच्छं"।

अणेगेसु जइ णिक्कारणे एगं [1]कप्पागं ठवेंति तो इमे दोसा –

एगं ठवे णिव्विसए, दोसा पुण भद्दए य पंते य ।
णीसाए वा छुभणं, विणास-गरिहं व पावेंति ॥१२०२॥

णिक्कारणे एगं कप्पागं ठवेत्तु सेसे जति पविसंति तो भद्दपंतदोसा । भद्दो णिस्साए छुभेज्ज, पंतो वज्जितोमि त्ति वसहीओ वा गरहेज्ज ॥१२०२॥

सड्ढेहिं वा वि भणिता, एग ठवेत्ताण णिव्विसे सेसे ।
गण-देउलमादीसु वा, दुक्खं खु विगिंचितुं बहुआ ॥१२०३॥

जे सड्ढा साहु-सामायारिं जाणंति तेहिं भणिया "एक्कं सेज्जातरं ठवेह मा सव्वे परिहरह" ताहे एक्कं ठवेत्तु, सेसेसु णिव्विसंति । गणदेउलमादिसु वा ठिता अवुत्ता वि सयमेव एक्कं कप्पाग ठवेज्ज । कह ? असंथरंता दुक्खं बहुया वज्जिउं सक्किज्जंति ॥१२०३॥

अहवा बहुएसु इमो गहणविही –

गेण्हंति वारएणं, अणुग्गहत्थीसु जह रुयी तेसिं ।
पक्कण्णे परिमाणं, संतमसंतयरे दव्वे ॥१२०४॥

दोसु सेज्जातरेसु एगंतरेण वारओ भवति । तिसु ततिए दिणे सेज्जातरत्तं भवति । चउसु चउत्थे एव वारएणं गेण्हति । अणुग्गहत्थीसु जहा तेसु रुती तहा गेण्हंति । पक्के अण्णे जाणति परिमाणं, तदपि संत, जहा सुरट्ठाए कंगु, असंतं तत्थेव साली, जति पुव्वपरिमाणेण संतं वरंति तो कप्पं अण्णहा भयणिज्जं । एव सेज्जातरदव्वे [2]उवज्जिऊण भयणा, अणुवउत्तस्स उग्गमातिदोसा भवंति ॥१२०४॥

जे भिक्खू सागारियं कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवाय-पडियाए अणुप्पविसति; अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

सागारिओ पुव्ववण्णिओ, कुल कुटुंबं, भिक्खाकालाओ पुव्वं, पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वे गवेसणं, तं साहुसमीवे अपुच्छिऊण पविसंतस्स मासलहु ।

गवेसणे इमो कमो –

सक्खेत्ते सउवस्सए, सक्खेत्ते परउवस्सए चेव ।
खेत्तंतो अण्णगामे, खेत्तबहि सगच्छ परगच्छे ॥१२०५॥

सखेत्तगहणा स्वग्रामो गृहीत, ।

सग्गामे सउवस्सए सगच्छे गवेसति । सग्गामे सउवस्सए परगच्छे गवेसति । पढमपादे दो भंगा ।

सग्गामे अण्णुवस्सए सगच्छे, सग्गामे परउवस्सए परगच्छे । वितीयपादे दो भंगा ।

खेत्तंतो सकोसजोयणब्भंतरे। खित्तंतो अण्णगामे सगच्छे, खित्तंतो अण्णगामे परगच्छे। ततीयपाए वि दो भंगा ।

खेत्त-बहि अण्णगामे सगच्छे, खेत्तबहि अण्णगामे परगच्छे । एवं चउत्थपाए वि दो भंगा इति शेषः ॥१२०५॥

---

१ शय्यातर । २ उपयुज्य ।

सागारियं अपुच्छिय, पुव्वं अगवेसितूण जे भिक्खू ।
पविसति भिक्खस्सट्ठा, सो पावति आणमादीणि ॥१२०६॥

सागारियं पुव्वामेव अपुच्छिय अगवेसिय जे भिक्खट्ठाए पविसइ तस्स आणाती, उग्गमादी, भद्दपंतदोसा य भवति ॥१२०६॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा वसधीदाता, सपरियणो णाम-गोत्त-वयगो य ।
वण्णेण य चिंधेण य, गवेसियव्वो पयत्तेणं ॥१२०७॥

तस्मात् कारणात् वसहीए दाता परिजनः स्वजन[१], नाम इन्द्रदत्तादि, गोत्रं गोतमादि, वततो तरुण-मज्झिमं-थेरो, वण्णओ गोरादि, चिंधं व्रणादि, एवं प्रयत्नेन गवेसियव्वो ॥१२०७॥

को णामेकमणेगा, पुच्छा चिंधं तु होति वणमादी ।
अहव 'ण पुव्वं दिट्ठो, पुच्छा उ गवेसणा इतरे ॥१२०८॥

णामतो किमेगणामो, अणेगणामो, एगोणेगा वा सेज्जातरा, एवमादि पुच्छति । तस्यैवान्वेषणा गवेसणा ।

अहवा – पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वदिट्ठे गवेसणा ॥१२०८॥

कारणओ ण पुच्छेज्जा –

बितियपदमणाभोगे, गेलण्णद्धाण संभमभए वा ।
सत्थवसगे व अवसे, परव्वसे वा वि ण गवेसे ॥१२०९॥

अणाभोगओ विस्सरिएणं, गिलाणट्ठा वा, तुरियकज्जे अद्धाणपडिवण्णा वा तुरिय वोलेउमणा [२]उच्चाओ वा, ण गवेसति । उदगागणिसंभमे किं चि साहम्मियं अपासंतो, बोधियभए वा, सत्थवसगो वा, अडविं पविसंतो वा, अवसो वा रायदुट्ठे रायपुरिसेहिं णिज्जंतो, परव्वसो खित्तचित्तादि, ण गवेसे ॥१२०९॥

जे भिक्खू सागारियणीसाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायति; जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

सेज्जायरं परघरे दट्ठु दाविस्सति त्ति असणाति ओभासति एसा णिस्सा । एव ओभासंतस्स मासलहुं ।

सागारियसण्णातग पगते सागारितं तहिं दट्ठुं ।
दावेहिति एस महंति, एवं ओभासए कोई ॥१२१०॥

सागारियस्स जो सयणो तस्स पगरणे तत्थ सेज्जातरं दट्ठु एस ममं एत्तो दावेहि त्ति एव सागारियणिस्साए कोति साहू तं सखडिय त्ति ओभासेज्ज ॥१२१०॥

---

१ "ण" वाक्यालंकारे । २ उच्चाट. ।

सागारियणिस्साए, सागारियसंथुते व सागारी ।
जो भिक्खू ओभासति, असणादाणादिणो दोसा ॥१२११॥

सागारियणिस्साए त्ति गतार्थं । सागारिय पुव्वपच्छासथुते गत दट्ठु तमेव सागारिय ओभासति, दवावेहि एत्तातो अम्हं सागारियस्स वा पुव्वपच्छासंथुयस्स णिस्साए ओभासति एतस्स गोरवेण दाहिति त्ति, पुव्वपच्छसंथुयं वा ओभासति, मम णियस्स घरट्ठियस्स दावेहि त्ति । एतेसिं चउण्हं पगाराणं जे भिक्खू असणादि ओभासति तस्स आणादओ दोसा भवंति ॥१२११॥

इमे य दोसा –

पक्खेवयमादीया, सेज्जावोच्छेदमादिग तरम्मि ।
उग्गमदोसादीया, अचियत्तादी इतरम्मि ॥१२१२॥

भद्दो पक्खेवय करेज्ज, पंतो सेज्जातिवोच्छेदं करेज्ज । "तरम्मि" त्ति सेज्जातरम्मि एते दोसा । इतरम्मि पुव्वपच्छसथुते उग्गमदोसा, अचियत्तादिदोसा य । उग्गमअचियत्तादिया एते सेज्जातरे वि भवंति ॥१२१२॥

सेज्जातरदोसे इमे –

सण्णातसंखडीसु, भद्दो पक्खेवयं तु कारेज्जा ।
ओभासंति महाणे, ममं ति पंतो व छेज्जाहि ॥१२१३॥

भद्दो सेज्जातरो संथुयसखडीसु अप्पणए तंडुलादि छुभेज्जा, रद्धं वा पक्खेवेज्ज । पंतो महाजण मज्झे ओभावति, किं ममेत घरे णत्थि । अहो अहं एतेहिं घरसितो, जत्थ जत्थ वच्चामि तत्थ तत्थ पिट्ठओ एते आगता ओभासंति, एव पदुट्ठो दिवा रातो वा णिच्छुभेज, एगमणेगाण वा वोच्छेयं करेज ॥१२१३॥

पुव्व-पच्छसंथुयदोसा इमे –

णीयस्स अम्ह गेहे, एते ठिता उग्गमादि भद्दो तु ।
वोच्छेदपदोसं वा, दातुं पच्छा करे पंतो ॥१२१४॥

सेज्जायरस्स जे पुव्वपच्छसथुता ते परघरेसु ओभासिज्जमाणा एव करेज्ज – "णीयस्स अम्ह गेहे ठिय" त्ति । जे भद्दा ते उग्गमादि दोसा करेज्ज । पतो पुण दाउमदाउं वा वोच्छेय-पदोसं वा करेज्ज । वा विकप्पे । पतावेज्ज वा, ओभासेज्ज वा, उक्कोसेज्ज वा फरुसेज्ज वा । जम्हा एते दोसा तम्हा सागारियस्स वा सागारियसथुयाण वा णिस्साए ण ओभासेज्ज ॥१२१४॥

बितियपयं गेलण्णे, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय-पदोसे, भए व गहणं अणुण्णायं ॥१२१५॥

एतेहिं कारणेहिं, विसेसतो छिंदिता तु तं बिंति ।
सण्णातगस्स पगते, दावेज्जा जं तुमे दिण्णं ॥१२१६॥

एतेहिं गिलाणातिकारणेहिं णिस्साए ओभासेज्ज । विसेसओ छंदिया णाम णिमंतिया । जता सेज्जातरो णिमंतेति तया भण्णति सण्णातपगते दावेहि त तुमे चेव दिण्ण भवति । एवं जयणाए गेण्हति ॥१२१६॥

जे भिक्खू उडुबद्धियं सेज्जा-संथारयं परं पज्जोसवणाओ उवातिणाति, उवातिणंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५०।।

उडुबद्धगहित सेज्जासंथारयं पज्जोसवणरातीओ पर उवातिणावेति तस्स मासलहुं पच्छित्तं ।।१२१६।।

सेज्जासथारविशेषज्ञापनार्थमाह –

सव्वंगिया उ सेज्जा, बेहत्थद्धं च होति संथारो ।
अहसंथडा व सेज्जा, तप्पुरिसो वा समासो तु ।।१२१७।।

सव्वंगिया सेज्जा, अड्ढाइयहत्थो संथारो ।

अहवा–अहासंथडा सेज्जा [1]अचला इत्यर्थ: । चलो सथारतो । अहवा तप्पुरिसो समासो कजति-शय्यैव सस्तारक: शय्यासंस्तारक; ।।१२१७।।

संस्तारो दुविधो –

परिसाडिमपरिसाडी, दुविधो संथारतो उ णायव्वो ।
परिसाडी वि य दुविधो, अज्झुसिर-ज्झुसिरो य णातव्वो ।।१२१८।।

जत्थ परिभुज्जमाणो किं चि परिसडति सो परिसाडी, इतरो अपरिसाडी । जो परिसाडी सो दुविहो - अज्झुसिरो ज्झुसिरो य ।।१२१ ।।

सालितणादि ज्झुसिरो, कुसतिणमादी उ अज्झुसिरो होति
एगंगिओ अणेगंगिओ य दुविधो अपरिसाडी।।१२१६।।

सालितणादी झुसिरो, कुसवप्पगतणादी अज्झुसिरो । जो अपरिसाडी सो दुविहो – एगगिओ अणेगगितो य ।।१२१६।।

एगंगितो उ दुविधो, संघातिय एतरो तु नायव्वो ।
दोमादी नियमा तू, होति अणेगंगिओ एत्थ ।।१२२०।।

एगगिओ दुविधो-सघातिमो असघातिमो य । दुगाति पट्टाच्चारेण सघातिता कपाटवत्, एस सघातिमो । एगं चेव पृथुफलकं असघातिमो । दुगातिफलहा असघातिता, वसकवियाओ वा अणेगगिओ ।।१२२०।।

एते सामण्णयरं, संथारुदुबद्धे गेण्हती जो तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तं विराधणं पावे ।।१२२१।।

एतेसिं संथारगाणं अण्णतर जो उडुबद्धे गेण्हति सो अतिक्कमे वट्टति, अणवत्थ करेति, मिच्छत्तं जणेति, आयमजमविराधणं पावति, इमे दोसा ।।१२२१।।

सज्झाए पलिमंथो गवेसणाणयणमप्पिणंते य ।
झामित-हित-वक्खेवो, संघट्टणमादि पलिमंथो ।।१२२२।।

उदुबद्धे काले णिक्कारणे सथारग गवेसमाणस्स आणेंतस्स पुणो पच्चप्पिणतस्स सज्झाए पलिमंथो भवति । कहंचि झामितो हितो वा संथारगसामी अणुण्णवेंतस्स सुत्थत्थेसु वक्खेवो, संसत्ते - तससघट्टणाति-

---

[1] पटपाट ।

णिप्फण्णं, संजमे पलिमंथो य । ग्रह सामी भणेज्जा – "जग्रो जाणह ततो मे ग्रण्णं देह" ताहे ग्रण्णं मग्गंताणं सो चेव पलिमंथो ।

पच्छित्तं दाउकामो भेदानाह –

झुसिरेतर (४०२) एतेसु इमे पच्छित्तं । परिसाडिमे (४०३) परिसाडियग्रज्झुसिरे मासलहु झुसिरे, परिसाडी, एगगिए, संघातिमे, ग्रसंघाइमे, ग्रणेगगिते य, एतेसु चउसु वि चउलहुग्र, ज्झामिते हिते वा ग्रण्णं दव्वाविज्जति, वहतं साहूण दाउ ग्रवहंतयं [1]पवाहेज्ज, ग्रोभासियो वा साहूग्रट्ठाए ग्राहाकम्मं करेति, ग्रादिसद्दाग्रो कीयकडादिवक्खेवो ॥१२२२॥

[2]सुत्तादिम गाहा – गतार्था रिवकेन दधिमथनवत् –

चोदगाह –

एवं सुत्तणिबंधो, णिरत्थग्रो चोदग्रो य चोदेति ।
जह होति सो सग्रत्थो, तं सुण वोच्छं समासेणं ॥१२२३॥

संथारग्गहणं उडुबद्धे ग्रत्थेण णिसिद्ध, एवं सुत्त णिरत्थय, जतो सुत्ते पज्जोसवणरातिग्रतिक्कमणं पडिसिद्धं, तं गहिते संभवति ।

एव चोदकेनोक्ते ग्राचार्याह – जहा सुत्तत्थो सार्थको भवति तहाऽह समासतो वोच्छे ॥१२२३॥

सुत्तणिवातो तणेसु, देसे गिलाणे य उत्तमट्ठे य ।
चिक्खल्ल-पाण-हरिते, फलगाणि अ कारणज्जाए ॥१२२४॥

उद्धारगाहा । देसं पडुच्च तणा घेप्पेज्ज ॥१२२४॥

ग्रसिवादिकारणगता, उवधी-कुच्छण-अजीरग-भये वा ।
ग्रझुसिरमसंधवीए, एक्कमुहे भंगसोलसगं ॥१२२५॥

जो विसग्रो वरिसारत्ते पाणिएण प्लावितो सो उडुबद्धे उब्भिज्जति, जहा सिंधुविसए ऊसभूमी वा जहा [3]रिणकंठं, तं ग्रसिवातिकारणेहिं गता "मा उवही कुच्छिसति" त्ति ग्रजीरणभया वा तत्थ तणा घेप्पेज्जा ।

ग्रझुसिरा, ग्रसंधिया, ग्रवीया, एगतो मुहा, एतेसु चउसु पदेसु सोलसभगा कायव्वा । पढमो भगो सुद्धो । सेसेसु जत्थ झुसिरं तत्थ चउलहुं । बीएसु परित्ताणंतेसु लहुगुरुपणग । सेसेसु मासलहु । ग्रसंधिया-पोरवज्जिता । जेसिं एक्कग्रो णालाण मुहा ते एक्कतो मुहा ॥१२२५॥

कुसमादि ग्रझुसिराइं, ग्रसंधिबीयाइं एक्कग्रो मुहाइं ।
देसीपोरपमाणा, पडिलेहा तिण्णि वेहासे ॥१२२६॥

पूर्वार्धं गतार्थम्

---

१ पीडाकरे । २ गाथात्रयमेत्यदीयम्" इति भाष्यप्रत्योरन्तरे । ३ पानी का किनारा ।

"[1]देसीपोरपमाणा" अस्य व्याख्या –

अंगुट्ठ पोरमेत्ता, जिणाण थेराण होंति संडासो ।
भूमीए विरल्लेत्ता, पमज्जभूमी समुक्खेत्तुं ॥१२२७॥

पदेसिणीए अंगुट्ठपोरट्ठिताए जे घेप्पंति तत्तिया जिणकप्पिया [ण] घेप्पंति । पदेसिणिअंगुट्ठ अग्गमिलिएसु संडासो । थेराण संडासमेत्ता घेप्पंति ।

"[2]पडिलेहा तिण्णि" त्ति अस्य व्याख्या –

भूमीए विरल्लेत्ता तणे उक्खिवेत्ता भूमी पमज्जिज्जति, एवं तिण्णि वारा कज्जति ।

अहवा – तिण्णि पडिलेहा पए । मज्झण्हे ऽवरण्हे, भिक्खादि वच्चता वेहासे करेंति ॥१२२७॥

इदाणिं "[3]गिलाणउत्तिमट्ठे" य अस्य व्याख्या –

भत्तपरिण्णगिलाणे, अपरिमितसई तु वट्ट जयणाए ।
णिक्कारणमगिलाणे, दोसा ते चेव य विकप्पे ॥१२२८॥

गिलाणभत्तपरिण्णीणं [4]अत्थुरणट्ठता तणा घेप्पंति । सति त्ति एक्कसिं चेव पत्थरिय अच्छंति, असति तु वट्टो वा अच्छति ॥१२२८॥

"[5]जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

उभयस्स निसिरणट्ठा, चंकमणं वा य वेज्जकज्जेसु ।
उट्ठिते अण्णो चिट्ठति, पाणदयत्था व हत्थो वा ॥१२२९॥

"उभयं" ति काइय सण्णा य तं णिसिरणट्ठताए जति उट्ठेति, कुडिउ वा चकमणट्ठता उट्ठेति, वातविसरणकज्जेण वा उट्ठेति, वेज्ज-कज्जेण वा, एवमाइसु कज्जेसु उट्ठेति, अण्णो तत्थ संथारए चिट्ठति । किमर्थम् ? प्राणिदयार्थम् ।

अहवा – सो गिलाणो, गुरुतो हत्थो संथारे दिज्जति जाव पडिएति, मा आसायणा भविस्सति । एतेहिं कारणेहिं उडुबद्धे संथारओ घेप्पेज्ज । एय वज्जं जइ गेण्हति तो पुव्वुत्ता ते चेव दोसा विकल्पश्च भवति । कल्पग्रहणा कल्पो प्रकल्पश्च सूचित. ॥१२२९॥

संथारुत्तरपट्टो, पकप्प कप्पो तु अत्थुरणवज्जो ।
तिप्पमिति च विकप्पो, णिक्कारणतो य तणभोगो ॥१२३०॥

थेरकप्पिया संथारुत्तरपट्टेसु सुवति एस पकप्पो, जिणकप्पियाण अत्थुरणवज्जो कप्पो, ते ण सुवति । उक्कुडुया चेव अच्छंति । थेरकप्पिया जति तिण्णि अत्थुरति, णिक्कारणतो वा तणभोग करेंति, तो विकप्पो भवति ॥१२३०॥

अहवा इमा व्याख्या –

अहवा अझुसिरगहणे, कप्पो पकप्पो तु कज्जे झुसिरे वि ।
झुसिरे व अझुसिरे वा, होति विकप्पो अकज्जम्मि ॥१२३१॥

---

१ पोर=ग्रंथी । २ गा० १२२६ । ३ गा० १२२४ । ४ दे० विछाने के लिए । ५ गा० १२२८ ।

जिणकप्प थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्झुसिरगहणे कप्पो भवति। थेर-कप्पियाण कज्जे झुसिरगहणे पकप्पो भवति। झुसिराण वा अझुसिराण वा अकज्जे त्रिकप्पो भवति ॥१२३१॥

एवं ता उडुबद्धे, कारणगहणे तणाण जतणेसा।
अधुणा उडुबद्धे चिय, चिक्खल्लादिसु फलगगहो ॥१२३२॥

एवं ता उडुबद्धे कारणगहिताण तणाण जतणाए परिभोगो भणिओ।

इदाणि तु उडुबद्धे चेव चिक्खल्लाइसु कारणेसु फलगगहो भण्णति –

अझुसिरमविद्धमफुडित, अगरु-अणिसिट्ठ वीणगहणेणं।
आता संजमगरुए, सेसाणं संजमे दोसा ॥१२३३॥

अज्झुसिरो जत्थ कोट्टरं णत्थि, जो पुण कीडएहिं ण विद्धो। जस्म दालीउ ण फुडिया। अगरुउ त्ति लहुओ। न निसृष्ट. अनिसृष्टः परिहारिकमित्यर्थः।

एतेहिं पंचहिं पदेहिं बत्तीस भंगा कायव्वा। पढमो अणुण्णातो, सेसा एक्कत्तीसं णाणुण्णाता।

पढमभंगो अणुण्णातो सो एरिसो हलुओ जहा वीणा दाहिणहत्थेण घेत्तु णिज्जति। एवं सो वि। गरुए आयविराहणा संजमविराहणा य। सेसेसु झुसिरेसु प्रायश सजमविराधनैव भवति ॥१२३३॥

अझुसिरमादीएहिं, जा अणिसिट्ठं तु पंचियाभयणा।
अहसंथड पासुद्धे, वोच्चत्थे चतुलहू हुंति ॥१२३४॥

पूर्वार्धं गतार्थं। णवरं - भगेसु पच्छित्तं इमं – जत्थ झुपिर तत्थ आयविराहण ति काउ चउगुरुयं। सेसेसु उवहिणिप्फण्णं चउलहुअ। जता पढममगादिएसुं गेण्हति तया वसहीए चेव अहासंथडं गेण्हति। तस्सासति [1]पासल्लियं। तस्सासति उद्धकयं। अतो वोच्चत्थ गेण्हंतस्स चउलहुअं ॥१२३४॥

एरिस जति अतो न लभेज्ज –

अंतोवस्सय बाहिं, णिवेसणे वाड साहितो गामे।
खेत्ते तु अण्णगामे, खेत्तबहिं वा अवोच्चत्थं ॥१२३५॥

अतोवस्सयस्स अलब्भमाणे बाहिं अलिंदातिसु गेण्हति। असति णिवेसणे, असति वाडगाउ, अस. सग्गामे गेण्हति। असति खेत्तब्भंतरे अण्णगामे गेण्हति। असति खेत्तबहियादि आणेति। अवोच्चत्थ गेण्हति [2]वोच्चत्थ गेण्हमाणस्स चउलहुआ ॥१२३५॥

मग्गणे वेला-णियमो भण्णति –

सुत्तं व अत्थं च दुवे वि काउं, भिक्खं अडंतो उ दुए वि एसे।
लंभे सहू एति दुवे वि घेत्तुं, लंभासती एग-दुए व हावे ॥ १२३६॥

सुत्तत्थपोरिसीए काउं भिक्खाए अडतो [3]दुए वि एसति – भत्तं संथारगं च। लद्धे सथारए जो सहू सो दुवे वि भत्त संथारगं घेत्तुमागच्छति। एवं अलभतो अत्थपोरिसिं हावेउं गवेसति। एवं पि अलभंतो दुवे वि सुत्तत्थपोरिसीओ हावेति ॥१२३६॥

---

१ पार्श्वस्थितं। २ विपरीत। ३ भक्त और संथारा।

एवं अलब्भमाणे, काउं जोगं दिणे दिणे ।
कारणे उडुवद्धम्मि, खेत्तकालं विभासए ॥१२३७॥

एवं सखेत्ते दिणे दिणे जोग करेंतस्स अलब्भमाणे उडुबद्धे अवस्सं घेत्तव्व, कारणे खेत्तओ जाव बत्तीसं जोयणा, कालतो पंचाह जाव वा लद्धो ताव गवेसति ॥१२३७॥

उडुवद्धिगमेगतरं, संथारं जे उवातिणे भिक्खू ।
पज्जोसवणातो परं, सो पावति आणमादीणि ॥१२३८॥

उडुवद्धे परिसाडेतरं वा कारणगहितं जो एगतरं संथारग उवातिणावेति पज्जोसवणरातीतो पर सो आणादी दोसे पावति ॥१२३८॥

अज्झुसिरं परिसाडी उवातिणावेति मासलहुं । सेसेसु चउलहु ।

इमे दोसा –

मायामोसमदत्तं, अप्पच्चय खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेदपदोसादी, दोसाति [1]उवातिणं तस्स ॥१२३९॥

अमग्गितो कहं णिज्जति त्ति । एवं घरेंतस्स माया भवति । उडुवद्धिउ मग्गिऊण वासासु पडिभुजति मोसं अदत्तं च भवति । जहा भासियं अकरेंतो अप्पच्चओ, अण्णेसिं पि न देति । वीरत्थुते भो समणा ! एरिसस्स ते पव्वज्जा । एवं णिप्पिवासं भणंतस्स खिसा जुत्तं णाम ते अलियं वोत्तु, सप्पिवासं भणतस्स उवालंभो । तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स तं दव्व अण्ण वा दव्वं ण देति । एस वोच्छेओ तस्स वा अण्णस्स वा पदोस गच्छति । एवमादि उवातिणावेंतस्स दोसा ॥१२३९॥

कारणे उवातिणाविज्ज

वितियं पभुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमयमणप्पज्झे ।
असहू संसत्ते या, तक्कज्जमणिट्ठिते दोच्चं ॥१२४०॥

सथारगपभू रण्णा णिव्विसतो कतो, णट्ठो सामी, उट्ठितो गामो, सुण्णो, पवसितो, मतो वा सथारग-सामी, साघू वा मतो, सथारगसामी अणप्पज्झो, साघू वा खित्तादिचित्तो, असहू अप्पणा वा जातो ण तरति णेउ, संथारतो वा संसत्तो, तिण्णि पडिलेहणकाला धरिज्जइ । तिण्णि वा दिणे जाव पाउस्स सज्जति । जेण वा कज्जेण गहित तं कज्जं णो समप्पइ । एत्थ दोच्चं अणुण्णविज्जति ॥१२४०॥

एतेसु कारणेसु इमा जयणा –

मुय णिव्विसते णट्ठुट्ठिते व कज्जे समत्ते उज्झंति ।
वच्चंता वा दट्ठुं, भणंति कस्सऽप्पिणेज्जामो ॥१२४१॥

मुए णिव्विसए णट्ठे उट्ठिते एतेसु चउसु वि पदेसु अप्पणो कज्जे समत्ते उज्झति ।

अहवा – णिव्विसयादिसु तिसु जइ वच्चतं पेक्खति तो ण भण्णति–"अम्हे तुब्भ सथारतो गहितो तं कस्स अप्पिणेज्जामो" एवं भणितो ज सदिसति तस्स अप्पियव्वो ॥१२४१॥

---

१ अतिक्रामतः ।

सुण्णे एतं पडिच्छए, वच्चंता वासएज्ज णीयाणं ।
असहू जाव ण हट्ठो, संसत्ते पोरिसी तिण्णि ॥१२४२॥

पवासिते एंतं पडिक्खति जाव सो एति । अह ते साहुणो गंतुकामा तरंति ताहे समोसिततगाण तस्स वा णीयल्लगाण अप्पेंति, भणंति य तम्मि आगते अप्पेज्जसु। असहू जाव ण हट्ठो ताव णप्पेति । हट्ठीभूतो अप्पेंति । कारणं च दीवेति । संसत्ते तिण्णि पोरुसिओ धरेति ॥१२४२॥

"[1]तक्कज्जमणिट्ठिते दोच्चं" अस्य व्याख्या –

पुणरवि पडिते वासे, तम्मि व सुक्खंते दोच्चणुण्णवणा ।
अब्भागमे व अण्णे, अलद्धे तस्सेवऽणुण्णवणा ॥१२४३॥

जति पज्जोसवणकाले पुणो वासं पडति तम्मि वा पुव्वपडिते असुक्खते, अण्णो य संथरओ ण लब्भति ताहे तमेव दोच्चं अणुण्णवेंति ।

अहवा – "तम्मि वा" त्ति तम्मि संथारए उल्लभूमीए असुक्खमाणीए जाव सुक्खइ ताव अणुण्णवेंति "सुक्खे आणेहामो" त्ति भणंति । "अब्भागमे" आसण्णवासे अण्णो संथारगो ण लब्भति ताहे तमेव अणुण्णवेंति ।

अहवा – अप्पणो लद्धो, [2]अब्भागमिगा अण्णे साहवो आगया, ते सड्ढाय अण्णम्मि अलब्भमाणे तमेव अणुण्णवेंति ॥१२४३॥

जे भिक्खू वासावासितं सेज्जा-संथारयं परं दसरायकप्पाओ उवातिणाति;
उवातिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०५१॥

दसरायकप्पगहणं जहाववायतो वासातीतं वसति, तहा संथारगं पि घ रेंति । उक्कोसं तिण्णि दसरातिया, ततो पर मासलहुं ।

वासासु अपडिसाडी, संथारो सो अवस्स घेत्तव्वो ।
मणिकुट्टिमभूमी अवि, अगेण्हणे गुरुग आणादी ॥१२४४॥

वासावासे अपरिसाडी सथारओ अवस्सं घेत्तव्वो, जति वि मणिकोट्टिमभूमी । अह ण गेण्हति चउगुरुं, आणादि य दोसा ॥१२४४॥

इमे य दोसा –

पाणा सीतलकुंथू, उप्पातग-दीह-गोम्हि सुसुणाए ।
पणए य उवधिकुच्छण, मलउदगवधो अजीरादी ॥१२४५॥

सीयलाए भूमीए कुंथुमादि पाणा समुच्छति, सीयलाए वा भूमीए अजीरणादी दोसा भवंति । उप्पायगा भूमीए उप्पज्जंति, एसा सजमविराहणा ।

इमा आयविराघणा – दीहो डसति, गोम्ही कण्णसियालीया कण्णे पविसति, सुसुणागो अलसो, सो वावातिज्जति, पणतो समुच्छति, सन्नेहभूमीए उवही कुच्छंति, सन्नेहभूमीए वा सुवंतस्स उवही मलेण

[1] गा० १२४० । [2] प्राघुणकाः ।

घेप्पति, ताहे भिक्खातिगस्स वासे पडते उदगविराहणा भवति। मलिणोवहीए छप्पया भवंति। सीयले छप्पयासु य णिद्दा ण लभति, ततो अजिण्णं भवति, ततो गेलण्णं, एवमादी दोसा ॥१२४५॥

तम्हा खलु घेत्तव्वो, भेदा गहणे तु तस्सिमा पंच।
गहणे[1] य अणुण्णवणे[2], एगंगिय[3] अकुय[4] पाउग्गे[5] ॥१२४६॥

जम्हा एते दोसा तस्मात् कारणात् खलु अवधारणे अवश्यमेव गृहीतव्य। तस्य ग्रहणे इमे पंच भेदा भवंति। गहणं अणुण्णवणं एगगिय अकुय पाउग्गे त्ति एते पंच पदा ॥१२४६॥

तत्थ [1]गहणे त्ति दारं -

गहणं च जाणएणं, जतणुण्णवणा य गहिते जतणा य।
मम एत्थ पास तत्थेव, उक्खित्ते जं जहिं णेति ॥१२४७॥

पूर्वार्धस्य व्याख्या -

सेज्जा-कप्प-विहिण्णू, गेण्हति परिसाडिवेज्जमप्पेहं।
छण्णपहम्मि य ठवणं, कस्सप्पिणणं च पुच्छंति ॥१२४८॥

आयारग्गेसु सेज्जाए संथारग्गहणं भणितं। जेण सा सुत्तओ ऽधीया अत्थओ सुआ सो सेज्जाकप्पविहिण्णू। तेण संथारगो घेत्तव्वो।

इयाणिं "[2]जयणाणुण्णवणे" त्ति जयणाए अणुण्णवेयव्वो।

कहं? जाहे लद्धो ताहे भण्णति - "परिभुज्जमाणे" जं परिसडति, तं वज्जेसु अप्पिणिस्सामो, पाडिहारियं च गेण्हामो, णिव्वाघाएणं एवतियकालेणं अप्पिणिस्सामो जति एव पडिवज्जति तो घेप्पति। अहं णो पडिवज्जति ताहे अण्णं मग्गंति। जइ अण्णो मग्गिज्जमाणो ण लब्भति ताहे तं चेव गेण्हति।

"इदाणिं [3]गहिते जतण" त्ति गहियसंथारगो जति णेउं ण तरति ताहे छन्ने प्रदेशे ठवेति, मा वरिसंते उवरि सेज्जति मे।

इमं पुच्छंति - "सम्मत्ते कज्जे अम्हेहिं कस्स अप्पेतव्वो"।

सो भणाति "मम चेव अप्पेयव्वो"।

ततो भण्णति "जइ कहचि तुब्भे घरे ण दीसह ताहे कस्स अप्पेयव्वो"।

सो भणाति - एत्थेव घरे आणेज्जह, ताहे भाणियव्वो "कतरम्मि ओगासे ठवेज्जामो,"।

अहवा भणेज्जा "एत्थेव घरे छण्णपदेसे ठाएज्ज।"

अहवा भणेज्ज "जतो गहितो ठाणातो एयस्स पासे ठवेज्ज।

अहवा भणेज्ज "जतो गहितो ठाणातो तत्थेव ठवेज्ज"।

अहवा भणेज्ज "[4]उक्खित्ते" त्ति वेहासे ठवेज्जह,"।

अहवा - जं संथारयं जहिं घरे भण्णति तं तहिं संथारयं णेति। एवं अभिग्गहितेसु भणितं ॥१२४८॥

---

१ गा० १२४६। २ गा० १२४७। ३ गा० १२४७। ४ गा० १२४७।

आभिग्गहियस्सासति, वीसुं गहणं पडिच्छिउं सव्वे ।
दाऊण तिण्णि गुरुणो, गेण्हंतणे जहा वुड्ढा ॥१२४९॥

आभिग्गहियसंघाडयस्स असति सव्वे संघाडया वीसु गेण्हंति । वदेण वा सव्वे गेण्हंति एत्थ वि सव्वाए सेव जयणाणुण्णवणा जाव कस्सप्पिणणति दट्ठव्व । जो जहा आणेति सो तहा गणावच्छेतियस्स अप्पेति । साधुप्पमाणाओ य अतिरित्ता [1]तओ गेण्हति जे गुरुणो दायव्वा । एव अभिग्गहितेतरेसु वा आणीता सव्वे जता गणावच्छेतिएण पडिच्छिता ताहे जे सुहा सेज्जा ते तिण्णि गुरुणो दिज्जंति, सेसा गणावच्छेइओ अहारातिणियाए भाए त्ति गेण्हति वा । एय सगणे भणित ॥१२४९॥

णेगाण उ णाणत्तं, सगणेतरऽभिग्गहीण वण्णगणो ।
दिट्ठोभासण-लद्धे, सण्णायग-उड्ढ-पभू चेव ॥१२५०॥

णेगाण गणाण एगखेत्तट्ठियाण "णाणत्तं" विशेष. तं सगणिच्चयाणं, इतरे य परगणिच्चा, सगणे अभिग्गही अणभिग्गही वा, अण्णगणे वि अभिग्गही अणभिग्गही वा, सगणे परगणे वा सघाडएण वा वदेण वा अडताणं आरुव्वं तव्ववहारो भण्णति। इमेहिं दारेहिं – दिट्ठे ओभासण लद्धे सण्णायग-उड्ड-पभू चेव ॥१२५०॥

तत्थ दिट्ठ त्ति दारं । एयस्स इमाणि दाराणि –

दट्ठूण व हिंडतेण वा, णिउं तस्स वा वि वयणेणं ।
विप्परिणामणकहणे, वोच्छिण्णे जस्स वा देति ॥१२५१॥

एसा चिरतणगाहा ॥१२५१॥

[2]दट्ठूणदारस्स वक्खाण –

संथारो दिट्ठो ण य, तस्स जो पभू तओ अकहणे गुरूणं ।
कहिते व अकहिते वा, अण्णेण वि याणिओ तस्स ॥१२५२॥

साधुसघाडएण हिंडतेण संथारओ दिट्ठो । पुच्छितोऽणेण "कस्सेस सथारतो ?" ताहे केण ति भणितं- "णत्थेत्थ सो जस्सेस संथारओ ।" ताहे सो साधुसंघाडओ चिंतेति "जाहे संथारगसामी एहिति ताहे मग्गिहामो ।" तेण सघाडएण गुरूण आलोयव्व "मए अमुगगिहे संथारगो दिट्ठो ण य तस्स जो पभू" । एवं अणालोयंतस्स मासलहुं । तं जाणित्ता अण्णेण संघाडएण चिंतिय "जाव एस ण जायति तावऽहं मग्गामि ।" मग्गितो लद्धो य । कस्स भवति ? पुव्वसंघाडएण गुरूण कहिए वा अकहिए वा तस्सेवाभवति । ण जेण पच्छा मग्गितो लद्धो य ॥१२५२॥ "दट्ठूण व" त्ति दारं गतं ।

इदाणि "[3]हिंडंतेण वा णिउ" त्ति अस्य व्याख्या –

संथारं देहंतं, असहीण पभू तु पासए पढमो ।
वितितो उ अण्णदिट्ठं, असढो आणेतणाभोगा ॥१२५३॥

पूर्वार्ध पूर्ववत् । तथाप्युच्यते एक्केण साधुसंघाडएण संथारतो दिट्ठो, ण तस्स पभू । 'पढमो" त्ति वितियसंघाडावेक्खाए पढमो भण्णति । अण्णहा एस वितियप्पगारो वितिओ साहुसघाडओ अण्णदिट्ठं

१ अय. । २ गा० १२५१ । ३ गा० १२५१ ।

संथारयं। "असढभावो" – अमायावी अणाभोगादज्ञानात् ण याणति "जहा अण्णेण साहुसंघाडएण एस दिट्ठो" एवं मग्गितो लद्धो आणिओ य कस्साभवति ? पुरिमस्स चेव ण जेण आणिओ। अण्णे भणंति – साहारणो ॥१२५३॥

"[1]तस्स वा वि वयणेणं" ति अस्य व्याख्या –

तति‍ओ उ गुरुसगासे, विगडिज्जंतं सुणेत्तु संथारं।
अमुयत्थ मए दिट्ठो, हिंडंतो वण्णसीसंतं ॥१२५४॥

"ततिओ" त्ति ततियप्पगारो तह चेव (अ) दिट्ठे सामिम्मि मग्गीहामो। आगतो गुरुस्स आलोएति- "अमुअत्थ मए संथारओ दिट्ठो" त्ति।

अहवा – भिक्खं हिंडंतेण चेव अण्णसंघाडस्स "सीसंतं" कथ्यमानमित्यर्थः, तमेव दोण्ह पगाराण अण्णतरेणं सुणेत्तु "विप्परिणामेंण" ति एव विप्परिणामंतो मग्गति ॥१२५४॥

दिट्ठोवण्णेणम्हं, ण कप्पती दच्छिवे तमसुगो तु।
मा दिज्जसि तस्सेतं, पडिसिद्धे तम्मि मज्झेसो ॥१२५५॥

मग्गणट्ठाए संथारगसामिं भणति – "अम्ह एरिसो सिद्धतो दिट्ठो अण्णेण ओभासिस्सामि त्ति सो संथारओ अण्णस्स ण कप्पति, "दच्छिवे तमसुगो" त्ति दृष्टवत्सो त मग्गंत तुम पडिसेहेज्जासि, मा तस्स एत देज्जसि, पडिसिद्धे तम्मि य मज्झे सो भविस्सति।" सो य तस्सादिण्णो। कस्स आभवति ? पुरिमस्स, ण जेण लद्धो ॥१२५५॥

"[2]कहणे" त्ति अस्य व्याख्या–

अथवा सो तु विगडणं, धम्मकधा पणियलोभितं भणति।
अमुगं पडिसेवेत्तुं, तो दिज्जसि मज्झ मा अज्ज ॥१२५६॥

तहेव आलोएंतस्स सोउ तत्थ गंतु तस्स धम्म कहेति। जाहे आक्खित्तो धम्मकहाए ताहे भणाति- जेण सो दिट्ठो संथारओ तस्स य णामं घेत्तूण भणाति – "जाहे सो मग्गति ताहे त पडिसेहिउ, अज्ज दिण वोलावेउं अण्णदिणे मज्झ देज्जसि"। सो एव आणितो। कस्स आभवति ? पुरिमस्स, ण जेण लद्धो। एवं विप्परिणामेंतस्स जइ सगच्छेल्लओ विप्परिणामेति तो चउलहु, अह परगच्छेल्लओ तो चउगुरुं ॥१२५६॥

"[3]वोच्छिण्णे जस्स वा देइति" त्ति अस्य व्याख्या –

विप्परिणतम्मि भावे, तिक्खुत्तो वा वि जाइतमलद्धे।
अण्णो लभेज्ज फलगं, तस्सेव य सो ण पुरिमस्स ॥१२५७॥

जेण दिट्ठो तस्स जति तम्मि संथारए भावो विप्परिणामितो। एवं वोच्छिण्णे साहुस्स भावे सो संथारगसामी जस्स चेव देति तस्सेव सो, ण जेण पुरा दिट्ठो।

अथवा – जेण पुरा दिट्ठो तेण तिण्णि वारा मग्गितो, ण लद्धो। तस्स वोच्छिण्णे वा अवोच्छिण्णे

---

१ गा० १२५१। २ गा० १२५१। ३ गा० १२५१।

वा भावे अतो परं अण्णो जति लभेज्ज मग्गितं फलगं तस्सेव तं, ण जेण पुरा दिट्ठं ॥१२५७॥ "दिट्ठे" त्ति दारं गतं ।

इदाणि "[1]ओभासणे" त्ति दारं भण्णति । जहा दिट्ठदारं दट्ठूण एवमादिएहिं छहिं दारेहिं वक्खाणियं, तहा ओभासणदारं पि छहिं दारेहिं वक्खाणेयव्वं । ते य इमे दारा –

सोउं [1] हिंडण-[2]क-[3]थणं, [4] वोच्छिण्णे [5] जस्स अण्णोअण्णं [6] वा ।
विगडितो भासंतं, च सोतुमोभासति तहेव ॥१२५८॥

सोउं हिंडण विपरिणामण कहण वोच्छिण्णे जस्स अण्णोण्णं वा । एत्थ विप्परिणामण, – गाहाए ण गहियं ।

एगेण साधुसंघाडएणं संथारओ दिट्ठो । संथारगसामी ओभट्ठो, ण लद्धो । तस्स साहुसघाडगस्स तम्मि संथारगे भावो ण वोच्छिज्जति । आगतेहिं य गुरूणं आलोइयं । अण्णो साहुसघाडओ विगडिज्जंतं – ओभासिज्जतं वा सोउं ओभासइ तहेव जहा दिट्ठदारे । दुट्ठभाव. स तेण मग्गितो लद्धो आणिओ । कस्स आभवति ? जेण पुरा ओभासितो, ण जेण पच्छा णीतो । सोउं गतं ।

एक्केणं साहुसंघाडएणं संथारओ दिट्ठो, ओभासितो, ण लद्धो । अच्छिण्णभावे अण्णो सघाडओ अहा भावेण अदुट्ठभावो हिंडतो आणेति । कस्स आभवति ? पुरिमस्स, पच्छिमस्स ण । अण्णे साहारणं भणंति ।

एव विप्परिणामण - कहण - वोच्छिण्णदारा वि जहा दिट्ठद्दारे ।

णवरं – एत्थ "ओभासण" त्ति वत्तव्वं ॥१२५८॥

अण्णोण्ण वा अस्य व्याख्या –

अण्णो वा ओभट्ठो, अण्णं से देति सो व अण्णं तु ।
कप्पति जो तु पणइतो, तेण व अण्णेण व ण कप्पे ॥१२५९॥

एक्केण साहुसंघाडएण एक्कंसि घरे संथारओ दिट्ठो, पणइओ, ण लद्धो । अव्वोच्छिण्णे भावे अण्णेण साहुसंघाडएण तम्मि घरे अण्णो पुरिसो ओहट्ठो, अण्णं से संथार देति, कप्पति । सो वा पुरिसो जो पुव्वसघाडएण पणतिओ अण्णसंथारय देति, कप्पति । जो पुण पुव्वसंघाडएण पणतितो संथारगो सो तेण वा पुरिसेण अण्णेण वा पुरिसेण दिज्जमाणो पुव्वसंघाडगस्स अव्वोच्छिण्णे भावे अण्णस्स न कप्पति । ॥१२५९॥ "ओभासण" त्ति गतं ।

इदाणि "[2]लद्धेति" – इक्केण साहुसंघाडएण संथारओ दिट्ठो ओभट्ठो लद्धो य, ण पुण आणिओ इमेहिं कारणेहिं –

काले वा घेच्छामो, वियावडा वा वि ण तरिमो णेत्तुं ।
लद्धे वि कहण विपरिणामण वोच्छिण्णे जस्स वा देति ॥१२६०॥

---

१ गा० १२५० । २ गा० १२५० ।

जेण लद्धो सो चिंतेति – ण ताव एयस्स सथारगस्स परिभोगे कालो। अच्छउ लद्धो, पज्जोसवणकाले चेव घेच्छामो।

अधवा – भत्तपाणभरिया वियावडा ण तरामो गेउं। एव लद्धे वि णो आणेति। तत्थेक्को गुरुसमीवे वियडिज्जंतं सोउं गतु मग्गति। सथारगसामिणा भणितो – स एस मए अण्णस्स दिण्णो, तहा वि तुमं गेण्ह, अण्णो वा देति। वितिओ अहाभावेण आणेति, तस्स पुण तेण सथारगसामिणा विस्सरिएण दिण्णो। ततितो धम्मकह काउं आणेति। चउत्थो विप्परिणामेउं आणेति। पचमो वोच्छिण्णे भावे। छट्ठो अण्णेणं वा। व्याख्या व्यवहारश्च पूर्ववत्। णवरं – सामी कहेति – "मय अण्णस्स दिण्णो" त्ति ॥१२६०॥

इयाणिं "[1]सण्णायए" त्ति –

सण्णातगे वि तध चेव कह विपरिणामणासु तु विभासा।
अब्भासतरो गेण्हति, मित्तो वण्णो विमं वोत्तुं ॥१२६१॥

केण इ साहुणा सण्णायगघरे संथारओ दिट्ठो, सो य मग्गितो। तेहिं दिण्णो, भणिओ य – "गेण्ह"। साहुणा भणियं – "जदा कज्ज तदा गेण्हिस्सामि, ताव एत्थेव अच्छउ"। तेण गंतूण गुरूण आलोइयं। अण्णो तं सोउ तत्थ गंतु मग्गिउं आणेति। वितिओ अहाभावेण आणेति, न जाणेति – "एस साहुणा मग्गितो, सण्णायगा वा एते साधुस्स"। अण्णो तह च्चेव धम्मकहविप्परिणामणासु आणेति। अण्णो वोच्छिण्णे भावे आणेति। अण्णो सण्णायगेण भणितो – "अह ते संथारगं देमि"। एतेसु द्वारेसु विभासा व्यवहारश्च पूर्ववत्। जो विप्परिणामेति साहू सो तस्स गिहत्थस्स आसण्णतरो, सो विप्परिणामेत्तु गेण्हति, अब्भरहिओ मित्तो वा। अण्णो इमं वोत्तु गेण्हति ॥१२६१॥

अण्णे वि तस्स णीया, देहिह अण्णं पि तस्स मम दातुं।
दुल्लभलाभमणातुंछियम्मि दाणं हवति सुद्धं ॥१२६२॥

जेण एस संथारगो गहितो तस्स अण्णे वि णिया मित्ता वा अत्थि, सो तओ लभिस्सति। मम पुण तुब्भे चेव, अण्णतो ण लभामि।

अहवा – सो तुब्भ आसण्णो अहं पुण दूरेण तो मम दाउं पि तस्स लज्जाए अण्ण देहिह। किं चान्यत् - जे अण्णायउंछिओ दुल्लभ-लाभो साहू तत्थ दाण दिण्ण भवति सुद्धं-बहुफलमित्यर्थः ॥१२६२॥

इमा सण्णायग-कुल-सामायारी –

सण्णातगिहे अण्णो, ण गेण्हती तेण असमणुण्णातो।
सति विभवे सत्ती य व, सो वि हु ण तेण णिव्विसती ॥१२६३॥

जत्थ गामे साहुणो ठिता तम्मि गामे जस्स साहुस्स सण्णायगा तेण साहुणा अणणुण्णाया, अण्णे साहुणो ण किंचि संथारगादि गेण्हंति। "सो वि सति विभवे", विभवो णाम अण्णतो सथारगादि लद्धं, "सत्ती" णाम अहमन्यत्रापि उत्पादयितु समर्थः। सो एवमप्पाण जाणिऊण "ण णिव्विसति" ति प्रतिषेध. प्रकृतं गमयति - विशत्येव - न वारयतीत्यर्थः ॥१२६३॥

---

१ गा० १२५०।

इदाणिं "[1]उड्ढे" त्ति दारं। सघाडएण संथारओ दिट्ठो, ओभट्ठो, लद्धो य, काले वा - घेच्छामो, भत्तादि वियावडा वा णेउं असमत्था, इमं वक्ष्यमाण चिंतेंति -

वरिसेज्ज मा हु छण्णे, ठवेति अण्णो य मा वि मग्गेज्जा ।
तं चेव उड्ढकरणे, णवरिं पुच्छाए णाणत्तं ॥१२६४॥

वरिसेज्ज मा हु. तम्मि वरिसमाणे उवरि सिज्जिहिति तेण छण्णे [2]अवारादिसु उढं ठवेति, अण्णो वा साधू मा विमग्गिहिति उड्ढं करेति। तेण गतु गुरुणो आलोइय जं दिट्ठादिसु दारेसु भणित सोउ अहाभावविप्परिणामादिएहिं त चेव उड्ढकरणे वि, णवरि पुच्छाए "णाणत्तं" – विशेष ॥१२६४॥

छण्णे उड्ढो व कतो, संथारो होज्ज सो अधाभावा ।
तत्थ वि सामायारी, पुच्छिज्जति इयरहा लहुओ ॥१२६५॥

केण इ साहुणा छण्णे कतो संथारओ दिट्ठो। सो चिंतेति - एस संथारओ सजयकरणे ठिओ। किं मण्णे ण साहुणा उद्ध कतो संथारओ होज्ज उय गिहिणा अहाभावेण कओ होज्ज ? एत्थ इमा सामायारी - पुच्छिज्जति, इयरहा मासलहु पच्छित्त। एव संदिद्धभावे पुच्छिज्जति ॥१२६५॥

उड्ढे केण कतमिणं, आसंका पुच्छितम्मि तु अ सिट्ठे ।
अण्णा असढमाणीतं, पुरिल्ले के ति साधारं ॥१२६६॥

उड्ढं संथारगो एस केण कतो ? आसंकाए पुच्छियम्मि गिहत्थेण कहितो सड्ढेण आणितो, पुरिल्ले अह गिहत्थेण असिद्धे अण्णेण असढमाणितो पुरिल्ले भवति। के ति पुण साहारण भणंति। उड्ढेत्ति गतं।

इदाणि "[3]पभु" त्ति – •

एगेण सघाडएण पहू जातितो सथारगं। तं णाऊण एगो सढभावेण आणेति। वितिओ अहाभावेण। ततिओ विप्परिणामेउं। चउत्थो धम्मकहाए लोभेउ। पंचमो वोच्छिण्णे भावे। छट्ठो सो व ऽण्णो व तं व ऽण्ण वा। व्याख्या व्यवहारश्च पूर्ववत्। णवर – पभू भण्णति ॥१२६६॥

पुत्तो पिता व जाइतो, दोहिं वि दिण्णं पभूहिं (ण) वा जस्स ।
अपभुम्मि लहू आणा, एगतरपदोसओ जं च ॥१२६७॥

एगेण साहुणा पुत्तो जाइतो, अण्णेण पिता जाइओ। तेहिं दोहिं वि एगो संथारगो दिण्णो। जति ते दो पभू दोण्ह वि साहारणो, जेण वा पुव्वमग्गितो तस्स आभवति। अह एगो पभू एगो अपभू तो पहुणा जस्स दिण्णो तस्स आभवति। जो अपहुं अणुण्णवेति तस्स मासलहु। आणादिणो य दोसा। एगतरस्स देंतस्स साहुस्स वा पदोसं गच्छति, ज च रुट्ठो तालणाति करेस्सति त पावति साहू ॥१२६७॥

"[4]दिट्ठादिएसु पदेसु जाव पहू" सव्वेसु इमं पच्छित्तं –

अण्णेण अणुण्णविते, अण्णो जति गेण्हती तहिं फलगं ।
गच्छम्मि सए लहुया, गुरुगा चत्तारि परगच्छे ॥१२६८॥

---

१ गा० १२५०। २ दे० आपण हाटकादि। ३ गा० १२५०। ४ गा० १२५०।

इक्केण साहुसंघाडएण एगम्मि घरे एगो संथारगो अणुण्णवितो, त जति अण्णो गेण्हति तहि घरे तमेव फलगं, सगच्छिल्लगाण चउलहुगा, गुरुगा परगच्छे। एसा संघाडगविही भणिया ॥१२६८॥

एगासति लंभे वा, णेगाण वि होति एस चेव गमो ।
दिट्ठादीसु पदेसुं, णवरमप्पिणणम्मि णाणत्तं ॥१२६९॥

जदि एगेगो संघाडगो न लभति तो णेगाण वि वदेण अडंताण एसेव गमो। दिट्ठादिएसु पएसु-जाव-पभू परूवणा आभवं तव्ववहारो य पूर्ववत्। णवरं – अप्पिणणे णाणत्तं ॥१२६९॥

जाहे लद्धो ताहे तेहिं इमं वत्तव्वं –

सव्वे वि दिट्ठरूवे, करेहि पुण्णम्मि अम्ह एगतरो ।
अन्नो वा वाघाते, अप्पेहिति जं भणसि तस्स ॥१२७०॥

सव्वे अम्हे वण्ण-वण-तिलगातिएहिं दिट्ठरूवे करेह, पुण्णे काले अम्ह एगतरो अप्पेहिति। अह अम्हं कोति वाघातो होज्ज तो अण्णो वि अप्पेहिति। तुमम्मि [1]असहीणे अम्हे वा अण्णे वा जं भणसि तस्स अप्पेहामो ॥१२७०॥

संघाडगेण वदेण वा गेण्हंताण इमो कमो –

सज्झायं काऊणं, भिक्खं काउं अदिट्ठे वसितूणं ।
खेत्तम्मि उ असंतं, आणयणं खेत्तबहियातो ॥१२७१॥

सुत्तत्थपोरिसीओ काउं भिक्ख हिंडंता मग्गंति। जे पुण वंदेण [2]ते णियमा अत्थपोरिसिं वज्जेत्ता मग्गति। पढु दिट्ठं त्ति पढु त्ति गत।

इदाणिं "अदिट्ठे" त्ति दारं।

जति सग्गामे न लभेज्ज ताहे अण्णगामे मग्गिज्जति। तत्थ संथारगो दिट्ठो, ण संथारगसामी, जओ खेत्तमादी गतो। एव अदिट्ठे वसिऊण गोसे संथारग घेत्तुमागच्छति। जति सो खेत्ते अण्णगामे वि ण लब्भति ताहे आणयण खेत्तवहितातो वि ॥१२७१॥ "गहणे" त्ति मूलदारं गत।

इदाणिं "[3]अणुण्णवणे" त्ति –

सव्वेसु वि गहिएसु, संथारो वासगे अणुण्णवणा ।
जो जस्स तु पाउग्गो, सो तस्स तहिं तु दातव्वो ॥१२७२॥

जता सव्वेसु साहुसु संथारगा पडिपुण्णा गहिआ तदा जत्थ संथारगे ठविज्जहिति, ते सथारोवासगा अहारातिणियाए अणुण्णविज्जति ॥१२७२॥

अववातो भण्णति।

"[4]जो जस्स उ" पच्छद्धं अस्य व्याख्या –

खेल-पवात-णिवाते, काले गिलाणे य सेह-पडियरए।
सम-विसमे पडिपुच्छा, आसंखडीए अणुण्णवणा ॥१२७३॥

---

१ परदेशगते। २ "दो वि वा परिहरेत्तु मग्गंति" क्वचित् पाठो। ३ गा० १२४६। ४ गा० १२७२।

जस्स खेलो संदति तस्स मज्झे ठातो आगतो, ततो तेण जो अंते साहू सो अणुण्णवेयव्वो – इच्छाकारेण मम खेलो सदति, अहं तुब्भच्चए ठाणे ठामि, "तुमं [1]ममच्चए गाहि" त्ति । एवं अहं पित्तलो पवाते, वातलो णिवाते, कालग्गाही कालग्गहणभूमीसमीवे, गिलाणपडियरगो गिलाणसमीवे, सेहो तप्पडियरग-समीवे, जो सामायारिं गाहेति । जस्स विसमा संथारगभूमी सो अणधियासेमाणो पासाणि वा जस्स दुक्खति सो जस्स समा सथारगभूमी तं अणुण्णवेति अधियासगं । आसखडीओ सूरगस्स मूले ठविज्जति जो वा जं – सुत्तत्थे पुच्छति सो तस्स पासे ठाणं अणुण्णवेति ॥१२७३॥

इदाणिं "[2]एगगिए" त्ति "अकुए" त्ति दो दारा एगगाहाते वक्खाणेति –

एगंगियस्स असती, दोमादी संतरंतु णममाणे ।
कुयबंधणंमि लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥१२७४॥

एगगितं फलग असघातिमं घेत्तव्व । असति एगंगियस्स दो पच्चरा संघातिगा गहेयव्वा । असति तिगादी सघातिगा गहेयव्वा । एगंगियस्स असति अणेगगियो दोमादिफलगेहिं घेत्तव्वो । फलगासति कवियमयो वि पुव्वसंघातितो, असति असंघातितो वि सतरंतु । "णममाणि" त्ति जे णमति संतराओ कंबिओ वज्झंति मा पाणजातिविराहणा भविस्सत्ति ।

अहवा – णममाणे "अतरा" अड्डुया कविया वज्झति ।

इदाणिं "[3]अकुए" त्ति दारं पच्छद्धं ।

"कुच" परिस्पदने, अकुचो वधेयव्वो निश्चलेत्यर्थः । इतश्चेतश्च जस्स कंबिओ चलति स कुच । तादृग्वधने चतुलहुं । आणादिणो य दोसा भवति । चले वा पडंति, पडंते वा आयसंजमविराहणा ॥१२७४॥

इदाणिं "[4]पाउग्गे" त्ति दारं –

उग्गमसादी सुद्धो, गहणादी जाव वण्णिओ एसो ।
एसो खलु पायोग्गो, गुरुमादीणं च जो जोग्गो ॥१२७५॥

जो उग्गमउप्पादणएसणाहिं सुद्धो सो पाउग्गो ।

अहवा – गहणादिदारेहिं जो एस वण्णिओ एस पाउग्गो ।

अहवा – जो गुरुमादीपुरिसविभागेण जोग्गो सो पाउग्गो भवति ॥११७५॥

एवं गहियस्स परिभोगसामायारी भण्णति –

तद्दिवसं पडिलेहा, बंधा पक्खस्स सव्व मोत्तूणं ।
लहुगा अणुमुयंते, ते चेव य अपडिलेहाए ॥१२७६॥

जहा उवकरणस्स तहा संथारगस्स वि । "तद्दिवस" दिवसे उभयसंज्झं पडिलेहा, पक्खिए सव्वे वधे मोत्तु पडिलेहति । जति पक्खिए वंधणा न मुयति तो चउलहुं । दिणे दिणे अपडिलेहतस्स, ते चेव चउलहू भवति ॥१२७६॥

---

[1] मदीय । [2] गा० १२४६ । [3] गा० १२४६ । [4] गा० १२४६ ।

तस्स पुण इमा पडिलेहणविधी –

अंकम्मि व भूमीए व, कातूणं भंडगं तु संथारं ।
रयहरणेण पमज्जे, ईसि समुक्खेत्तु हेट्ठुवरिं ॥१२७७॥

मुहपोत्तियादिसव्वोवकरणं पडिलेहेउं ताहे तं उवकरणं अकम्मि वा ठवेंति, भूमीए वा ठवेंति। ताहे संथारगं रयहरणेण पमज्जंति, हेट्ठुवरिं ईसिं समुक्खविय ॥१२७७॥

वासाण एगतरं, संथारं जो उवादिणे भिक्खू ।
दसरातातो परेणं, सो पावति आणमादीणि ॥१२७८॥

वासाकाले जो गहितो एगतरो परिसाडी वा अपरिसाडी वा जो तं भिक्खू मग्गसिरदसराईतो पर वोलावेति। पुणो कारणे उप्पण्णे वा जाव तिण्णि दसराई। इयरहा कत्तियचाउम्मासियपाडिवरा अप्पेयव्वे। जो ण पच्चप्पिणइ तस्स आणादयो दोसा ॥१२७८॥

इमे य –

माया मोसमदत्तं, अप्पच्चयो खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेदपदोसादी, दोसा तु अणप्पिणंतम्मि ॥१२७९॥

बितियं पभुणिव्विसए, णट्ठुड्ढितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
असहू संसत्ते वा, [1]रट्ठुट्ठाणे य हितदड्ढे[2] ॥१२८०॥

[3]पूर्ववत्

जे भिक्खू उदुबद्धियं वा वासावासियं वा सेज्जासंथारगं उवरि सिज्जमाणं पेहाए न ओसारेइ, न ओसारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जो वासेणोवरि सेज्जमाणं न तस्मात् प्रदेशात् अपनयति तस्य मासलहुं।

परिसाडिमऽपरिसाडी, अंतो वहिता व दुविधकालम्मि ।
उवरिसंतं पासिय, जो तं ण ऽवसारे आणादी ॥१२८१॥

अंतो वसहीए वहिता वा वसहीए दुविधकाले उडुबद्धे वासाकाले वा उवरि सिज्जंत सिच्चमाणं जो साहू पेक्खंतो अच्छति "णावसारे त्ति" अणोवरिसे ण करेति तस्स आणादी ॥१२८१॥

इमं च पच्छित्तं –

उवरिसंते लहुगं, अवस्स वरिसेस्सति त्ति लहुओ उ ।
लहुया लहुओ व कते, णिक्कारण-कारणे बाहिं ॥१२८२॥

उवरि सिज्जमाणे चउलहुअं, "अवस्सयं वरिसिस्सति" त्ति णो अणोवरिसे मासलहुं, अवस्स वरिसिस्सति त्ति तहावि णिक्कारणे बाहिं करेति चउलहुं, आसण्ण वासं णाऊण कारणे वि बाहिं णीणेति मासलहुं।

---

१ रद्धु। २ ड्ढे। ३ गा० १२३९-१२४०।

किं पुण तं कारणं जेण बाहिं णीणिज्जति ?

पडिलेहणट्ठा असंसत्तो वा आतावणट्ठा ॥१२८२॥

उवरि सिज्जमाणे इमे दोसा –

तं दट्ठूण सयं वा, अधवा अण्णे वि अंतिए सोच्चा ।
ओहावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥१२८३॥

त उवरि सिज्जमाणं "सयं" संथारगसामी दट्ठु ।

अघवा – अण्णेसिं "अतिए" अब्भासे सोचा ओभावणं अग्गहणं दुविध वोच्छेयं वा कुज्जा ॥१२८३॥

अण्णे वि होंति दोसा संजम पणए य जीव आताए ।
बंधाण य कुच्छणता, उल्लक्कमणे य तब्भंगो ॥१२८४॥

उल्ले पणओ कुथू वा समुच्छति, सजमविराहणा । सीयले वा भत्तं ण जीरति, गेलण्ण, आतविराहणा । बंधा वा कुहंति, ते कुहिया तुट्टति, उल्लो वा अक्कंतो भज्जति ॥१२८४॥

बितियपदे वसधीए, ठिए व उच्छेदओ भवे अंतो ।
पडिलेहणमप्पिणणे, गिलाणमादीसुविहिया १ तु ॥१२८५॥

वरिसते वि अणोवरिसे ण कप्पति, वसही समंततो गलति त्ति अंतो वि ठवितो वसहीए तिम्मइ त्ति णावसारेइ, पडिलेहणट्ठा वा णीणितो, अप्पिणणट्ठा वा णीणितो ॥१२८५॥

एवं ता णीहरणं, हवेज्ज अध णीणियं पि ण विसारे ।
गेलण्ण-वसहीपडणे, संभम-पडिणीय-सागरिए ॥१२८६॥

एवमादिसु कारणेसु, वसहि-णीहरणं हवेज्ज । अह णीणियं उवरि सिज्जमाणं णावसारेति इमेहिं कारणेहिं । "गिलाणमादिसुविहिया उ" अस्य व्याख्या "गेलण्ण" पच्छद्धं । गिलाणकारणे वावडो, सयं वा गिलाणो णावसारे । वसहिपडणे वा अंतो ण प्पवेसति । उदगागणिमादिएसु संभमेसु णावसारेति, अतिव्याकुलत्वात् । पडिणीओ वा बाहिं पडिक्खति जति एस समणो णिग्गच्छति तो णं पंतावेमि, सेहस्स बाहिं सागारियं । एतेहिं कारणेहिं अणोवरिसे अकरेंतो सुद्धो ॥१२८६॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जासंथारयं अणणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति,
णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

भिक्खू पूर्ववत् । पाडिहारको प्रत्यर्पणीयो । असेज्जातरस्स सेज्जातरस्स वा संतितो जति पुण्णे मासकप्पे दोच्चं अणणुण्णवेत्ता अंतोहितो बाहिं णीणेति, बाहितो वा अतो अतिणेति तहा वि मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती –

परिसाडिमपरिसाडी, सागरियसंतियं च पडिहारि ।
दोच्चंअणुण्णवेत्ता, अंतो बहि णेति आणादी ॥१२८७॥

कुसातितणसंथारए परिभुज्जमाणे जस्स किंचि परिसडति सो परिसाडी। वंसकंबिमादी अपरिसाडी। दोच्च अणणुण्णवेत्ता जो णेति तस्स आणा अणवत्थादि दोसा भवंति ॥१२८७॥

चोदगाह – णणु सुत्ते अणणुण्णवेंतस्स वि मासलहुं वुत्तं णिक्कारणे ?

आचार्याह – णिक्कारणे सुत्तं। अत्थो तु कारणे विधिं दरिसेति।

अविधीए इमे दोसा –

ताइं तणफलगाइं, तेणाहडगाणि अप्पणो वा वि।
णिज्जंता गहियाइं, सिट्ठाणि तहा असिट्ठाणि ॥१२८८॥

ते तणफलया तस्स तेणाहडा वा, अप्पणो वा। तेणाहडेसु णिज्जंतेसु अंतरे पुव्वसामी दट्ठु गहितेसु साघू पुच्छितो जति कहेति जस्स ते ण कहेति वा तो उभयहा वि दोसा, तम्हा दोसपरिहरणत्थं विही भण्णति – सपरिक्खेवे ठित्ताण अतो मासो बहिं मासो। अतो मासकप्पं काऊण बहिं णिगच्छतो तत्थेव तणफलगा गेण्हंतु, अह ण लब्भति अण्णगाम बयंतु। अह तेसु असिवातिकारणा अत्थि तो ते सव्वे तणफलया-णीणंतु ॥१२८८॥

इमा विही –

अण्णउवस्सयगमणे, अणपुच्छा णत्थि किंचि णेतव्वं।
जो णेति अणापुच्छा, तत्थ उ दोसा इमे होंति ॥१२८९॥

सपरिक्खेवे अण्णउवस्सयं वयंता अणापुच्छाए न किं चि णेयव्व। "णत्थि" त्ति अनापृच्छय नास्ति किंचिन्नेयमिति। जो पुण अणापुच्छाए णेति तस्सिमे दोसा –

कस्सेते तणफलगा, सिट्ठे अमुगस्स तस्स गहणादी।
णिण्हवति व सो भीओ, पच्चंगिरलोगउड्डाहो ॥१२९०॥

तेणाहडा अणापुच्छाए णिज्जंता पुव्वसामिणा दिट्ठा, साहू पुच्छितो, कस्सेते तणफलगा ? साहू भणति – अमुगस्स। तस्स गेण्हण-कड्ढणादिया दोसा। अह णिण्हवेति सो भीतो संतो साहू तो पच्चंगिर[1]दोसो [1]पदोप. तस्मिन् सभाव्यत इति, प्रत्यंगिरा। लोगे वि उड्डाहो-"साधवो वि परदव्वावहारिणो" त्ति ॥१२९०॥

[2]गहणादिपदस्स इमा वक्खा –

णयणे दिट्ठे सिट्ठे, कड्ढण ववहार ववहरितपच्छकडे।
उड्डाहे य विरुंभण, उद्दवणे चेव णिव्विसए ॥१२९१॥

तणफलया अणापुच्छाए णेति। तेणाहडा णिज्जमाणो पुव्वसामिणा दिट्ठा पुच्छिएण साहुणा सिट्ठं - अमुगस्स। सो रायपुरिसेहिं हत्थे गहिउं कड्ढिओ। "ववहारमेव" त्ति पुव्वसामिणा सद्धिं ववहारो त्ति वुत्तं भवति। "ववहारिए" त्ति ववहरितुमारद्धे पच्छाकडे त्ति जिते। "उड्डाहविरुंभणे" एक्कं पदं। "उद्दविते णिव्विसए" एक्कं पद ॥१२९१॥

---

१ परिमन्थदोप। २ गा० १२९०।

एतेसु [1]नवसु पदेसु इमं पच्छित्तं –

मासगुरुं वज्जिता, पच्छित्तं होइ नवसु एवं तु ।
लहुओ लहुगा गरुगा, छल्लहु छग्गुरुग छेदमूलदुगं ॥१२६२॥

"[2]णिण्हवति त्ति पच्छद्धस्स इमा वक्खा –

अहवा वि असिद्धम्मि य एसेव उ तेण संकणे लहुया ।
[3]निस्संकियम्मि गुरुगा, एगमणेगे य गहणाई ॥१२६३॥

अहवेत्यय निपात· अविशब्द: प्रकारवाची, "असिद्धे" अनाख्याते, एसेव तु तेणो त्ति सकिते लहुआ, णिस्संकिते एस तेणो त्ति चउगुरुगा, तस्सेवेगस्स ।

अणेगाणं-अणेगेसिं साहूणं गहणादी इमे दोसा –

णयणे दिट्ठे गहिते, कड्ढ विकड्ढे ववहार विवहरिए ।
[4]उड्डाहे य विरुंभण, उद्दवणे चेव णिव्विसए ॥१२६४॥

तेणाहडादीण तणफलयाणं अणापुच्छाए नयणे पुव्वसामिणा दट्ठु तणफलयाणि साहुस्स वा गहणं कयं, विकोपयित्रा कड्ढणं, त्वं चोर इति विकोवणं, साहुस्स रायपुरिसेहिं कड्ढणं कतं, साहू ते रायपुरिसे प्रतीप कड्ढति त्ति विकड्ढणं । सेसा ते चेव पदा तं चेव पच्छित्तं ॥१२६४॥

शिष्य: प्राह – किमस्तीदृशस्य सभव: ?

आचार्याह –

दंतपुरे आहरणं, तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु ।
छावणमीराकरणे, [5]पत्थरण फला तु चंपादी ॥१२६५॥

"दतपुरे" दंतवक्के आख्यानक पसिद्धं । तत् यथा तत्र तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु सभवो भवे । तानि पुन. किमर्थं साधवो नयति ? उच्यते - छावणनिमित्तं वा, मीराकरण वा । मीरा मेराकडणमित्यर्थ:। पत्थरणत्थं वा । फलगा वि मीराकरण पत्थरणनिमित्तं । ते पुण चगगपट्टादी भवति ॥१२६५॥

इदाणिं अतेणाहडगाहा भाणियव्वा –

अतेणाहडाण-णयणे, लहुओ लहुगा य होंति सिद्धम्मि ।
अप्पत्तियम्मि गुरुगा, वोच्छेद पसज्जणा सेसे ॥ १२६६॥

अतेणाहडतणाइं जदि णेति अणापुच्छाए तणेसु लहुगो। अण्णेण से सिठ्ठं – तुज्झच्चया तणा फलया साधूहिं वाहिं नीणिता एत्थ लहुगा । अणुग्गहो त्ति एतम्मि वि चउलहुगा । अप्पत्तियम्मि गुरुगा । वोच्छेदं वा करेज्जा । तस्स साधुस्स तद्दव्वस्स वा पसजणा । सेसेत्ति अण्णेसिं पि साधूण असणादियाण य दव्वाणं वोच्छेदो ॥१२६६॥

---

१ गा० ४७४ । २ गा० १२६० । ३ अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारचिओ होति । इति पाठान्तरम् । ४ लहुओ लहुआ गुरुआ, छम्मासा छेदमूलदुगं । इति पाठान्तरम् । ५ अत्थरण । इति पा० ।

तणफलगविशेषज्ञापनार्थमाह –

एसेव गमो णियमा, फलएसु वि होति आणुपुव्वीए ।
णवरं पुण णाणत्तं, चउरो लहुगा जहण्णपदे ॥१२६७॥

जो तणेसु विधी भणितो फलगेसु वि एसो चेव विधी । नवरि णाणत्तं – चउरो लहुगा जहण्णपदे । जत्थ तणेसु मासलहु । तत्थ फलगेसु चउलहू भवंतीत्यर्थः ॥१२६७॥

बितियं पहुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
खंधारअगणिभंगा, दुल्लभसंथारए जतणा ॥१२६८॥

अणापुच्छाए वि नेज्ज । सथारगपभू निव्विसतो कतो, नट्ठो वा, उट्ठितो उव्वसितो वा, सुण्णो - पवसितो, मतो वा, अणप्पज्झो वा जातो, खधावारभया वा बहिंतो अंतो अतिनेति, अग्गिभये वा नेति, विसय - भंगे वा नेति दुल्लभसथारए वा जतणाए नेति ॥१२६८॥

इमा सा जतणा –

तम्मि तु असधीणे वा, पडिचरितुं वा सहीण वक्खित्ते ।
पुव्वावरसंझासु य, णयंति अंतो व बाहिं वा ॥१२६९॥

गिहे संथारगसामी जदा असहीणो तदा नयंति, सहीणे वा पडिचरितु जदा वक्खित्तचित्तो तदा णयंति, पुव्वसंझाए अवरसझाए वा अंतातो बाहिं, बाहिंतो वा अंतो नयति ॥१२६९॥

जे भिक्खू सागारियसंतियं सेज्जा-संथारयं अणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं दोच्चं पि अणणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

[नास्तीमे द्वे सूत्रे उपलब्ध भाष्यचूर्णिप्रतषु]

जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा-संथारयं आताय अपडिहट्टु संपव्वयइ; संपव्वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

आदाय गृहीत्वा, अप्पडिहट्टु नाम अणप्पिणित्ता, सम्मं एगीभावेण प्रव्रजति संप्रव्रजति तस्स मासलहु । एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ती अत्थं वित्थरेति –

पडिहरिणीओ पडिहारिओ य आताय तं गहेऊणं ।
अप्पडिहट्टुमणप्पित्तु संपव्वए सम्मगमणं तु ॥१३००॥

मासकप्पे पुण्णे जम्मि कुले गहितो सथारयो तस्स पच्चप्पिणंतस्स त्ति ज धारणं सो पाडिहारितो भण्णति । एरिसीए कडाए तं आदायगृहीत्वा पुण्णे मासकप्पे अपडिहट्टुमणप्पिणित्तु न प्रतीपं अर्पयतीत्यर्थः । सं एगीभावे व्रज । "व्रज" गतौ सम्यक् प्रव्रजनं संप्रव्रजनं ॥१३००॥

एतेसु [1]नवसु पदेसु इमं पच्छित्तं –

मासगुरुं वज्जिता, पच्छित्तं होइ नवसु एवं तु ।
लहुओ लहुगा गरुगा, छल्लहु छग्गुरुग छेदमूलदुगं ॥१२६२॥

"[2]णिण्हवति त्ति पच्छद्धस्स इमा वक्खा –

अहवा वि असिद्धम्मि य एसेव उ तेण संकणे लहुया ।
[3]निस्संकियम्मि गुरुगा, एगमणेगे य गहणाई ॥१२६३॥

अहवेत्यय निपात. अविशब्द. प्रकारवाची, "असिद्धे" अनाख्याते, एसेव तु तेणो त्ति सकिते लहुआ, णिस्सकिते एस तेणो त्ति चउगुरुगा, तस्सेवेगस्स ।

अणेगाणं-अणेगेसिं साहूणं गहणादी इमे दोसा –

णयणे दिट्ठे गहिते, कड्ढ विकड्ढे ववहार विवहारिए ।
[4]उड्डाहे य विरुंभण, उद्दवणे चेव णिव्विसए ॥१२६४॥

तेणाहडादीण तणफलयाण अणापुच्छाए नयणे पुव्वसामिणा दट्ठु तणफलयाणि साहुस्स वा गहणं कय, विकोपयित्त्रा कड्ढणं, त्वं चोर इति विकोवणं, साहुस्स रायपुरिसेहिं कड्ढणं कतं, साहू ते रायपुरिसे प्रतीप कड्ढति त्ति विकड्ढणं । सेसा ते चेव पदा तं चेव पच्छित्तं ॥१२६४॥

शिष्य: प्राह – किमस्तीदृशस्य सभव: ?

आचार्याह –

दंतपुरे आहरणं, तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु ।
छावणमीराकरणे, [5]पत्थरण फला तु चंपादी ॥१२६५॥

"दतपुरे" दतवक्के आख्यानकं पसिद्धं । तत् यथा तत्र तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु सभवो भवे । तानि पुन. किमर्थं साधवो नयति ? उच्यते - छावणनिमित्तं वा, मीराकरण वा । मीरा मेराकडणमित्यर्थ.। पत्थरणत्थ वा । फलगा वि मीराकरण पत्थरणनिमित्तं । ते पुण चनगपट्टादी भवति ॥१२६५॥

इदाणिं अतेणाहडगाहा भाणियव्वा –

अतेणाहडाण-णयणे, लहुओ लहुगा य होंति सिद्धम्मि ।
अप्पत्तियम्मि गुरुगा, वोच्छेद पसज्जणा सेसे ॥ १२६६॥

अतेणाहडतणाइ जदि णेति अणापुच्छाए तणेसु लहुगो। अण्णेण से सिट्ठं – तुज्झच्चया तणा फलया साधूहिं वाहिं नीणिता एत्थ लहुगा । अणुग्गहो त्ति एतम्मि वि चउलहुगा । अप्पत्तियम्मि गुरुगा । वोच्छेदं वा करेज्जा । तस्स साधुस्स तद्दवस्स वा पसजणा । सेसेत्ति अण्णेसिं पि साधूणं असणादियाण य दव्वाणं वोच्छेदो ॥१२६६॥

---

१ गा० ४७४ । २ गा० १२६० । ३ अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारचिओ होति । इति पाठान्तरम् । ४ लहुओ लहुआ गुरुआ, छम्मासा छेदमूलदुगं । इति पाठान्तरम् । ५ अन्थरण । इति पा० ।

तणफलगविशेषज्ञापनार्थमाह –

एसेव गमो णियमा, फलएसु वि होति आणुपुव्वीए ।
णवरं पुण णाणत्तं, चउरो लहुगा जहण्णपदे ॥१२९७॥

जो तणेसु विधी भणितो फलगेसु वि एसो चेव विधी । नवरि णाणत्तं – चउरो लहुगा जहण्णपदे । जत्थ तणेसु मासलहुं । तत्थ फलगेसु चउलहू भवतीत्यर्थः ॥१२९७॥

वितियं पहुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
खंधारअगणिभंगा, दुल्लभसंथारए जतणा ॥१२९८॥

अणापुच्छाए वि नेज्ज । संथारगपभू निव्विसतो कतो, नट्ठो वा, उट्ठितो उव्वसितो वा, सुण्णो - पवसितो, मतो वा, अणप्पज्झो वा जातो, खंधावारभया वा बहितो अंतो अतिनेति, अग्गिभये वा नेति, विसय - भंगे वा नेति दुल्लभसंथारए वा जतणाए नेति ॥१२९८॥

इमा सा जतणा –

तम्मि तु असधीणे वा, पडिचरितुं वा सहीण वक्खित्ते ।
पुव्वावरसंझासु य, णयंति अंतो व बाहिं वा ॥१२९९॥

गिहे संथारगसामी जदा असहीणो तदा नयंति, सहीणे वा पडिचरितु जदा वक्खित्तचित्तो तदा णयंति, पुव्वसंझाए अवरसंझाए वा अंतातो बाहिं, बाहितो वा अंतो नयति ॥१२९९॥

जे भिक्खू सागारियसंतियं सेज्जा-संथारयं अणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं दोच्चं पि अणणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

[नास्तीमे द्वे सूत्रे उपलब्ध भाष्यचूर्णिप्रतषु]

जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा-संथारयं आताय अपडिहट्टु संपव्वयइ; संपव्वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

आदाय गृहीत्वा, अप्पडिहट्टु नाम अणप्पिणित्ता, सम्म एगीभावेण प्रव्रजति संप्रव्रजति तस्स मासलहु । एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ती अत्थं वित्थरेति –

पडिहरिणीओ पडिहारिओ य आताय तं गहेऊणं ।
अप्पडिहट्टुमणप्पित्तु संपव्वए सम्मगमणं तु ॥१३००॥

मासकप्पे पुण्णे जम्मि कुले गहितो संथारयो तस्स पच्चप्पिणंतस्स त्ति ज धारणं सो पाडिहारितो भण्णति । एरिसीए कडाए तं आदायगृहीत्वा पुण्णे मासकप्पे अपडिहट्टुमणप्पिणित्तु न प्रतीपं अर्पयतीत्यर्थः । सं एगीभावे व्रज । "व्रज" गतौ सम्यक् प्रव्रजनं संप्रव्रजन ॥१३००॥

संथारगो दुविहो –

सेज्जासंथारो ऊ, परिसाडि अपरिसाडिमो होति ।
परिसाडि कारणम्मि, अणप्पिणणे मासो आणादी ॥१३०१॥

सव्वगी सेज्जा, अड्ढातियहत्थो संथारो ।

अहवा – सेज्जा एव संथारगो सेज्जासथारगो । एक्केक्को दुविहो – परिसाडी अपरिसाडी । उडुवद्धे परिसाडी कारणे घेप्पति, त मासकप्पे पुण्णं अणप्पेतु वयंतस्स मासलहु आणादयो दोसा ॥१३०१॥

इमे य अन्ने दोसा –

सोच्चा गत त्ति लहुगा, अप्पत्तिय गुरुग जं च वोच्छेदो ।
कप्पट्ठखेलणे णयण डहण लहु लहुग जे जं जत्थ ॥१३०२॥

सुतं तेण संथारगसामिणा जहा ते सजता सथारगं अणप्पिणितु गता, चउलहुगा पच्छित्तं । परियणो य से भणति – "किं च सजताण दिण्णेण" । सो भणति – "अणप्पिते वि अणुग्गहो अम्ह" । एवं पत्तिए वि चउलहुं । अह अप्पत्तियं करेनि । तणा मे सुण्णा हारिता विणासिता वा चउगुरुगं । जं च वोच्छेदं करेति तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स, तद्दव्वस्स वा अण्णदव्वस्स वा, एत्थ वि चउगुरुग ।

अहवा – तम्मि सथारये सुण्णे कप्पट्ठाणि खेलति, मासलहुं । अह तुवट्टति मासगुरू । अह अण्णतो णयंति मासलहुं । अह दहति चउलहुं । डज्झतेसु य – अण्णपाणजातिविराहणा, जातिणिप्फण्णं च ॥१३०२॥

कप्पट्ठ-खेल्लण-तुयट्टणे य लहुओ य होति गुरुगा य ।
इत्थी-पुरिस-तुयट्टे, लहुगा गुरुगा य अणायारे ॥१३०३॥

पुव्वद्ध गतार्थम् । तम्मि सुण्णे सथारगे पुरिसित्थिसु तुयट्टेसु चउलहु । अणायारमायरतेसु चउगुरुगं । अहवा – सोउ गते इम फरुसवयणं भणेज्ज ॥१३०३॥

दिज्जंते वि तदा णेच्छित्तणं अप्पेसु ति त्ति भणिऊणं ।
कतकज्जा जणभोगं, कातूण कहिं मणे जत्थ ॥१३०४॥

गहणकाले ण देज्जत पि दिज्जमाणं नेच्छिऊण पुण्णे मासकप्पे "अप्पेसु" त्ति एवं भणित्ता णेऊण अप्पणो कते कज्जे सुण्णे जणभोग करेऊण "कहिं" त्ति क गाम नगरं वा "मण्णे" ति - पुनः शब्दो द्रष्टव्य., यथेत्ति - निट्ठुर, किं पुण गामं नगरं वा गतेत्यर्थः ॥१३०४॥

संथारगस्स गहणकाले इमा विही –

संथारेगमणेगे, भयणट्ठविधा तु होति कायव्वा ।
पुरिसे घर-संथारे, एगमणेगे य पत्तेगे ॥१३०५॥

सथारो घेप्पमाणो एगाणेगवयणे अट्ठविहभगरयणा कायव्वा । सा इमेसु तिसु पदेसु पुरिस-घर-सथारयेसु । एगेण साधुणा – एगातो घरातो एगो संथारो । पढमो भंगो । एवं अट्ठ भंगा कातव्वा । "एगमणेगे" त्ति - एग - गणे अणेगगणेसु वा ॥१३०५॥ साधारणपत्तेगेसु खेत्तेसु एस विधी भणितो ।

इमो अप्पिणंतेसु विधी "आणयणे" गाहा भणियव्वा –

आणयणे जा भयणा, सा भयणा होति अप्पिणंते वि ।
वोच्चत्थ मायसहिते, दोसा य अप्पिणंतम्मि ॥१३०६॥

आणयणे जा अट्ठिया भंगभयणा कता अप्पिणंते वि सा चेव अट्ठिया भगभयणा कातव्वा । अह विवरीतं अप्पेति, मायं वा करेति; न वा अप्पेति वोच्छेदादयो दोसा भवंति । जे पढमा चत्तारि भंगा तेसु जह चेव गहणं तह चेव अप्पिणं ति । पंचमभंगे गहणकाले "अम्ह अण्णतरो अप्पेहिति" त्ति । एस विधी न कतो, एगप्पणे वोच्चत्थं भवति । छट्ठभंगे एगो साधू पच्चप्पिणिउं पिट्ठतो अवरो साहू चिंतेति "मज्झया वि तणकंबीओ तत्थेव नेयव्वा, तस्स च्चयाणं मज्झे छुभति । अयाणतस्स, नेच्छति नेउं ति, एव माया भवति । सत्तमभगे ततियभंगे वा ओहारकंबीओ तणा वा एगघरे समप्पेत्तस्स अणप्पिणणं सभवति । जम्हा एते दोसा तम्हा सव्वेहिं सव्वे वीसु अप्पेयत्तव्वा ॥१३०६॥

कारणे पुण विवरीत अप्पेति, न अप्पेति वा ।

इमे य ते कारणा –

वितियपदज्झामिते वा देसुट्ठाणे व बोधिगादीसु ।
अद्धाणसीसए वा, सत्थो व्व पधावितो तुरितं ॥१३०७॥

सो संथारगो ज्झामितो, देसुट्ठाणेसु वा सो सथारगसामी कतो वि गतो, बोहियभए सथारगसामी साधू वा नट्ठा, अद्धाणसीसए वा सत्थो लद्धो तुरितं पहाविता, जाव अप्पिणंति ताव सत्थातो फिट्टंति ताव अण्णो दुल्लभो सत्थो ॥१३०७॥

एतेहिं कारणेहिं, वच्चंते को वि तस्स तु णिवेदे ।
अप्पाहेंति सागारियादि असतऽण्णसाधूणं ॥१३०८॥

न पच्चप्पिणंति, विकरणं पुण करेंति । अण्णे साधू सत्थेण वयति । एगो साधु तस्सेव निवेदयति – सत्थो तुरितं पधावितो, तेण न आनीओ, तुब्भे इयं संथारयं आणेज्जह । अण्णे वा साधू भणंति – तुब्भे इम संथारयं अमुगे कुले अप्पेज्जह । असति साहूण सागारियादिण अप्पाहेंति । इम सथारयं अप्पेज्जाह, णिवेदणं वा करेज्जह । एस तणकंबीणं विधी भणिता ॥१३०८॥

एसेव गमो णियमा, फलगाण वि होति आणुपुव्वीए ।
चतुरो लहुया माया अ णत्थि एतत्थ णाणत्तं ॥१३०९॥

फलगेसु सव्वो एसेव विधी, "णवर" - विसेसो, पच्छित्तं चउलहुगा । माया य णत्थि - जहा तणेसु कंबीसु वा अण्णे तणे कंबीओ वा पक्खिवंति तहा फलगाण णत्थि पक्खेवो ॥१३०९॥

जे भिक्खू सागारियं संतियं सेज्जा-संथारयं आयाए अविगरणं -
कट्टु अणप्पिणित्ता संपव्वयति; संपव्वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०५७॥

अविकरणं णाम जं संजतेण कय, तणाण वा संथरणं, कंबीण वा बंधो, फलगस्स वा ठवण । एव अफोडित्ता अणप्पिणित्ता वयति मासलहु ।

इमा णिज्जुत्ती:-

परिसाडिमपरिसाडि य, सागारिय संतियं तु संथारं ।
अविकरणं कातूणं, दूतिज्जंतम्मि आणादी ॥१३१०॥

दोसु सिसिर-गिम्हासु रीइज्जति, दूइज्जति वा, दोसु वा पदेसु रीइज्जति ॥१३१०॥

अधिवकरणे इमे दोसा –

किड्ड तुयट्ट अणाचार णयणे डहणे य होति तह चेव ।
विगरण पासुड्ढं वा, फलगतणेसुं तु साहरणं ॥१३११॥

कप्पट्ठगाणं किड्डुणं, तुअट्टण, थीपुरिसाण तुयट्टणे अणायारसेवणं वा, अण्णत्थ वा णयणं, डहणं वा, एतेसु चेव जे दोसा पच्छित्तं च पूर्ववत् । फलगस्स विकरण पासल्लियं करेति, उड्ढं वा करेइ, तणेसु साहरणं, कंबीसु बंधण छोडण वा ॥१३११॥

किं च –

पुंजा पासा गहितं, तु जं जहिं तं तहिं ठवेतव्वं ।
फलगं जुत्तो गहितं, वाघाते विकरणं कुज्जा ॥१३१२॥

जे तणा पुंजातो गहिता ते पुंजे ठवेयव्वा । जे पासातो गहिता ते तहिं ठवेयव्वा । जं वा जत्तो गहियं तं तहियं ठवेयव्व ति । कंबीमादी फलगं जतो पदेसातो गहितं त तहिं ठवेयव्व । मासकप्पे वा-पुण्णे अन्तरा वाघाते उप्पण्णे .णयमा विकरणं कायव्व, ण करेज्जा वि विकरणं, ण य पावेज्जा पच्छित्तं ॥१३१२॥

बितियपदमधासंथड देसुट्ठाणे व बोहिगादीसु ।
अद्धाणसीसए वा, सत्थो व पधावितो तुरितं ॥१३१३॥

अहासथड नाम णिप्पकंप पट्टादि । शेप पूर्ववत् ॥१३१३॥

जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारंय विप्पणट्ठं ण गवेसति, ण गवेसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

वि इति विधीए, प इति प्रकारेण, रक्खिज्जमाणो णट्ठो विप्पणट्ठो । शेपं पूर्ववत् ।

संथारविप्पणासे, वसधीपालस्स मग्गणा होति ।
सुण्णे[१] बाल[२]-गिलाणे[३], अव्वत्तारो[४]वणा भणिता ॥१३१४॥

सुत्ते संथारविप्पणासो दिट्ठो । सो पुण णासो अरक्खिते संभवति, कुरक्खिते वा । अतो वसही-पालगस्स मग्गणा कज्जति, सुण्णं वा वसहिं करेति, बालं वा वसहीपाल ठवेति ॥१३१४॥

एतेसु पदेसु गणाधिपतिणो आरोवणा भणति –

पढमम्मि य चतुलहुगा, सेसाणं मासिगं तु णाणत्तं ।
दोहि गुरू एगेणं, चउत्थपदे दोहि वी लहुओ ॥१३१५॥

पढमं सुण्णपदं, तत्थ चउलहुगा। सेसेसु तिसु बाल-गिलाण-अव्वत्तेसु मासलहुं। "णाणत्त" मिति - विसेसितं तवकालेहिं चउलहुग्र, तवकालेहिं गुरुगं, बाले तवगुरुं, गिलाणे कालगुरुं, अव्वत्ते दोहिं वि लहुं ॥१३१५॥

सुण्णे इमे दोसा -

मिच्छत्त-बडुय-चारण-भंडे य मरणं च तिरियमणुयाणं।
आदेस-बाल-णिक्केयणे य सुण्णे भवे दोसा ॥१३१६॥

मिच्छत्तदारस्स वक्खाणं -

सुण्णं वसही करेंताणं सेज्जायरो मिच्छत्तं वएज्ज ॥१३१६॥

सोच्चाऽपत्तिमपत्तिय, अकतण्णु अदक्खिणा दुविधछेदो।
भतिभरागमधाडण, गरहा ण लब्भंति वऽण्णत्थ ॥१३१७॥

ते साहू सुण्णं वसहिं काउ गया सव्वभंडगमादाय। सागारिएणं सुण्णा वसही दिट्ठा-सो पुच्छति कहिं गता साहू ? अण्णेहिं से कहियं - ण याणामो।

अहवा भणंति - सव्वभंडगमाताय गता। ते सतिए सोच्चा जति तस्सऽप्पत्तियं अप्पीतिमुप्पण्णा तो साहूण चउलहुं। अह से अप्पत्तियं जातं, अप्पत्तिओ य भणाति - अहो ! अकयण्णू साधवो, अदक्खिण्णा, णिण्णेहा, अणापुच्छाए गया, लोगोवयारं पि ण जाणंति, लोगोवयारविरहितेसु वा कुतो धम्मो। एव अप्पत्तिए चउगुरुं। दुविध-वोच्छेदं वा करेज्जा। तस्स वा साहुस्स। अण्णस्स वा तद्दव्वस्स वा अन्नदव्वस्स वा। एव सो रुट्ठो। ते य भिक्खायरियाय गता भत्तपाणभरियभायणा आगता। कसातितो धाडेति। दिवसतो चउलहुं। ते य भत्तपाणोवगरणभाराक्कंता पगलते य अन्नवसहिं मग्गमाणा गाढं परिताविज्जंति। तण्णिप्फण्ण च पच्छित्तं। गरहिज्जते य लोगेण - णूण तुब्भे असाधुकिरियट्ठिवा, तेण धाडिया, अण्णत्थ वि ठागं ण लभति। ते य वसहिमलभमाणा अण्णं खेत्तं वएज्ज। एव मासकप्पे भेदो भवति ॥१३१७॥

जतो भण्णति -

भेदो य मासकप्पे, जमलंभे विहाति निग्गतावण्णे।
बहि-भुत्त णिसागमणे, गरह-विणासा य सविसेसा ॥१३१८॥

मासकप्पे भेदे य जा विराहणा, जं च ते अद्धाणे खुहपिवासासीउण्ह वा सश्रमं वसहिमलभता पावंति तण्णिप्फण्णं। ज च सो उ दुल्लहो विहाति णिग्गयाणं अण्णसाहूण ण देज्ज वसहिं। वसहि-अभावे य जं च ते पाविहिंति सावयतेणाति। एतेहिंतो तण्णिप्फण्ण। एते भिक्खं हिंडिउं आगताण दोसा। अध बाहिं भोत्तुं सुत्तपोरिसिं काउ वियाले आगता ण लभति तो चउगुरुग। राम्रो धाडिता राम्रो चेव अण्ण वसहिं मग्गमाणा सविसेसं गरह पाविंति। राम्रो य अडता तेण-सावय-वाल-कंटक-आरक्खिएहिं तो सविसेसं विणासं पावेंति।

अहवा - सो सम्मत्तं पडिवण्णो अणापुच्छाए णिग्गता। "आलोइय" त्ति काउं मिच्छत्तं वएज्जा ॥१३१८॥

इदाणिं "[1]वडुय" त्ति दार –

सुण्णं दट्ठुं वडुगा, ओभासण ठाह जति गता समणा ।
आगमपवेसऽसंखड सागरि दिण्णं मए दियाणं ॥१३१९॥

सुण्णं वसहिं दट्ठु वडुएहिं सागारिओ ओभट्ठो । सो सागारिओ भणाति – समणा ठिता ? ते भणंति – गता, सुण्णा वसही चिट्ठति । सो भणाति – ठाह, जति गता साहू । ते एवं ठिता साहू य आगया वसहिं पविसंता वडुएहिं णिरुद्धा । एवं तेसिं असंखडं नाय । साहू भणंति – "अम्ह दिण्णा" । इतरे भणति – "अम्ह दिण्णा" । साहू सागारिसमीवे गता भणति – वडुएहिं णिरुद्धा वसही । सो भणति – तुब्भे वसहिं सुण्णं काउ णिग्गया, अतो मए सुण्ण त्ति काउं वडुयाण दत्ता ॥१३१९॥

सेज्जायरो भणति –

संभिच्चेणं व अच्छह, अलियं न करे महं तु अप्पाणं ।
उड्डंचग अधिकरणं, उभयपदोसं च णिच्छूढा ॥१३२०॥

सभिच्चेण अच्छह एगट्ठा चेव, अलियवादी अप्पाण अहं ण करेमि, अतो अहं ण धाडेमि । तत्थ सभिच्चेणं अच्छताणं सज्झाय-पडिलेहण-पच्चक्खाण-वदणादिसु उड्डचये करेज्ज । कुट्टियाओ करेज्ज । तत्थ कोइ असहणसाहू तेहिं सद्धिं अधिकरणं करेज्ज । ते साहूहिं वा णिच्छूढा, अहाभद्दसेज्जायरेण वा णिच्छूढा, साहुस्स सेज्जायरस्स वा उभयस्स वा पदोसं गच्छेज्ज ॥१३२०॥

सागारिसंजताणं, णिच्छूढा तेण अगणिमादीसु ।
जं काहिंति पउट्ठा, सुण्णं करेंते तमावज्जे ॥१३२१॥

पदुट्ठो [2]आउसेज्ज वा हणेज्ज वा गिहाति वा डहेज्ज वा हरेज्ज वा किंचि । अण्णं च असजएहिं सद्धि वसताणं आउज्जोवण वणियादिदोसा भवति ।

साहूहिं सेज्जातरेण वा णिच्छूढा पदोसं गता, जहा वडुया तेणागणिमादिदोसे करेज्जा । एत्थ उवकरणववहारादिसु जं पच्छित्तं तं सव्वं, सुण्णं करेंतो पावति ॥१३२१॥

"[3]चारण-भडे" दो दारे एगगाहाए वक्खाणेति –

एमेव चारणभडे, चारण उड्डंचगा तु अधियतरो ।
णिच्छूढा व पदोसं, तेणागणिमादि जध वडुगा ॥१३२२॥

"चार-भडे" त्ति दो दारा गता ॥१३२२॥

"इदाणिं मरण तिरियमणुयाणं [4]आतेसा य" एते तिण्णि दारा एगट्ठे भणाति –

छड्डणे काउड्डाहो, णासारिसा सुत्तऽवण्णे अच्छंते ।
इति उभयमरणदोसा, आदेस जधा वडुयमादी ॥१३२३॥

सुण्णवसहीए तिरिक्खजोणिया गोणसुणगमादी, मणुओ रंको छेवडितो वा, पविसित्ता मरेज्ज । तत्थ जति असजतेणं छड्डावेंति तो असंजतो कायाण उवरिं छड्डेति छक्कायाण विराहणा ।

---

१ गा० १३१६ । २ आक्रोशयेत् । ३ गा० १३१६ । ४ गा० १३१६ ।

अहवा – संजमभीतो असंजएण ण छड्डावेति, णेच्छति वा असजतो, ततो अप्पणा चेव छड्डेति। "गरहिय" त्ति काउं उड्डाहो भवति। अह एसिं दोसाण भीया ण परेण अप्पणा वा छड्डेति तो तत्थ अच्छंते कुहियगंधेण णासारिसाओ जायंति, तं चेव असज्झाय ति काउ सुत्तपोरिसिं अत्थ पोरिसिं वा ण करेति, तण्णिप्फण्णं पच्छित्तं च भवति। लोगो य अवण्ण गेण्हति – असुइया सुसाणेऽच्छति। तम्मि कलेवरे अच्छंते एते दोसा। इति उपप्रदर्शने। उभयं तिरियमणुया। आएसा णाम पाहुणगा। तेसु जे वडुय-चार-भडाण दोसा ते णिरवसेसा ॥१३२३॥ तिण्णि य दारा गता।

इदाणिं "[1]वाल-णिक्केयणे" य दो दारा एगट्ठा वक्खाणेति –

अधिकरणमारणाणी, णितम्मि अच्छंते वाले आतवधो।
तिरियी य जहा वाले, मणुस्सस्थी य उड्डाहो ॥१३२४॥

वालो नाम अहिरूवं सप्पादि, सुण्णवसहीए पविसेज्ज। जति साधवो आगया तण्णिक्कालेंति तो अधिकरण भवति। कहं? हरितादिमज्झेण गच्छेज्जा, मंडूगादि वा डसेज्जा, मारिज्जंति वा णीणिज्जंतो लोगेण। अह एतद्दोसभीता ण छड्डेति तो अच्छते वाले आयवधो, तेण डक्को साहू मरेज्ज, तण्णिप्फण्णं च पच्छित्त भवति। णिक्केयणं दुविध – तिरक्खीणं मणुस्सीण य। तिरक्खीण जहा वाले अधिकरणं मारणं आयवहो य। मणुस्सी जति सुण्णाए वसहीए पवेसेज्जा तो लोगो भणेज्ज – एतेहिं चेव तं जणियं, एतीए उड्डाहो। अह णीणिज्ज ति तो अधिकरणं, णिरणुकंप त्ति वा उड्डाहो, तं वा चेडरूव, सा वा वातातवेहिं मरेज्जा।

अधवा – सा णीणिज्जती पदुट्ठा [2]छोभ छुभेज्ज – जहा एतेहिं मे जणिय।
इदाणिं णिच्छुभंति त्ति उड्डाहो ॥१३२४॥
अधवा –

छड्डेऊण जति गता, उज्झमणुज्झंते होंति दोसा तु।
एवं ता सुण्णाए, वाले ठविंते इमे दोसा ॥१३२५॥

काती अणाहित्थी वहिचारिणी वा साधुवसहीए सुण्णाए पविसित्ता तं चेडरूव छड्डेत्ता गया। ते साधवो णिरणुकंपा जइ उज्झंति तया सिगालादिसु वा खज्जति, वातातवेसु वा मरेज्जा। अणुज्झतेसु तम्मि रुयते असज्झाओ, लोगो वा भणेज्ज – कुतो एवं? जइ वसहीए सुण्णाए पविसित्ता चेडरूव छड्डित्तं, रायपुरिसा वा गवेसेज्ज। एवं वित्थारे उड्डाहोब्भवो भवे ॥१३२५॥ एते सुण्णवसही दोसा।

सुण्णवसहीदोसभीता वालं ठवेज्ज, तत्थिमे दोसा –

बलि[1] धम्मकहा[2] किड्डा[3], पमज्जणा[4] वरिसणा[5] य पाहुडिया[6]।
खंधार अगणिभंगे, मालवतेणा व णातीया ॥१३२६॥ दा० गा०

अण्णवसतीए असती, देवकुलादी ठिता तु होज्जा हि।
बलिया वरिसादीणं, तारिसए संभवो होज्जा ॥१३२७॥

---

१ गा० १३१६। २ कलकं।

तत्थ पढमं दार बलि त्ति । उवदोसो सपाहुडियाए वसहीए ण ठायव्व, ते य साहुणो कारणेण देवकुलमादिसु सपाहुडियाए वसहीए ठिता होज्जा, ते पुण बलिकारया सभावेण वएज्जा, [1]कयगेण वा ॥१३२७॥

तत्थ सभाविगेण भण्णति –

साभावियणिस्साए, व आगतो भंडगं अवहरंति ।
णीणाविंति व बाहिं, जा पविसति ता हरंतऽण्णे ॥१३२८॥

साभाविगा बली ण साहूण कारणा अवहारणिमित्तं आणिज्जति । अप्पणो देवयपूयणट्ठताए आगया, ण हरण बुद्धीए । तेसिं बलिं करेमाणाण विरहं पासित्ता हरणबुद्धी जाता, ताहे हरति तण्णीस्साए । अण्णे पुण धुत्ता बलिकारगणीस्साए आगता। जता एते बलिं करिस्संति तदा सो वालो वसहीपालो बाहिं णिक्कलिस्सति, बहुजणत्तणेण वा वक्खित्तो भविस्सति, तदा अम्हे अवहरिस्सामो त्ति अवहरंति । अवहरणट्ठताए भणंति ते धुत्ता – अरे खुड्डुगा भंडगं तुब्भे बाहिं णीणितेल्लय करेहि, मा विणस्सिहि । ताहे सो बालो त कज्ज अयाणतो बहु च उवकरण एक्कवाराए अचाएंतो थेव थेव घेत्तुं णीणेति, जाव अण्णेस्स पविसति तावऽण्ण हरति अण्णे धुत्ता ॥१३२८॥

एमेव कतिवियाए, णिच्छोढुं तं हरंति से उवधिं ।
बाहिं व तुमं चिट्ठसु, अवणे उवधिं च जा कुणिमो ॥१३२९॥

[2]कैयवबली साहूवकरणस्स हरणट्ठताए जणाउले वक्खित्तस्स हरिस्सामो त्ति करेंति । जहा साभावियाए तण्णिस्सागता धुत्ता वाल णिच्छोढु हरंति । एव कइयवेण वि ।

अधवा – त बालं भणंति – बाहिं तुमं चिट्ठसु, जाव अम्हे उवालेवणादि करेमो, उवकरण वा बाहिं णीणेहि ॥१३२९॥ बलि त्ति दारं गत ।

इदाणिं "[3]धम्मकहे" त्ति दारं भण्णति –

कतगेण सभावेण व, कहा पमत्ते हरंति से अण्णे ।
किड्डइ तहेव रिक्खा, पास त्ति व तहेव किड्डदुगं ॥१३३०॥

धम्मं पि कयगेण वा सभावेण वा सुणेज्ज । साभावियधम्म-सवणे पमत्तस्स धम्मकहाए अण्णे से उवकरणं हरति । कइतव-धम्मसवणे अण्णे पुच्छति, अण्णे हरंति । धम्मकहे त्ति दार गत ।

"किड्ड" त्ति दार भण्णति – तहेव "किड्डदुग" त्ति । जहा बलीए सभावेण कइतवेण वा एति तहा किड्डाणिमित्तमवि तत्थ सो बालो सय वा किड्डेज्ज, तेहिं वा भणिओ किड्डेज्ज । रिक्ख त्ति रेखा को कतिवारे जिप्पति, सय रेहा कड्ढति, तेहिं वा भणिओ कड्ढति ।

अधवा – बालत्तणेण ते किड्डु ते पासंतो अच्छति । एव वक्खित्तस्स अवहरति ते भुयगा ॥१३३०॥ किड्डु त्ति दार गत ।

इदाणिं "[4]पमज्जणा वरिसण" त्ति दो दारा –

जो चेव बलियगमो, पमज्जणा वरिसणे वि सो चेव ।
पाहुडियं वा गिण्हसु, पडिसाडणियं व जा कुणिमो ॥१३३१॥

१ कैतवेन वा । २ कैतवबली । ३ गा० १३२६ । ४ गा० १३२६ ।

जो वलीए गमो प्रकारः स । एवसद्दो-अवधारणे, सम्मज्जणं, प्रमार्जनं, आवरिसणं पाणिएणं उप्फोसणं, इहावि स एव प्रकारार्थः ।

इदाणिं "पाहुडि" त्ति दारं भण्णति – पच्छद्धं । पाहुडिय त्ति भिक्खा-बलि-कूर-परिसाडणं वा। त पि दुविधं – कईतवेण वा, सब्भातेण वा । कोति भणेज्ज – एहि घरे, भिक्ख गेण्हाहि ।

अहवा भणेज्ज – जावच्चणिय करेमो ताव दुवारे चिट्ठसु । एवं भिक्खागयस्स बाहिरे ठियस्स वा अवहरंति ॥१३३१॥ "पाहुडिय" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]खंधावार-गणि" त्ति दो दारा भण्णंति –

खंधारभया णासति, सो वा एति त्ति कतितवे णासे ।
अगणिभया व पलायति, णस्सुसु अगणी व एसेति ॥१३३२॥

खधारे पत्ते बालत्तणेण तब्भया णासति, णासंतो हीरेज्जा । सुण्णवसहीए वा से उवकरणं हीरेज्ज । कयगेण सभावेण वा भणेज्ज सो वा एति त्ति, स इति खधावार इत्यर्थ. । एवं स्वभावेन, कृतकेन वा तद् भयान्नस्यमानस्य आत्मोपकरणापहारसभव इत्यर्थ. । साभावियअगणीते वि तब्भया णासति, कोति कइतवेण भणेज्ज – डहमाणो अगणीए से इज्जसु, गच्छेत्यर्थः । एव नष्टे उवकरणं अवहीरति ॥१३३५॥

इमे य अण्णे दोसा भवंति –

उवधी लोभ-भया वा, ण णीति ण य तत्थ किंचि णीणेति ।
गुत्तो व सयं डज्झति, उवधी य विणा तु जा हाणी ॥१३३३॥

उवहीए लुद्धो आयरियादि वा जुरीहिंति तब्भया ण णीति । ण य बालत्तणेण किंचि उवकरणं णीणेति, गुत्तो प्रविष्टः उवकरणणिमित्तं अगणिभया वा पविट्ठो, सयं डज्झति, उवहिं विणा जा परिहाणी तण्णिप्फण्णं । अगणि त्ति दारं गतं ॥१३३३॥

डंडियखोभादीओ, भंगो अधवा वि बोहिगादिभया ।
तत्थ वि हीरेज्ज सयं, उवधी वा तेण जं तु विणा ॥१३३४॥

[2]भगशब्द खधावार-अगणीसु योज्यः ।

अहवा – "भंगे" त्ति दंडिते मते भंगो भवति ।

अहवा – बोहिगभये भंगो भवेज्ज । एत्थ वि सय हीरेज्ज उवही वा । तेण विणा ज पावति तण्णिप्फण्णं ॥१३३४॥

इदाणिं "[3]मालवतेणे" त्ति दारं –

मालवतेणा पडिता, इतरे वा णासते जणेण समं ।
ण गेण्हति सारुवधी, तप्पडिबद्धो व हीरेज्जा ॥१३३५॥

मालवगो पव्वतो, तस्सुवरिं विसमते तेणया वसंति, ते मालवतेणा । तेसु पडिएसु णासते जणेण सम इतरे वि त्ति । कइतवेण कोई भणेति मालवतेणा पडिया । सो बालो णासतो ण गेण्हति सारुवहिं, तम्मि वा उवकरणे पडिबद्धो स एव बालो हीरेज्ज ॥१३३५॥ मालवतेणे त्ति दार गत ।

---

१ गा० १३२६ । २ गा० १३२६ । ३ गा० १३२६ ।

इदाणिं "[1]णाइ" त्ति दारं। तं पि सभावेण कतितवेण वा –

सण्णाततेहि णीते, एंति व णीतं ति णट्ठे जं तुवधिं।
केहि णीयंति कइतवे, कहिए अण्णस्स सो कधए ॥१३३६॥

सण्णायएहिं आगएहिं वसहीए एक्कतो दिट्ठो णीतो य। तम्मि णीते अण्णा उवहिं हरेज्ज, तण्णिप्फण्ण।

अहवा – अण्णेण ते तस्स [2]णीताएता दिट्ठा, तेण से कहियं – णीया एए एंति, आगया वा, ताहे सो भया दलाएज्ज। एव ता सभावेणं। अह कइतवेण केइ जणा दो धुत्ता भरिता। ताण एक्को चेल्लय-समीवं गतो, पुच्छति – तुज्झ किं णाम ? तेण से कहियं – अमुगं ति। कहिं वा तुमं जाओ उप्पण्णो ? माउपिउभगिणिमाउगाणं णाम गोयाति वयो वण्णो ॥१३३६॥

चिंधेहिं आगमेत्तुं, सो वि य साहति से तुह णिया पत्ता।
णट्ठे उवधि गहणं, तेहिं वहि पेसितो हरती ॥१३३७॥

चिंधेहिं आगमेउ अण्णस्स साहति। सो खुड्डगसमीवं गतो भणइ – अहो इंदसम्म ! किं ते वट्टति ? खुड्डगो भणाति – मज्झ णामं कह जाणासि ? सो भणति – ण तुज्झ केवल, सव्वस्स वि ते पिउमादियस्स सव्वस्स सयणस्स जाणामि। सव्वम्मि कहिए संवदिए य धुत्तो भणाति – ते तुज्झ सयणा आगता। तव कएण, अमुगत्थ मए दिट्ठ त्ति, इदाणिं मुहुत्तमेत्तेण पविसंति। ताहे सो पलायति। ते य उवहिं हरंति।

अधवा भणेज्जा – अहं ते तेहिं व तावतो पेसितो, सो वि तस्स विसंभेज्जा। वीसत्थस्स य उवहिं हरेज्ज।

अहवा सो भणेज्जा – अह तव कएण पेसिओ, एहि गच्छामो। ताहे सो पलाएज्ज। सो वि से उवधिं हरेज्ज। अह इच्छइ खुड्डगो गंतु तं चेव हरति ॥१३३७॥

वलादियाण तिण्ह वि एते दारा सभवति। आह –

एते पदे ण रक्खति, बालगिलाणे तधेव अव्वत्ते।
णिद्दा-कधा-पमत्ते, वत्ते वि हुजे भवे भिक्खू ॥१३३८॥

एते मिच्छत्तादि मालवतेण-णाइ-पज्जवसाणा पदा ण रक्खति बालो, गिलाणो य [3]बालगिलाणे, तहा अव्वत्तो वि ण रक्खति, एते पदे अज्ञत्वान्न रक्षति। जो पुण वत्तो भिक्खू सो णिद्दा-विकथा-प्रमादत्वात् ॥१३३८॥ बाल इति दारं गतं।

इदाणिं "[4]गिलाण अव्वत्त" दो दारा –

एमेव गिलाणे वी, सयकिड्डकधापलायणे मोत्तुं।
अव्वत्तो तु अगीतो, रक्खणकप्पे परोक्खो तु ॥१३३९॥

एवमेव त्ति जे बालदोसा ते गिलाणे वि। णवरं – तस्स जो आयसमुत्थो किड्डादोसो धम्म-कहादिदोसो वा, भया पलायणदोसा य, एते ण संभवति। असमर्थत्वात्। गिलाणो वा परिभूतो त्ति काउ-वसहिपालो त्ति ण ठविज्जति। एगागी वा अच्छतो कुवति। लोगो वा भणति – अहो णिरणुकपा छड्डेउं गया,

---

[1] गा० १३२६। [2] नीना इति पाठान्तरम्। [3] जहा य बाल – गिलाणा प्र०। [4] गा० १३२३।

उड्डाहो भवति। अपत्थं वा अकप्पिअं वा एगागी अच्छंतो भुंजेज्जा। अव्वत्तो णाम अगीयत्थो, सो रक्खणकप्पे "परोक्खो" बलिधम्मकहादिसु साभावियकतकेसु वा अज्ञ इत्यर्थः. ॥१३३९॥

जम्हा एते दोसा बालाइयाणं –

तम्हा खलु अबाले, अगिलाणे वत्तमप्पमत्ते य।
कप्पति वसधीपाले, धितिमं तह वीरियसमत्थे ॥१३४०॥

तम्हेति कारणा, खलु इति अवधारणे, अबाल इति अष्टवर्ष-प्रतिषेधार्थं। असावपि अग्लान, अबालो वि य। वत्तो, दव्वतो वंजण जातो, भावओ गीतत्थो। सो वि अप्पमत्तो "कप्पति" त्ति। एरिसो वसहिपालो ठवेउं। किं "धितिम" सो वसहिपालो तण्हाए वा छुहाए वा परिगतो ण सुण्णं वसहिं काउं भत्ताए वा पाणाए वा गच्छति, धितिबलसपन्नो होउं। "तथे" ति यथा धृतिबलेन युक्तः तथा वीर्येणापि। वीरियस्स सामत्थं वीरियसामत्थं। समत्थसद्दो वा युवतवाचक, वीर्ययुक्त इत्यर्थः। ण तेण पडिणीएहिं परब्भतो वि जिणकप्पतिगो व उदासिण्णं भावेति, सव्वावतीसु वीरियसामत्थं दरिसेति ॥१३४०॥

ते पुण केत्तिया वसहिपाला ठवेयव्वा? उच्यते –

सइ लाभम्मि अणियता, पणगं जा ताव होतऽवोच्छित्ती।
जहण्णेण गुरु अच्छति, संदिट्ठो वा इमा जतणा ॥१३४१॥

सति भत्तपाणलभे जावतिएहिं भिक्खाए गच्छतेहिं गच्छस्स पज्जत्त भवति, तावतिया अभिग्गहिय-अणभिग्गहीया वा गच्छंति। सेसा अणियया अच्छंति।

अहवा – पणग वा आयरियो उवज्झाओ पवत्ती थेरो गणावच्छेतितो य एते पच।

अहवा – आयरिओ उवज्झाओ थेरो खुड्डो सेहो एते पंच।

अहवा – जो सुतत्थाण अव्वोच्छित्तिं काहिनि सो आयरियस्स सहातो अच्छति। अह ण संथरति तो जहण्णेण गुरु चिट्ठति।

अहवा – आयरियस्स कुलादिकज्जेहिं णिग्गमणं होज्ज, ताहे जो आयरिएण सदिट्ठो – "मया णिग्गते अमुगस्स सव्वं आलोयणादि करेज्जह" सो वा अच्छतु। तस्स य वत्तस्स वसहिपालस्स [1]बलिधम्मकहा-दिएसु सभावकतगेसु पडुप्पण्णेसु इमा जयणा ॥१३४१॥

अप्पुव्वमतिहिकरणे, गाहा ण य अण्णभंडगं छिविमो।
भणति य अठायमाणे, जं णासति तुज्झ तं उवरिं ॥१३४२॥

अपुव्वा बलिकारया जे तम्मि देवकुले पडिचरगा, ते ण भवति। एत्थ ऽट्ठमि-चउद्दसादिसु बली कज्जति। ते पुण अतिही ते चेव उवट्ठिता।

कतगेण तेणग त्ति णाऊण गाहं भणति –

"ण वि लोणं लोणिज्जति, ण वि तुप्पिज्जति घत व तेल्ल वा।
किह णाम लोगडंभग! वट्टम्मि ठविज्जते वट्टो" ॥
[1]अन्न भडेहि वण, वणकुट्टग! जत्थ ते वहइ चच्चू।
भंगुर वण वुग्गाहित!, इमे हु खदिरा वइरसारा ॥

---

१ बृहत्कल्पपीठिकाटीकायां पूर्वोक्त-चूर्णि-निर्दिष्ट-गाथया सह एषा अन्याऽपि गाथा समुपलभ्यते।

एवं वुत्ते अम्हे णाय त्ति णासंति ।

अहवा – ते भणिज्ज – इम उवहिं अवणेहि, अम्हे बलिं करेमो ।

ताहे साहू भणति –

भिक्खादिगताणं अण्णसाहूणं अम्हे उवकरण ण च्छिवामो ।

अह ते धुत्ता बोलेण हरिउकामा एक्के कोणादिसु सयमेव काउमारद्धो ।

ताहे साहू भणाति –

वसहीए बाहिं ठिच्चा अण्णजणं सुणावेंतो – अहो ! इमे केति मम बलामोडीए उवकरणं विलोवेंति ।

एवं च भणाति – "जं णासति त तुज्झ उवरिं ॥१३४२॥

कारणे सपाहुडि-ठिता, वासासु करेंति एगमायागं ।
साभावियदिट्ठे वा, भणंति जा सारवेमुवहिं ॥१३४३॥

सपाहुडियाए वसहीए ण ठातव्वं । ते पुण साहवो अण्ण - वसहि - अभावे कारणे ठिता । तत्थ वासासु उवकरणं एगमायोग एगबधणं करेंति । अह बलिकरा साभावियतिथीए करेंति । दिट्ठपुव्वा य बलिकारका । ताहे साधू भणति – जाव अम्हे एगकोणे सारवेमो उवहिं ताव ठिता होइ ॥१३४३॥

उव्वरगे कोणे वा, कातूण भणाति मा हु लेवाडे ।
बहुबल-पेल्लण ऽसारवणे, तहेव जं णासती तुज्झं ॥१३४४॥

सव्वोवगरण उव्वरगे छुभति । अह णत्थि उव्वरगो तो सव्वोवकरण एगकोणे करेंति । अण्णत्थ वा काऊणं भणंति – सणियं उवलेवणं करेज्जाह, मा लेवाडेहिह । अह ते बहु बला य पेल्लंति, सारविज्जत ण पडिक्खति । एत्थ वि तहेव भणाति – "जं णासति तं तुज्झं उवरिं" ॥१३४४॥

कतगेण, सभावेण वा धम्मसवणोवट्ठिते भणाति –

णत्थि कहालद्धी मे, दिट्ठो व भणाति दुक्खती किं चि ।
दाणादि असंकणिया, अभिक्खमुवओगकरणं तु ॥१३४५॥

णत्थि मे धम्मकहा लद्धी, ण वा जाणामि । ते भणंति – दिट्ठो पुरा अम्हेहिं कहेतो धम्मं । ताहे भणाति – सिर गलगो वा दुक्खति, विस्सरितं वा तं पुव्वाधीतं । अह ते दाणादिसड्ढा असंकणिया, तेसिं कहेंतो पुणो-पुणो उवकरणे उवउज्जति, मा तण्णिस्साए अण्णे अवहरेज्ज । आदिसद्दातो अभिगमसम्मत्तादिणो घेप्पति ॥१३४५॥

[1]किड्डाए इमा जयणा –

दट्ठुं पि णेण लज्झा, मा किड्डह मा हरेज्ज को तत्थ ।
सम्मज्जणाऽऽवरिसण, पाहुडिया चेव बलि सरेसा ॥१३४६॥

दट्ठुं पि अम्हं ण कप्पति, मा तुज्झे किड्डह, मा तुज्झं णिस्साए अम्ह उवकरण हरेज्ज, [2]सम्मज्जणे [3]आवरिसाणे [4]पाहुडियाए य जहा बलीए जयणा तहेव दट्ठव्वा ॥१३४६॥

१ गा० १३२६ । २, ३, ४,– गा० १३२६ ।

भिक्खाणिमंतितो इम भणाति –

अंतर णिमंतिओ वा, खंधारे कइतवे इमं भणति ।
किण्णो निरागसाणं, गुत्तिकरो काहिती राया ॥१३४७॥

भिक्खाणिमंतितो भणाति – अज्ज अम्हाण "अतर" त्ति उववासो । कइतव-खंधावारे इमं भणति – "किम" ति परप्रश्ने, न इत्यात्मनिर्देशे, आकृष्यत इति आगसणं, तं च दविणं, त जस्स णत्थि सो णिरागसो । गुत्ति करोती ति गुत्तिकरो, गुत्ती रक्खा भण्णति । स गुत्तिकरो राया अम्ह णिरागसाण किं काहिति ॥१३४८॥

साभावित-खधावारे इमं भणाति –

पभु-अणु-पभुणो आवेदणं तु पेल्लिंति जाव णीणेमि ।
तह वि हु अठायमाणे, पासे जं वा तरति णेतुं ॥१३४८॥

पभू णाम राया, अणुप्पभु जुवराया, सेणावतिमादिणो वा, आवेदण तेसिं जाणावणं, अम्हं उवकरणं खधावारिएहिं घेप्पति पेल्लंति वा ते वसहिं । रायरक्खिया य तवोवणवासिणो भवति । त रक्खह अम्हं । ताहे रायपुरिसेहिं जति रक्खावेंति तो लट्ठं । अध ण रक्खंति ण वा रायाणं विण्णवेउ अवगासो, ते य पेल्लंति, ताहे भणाति – जावोवकरणं णिप्फिडेमि ता होह । तह वि अट्ठायमाणेसु वसहिनिमित्त व पेल्लतेसु एगपस्से उवकरणं काउं रक्खति । अह ण सक्केति रक्खिउं [1]वमालीभूतं, ताहे कप्पं पत्थरेत्ता सव्वोकरण बंधति, बधेत्ता णीणेति । अह ण चएति णेउं वहुं उवकरणं, ताहे दोसु तिसु वा कप्पेसु बधेत्ता कोल्लगपरंपरएण णीणेति । अह बहू मिलित्ता हरिउमारद्धा, ताहे जं तरति णेउं जं वा पासे आयत्तं ततियं णेति ॥१३४८॥

जत्थ [2]अग्गी साहाविओ तत्थ –

कोल्लपरंपरसंकलियाऽऽगासं णेंति वातपडिलोमं ।
अच्चल्लीणे जलणे, अक्खादीसारभंडं तु ॥१३४६॥

कोल्लुगा णाम सिगाला । जहा ते पुत्तभंडाति [3]थामातो थामं संचारेंता एग पुत्तभडं थोवं भूमिं णेउं जत्थ तं च ते अपच्छिमे पेल्ले पलोएति तत्थ मुचति, ताहे पच्छिमे सव्वे तत्थ संचारेउं पुणो अग्गतो संचारेति । एवं चेव ण अति दूरत्थे अगणिम्मि कोल्लगपरंपरसंकलिया दिट्ठतेण, सकलिय वा दोरेण बद्धं जतो आगास वा तप्पडिलोमं वा ततो णयति । अतीव अच्चत्थं लीणो अच्चल्लीणो आसण्णमित्यर्थं ।

अहवा – अतीव रूढो अच्चल्लूढो, एव अतीव प्रज्वलितेत्यर्थः । प्रदीप्ते ज्वलने किं करोती ति जावतितं तरति तावतियं सारभंडं णीणाति ॥१३४६॥

जत्थ [1]मालवतेणा तत्थ –

असरीरतेणभंगे, जणो पलायते तु जं तरति णेतुं ।
ण वि धूमो ण वि बोलं, ण दुवति जणो कइतवेणं ॥१३५०॥

असरीरे त्ति जे माणुस ण हरति तारिसे तेणभयभगे बहुजणे य पलायणे जावतिय उवकरणं नेउ

---

१ पुंजीभूतं । २ गा० १३२६ । ३ दे० स्थानान्तरम् ।

तरति सक्कति तं णेति । कृतकाग्नो कृतकचारेषु च पश्चार्धेण ण वि धूमो दीसति, ण या वि जणवोलः, ण य जणे द्रवति, शीघ्रं व्रजति । एवं कइतवेणं ति णायव्व ॥१३५०॥

[2]सण्णायगद्दारे इमं भणति –

अण्ण-कुल-गोत्त-कहणं, पत्तेसु व भीतपुरिसो पेल्लेति ।
पुव्वं अभीतपुरिसो, भणाति लज्जाए ण गतो मि ॥१३५१॥

अण्णायमदिट्ठपुव्वेसु, अण्णं णामं अण्णं गोयं अण्ण कुलं सव्वमण्णमाइक्खति । जत्थ पुण ते चेव संजयणिया पत्ता तत्थ जइ पुव्वं भीतपुरिसो आसी तो णं ते पेल्लेति, सुट्ठु धाडेति । एरिसं तुब्भेहिं तया ममावहारियं, इदाणि से राउले बंधावेमि । अह पुव्व भीत-पुरिसो भणाति – अहमवि पव्वज्जाए पराभग्गो, लज्जमाणो तुब्भे ण भणामि जहा उण्णिक्खिमामि त्ति, लज्जमाणो य घर ण गतोमि । तुब्भेहिं सुदरं कतं जं मम अट्ठाए आगया, एत्ताहे गमिस्सामि ॥१३५१॥

जा ताव ठवेमि वए य, पत्ते कुड्डादिछेद संगारो ।
मा सिं हीरेज्जुवधिं, अच्छध जा णं णिवेदेमि ॥१३५२॥

किं तु अच्छह जा साहुणो एंति, जे मए वते गहिते तस्सतिते तेसिं चेव पडिणिक्खिवामि, वा सुण्णे तेसिं उवकरणहारो भविस्सति । एव उवाएण धरेति जाव साहुणो पत्ता । अह ते अणागतेसु साहुसु बला णेउमारद्धा । ताहे भणाति – अतो उवस्सयस्स जाव ते ठवेमि ताव ठिया होह, ताहे पविसित्ता बार ठवेति । पत्तेसु साहुसु पडिस्सयसधि छेत्ता सगार च काउ णासति ।

अहवा भणेज्जा – मा तेसिं सुण्णे उवही हीरेज्ज, तुम्हे रक्खमाणा अच्छह, जाव अह तेसिं णिवेएमि, एवं वोत्तु णिग्गच्छति । ते य साहू भणाति – मए अमुगे गवेसेज्जह ॥१३५२॥

खंधाराती णातुं, इतरे वि दुयं तहिं समहिल्लेंति ।
अप्पाहेति व सोधी, अमुगं कज्जं दुयं एह ॥१३५३॥

इतरे वि साधवो भिक्खाइगया । इतरे वि साधू खधार-अगणि-तेणगमादी णाउं द्रुत शीघ्र तहिंति ईदृशे समुप्पण्णे वसहीए समभिलति वसहिमागच्छति ।

अहवा – सम ति तत्क्षणात् स्कन्धावारादिप्रयोजने उत्पन्नमात्रे एवाभिमुखेन वसहिं णिलयत्ति । सो वि वसहिपालो भिक्खादिगताणं सदिसति – अमुग कज्जं, द्रुत शीघ्रमागच्छये ति ॥१३५३॥

चोदक आह –

संथारविप्पणासो, एवं खु ण विज्जए कधंचिदवि ।
णासे अविज्जमाणे, सुत्त अफलं सुण जधा सफलं ॥१३५४॥

सथारविप्पणासो एवं सुरक्खिते न विद्यते । एव नासे अविद्यमाने जं वदह सुत्तं 'संथारविप्पणासो' त्ति तं अजुत्त, अयुक्तत्वात् । सूत्रमफल प्राप्तं । अथ चेत् सूत्रं सफल तो जं वदह "एरिसो वसहिपालो" एव ण घटति । एव ते उभयहा दोसा ।

---

१ गा० १३२६ । २ गा० १३२६ ।

एवमुक्ते आचार्याह – सुणह जहा सफलं ॥१३५४॥

पडिलेहणमाणयणे, अप्पिणाऽऽतावणणा बहिं रहिते ।
तेण-अगणीयाओ, संभम-भय-रट्ठ-उट्ठाणे ॥१३५५॥

पडिलेहणट्ठा बाहिं णीणितो साधू पाद-पुंछणस्स जाव ठितो जहिं सो संथारओ आसि तत्थ जाव ववे मुयति ताव ओगास जाव पविसति । "आणयणे" त्ति आणिज्जंतो अंतरा ठवितो वा आणेउं बाहिं, एवं अप्पिणणट्ठाए बाहिं ठविओ णिज्जंतो वा । अतरा रायपुरिसेहिं रायबलेण वा । आतावणट्ठा बाहिं ठवितो बाहिं साहुरहिते शून्येत्यर्थं ।

अहवा – तेणगअगणीयाओ एगतरसंभमे अवहितो, बोहितभए वा रट्ठुट्ठाणे वा अवहितो ॥१३५५॥

एत्तो एगतरेणं, कारणजातेण विप्पणट्ठं तु ।
जे भिक्खू ण गवेसति, सो पावति आणमादीणि ॥१३५६॥

जे एते पडिलेहणादि कारणा भणिता, एत्तो एगतरेणं सथार-विप्पणासो रक्खिज्जते वि हवेज्जा । तमेवं संथारग विप्पणट्ठ जति ण गवेसति तो तणेसु मासलहुं, कविफलगे य चउलहुं, आणादिणो य दोसा ॥१३५६॥

अप्पच्चओ अकित्ती, मग्गंते सुत्तअत्थपरिहाणी ।
वोच्छेद-धुआवणे वा, तेण विणा जे य दोसा तु ॥१३५७॥

पाडिहारिगे अणप्पिणिज्जमाणे अप्पच्चओ भवति, पच्चप्पिणीहामि त्ति अणप्पिणंते मुसावादिणो त्ति अकित्ती, अण्णं च सथारथं मग्गताण सुत्तत्थाणं परिहाणी, वोच्छेदो तस्स वा अण्णस्स वा, धुआवण णाम दवावणं, तेण वा सथारगेण विणा जा परिहाणी तण्णिप्फण्णं ॥१३५७॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा गवेसियव्वो, सव्वपयत्तेण जेण सो गहितो ।
अणुसट्ठी धम्मकहा, रायवल्लभो वा णिमित्तेणं ॥१३५८॥

तम्हा कारणा एतद्दोसपरिहरणत्थं सो संथारगो गवेसियव्वो सव्वपयत्तेण । णीते समाणे जेण सो गहितो सो मग्गेयव्वो । अह मग्गितो ण देति ताहे से अणुसट्ठिं कुज्जा । तहावि अदेंते धम्मकहाए आउट्टेउं दावेयव्वो । तहावि अदेंते दमगे भेसण कीरते । रायवल्लभो विज्जामतचुण्णजोगादिएहिं वसीकरेउं दाविज्जति । णिमित्तेण वा तीतपडुप्पन्नमणागतेणं आउट्टेउं दाविज्जति ॥१३५८॥

इमा [1]अणुसट्ठी –

दिण्णो भवव्विधेण व, एस णारिहसि णे ण दातुं जे ।
अण्णो वि ताव देयो, देज्जाणमजाणताऽऽणीतं ॥१३५९॥

एस जो तुमे सथारओ गहितो एष भवद्विधेनैव साधूनां दत्त, ततो तुमं एस णारिहसि दाउं, अण्णो वि ताव भवता सथारगो देयो, किं पुण जो अण्णदत्तो जाणंतेण अजाणंतेण वा आणीतो ॥१३५९॥

---

१ गा० १३६२ ।

मंतणिमित्तं पुण रायवल्लभे दमग भेसणमदेंते ।
धम्मकहा पुण दोसु वि, जति-अवहारो दुहा वि अहितो ॥१३६०॥

मंतणिमित्ता रायवल्लभे पयुजंति । दमगे वीहावण पयुजति । अदेंते धम्मकहा पुण दोसु वि दमग-रायवल्लभेसु पयुजति । जति त्ति यतयः ताण जं उवकरणं तस्स अवहारो इहलोगे परलोगे य दुहा वि अहितो भवति ॥१३६०॥

किं चान्यत् –

अण्णं पि ताव तेण्णं, इह परलोए य हारिणामहितं ।
परतो जाइतलद्धं, किं पुण मंन्नप्पहरणेसुं ॥१३६१॥

अण्णमिति पागतजणस्स वि जं अवहरिज्जति त पि ताव इहलोगपरलोगेसु हरंताण अहितं भवति । किं पुण जतीहिं परतो जातितं लद्धं तं हरिज्जत । किमिति क्षेपे । पुनर्विशेषणे । मन्नुः क्रोध प्रहरणा ऋपय, तेसिं हिरिज्जतं इहलोगे परलोगे अहित भवति ॥१३६१॥

एवं पि मग्गिज्जतो जति ण देज्ज –

खंते व भूणते वा, भोइय-जामातुगे असति साहे ।
सिट्ठम्मी जं कुणती, सो मग्गण-दाण-ववहारो ॥१३६२॥

खंतेण त्ति पितरिगहिते भूणगस्स साहिज्जति, वुच्चइ य जहा-दव्वावेहि। एवं भोइयजामाउगेण वा दव्वावेंति । भूणगगहिए वि खंतगादिएहिं भणावेंति । जो वि से वियत्तो जस्स वा वयणं णातिकमति तेण भणावेति दिज्जइ त्ति । "असति" त्ति सव्वहा अदेमाणे "साहे" ति महत्तरमादियाण साहिज्जति । तस्स कहिते ज सो करिस्सति तं प्रमाणं । एवं पणट्ठो सथारगो मग्गिज्जति । "दाण" ति सथार-गवेसगं दिज्जति, ववहारो वा करणमिति कज्जति ॥१३६२॥

इदमेवार्थमाह –

भूणगगहिते खंतं, भणाति खंतगहिते य से पुत्तं ।
असति त्ति ण देमाणे, कुणति दवावेति व ण वा तू ॥१३६३॥

भूणगेण गहिते खतगेण मग्गाविज्जति । खंतगेण गहिते पुत्तो भणाविज्जति । "असति" त्ति ण देमाणे व्याख्यातं । भोतियमादियाण कहिए ज ते कुणंति बंधणरुंधणादि, दवावेति वा, अत. परं ते प्रमाणं ॥१३६३॥

[1]साहे पदस्य व्याख्या –

भोइत-उत्तर-उत्तर, णेतव्वं जाव अपच्छिमो राया ।
दावण-विसज्जणं वा, दिट्ठमदिट्ठे इमे होति ॥१३६४॥

भोइकस्स भोइको, तस्स वि जो अण्णो उत्तरोत्तरेण जाणाविज्जति जाव पच्छिमो राय त्ति । "दावणं" ति तेणगसमीवातो भोइगमादिणा संथारगं घेत्तु देज्ज साधूण, "विसज्जण" च त्ति ।

१ गा० ५४६ ।

अहवा – ते भोइयमादिणो भणेज्ज – गच्छह भो तुब्भे ! अम्हे त संथारयं, संथारयसामिणो अप्पेहामो त्ति । एस विही दिट्ठे संथारगे, णाते वा तेणगे ।।१३६४।।

"उत्तरउत्तरे" त्ति अस्य व्याख्या –

खंतादिसिट्ठऽदेंते, महयर किच्चकर भोइए वा वि ।
देसारक्खियऽमच्चे, करण णिवे मा गुरू दंडो ।।१३६५।।

भूणगादिगहिए खंतादिसिट्ठे ण देंते भोइगातीण साहिज्जति । भोइगोत्तरस्य व्याख्या – महत्तरो ग्रामकूट ग्रामे महत्तर इत्यर्थः । "किच्चकरे" ति ग्राम-कृत्ये नियुक्त., ग्रामव्यापृतक इत्यर्थ. । तस्य स्वामी भोतिकः, देसारक्खिओ विषयारक्षकः महाबलाधिकृतेति । अमच्चो मंत्री । "कर" त्ति एषां पूर्वं निवेद्यते, न राज्ञः, मा गुरुदंडो भविष्यति ।।१३६५।।

"[1]दावण-विसज्जण" त्ति अस्य व्याख्या –

एते तु दवावेंति, अहवा भणंते स कस्स दातव्वो ।
अमुगस्स त्ति व भणिते, वच्चह तस्सप्पिणिस्सामो ।।१३६६।।

एते त्ति भोत्तिगमादिकहिते जइ दवावेंति तो लट्ठं । अध भणेज्जा – संथारगो कस्स दायव्वो ? साहू भणति – अमुकस्स त्ति । ततो भोतिगातिणो भणंति – वच्चह तुब्भे, अम्हे तस्स संथारगसामिणो अप्पिणिस्सामो ।।१३६६।।

इदाणिं साधु-विधि –

जति सिं कज्जसमत्ती, वए ति इधरा तु घेत्तु संथारं ।
दिट्ठे णाते चेवं, अदिट्ठऽणाते इमा जतणा ।।१३६७।।

जइ तेसिं साहूणं तेण संथारगेण कज्जं सम्मत्त, पुण्णो य मासकप्पो, ततो ते भोइगादीहिं विसज्जिता वयंति । इहरहा तु संथारकज्जे असमत्ते, अपुण्णे मासकप्पे संथारग तं चऽण्णं वा संथारग घेत्तु भुंजति । दिट्ठे संथारगे णाते वा संथारगतेणे एसा विधी भणिता । "अदिट्ठे इम होइ" अदिट्ठे संथारगे अण्णाए वा तेणे इमा जयणा ।।१३६७।।

विज्जादीहि गवेसण, अदिट्ठे भोइयस्स व कहेंति ।
जो भद्दओ गवेसति, पंते अणुसट्ठिमादीणि ।।१३६८।।

"[2]विज्जादीहिं गवेसण" त्ति अस्य व्याख्या –

आभोगिणीय पसिणेण, देवताए णिमित्तओ वा वि ।
एवं णाते जतणा, सच्चिय खंतादि जा राया ।।१३६९।।

आभोगिणि त्ति जा विज्जा जविता माणस परिच्छेदमुप्पादयति सा आभोगिणी । जति अत्थि तो ताए आभोइज्जति – जेण सो गहितो संथारो ।

१ गा० १३६४ । २ गा० १३६८ ।

अहवा – अगुट्ठपसिणा किज्जति, सुविण-पसिणा वा । खवगो वा देवतं आउट्टेउ पुच्छति । अवितहणिमित्तेण वा जाणंति । एवं आभोगिणिमादीहिं णाते मग्गियव्वे जयणा । सा चेव "जा खतादिग्गहिए भणिया भोतिगातादि जा अपच्छिमो राय" त्ति, णिवेयणे वि सच्चेव जयण त्ति ॥१३६९॥

"[1]अदिट्ठे भोइगस्स व कहेंती" ति अस्य व्याख्या –

विज्जादसती भोयादिकहण केण गहितो ण याणामो ।
दीहो हु रायहत्थो, भद्दो आमं गवेसति य ॥१३७०॥

अदिट्ठे त्ति आभोइणिविज्जादीण असति ण णज्जति ताहे भोइगादीण कहेंति – संथारगो णट्ठो गवेसह त्ति ।

भोइगो भणाति – केण गहिते ।
साहू भणति – ण जाणामो ।
भोइगो भणति – अणज्जमाणं संथारगं कहिं गवेसामि ।
साहू भणति – दीहो रायहत्थो ।
जो भोइतो भद्दगो भवति सो भणाति – सव्व गवेसामि त्ति भणति, गवेसति य ॥१३७०॥

"[2]पंते अणुसट्ठि" त्ति अस्य व्याख्या –

जाणह जेण हडो सो, कत्थ व मग्गामि णं अजाणंतो ।
इति पंते अणुसट्ठी-धम्म-णिमित्तादिसु तहेव ॥१३७१॥

जो पंतो सो भणइ – जाणह जेण हडो ताहे मग्गामि । अहं पुण अजाणंतो कुतो मग्गंतो दुल्लुदुल्लेमि अदेशिकान्धवत् इति । एवं भोतिगे भणते पंते अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा मंता य प्रयोक्तव्यानि पूर्ववत् ॥१३७१॥

असती य भेसणं वा, भीता भोइतस्स व भएणं ।
साहित्थदारमूले, पडिणीए इमेहि व छुहेज्जा ॥१३७२॥

[3]असती य अस्य व्याख्या –

भोइयमादीणऽसती, अदवावेंते व भणंति जणपुरतो ।
वुज्झीहासु सकज्जे, किह लोगमताणि जाणंता ॥१३७३॥

भोतिगमादीणऽसतीते वा भोतिगमादीणऽदवावेंति ।

"[4]भेसणं व" त्ति अस्य व्याख्या –

साधू जणं पुरतो भणंति – अम्हे लोगस्स णट्ठं विणट्ठं पब्भट्ठं जाणामो । अप्पणो कहं ण आणिस्सामो । जति अम्ह ण अप्पहे तं संथारगं तो जणपुरतो हत्थे घेत्तु दवावेमो ॥१३७३॥

अह तुम्हे ण पत्तियह ता पेच्छह –

"[5]पेहुण तंदुल पच्चय, भीता साहंति भोइयस्सेते ।
साहत्थि साहरंति व, दोण्ह वि मा होतु पडिणीओ ॥१३७४॥

---

१ गा० १३६८ । २ गा० १३६८ । ३ गा० १३७२ । ४ गा० १३७२ । ५ मोरपुच्छ ।

तंदुला दुविधा कज्जति – [1]मोरगगिरमिस्सा इतरे य। ताहे साधुमज्झातो एगो साधू अपसरति। गिहिणो पणीयो–तुब्भं एगो किं चि गेण्हतु। गिहिते य आगतो साधू भणाति–पंतीए ठाह, ठितेसु सो णिमित्तिय साधू उदगं अंजलीए ददाति। जेण य तं दिट्ठं साहुणो घेप्पमाणं साधू। तदुले दाति। जेण गहितं तस्स पेहुणं तंदुलवतिमिस्से ददाति। इतरेसु सुद्धा। सो व णेमित्तियसाहू ते पेहुणे दट्ठु भणाति – इमिणा गहिय ति। एवं पच्चए उप्पण्णे भीता चिंतेंति – मोतियस्स एते साहिस्संति, तो अम्हे साहूणं साधामो अप्पेमो वा।

अहवा – पडिणीतो "दोण्ह वि मा होउ" ॥१३७४॥

इमेसु पक्खिवति –

> पुढवी आउक्काते, अगडवणस्सइ-तसेसु साहरई।
> घेत्तूण व दातव्वो, अदिट्ठदड्ढे व दोच्चं पि ॥१३७५॥

कश्चित् प्रत्यनीकः साधुचर्याभिज्ञः सचित्तपुढवीए आउ-वणस्सति-तसेसु पक्खित्तं ण गेण्हिहति त्ति पक्खिवति, कूवे वा पक्खिवति। जति वि एतेसु पक्खित्तो तहावि एत्ततो घेत्तु दायव्वो।

सव्वहा – "अदिट्ठे दड्ढेव दोच्चंपि" ति-कप्पस्स तइतोद्देसेऽभिहित।

इह खलु निग्गंथाण वा निग्गथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसतिए वा सेज्जासथारए विप्पणसेज्जा से य अणुगवेसियव्वे, सिया से अ अणुगवेस्समाणे लभेज्जा तस्सेव अणुपदातव्वे सिया त अणुगवेसमाणो नो लभेज्जा एवं से कप्पती से दोच्च पि उग्गह अणुण्णवेत्ता परिहार परहरित्तए। दोच्चोग्गहो त्ति ॥१३७५॥

चोदग आह – ण तस्स किं चि आइक्खिज्जति – जहा णट्ठो। गतु भणाति – "पुव्वं पडिहारितो दत्तो इदाणिं णिद्देज्जं देहि" त्ति एस दोच्चोग्गहो।

आयरिय आह –

> दिट्ठंत पडिहणित्ता, जतणाए भद्दओ विसज्जेति।
> मग्गंते जतणाए, उवधिऽग्गहणे ततो विवातो ॥१३७६॥

दिट्ठंत इति चोयगाभिप्राय, त पडिहणित्ता जयणाए संथारसामिणो कहिज्जंति। कहिते भद्दतो विसज्जेति – गच्छह ण भणामहं किं चि। अह पंतो सथारग मग्गति ताहे अणुसट्ठादी कज्जति। अणिच्छंते जयणाए पंतोवधी दिज्जति, उवकरण वा। अणिच्छते बला वा सारुवहिं गेण्हमाणे ततो णसमाण (?) करणे विवाओ कज्जति ॥१३७६॥

अस्यैव गाथार्थस्य व्याख्या –

> परवयणाऽऽउट्टेउं, संथारं देहि तं तु गुरु एवं।
> आणेह भणति पंतो, तो णं दाहं ण वा दाहं ॥१३७७॥

"पर." चोदकः तस्य वचन धम्मकहाए आउट्टेउं मग्गिज्जति – "तं संथारग देहि" त्ति। "गुरु" आचार्य, स आह – एवं मायाते पणए तस्स चउगुरुअं पच्छित्त।

---

[1] मोरपुच्छ।

अहवा – पणएतस्स "गुरु" त्ति पच्छित्तं । भद्दपंतदोसा य । पंतो आह – आणेहु तं संथारगं नतो दाहामि वा ण वा ॥१३७७॥

पंतो भद्दो वा इमं चिंतेति –

दिज्जंतो वि ण गहितो, किं सुहसेज्जो इदाणिं संजातो ।
हित णट्ठो वा णूणं, अथक्कजायाइ सएमो ॥१३७८॥

पुव्वाणुण्णवणकाले दिज्जंतो वि तदा णिदेज्जो ण गहितो । किं सो संथारगो सुहसेज्जो जातो ? जेण इदाणिं "अथक्क" त्ति अकाले याचयति । सूचयामीति - जाने हितो णट्ठो व त्ति । णूणमिति वितर्कार्थे ॥१३७८॥

इमे भद्दे दोसा –

भद्दो पुण अग्गहणं, जाणंतो वा वि विप्परिणमेज्जा ।
किं फुडमेव ण सिस्सइ, इमे हु अण्णे हु संथारा ॥१३७९॥

अग्गहणमिति साहूसु अणादरो सो संथारगो हितो णट्ठो वा । इमे पुण मायाए मग्गन्ति । अन्न जाणतो सम्मदंसणपव्वज्जाभिमुहो वा विप्परिणमेज्जा । विप्परिणओ य भणेज्ज – फुडमेवऽम्हं किण्ण कहिज्जति - जहा संथारगो णट्ठो हडो दड्ढो वा । किं मायाए जायह ? अण्णे वि बहू संथारगा अत्थि । "हु" शब्दः प्रत्यक्षावधारणे ॥१३७९॥

इति चोदगदिट्ठंतं, पडिहंतुं कहिज्ज तेसि सब्भावं ।
भद्दो सो मम नट्ठो, मग्गामि ण तो पुणो दाहं ॥१३८०॥

इति उवदसणे, किं उवदसयति ? भद्दपंतदोसा ।

अहवा – इति शब्दो एवकारार्थो दट्ठव्वो । एव भद्दपंतदोसदरिसणेण चोदगाभिप्पाय पडिहंतु सब्भावो मे जयणाए परिकहिज्जति । सब्भावकहणे भद्दगो भणाति – सो मम णट्ठो ण तुब्भ, अखन्नमिति मग्गामि, त लद्धं "पुणो" पुणो तुब्भ दाहामि ॥१३८०॥

तुब्भे वि ताव गवेसह, अहं पि जाएमि गवेसए अन्नं ।
णट्ठो वि तुज्झ अणट्ठो, वयंति पंतेऽणुसट्ठादी ॥१३८१॥

तुब्भे वि त संथारग गवेसह, अहं पि जाएमि त्ति गवेसयामि इत्यर्थः । अह तुब्भं संथारएण पओयणं तुरियं तो जाव सो लब्भति ताव अण्ण मग्गह । जयणाए ति सब्भावे कहिते, पंतो भणाति – णट्ठे वि संथारगे तुब्भे मम अणट्ठो । जतो जाणह, ततो संथारगं मोल्ल वा देह । एवं पंते भणमाणे अणुसट्ठी - धम्मकहा - विज्ञा - मंतादयो पओत्तव्वा ॥१३८१॥

अणुसट्ठादीहि अट्ठंते विज्जादीहिं अभावे य मोल्लं मग्गंते इमा जयणा –

णत्थि ण मोल्लं उवधिं, देह मे तस्संतपंतदावणता ।
अण्णं व देंति फलगं, जतणाए विमग्गिउं तस्स ॥ १३८२॥

अहिरण्ण-सोवण्णिया समण त्ति, णत्थि मे मोल्ल । अह सो भणाति – उवहिं देह, ताहे जेण सो संथारगो आणितो तेण साहुणा तस्स संतिय अंत पंतं उवकरणं दाविज्जति । ण सारोवही दाविज्जति ।

अहवा – अण्णं से फलगं जयणाए मग्गिउं देति। तस्स एत्थ जयणासुद्धं मग्गिज्जति, अलब्भमाणे पणगपरिहाणीए मग्गिउं देति ॥१३८२॥

मुल्लोवकरणाभावे वा –

सव्वे वि तत्थ रुंभति, भद्दग मोल्लेण जाव अवरण्हो ।
एगं ठवेत्तु गमणं, सो वि य जावऽट्ठमं काउं ॥१३८३॥

कोइ रायवल्लभादि सव्वे साहुणो रुंभेज्जा, जति तत्थ कोइ अहाभद्दओ मोल्लेण मोएज्जा ताहे ण सो पडिसेहियव्वो। अह पडिसेहं करेति तो चउगुरुं पच्छित्तं। असति मोए माणस्स जाव अवरण्हो ताव सव्वे सबालवुड्ढा अच्छति। ताहे अमुचमाणे एगं खमगादि ठवेऊण सेसा सव्वे गच्छंति। सो वि य एरिसो ठविज्जति - जो अट्ठमादि काउं समत्थो। अह असमत्थं ठवेंति तो चउगुरुगा भवति ॥१३८३॥

लद्धे तीरित कज्जं, तस्सेवाप्पेंति अहव भुंजंति ।
पभुलद्धे वऽसमत्ते, दोच्चोग्गहो तस्स मूलातो ॥१३८४॥

एवं गवेसंतेहिं लद्धे, जइ तेण तीरियं समत्तं कज्जं तो तस्सेव संथारयसामिणो अप्पेंति। अह कज्जं तो परिभुंजंति। अह संथारयसामिणा लद्धो, साहूण य कज्जं ण समत्तं, ताहे तस्स समीवातो - दोच्चोग्गहो भवति। एवं सुत्ते दोच्चोग्गहो ति भणियं ॥१३८४॥

णट्ठं पि कारणे अगवेसंतो अपच्छित्ती।

ताणि इमाणि कारणाणि –

विइयं पहुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
असहू य रायदुट्ठे बोहिय-भय सत्थ सीसे वा ॥१३८५॥

साहुस्स कज्जं सम्मत्तं, जो वि संथारगसामी एसो रायकुलेण णिव्विसतो कओ, विसयभंगे वा णट्ठो, दुब्भिक्खेण वा उट्ठितो उव्वसिउ त्ति वुत्तं भवति। "सुण्ण" त्ति सपुत्तदारो आमंतणादिसु गतो, मृतो वा, अणप्पज्झो वा जातो। एए गिहत्थकारणा। इमे संजयकारणा असहू साहू, रायदुट्ठो, बोहिय भये वा ण गवेसति, अद्धाण-सीसे वा सत्थवसगो गतो ॥१३८५॥

अज्झयणम्मि पकप्पे, वितिओद्देसम्मि जत्तिया सुत्ता ।
संथारगं पडुच्चा, ते परिसाडम्मि णिवतंति ॥१३८६॥

पकप्पज्झयणस्स वितिओद्देसके जत्तिया संथारगसुत्ता ते मासलहु अहिकारो त्ति काउं सव्वे परिसाडिसंथारगेसु णिवडति। संथारगाहिकारे अपरिसाडी अत्थतो भणिया इति ॥१३८७॥

जे भिक्खू इत्तरियं पि उवहिं ण पडिलेहेति, ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ।
तं सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥५६॥

भिक्खू पूर्ववत्, "इत्वर." स्वल्प, सो पुण जहण्णो मज्झिमो वा। "ण पडिलेहेति" चक्खुणा ण णिरक्खति। पडिलेहणाए पप्फोडणपमज्जणाओ सूइताओ। मज्झिमे मासलहु ति काउ एत्थ सुत्तणिवातो। अत्थओ ताव पडिलेहणा। इत्तरियगहणेण सव्वोवकरणगहणं कयं। अतो उवकरणं ताव वण्णेति, पच्छा पडिलेहणा।

अतो उवकरणं भण्णति, सो दुविधो –

ओहे उवग्गहम्मि य, दुविधो उवधी समासतो होति ।
एक्केक्को वि य तिविधो, जहण्णओ मज्झिमुक्कोसो ॥१३८७॥

ओहोवधि त्ति ओघः संक्षेपः स्तोकः, लिंगकारकः । अवग्गहोवही, औत्पत्तिक कारणमपेक्ष्य संजमोपकरणमिति गृह्यते । एस संखेवतो दुविधोवही । ओघिओ उवग्गहिओ य । तिविधो – जहण्णो मज्झिमो उक्कोसो ॥१३८७॥

ओहोवही गणणपमाणेण पमाणपमाणेण य जुत्तो भवति ।

इमं गणणप्पमाणं –

बारस चोद्दस पणुवीसओ य ओघोवधी मुणेयव्वो ।
जिणकप्पे थेराण य, अज्जाणं चेव कप्पम्मि ॥१३८८॥

बारसविहो चोद्दसविहो पणवीसविहो ओहोवही । एअं गणणप्पमाणं यथासंख्यं जिणाण थेराण अज्जाण य । कल्पशब्दो पि प्रत्येकं योज्य' ॥१३८८॥

ओघोवधी जिणाणं, थेराणोहे उवग्गहे चेव ।
ओहोवधिमज्जाणं, अवग्गहिओ य णातव्वो ॥१३८९॥

जिणाणं एगविहो ओहोवधी भवति । थेराणं अज्जाण य ओहिओ उवग्गहिओ य दुविहो भवति ॥१३८९॥

जिणकप्पियनिरूपणार्थमाह –

जिणकप्पिया उ दुविधा, पाणीपाता पडिग्गहधरा य ।
पाउरणमपाउरणा, एक्केक्का ते भवे दुविधा ॥१३९०॥

जिणकप्पिया दुविधा भवंति – पाणिपात्रभोजिनः प्रतिग्रह-धारिणश्च । एक्केक्का दुविधा इदुव्वा – सपाउरणा इयरे य ॥१३९०॥

जिणकप्पे उवहीविभागो इमो –

दुग-तिग-चउक्क-पणगं, णव दस एक्कारस एव बारसगं ।
एते अट्ठ विकप्पा, जिणकप्पे होंति उवहिस्स ॥१३९१॥

पाणिपडिग्गहियस्स पाउरणवज्जियस्स जहण्णोवही दुविधो – रयहरणं मुहपोत्तिया य । तस्सेव सपाउरणस्स एगकप्पग्गहणे तिविहो, दुकप्पग्गहणे चउव्विहो, तिकप्पग्गहणे पंचविहो । पडिग्गहधारिस्स अपाउरणस्स मुहपोत्तिय-रओहरण-पादणिज्जोगसहितो णवविहो जहण्णओ । तस्सेव एगकप्पग्गहणे दसविहो । दुकप्पग्गहणे एक्कारसविधो । तिकप्पग्गहणे बारसविधो । पच्छद्धं कंठं ॥१३९१॥

अहवा दुगं य णवगं, उवकरणे होंति दुण्णि तु विकप्पा ।
पाउरणं वज्जित्ताणं विसुद्धजिणकप्पियाणं तु ॥१३९२॥

जे पावरणवज्जिया ते विसुद्धजिणकप्पिया भवंति । तेसिं दुविध, एव उवही भवति । दुविधो णवविधो वा ॥१३६२॥

अविसुद्ध-जिणकप्पियाणं इमो –

पत्तं पत्ताबंधो, पायट्ठवणं च पादकेसरिया ।
पडलाइं रयत्ताणं, च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥१३६३॥ कंठा

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती ।
एसो दुवालसविधो, उवधी जिणकप्पियाणं तु ॥१३६४॥ कंठा

जिणकप्पियाणं गणणप्पमाणमभिहित । इदाणिं थेराण –

एते चेव दुवालस, मत्तग अतिरंगचोलपट्टो उ ।
एसो चोद्दसरूवो, उवधी पुण थेरकप्पम्मि ॥१३६५॥ कंठा

इदाणि अज्जाण गणणप्पाण भण्णति –

पत्तं पत्ताबंधो, पादट्ठवणं च पादकेसरिया ।
पडलाइं रयत्तणं, च गोच्छउ पायणिज्जोगो ॥१३६६॥ कठा

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती ।
तत्तो य मत्तओ खलु चोद्दसमे कमढए होति ॥१३६७॥

[1]उ(अ)ट्ठगमयं कंसभायणसंठाणसंठियं कमढयं चोलपट्टठाणे चोद्दसमं मत्तयं भवति ॥१३६७॥

अण्णो देहलग्गो ओहिओ इमो –

[1]उग्गहणंतगपट्टे, [2]अड्ढोरुग [3]चलणिया य [4]बोधव्वा ।
[5]अब्भिंतर-[6]बाहि-णियंसणीय तह [7]कंचुए चेव ॥१३६८॥

ओकच्छिय-वेकच्छिय, संघाडी चेव खंधकरणी य ।
ओघोवहिम्मि एते, अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥१३६६॥

एतातो दो दार-गाहाओ ॥१३६६॥

इयं व्याख्या –

अह उग्गहणंतग णाव-संठियं गुज्झदेसरक्खट्ठा, ।
तं तु प्पमाणेणेक्कं, घणमसिणं देहमासज्ज ॥१४००॥

अहेत्यानन्तर्ये, द्वारोपन्याससमनन्तरं व्याख्याग्रन्थ इति, यथा चोलस्स पट्टगो चोलपट्टगो एवं उग्गहस्स णंतगो उग्गहणंतगो इति । उग्गह इति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा ।

---

१ काष्ठमयं ।

अहवा – [1]उदुयं उगिण्हतीति उग्गहणंतगं, तच्च तनु पर्यन्ते मध्ये विशाल नौवत्। ब्रह्मचर्यसंरक्षणार्थं गृह्यते। गणणाप्रमाणेनैकं। आर्तवबीजपातसंरक्षणार्थं घने वस्त्रे क्रियते, पुरुषसमानस्पर्शपरिहरणार्थं समानस्पर्शत्वाच्च मसिणे वस्त्रे क्रियते। प्रमाणतः स्त्रीशरीरापेक्ष्यम् ॥१४००॥

पट्टो वि होति एगो, देहपमाणेण सो तु भइयव्वो।
छादंतोग्गहणंतं, कडिबंधो मल्लकच्छा वा ॥१४०१॥

क्षुरिकापट्टिकावत् पट्टो दट्ठव्वो, अते बीडगबद्धो, पुहुत्तेण चउरंगुलप्पमाणो समइरित्तो वा, दीहत्तणेण इत्थिकडिप्पमाणो, पिहुलकडीए दीहो, किसकडीए ह्रस्सतरो, एतदेव भाज्ज, उग्गहणतगस्स पुरपिट्ठतो दो वि तोडेच्छाएतो कडीए बज्झति। तम्मि बद्धे मल्लकच्छावद् भवति ॥१४०१॥

अड्ढोरुगो तु ते दो वि, गेण्हितुं छायए कडीभागं।
जाणुप्पमाण चलणी, असिव्विता लंखियाए व ॥१४०२॥

अड्ढो-उरुकार्धं भजतीति अड्ढोरुगो। उपरिष्टा उग्गहणंतगं पट्टं च एते दो वि गिण्हिउ त्ति, सव्व कडीभागं छादयति, मल्लचलणाकृति। नवरं – ऊरुगान्तरे ऊरुगेसु च योणिबध। चलणिगा वि एरिसा चेव, णवर – अहे जाणुप्पमाणा योत्रकनिबद्धा, लंखिया-परिधानवत् ॥१४०२॥

अंतो णियंसणी पुण, लीणा कडि जाव अद्धजंघातो।
बाहिरगा जा खलुगो, कडी य दोरेण पडिबद्धा ॥१४०३॥

पुणो त्ति सरूवावधारणे पडिहरणकाले लीणा परिहरिज्जति, मा उब्भूता जणहास भविस्सति। उवरिं कडीओ आरद्धा अहो जाव अद्धजघा। बाहिरणियंसणी उवरि कडीओ आरद्धा जाव अहो [2]खलुगो, उवरिं कडीए दोरेण बज्झति ॥१४०३॥

अधो सरीरस्स षड्विधमुपकरणं, दवरकसप्तममाहित।

अत. ऊर्ध्वं कायस्स –

छादेति अणुकुइए, गंडे पुण कंचुओ असिव्वियओ।
एमेव य उक्कच्छिय, सा णवरं दाहिणे पासे ॥१४०४॥

प्रच्छादयति "अणुकुए" त्ति अनुकुचिता, अनुक्षिप्ता इत्यर्थः, गड-इति स्तना।

अधवा – "अणुकुचित" त्ति – अनुः स्वल्पं, कुच स्पन्दने, कञ्चुकाभ्यन्तरे सप्रवीचारा, ण गाढमित्यर्थः। गाढ-परिहरणे प्रतिविभागविभक्ता जनहार्या भवन्ति, तस्मात् कंचुकस्य प्रसिढिलं परिधानमित्यर्थ.। स च कंचुको दीहत्तणेण सहत्थेण अड्ढाइज्जहत्थो, पुहुत्तेण हत्थो, असिव्वितो, कापालिककंचुकवत्, उभओ कडिदेसे जोत्तयपडिबद्धो।

अहवा – प्रमाणं सरीरात् णिष्पादयितव्यमित्यर्थं। कच्छाए समीव उवकच्छ, वकारलोप काउ तं छादयतीति उक्कच्छिया पाययसीलीए उक्कच्छिया। एमेव य उक्कच्छियाए प्रमाणं वक्तव्यम्। सा य समचउरंसा। सहत्थेण दिवड्ढ हत्था। उर दाहिणपास पट्टि च च्छादेंति परिहिज्जति। सवे वामपासे य जोत्तपडिबद्धा भवति ॥१४०४॥

---

१ ऋतुकं। २ पैरके टखने तक।

[1]वेकच्छिता तु पट्टो, कंचुगमुक्कच्छितं व छाडेंतो ।
संघाडीतो चतुरो, तत्थ दुहत्था उवस्सयम्मि ॥१४०५॥

उवकच्छियं प्रति विपरीते उवग्रत्थे परिहिज्जति, सा बधाणुलोमा पाययसीलीए वेयच्छिया भण्णति, तु सद्दो उक्कच्छियसादृश्यावधारणे द्रष्टव्य· । वामपार्श्वं परिधानविशेषे वा द्रष्टव्यः । सो य वेयच्छियापट्टो कंचुयं उक्कच्छिय व च्छाएंतो परिहिज्जति । उवरि परिभोगाग्रो संघाडीग्रो चत्वार, पुहुत्तेण दुहत्थवित्थडा, दीहत्तणेण कप्पपमाणा चउहत्था वा । एवं सेसासु वि तिसु सघाडीएसु दीहत्तण पहुत्तं पुण गथसिद्ध ॥१४०५॥

परिभोगमाह –

दोण्णि तिहत्थायामा, भिक्खट्ठा एग एग उच्चारे ।
ग्रोसरणे चउहत्था, अणिसण्णपच्छादणमसिणा ॥१४०६॥

दो तिहत्थ वित्थडा जा ताण एक्का भिक्खट्ठा, एगा उच्चारे भवति । समोसरण गच्छती चउहत्थ पाउणति । तत्थ अणिसण्णाए खघाग्रो ग्रारद्ध जाव पाते वि पच्छातेति । वण्णसंजलणार्थं मसिणा । एवा चउरो वि गणणप्पमाणेण एकं रूवं, युगपत् परिभोगाभावात् ॥१४०६॥

खंधकरणी चउहत्थवित्थरा वातविधुतरक्खट्ठा ।
खुज्जकरणी वि कीरति, रूववतीए कडुह हेउं ॥१४०७॥

चउहत्थवित्थडा चउहत्थदीहा समचउरसा पाउरणस्स वायविहुयरक्खणट्ठा चउफला खधे कीरइ । सा चेव खधकरणी, रूववतीए खुज्जकरणत्थ पट्ठिखधखवगंतरे सवत्तियाए मसिणवत्थपट्टगेण उकच्छिवेयच्छिण्णि-वक्काइगाए कडुभं कज्जति ॥१४०७॥

संघातिएतरो वा, सव्वो वेसा समासतो उवधी ।
पासगबद्धमझुसिरे, जं वाऽऽइण्णं तयं णेयं ॥१४०८॥

सव्वो वेस उवही प्रमाणप्रमाणेन दुगादिसघातितो एगगिग्रो वा भवति । पासगबधो कीरति-पासगबंधत्ता वेव ग्रज्झुसिरोवहि सिव्वणाहिं वा झुसिरे, पडिथिग्गल वा न दायव्वं, [2]थिरलिमादि वज्जितो वा ग्रज्झुसिरो जं च दव्वखित्तकालभावेसु तं णेयं ग्राह्यमित्यर्थ· ॥१४०८॥

ग्रोहावहारणत्थं ग्रोहावग्गहप्रदर्शनार्थं चाह –

जिणा बारसरूवाइं, थेरा चोद्दसरूविणो ।
[1]ग्रोहेण उवधिमिच्छंति, ग्रग्रो उड्ढं उवग्गहो ॥१४०९॥

उक्कोसग्रो जिणाणं, चतुव्विहो मज्झिमो वि य तहेव ।
जहण्णो चउव्विहो खलु, एत्तो वोच्छामि थेराणं ॥१४१०॥

पडिग्गहो तिण्णि य कप्पा एस चउव्विहो उक्कोसो । रयहरण पडलाइं पत्तगबधो रयत्ताण एए चउरो मज्झिमो । मुहपोत्ति पादकेसरिया गोच्छग्रो पादट्ठवणं च एस चउव्विहो जहण्णो ।

---

१ वैकक्षिका ।

अतो परं थेराणं भण्णति ॥१४१०॥

उक्कोसो थेराणं, चउव्विधो छव्विधो य मज्झिमओ ।
जहण्णो य चउव्विधो, खलु एत्तो अज्जाण वो च्छामि ॥१४११॥

एत्थ वि तहच्चेव, णवरं—मज्झिमो छव्विधो। ते य पुव्वुत्ता चउरो मत्तय-चोलपट्टसहिता ॥१४११॥

इतो अज्जाणं –

उक्कोसो अट्ठविधो, मज्झिमओ होति तेरसविधो उ ।
जहण्णो चतुव्विधो खलु, एत्तो उ उवग्गहं वोच्छं ॥१४१२॥

पुव्वुत्ता चउरो अब्भंतर-णियंसणी बाहिं णियंसणी संघाटी खधकरणी य, एते उक्कोसया अट्ट । मज्झिमो तेरसविहो, – पुव्वुत्ता चउरो मत्तओ कमढयं उग्गहणंतयं पट्टो अद्धोरुओ चलणिया कचुओ उक्कच्छिया वेकच्छिया ।

जहण्णो पुव्वुत्तो । अतो पर उवग्गहो जहण्ण मज्झिमो उक्कोसो भण्णति ॥१४१२॥

पीढग-णिसज्ज-दंडग-पमज्जणी घट्टए डगलमादी ।
पिप्पल-सूयि-णहहरणि, सोधणगदुगं जहण्णो उ ॥१४१३॥

छगणं पीढगं मिसिया वा णिसज्जा उण्णिया खोमिया । डंडपमज्जणी य अववाउस्सग्गिय अववातोवादियं वा रयोहरणं । आदिग्गहणा उच्छारो छगणादि वा । सोहणग दुग दंते कण्णे य ॥१४१३॥

एस जहण्णो । इमो मज्झिमो –

वासत्ताणे पणगं, चिलिमिणि पणगं दुगं च संथारे ।
दंडादी पणगं पुण, मत्तगतिग पादलेहणिया ॥१४१४॥

वासत्ताणे पणग वाले सुत्ते सूती-पलास-कुडसीसगच्छत्तए य । चिलिमिणिपणग – पोत्ते वाले रज्जु कडग डंडमती । संथारओ दुगं – झुसिरो अज्झुसिरो य । डंडपणग – डंडए विदंडए लट्ठी विलट्ठी णालिया य । मत्तयतिगं – खेल - काइय-सण्णा ॥१४१४॥

चम्मतिगं पट्टदुगं, णातव्वो मज्झिमो उवधि एसो ।
अज्जाण वारए पुण, मज्झमए होति अतिरित्तो ॥१४१५॥

चम्मतिग – पत्थरणं पाउरण उवविसणं ।

अहवा – कत्ती तलिया वज्झा । पट्टदुग-संथारोत्तरपट्टो य ।

अहवा – पल्लत्थियया सण्णाहणपट्टो य । अज्जाण वि एम चेव णवरं – उड्डाहपच्छादणवारए ॥१४१५॥

श्रीसंतु (सा)

इदाणिं उक्कोसो –

अक्खा संथारो य, एगमणेगंगिओ य उक्कोसो ।
पोत्थगपणगं फलगं, वितियपदे होति उक्कोसो ।।१४१६।।

समोसरण अक्खा । संथारगो एगगिओऽणेगगिओ य । पोत्थगपणगं गंडी कच्छभी मुट्ठी च्छिवाडी य सपुडयं च । फलगं जत्थ पढिज्जति । मंगलफलहं वा जं वुड्ढवासिणो भणिय । एस उवग्गहिओ सबितियपदेण उक्कोसओ भणिओ ।।१४१६।।

इदाणिं पडिलेहणा –

पडिलेहणा[1] तु तस्सा, कालमकाले[2][3] सदोस-[4]णिद्दोसा[5] ।
हीणतिरित्ता[6] य तधा, उक्कम-क्कमतो[7] य णायव्वा ।।१४१७।।

पडिलेहण पप्फोडण, पमज्जणा चेव जा जहिं कमति ।
तिविहम्मि वि उवहिम्मि, तमहं वोच्छं समासेणं ।।१४१८।।

चक्खुणा पडिलेहणा, अक्खोडगप्पदाणं पप्फोडणा, मुहपोत्तिय-रयहरण-गोच्छगेहिं पमज्जणा । एताओ तिविहोपकरणे जहण्णमज्झिमुक्कोसे जा जत्थ संभवति तं समासतो भणामि ।।१४१८।।

पडिलेहणा य पप्फोडणा य वत्थे कमंति दो भेया ।
पडिलेहण पाणिम्मि, पमज्जणा चेव णायव्वा ।।१४१९।।

वत्थे पडिलेहण-पप्फोडणाओ दो भवति । पाणि त्ति हत्थो, तत्थ पडिलेहण-पमज्जणाओ दो भवंति । अहणित्तेडेति त्ति पप्फोडणा, सा अविधि त्ति काउं ण भवति ।।१४१९।।

पडिलेहणा पमज्जणा, पादम्मि कमंति दो वि एताओ ।
दंडगमादीसु तहा, दिय-रातो अओ परं वोच्छं ।।१४२०।।

पडिलेहितम्मि पादे, केयी पप्फोडणं पि इच्छंति ।
गोच्छगकेसरियाहि य, वत्थेऽवि पमज्जणा णियमा ।।१४२१।।

पाददंडगे आदिसद्दातो-पीढ-फलग-संथारग-सेज्जाए पडिलेहण-पमज्जणा दो भवति ।

पाद-वत्थेसु पप्फोडणा प्रदर्शनार्थमाह ।

केति आयरिया भणंति –

पडिलेहिए पादे जमंगुलीहिं आहम्मति सा पप्फोडणा । पादवत्थेसु गोच्छगपादकेसरियाहिं णियमा पमज्जणा संभवति, तत्केचिन्मतमित्यर्थः ।।१४२१।।

इदाणिं पडिलेहण-पमज्जण-पप्फोडणा दिवसतो का कत्थ संभवति त्ति भण्णति ।

पडिलेहण पप्फोडण, पमज्जणा चेव दिवसतो होंति ।
पप्फोडणा पमज्जण, रत्तिं पडिलेहणा णत्थि ।।१४२२।।

पादादिए उवकरणे जहासंभव दिवसतो तिण्णि वि संभवंति। राम्रो य पप्फोडण पमज्जणा य दो संभवति, पडिलेहणा ण संभवति अचक्खुविसयाम्रो ॥१४२२॥

पडिलेहणा पमज्जण, पायादीयाण दिवसम्रो होइ।
रत्तिं पमज्जणा पुण, भणिया पडिलेहणा नत्थी ॥१४२३॥

पडिलेहण त्ति दार गतं।

इदाणिं "[1]काले" त्ति दारं –

सूरुग्गते जिणाणं, पडिलेहणियाए आढवणकालो।
थेराणऽणुग्गतम्मी, उवधिणा सो तुलेत्तव्वो ॥१४२४॥

जिणा इति जिणकप्पिया, तेसिं उग्गए सूरिए पडिलेहणाऽऽढवणकालो भवति। थेरा-गच्छवासी, तेसिं अणुग्गए सूरिए पडिलेहणा।

सीसो पुच्छति – अणुग्गए सूरिए का वेला ?

आयरिश्रो आह – उवहिणा सो तुलेयव्वो। तुलणा परिच्छेदः, जहा इमेहिं दसहिं अगेहिं नडिलेहिएहिं सूरिश्रो उट्ठेति तहा त काल तुलेंति ॥१४२४॥

मुहपोत्तिय-रयहरणे, कप्पतिग-णिसेज्ज-चोलपट्टे य।
संथारुत्तरपट्टे य, पेक्खिते जधुग्गमे सूरे ॥१४२५॥

मुहपोत्तिय, रयहरणं, कप्पतिय, दो णिसेज्जाओ, चोलपट्टो, संथारुत्तरपट्टो अ। एतेसु "पेक्खिए" त्ति प्रत्युपेक्षितेसु सूर्यं उदेति।

अण्णे भणंति – एक्कारसमो दडश्रो। सेसं वसहिमादि उदिते सूरिए य पडिलेहंति, ततो सज्झाय पट्ठवेंति ॥१४२५॥

इमो भाण-पडिलेहणकालो –

चउभागवसेसाए, पढमाए पोरिसीए भाण-दुगं।
पडिलेहणधारणता, भयिता चरिमाए निक्खवणे ॥१४२६॥

पढमपहरचउभागावसेसा य चरिमत्ति भण्णति, तत्थ काले भाण-दुग पडिलेहिज्जति। सो भत्तट्ठी इतरो वा। जति भत्तट्ठी तो अणिक्खित्तेहिं चेव पढति सुणेति वा। अहाभत्तट्ठी तो णिक्खिवति, एस भयणा। एस उदुबद्धे वासासु वा विही।

अण्णे भणति – वासासु दोवि णिक्खिवति। चरमपोरिसीए पुण ओगाहंतीए चेव पडिलेहेउ णिक्खिवति। ततो सेसोवकरणं, ततो सज्झाय पट्ठवेंति ॥१४२६॥

पढमचरमाहिं तु पोरिसीहि पडिलेहणाए कालेसो।
तव्विवरीओ उ पुणो, णातव्वो होति तु अकालो ॥१४२७॥

[1] गा० १४१७।

एस पढमचरमपोरिसीसु कालो। काले त्ति दारं गत। तव्विवरीतो अकालो पडिलेहणाए। जति पुण अद्धाणे वा अण्णेण वा वाघायकारणेण पढमाए ण पडिलेहियं, ताहे अकाले वि जाव चउत्थी ण उग्गाहेति ताव पडिलेहियव्वं। जति व पडिलिहियमेत्ते चेव चउत्थी ओगाहेति, तह वि पडिलेहियव्व ॥१४२७॥ अकालेत्ति दारं गतं।

इदाणिं [1]सदोसत्ति दार –

आरभडा सम्मद्दा, वज्जेतव्वा य मोसली ततिया।
पप्फोडणा चउत्था, वक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥१४२८॥

आरभड - जहाभिहितविधाणतो विपरीयं।

अहवा – तुरियं अण्णम्मि वा दरपडिलेहंति, अण्णं आढवेंति। [2]सम्मद्दणावेंटियमज्झतो जत्थ वा णिसण्णो वला कड्ढिउं पडिलेहेति। उड्ढमुहो तिरियं वा कुड्डादिसु आमुसंत पडिलेहेति मोसली। रेणुगुडिय वा पप्फोडेति, पप्फोडणा विधि खिवित्ता।

अहवा – दूरत्थं वत्थं अण्णं भणाति – "खिवाहि आरतो जा पडिलेहेमि" त्ति विक्खित्त। छट्ठो वेतिया दोसो, ता य पंच – जाणुवरि कोप्परा काउं पडिलेहेति, उड्ढवेतिआ। एगजाणु दुबाहंतो काउं पडिलेहेति, एगतोवेतिता। दो वि जाणू बाहंतो काउं पडिलेहेति, दुहितोवेतिता। जाणू हेट्ठाओ ट्ठितेसु हत्थेसु पडिलेहेति, अहोवेइआ। दोण्ह वि ऊरुआण अतठितासु बाहासु पडिलेहेति, अतोवेइया ॥१४२८॥

अहवा इमे छद्दोसा –

पसिढिल-पलंब-लोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा।
कुणति पमाणपमादं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥१४२९॥

पसिढिल गेण्हति। एगपासाओ पलंबं गेण्हति। महीए लोलतं पडिलेहेति। "[3]एगा मोस" त्ति - तिभागे घेत्तु अविच्छेदामोसेणताणेति जा वितियतिभागो। अणेगाणि रूवाणि जुगवं पडिलेहेति। अक्खोडगादिप्पमाणे प्पमाय करेति। जस्स जं संकियं भवति स गणंतो पडिलेहेति ॥१४२९॥

सदोसपडिलेहणाए इमं पच्छित्तं –

मासो य भिण्णमासो, पणगं उक्कोस-मज्झिम-जहण्णे।
दुप्पडिलेहित-दुपमज्जितम्मि उवधिम्मि पच्छित्तं ॥१४३०॥

दुप्पडिलेहिए दुप्पमज्जिते दोसेहिं वा आरभडादिएहिं पडिलेहतस्स उक्कोसे मासलहु, मज्झिमे भिण्णमासो, जहण्णे पणग ॥१४३०॥ सदोसत्ति दारं गतं।

इदाणिं [4]णिद्दोसे त्ति –

उड्ढं थिरं अतुरितं, सव्वंऽता वत्थ पुव्व पडिलेहे।
तो बितियं पप्फोडे, ततियं च पुणो पमज्जेज्जा ॥१४३१॥

---

१ गा० १४१७। २ मध्यप्रदेशे वस्त्रस्य संवलिताः कोणा यत्र भवन्ति सा समर्दा उच्यते। (ओ० नि० पृ० १०६) ३ ओ० नि० गा० १६१ पृ० १०६। ४ गा० १४१७।

उड्ढमिति उक्कड्डुओ णिविट्ठो, थिरमिति, दढं गेण्हति । अतुरितं-[1]परिसंथियं, सव्वं वत्थं अतातो पढमं पडिलेहेति । ततो वितिया पप्फोडणा पउंजति, अक्खोडगा ददातीत्यर्थः, ततो ततिया पमज्जणा पउंजति ॥१४३१॥

अणच्चावितं अवलियं, अणाणुबंधी अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा णवखोडा, पाणी पाण य पमज्जणं ॥१४३२॥

णच्चणं सरीरे, वत्थे वा । सरीरे उक्कंपणं, वत्थेवि विकारा करेंति । ण णच्चावियं अणच्चावियं । वलिय पि सरीरे वत्थे य, ण वलियं अवलियं । णिरतर अक्खोडपमज्जणा अकरणं अणाणुबंधी । कड्ढादिसु अमोसली । तिरियट्ठिते वत्थे तिण्णि दाउं अक्खोडा परावत्तेउं पुणो तिण्णि एते छप्पुरिममिति पुव्वं दायव्वं । ततो णव अक्खोडा पमज्जणंतरिआ दायव्वा । दाहिणहत्थकणिट्ठ-अणामियाहिं पढमतिभागमज्झे घेत्तु, अणामिय-मज्झिमाहिं मज्झ-तिभागमज्झे घेत्तु, पदेसिणीहिं ततियतिभागमज्झे घेत्तू, अहो वामहत्थकरतल-पसारियस्सोवरि अतुरियादयो अक्खोडगा दायव्वा, ततो प्राणिविसोधणत्थं अहो पाणी तेणे व वत्थेण ततो वारा पमज्जियव्वा, पुणो तिण्णि अक्खोडगा तिण्णि पमज्जणातो ततियवाराए पुणो तिण्णि । एव णव अक्खोडा पमजणातो य ॥१४३२॥ णिद्दोसेत्ति दारं गतं ।

इदाणि [2]हीणातिरित्ते त्ति दारं -

पडिलेहण-पप्फोडण, पमज्जणे वि य अहीणमतिरित्ता ।
उवधिम्मि य पुरिसेसु य, उक्कमकमतो य णातव्वा ॥१४३३॥

पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणा य एतातो अहीणमतिरित्ता कायव्वा । हीणातिरित्ते त्ति दारं गतं ।

[3]उक्कमकमतो त्ति दारं—"उवधि-पुरिसेसु" । उवधिम्मि पच्चूसे पुव्वं मुहपोत्ती, ततो रयहरणं, ततो अतो-णिसिज्जा, ततो बाहिर-णिसिज्जा, चोलपट्टो, कप्प, उत्तरपट्टं संथारपट्टं, दंडगो य । एस कमो अण्णहा उक्कमो । पुरिसेसु पुव्वं आयरियस्स, पच्छा परिण्णी, ततो गिलाण, सेहादियाण । अण्णहा उक्कमो ॥१४३३॥

उक्कमे अपडिलेहणाए य पच्छित्तं -

चाउम्मासुक्कोसे, मासियमज्झे य पंच य जहण्णे ।
तिविधम्मि उवधिम्मि, तिविधा आरोवणा भणिता ॥१४३४॥

उक्कोसे चाउम्मासो, मज्झिमे मासो, जहण्णे पणगं ।

तिविधे — जहण्णमज्झिमुक्कोसे ॥१४३४॥

इत्तरिओ पुण उवधी, जहण्णओ मज्झिमो य णातव्वो ।
सुत्तणिवातो मज्झिमे तमपडिलेहेंते-आणादी ॥१४३५॥

इत्तरगहणातो जहण्णमज्झिमे सुत्तणिवातो । मज्झिमे तमपडिलेहतस्स आणादिया य दोसा ॥१४३५॥

---

१ स्थित । २ गा० १४१७ । ३ गा० १४१७ ।

इमे संजमदोसा –

घरसंताणग-पणगे, घरकोइलियादिपसवणं चेव ।
हित-णट्ठजाणणट्ठा, विच्छुय तह सेडुकारी य ॥१४३६॥

घरसंताणगो त्ति अपेहिए लूतापुडगं संबज्झति । पणओ उल्ली अपेहिते भवति । गिहिकोइला पसवति । हिय णट्ठं वाऽसंभारियं भवति। शुम्हि विच्छुग–सप्पादिया पविसंति । अप्पेहिते तेहिं वि आयविराहणा भवति । सेडुयारिया,घण्णारिया गिह करेज्जा । जम्हा एते दोसा तम्हा सव्वोवही दुसंझं पडिलेहियव्वो ॥१४३६॥

कारणे पुण अपेहंतो वि अदोसो । इमे य ते कारणा –

असिवे ओमोयरिए गेलण्णद्धाणसंभमभये वा ।
तेणयपउरे सागारे संजमहेतुं व बितियपदं ॥१४३७॥

असिवगहितो ण तरति, तप्पडियरगा वा वाउलत्तणओ । ओमे [1]पए च्चिय आरद्धा हिंडिउं पडिलेहणाए णत्थि कालो । गिलाणो ण तरति एगागी । अद्धाणे सत्थवसो ण पेहे । अगणिमादि [2]संभवा ण पेहे । बोहिगादिभये वा। तेणयपउरे सारोवही य मा परिसहिति, ण पेहे कसिणोवहि त्ति। सागारिए ण पेहेति, [3]पावासगाण वा अग्गतो ण पेहेति । संजमहेउं वा-महियाभिण्णवाससचित्तरएसु बितिय–पदेण अपेहिंतो वि सुद्धो ॥१४३७॥

॥ विसेस-णिसीहचुण्णीए बितिओ उद्देसओ समत्तो ॥

---

१ प्रगे प्रभाते एव । २ संभमादद्रक्ष्यती ति । ३ प्राघुणकानाम् ।

तृतीय उद्देशक:

भणितो वितिओ।

इदाणिं ततिओ। तत्थ सबधमाह –

> उवधी पडिलेहेत्ता, भिक्खग्गहणं तु तं कहिं कुज्जा।
> सट्ठाणे अणोभट्ठं, अधवा उवधी उ आहारो ॥१४३८॥

उवहि त्ति पडिग्गहो, त भिक्खावेलाए पेहेत्ता तत्थ भिक्खग्गहणं कायव्व। त पुण भिक्खग्गहण कहिं कायव्वं ? सट्ठाणे।

अहवा – जत्थ वितियजामे भिक्खावेला तत्थ चरिमाए पडिग्गह पेहेत्ता भिक्खग्गहणं करेंति।

अहवा – चरिमाए पेहेत्ता भिक्खग्गहण काहिति, ण णिक्खिवति। अत्थपोरिसिं काउं तत्थ भिक्खं हिंडंति। तं कहिं कुज्जा ? "सट्ठाणे" त्ति सट्ठाणं मूलवसहिगामो, घरं वा। "अणोहट्ठ" [1]अजाणियं।

अहवा – [2]कोंटलादिउवकरणविरहियं एस संबंधो।

अहवा – उवही वुत्तो, इहं आहारो। द्वितीयोऽयं सम्बन्ध. ॥१४३८॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावतिकुलेसु वा परियावसहेसु वा, अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइम वा ओभासिय ओभासिय जायइ; जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

भिक्खू-पूर्ववत्, आगतारो जत्थ आगारी आगंतु चिट्ठति तं आगतागार। गामपरिसट्ठाण ति वुत्त भवति। आगतुगाण वा कय आगार आगंतागार बहियावासे त्ति। आरामे आगार आरामागार। गिहस्स पती गिहपती, तस्स कुलं गिहपतिकुल, अन्यगृहमित्यर्थः। गिहपज्जाय मोत्तु पव्वज्जापरियाए ठिता तेसिं आवसहो परियावसहो। एतेसु ठाणेसु ठितं अण्णउत्थिय वा असणाइ ओभासति साइज्जति वा तस्स मासलहु। एस सुत्तत्थो।

इमा सुत्तफासिया –

> आगंतारादीसुं, असणादोभासती तु जो भिक्खू।
> [3]सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराघणं पावे ॥१४३९॥

---

१ मायारहित। २ दे। ३ गिहि अन्नउत्थियं वा, सो पावति आणमादीणि।

आगंतारादिसु गिहत्थमन्नतित्थियं वा जो भिक्खू असणाती ओभासति सो पावति आणा-अणवत्थ-मिच्छत्त-विराहणं च ॥१४३६॥

अगमेहि कतमगारं, आगंतू जत्थ चिट्ठति अगारो ।
परिगमणं पव्जाओ, सो चरगादी तु णेगविधो ॥१४४०॥

"अगमा" रुक्खा, तेहिं कतं अगारं । आगंतु जत्थ चिट्ठंति आगारा तं आगंतागारं । परि-समंता गमणं गिहिभावगतेत्यर्थः । पव्जाओ पव्वज्जा, सो य चरग-परिव्वाय-सक्क-आजीवगमादिणेगविधो ॥१४४०॥

भद्देतरा तु दोसा, हवेज्ज ओभासिते अ ठाणम्मि ।
अचियत्तोभावणता, पंते भद्दे इमे होंति ॥१४४१॥

अट्ठाणठितोभासिते पंतभद्ददोसा । पंतस्स अचियत्तं भवति, ओभावणं वा, अहो इमे –

दमगपव्वइया जेण एगमेगं अट्ठाणेसु असणादि ओभासंति, न वा एतेसिं कोइ भद्दे त्ति काउ देति । ॥१४४१॥

इमे भद्द दोसा –

जध आतरोसे दीसइ, जध य विमग्गंति मं अठाणम्मि ।
दंतेंदिया तवस्सी, तो देमि णं भारितं कज्जं ॥१४४२॥

जहा एयस्स साहुस्सातरो दीसति, जह य मं अट्ठाण-ट्ठिय विमग्गति । दंतेंदिया तवस्सी, तो देमि अह एतेसिं णूण 'भारितं कज्जं' आपत्कल्पमित्यर्थः ॥१४४२॥

सड्ढि गिही अण्णतित्थी, करिज्ज ओभासिते तु सो असंते ।
उग्गमदोसेगतरं, खिप्पं से संजतट्ठाए ॥१४४३॥

श्रद्धाऽस्यास्तीति श्रद्धी, सो य गिही अण्णत्थिओ वा, ओभासिए समाणे से इति स गिही अण्णतित्थिओ वा खिप्पं तुरियं सोलसण्हं उग्गमदोसाणं अण्णतर करेज्जा संजयट्ठाए ॥१४४३॥

एवं खलु जिणकप्पे, गच्छे णिक्कारणम्मि तह चेव ।
कप्पति य कारणम्मी, जतणा ओभासितुं गच्छे ॥१४४४॥

एवं ता जिणकप्पे भणियं । गच्छवासिणो वि णिक्कारणे । एव चेव कारणजाते पुण कप्पति थेरकप्पियाणं ओभासिउ ॥१४४४॥

किं ते कारणा ? इमे –

गेलण्ण-रायदुट्ठे, रोहग-अद्धाणमंचिते ओमे ।
एतेहिं कारणेहिं, असती लंभम्मि ओभासे ॥१४४५॥

गिलाणट्ठा, रायदुट्ठे वा, रोहगे वा अतो अफच्चंता, अचिते वा अचियणं णाम दात्र(उ)सधी तत्थ त(भ)वणीओ खचि(घ)याओ ण वा णिप्फण्णं, णिप्फण्णे वा ण लब्भति । ओमं दुर्भिक्षं । एव अचिए ओमे दीर्घं-दुर्भिक्षमित्यर्थः । एतेहिं कारणेहिं अलब्भंते ओभासेज्जा ॥१४४५॥

कोऊहल्ल-पडियाए कोऊहलप्रतिज्ञया, कोतुकेणेत्यर्थः। तमागत जे असणाती ओभासति तस्स मासलहु।

आगंतागारेसुं, आरामागारे तथा गिहावसहे।
पुव्वट्ठिताण पच्छा, एज्ज गिही अण्णतित्थी वा ॥१४४६॥

आगंताइसु साहू पुव्वट्ठिता पच्छा गिही अण्णउत्थी वा एज्ज ॥१४४६॥

एसिं आगमणकारणं –

केयि अहाभावेणं, कोऊहल केइ वंदण-णिमित्तं।
पुच्छिस्सामो केयी, धम्मं दुविधं च वेच्छामो ॥१४५०॥

केति अहापवत्तिभावेणं, केति कोऊएणं, केइ वंदण-णिमित्तं, केइ संसय पुच्छिस्सामो, केति दुविधं धम्म – साहुधम्मं सावगधम्मं वा घेच्छामो ॥१४५०॥

एत्तो एगतरेणं, कारणजातेण आगतं संतं।
जे भिक्खू ओभासति, असणादी तस्सिमे दोसा ॥१४५१॥

तस्सिमे भद्द-पंतदोसा –

आत-परोभावणता, अदिण्णादिण्णे व तस्स अचियत्तं।
पुरिसोभावणदोसा, सविसेसतरा य इत्थीसु ॥१४५२॥

अलद्धे अप्पणो ओभावणा "सुद्दा ण लभति" त्ति। अदिण्णे परस्स ओभावणा "किवणो" त्ति [अ] दिण्णे वा अचियत्तं भवति। महायणमज्झे वा पणइतो "देमि" त्ति पच्छा अचियत्तं भवति दाउ। पुरिसे ओभावण दोसा एव केवला। इत्थिआसु ओभावणदोसा सकादोसा य, आय-परसमुत्था य दोसा ॥१४५२॥

भद्दो उग्गमदोसे, करेज्ज पच्छण्ण अभिहडादीणि।
पंतो पेलवगहणं, पुणरावत्तिं तथा दुविधं ॥१४५३॥

भद्दओ उग्गमेगतरदोसं कुज्जा, पच्छण्णाभिहडं पागडाभिहडं वा आणिज्ज। पंतो साहुसु पेलवगहणं करेज्ज – अहो इमे अदिण्णदाणा जो आगच्छति तमोभासति। साहु-सावगधम्म वा पडिवज्जामि त्ति ओभासति। ओभासिओ दुरूढो पडियणित्तो त्ति जाहे सावगो होहामि ताहे ण मुद्दहिंति जइ पव्वज्जं गेच्छामि त्ति एगो विपरिणमति तो मूलं, दोसु णवमं, तिसु चरिमं, [1]सावगवतेसु चरिमं, जं च ते विपरिणया असंजम काहिंति तमावज्जंति।

अहवा – णिण्हएसु वच्चंति। जम्हा एते दोसा तम्हा ण ओभासियव्वो ॥१४५३॥

आगओ एवं पच्छित – परिहरियं, आणा अणुपालिया, अणवत्था मिच्छत्त च परिहरिय। दुविहविराहणा परिहरिता। कारणे पुण ओभासति।

इमे य कारणा –

असिवे ओमोदरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोहए वा, जतणा ओभासितुं कप्पे ॥१४५४॥

भिण्णं समतिक्कंतो, पुव्वं जति उण पणगपणगेहिं ।
तो मासिएसु पयतति, ओभासणमादिसू असढो ॥१४४६॥

इमा जयणा – पढम पणगदोसेण गेण्हति, पच्छा दस-पण्णरस-वीस-भिण्णमास-दोसेण य । एव पणगभेदेहिं जाहे [1]भिण्ण समतिक्कतो ताहे मासिअट्ठाणेसु ओभासणादिसु जतति असढो ॥१४४६॥

तत्थ ओभासणे इमा जयणा –

तिगुणगतेहिं ण दिट्ठो, णीया वुत्ता तु तस्स उ कहेह ।
पुट्ठाऽपुट्ठा चेते, तो करेंति जं सुत्तपडिकुट्ठं ॥१४४७॥

पढम घरे ओभासिज्जति । अदिट्ठे एवं तयो वारा घरे गवेसियव्वो । तत्थ भज्जाति णीया वत्तव्वा- तस्स आगयस्स कहेज्जाह "साधू तव सगासं आगया कज्जेणं" घरे अदिट्ठे पच्छा आगंतारादिसु दिट्ठस्स घरगमणाति सव्वं कहेउ, तेण वंदिते अवंदिते वा तेण य पुट्ठे अपुट्ठे वा ज सुत्ते पडिसिद्धं तं कुव्वंति ओभासति इत्यर्थः ॥१४४७॥

एवं अण्णउत्थिया वा गारत्थिया वा; ॥सू०॥२॥

अण्णउत्थिणी वा गारत्थिणी वा; ॥सू०॥३॥

अण्णउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा;

असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायति,

जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

पढमम्मी जो तु गमो, सुत्ते बितियम्मि होति सो चेव ।
ततिय-चउत्थे वि तहा, एगत्त-पुहुत्त-संजुत्ते ॥१४४८॥

पढमे सुत्ते जो गमो बितिये वि पुरिसपोहुत्तियसुत्ते सो चेव गमो, ततिय-चउत्थेसु वि इत्थिसुत्तेसु सो चेव गमो ॥१४४८॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा
कोउहल्लपडियाए पडियागयं समाणं-
अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा ॥सू०॥५॥
अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा ॥सू०॥६॥
अण्णउत्थिणी वा गारत्थिणी वा, ॥सू०॥७॥
अण्णउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

[1] भिन्नमास ।

तिगुणगतेहिं ण दिट्ठो, णीया वुत्ता तु तस्स तु कहेह ।
पुट्ठाऽपुट्ठा व ततो, करेंतिमं सुत्त-पडिकुट्ठं ॥१४५५॥

एगत्ते जो तु गमो, णियमा पोहत्तियम्मि सो चेव ।
एगत्तातो दोसा, सविसेसतरा पुहुत्तम्मि ॥१४५६॥

असिवे जता मासं पत्तो ताहे घर गंतु ओभासिज्जति ।

अदिट्ठे महिला से भणति – अक्खेज्जासि सावगस्स साधुणो दट्ठुमागता ते आसि ।

सो [1]अविरइयसमीवे सोउं अहभावेण वा आगतो सव्व से घरगमणं कहिज्जति, कारण च से दीविज्जति, ततो जयणाए ओभासिज्जति ।

जइ सो भणति – घरं एज्जह, ताहे तेणेव सम गंतव्व, मा अभिहड काहि त्ति असुद्धं वा । एव रायदुट्ठादिसु वि ॥१४५६॥

एगत्तियसुत्तातो पोहत्तिएसु सविसेसतरा दोसा –

पुरिसाणं जो तु गमो, णियमा सो चेव होइ इत्थीसु ।
आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव उवधिम्मि ॥१४५७॥

जो पुरिसाणं गमो दोसु सुत्तेसु, इत्थीण वि सो चेव दोसु सुत्तेसु वत्तव्वो । जो आहारे गमो सो चेव अविसेसिओ उवकरणे दट्ठव्वो ॥१४५७॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा
अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा ॥सू०॥९॥
अन्नउत्थिएहि वा गारत्थिएहि वा ॥सू०॥१०॥
अन्नउत्थिणी वा गारत्थिणी वा ॥सू०॥११॥
अन्नउत्थिणीहि वा गारत्थिणीहि वा
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहेत्ता तमेव अणुवत्तिय अणुवत्तिय, परिवेढिय परिवेढिय, परिजविय परिजविय, ओभासिय ओभासिय जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

आगतागाराइसु ठियाण साहूण अणतित्थी गारत्थिओ वा अभिहड आमुखेन हृत, अभिहृतं, पारणादिसु कोइ सड्ढी सयमेव आहट्टु दलएज्ज । तं पडिसेहेत्ता "तमेव" त्ति त दायार, अणुवत्ति य त्ति सत्तपदाइं गंता, परिवेढिय त्ति पुरतो पिट्ठतो पासतो ठिच्चा, "परिजविय" त्ति परिजल्प्य, तुब्भेहिं एय अम्हट्ठा आणिय, मा तुब्भ अफलो परिस्समो भवतु, मा वा अधितिं करेस्सह, तो गेण्हामो एव ओभासतस्स मासलहु । सुद्धे वि असुद्धे । पुण जेण असुद्धं तमावज्जेज्ज वा ।

---

१ स्वीया अविरतिकारिक्त ।

आगंतागारेसुं, आरामागारे तहा गिहावसहे ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, आणेज्जा अभिहडं असणं ॥१४५८॥ कंठा

ओलग्गणमणुवयणं, परिवेढण पासपुरउ ठातुं वा ।
परिजवणं पुण जंपइ, गेण्हामो मा तुमं रुस्स ॥१४५९॥

"अणुवयण" त्ति ओलग्गिउं अणुव्रजितु, परिवेढणं पुरतो पासओ ठाउं, परिजल्पनं परिजल्पः, इमं जंपइ – गेण्हामो, मा तुमं रुसिहिसि ॥१४५९॥

तं पडिसेवेतूणं, दोच्चं अणुवतिय गेण्हती जो उ ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४६०॥

तमाहडमेव पडिसेहेउं एकः प्रतिषेध. । द्वितीयो अणुवइय त्ति ओलग्गिउं अणुवज्जितु ग्रहा जो एव गेण्हति तस्स आणादी दोसा, भद्दपंतदोसा य, आणाए भगो, अणवत्था कता, अण्णहा कारंतेण मिच्छत्तं णीयं ॥१४६०॥

इमो संजमविराहणादोसो भद्दपंतदोसो य –

एत्तेण उवातेणं, गेण्हंती भद्दओ करे पसंगं ।
अलियाभिरता माई, कवडायारा व ते पंतो ॥१४६१॥

भद्दो चिंतेइ – एतेण उवाएण गेण्हंति, आहडे पुणो पसंगं करेति । पंतो पेलवगहणं करे, भणेज्ज – वा अलिय अनृतं तम्मि अभिरता अलियाभिरया, ण गेण्हामो त्ति भणित्ता पच्छा गेण्हति । मायाविणो तत्थ कवड कृतकाचारा, कवडेण सव्वं पव्वज्जं आयरंति, ण एतेसिं वसहीए ण गेण्हति, इह पडिणीयतस्स गेण्हति, कोइ सब्भावो अत्थि ।

अहवा – सब्भावेण माइकिरियाजुत्तो कवडायारमाती भणति, एव पंतो वयति । जम्हा एते दोसा तम्हा ण एवं घेत्तव्वं ॥१४६१॥

कारणे पुण गहण कुव्वंति –

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भये व गेलण्णे वा ॥१४६२॥
अद्धाण रोधए वा, जतणा पडिसेवणा गहणं ॥१४६२॥

पडिसेहेउ जतणाए गेण्हंति ॥१४६२॥

का य जयणा ? इमा –

जति सव्वे गीतत्था, गहणं तत्थेव होति तु अलंभे ।
मीसेसणुवा इतूणं, मा य पुणो तत्थ एहामो ॥१४६३॥

जाहे पणगाइजयणाए मासलहुयं पत्तो ताहे जइ सव्वे साधू गीतत्था ताहे तत्थेव वसहीए गेण्हति, पसगणिवारणत्थ च भणति – अम्हं घरगयाणं चेव [illegible]ति, ण आणिज्जति । ताणि भणंति – "अज्जेक्कं गेण्ह ण पुणो आणेमो" ताहे घेप्पति वा रेति वज्जेति ॥सू०॥८॥ – नेसिं अगीताण पुरतो पडिसेहेउ पच्छतो तस्स अणुवतिऊण भणाति –

णिमंतेज्ज – अहवा – जइ अण्णदोसवज्जितं भद्दपंतदोसा वा ण भवति ताहे गिण्हति ।
इमं च भणति –

तया दूराहडं एतं, आदरेण सुसंभितं ।
मुहवण्णो य ते आसी, विवण्णो तेण गेण्हिमो ॥१४६४॥

तुमे दूराओ आणियं, आयरेण य आणीयं, [1]वेसवाराइणा य संभिय कयं, तुज्झ पडिसेहिते मुहवण्णो विवण्णो आसि तेण गेण्हामो । एव जयणाए गेण्हति । पसंगो णिवारितो, अगीता य वंचिया, आहडप्रतिनिवृत्त-भावात्मीकृतत्वात् । एवं इत्थियासु वि एवं पुहत्त-सुत्ते वि ॥१४६४॥

जे भिक्खू गाहावति-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविट्ठे पडियाइक्खिए समाणे दोच्चं तमेव कुलं अणुप्पविसति, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

पडियाइक्खिए त्ति प्रत्याख्यातः, अतित्थाविते त्ति भणियं भवति, दोच्चं पुनरपि तमेव प्रविसति, तस्स मासलहु, आणाइणो य दोसा ।

णिज्जुत्ती –

जे भिक्खू गिहवतिकुलं, अतिगते पिंडवात-पडियाए ।
पच्चक्खिते समाणे, तं चेव कुलं पुणो पविसे ॥१४६५॥

जे त्ति निद्देसे, भिक्खू पूर्ववत्, गिहस्स पती गिहपती, तस्स कुलं गृहमित्यर्थः, अतिगत. – प्रविष्टः, पिंडपात-प्रतिज्ञया, पच्चक्खातो प्रतिषिद्ध, प्रत्याख्यानेन समः – कुलं समाणे त्ति प्रत्याख्यानेत्यर्थः ।
अहवा – समाणे त्ति पच्चक्खाउ होउ तमेव पुणो प्रविसति ॥१४६५॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, पच्चक्खाते तु ण प्पविसे ॥१४६६॥

दुविहा विराहणा – आयसंजमे । जम्हा एते दोसा पावति तम्हा ण तं पुणो कुलं पविसे ॥१४६६॥
अह पविसति इमे दोसा –

दुपय-चतुप्पदणासे, हरणोद्दवणे य डहण खणणे य ।
चारियकामी दोच्चादीएसु संका भवे तत्थ ॥१४६७॥

य घरं तम्मि कुले दुप्पदा दुअक्खरिया ति, चउप्पदं अश्वादि णट्ठ हरितं वा, सो संकिज्जति । एवं उद्दविते [illegible] डाहे, खते य क्खए, चारिउ त्ति भंडिउ त्ति कामी उब्भामगो, ण्हुसादिआण वा दूइत्तणं करेइ, एवं संकिते निस्संकिते वा जं तमावज्जे, साहूहिं घरं चारियं ति रायकुले कहेज्ज, एव गेण्हणादयो दोसा ॥१४६७॥

कारणओ पुण दोच्चं पि पविसति –

बितियपदमणाभोगे, अंचित-गेलण्ण-पगत-पाहुणए ।
रायदुट्ठे रोधग, अद्धाणे वा वि तिविकप्पे ॥१४६८॥

---

1 मसालों से परिष्कृत ।

अणाभोगेण दोच्चं पि पविसे समणीओ खच्चियाओ जत्थ तं अंचियं दाउं संधिमादी दुभिक्खं वा गिलाणकारणेण वा भुज्जो पविसति; अण्णत्थ ण लभति पगतं संखडी, भिक्खावेला पविट्ठस्स ण देसकालो आसि, अपज्जत्ते भुज्जो पविस त्ति एवं पाहुणगातिएसु वि, अद्धाणे वा वि। तिविकप्पे त्ति आदि मज्झे अवसाणे य।

अहवा – गेलण्णादिएसु कज्जेसु एसणिज्जे अलब्भमाणे तिपरियल्ल विकप्पे पुणो तेसु चेव गिहेसु दोच्च वारं पविसति ॥१४६८॥

एतं तं चेव घरं, अपुव्वघरसंकडेण वा मूढो।
पुट्ठो पुण सेसेसु, कहेति कज्जं अपुट्ठो वा ॥१४६९॥

अणाभोगपविट्ठो गिहीण सुणेंत.णं भणति – एयं तं चेव घरं ति।

अहवा – अपुव्वघरसंकडेण वा पविट्ठो, भणाति – "एयं तं चेव घरं" ति। "सेसेसु" त्ति – गिलाणादिसु कारणेसु गिहीसु पुच्छितो अपुच्छितो वा गिलाणट्ठो वा दोच्चं पि आगत त्ति कज्ज कहेति ॥१४६९॥

भावितकुलाणि पविसति, अदेसकालो य जेसु से आसी।
सुण्णे पुणरागतेसु, भद्दगऽसुण्णं च जं आसी ॥१४७०॥

अहवा – जे साहू साहूणीहिं पविसंतेहिं भाविता कुला ण संकातिता दोसा भवति, तेसु दोच्च पि कारणे पविसति। अदेसकालो वि जेसु कुलेसु आसि पुणो तेसु देसकालेसु पविसति। जं वा भिक्खाकालेसु सुण्णं आसि तेसु पुणो पविसति। भद्दगकुलं वा असुण्णं ज आसि तत्थ केणइ कारणेण भिक्खा ण दत्ता तं पुणो पविसति ॥१४७०॥

जे भिक्खू संखडि-पलोयणाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

संखडि त्ति-आउआणि जम्मि जीवाण संखडिज्जति सा संखडी। सखडिसामिणा अणुण्णातो तो तम्मि रसवतीए पविसित्ता ओभणात्ति पलोइउं भणाति – 'इतो य इतो पयच्छाहि" त्ति, एस पलोयणा। जो एवं गेण्हति असणाति तस्स मासलहु।

आइण्णमणाइण्णा, दुविधा पुण संखडी समासेणं।
जा सा तु अणाइण्णा, तीए विहाणा इमे होंति ॥१४७१॥

सा संखडी समासेण दुविधा - आइण्णा अणाइण्णा य। साधूण कप्पणिज्जा आइण्णा, इतरा अणाइण्णा, तीसे इमे विहाणा। तुसद्दोऽवधारणे ॥१४७१॥

जावंतिया पगणिया, सखेत्ताखेत्त बाहिराऽऽइण्णं।
अविसुद्धपंथगमणा, सपच्चवाता य भेदा य ॥१४७२॥

आचंडाला पढमा, बितिया पासंड-जाति-णामेसु।
सक्खेत्ते जा सकोसे, अक्खेत्ते पुढविमादीसु ॥१४७३॥

पढमा ति जावतिगा ताए सव्वेसिं तडियकप्पडिगाणं आचडालेसु दिज्जति । "वितिय" त्ति पगणिता, प्रकर्षेण गण्या प्रगण्या, पासंडीणं चेव तेसिं पगणियाणं, दस ससरक्खा, दस शाक्या, दश परिव्राट्, दस-श्वेतपटा एवमादि । सखेत्ते जा सकोसं जोयणब्भंतरे, क्षेत्रावग्रहाभ्यन्तरेत्यर्थः । अखित्ते जा सचित्तपुढवीए, सचित्तवणस्सतिकायादिएसु वा ठिता ॥१४७३॥

एतासु चउसु वि इमं पच्छित्तं –

जावंतिगाए लहुगा, चतुगुरु पगणीए लहुग सक्खेत्ते ।
मीसग सच्चित्त-ऽणंतर-परंपरे कायपच्छित्तं ॥१४७४॥

जावंतियाए अत्थतो चउलहुं, सुत्तादेसतो मासलहु । पगतियाए चउगुरुं । सक्खित्ते संखडिगमणे चउलहु, परित्तमीसेणंतरे मासलहुं, अणंतमीसे अणंतरे मासगुरुं । दोसु वि मीसेसु परपरे लहुगुरु पणगं, सचित्ते परित्तअणंतरे चउलहुं, परंपरे मासलहुं, अणते एते चेव गुरुगा । एयं कायपच्छित्तं ॥१४७४॥

"[1]बाहिर" त्तिस्य व्याख्या –

बहि वुड्ढी अद्धजोयण, लहुगादी अट्ठहिं भवे सपयं ।
चरगादी आइण्णा, चतुगुरु हत्थादि भंगो य ॥१४७[illegible]॥

वहिखेत्तस्स जाव अद्धजोयणे चउलहुं, ततो परंपरवड्ढिए अद्धजोयणे च[illegible]स [illegible] उवज्झायस्स [illegible]गुरुगं, दिवड्ढजोयणे छलहुं, दुसु छगुरु, चउसु छेओ, अट्ठसु जोयणेसु मूलं, भिक्खुणो सपदं । उवज्झायस्स [illegible] आयरियस्स चउगुरुगातो अट्ठसु [illegible] य अणवट्ठो । आयरियस्स छल्लहुयातो अट्ठसु चरिमं ।

अहवा – खेत्तवहि त्ति पढम ठाणं, ततो परं अद्धजोयण[illegible]ड्ढीए अट्ठेसु चउलहुगाति अट्ठसु पदेसु । "सपतं" ति पारंचियं भवति ।

अहवा – खेत्तवहिअद्धद्धजोणवुड्ढीए चउलहुग[illegible]दि चउसु जोयणेसु पारंचिय । अभिक्खसेवाते अट्ठसु सपदं पावति ।

[illegible] – चरग-परिव्वायग-हड्डसरक्खादिएहिं तडियकप्पडिएहिं य जा [2]आतिण्ण ति अस्य व्याख्या, तत्थ अतिजणसमद्देण हत्थपायपत्तादियाणं भगो भवति । च सद्दाओ आइण्णा आकुला तं गच्छतो च[illegible]ति ॥१४७५॥

उवकरण सेहातियाण अवहार त्ति अस्य व्याख्या –

[3]अवि[illegible] कायेहऽविसुद्धपहा, सावत तेणेहि पच्चवाता तु ।
दंसणबंभे आता, तिविध अवाता बहि तहिं वा ॥१४७६॥

संखडिं गच्छतो अंतरा काएहिं पुढवीआउवणस्सतितसातिएहिं पहो अविसुद्धो-संसक्तेत्यर्थः । "सपच्चवाय" त्ति जत्थ पच्चवाओ अत्थि सा सपच्चवाता । ते य पच्चवाया अंतरा बहिं वा, सीहादि-सावयतेणाहिमादिया । ते तु अणभिगयधम्मा तत्थ चरगादिएहिं वुग्गाहिज्जंति, एस दसणावातो ।

चरियादियाहिं अण्णाहिं वा इत्थीहिं मत्तप्रमत्ताहिं आतपरसमुत्थेहिं दोसेहिं बंभविराहणा, एस चरणावायो । आयावातो वुत्तो । एतेहिं तिविधा अवाया भवंति ॥१४७६॥

१ गा० १४७२ । २ गा० १४७२ । ३ गा० १४७२ ।

इमं पच्छित्तं –

दंसणवाये लहुगा, सेसावाएसु चउगुरु होंति ।
जीवित-चरित्तभेदा, विसचरिगादीसु गुरुगा तु ॥१४७७॥

दंसणावाये चउलहुं, सेसावाओ बंभावायो आयविराहणा य एतेसु चउगुरुं ।

इदाणिं "[1]भेदा य" त्ति अस्य व्याख्या –

जीवित पश्चार्धम् । तत्थ कताति पडिणीओ उवासगादि विसं गरं वा देज्ज, जीवितभेदो भवति । चरिगाओ अण्णतराओ वा कुलटाओ चरित्तभेतो हवेज्ज । जीवित-चरणभेदेसु चउगुरुग चेव पच्छित्तं ॥१४७७॥

एसमणाइण्णा खलु, तव्विवरीता तु होति आइण्णा ।
आइण्णाए कोयी, भत्तेण पलोयणं कारे ॥१४७८॥

एस जावतियादिदोसदुट्ठा अणातिण्णा । जावंतियातिदोसविप्पमुक्का आइण्णा । कोइ सड्ढी आइण्णाए भणाति – तुब्भे पलोएह, जं एत्थ रुच्चति तं अच्छउ, सेसं मरुगादीआणं पयच्छामि ॥१४७८॥

तं जो उ पलोएज्जा, गेण्हेज्जा आयइज्ज वा भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४७९॥

एवं भणिते जे जो तं पलोएज्ज गेण्हेज्ज वा, आदिएज्ज वा सो आणाभगे वट्टति, अणवत्थं करेति, मिच्छत्तं जणयति । आयसंजमविराहणं च पावति ॥१४७९॥

पुव्वं पलोतिते गहिते वा इमे दोसा –

पडिणीय विसक्खेवो, तत्थ व अण्णत्थ वा वि तण्णिस्सा ।
मरुगादीण पओसो, अधिकरणुप्फोस वित्तवयो ॥१४८०॥

साधुणा ज पलोइयं भत्तपाणग तत्थ पडिणीओ उवासगादि विसं खिवेज्ज ।

साधुणीसाए वा पविट्ठो अण्णत्थ वा को ति विसं पक्खिवेजा । अच्छंते य ठवणादोसा, मरुगादयः मखडिसामियस्स पदुट्ठा भोत्तु णेच्छते, समणाण पुव्वं दत्तं उक्कोसं वा उव्विय त्ति अगारदाहं वा करेज्ज, साहुं वा पदुट्ठो हणेज, असुइएहिं वा छिक्कति । उप्फोसेज्ज अहिगरणं भवति, सो वा सखडिसामिओ धीयारेसु अभुजंतेसु सजयाण पदुसेज्ज । रिक्को मे वित्तवयो जाओ होज्जति ।

अधवा – धिज्जाइयाणं दाण दाउ भुजावेइ, एताणट्ठा वित्तवओ अधिगो जाओ त्ति ॥१४८०॥

भवे कारण जेण पलोएज्ज ।

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोधए वा, जतणाए पलोयणं कुज्जा ॥१४८१॥

इमा जयणा –

हत्थेण अदेसिंते (तो) अणावडंतो मणो (णे) ण मंतो य ।
दिस्संणतो मुहो भणति होज्ज णे कज्जमम्मुएणं ॥१४८२॥

---

[1] गा० १४७२ ।

हत्थेण ण दाएति, इमो इमो त्ति, अणावडंतो अणाभिडंतो उ फासणादोसपरिहरणत्थं (णउणतो प्र.) णतो अण्णतो मुहं पलोएत्तो [1]सणियं भणाति "अमुगेण दहिमादिणा कज्जं होज्ज", तं च गच्छुवग्गहकरं पणीयं [2]पलिट्ठं पज्जत्तं दव्वं पलोएति ॥१४८२॥

जे भिक्खू गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे परं ति-घरंतराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति; पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

तिण्णि गिहाणि तिघरं, तिघरमेव अंतरं तिघरतरं, किमुक्तं भवति गृहत्रयात् परत इत्यर्थं ।

अहवा – तिण्णि दो अंतरात् तृतीयअंतरात् परत इत्यर्थः। आयाए गृहीत्वा किंचित् असणाती अभिहडदोसेण जुत्तं आहट्टु साहुस्स देज्ज जो अणाइण्णं, तिघरतरा परेण आइण्णे वा अणुवउत्तो गेण्हति तस्स मासलहुं ।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो –

आइण्णमणाइण्णं, णिसिहाभिहडं व णो णिसीहं वा ।
णिसीहाभिहडं ठप्पं, णो णिसीहं तु वोच्छामि ॥१४८३॥

आहडं दुविधं – आइण्णमणाइण्णं च । अणाइण्णं दुविधं–णिसीहाभिहड, नो [illegible]णिसीहाभिहडं च । णिसीहं णाम अप्रकाश, णो णिसीह णाम प्रकाश । णिसीहाभिहड चिट्ठउ [illegible]ताव, णो णिसीहं ताव वोच्छामि ॥१४८३॥

सग्गाम-परग्गामे, घरंतरे णो घरंतरे चेव ।
तिघरंतरा परेणं, घरंतरं तं मुणे[illegible]व्वं ॥१४८४॥

सग्गामाहडं दुविहं – घरतरं, णो घरंतर च । [illegible] तिघरतराओ परेण जं तं घरतर भण्णति ॥१४८४॥

वाडग-साहि-णिवेसण, सग्गामे णो घरंतरं तिविहं ।
परगामे वि य [illegible] दुविधं, जलथल नावाए जंघाए ॥१४८५॥

वाडगाओ, साहितो, [illegible]णिवेसणातो – वाडगस्स पाडगेति सन्ना, घरपंती साही भण्णति, महाघरस्स परि[illegible]रघरा णिवेसणं भण्ण[illegible]ति । जं परगामाहड त दुविह – सदेसगामाओ, "इयरे" त्ति परदेसगामाओ वा । एवं दुविधं पि [illegible]जलेण वा थलेण वा आणिज्जति । ज जलेण, त नावा तारिमेण वा, जघातारिमेण वा ॥१४८५॥

जं थलेण त –

भंडी वहिलग काए सीसेण चतुव्विधं थले होति ।
एक्केक्कं तं दुविधं, सपच्चवातेयरं चेव ॥१४८६॥

"भंडी" गड्डी भण्णति । "वहिलगो" त्ति गोणातिपिट्ठीए लगड्डादिएसु आणिज्जति "काए" त्ति कावोडीसंकातिएण आणिज्जति, सिरेण वा, एयं चउव्विध थलेण भवति । एवं जल-थलेसु दुविधं पि-

१ सयं पा० । २ वलिय प्र० ।

सपच्चवायं, "इतरं" वा अपच्चवाय । पच्चवाओ पुण जले गाहा-मगर-मच्छादि, थले चोर-सावत-वालातितो अणेगविहो ॥१४८६॥

एतं सदेसाभिहडं, भणितं एमेव होति परदेसे ।
जल-थलमादी भेया, सपच्चवातेतरा णेया ॥१४८७॥

परदेसाभिहडं वि जल-थलादिभेदा सपच्चवाया इतरा सव्वे भाणियव्वा ॥१४८७॥

एयं णो णिसीह भणियं ।

णिसीह भण्णति –

एसेव गमो णियमा, णिसीहाभिहडे वि होति णायव्वो ।
आइण्णं पि य दुविधं, देसे तह देसदेसे य ॥१४८८॥

णिसीहाभिहडे वि एसेव गमो णेयव्वो । एय सव्वं अणाइण्णं भणियं ।

इदाणिं आइण्ण त दुविध – देसे देसदेसे य । देसो हत्थसयं, तस्स संभवो परिभुज्जमाणीए दीहाए घंसालाए, सखडीए वा परिएसणपंतीए । हत्थसता आरतो देसदेसो भण्णति ॥१४८८॥

सुत्तनिवातो सग्गामाभिहडे तं तु गेण्हे जे भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४८९॥

सग्गामाभिहडे सुत्तणिवातो, सेसं कठं ॥१४८९॥

अणाइण्णं पि कारणे गेण्हेज्जा, ण दोसो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भये व गेलण्णे ।
अद्धाण रोधए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥१४९०॥

पणगपरिहाणी जयणाए जतिऊण जाहे मासियं पत्तो ताहे गेण्हति । गीयत्थ-गहणातो गीयत्थो तं गेण्हंतो वि सविग्गो भवति ।

अहवा – जयण जाणति त्ति गीयत्थो गेण्हति स णिद्दोसो । अगीयत्थे पुण णत्थि जयणा, तेण तस्स जहा तहा गेण्हतो सदोसतेत्यर्थ. ॥१४९०॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो पाए आमज्जति एक्कसि, पमज्जति पुणो पुणो ।

अहवा हत्थेण आमज्जणं, रयहरणेण पमज्जणं । तस्स मासलहुं ।

इमा णिज्जुत्ती –

आइण्णमणाइण्णा, दुविहा पादे पमज्जणा होति ।
संसत्ते पंथे वा, भिक्ख-वियारे विहारे य ॥१४९१॥

पुव्वद्धं कंठं । जा सा आइण्णा सा इमा – अणेगविहा, संसत्तो पादो आमज्जितव्वो, पथे वा अथंडिलातो थंडिलं, थंडिलाओ वा अथंडिल, अथंडिलातो वा थंडिले विलक्खणे, सकायसत्थे त्ति काउ सकमंतो कण्हभोमातीसु पमज्जति, भिक्खातो वा पडिणियत्तो, वियारे त्ति सण्णाभूमीओ वा आगतो, विहारे त्ति सज्झायभूमीए, गामतराओ वा कुल-गणादिसु कज्जेसु पडिआगओ पमज्जति । मा उवकरणोवघातो भविस्सति त्ति ॥१४६१॥

एसा आइण्णा खलु तव्विवरीता भवे अणाइण्णा ।
सुत्तमणाएण्णाइं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥१४६२॥

खलु अवधारणे, एवमातिकारणवतिरित्ता अणातिण्णा, सुत्तणिवातो अणाइण्णासु, तं अणाइण्णपमज्जण णिसेवंतस्स आणादीया दोसा ।।१४६२।।

इमा संजमविराहणा –

संघट्टणा तु वाते, सुहुमे यऽण्णे विराधए पाणे ।
वाउसदोसविभूसा, तम्हा ण पमज्जए पादे ॥१४६३॥

पमज्जणे वाता संघट्टिज्जति, अण्णे य पयंगादी सुहुमे वादरे वा विराहेति, वाउसदोसो अ[illegible] बंभचेरे अगुत्ती, तम्हा पादे ण पमज्जते ।।१४६३।।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झुव्वातखज्जमाणे वा ।
पुव्वं पमज्जिऊणं वीसामे कंडुएज्जा [illegible] ॥१४६४॥

अणप्पज्झो अनात्मवश, खित्तचित्तादिएसु पमज्जणाइ कु[illegible] सपमज्जिउ विसामिज्जति, खज्जमाणो वा पादो पमज्जिउं कंडुइज्ज[illegible]रिज्ज । अप्पज्झो वा उव्वातो श्रान्तः [illegible] ति । उक्तार्थं च पश्चार्धम् ।।१४६४।।

जे भिक्खू अप्पणो पाए संवाहेज्ज, [illegible]
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं [illegible] वा पलिमद्देज्ज वा,
[illegible] वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

"स" इति प्रशसा । शोभना [illegible] वा [illegible]

सा चउव्विहा - अट्ठि सुह[illegible] [illegible]हा संवाहा ।

अड्ढरत्ते पच्छिमरत्ते वि दिवस[illegible], मंस - रोम - तया, सा गुरुमाइयाण वियाले सबाधा भवति । जो पुण [illegible] वा अणेगसो संवाधेति सा परिमद्दा भण्णति ।

जे भिक्खू अप्पणो पाए तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीए ण वा [1]मक्खेज्ज वा
भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए सीयोदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवंतं वा सातिज्जति
॥सू०॥२०॥

१ अब्भंगेज्ज वा प्र० ।

सीतमुदगं सीतोदगं, "वियड" त्ति ववगतजीव, उसिणमुदगं उसिणोदगं, तेण अप्पणो पादे एक्कसि उच्छोलणा, पुणो पुणो पधोवणा । एव सव्वे सुत्ता उच्चारेयव्वा । [1]अब्भंगो थोवेण, बहुणा मक्खणं ।

अहवा – एक्कसिं बहुसो वा । [2]कक्कादि प्रथमोद्देशके अंगादाण गमेण णेय ।

जे भिक्खू अप्पणो पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

अलत्तयरगं पादेसु लाएउं पच्छा फुमति । त जो रयति वा, फुमति वा ।

एतेसिं पचण्ह सुत्ताणं सगहगाहा –

संवाहणा पधोवण कक्कादीणुव्वलण मक्खणं वा वि ।
फुमणं वा [3]राइल्लं वा जो कुज्जा अप्पणो पादे ॥१४६५॥

संवाहण त्ति विस्सामणं, सीतोदगाइणा पधोवणं, कक्काइणा उव्वलण, तेल्लाइणा मक्खणं, [illegible]लत्तगाइणा रंगणं, करेति तस्स आणाइया दोसा ॥१४६५॥

एतेसिं पढमपदा, सइं तु वितिया तु बहुसो बहुणा वा ।
संवाहणा तु चतुधा, फूमंते लग्गते रागो ॥१४६६॥

दीहाए घ[illegible] एतेसिं सुत्ताण[illegible]

[illegible]पढमपदा संवाहणादि सकृत् करणे द्रष्टव्या, वितियपदा परिमद्दणाति बहुवारकरणे बहुणा वा करणे दट्ठव्वा । संवाहण[illegible] चउव्विहा उक्ता । अलक्तकरंगो फुमिज्जंतो लग्गति ॥१४६६॥

सो आणा अण[illegible]त्थं, मिच्छत्त-विराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तम्हा, [illegible] एते तु पदे विवज्जेज्जा ॥१४६७॥

[illegible]संवाहणा चम्मं अवणेज्ज, अट्ठिभंगं वा करेज्ज । एव सव्वेसु जहासंभव विराहणा भणियव्वा । गाढे [illegible]य । अब्भगे वि मच्छिगाति-संपातिम-वहो । उव्वलणे वि । पधोवणे एव चेव, उप्पिलावणादि वणे वि दोसा [illegible] ॥१४६७॥

[illegible]हाणी ।
आत-पर-मोहुदीरण, वाउसदोसा य सुत्तपोरि[illegible] ॥१४६८॥
संपातिमाति घातो, विवज्जयो लोगपरिवायो ॥[illegible]

रगे पधोवणातिसु य आय-पर-मोहोदीरण करेति, वाउसदोसो (सा) य भवति [illegible] (भवंति), सुत्तत्थाणं च परिहाणी भवति । साधुक्रियाया. साधोरपरस्य वा विपर्ययो विपरीतता भवति । साधु[illegible]श्रावक-मिथ्यादृष्टिलोके परिवादो "पादाभ्यङ्गकरणेन परिज्ञायते न साधुरिति" ॥१४६८॥

कारणतो करेज्ज –

वितियपदं गेलण्णे, अद्धाणुव्वात - वाय - वासासु ।
आदी पंचपदाऊ, मोह-तिगिच्छाए दोण्णितरे ॥१४६९॥

---

१ प्रथमोद्देशके चतुर्थसूत्रे । २ प्रथमोद्देशके पंचमसूत्रे । ३ रागयुक्तः ।

गिलाणस्स श्रद्धाणे वा, 'उव्वायस्स' वातेण वा गहियंस्स, वासासु वा। "श्राइ" त्ति गिलाणपयं तम्मि संवाहाती पंच वि पया पउत्तव्वा। वेज्जोवदेसेण पायतलरोगिणो मगदतियातिलेवेण अण्णेण वा रंगो कायव्वो। सेसेसु श्रद्धाणातिसु जहासंभव। मोह-तिगिच्छाए रयणं फुमणं वा दो य कायव्वा।

श्रहवा – संवाहातियाण पंचण्ह पदाणं आइल्ला चउरो पता गिलाणाइसु संभवति। दो फुमण रयण-पता मोह-तिगिच्छाए सभवंति।

चोदगाह – णणु फुमण-रयणे मोहवुड्ढी भवति ?

श्रायरियाह – सातिसतोवदेसेण जस्स तहा कज्जते य उवसमो भवति तस्स तहा कज्जति। किढिगाति आसेवणे वा। श्रद्धाणसंवाहणाति जहा संभव। एव वाते वि सबाह-सेय-अब्भगणाति। वासासु वा कद्दमलित्ताण धोवणेति। अगुलिमंतरा य कुहिया, कोद्दव-पलालघूमेण रज्जति ॥१४९९॥

एवं कायाभिलावेण छ सुत्ता भाणियव्वा –

जे भिक्खू अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा [illegible] णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भि[illegible]लिंगेंतं वा सातिज्जति।
॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं लोद्धेण वा कक्केण [illegible] वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा [illegible] सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं सीयोदग-[illegible]वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा
पधोएज्ज वा, [illegible] उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू अप्पणो [illegible] कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फु[illegible]मंतं वा रएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥ एए छ सुत्ता पूर्ववत्।

इमो [illegible] अइदेसगाहत्थो –

पादेसु जो तु गमो, णियमा कायम्मि होति स च्चेव।
णायव्वो तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१५००॥

जो पायसुत्तेसु गमो कायसुत्तेसु वि छसु सो चेव दट्ठव्वो। केण नायव्वो ? मतिमता। मतिरस्यास्तीति मतिमं। पुव्वं उस्सग्गपद, अवरं अववातपदं ॥१५००॥

एवं वणाभिलावेण ते चेव छ सुत्ता वत्तव्वा –

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेज्जंतं वा भिलिंगेज्जंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जेभिक्खू अप्पणो कायंसि वणं सीयोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति
॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

दुविधो कायम्मि वणो, तदुब्भवागंतुगो तु णातव्वो ।
तद्दोसो व तदुब्भवो, सत्थादागंतुओ भणिओ ॥१५०१

कायव्वणो दुविधो – तत्थेव काये उब्भवो जस्स दोसो य तब्भवो, आगंतुएण सत्थातिणा कओ जो सो आगतुगो । इमो तब्भवो तद्दोसो – कुट्ठो किडिमं, दद्दू, विकिच्चिका, पामा, गंडातिया य । आगतुगो-सत्थेण खग्गातिणा, कंटगेण वा, खाणूनो वा, सिरावेधो वा, दीहेण वा, सुणह-डक्को वा ॥१५०१॥

एतेसामण्णतरं, जो तु वणंमि सयं करे भिक्खू ।
पमज्जणमादी तु पदे, सो पावति आणमादीणि ॥१५०२॥

एतेसि अण्णतरे व्रणे जो पमज्जणातिपदे करेज्ज तस्स आणाती दोसा मासलहुं च पच्छित्तं ॥१५०२॥

सीस आह – वेयणट्टेण किं कायव्व ?

आयरिय आह –

णच्चुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए ।
अदीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥१५०३॥

"णच्च" त्ति ज्ञात्वा दुःखमुत्पन्नं, वेद्यत इति वेदना, तिव्वाए वेयणाए सव्व सरीर व्याप्तमित्यर्थं । ण दीणो अदीणो पसण्णमणो स्वभावस्थ इत्यर्थं, ण वा ओहयमणसंकप्पे ।

अहवा – हा माते ! हा पिते ! एवमादि ण भासते । जो सो अदीणो ण वेयणट्टो अप्पणो सिरोरुकुट्टणादि करेति ।

अहवा – ण वेयणट्टो चिंतेति – "अप्पाणं मारेमि" त्ति तं दुक्खमुप्पन्नं सम्म अहियासेयव्व इत्यर्थ. ॥१५०३॥

कारणे पुण आमज्जणाति करेज्ज –

अव्वोच्छित्तिणिमित्तं, जीयट्ठी वा समाहिहेतुं वा ।
पमज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥१५०४॥

सुत्तत्थाणं अवोच्छित्तिं करिस्सामि, जीवितट्ठी वा जीवंतो संजम करिस्सामो, चउत्थाइणा वा तवेण अप्पाण भाविस्सामि, णाण-दंसण-चरित्त-समाहि-साहणट्ठा वा ।

अहवा – समाहिमरणेण वा मरिस्सामि त्ति आमज्जणादिपदे जयणाए समायरेज्ज । जयणा जहा जीवोवघातो ण भवतीत्यर्थं ॥१५०४॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३४॥

गच्छती ति गंड, तं च गडमाला, जं च अण्णं पिलगं तु पादगतं गंडं "अरतित वा" ज ण पच्चति, असी अरिसा ता य अहिट्ठाणे णासाते व्रणेसु वा भवंति । पिलिगा (पिलगा) सि अप्पण्णतो अधिट्ठाणे क्षतं किमियजालसंपण्णं भवति । बहुसत्थसभवे अण्णतरेण तिक्खं जातमिति प्रकारप्रदर्शनार्थम् । एक्कसि ईपद् वा आच्छिंदणं, बहुवार सुट्ठु वा छि

गंडं च अरतियंसि, विग्गलं च भगंदलं [illegible]२०५॥
सत्थेणऽण्णतरेणं, जो तं अच्छिंदए　गतार्था ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वा गंडं [illegible] अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता अन्नयरेणं तिक्[illegible] णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, पूयं वा सो[illegible]णीहरें[illegible]सोहिंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

पुव्वं सुत्तं [illegible]रऊण इमे अइरित्ता आलावगा । "पूयं वा" पक्क सोणियं पुत भण्णति । रुहिर सभावत्थ[illegible]ति । णीहरति णाम णिग्गलति । अवसेसावयवा फेडण विसोहण भण्णति ।

[illegible]क्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नतरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू दो वि पुव्व सुत्तालावगे भणिओ । इमे तइयसुत्तालावगा सीयोदगवियड-गतार्थम् ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलित्ता पधोइत्ता अन्नयरेणं आलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३७।।

जे भिक्खू तिण्ह पि सुत्ताण आलावए वोत्तुं चउत्थसुत्ताइरित्ता इमे आलावगा वहु आलेवसभवे । अण्णतरगहणं । आलिप्यते अनेनेति आलेप जातगहण प्रकारप्रदर्शनार्थं । सो आलेवो तिविधो—वेदण पसमकारी, पाककारी, पुतादि णीहरणकारी ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता पधोइत्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

जे भिक्खू अप्पणो कायसि गड वा इत्यादि चउरो वि सुत्तालावगे वोत्तु इमे पंचमसुत्तारिता आलावगा तेल्लेण वा गतार्थं ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता पधोइत्ता विलिंपित्ता मक्खेत्ता अण्णयरेणं धूवणजाएणं धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा, धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।३९।।

एतेसिं इमा संगहणि-गाहा –

णीणेज्ज पूय-रुधिरं, तु उच्छोले सीत-वियड-उसिणेणं ।
लेवेण व आलिंपति, मक्खे धूवे व आणादी ।।१५०६।।

णीणेज्ज पूयाती ततो उच्छोलेति, ततो आलिपति, ततो मक्खेति, ततो धूवेति । एव जो करेति सो आणातिदोसे पावति । आयविराहणा मुच्छाती भवति । सजमे आउक्कायातिविराहणा ।।१५०६।।

एव ता जिणकप्पे, गच्छवासीण वि णिक्कारणे एव चेव । जतो भण्णति –

णिक्कारणे ण कप्पति, गंडादीएसु छेअ-धुव्रणादी ।
आसज्ज कारणं पुण, सो चेव गमो हवति तत्थ ।।१५०७।।

पुव्वद्धं कठं । कारणे पुण आसज्ज, एसेव कमो – सत्थादिणा अछिंदति, जइ ण पण्णपइ तो पूयाति णीहारेति । एवं अप्पणप्पंने उत्तरोत्तरपयकरणं ।।१५०७।।

णच्चुप्पति तं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए।
अद्दीणो [1]अव्वहितो तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥१५०८॥

अव्वोच्छित्ति-णिमित्तं, जीतट्ठीए समाहिहेतुं वा।
पमज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥१५०९॥

पूर्ववत्।

जे भिक्खू अप्पणो पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा, अंगुलीए निवेसिय निवेसिय णीहरति, णीहरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

पालु अपानं, तम्मि किमिया समुच्छति। कुक्खीए किमिया कुक्खि-किमिया, ते य खुड्डा भवंति। ते जति सण्णं वोसिरिउ अपाणब्भतरे थक्केज्जतो ते पालुकिमिये अंगुलीए णिवेसिय प्रवेश्य पुणो पुणो णीहरति परित्यजतीत्यर्थ.।

इमा णिज्जुत्ती –

गंडादिएसु किमिए, पालु-किमिते च कुच्छि-किमिते वा।
जो भिक्खू णीहरती, सो पावति आणमादीणि ॥१५१०॥

गंडादिएसु व्रणेसु पालुओ वा, कुच्छि-किमिए वा, जो भिक्खू णीहरति सो आणातिदोसे पावति।

णीहरणकप्पोवदंरिसणत्थं भण्णति –

णिक्कारणे सकारणे, अविधि विधी कट्ठमादिगा अविधी।
अंगुलमादी तु विधी, कारणे अविधीए सुत्तं तु ॥१५११॥

णिक्कारणे अविधीए, कारणे विधीए। कट्ठमादिएहिं जति णीहरति तो अविधी, अंगुलमादिएहिं विधी भवति। ततियभंगे सुत्तं, चरिमे सुद्धो। दोसु आइल्लेसु चउलहुं।

उस्सग्गेणं विधीए अविधीए वा ण णीहरियव्वा। तेसु विराहिज्जंतेसु संजमविराहणा, खते आयविराहणा, तत्थ गिलाणादि आरोवणा तम्हा अहियासेयव्व ॥१५११॥

णच्चुप्पइ तं दुक्खं, अभिभूतो वेदणाए तिव्वाए।
अद्दीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽधियासए सम्मं ॥१५१२॥

अव्वोच्छित्ति-णिमित्तं, जीतट्ठीए समाधिहेतुं वा।
गंडादीसु किमिए, जतणाए णीहरे भिक्खू ॥१५१३॥

तेसिं णीहरणे का जयणा ? पउमे वा, अल्लचम्मे वा। सेस पूर्ववत् ॥१५१३॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाओ णह-सिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

---

1 निश्चल.।

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे विक्खू अप्पणो दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा,
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७

जे भिक्खू अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू अप्पणो दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०। ४९॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा
भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं अच्छि-पत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०५८॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं केसाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू दीहाओ अप्पणो णहा इत्यादि-जाव-अप्पणो दीहे केसे कप्पेइ इत्यादि छवीस सुत्ता उच्चारेयव्वा ।

सुत्तत्थो णिज्जुत्ती य लाघवत्थं जुगवं वक्खाणिज्जंति –

जे भिक्खु णह-सिहाओ, कप्पेज्जा अधव संठवेज्जा वा ।
दीहं च रोमराई, मंसू केसुत्तरोट्ठं वा ॥१५१४॥

णहाण सिहा णहसिहा, नखाग्रा इत्यर्थः । कप्पयति छिनत्ति, संठवेति तीक्ष्णे करोति, चंद्रार्धे सुकतुडे वा करोति । रोमराती पोट्टे भवति, ते दीह कप्पेति, संठवेति, सुविहत्ते अधोमुहे ओ (उ) लिहति । मंसु-चिबुके, जंघासु, गुह्यदेसे वा, छिंदति, संठवेति वा । केसे त्ति सिरजे, ते छिंदति संठवेति वा । उत्तरोट्ठे रोमा दाढियाओ वा, ता छिंदति संठवेति वा ॥१५१४॥

भमुहाओ दंतसोधण, अच्छीण पमज्जणणाइगाइं वा ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१५१५॥

एव णासिगा-भमुग-रोमे वि। दतेसु अंगुलीए सकृदामज्जणं, पुणो पुणो पमज्जणं। दंतधोवण दंतकट्ठं, अचित्ते सुत्तं। तेण एक्कदिणं आघंसणं, दिणे दिण पघसण । दंते फूमति रयति वा पादसूत्रवत् । अच्छीणि वा आमज्जति णाम अक्खिपत्तरोमे संठवेति, पुणो पुणो करेंतस्स पमज्जणा।

अहवा – वीयकणुगादीणं सकृत् अवणयणे आमज्जणा, पुणो पुणो पमज्जणा । आदिसद्दातो जे अच्छीणि पधोवति । उसिणाइणा पउंछति णाम अंजणेणं अजेति । अच्छीणि फुमणरयणा पूर्ववत् । विसेसो कणुगादिसु फुमणं संभवति । एवं करेंतस्स आणातिविराहणातिया दोसा ॥१५१५॥

आमज्जणा पमज्जणं, सइ असइ धोवणं तु णेगविधं ।
चीपादीण पमज्जण, फुमणपसंतं जणे रागो ॥१५१६॥

उक्तार्था. । पसयमिति पसती, चुलुगो भण्णति, दव्वसभारकयं पाणीयं । त चुलुगे छोढुं, तत्थ णिवुड्डं अच्छि धरेति, ततो उच्छुड्डं फुमति रागो लग्गति, अंजिय वा फुमति रागो लग्गति ।

अहवा – पसयमिति दोहिं तिहिं वा णावापूरेहिं अच्छि धोवति, ततो अजेति, ततो फुमति-रागो लग्गति ॥१५१६॥

इमे दोसा –

आत-पर-मोहुदीरण, बाउसदोसा य सुत्तपरिहाणी ।
संपातिमातिघातो, विवज्जते लोगपरिवाओ ॥१५१७॥

पूर्ववत्

बितियपदं सामण्णं, सव्वेसु पदेसु होज्ज ऽणाभोगो ।
मोह-तिगिच्छाए पुण, एतो विसेसियं वोच्छं ॥१५१८॥

णहसिहातितो सव्वे सुत्तपडिसिद्धे अत्थे अणाभोगतो करेज्ज, मोह-तिगिच्छाए वा करेज्ज । अतो परं [1]तेरसपयाण पइ अवसेसिय वितियपदं भण्णति ॥१५१८॥

---

१ छवीस ।

चंकमणमावडणे, लेवो देह-खत असुइ णक्खेसु ।
वण-गंड-रतिअंसिय, भगंदलादीसु रोमाइं ॥१५१९॥

चंकमतो पायणहा उपल-खाणुगादिसु अप्फिडति। पडिलोमो वा भज्जति। हत्थणहा वा भायणे लेव विणासेंति । देह सरीरं, तत्थ खयं करेज्ज । ताहे लोगो भणेज्ज-एस कामी, अविरइयाए से णहपया दिण्ण त्ति । एयदोसपरिहरणत्थ छिंदतो सुद्धो । संठवण क्रमतादिणा घसति । लोगो य भणति – दीहणहंतरे सण्णा चिट्ठति त्ति असुइणो-एते । अवि य पायणहेसु दीहेसु अतरंतरे रेणू चिट्ठति, तीए चक्खु उवहम्मति । व्रण-गड-अरइयसि-भगंदरादिसु रोमा उवघायं करेंति, लेवं वा अतरेंति, अतो छिंदति संठवेति वा ॥१५१९॥

दंतामय दंतेसु, णयणाणं आमया तु णायणेसु ।
भुमया अच्छि-णिमित्तं, केसा पुण पव्वयंतस्स ॥१५२०॥

दतेसु दंतामयो दतरोगो, तत्थ दंतवणातिणा आघसति । एव णयणामये वि णयणे धोवति, रयति, फुमति वा । भमुगरोमा वा अतिदीहा, अइमहल्लत्तणेण य अच्छीसु पडंते छिंदति सठवेति वा । पव्वयतस्स अतिदीहा केसा, लोओ काउं ण सक्केति, सिररोगिणो वा केसे कप्पिज्जंति ॥१५२०॥

जे भिक्खू अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

सेयो प्रस्वेदः स्वत्थः (च्छ) मले (ल) छि (थि) गल जल्लो भणति । एस एव प्रस्वेद उल्लिउतो पंको भण्णत्ति, अण्णो वा जो कद्दमो लग्गो। मलो पुण उत्तरमाणो, अच्छो रेणू वा । सकृत् उवट्टण, पुणो पुणो पव्वट्टणं कक्काइणा वा ।

जे भिक्खू अच्छिमल वा इत्यादि अच्छिमलो दूसिकादि। कण्णमलो कण्णगूधा (ला) ति । दतकिणो दतमलो । णहमलो णहविच्चरेणू । णीहरति अवणेति, असेस विसोहणं ।

सेयं वा जल्लं वा, जे भिक्खू णिहरेज्ज कायातो ।
कण्ण-ऽच्छि-दंत-णह-मल, सो पावति आणमादीणि ॥१५२१॥

पढमसुत्तत्थो पुव्वद्धेण, बितियसुत्तत्थो पच्छद्धेण । आणादिया दोसा, आयविराहणा, पमत्त देवता छलेज्ज, अप्परुतीए वा वाउसदोसा भवति । सुत्तत्थेसु य पलिमथो ॥१५२१॥

जल्लो तु होति कमढं, मलो तु हत्थादि घट्टितो सडति ।
पंको पुण सेउल्लो, चिक्खलो वा वि जो लग्गो ॥१५२२॥

खरंटो उ जो मलो तं कमढ भण्णति । सेसं कंठ ॥१५२२॥

बितियपदमणप्पज्झे, णयणवणे ओस धामए चेव ।
मोह-तिगिच्छाए पुण, णीहरमाणो णातिक्कमति ॥१५२३॥

अणप्पज्झो खित्तचित्तादि, सव्वे उव्वट्टणादि अववाय पदे करेज्ज। णयणे वा दूसिओ, बद्धो अच्छिरोगेण वा किंचि अच्छीओ उद्धरियव्वं। सरीरे वा घूणो, तस्स अब्भासे मलादि फेडिज्जति, मा तेण वणो दज्झिहिति।

अहवा – कच्छू दद्दू किडभं अण्णो वा कोति आमयो, स ओसहेहिं उव्वट्टिज्जति। मोह-तिगिच्छाए वा, पुणो विसेसणे अण्णहा मोहो णोवसमति त्ति एवं विसेमेइ त्ति। एव करेंतो धम्ममेर आणं वा णातिकम्मति ॥१५२३॥

जे भिक्खू गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

मासकप्पो जत्थ कतो ततो जं गम्मइ तं गामाणुगामं। एत्थ अणुसद्दो पच्छाभावे।

अधवा – गच्छतो अग्गतो अणुकूलो गामो गामाणुगामो। दोसु सिसिर-गिम्हेसु रीइज्जति दूइज्जति, दोसु वा पदेसु रीइज्जति। सीसस्स आवरणं सीस दुवारं।

अहवा – सीसस्स एगं दुवारं [1]सीसदुवारिया। अप्पणो अप्पणा जो करेति तस्स मासलहु।

भिक्ख-वियार-विहारे, दूतिज्जंतो व गामणुग्गामिं।
सीसदुवारं भिक्खू, जो कुज्जा आणमादीणि ॥१५२४॥

भिक्खं हिंडतो वियारं सण्णभूमिं गच्छंतो, एएसु जो सीसदुवारियं करेति सो आणातिदोसे पावति। सीसदुवारियाए उवकरणभोगविवच्चासो। विवच्चासभोगे इमे पगारा पच्छित्तं च ॥१५२४॥

खंधे दुवार संजति, गरुलऽद्धंसो य पट्ट लिंगदुवे।
लहुओ लहुओ लहुया, तिसु चउगुरु दोसु मूलं तु ॥१५२५॥

चउप्फलं मोक्कल वा खंधे करेति, दुवार इति सीसदुवारिया करेति, दो वि बाहाओ छाएंतो संजतिपाउरणेण पाउणति, एगतो दुहतो वा कप्पअंच्चला खंधारोविया गरुलपक्खं पाउणति, अद्धंसो उत्तरासंगो, पट्ट इति चोलपट्ट बंधति, लिंगदुगं – गिहीलिंग अण्णउत्थियलिंगं वा करेइ। एतेसु जहासख इमं पच्छित्तं – लहुगो वा पच्छद्ध। अकारणे भोगविवच्चासं करेंतस्स एयं पच्छित्त ॥१५२५॥

अहवा –

परिभोगविवच्चासो, लिंगविवेगे य छत्तए तिविधे।
गिहिपंत-तक्करेसु य, पच्चावाता भवे दुविहा ॥१५२६॥

सीसदुवारे परिभोगविवच्चासो भवति। उवकरणणिप्फण्णं साहुलिंगविवेगो भवति। छत्तयकरणं च भवति। गिहिपंता साहुभद्दगा जे तक्करा गिहि त्ति काउ मुसंति। इहलोइय-परलोइया दुविधा पच्चवाया भवंति।

अहवा – आय-संजमविराहणा। गिहि-पंत-तक्करेहिं आहम्मति आयविराहणा। विवच्चासभोगे संजमविराधणा ॥१५२६॥

---

१ दे० मस्तक-अवगुण्ठन अथवा घूघट।

छत्तए तिविधे त्ति –

चउफल पोत्तिं सीसे, बहु पाउरणं तु बितिययं छत्तं ।
हत्थुक्खित्तं वत्थं, ततियं छत्तं च पिंछादी ॥१५२७॥

चउप्फल कप्पं सिरे करेति । बहुपाउरणं णाम अग्गुट्ठिं करेति, एयं बितिय छत्तं । हत्थुक्खित्तदंडए वा काउं धरेति, तइअय छत्तयं ।

अहवा – दो पुव्वुत्ता, ततिय पिच्छातिछत्तयं धरेति । जम्हा एते दोसा तम्हा णो सीसदुवारियं करे ॥१५२७॥

कारणे करेज्ज वि –

बितियपदं गेलण्णे, असहू सागारसेधमादीसु ।
अद्धाणे तेणेसु य, संजत-पंतेसु जतणाए ॥१५२८॥

गिलाणो उण्हं ण सहति । कण्णा वा से तस्स भरिज्जति । रायाति दिक्खितो वा असहू धारयति । सेहस्स वा सागारियं ति काउं अग्गुट्ठिं करोति । आदिसद्दातो असेहो वि पडिणीयस्स अण्णस्स वा सकतो जातिमाति जुगितो करेति । अद्धाणे वा उण्हं ण सेहेज्ज । तिसिओ वा, संजयपंतेसु वा तेणेसु अग्गुट्ठिं करेति । जयणाए त्ति सलिंगोवहिणा सीसदुवारे कए णज्जति तो गिहि-कासायमादिवत्थ घेत्तु करेति । एव जहा ण णज्जति तहा तहा करेति । एस जयणा ॥१५२८॥

जे भिक्खू सण-कप्पासओ वा उण्ण-कप्पासओ वा पोंड-कप्पासओ वा अमिल-कप्पासओ वा वसीकरण-सोत्तियं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

सणो वणस्सतिजाती, तस्स वागो कच्चणिज्जो कप्पासो भण्णति, "उण्ण" त्ति लाडाणं गड्डुरा भण्णंति, तस्स रोमा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति ।

अहवा – उण्णा एव कप्पासो उण्णा कप्पासो । पोंडा वमणी तस्स फल, तस्स पम्हा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति । अवसा वसे कीरंति जेणं त वसीकरणसुत्तय, सो पुण दोरो जेण वासे कीरइ उवकरणं वज्झति त्ति वुत्त भवति ।

वसिकरण-सुत्तगस्सा, अंछणयं वट्टणं व जो कुज्जा ।
बंधण-सिव्वणहेतुं, सो पावति आणमादीणि ॥१५२९॥

सचित्ताचित्तदव्वा जेण वसीकीरते त वसीकरणसुत्तय जो करेति । अछणं णाम – पण्ह (म्ह) पसिरणं, वट्टणं णाम दो तंतू एक्कतो वलेति, जहा सिव्वणदोरो, सिक्कगदोरो वलणं वा वट्टणं, पम्हाए वा भंगो वट्टणं, उवकरणाति बधणहेउं फट्टस्स वा सिव्वणहेउ । सो आणाती दोसे पावति ॥१५२९॥

अवसा वसम्मि कीरंति, जेण पसवो वसंति व जता ऊ ।
अंछणता तु पसिरणा, वट्टण सुत्ते व रज्जू वा ॥१५३०॥

पसवो गवाती, सजया ण तडप्फडे, जया वसंति, पसरणं पण्हाए, वट्टणं सुत्ते वा रज्जुए वा ॥१५३०॥

अंछणतवट्टणं वा, करेंति जीवाण होति अविवातो।
ऊरु य हत्थ छोडण, गिलाण आरोवणायाए ॥१५३१॥

अंछणयवट्टणासु सपातिमातिपाणा अइवाइज्जति, ऊर वा छोडिज्जति, छणिज्जति त्ति वुत्तं भवति, हत्या वा छणिज्जति, फोडगा वा भवति, तत्थ आयविराहणा गिलाणारोवणा य ॥१५३१॥

कारणा करेज्ज –

अद्धाण-णिग्गतादी, झामिय वूढे व तेणमादीसु ।
दुल्लभसुत्ते असती, जतणाए कप्पती कातुं ॥१५३२॥

अद्धाणणिग्गताती, आदिसद्दातो – पवेसे अद्धाणे ठिया वा, आदिसद्दाओ असिवओमा, दुव्वलोव-करण-संधण-सिव्वण-सिक्कगादिहेउं वा, एव झामिते उवकरणे, णतीपूरेण वा वूढे, तेणेसु वा हरिते, आदिसद्दाओ पडिणीएण वा, एतेहिं कारणेहिं अहाकडं घेत्तव्वं । दुल्लभसुत्ते देसे अरण्णातिसु वा असती णत्थि सुत्त जयणाए अप्पणा काउं कप्पति । पुव्व पेलू पिंजतो रूअं कप्पासो एस जयणा ।

अहवा – पणगहाणी जाहे मासियं पत्तो ताहे पसिरणाति करेति ॥१५३२॥

जे भिक्खू गिहंसि वा गिह-मुहंसि वा गिह-दुवारियंसि वा गिह-पडिदुवारियंसि वा गिहेलुयंसि वा गिहंगणंसि वा गिह-वच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

थंडिल-तिविहुवघातिं, गिह तस-अगणी य पुढविसंबद्धं ।
आऊवस्सतीए, विभासितव्वं जधा सुत्ते ॥१५३३॥

थडिलं तिविहोवघातियं – आय-पवयण-सजमं। गिहे आउवघाओ, तस-अगणि-पुढवि-आउ-वणस्सत्ति संबद्धं सजमोवघातित । विभाषा, विस्तारेण कर्तव्या । जहा सुत्ते आयारबितियसुत्तखधे थडिलसत्तिक्कए ॥१५३३॥

इमो सुत्तत्थो –

अंतो गिहं खलु गिहं, कोट्ठगसुविधी व गिहमुहं होति ।
अंगणं मंडवथाणं, अग्गदारं दुवारं तु ॥१५३४॥

घरस्स अंतो गिहब्भंतर गिहं भण्णति । गिह-गहणेण वा सव्वं चेव घरं घेप्पति । कोट्ठओ – अगिमालिंदओ, सुविही-व (छ) द्दारुआलिंदो, एते दो वि गिहमुह । गिहस्स अग्गतो अब्भावगासं मंडवथाणं अंगणं भण्णति । अग्गदार पवेसितं त गिहदुवार भण्णति ॥१५३४॥

गिहवच्चं पेरंता, पुरोहडं वा वि जत्थ वा वच्चं ।

गाहढं गिहस्स समंततो वच्चं भण्णति। पुरोहड वा वच्च पत्थ ति वुत्तं भवति। जत्था वा वच्चं करेंति, तं वच्चं सण्णाभूमी भण्णति ।

जे भिक्खू मडग-गिहंसि वा मडग-च्छारियंसि वा मडग-थूभियंसि वा मडग-आसयंसि वा मडग-लेणंसि वा मडग-थंडिलंसि वा

मडग-वच्चंसि वा उच्चारं पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

इमो सुत्तत्थो –

मडगगिहा मेच्छाणं, थूभा पुण विच्चगा होंति ॥१५३५॥

छारो तु अपुंजकडो, छारचिता विरहितं तु थंडिल्लं ।
वच्चं पुण पेरंता, सीताणं वा वि सव्वं तु ॥१५३६॥

मडगगिहं णाम मेच्छाणं घरब्भंतरे मतयं छोढु विज्जति, न डज्झति, त मडग-गिहं । अभिणव-दड्ढं अपुंजकयं छारो भण्णति । इट्टगादिचिया विच्चा थूभो भण्णति । मडाणं आश्रयो मडाश्रय स्थानमित्यर्थः । मसाणासण्णे आणेत्तु मडयं जत्थ मुच्चति तं मडासयं । मडयस्स उवरिं जं देवकुलं त लेणं भण्गति । छारचितिवज्जित केवल मडयदड्ढट्ठाणं थंडिलं भण्णति । मडयपेरंतं वच्चं भण्णति । सव्वं वा [1]सीताणं सीताणस्स वा पेरंत वच्च भण्णति ॥१५३६॥

जे भिक्खू इंगाल-दाहंसि वा खार-दाहंसि वा गात-दाहंसि वा तुस-दाहंसि वा
ऊस-दाहंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

इमो सुत्तत्थो –

इंगाल-खार-डाहो, खदिगादी वत्थुलादिया ।
गोमादिरोगसमणो, दहंति गत्ते तहिं जासि ॥१५३७॥

खइराती इंगाला, वत्थुलमाती खारो, जरातिरोगमरंताणं गोरूआणं रोगपसवणत्थं जत्थ गाता डज्झंति तं गात-दाहं भण्णति । कुभकारा जत्थ वाहिरओ तुसे डहंति तं तुसडाहठाणं । प्रतिवर्षं खलगट्ठाणे [2]ऊसण्णं जत्थ भुसं डहंति तं भुसडाहठाणं भण्णति ॥१५३७॥

जे भिक्खू अभिणवियासु वा गोलेहणियासु अभिणवियासु वा मट्टियाखाणिसु वा
परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

इमो सुत्तत्थो –

ऊसत्थाणे गाओ, लिहंति भुंजंति अभिणवा सा तु ।
अचियत्तमण्णलेहण, एमेव य मट्टियाखाणी ॥१५३८॥

जत्थ गावो ऊसत्थाणा लिहंति, सा भुजमाणी णिरुद्धा ण वा भण्णति । तत्थ दोसा – सचित्तमीसो

---

१ स्मशान । २ प्रायः ।

पुढविकायो, अचियत्तं गोसामियस्स वा। ण वा तत्थ गावो लेहवंति अंतरायदोसो, अण्णत्थ वा लेहवेति पुढविवहो। मट्टियाखाणीए वि सच्चित्तमीसा पुढवि, जणवयस्स वा अचियत्त, अण्ण वा खाणीं पवत्तेति ॥१५३८॥

जे भिक्खू सेयाययणंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उच्चारं वा
पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

इमो सुत्तत्थो –

पंको पुण चिक्खल्लो, पणओ पुण जत्थ मुच्छते ठाणे ।
सेयणपहो तु णिक्का, सु(मु)क्कंति फला जहिं वच्चं ॥१५३९॥

सचित्ताचित्तविसेसणे पुण सद्दो। आयतनमिति स्थान। पणओ उल्ली। सो जत्थ ठाणे समुच्छंति त पणगट्ठाण। कद्दमबहुल पाणीय सेओ भण्णति, तस्स आययण णिक्का ॥१५३९॥

जे भिक्खू उंबर-वच्चंसि वा णग्गोह-वच्चंसि वा असत्थ-वच्चंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू [1]डाग-वच्चंसि वा साग-वच्चंसि वा मूलय-वच्चंसि वा
कोत्थुंबरि-वच्चंसि वा खार-वच्चंसि वा जीरय-वच्चंसि वा
दमण (ग) वच्चंसि वा मरुग-वच्चंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ,परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू इक्खु-वणंसि वा सालि-वणंसि वा कुसुंभ-वणंसि वा कप्पास-वणंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे भिक्खू असोग-वणंसि वा सत्तिवण्ण-वणंसि वा चंपग-वणंसि वा
चूय-वणंसि वा अन्नयरेसु वा [2]तरुप्पगारेसु वा पत्तोवएसु पुप्फोवएसु
फलोवएसु बीओवएसु उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

उंबरस्स फला जत्थ गिरिउडे उच्चविज्जति तं उंबरवच्चं भण्णति। एव णग्गोहो वडो, असत्थो-पिप्पलो, पिलक्खू पिप्पलभेदो, सो पुण इत्थयाभिहाणा पिप्पली भण्णति ॥१५३९॥

एतेसामण्णतरं, थंडिल्ले जो तु वोसिरे भिक्खू ।
पासवणुच्चारं वा, सो पावति आणमादीणि ॥१५४०॥ कंठा

एते पुण सव्वे वि थंडिला देसाऽऽहिंडकेन जनदप्रसिद्धा ज्ञेया। तिविधे उवघाए पाडंति।

आया संजम पवयण, तिविधं उवघाइयं तु णातव्वं ।
गिहमादिंगालादी, सुसाणमादी जहा कमसो ॥१५४१॥

---

१ डागो, पत्रसागो। २ तरुप्पगारेसु।

गिहे आउवाघातो । तं गिहं अपरिग्गहेतरं वा । अपरिग्गहे मासलहुं, सपरिग्गहे चउलहुं, गेण्हण-कड्ढणादयो दोसा । एवं मडगातिसु वि सुसाणमातिएसु पवयणोवघातो, असुतिठाणासेविणो एते कापालिका इव । चउलहुं अवसेसा प्रायसो संजमोवघातिणो उवउज्ज अप्पणा जो जत्थ उवघातो सो तत्थ वत्तव्वो ॥१५४१॥

इमे दोसा –

छड्डावण पंतावण, तत्थेव य पाडणादयो दिट्ठे ।
अदिट्ठे अण्णकरणे, कायाकायाण वा उवरिं ॥१५४२॥

गिहातिविरुद्धठाणे वोसिरंतो छड्डाविज्जति, पंताविज्जति वा, तत्थं वा पाडेइ, एते दिट्ठे दोसा । अदिट्ठे पुण अण्णं इंगालातिदाहट्ठाणं करेंति, कायविराहणा भवंति, तं वा सण्णं कायाण उवरिं छड्डेंति॥१५४२॥

बितियपदमणप्पज्झे, ओसण्णाइण्ण-रोहगद्धाणे ।
दुब्बल-गहणी गिलाणे, जयणाए वोसिरेज्जाहिं ॥१५४३॥

अणप्पज्झे खित्तादी, ओसण्णमिति चिरायवणं अपरिभोगट्ठाणं, आइण्णं आयरिय सव्वो जणो जत्थ वोसिरति । रोहगे वा अण्णं थंडिलं णत्थि, अद्धाण पडिवण्णो वा वोसिरति, दुब्बलगहणी वा अण्ण थंडिल गंतुं न सक्केति, गिलाणो वा जं अप्पदोसतरं तत्थ वोसिरति । एस जयणा ।

अधवा – अण्णो अवलोएति, अण्णो वोसिरति । पउर-दवेण कुरुकुय करेति ॥१५४३॥

जे भिक्खू सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उव्वाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायं वा जाइत्ता उच्चारं पासवणं वा परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिए एडेइ; एडंतं वा सातिज्जति; तं सेवमाणे आवज्जति मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥८०

राउ त्ति संज्झा, वियाले त्ति संज्झावगमो, तत्प्राबल्येन बाधा उव्बाहा, अप्पणिज्जो सण्णामत्तओ सगपायं भण्णति । अप्पणिज्जस्स अभावे परपाते वा जाइत्ता वोसिरइ । परं अजाइउं वोसिरंतस्स मासलहुं, अणुग्गए सूरिए छड्डेति मासलहुं, मत्तगे णिक्कारणे वोसिरति मासलहुं ।

णिज्जुत्ती –

णो कप्पति भिक्खुस्सा, णियमत्ते तह परायए वा वि ।
वोसिरिऊणुच्चारं, वोसिरमाणे इमे दोसा ॥१५४४॥

णियमत्तए परायत्तए वा णो कप्पति भिक्खुस्स वोसिरिउं ॥१५४४॥

जो वोसिरति तस्स इमे दोसा –

सेहादीण दुगुंछा, णिसिरिज्जंतं व दिस्सगारी ण ।
उड्डाह भाण-भेदण, विसुया वणमादिपलिमंथो ॥१५४५॥

सेहो गधेणं वा दट्ठूण वा विपरिणमेज्ज, दुगुंछं वा करेज्ज, इमेहिं हड्डसरक्खा वि जिता । अगारिणो वा णिसिरिज्जंतं दट्ठु उड्डाह करेज्ज – अहो इमे असुइणो सव्वलोग विट्टालेंति । भाणभेय

करेज्ज । उदिते आइच्चे जाव परिट्ठवेति। विसुआवेति त्ति-जाव-उव्ववेति वा ताव सुत्तत्थे पलिमंथो भवति । आदिसद्दातो परेण दिट्ठे संका, भोतिगादिपसंगो ।।१५४५।।

चोदगाह –

एयं सुत्तं अफलं, अत्थो वा दो वि वा विरोधेणं ।
चोदग ! दो वि अ सत्था, जह होंति तह णिसामेह ।।१५४६।।

सुत्ते वोसिरणं न पडिसिद्धं, तुमं पुण अत्थेण पडिसेहेसि । एवं एगतरेण अफलेण भवितव्वं । दोवि परोप्परं विरोधेण ठिता ।

आयरियाह – "चोदग", पच्छद्धं । कंठं ।।१५४६।। सुत्तं कारणियं ।

के ते कारणा ? इमे –

गेलण्णमुत्तमट्ठे, रोहग-अद्धाण-सावते तेणे ।
दीहे दुविध रुयादे (ए), कहग दुग अभिग्गहा सण्णो ।।१५४७।।

गिलाणा काइयसण्णाभूमी गतु ण तरति, अणासगमुत्तमट्ठं तं पडिवण्णो ण तरति गतु, रोधगे काइयसण्णाभूमी णत्थि सागारियपडिबद्धा वा, अद्धाणे सचित्ताती पुढवी, राओ वा वसहीओ णिग्गच्छंतस्स सावयभयं । एवं तेण-दीह-जाइयभयं पि । पमेहे मुत्त-सक्कराए य एयाते दुविह-रुयाए पुणो पुणो वोसिरति । अणिओगकरणे धम्मकहणे य । अभिग्गहे-मोयपडिमं पडिवण्णो । भावसण्णो वा काइयसण्णाभूमी गतु ण तरति ।।१५४७।।

अप्पे संसत्तम्मि य, सागरऽचियत्तमेव पडिबद्धे ।
पाणदयाऽऽयमणे वा, वोसिरणं मत्तए भणितं ।।१५४८।।

अप्पा काइयभूमी, ससत्ता वा काइयभूमी, सघुस्स वा बाहिरे सण्णायगादि सागारियं, सेज्जायरस्स वा अंतो वोसिरिज्जमाणं अचियत्तं, इत्थीहिं वा समं भावपडिबद्धा काइयभूमी, पाणदयट्ठा वा, वासमहियासु पडंतीसु । विज्जाए उवयारो, काइयाए आयमियव्वं काउं । एतेहिं कारणेहिं मत्तए वोसिरिउं बाहिं जयणाए उनिते सूरिए पट्ठवेंति ।।१५४८।।

[1]अभिग्गह-[2]अप्प-दाराण इमा दोण्ह वि व्याख्या –

आभिग्गहिय त्ति कए, कहणं पुण होति मोयपडिमाए ।
अप्पो त्ति अप्पमोदं, मोदभूमी वा भवति अप्पा ।।१५४९।।

पुव्वद्धं कंठं । अप्पमिति मोत्तं, अप्पं पुणो पुणो भवति काइयभूमी वा अप्पा तेण मत्तए वोसिरति ।।१५४९।।

एतेहिं कारणेहिं, वोसिरणं दिवसतो व रत्ती वा ।
पगतं तु ण होति दिवा, अधिकारो रत्ति वोसट्ठे ।।१५५०।।

इह सूत्रे दिवसतो णाधिकारो, रातो वोसिरितेणाहिकारो १५५०।।

सग-पायम्मि य रातो, अधवा पर-पायगंसि जो भिक्खू ।
उच्चारमायरित्ता, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५१॥

कठा । उच्चारो सण्णा, पासवणं कातिया । जो राम्रो वोसिरिउ अणुग्गए सूरिए परिट्ठवेति तस्सेयं सुत्तं ॥१५५१॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५२॥ कठा

रातो परिट्ठवेंतस्स इमे दोसा –

तेणारक्खियसावय-पडिणीय-णपुंस-इत्थि-तेरिच्छा ।
ओहाणपेहि वेहाणसे य वाले य मुच्छा य ॥१५५३॥

राम्रो णिग्गम्रो तेणारक्खिएहिं घेप्पेज्ज, सीहमाइणा वा सावतेहिं खज्जेज्जा, पडिणीम्रो वा पडियरिउं राम्रो अप्पसागारिते पंतावेज्ज, पडिणीम्रो वा भणेज्ज – एस चोर पारदारिम्रो त्ति जेण राम्रो णिग्गच्छति । णपुंसगो वा रातो बला गेण्हेज्ज, इत्थी वा गेण्हेज्जा ।

अहवा – अहाभावेणं साधू इत्थी य जुगवं णिग्गता तत्थ सकाइया दोसा । एवं महासढिया-दितिरिक्खिए वि संकेज्ज ।

अधवा – णपुंस-इत्थी-तिरिच्छीए वा कोति अणायारं सेवेज्जा । ओहाणपेही वा दिवसतो छिद्दं अलभमाणो रातो समाहिपरिट्ठवणलक्खेण-ओहावेज्जा । एवं वेहाणसं पि करेज्जा । सप्पातिणा वा वालेण-खइतो ण तरति अक्खाउ, मुच्छा वा से होज्ज । जम्हा एते दोसा तम्हा ण परिट्ठवेयव्वो समाहिमत्तम्रो अणुग्गए सूरिए । कारणे पुण अणूग्गते वि परिट्ठवेति ॥१५५३॥

बितियपदे सागारे, संसत्तप्पेव्व णाणहेतुं वा ।
एतेहिं कारणेहिं, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५४॥

उग्गऐ सूरिए परिट्ठवेज्जमाणे सागारिय भवति, अतो काईयभूमी अप्पा, संसत्ता वा, ताहे दिवसतो वि मत्तए वोसिरिउं राम्रो अप्पसागारिते बाहिं परिट्ठविज्जति । उग्गते सूरिते जाव परिट्ठवेति विसुवावेति वा ताव सुत्तपलिमंथो महंतो भवति त्ति अणुग्गए सूरिए परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतो सुद्धो भवतीत्यर्थः ॥१५५४॥

॥ इति विसेस-निसीहचुण्णीए ततिम्रो उद्देसम्रो समत्तो ॥

चतुर्थ उद्देशकः

उक्तस्तृतीयोद्देशक इदाणिं चतुर्थः । तस्यायं संबंधः —

पासवण-पडण णिसिकज्ज-णिग्गतो गोमियादि गहितम्मि ।
तं मोयणट्ठताए, रायं अत्तीकरणमादी ॥१५५५॥

पासवण काइया, तस्स पडणं ति वा उज्झणं ति वा एगट्ठं, णिसी रात्री, एतेण कारणेणं राम्रो णिग्गतो, गोमिया दंडवासिया तेहिं घेप्पेज्ज, तदित्यनेन साधु संबध्यते, तस्स मोयणट्ठताए रायाण आत्मी-करोति । आदिसद्दातो अच्चीकरणमादिसूत्ता सूइया ॥१५५५॥

जे भिक्खू रायं अत्तीकरेइ करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

अत्तीकरणं रण्णो, साभावित कइतवं च णायव्वं ।
पुव्वावरसंबद्धं, पच्चक्ख-परोक्खमेक्केक्कं ॥१५५६॥

त पुण अत्तीकरणं दुविध — साभावियं कतितवियं च । साभावित सतं सच्च चेव, सो तस्स सयणिज्जओ । कैतवं पुण अलियं । तं पुणो एक्केक्कं दुविधं — पुव्व [1]संथुता वा, अवरमिति पच्छासंबद्ध वा । त पुणो दुविध — पच्चक्खं परोक्ख च । पच्चक्ख सयमेव करेति, परोक्खं अण्णेण कारवेति ।

अहवा — राज्ञः समक्ष प्रत्यक्षं, अन्यथा परोक्ष भवति ॥१५५६॥

सते पच्चक्ख-परोक्खे इमं भण्णति —

रायमरणम्मि कुल-घर-गताए जातोमि अवहिताए वा ।
निव्वासियपुत्तो व मि, अमुगत्थ गतेण जातो वा ॥१५५७॥

रायाण मते देवी आवण्णसत्ता कुलघर गया, तीसे अह पुत्तो जहा खुड्डगकुमारो । अवहियाए य जहा पउमावतीए करकंडू कोइ रायपुत्तो णिच्छूढो । अण्णत्थगतेण तेणाहं जातो, जहा अभयकुमारो । अमुगत्थ गएण रण्णा अह जातो, जहा वसुदेवेण जराकुमार. । उत्तरमहुरावणिएण वा अण्णियपुत्तो ॥१५५७॥

सत परकरणं कहं सभवति ?

दुल्लभपवेस लज्जालुगो व एमेवऽमच्चमादीहिं ।
पच्चक्ख-परोक्खं वा, कारेज्जा संथवं कोयी ॥१५५८॥

---

1 बद्ध ।

तत्थ रायकुले दुल्लभो पवेसो, लज्जालुओ वा सो साधू, अप्पणो असत्तो अत्तीकरणं काउं ताहे अमच्चमातीहिं कारवेति । "एमेव गहणातो असंतं संवज्झति ।" एते चेव कुलघरातिकारणा कोति जहा-विजाणंतो पच्चक्ख परोक्ख सयवं करेज्ज, अमच्चमादीहिं वा कारवेज्ज ॥१५५८॥

एत्तो एगतरेणं, अत्तीकरणं तु संतऽसंतेणं ।
अत्तीकरेति रायं, लहु लहुगा आणमादीणि ॥१५५९॥

सते पच्चक्खे परोक्खे वा मासलहु, असते पच्चक्खे परोक्खे वा चउलहुं, आणाइणो य दोसा, अणुलोमे पडिलोमे वा उवसग्गे करेज्ज ॥१५५९॥

राया रायसुही वा, राया मित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधिसुही व तं सोच्चा ॥१५६०॥

सयमेव राया, राज्ञः सुहृद, ते पुनः स्वजना मित्रा वा राज्ञो, अमित्रा ते स्वजना दायादा अस्वजना वा केनचित् कारणेन विरुद्धा, अमित्ताण वा जे सुहिणो साधुस्स वा जे संबंधिणो, ताण वा सवधीण जे सुही, ते त सोच्चा दुविहे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६०॥

संजमविग्घकरे वा, सरीरबाहा करे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५६१॥

सजमविग्घकरे वा उवसग्गे सरीरबाहाकारके वा करेज्ज । जे संजमविग्घकरा ते अणुकूला, इतरे पडिकूला । एते दुविहे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६१॥

तत्थिमे अणुकूला –

सातिज्जसु रज्जसिरिं, जुवरायत्तं व गेण्हसु व भोगे ।
इति राय तस्सुहीसु व, उट्ठेज्जितरे य तं घेत्तुं ॥१५६२॥

राया भणति – रज्जसिरिं साइज्जसु, अहं ते पयच्छामि, जुगराइत्तं, विसिट्ठे वा भोगे गेण्हसु, "इति" उपप्रदर्शने । राया एवमाह, तस्य सुहृदः तेप्येवमेव आहु । "इतरे" त्ति जे रण्णो पडिणीया पडिणीयाण वा जे सुहिणो, ते तं उप्पव्वावेउं घेत्तु वि उत्थाणं करेज्जा उड्डमर करेंतीत्यर्थः ॥१५६२॥

सुहिणो व तस्स वीरियपरक्कमे णातु साहए रण्णो ।
तोसेही एस णिवं, अम्हे तु ण सुट्ठु पगणेति ॥१५६३॥

जे पुण भिक्खुसुहिणो ते तस्स साहुस्स वीरियबलपरिक्कमं णाउ उप्पव्वावेंति साहेंति वा रण्णो, सो तं उप्पव्वावेइ । ते पुण किं उप्पव्वावेंति ? एस रायाणं तोसेहिति त्ति, अम्हे राया ण सुट्ठु पगणेति ॥१५६३॥

इमे सरीरबाहाकरा पडिकूला उवसग्गा –

ओभामिओ मि धिग्मुंडिएण कुज्जा व रज्जविग्घं मे ।
एमेव सुही दरिसते, णिवप्पदोसेतरे मारे ॥१५६४॥

राया भणति-अहो इमेण समणेण महायणमज्झे ओभामिओ, धिक् मुंडितेन दुरात्मना य एवं भाषते।

अहवा – एष भोगाभिलाषी मम परिसं भिंदिउ रज्जविग्घं करेज्ज। त सो राया हणेज्ज वा, विंधेज्ज वा, मारेज्ज वा, रण्णो जे सुही तेहिं आणेउ रण्णो दरिसिते राया तहेव पडिकूलं उवसग्ग करेज्ज। इतरे णाम जे रण्णो अमित्ता अमित्तसुहिणो वा ते रण्णो पडिणीयत्ताए त मारेज्ज भिक्खुस्स, णीया वा पडिलोमे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६४॥

उद्धंसियामो लोगंसि, भागहारी व होहिती मा णे।
इति दायिगादिणीता, करेज्ज पडिलोममुवसग्गे ॥१५६५॥

"उद्धंसिय" त्ति ओभासिया अम्हे एतेण लोगमज्झे, ओभासिओ वा एस अम्ह भागहारी होहिति त्ति मा वा अम्हं अधिकतरो एत्थ रायकुले होहिति त्ति। दुव्वयण-घाय-बंधाइएहिं उत्तावेंति मारेंति वा। जम्हा एते दोसा तम्हा ण कप्पति रण्णो अत्तीकरणं काउ ॥१५६५॥

कारणे पुण कप्पति –

गेलण्ण रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे।
ओमुब्भावण सासण, णिक्खमणुवदेसकज्जेसु ॥१५६६॥

गिलाणस्स वेज्जेण उवदिट्ठ हंसतेल्लं कल्लाणघय तित्तगं महातित्तग वा कलम-सालि-ओदणो वा, ताणि परं रण्णो हवेज्ज, ताहे जयणाए अत्तीकरण करेंति ॥१५६६॥

इमा जयणा –

पणगातिमतिक्कंतो, पारोक्खं ताहे संतसंतेणं।
एमेव य पच्चक्खं, भावं णातुं व उवजूओ ॥१५६७॥

पणगपरिहाणीए जाहे मासलहु पत्तो ताहे सत परोक्खं रण्णो अत्तीकरण करेंति, पच्छा असत-परोक्ख। एमेव य पच्चक्खं संतासंतेहिं णायव्व। अण्णादेसेण सत परोक्खं, ततो सत पच्चक्ख। एव असंत-परोक्ख पच्चक्ख। रण्णो य भावो जाणियव्वो – प्रियाप्रियेति। जो य लक्खणजुत्तो उ यो दर्शनीय तेजस्वी वा स अत्तीकरणं करेति। [1]रायदुट्ठे वा उवसमणट्ठा, वेरज्जे वा आत्मसंरक्षणार्थे, विरुद्धरज्जे वा सकमणट्ठा, रोहगे वा णिग्गमणट्ठा, अप्फवंता वा भत्तट्ठा, रण्णा वा सद्धिं अद्धाण गच्छता, एव बहुसु उप्पत्तिएसु कारणेसु, ओमे वा [2]भत्तट्ठा, वादकाले वा पवयणउब्भावणट्ठा, पडिणीयस्स वा सासणट्ठा, अत्तीकतो वा जो णिक्खमेज तवट्ठा, धम्मं वा पडिवज्जिउक्कामस्स धम्मोवएसदाणट्ठा कुल-गणातिकज्जेसु वा अणेगेसु ॥१५६७॥

जे भिक्खू रायारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू णगरारक्खियं अत्तीकरेति अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू णिगमारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू देसारक्खियं अत्तीकरेत्ति अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सव्वारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

---

१ गा० १५६६ व्याख्या। २ अप्फवता।

एतेहिं कारणेहिं, अत्तीकरणं तु होति नायव्वं ।
रायारक्खिय-नागरणेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५६८॥

एतेहिं उत्तरकरणेहिं रण्णो अत्तीकरण करेज्ज । रायाण जो रक्खति सो रायारक्खिओ-सिरोरक्ष, तत्थ वि सो चेव गमो । णगर रक्खति जो सो णगररक्खिओ कोट्टपाल । सव्वपगइओ जो रक्खति णिगमारक्खिओ, सो सेट्ठी । देसो विसतो, त जो रक्खति सो देसारक्खिओ, चोरोद्धरणिकः । एताणि सव्वाणि जो रक्खति सो सव्वारक्खिओ, एतेषु सर्वकार्येषु आपृच्छनीय· स च महाबलाधिकतेत्यर्थ· ।

एतेसिं पंचण्ह सुत्ताणं इमं पच्छद्ध अइदेस करोति । रायारक्खिय-णागरणेगमसव्वे वि । अपि-शब्दाद् देशारक्षको द्रष्टव्य. । एतेसु वि एमेव उस्सग्गववायगमो दट्ठव्वो ॥१५६८॥

जे भिक्खू रायं अच्चीकरेति, अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥
जे भिक्खू रायारक्खियं अचीकरेति, अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥
जे भिक्खू णगरारक्खियं अचीकरेति, अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥
जे भिक्खू णिगमारक्खियं अचीकरेति, अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥
जे भिक्खू देसारक्खियं अचीकरेति, अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥
जे भिक्खू सव्वारक्खियं अचीकरेति अचीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अर्चन अर्चा, अर्चाया: करणं अर्चाकरणं ।

अचीकरणं रण्णो, गुणवयणं तं समासओ दुविधं ।
संतमसंतं च तथा, पच्चक्ख-परोक्खमेक्केक्कं ॥१५६९॥

रण्णो अच्चीकरणं किं ? गुणवयण सौर्यादि, तं दुविध – संतमसंतं, एक्केक्कं पच्चक्ख परोक्ख ॥१५६९॥

एत्तो एगतरेणं, अच्चीकरणेण जो तु रायाणं ।
अच्चीकरेति भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥१५७०॥ कठा

इम गुणवयण –

एक्तो हिमवंतो, अण्णतो सालवाहणो राया ।
समभारभराक्कंता, तेण ण पल्हत्थए पुहई ॥१५७१॥
राया रायसुही वा, रायामित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधि-सुही व तं सोच्चा ॥१५७२॥
संजमविग्घकरे वा, सरीरबाधाकरे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५७३॥

गेलण्ण रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे ।
ओमुब्भावण सासण, णिक्खमणुवएसकज्जेसु ॥१५७४॥
एतेहिं कारणेहिं, अच्चीकरणं तु होति कातव्वं ।
रायारक्खियणागर-णेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५७५॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू रायं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥
जे भिक्खू रायारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥
जे भिक्खू णगरारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥
जे भिक्खू णिगमारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥
जे भिक्खू देसारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥
जे भिक्खू सव्वारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

अत्थयते अत्थी वा, करेति अत्थं व जणयते जम्हा ।
अत्थीकरणं तम्हा, तं विज्जणिमित्तमादीहिं ॥१५७६॥

साहू रायाणं अत्थेति प्रार्थयति । साधू वा तहा करेति जहा सो राया तस्स साहुस्स अत्थी-भवति प्रार्थयतीत्यर्थ. । साधू वा तस्य राज्ञ अर्थं जनयति, धातुवादादिना करोतीत्यर्थः । जम्हा एव करेति तम्हा अत्थीकरणं भण्णति ।

साधू रायाण भणाति – मम अत्थि विज्जाणिमित्त वा तीताणागतं नाणं,ताहे सो राया अत्थीभवति। आदिसद्दातो रसायणादिजोगा ॥१५७६॥

इमं अत्थीकरण –

धातुनिधीण दरिसणे, जणयंते तत्थ होति सट्ठाणं ।
अत्ती - अच्ची - अत्थेण, संतमसंतेण लहुलहुया ॥१५७७॥

धातुव्वातेण वा से अत्थ करेति, महाकालमतेण वा से णिहिं दरिसेति, एव अत्थ जणयतो सट्ठाणपच्छित्तं ।

"[1]छक्कायचउसु लहु" गाहा । सीहावलोयणेण गतोऽप्यर्थः-पुनरुच्यते-अत्ती अच्ची अत्थी, एतेसु संतेसु मासलहु, असतेसु चउलहु ॥१५७७॥

एत्तो एगतरेणं, अत्थीकरणेण जो तु रायाणं ।
अत्थीकरेति भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥१५७८॥
राया रायसुही वा, रायामित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधिसुही व तं सोच्चा ॥१५७९॥

संजमविग्घकरे वा, सरीरवाधाकरे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५८०॥
गेलण्ण-रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे ।
ओमुब्भावण सासण, णिक्खमणुवएसकज्जेसु ॥१५८१॥
एतेहिं कारणेहिं, अत्थीकरणं तु होति कातव्वं ।
रायारक्खिय णागर-णेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५८२॥

पूर्ववत्

जे भिक्खू कसिणाओ ओसहीओ आहारेति
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

कसिणा संपुण्णा, दव्वतो अभिण्णा, ओसहिओ सालिमातियाओ, आहारेति भुंजति, तस्स मासलहुं ।

कसिणत्तमोसहीणं, दव्वे भावे चउक्कभयणा तु ।
दव्वेण जा सगला, जीवजुत्ता भावतो कसिणा ॥१५८३॥

कसिणत्ते ओसहीण दव्वभावेहिं चउभंगो कायव्वो । दव्वतो कसिणा सतुसा अखडिता अफुडिता । भावकसिणा जा सचेयणा ॥१५८३॥

सतुसा सचेतणा वि य, पढमभंगो तु ओसहीणं तु ।
बितिओ सचेतणऽतुसा खंडितगाधा अतिच्छडिता ॥१५८४॥

जा सतुसा दव्वतो अभिण्णा सचेयणा य, एस पढमभंगो । जा सचेयणा अतुसा चेयणा तंदुला सतुसा वा खडिता "अतिच्छडिता" एगदुच्छडा व कता ॥१५८४॥ एस बितियभंगो ।

णियगट्ठितिमतिक्कंता, सतुसा बीया तु ततियओ भंगो ।
पढमं पति विवरीओ, चउत्थभंगो मुणेतव्वो ॥१५८५॥

णियगा आत्मीयस्थिति, तमतिक्कता अचेतना इत्यर्थं, दव्वतो पुण सतुसा अखडिता अफुडिता, एरिसा जा ओसहीओ । एस ततियभंगो । भावतो णियगठितिमतिक्कंता दव्वतो भिण्णा । एस पढमभंग पति विवरीतो चतुर्थभंगो भवतीति ॥१५८५॥

एतेसु चउभंगेसु इमं पच्छित्त –

दो लहुया दोसु लहुओ, तवकालविसेसिता जधा कमसो ।
परित्तोसधीण सोधी, एसेव गुरू अणंताणं ॥१५८६॥

आइल्लेसु दोसु भगेसु चउलहुगं, पच्छिमेसु दोसु भगेसु मासलहुं, जहाक्कमं आतिल्लातो समारब्भ तवकालविसेसिया । पढमे दोहिं वि गुरू, बितिए तवगुरु, ततिए कालगुरुं, चउत्थे दोहिं वि लहु । एतं परित्ते भणियं । अणंतबीएसु एयं चेव पच्छित्तं गुरुगं दट्ठव्वं ॥१५८६॥

चोदगाह -

अण्णोण्णेण विरुद्धं तु, सोधिं सुत्तं च मा भण ।
सा तु संघट्टणे सोही, पंचाहा भुंजतो सुत्तं ॥१५८७॥

सुत्तग्गहणातो इह सुत्ते वितिएसु मासलहुं, सोधिग्गहणातो इहेव पेढिगाए अत्थे बीएसु पणग दत्तं, एए दो वि अण्णोण्ण-विरुद्धा ।

मा एव भणाहि आचार्याह -

"सा तु संघट्टणे" पच्छद्धं । पंचराइंदिया अत्थेण जे बीएसु भणिता ते संघट्टणे इमं । पुण भुजंतो सुत्ते मासलहु, अतो भणियं तम्हा णो अण्णोण्णविरुद्धं ॥१५८७॥

अण्णे आयरिया वक्खाणेंति अत्थतो चोइए ।

आचार्य उत्तरमाह -

"अण्णोण्णेण" गाहा — शेषं पूर्ववत् । पुणरवि चोयग -

जं च बीएसु पंचाहो, कुंडरोट्टेसु मासियं ।
तत्थ पाती तु सो बीयं, कुंडरोट्टातु णिच्चसो ॥१५८८॥

चोदको भणति - बीएसु संघट्टिएसु पणग, कुडरोट्टेसु संघट्टिएसु मासलहु । एत्थ किं कारण ? तुसमुहीकणिया कुक्कस-मीसा कुडग भण्णति, असत्थोवहतो आमो चेयणं तदुललोट्टो रोट्टो भण्णति ।

आयरिओ भण्णति - 'तत्थ पाती तु" पच्छद्धं । चोइते तत्थेव च उत्तरं भण्णति "पाति" रक्खति सो तुसो त बीयं तेण तत्थ पणग, कुडरोट्टो पुण णितुसा तेण तत्थ महंततरी पीडा, अतो तत्थ-मासित ॥१५८८॥

एतेसामण्णतरं, कसिणं जो ओसधिं तु आहारे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१५८९॥

तिल मुग्ग-मास-चवलग-गोधूम-चणय-सालि-कंगुमातियाणं अण्णतरं कसिणं भुजति, सो आणातिदोसे पावति ॥१५८९॥

इमे दोसा -

पलिमंथो अणाइण्णं, जो णिग्घातो य संजमे ।
अतिमुत्ते य आयाए, पत्थारम्मि पसज्जणा ॥१५९०॥

चवलयमातियासु सेंगासु सचित्तासु अचित्तासु वा पलिमंथोपगरिसेण संजमो मंथिज्जति जेण सो पलिमथो, साहूण वा ताओ अणाइण्णा, जोणीभूते बीए जोणीघातो भवति त्ति सचित्ते असजमो भवति । रसाले वा अतिमुत्ते वीसूइयाति आयविराहणा । अण्णतरे वा दीहे रोगायंके भवति । तत्थ पत्थारपसंगो - प्रस्तरणं प्रस्तारः, प्रस्तारे उत्तरोत्तरदुःखसंभव इत्यर्थ ॥१५९०॥

तत्थ परितावमहादुःखे गहा -

बितियपदं गेलण्णे, अद्धाणे चेव तह य ओमम्मि ।
कसिणोसहीण गहणे, जतणाए पकप्पती काउं ॥१५९१॥

वेज्जुवदेसा गिलाणो भुंजति, भत्तालभे अद्धाणे अफव्वंता वा श्रोमे कसिणोसहीगहणं करेज्जा। तं पि जयणाए पणगातिमासपत्तो, पच्छा चरिमभगेण, ततो ततियभगे, ततो बितियभंगे, ततो पढमेण, एव गहणं काउं कप्पति ॥१५६१॥

जे भिक्खू आयरिएहिं अदिन्नं आहारेति,
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू आयरिओवज्झाएहिं अविदिण्णं विगतिं आहारेति,
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

आचार्येव उपाध्याय आचार्योपाध्याय., असहीणे वा आयरिए उवज्झायो पुच्छिज्जइ।

अहवा – उवज्झायगहणेणं जो ज पुरतो काउं विहरति सो पुण पुच्छियव्वो। अविदिण्णं अदत्तं अणुण्णाय, अण्णतरग्गहणातो णवविगईओ जो आहारेइ तस्स मासलहु। एस सुत्तत्थो।

णिज्जुत्ति वित्थरेति –

इच्छामो नाउ का विगती ? केवतियाओ वा ? –

तेल्ले घत णवणीते, दधिविगतीओ य होंति चत्तारि।
फाणिय-विगडे दो दो, खीरम्मि य होंति पंचेव ॥१५६२॥

महुपोग्गलम्मि तिण्णि व, चलचल ओगाहिमं च जं पक्कं।
एतासिं अविदिण्णं, जोगमजोगे य संवरणे ॥१५६३॥

सव्वे तेल्ला एगविगती।

अण्णे भणंति – खारतेल्ल एक्क विगती, सेसा पुण तेल्ला वि विगइया। लेवाडा पुण सव्वे घता, एक्का य विगती। एवं णवणीयादि। दहिविगतीओ वि चत्तारि, गाव-महिसी-अय-एलगाणं च। फाणिओ गुलो भण्णति, सो दुविहो - छिड्डगुडो खडहडो य। वियडं मज्ज, तस्स दो भेदा – पिट्ठकडं गुलकड च। खीराणि पच गावी महिसी अय एलय उट्टीण च।

महूणि तिण्णि – कोतिय, मक्खिय, भामर च। पोग्गले तिण्णि – जलयं थलय खहयर च। चलचलेति - तवए पढम ज घय खित्त तत्थ अण्णं घय अपक्खिवती आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलवले त्ति तेण ते चलचलओगाहिम भण्णति। तत्थेव घते जे सेसा पच्चति तेण चले त्ति, अतो तेण आतिल्ला तिण्णि घाणा मोत्तु सेसा पच्चक्खाणिस्स कप्पति, जति अण्णं घय ण पक्खिवति। जोगवाहिस्स पुण सेसगा विगती। एतेसिं विगतीणं जो अण्णतरं विगतिं आहारेति जोगवाही वा अजोगवाही वा सवरणे वा ॥१५६३॥

आगाढमणागाढे, दुविधे जोगे य समासतो होति।
आगाढे णवग-वज्जण, भयणा पुण होतऽणागाढे ॥१५६४॥

जोगो दुविहो – आगाढो अणागाढो य। आगाढतरा जम्मि जोगे जंतणा सो आगाढो यथा भगवतीत्यादि। इतरो अणागाढो यथा उत्तराध्ययनादि। आगाढे ओगाहिमवज्जा णव विगतीओ वज्जिज्जति, दसमाए भयणा। सव्वा ओगाहिम-विगती पण्णत्तीए कप्पति। महाकप्पसुत्ते एक्का पर मोदगविगती

कप्पति, सेसा आगाढेसु सव्वविगतीतो ण कप्पति । अणागाढे पुण दसविगतीतो भतिताओ । जओ गुरुअणुण्णा तो कप्पति, अणुण्णाए विणा ण कप्पति, एस भयणा ॥१५९४॥

अणुण्णातो वा अविधीए तो जोगभंगो भवति । जोगभगो दुविधो – सव्वभंगो, देसभगो य ।

विगतिमणट्ठा भुंजति, ण कुणति आयंबिलं ण सद्दहती ।
एसो तु सव्वभंगो, देसे भंगो इमो तत्थ ॥१५९५॥

विगती णिक्कारणे अणुण्णाओ भुजति, आयविलवारए आयविलं ण करेति, सव्वरसे य भुजति, ण सद्दहति वा, एस सव्वभगो । आगाढे सव्वभगे चउगुरुं, अणागाढे सव्वभगे चउलहु, इमो देसभगो ॥१५९५॥

काउस्सग्गमकातुं, भुंजति भोत्तूण कुणति वा पच्छा ।
सय काऊण वा भुंजति, तत्थ लहू तिण्णि उ विसिट्ठा ॥१५९६॥

जदि कारणे काउस्सग्गमकाउं भुजति, भोत्तूण वा पच्छा काउस्सग्ग करेति, सय वा काउस्सग्गं काउं भुजइ, [1]अवरो गुरुं भणति – मम विगतिं विसज्जेह, एएसु वि चउसु वि मासलहुं तवकालविसिट्ठं । चउत्थे दोहिं वि लहुं । जो पुण कारणे अणुण्णातो काउस्सग्गं काउं भुजति सो सुद्धो । आगाढजोगे वि देसभगे एवं चेव, णवरं-मासगुरुं । अणागाढागाढजोगाण देसभगे इमं पच्छित्तं ॥१५९६॥

ण करेति भुंजितूणं, करेति काऊण भुंजति सयं तु ।
वीसज्जेह ममं ति य, तवकालविसेसिओ मासो ॥१५९७॥

उक्तार्थो ।

इमो विगतिविवज्जणे गुणो –

जागरंतमजीरादी, ण फुसे लूहविचित्तिणं ।
जोगी ऽहं ति सुहं लद्धे, विगतिं परिहरिस्सति ॥१५९८॥

सुत्तत्थज्झवणहेउं रातो जागरंतं अजीरातिया दोसा ण फुसति लूहविचित्तिणं । किं चान्यत् ? जोगी-ऽहमिति लद्धे वि सुहेण विगतिं वज्जेति ॥१५९८॥

कारणे जोगी वि विगतिं आहारेति –

बितियपदमणागाढे, गेलण्ण-वए-महामहऽद्धाणे ।
ओमे य रायदुट्ठे, अणगाढागाढजतणाए ॥१५९९॥

अणागाढगेलण्णगहणातो गाढ पि गहिय, "वइगे" त्ति गोउल, महामहो इदमहादि, अद्धाणे वा, ओमे दुब्भिक्खे, रायदुट्ठे वा, एतेहिं कारणेहिं अणागाढजोगी आगाढजोगी वा जयणाए विगतिं भुजति ॥१५९९॥

जोगे गेलण्णम्मि य, आगाढितरे य होति चतुभंगो ।
पढमो उभयागाढे, बितिओ ततिओ य एक्केणं ॥१६००॥

---

१ गा० १५९७ ।

जोग-गेलण्णेसु, आगाढ अणागाढेसु चउभंगो कायव्वो। पढमे उभयमवि आगाढं, बितिए जोगो आगाढो, ण गेलण्णं। तइए न जोगो, गेलण्णं आगाढ। चउत्थे दो वि अणागाढा ॥१६००॥

उभयम्मि व आगाढे, दड्ढेल्लयपक्कएहि तिण्णि दिणे।
मक्खेंति अठायंते, पज्जेंतियरे दिणे तिण्णि ॥१६०१॥

उभयागाढेति पढमभंगे "दड्ढेल्लगं" ओगाहिमणिग्गालो, जं वा दोहिं तिहिं वा दव्वेहिं णिदड्ढं पक्केल्लगं, हंसतेल्लमातीएहिं पति-दिणे तिण्णि दिणे मक्खेति। "अठायंते" त्ति जइ रोगो न उवसमति ताहे अवरे तिण्णि दिणे उवरुवरिं चेव दड्ढेल्लगातिए पमज्जति ॥१६०१॥

जत्तियमेत्ते दिवसे, विगतिं सेवति ण उद्दिसे ते तु।
तह वि य अठायमाणे, णिक्खवणं सव्वथा जोगे ॥१६०२॥

जत्तिए दिवसे तं दड्ढेल्लगातिविगतिं पमज्जति तत्तियाणि दिवसाणि ण उद्दिसति, जति तह वि रोगो न उवसमति ताहे से सव्वहा जोगो णिक्खिप्पति ॥१६०२॥

जति णिक्खवती दिवसे, भूमीओ तत्तिए उवरि वड्ढे।
अपरिमियं उद्देसो, भूमीओ परं तधा कमसो ॥१६०३॥

जत्तिए दिवसे णिक्खित्तजोगो अच्छनि पुणो उक्खित्तजोगे जोगभूमीओ तत्तिए दिवसे उवरिं वड्ढिज्जति। जोगभूमीए चिरायणजोगभूमीए वि जे केति दिवसा सेसा जोगभूम्यंतो भण्णति। तत्थ मेहाविणो कमट्ठगस्स अपरिमिओ उद्देसो चिरायणजोगभूमीए परओ वड्ढिदिवसेसु कमेण उद्देसो कज्जति। अण्णे भणंति-जत्तिए दिवसे ण उद्दिट्ठ तत्तिए दिवसे अपरिमित्तो उद्देसो कायव्वो, ततो पर कमेण उद्देसो ॥१६०३॥

इयाणि बितियभगो –

गेलण्णमणागाढे, रसव्वति णेहोव्वरे असति पक्को।
तह वि य अठायमाणे, मा वड्ढे णिक्खिवे तहेव ॥१६०४॥

जोगे आगाढे गेलण्णे अणागाढे णेहावगाढभत्तरसो तीए छुब्भति णेहोवरते वा ते णेहावयवपोग्गला सरीरमणुपविट्ठा रोगोवसमा भवंति, ततो वड्ढेल्लग-पक्केलगेहिं मक्खेंति, दिणे ३ अट्ठिए पज्जेंति, दिणे ३ तहावि अट्ठिते रोगे मा अतीवरोगवुड्ढी भविस्सति, तम्हा जोगणिक्खेवो तहेव जहा पढमभगे ॥१६०४॥

इदाणिं ततियभगो – अणागाढजोगे आगाढगेलण्णे तिण्णि दिणा दड्ढेल्ल-पक्केल्लगेहिं मक्खेंति। अवरे तिण्णि दिणे पज्जेंति, ततो पर –

तिण्णि-तिगेगंतरिते, गेलण्णागाढपरतो णिक्खिवणा।
तिण्णि व तिग अंतरिता, चउत्थ ऽठंते वि णिक्खिवणा ॥१६०५॥

तिण्णि तिया णव, तेसिं एक्केक्को तिगो एगा णिव्वितियतरिओ कायव्वो, तिण्णि दिणे काउस्सगं काउं विगतिं आहारेत्ता चउत्थदिवसे णिव्वीयं आहारेति, ताहे पंचम-छट्ठ-सत्तमाणि दिवसाणि विगतिं आहारेति अट्ठमे दिवसे णिव्वीयं करेति, नवमे दिणे विगतिं आहारेति, ताहे जति णोवसमति ताहे दसमे दिवसे जोगो णिक्खिप्पति ॥१६०५॥

वसहीए संवद्धा य, असंबद्धा य। वसहीए मोत्तु सत्तघरावसहीसंबद्धा, तेसु भत्तं वा पाणं वा ण घेत्तव्वं ॥१६१६॥

इमा असंवद्धा –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते।
मामाए अचियत्ते य एतरा होंति णायव्वा ॥१६२०॥

अहाभद्दो दाणरुई दाणसड्ढो, सम्मदिट्ठी गिहीताणुव्वओ अभिगमसड्ढो, सम्मत्ते त्ति अविरय-सम्मद्दिट्ठी, एतेसु एसणादोसा। खलुसद्दो पादपूरणे। अभिगहियमिच्छे साहुपडिणीए ईसालुअत्तणेणं मा मम घरं अदीहि समण त्ति भणाइ, अण्णस्स ईसालुअत्तणेण चेव साहू घर पविसता अचियत्ता वायाए भणाति – "न किं चि।" एतेसु विसगर-पंतावणाति दोसा। "इयरे" त्ति असबद्धा ॥१६२०॥

एतेसामण्णतरं, ठवण-कुलं जो तु पविसती भिक्खू।
पुव्वं अपुच्छितूणं, सो पावति आणमादीणि ॥१६२१॥ कंठा

चोदग आह – लोउत्तरठियाणं लोइयठवणापरिहारेण किं चि अम्ह ?

आचार्याह –

लोउत्तरम्मि ठविता, लोगणिव्वाहिरत्तमिच्छंति।
लोगजढे परिहरता, तित्थ-विवड्ढी य वण्णो य ॥१६२२॥

पुव्वद्धं कंठ। लोगे दुगुछिया जे, ते परिहरतेण तित्थस्स वुड्ढी कता भवति, "वण्णो"त्ति जसो पभावितो भवति ॥१६२२॥

लोइय-ठवणकुलेसु गेण्हंतस्स इमे दोसा –

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव य दुगुंछा।
लोइय-ठवणकुलेसुं, गहणे आहारमादीणं ॥१६२३॥

"अयसो" त्ति अवण्णो, "पवयणहाणी" न कश्चित् प्रव्रजति, सम्मत्तचरित्ताभिमुहा विप्परिणमंति, कावलिया इव लोए दुगुछिता भवंति, अस्पृश्या इत्यर्थः। पच्छद्धं कठं ॥१६२३॥

लोउत्तरिएसु दाणाइसड्ढकुलेसु पविसंतस्स इमे दोसा –

आयरिय बालवुड्ढा, खमग-गिलाणा महोदरा सेहा।
सव्वे वि परिच्चत्ता, जो ठवण-कुलाइं णिव्विसती ॥१६२४॥

महोदरोऽयं बह्वासी, आएस प्राघूर्णकः, णि आधिक्केण विशति निविशति प्रविशतीत्यर्थः ॥१६२४॥

इम पच्छित्तं –

आयरिए य गिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमग पाहुणए।
गुरुगो य बाल-वुड्ढे, सेहे य महोदरे लहुओ ॥१६२५॥

जो एते ठवणाकुले ण णिव्विसति तस्सिमे गुणा –

गच्छो महाणुभागो, सबाल-वुड्ढोऽणुकंपिओ तेणं ।
उग्गमदोसा य जढा, जो ठवण-कुलाइं परिहरइ ॥१६२६॥

जिनकल्पिकादिरत्नानामागरत्वात् समुद्रवत् महानुभागः। बाल - वृद्ध - गिलानादीना च साधारणत्वात् महानुभाग । जो तेसु ण णिव्विसति तेण सो गच्छो अणुकपितो, उद्गमदोषाश्च परित्यक्ता भवति ॥१६२६॥

गच्छवासीणं इमा सामाचारी –

गच्छम्मि एस कप्पो, वासावासे तहेव उडुवद्धे ।
गाम-णगरागरेसुं, अतिसेसी ठावते सड्ढी ॥१६२७॥

कप्पो विधी। एस विधी वासावासे उदुवद्धे वा गाम-णगरातिसु विहरंताण। "अतिसेसि" त्ति अतिसयदव्वा उक्कोसा ते जेसु कुलेसु लब्भंति ते ठावियव्वा, ण सव्वसघाडगा तेसु पविसंति। "सड्ढि" त्ति संजमे सद्धा जस्स अत्थि सो सड्ढी आयरिओ ॥१६२७॥

मज्जादाणं ठवगा, पवत्तगा सव्वखेत्ते आयरिया ।
जो तु अमज्जातिल्लो, आवज्जति मासियं लहुयं ॥१६२८॥

मज्जाया मेरा, ताणं ठवगा पव्वत्तगा य सव्वखेत्तेसु आयरिया भवति, जो पुण आयरियो मज्जायं ण ठवेति, ण पवत्तेति सो अमज्जाइल्लो असामायारि-णिप्फण्णं मासलहुं पावति ॥१६२८॥

जे वत्थव्वा खेत्त-पडिलेहगा वा तेसिं इमा समायारी –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए य चियत्ते, कुलाइं साहिंति गीतत्था ॥१६२९॥

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए अचियत्ते, कुलाइं दाएंति गीतत्था ॥१६३०॥

रातो दिवसतो वा वसहिट्ठिया अण्णत्थ वा इंददत्ताभिणामेणं वण्णेण य पुव्वादियासु दिसासु ठवणकुले दाएति दरिसेंति ॥१६३०॥

दरिसितेसु गुरुणो इमा सामायारी –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए अचियत्ते, कुलाइं अट्ठवेंते चउगुरुगा ॥१६३१॥

गुरुणो ठवणकुले अठवेंतस्स चउगुरुगा ॥१६३१॥

चोदगाह – किं कारणं ?

किं कारणं [1]चमढणा, [2]दव्वखओ [3]उग्गमो वि य ण सुज्झे ।
[4]गच्छम्मि णियकज्जं, [5]आयरिय [6]गिलाण [7]पाहुणए ॥१६३२॥

आयरिओ भणति – चमढणा, दव्वखओ, उग्गमो ण सुज्झे, गच्छे य कज्जं णियमं, आयरिय-गिलाण पाहुणगा, य एते दारा ॥१६३२॥

इमा व्याख्या "[1]चमढणे" त्ति दारं –

पुव्वं पि धीरसुणिया, छिक्का छिक्का पधावती तुरियं ।
सा चमढणाए सिग्गा, संतं पि ण इच्छती घेत्तुं ॥१६३३॥

सुणहविविज्जोअसहाओ लुद्धगो "धीरो" भण्णति । "पुव्व" त्ति सो धीरो सावते अदिट्ठे चेव क्रीडं हंतूण छिक्कारेति धावति य, ताहे सा धीरसुणिया इतो पधावति तुरियं । 'अवि" सद्दातो दिट्ठे वि एवं करेति । सा एव धीरसुणिया रिक्कपहावणाहिं सिग्गा जति सो सावयं पच्छा दट्ठु छिक्कारेति ताहे सा सतं पि घेत्तुं ण इच्छति, अतिश्रमात् प्रतारणाद्वा ॥१६३३॥

एवं सड्ढ-कुलाइं, चमढिज्जंताइं अण्णमण्णेहिं ।
णेच्छंति किंचि दातुं, संतं पि तहिं गिलाणस्स ॥१६३४॥

एवं ठवणकुला चमढिज्जंता अण्णोऽण्णेहिं साहूहिं अण्णोऽण्णेहि वा रिक्कारणेहिं । पच्छा कारणे उप्पण्णे सतं पि घरे, तहावि गिलाणस्स दाउ ण इच्छति ॥१६३४॥

इदाणिं "[2]दव्वक्खए" त्ति दारं –

अण्णो चमढणदोसो, दुल्लभदव्वस्स होति वोच्छेदो ।
खीणे दुल्लभदव्वे, णत्थि गिलाणस्स पाउग्गं ॥१६३५॥

दुल्लभदव्वं घतादियं, तं जति अकारणे दिणे दिणे गेण्हति ताहे तं वोच्छिज्जति । तम्मि वोच्छिण्णे गिलाणपओयणे उप्पण्णे गिलाणपाउग्गं ण लब्भति । अलब्भंते य परिताव-महादुक्ख-गिलाणारोवणा भद्द-पंतदोसा य भवति ॥१६३५॥

तत्थिमे पंतदोसा –

दव्वखएणं पंतो, इत्थिं घातेज्ज कीस ते दिण्णं ।
भद्दो हट्ठ पहट्ठो, (करे) किणेज्ज अण्णं पि साधूणं ॥१६३६॥

पंतस्स भज्जा सड्ढी हवेज्ज, सा साहूहिं रिक्कारिक्कपओयणे जातिता घतादि पयच्छेज्ज । तम्मि णिट्ठिते संघाडेणं कूर मग्गिता, "णत्थि" त्ति भणेज्ज । एव कुमारादि एक्केक्कं मग्गिता णत्थित्ति-भणेज्जा ।

सो भणाति – तं कहिं गय ?

तो सड्ढी भणाति – साधूण त दिण्ण ।

ताहे सो पंतो तं घाएज्ज – कीस ते दिण्णं, साहूण वा पदुट्ठो जं काहिति, छोभगं वा देज्ज ।

इदाणिं "[2]उग्गमे" त्ति दार –

पच्छद्धं – एवं चेव सड्ढीए कहीए हट्ठो हरिसिओ, सुट्ठु संतुट्ठो, पहुट्ठो प्रकर्षेण हृष्ट प्रहृष्ट', प्रहसितमनाः, उद्धसियरोमकूवो, भणाति – सुट्ठु ते कयं जं दिण्णं, ममेसा धम्मसहाइणि त्ति, अण्णं पि

१ गा० १६३२ । २ गा० १६३२ ।

साहुग्रट्ठा किणिउं पच्चप्पिणेज्ज, साहूणं पयच्छाहि, जया णिट्ठियं तदा पुणो कहेज्जासु, अण्णं वा उग्गमदोस कारवेज्ज । एतद्दोसपरिहरणत्थ । गच्छे णिययकज्ज, आयरिय-गिलाण-पाहुणगट्ठा । तम्हा अतिसेसियसघाडग मोत्तु ठवणा-कुलेसु सेसा णो पविसेज्जा ॥१६३६॥

पाहुणगे य आगते पाहुणग कायव्वं, तं च सभावाणुमयं देज्जा ।

ततो भण्णति –

जड्डे महिसे चारी, आसे गोणे य तेसि जावसिया ।
एतेसिं पडिवक्खो, चत्तारि तु संजता होंति ॥१६३७॥

जड्डो हत्थी, महिसो, आसो, गोणो य । एतेसिं चारिं अणुकूल आणेति, जवसं वहंति जे ते जावसिया । ते य परियट्टया । पच्छद्धं कंठ ॥१६३७॥

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

जड्डो जं वा तं वा, सुमालं महिसओ मधुरमासो ।
गोणो सुगंधदव्वं, इच्छति एमेव साधू वि ॥१६३८॥

हत्थिस्स इट्ठं णलइक्खु मोतगमादी, तं आहारेति । तस्सामावे "जं व" त्ति जं वा अणिट्ठं तं वा आहारेति, जं वा कमागयं ।

महिसो सुकुमालं वंसपत्तमादी, तस्साभावे तदभावे भावितत्वात् अण्णं ण चरति, तं अह चरए पुट्ठि ण गेण्हति ।

एवं आसो हप्पिच्छं (हरिमत्थ) मुग्गमादि मधुरं ।

गोणो अज्जुणमाति सुगंधदव्वं ।

एवं साहू वि चउरो, चउविधं भत्तमिच्छति ।

जड्ड-समस्स – उक्कोसाभावे दासीणातिणा कडपूरणेण पओयणं ।

महिस-समस्स – सालिमातिणा सुकुमालोदणेण पओयण ।

आस-समस्स – खड-खीर-सालिमाइएहिं अ पओयणं ।

गोण-समस्स – हिंगुरिय-कट्ठु-मंडातिएहिं सुगंधेहिं पओयण ।

एते पुण दव्वा ठवणकुलेसु संभवति ।

अठविएसु य तेसु कतो आणेउ ?

पाहुणे य अकते अयसो, ण य णिज्जरालाभो । अतो कायव्वं ॥१६३८॥

चोदगाह – "ठवणकुलेसु मा कोति पविसतु, जता पओयणं पाहुणगाति उप्पण्णं ताहे पवेसियव्व ।"

आयरियाह –

एवं च पुणो ठविते, अप्पविसंते इमे भवे दोसा ।
वीसरणे संजताणं, वि सुक्खगोणी य आरामे ॥१६३९॥

पुव्वद्धं कंठं । "विस्सरणा सजताणंति" भिक्खावस्सं दायव्व त्ति ण पडिवालेंति, खेत्तमातीयं चयंति वि सुक्खगोणी दिट्ठंतो इमो, जधा –

एगस्स गिहिवतिणो पगतं काउकामस्स तक्केण पग्रोयणं । तस्स य गोणी पदोस-पच्चूसेसु कुलभ्र कुलभ्रं दुद्धस्स पयच्छति । तेण चिंतिय – भ्रासण्णपगते दुज्झिहिति तो मे सगिहे चेव बहुतक्कं भविस्सइ त्ति ण दूढा । पत्ते य पगयकाले दोढुमाढत्तो जाव विसुक्का ।

भ्रारामे त्ति दिट्ठंतो – एव मालागारेण वि चिंतियं-भ्रासण्णे छण्णे उव्वीहामि त्ति ण उव्वोता । जाव छणासण्णं ताव भ्रोप्फुल्लो भ्रारामो । एव जाहे उप्पण्णं कज्जं ताहे पविट्ठा ठवणकुलेसु, ताहे सड्ढा भणंति – एत्थच्चिय भ्रच्छंताण मुणह वेल भ्रम्हं एए वत्ता वेला, भ्रप्पविसतेसु य ण कोति दसणं पडिवज्जति, ण वा भ्रणुव्वए, गिलाणपाउग्ग च णत्थि, तम्हा एगो भ्रइसेसियसघाडभ्रो इमेहिं दोसेहिं वज्जितो पविसतु ।।१६३९।।

भ्रलसं घसिरं सुचिरं, खमगं कोध-माण-माय-लोभिल्लं ।
कोऊहलपडिवद्धं, वेयावच्चं ण कारेज्जा ।।१६४०।।

भ्रालस्सितो ताव भ्रच्छति जाव फिट्टा वेला ।

भ्रहवा – भ्रपत्ते चेव देसकाले भ्रडति, भ्रलद्धे य गुरुमातियाण विराहणा, भ्रतिक्कंतकाले भ्रलाभो, वा भ्रप्पलाभो वा, ठवणादोसा य, भ्रपत्ते वा भ्रोसक्कणदोस, भ्रण्णतो य भ्रलाभो, चिरं वा हिंडेति ।

"घसिरो" वह्वासी, सो वि भ्रप्पणो जाव पज्जत्तं गेण्हति ताव वेलातिक्कमो, गहिते वा भ्रप्पणो जाव पज्जत गेण्हति ताव सीतलं, भ्रकारकादि दोसा भवंति ।

जे भ्रलसे ते सुचिरे वि दोसा, स्वपनशील सुचिर ।

"खमगो" परितावििज्जति, सेसा घसिरदोसा खमगे वि संभवति ।

"कोवी" भ्रदत्ते रूसति, रुट्ठो वा घरं ण गच्छति, किं वा तुमं देसि त्ति दुव्वयणेहिं विप्परिणमेति ।

"माणी" ऊणे वा दिण्णे, भ्रब्भुट्ठाणे वा, भ्रदिण्णे थब्भति त्ति, पुणो घरं माणेण ण गच्छति, तेण विणा जा हाणी तं पावति ।

"माती" भद्दगं भोच्चा पंत भ्राहारेति, पंतेण वा छाएति ।

"लुद्धो" भ्रोभासति, दिज्जन्त वा ण वारेति, भ्रणेगेसु पविसमाणेसु जे दोसा ते लुद्धे सभवंति ।

कोऊएण णडभ्राती पेच्छतो ताव भ्रच्छति जाव देसकालो फिडिभ्रो ।

सुत्तत्थेसु पडिबद्धो जाहे व पाढविरहो ताहे व भ्रदेसकाले वि भ्रोतरति, पडल पाए वा भ्रतिक्कंतकाले उत्तरति, एत्थ भ्रोसक्कण-उस्सक्कणाति दोसा ।।१६४०।।

एते जो ठवेति, जस्स वा वसेण ठविज्जति तस्सिमं पच्छित्त –

तिसु लहुभ्रो तिसु लहुगा, गुरुगो गुरुगा य दोसु लहुगा य ।
भ्रलसादीहिं कमसो, कारिंति गुरुस्स पच्छित्तं ।।१६४१।।

भ्रलसमातिएसु जहासंख देय ।।१६४१।।

एतद्दोसविमुक्कं, कडजोगिं णात-सीलमायारं ।
गुरुभत्तिमं विणीतं, वेयावच्चं तु कारेज्जा ।।१६४२।।

एतेसु अलसमादिया दोसा। तेहिं विमुक्के वज्जितो सुत्तत्थेसु कडो जोगो जेण सो कडजोगी गीतार्थेत्यर्थ.। वेयावच्चे वा जेणऽण्णया वि कडो जोगो सो वा कडजोगी। अक्कोहणादिसीलं जस्स णाय सो णायसीलो। आयरणमायारो, सो य पंचविहो नाणादि, सो णातो जस्स सो णातायारो ज्ञाताचारेत्यर्थः। गुरु आयरिया, एसुवरि भत्तिमतो गुरोः सर्वंकरणीयकारकेत्यर्थः। अब्भुट्ठाणातिविणयकारी विणीतो। एरिसो गुरुमादियाण वेयावच्चं करिज्जति ॥१६४२॥

एयगुणोववेयाण वेयावच्चकरणे इमे गुणा –

साहिंति य पियधम्मा, एसणदोसे अभिग्गहविसेसे।
एवं तु विहिग्गहणे, दव्वं वड्ढेंति खेतण्णा ॥१६४३॥

साहृति कथयंति। के कथयन्ति? पियधम्मा, पिओ य धम्मो जेसिं ते पियधम्मा। प्रियधर्मत्वादेव एसणदोसे मक्खिताइए कथेंति, तेहिं दोसेहिं दुट्ठं साहूण ण दिज्जति, एव बहुफलं भवति। साहूण य अभिग्गह-विसेसे कहेंति। उक्खित्तचरगा निक्खित्तरगा उक्खित्तनिक्खित्तचरगा अतो संब्बुक्कादि-दढायतियादि संसट्ठातियाओ य एसणाओ कहयंति, जिणकप्पअभिग्गहे य कहृति, एव कहेयता विधीए गहणं करेंता, एवं सड्ढं वड्ढेंता, दव्वं वड्ढेंति, खेयन्ना ज्ञानिन इत्यर्थ ॥१६४३॥

एसण-दोसे व कते, अकते वा जति-गुणे वि कत्थेंता।
कधयंति असढभावा, एसण-दोसे गुणे चेव ॥१६४४॥

ते पुण उल्लोएण धम्मं कहेंति। एसण-दोसे कते अकते वा जतीण गुणा खमातिता विविधं कहयति-श्लाघयतीत्यर्थः, असढभावा, ण दम्भेण, न भक्षणोपायनिमित्तं, एसणदोसे साधूण य गुणे कहेति ॥१६४४॥

अभिग्गहिया एसणा जिणकप्पियाणं, अणभिग्गहिता गच्छवासियाणं। अण्णोण्णोयरण दट्ठुं, णो अवण्णवातो भासियव्वो। सव्वे ते जिणाणाए सकल्पत्वात् ॥१६४७॥

ते पुण एसणदोसे कहेंति इमेण विधिणा –

वालादि-परिच्चत्ता, अकधिंतेणेसणादि-गहणं वा।
ण य कधपवंधदोसा, अध य गुणा सोधिता होंति ॥१६४८॥
संविग्ग-भाविताणं, लोद्धग-दिट्ठंत-भाविताणं च।
मोत्तूण खेत्त-काले, भावं च कहेंति सुट्ठुत्थं ॥१६४६॥

उज्जयविहारीहिं जे सड्ढा भाविया ते संविग्गभाविया, पासत्थाईहिं जे भाविता ते लुद्धदिट्ठंत-भाविता।

कहं ते पासत्था एव कहेंति ? –

जहा लुद्धगो हरिणस्स पिट्ठतो धावति, हरिणस्स पलायमाणस्स सेयं लुद्धगस्स वि जेण तेण पगारेणं त हरिणं आमंतु वावादेंतस्स सेयं।

एव जहा हरिणो तहा साघू, जहा लुद्धगो तहा सावगो। साघू अकप्पियकउप्पहारातो पलायति।

पासत्थो सड्ढे भणाति – जेण तेण प्पगारेण सच्चालियादि भासिऊण तुब्भेहिं कप्पियं अकप्पियं वा साहूण दायव्वं, एयं तुज्झ सेयं भवति। कक्खडखित्तं अद्धाणं च पडुच्च साववाय कहति। दुब्भिक्खादिकालं गिलाणादिभाव पडुच्च साववाय कहेंति।

एवमादि कारणे मोत्तु सेसेसु खेत्तादिसु सुट्ठुत्थं कहेंति [illegible] ॥१६४६॥

[illegible] तुम देसि त्ति दुव्वयणेहि विप्परिणमेति।
संथरणम्मि [illegible] ओदिण्णो थभति त्ति, पुणो घरं माणेण ण गच्छति, तेण
आउर-दि[illegible]रेति, पंतेण वा छाएति।

फासुएसणिज्जा असणा वारेति, अणेगेसु पविसमाणेसु जे दोसा ते लुद्धे सभवंति। देंत-गेण्हंतगाण अहियं भवति। [illegible]च्छति जाव देसकालो फिडिओ।

चोदगाह – "तदेव[illegible]विरहो ताहे व अदेसकाले वि ओतरति, पडलं पाए वा

आचार्याह – आलु[illegible]कणाति दोसा ॥१६५०॥

विषादिकं पत्थं भवति ॥१६५०॥ [illegible]ठविज्जंति तस्सिम पच्छित्त –

संचइयम[illegible]हुगा, गुरुगो गुरुगा य दोसु लहुगा य।
संचइयं [illegible] कारिंति गुरुस्स पच्छित्तं ॥१६४१॥
[illegible]॥

घय-गुल-मोयगाइणा [illegible]णात-सीलमायारं।
ठवणकुलेसु पभूतं णाऊण असंचइयं [illegible]
सड्ढग-णिव्बंधे गेण्हति, तं पुण "संतरिं तु कारेज्जा ॥१६४२॥

जे भिक्खू णिग्गंथीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुप्पविसइ
अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२३।।

णिग्गय गंथी णिग्गंथी । उवस्सओ वसही । तं जो अविधीए पविसति तस्स मासलहु, आणातिता दोसा भवंति ।

इदाणि णिज्जुत्ती –

णिक्कारणमविधीए, णिक्कारणतो तहेव य विधीए ।
कारणतो अविधीए, कारणतो चेव य विधीए ।।१६६६।।

पवेसे चउरो भंगा भवंति –

पढमे – णिक्कारणे अविधीए, बितिए – णिक्कारणे विधीए ।

तइए – कारणे अविधीए, चउत्थे – कारणे विधीए ।।१६६६।।

आदिभयणाण तिण्हं, अण्णतरीए तु संजतीसेज्जं ।
जे भिक्खू पविसेज्जा, सो पावति आणमादीणि ।।१६६७।।

तिण्णि आदिमा भंगा आदिभयणा भण्णति । एतेसिं तिण्हं भंगाणं अण्णतरेण जो सजतिवसहिं पविसति तस्स आणातिता दोसा ।।१६६७।।

पढमभंगो वक्खाणिज्जति –

णिक्कारणम्मि गुरुगा, तीसु वि ठाणेसु मासियं गुरुगं ।
लहुगा य वारमूले, अतिगतिमित्ते गुरू पुच्छा ।।१६६८।।

जति णिक्कारणे संजतिवसहिं जाति तो चउगुरुं, अविधीए पविसंतस्स तीसु वि ठाणेसु मासियं गुरुग ।

इमे तिण्णि ठाणा – अग्गद्दारे, मज्झे, आसण्णे ।

एतेसु तीसु वि णिसीहियं अकरेंतस्स तिण्णि मासगुरुगा भवंति ।

जइ मूलदारसमीवे वहिया ठायंति तो चउलहुं अतो पविसइ तो चउगुरु ।।१६६८।।

चोयगो पुच्छति –

पाणातिपातमादी, असेवतो केण होंति गुरुगा तु ।
कीस च वाहिं लहुगा, अंतो गुरु चोदग ! सुणेहि ।।१६६९।।

पाणातिवातं अकरेंतस्स केण कारणेण चउगुरुं पच्छित्तं भवति ?

कीस वा बहिद्दारेमूले चउलहुं ? कीस वा अंतो अतिगयस्स चउगुरुं ?

आयरिओ भणति – हे चोदग ! सुणेहि कारणं ।।१६६९।।

वीसत्था[1] य गिलाणा[2], खमिय[3] वियारे[4] य भिक्ख[5] सज्झाए[6] ।
पाली[7] य होति भेदो, अत्ताणपरे तदुभए य ॥१६७०॥ दा० गा०

[1]वीसत्थ त्ति दारं –

कायी सुहवीसत्था, दर-जमिय अवाउडा य पयलादी ।
अतिगतमेत्ते तहियं, संकितपवलाइया थद्धा ॥१६७१॥

काति संजती वसहीए अंतो आयसुहेण अवंगुयसरीरा सुहवीसत्था अच्छति, अद्धभुत्ता वा अतो वसहीए, दरणिवत्था अवाउडा णिसण्णा वा निवण्णा वा णिद्दायति, एवं तासु संजतीसु तम्मि संजते अतिगते पविट्ठे काति सकिता "अहमणेण अवाउडा दिट्ठ" त्ति पवलाइया नस्यति, सहसा पविट्ठे संखोहातो थद्धगत्ता भवति ॥१६७१॥

"पवलातिय" त्ति अस्य व्याख्या –

वीरल्लसउणि वित्तासियं जधा सउणि-वंदयं वुण्णं ।
वच्चति णिरावयक्खं, दिसि विदिसाओ विभज्जंतं ॥१६७२॥

वीरल्लग-सउणो उल्लगजाति, तेण वित्तासिता सउणो कवोतगाति, तेसिं वृंदं वुण्णं भयुव्भिण्णा-सण खुभियं वच्चति । अवेक्खा णाम अवलभणा अण्णोण्णेसु पुत्तभंडातिसु, सा णिग्गता जस्स तं णिरवेक्ख भण्णति । दिसाश्च विदिसा दिसोदिसं विभज्जंत अपूरयमाणं । १६७२॥

एतस्स दिट्ठतस्स इमोवसंहारो –

तम्मि य अतिगतमेत्ते, वितत्थ उ तहेव जह समणी ।
गिण्हंति य संघाडिं, रयहरणे या वि मग्गंति ॥१६७३॥

तम्मि संजते पविट्ठे विविधं त्रस्ता वित्रस्ता जहा ताओ सउणीओ ताओ वि संजतीओ, अण्णा अवाउयगत्ता तुरियं तुरियं पाउणति मग्गति च, अण्णाओ तुरियं रओहरणं मग्गंति, अवि सद्दाओ संभमेण रओहरण मोत्तु णट्ठा पच्छा मग्गंति ॥१६७३॥

इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, आवडणं विसमखाणुए विलिता ।
थद्धा य पेच्छितुं भाव-भेदो दोसा तु वीसत्थे ॥१६७४॥

कुमकारसालातिसु णिरवेक्खा णासंती छक्काये विराहेज्ज, आवडणं पक्खलणं हेट्ठोवरिं वा अफिडणं, विसमे वा पडति, खाणुए वा दुक्खविज्जति, अवाउडा वा विलिता विलक्खीभूता उव्वंधणादि करेज्ज, थद्धं वा अवाउड पेच्छिऊण वहुअणमज्झे भावभेदो भवेज्जा, एगागिणी वा एक्क देज । एते दोसा वीसत्थाए भवंति । दारं ॥१६७४॥

---

1 गा० १६७० ।

इदाणिं "[1]गिलाणे" त्ति दार –

कालातिक्कमदाणे, गाढतरं होज्ज णेव पउणेज्ज ।
संखोभेण णिरोधो, मुच्छा मरणं च असमाही ॥१६७५॥

संजयसंखोभेणं गिलाणी ण भुंजति, भिक्खाए वा गिलाणीणिमित्तं ण वच्चति, एवं अतिक्कतकाले दाणेण गाढतर गेलण्णं हवेज्ज, ण वा पउणेज्ज ।

अहवा – संजयसखोभेण काइयं सण्णं वा वायकम्मस्स वा णिरोहं करेज्ज, तत्थ गाढतरं गेलण्णं हवेज्ज, मुच्छा वा से हवेज्ज, णिरोहेण वा मरेज्ज, असमाधाण वा से हवेज्ज । एत्थ परितावणादिणिप्फण्णं सव्व पायच्छित्त दट्ठव्वं । दार ॥१६७५॥

इदाणिं "[2]खमग" त्ति दार –

पारणग-पट्ठिता आणितं च अविगडित ऽदंसितं ण भुंजे ।
अचियत्तमंतराए, परितावमसब्भवयणे य ॥१६७६॥

खमिगा पारणगट्ठा पट्ठिया, जेट्ठऽज्जो आगओ त्ति णियत्तति, दारमूले वा सण्णिविट्ठो उवरिं ण गच्छामि त्ति णिवत्तति, पवत्तिणी वा तस्स समीवे णिविट्ठा, खमिगाए वा पारणगमाणियं अविगडिय अणालोइयं अदसितं च ण भुंजति, पवत्तिणीओ दिक्खतीओ अच्छति, खमियाए अचियत्तं अतरायदोसा य, खमिगा परिताविज्जति, असब्भवयण वा भणेज्ज, किं चि न किंचि ? कीलग अज्जो एस उवट्ठिय त्ति । दारं ॥१६७६॥

इयाणिं "[3]वियारे" त्ति दारं –

णोल्लेऊण ण सक्का, वियारभूमी य णत्थि से अंतो ।
संते वा ण पवत्तति, णिच्छुभण दिणास गरहा य ॥१६७७॥

णोल्लणं संघट्टणं ताण अतो वियारभूमी णत्थि, सकाए वा कस्सति ण पवत्तति, सेज्जायरेण अणणुण्णाय जति वोसिरति तो णिच्छुभेज्जा, दिया राओ वा णिच्छूढा अवसहिया विणासं पावेज्ज, गरहणं च पावति । दारं ॥१६७७॥

इदाणिं "[4]भिक्ख" त्ति दारं –

सति कालफेडणे एसणादि पेल्लेमपेल्लणे हाणी ।
संकादभावितेसु य, कुलेसु दोसा चरंतीणं ॥१६७८॥

ताओ य भिक्ख पट्ठिता, सो य आगतो, तस्स दक्खिण्णेण ताव ठिता जाव सति कालो फिडितो, ततो अवेलाए एसण पेल्लेज्जा, तण्णिप्फण्ण । अपेल्लतीण अप्पणो हाणी, तत्थ परितावणादि णिप्फण्ण, अभाविय-कुलेसु य अकाले चरंतीओ मेहुणट्ठे सकिज्जति । दार ॥१६७८॥

इदाणिं "[5]सज्झाय" त्ति दार –

सज्झाए वाघाओ, विहारभूमिं व पट्ठियणियत्ता ।
अकरण णासारोवण, सुत्तत्थ विणा य जे दोसा ॥१६७९॥

---

१ गा० १६७० । २ गा० १६७० । ३ गा० १६७० । ४ गा० १६७० । ५ गा० १६७० ।

जेट्ठज्जो आगतो त्ति ण पढति, वाघातो वसहीए वा असज्झाय, सज्झायभूमीए पट्ठिताण तं दट्ठुं णियत्ताण सज्झायवाघातो । "अकरणे" त्ति सुत्तपोरिसिं ण करेंति मासलहु, अत्थपोरिसिं ण करेंति मासगुरुं, सुत्तं णासेंति ड्ड । अत्थ णासेंति ड्डा । सुत्तत्थेहिं य णट्ठेहिं कह चरणविसुद्धी । दार ॥१६७९॥

इदाणिं [1]"पालियभेउ" त्ति दार –

संजम-महातलागस्स, णाण-वेरग्ग-सुपरिपुण्णस्स ।
सुद्धपरिणामजुत्तो, तस्स तु अणतिक्कमो पाली ॥१६८०॥

संजम-महातलागस्स अणइक्कमपालिए भेदो भवति, वसहि-पालिए वा भेदो भवति ॥१६८०॥

संजमअभिमुहस्स वि, विसुद्ध-परिणाम-भाव-जुत्तस्स ।
विकहाति-समुप्पण्णो, तस्स तु भेदो मुणेतव्वो ॥१६८१॥

अहवा पालयतीति, उवस्सयं तेण होति सा पाली ।
तीसे जायति भेदो, अप्पाण-परोभय-समुत्थो ॥१६८२॥

मोह-तिगिच्छा खमणं, करेमि अहमवि य बोहि-पुच्छा य ।
मरणं वा अचियत्ता, अहमवि एमेव संबंधो ॥१६८३॥

सो गतो जाव एक्का वसहि-पाली अच्छति । तेण पुच्छिता किं ण गतासि भिक्खाए ?

सा भणति – अज्ज ! खमणं मे ।

सो भणति – किं निमित्तं ?

सा भणति – मोह-तिगिच्छं करेमि ।

ताए वि सो पुच्छिओ भणाति –

अहं पि मोह-तिगिच्छं करेमि ।

कह बोधि त्ति-लद्धा ? परोप्परं पुच्छति ।

तेण पुच्छिता-कह सि पव्वइया ?

सा भणति – भत्तारमरणेण तस्स वा अचियत्त त्ति तेण पव्वतिता ।

ताए सो पुच्छितो भणति – अहं पि एमेव त्ति ।

एवं भिण्णकह-सब्भावकहणेहिं परोप्पर भाव-संबंधो हवेज्ज ॥१६८३॥

"[2]बोहि-पुच्छाए" त्ति अस्य व्याख्या –

ओमाणस्स व दोसा, तस्स व मरणेण सग्गुणो आसि ।
महतरिय-पभावेण य, लद्धा मे संजमे बोधी ॥१६८४॥

ओमाणं ससवत्तियं । अहवा – ससावत्ते वि म ओम पासती, तेण दोसेण पव्वइया । सो मे भत्ता

१ गा० १६७० । २ गा० १६८३ ।

सगुणो णेहपरो आसि, तस्स मरणेण पव्वइया। महयरिया मे णेहपरा धम्मवक्खाणं करेति तेण मे बोधी लद्धा ॥१६८४॥

किं चान्यत् -

पंडुइया मि घरासे, तेण हतासेण तो ठिता धम्मे।
सिट्ठं दाणि रहस्सं, ण कहिज्जति जं अणत्तस्स ॥१६८५॥

घरवासे वाकारलोपाओ घरासे, घरे वा आसा घरासा, तम्मि घरासे पंडुइया अंसिया। "तेणं" ति - भत्तारेण, हता आसा जस्सा सा हतासा सिट्ठं कहियं। इदाणिं रहस्स णाम गुज्झं, अणत्तो अनाप्तः, तुम पुण ममात्तो, तेण ते सव्वं कहियं ॥१६८५॥

किं चान्यत् -

रिक्खस्स वा वि दोसो, अलक्खणो सो अभागधेज्जो वा।
ण य णिग्गुणामि अज्जो! अवस्स तुब्भे वि णाहित्थ ॥१६८६॥

रिक्खं णाम नक्खत्तं। णूणं विवाहदिणे विवक्करादि-दोसो णक्खत्तस्स आसि, तेण सो ममोवरि णित्तण्हो णिरणेहो आसि। अलक्खणो वा सो अभाग्यानि अपुण्याणि ताणि जो धरेति सो अभागधेयो, न याहं णिग्गुणा, तहा वि मम सो णित्तण्हो, एतेहिं दोसेहिं "अज्जो" ति आमतणे।

अहवा - किं णिउत्ताए सराहिज्जति? तुब्भे वि णाहिह। "अवस्स" त्ति णिद्धारणत्थे संदेहत्थे वा ॥१६८६॥

ताए पुच्छिओ सो वि दुद्धरो इमं भणति -

इट्ठ-कलत्त-विओगे, अण्णम्मि य तारिसे अविज्जंते।
महतरय-पभावेण य, अहमवि एमेव संबंधो ॥१६८७॥

इट्ठं पियं धन कलं यस्मात् सर्वं अत्ते गृण्हाति तस्मात् कलत्तं, सा य भारिया, तस्स वियोगे। अण्णं च तारिसं णत्थि। महत्तरो य मे णेहपरो, तेण अहमवि पव्वइतो। "एमेव" त्ति जहा तीए अप्पणो साणुरागं चरितं अविखयं तं एमेव सो कहेति, एव तेसिं परोप्परसंबंधो भवति ॥१६८७॥

किं चान्यत् -

किं पेच्छह? सारिच्छं, मोहं मे णेति मज्झवि तहेव।
उच्छंग-गता व मया, इयरा ण वि पत्तियंतो मि ॥१६८८॥

सो तं णिद्धाए दिट्ठीए जोएति ताए भणति - किं पेच्छसि?

सो भणाति - सारिच्छं, तुमं मम भारियाते हसिय-जंपिएण लडहत्तणेण य सव्वहा। सारिच्छा। तुज्झ दंसणं मोहं मे णेति, मोहं करेति।

अहवा - मोहं णेति उप्पादयति, णज्जति सा चेव त्ति।

सा भणाति - जहाऽहं तुज्झे मोहं करेमि, तहा मज्झवि तहेव तुमं करेसि?

केवलं सा मम उच्छंगे मया, इहर त्ति-जति सा परोक्खातो मरंति तो देवाण वि ण पत्तियंतो जहा तुमं सा ण भवसि त्ति ॥१६८८॥

इति संदंसण-संभासणेहिं भिण्णकध-विरह जोगेहिं ।
सेज्जातरादि-पासण, वोच्छेद दुद्दिट्ठधम्मे त्ति ॥१६८९॥

"इति" एवार्थे, परोप्परं दंसणेण संभासणेण य, एयाहिं य भिण्णकहाहिं विरहो, एगंत तत्थ जोगेहिं चरित्तभेदो भवति । सेज्जातरो अण्णो वा कोति पासेज्ज, संकातीता दोसा । तस्स वा साहुस्स अण्णस्स वा वसहीए अण्णदव्वस्स वा वोच्छेदं करेज्ज । "दुद्दिट्ठधम्मो" त्ति वा विपरिणामिज्ज ।

लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ती जो नियच्छती मूढो ।
निरयाउयं निबंधति, आसायण दीहसंसारी ॥१६९०॥

अहवा – तत्थ गतो इमे भावे करेज्जा –

पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छिदिट्ठम्मि चमढणे मूलं ।
पासवणे सचित्ते, संका वुच्छम्मि उड्डाहो ॥१६९१॥

पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छि अदिट्ठम्मि चउलहु होंति ।
सेसेसु वि चउगुरुगा, पासवणे मासियं गुरुगं ॥१६९२॥

निसन्नो पयलाति त्ति-जग्गो सुत्तो १ निसन्नो चेव निद्दायति २ सुत्तो सुत्तो तुयट्टेति ३ संथारेतुं णिवण्णो अच्छिं चमढेति ४ एतेसु पयलादिएसु परेण अदिट्ठे चउलहुं पच्छित्तं । "सेसेसु वि" त्ति परेण एएसु चेव दिट्ठे एक्केक्के संकाए चउगुरुअ चेव । निस्संकिते मूल । जति सजतीणं फलिहतोग्गहे काइयभूमीवज्जे काइयं वोसिरति तो मासलहुं ॥१६९२॥

पयलत्तं दट्ठूण परो इमं चिंतेति –

सज्झाएण णु खिण्णो, आओ अण्णेण जेण पयलाति ।
संकाए होंति गुरुगा, मूलं पुण होति णिस्संके ॥१६९३॥

किं एस सजतो सज्झायजागरेण खिण्णो पयलाइ ? आउ" त्ति अहोश्वित् "अण्णेणं" ति सागारिय-प्पसंगेण ? एव संक-णिस्संकाए, पच्छद्धं ॥१६९३॥

सिद्धसेणक्षमाश्रमणकृता गाहा –

पयला णिद्द तुयट्टे, अच्छिमदिट्ठम्मि चउगुरू होंति ।
दिट्ठे वि य संकाए, गुरुगा सेसेसु वि पदेसु ॥१६९४॥

पुव्वद्ध गतार्थं । पयलायते परेण दिट्ठे वि य संकाए चउगुरुगा, णिस्संकिते मूल, सेसेसु वि पएसु त्ति । णिद्दाइसु सकाए चउगुरुगा, निस्सकिए मूलं ॥१६९४॥

"[1]पासवणे मासियं गुरुगं" ति अस्य व्याख्या –

अण्णत्थ मोय गुरुगो, संजतिवोसिरणभूमिए गुरुगा ।
जोणोगाहणवीए, केई धाराए मूलं तु ॥१६९५॥

---

१ गा० १६९२ ।

मोयमिति काइयं। संजतीणं जा काइयभूमी ताए स जति वोसिरति तो चउगुरुगं। तत्थ य कयाइ कीवस्स अण्णस्स वा वीयणिसग्गो भवे, तं वीयं जति धाराहतं संजतीते जोणिं पविसति तो संजयस्स मूल।

केइ आयरिया – धाराए चेव छिक्के मूलमिच्छंति, तहिं डिंडिमे उड्डाहाती दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा णो णिक्कारणे सजतिवसहिं गच्छे ॥१६६५॥ गतो पढमभगो।

इयाणिं [1]वितियभंगो –

णिक्कारणे विधीए वि, दोसा ते चेव जे भणितपुव्वं।
वीसत्थपदं मोत्तुं, गेलण्णादी-उवरिमेसु ॥१६६६॥

जो णिक्कारणे संजतिवसतिं गच्छति, तिण्णि णिसीहियाओ करेंतो विधीए पविसति तस्स वि ते चेव दोसा, जे पुव्विं पढमभगे भणिता। वीरल्लसउणिदिट्ठतेण जे वीसत्थदोसा भणिता, ते मोत्तूण गिलाणाइया उवरिमा सव्वे वितियभंगे वि सभवंति ॥१६६६॥

णिक्कारणे विधीए वि, तिट्ठाणे गुरुगो जेणं पडिकुट्ठं।
कारण-गमणे सुद्धो, णवरं अविधीए मास-तिगं ॥१६६७॥

जो णिक्कारणे सजतिवसतिं गच्छति तस्स तिट्ठाणे णिसीहिकाविधिं पउंजतस्स वि मासगुरुग भवति। कम्हा जम्हा? पडिकुट्ठं गमणं। गतो वितियभंगो।

इदाणिं ततियभगो – पच्छद्धं। कारणे जो गच्छति सजतिवसतिं सो सुद्धो।

णवर – तिट्ठाणे णिसीहिय अकरेंतस्स तिमासगुरुं भवति, दोसु ठाणेसु न करेति दोमासगुरुं, एगम्मि ठाणे अकरेंतस्स एगमासगुरुं ॥१६६७॥

कारणतो अविधीए, दोसा ते चेव जे भणितपुव्वं।
कारणविधीए सुद्धो, पुच्छत्तं कारणं किं तु ॥१६६८॥

कारणे गच्छति, अविधीए पविसतो दोसा ते चेव जे पुव्व पढमभगे वुत्ता वीसत्थाती ते सव्वे संभवंति। ततियभग अविधिकारो त्ति काउं। गतो ततियभंगो।

इयाणिं [2]चउत्थभंगो – पच्छद्धं। कारणे गच्छइ तिट्ठाणे णिसीहियाविधिं पउजतो सुद्धो।

सीसो पुच्छति – "कारण किं"? तुसद्दो पादपूरणे ॥१६६८॥

आचार्याह –

[1]गम्मति कारणजाते, [2]पाहुणए [3]गणहरे [4]महिड्ढीए।
[5]पच्छादणा य [6]सेहे, असहुस्स चउक्क भयणा तु ॥१६६९॥

कारणजाए त्ति दार।

---

१ गा० १६६६। २ गा० १६६६।

एयस्स इमाओ दो दारगाहाओ -

उवस्सए[1] य संथारे[2], उवधी[3] संघ-पाहुणे[4] ।
सेहे[5] ठवणुद्देसे[6], अणुण्णा[7] भंडणे[8] गणे[9] ॥१७००॥[10]
अणपज्झ[11] अगणि[12] आऊ[13], वियारे[14] पुत्त[15]-संगमे[16] ।
संलेहण[17] वोसिरणे[18], वोसिट्ठे[19] णिट्ठिते[20] तिहिं ॥१७०१॥

[1]उवस्सए सथारे त्ति दो दारा वक्खाणेंति -

अज्जाणं पडिकुट्ठं, वसधी-संथारगाण गहणं तु ।
ओभासित दातव्वा, वच्चेज्जा गणधरो तेणं ॥१७०२॥

संजतीण वसहीए संथारगाण य सय गहणं पडिसिद्ध । वसहिं ओभासिओ (उं) अक्खाणकरो वच्चति । संथारगाण य ओभट्ठसमप्पियाणं दाणट्ठा गच्छति गणधरो । संथारगे सय विभयंतीओ मा अधिगरण करिस्संति, तेण गणधरो गच्छति ॥१७०२॥

"[2]उवहि" त्ति दार -

पडितं पम्हुट्ठं वा, पलावितं वा हितं व उग्गमितं ।
उवधिं भाएउं जे, दाउं जे वा वि वच्चेज्जा ॥१७०३॥

भिक्खादि-अडतीण पडिता उवही, सज्झायभूमीए वा पम्हुट्ठा विस्सरिया, साणमाइणा वा पलाविता, तेणगेहिं वा अवहरिता, सा साधूहिं लद्धा, गुरुण समप्पिया, अपुव्वा वा उवही उग्गमिता, पडिय-पम्हुट्ठादियाण भायणं, अपुव्वाए दाणं, एतेहिं कारणहिं गणधरो वच्चेज्जा ॥१७०३॥

इयाणि "[3]संघपाहुण" त्ति दार -

ओहाणाभिमुहीणं, थिरिकरणं कातुमज्जियाणं तु ।
गच्छेज्जा पाहुणओ, संघकुल-थेर गण-थेरो ॥१७०४॥

काओ य संजतीओ परिसहवाहिताओ सजमसारपरम्मुहीओ ओहाणाभिमुहीओ अच्छंति, ताण थिरीकरणट्ठा सघपाहुणो गच्छेज्ज । कुल-गण-सघ-थेरा संघपाहुणा भण्णति । अण्णो वा थिरीकरणलद्धिसपन्नो गच्छेज्ज ॥१७०४॥

इदाणिं "[4]सेहे" त्ति दारं -

अण्णत्थ अप्पसत्था, होज्ज पसत्था व अज्जिओवसए ।
एतेण कारणेणं, गच्छेज्ज उवट्ठवेउं जे ॥१७०५॥

सेहस्स उवट्ठावणाहेउं अज्जिओवस्सय गच्छेज्ज ॥१७०५॥

---

१ गा० १७०० । २ गा० १७०० । ३ गा० १७०० । ४ गा० १७०० ।

इदाणिं "[1]ठवणे" त्तिदारं –

ठवण-कुलाइ ठवेउं, तासिं ठविताणि वा णिवेएउं ।
परिहरिउं ठविताणि व, ठवणाऽऽदियणं व वोत्तुं जे ॥१७०६॥

सेज्जातर-मामगाइ ठवण-कुला भण्णंति । ते संजतिवसहीए गतु ताणं पुरतो ठवेंति, स वसहीए वा ठिएण ठविया ताण गंतु णिवेएति, इमाणि वा ठवियाणि, मा पविसह त्ति णिवारणट्ठा गच्छंति । ठविएसु वा वा इदाणि गहणं करेहि त्ति अणुण्णवणट्ठा गच्छति ॥१७०६॥

इदाणिं "[2]उद्देसाणुण्ण" त्ति दो दारा –

वसथी य असज्झाए, गारव भय सड्ढ मंगले चेव ।
उद्देसादी काउं, वाएउं वा वि गच्छेज्जा ॥१७०७॥

साधुवसहीए असज्झायं अप्पसत्था वा ताहे संजतिवसहिं गच्छति उद्देसाणुण्णट्ठा, गणधरा रायादि दिविग्वतेहिं वा संजतिवसतिं गच्छंतेहिं ताण लोगे गारवं भवति, पडिणीयाण वा भय भवति ।

अहवा – आयरियो उद्देसाति करेति, सुहं गारवभएहिं सिग्घं अहिज्जति, आयरिएण वा उद्दिट्ठे सद्धा भवति, संजतीण वा वसहीए मगल्लं तत्थ उद्दिसति, एतेहिं उद्दिसातिकारणेहिं गच्छति । पवत्तिणीए वा कालगयाए अण्णा वायंती य णत्थि ताहे गणधरो वायणट्ठा गच्छति ॥१७०७॥

इदाणिं "[3]भंडणे" त्ति दारं –

उप्पण्णे अधिकरणे, विओसवेउं तहिं पसत्थं तु ।
अच्छंति खउरिताओ, संजमसारं ठवेतुं जे ॥१७०८॥

संजतीणं उप्पण्णे अधिकरणे ताओ संजमसारं ठवेत्तु अच्छति, खउरिता खरंटिता रोषेणेत्यर्थः, ताण य ओसवणं संजतिवसहीए पसत्थ, अतो संजतिवसहिं ओसवणट्ठा गणधरो गच्छति ॥१७०८॥

इदाणिं "[4]गण" त्ति दार –

जति कालगता गणिणी, णत्थि य अण्णा तु गणधरसमत्था ।
एतेण कारणेणं, गणचिंताए वि गच्छेज्जा ॥१७०९॥

गणचिंताए गणधरो गच्छेज्ज ॥१७०९॥

इदाणिं "[5]अणपज्झ त्ति दार –

अज्जं जक्खाइट्ठं, खित्त-चित्तं व दित्त-चित्तं वा ।
उम्मातं पत्तं वा, काउं गच्छेज्ज अप्पज्झं ॥१७१०॥

जक्खेणं आदिट्ठा गृहीता, ओमाणिया खित्त-चित्ता, हरिसेणं दित्त-चित्ता, अधिकतरप्रलापी मोहणियकम्मोदएण वा उम्मायं पत्ता वेदुम्मत्तेत्यर्थः । आयरिओ मतेण वा तंतेण वा अप्पज्झं स्वस्थचित्त काउकामो संजतिवसतिं गच्छेज्जा ॥१७१०॥

---

१ गा० १७०० । २ गा० १७०० । ३ गा० १७०० । ४ गा० १७०० । ५ गा० १७०१ ।

इदाणिं "[1]अगणि" त्ति दारं –

जति अगणिणा तु दड्डा, वसती दज्झति व डज्झिहिति व त्ति ।
णाऊण व सोऊण व, संठविउं जे वि वच्चेज्जा ॥१७११॥

जति अगणिणा वसहीओ दड्ढाओ, डज्झंति वा संपतिकाले, परो वा कहेंतो सुणाति दज्झति । अहवा – दज्झिस्सति, एवं सयं णाऊणं सोऊणं वा परसमीवाओ सठवणट्ठा उज्झवणट्ठा वा गच्छेज्ज ॥१७११॥

इदाणिं "[2]आउ" त्ति दारं –

णदिपूरएण वसती, वुज्झति वूढा व वुज्झिहिति व त्ति ।
उदगभरितं व सोच्चा, उवघेत्तुं वा वि गच्छेज्जा ॥१७१२॥

उदगभरिए उल्लचणट्ठा उवघेत्तु उवग्गहकरणट्ठा गच्छति ॥१७१२॥

इदाणिं "[3]वियार" त्ति दारं –

घोडेहि व धुत्तेहि व, आवाहिज्जति वियारभूमीए ।
जयणाए वारेउं, संठवणाए वि गच्छेज्जा ॥१७१३॥

घोडा चट्टा, जूग्रकरादि-धुत्ता, तेहिं वसहीए पुरोहडे उवसग्गिज्जति ।

अहवा – वाहिं वियारभूमीए जइ उवसग्गिजति तो तेसिं जयणाए साणुणत णिवारणट्ठा गच्छेज्ज, सजतीण काइयसण्णाभूमिसंठवणट्ठा गच्छेज्ज ॥१७१३॥

इदाणिं "[4]पुत्ते" त्ति दारं –

पुत्तो पिया व भाया, भगिणी वा ताण होज्ज कालगया ।
अज्जाए दुक्खियाए, अणुसट्ठिं दाउ गच्छेज्जा ॥१७१४॥

अणुसट्ठी उवदेसो, त उवदेस दाउकामो गच्छति ॥१७१४॥

तेलुक्कदेवमहिता, तित्थकरा णीरया गया सिद्धिं ।
थेरा वि गता केयी, चरणगुणपभावया धीरा ॥१७१५॥

तेलोक्के जे देवा तेहिं महिता पूजिता ते वि ताव कालगया, थेरा गोयमादी ते वि कालगया, किमगं पुण अण्णे माणुसा ? ॥१७१५॥

तहा –

बम्ही य सुंदरी या, अण्णा वि य जाओ लोगजेट्ठाओ ।
ताओ वि य कालगता, किं पुण सेसाउ अज्जाओ ॥१७१६॥ कंठा

---

१ गा० १७०१ । २ गा० १७०१ । ३ गा० १७०१ । ४ गा० १७०१ ।

ण हु होति सोयितव्वो, जो कालगतो दढो चरित्तम्मि ।
सो होइ सोयियव्वो, जो संजम - दुब्बलो विहरे ॥१७१७॥ कंठा

लद्धूण माणुसत्तं, संजमचरणं च दुल्लभं जीवा ।
आणाए पमाएत्ता, दोग्गति-भय-वड्ढगा होंति ॥१७१८॥

भगवतो आण पमाएत्ता दोग्गतीओ भयं तस्स वड्ढगा भवति ॥१७१८॥

इदाणि "[1]सगमे" त्ति दारं –

पुत्तो पिया व भाया, अज्जाणं आगतो तहिं कोयि ।
घेत्तूण गणधरो तं, वच्चति तो संजती-वसधिं ॥१७१६॥

चिरं पवसितो आतातो तं गणधरो घेत्तुं वच्चति ।

इदाणि "सलेहण" पच्छद्ध ।

"[2]संलेहण" परिकम्मकालो । "[3]वोसिरण" त्ति - अणसणपच्चक्खाणकालो ।

"[4]वोसट्ठे" त्ति - अणसणं पच्चक्खातं । "[5]णिट्ठिय" त्ति - कालगता ।

एतेसु कालेसु आयरियो अवस्सं गच्छति ।

"तिहिं" त्ति - उवरुवरि तिण्णि दिणे सोगावणयणहेउ गच्छति ॥१७१६॥

संलिहितं पि य तिविधं, वोसिरियव्वं च तिविह वोसट्ठं ।
कालगतं ति य सोच्चा, सरीरमहिमाए गच्छेज्जा ॥१७२०॥

आहारो सरीरं उवकरण च, आहारे णिव्वीतियादि अप्पाहारो, सरीरस्स वि अवचयकारी, उवकरणे वि अप्पोवकरणो, एवं चेव तिविधं वोसिरति, एवं चेव तिविधं वोसट्ठ ।

अहवा – आहार-सरीर-कसाए य एय तिगं, कालगयाए य जया सरीरं परिठविज्जति तया महिमा कज्जति, कुक्कुहिगातिपवयणउब्भावणट्ठा ॥१७२०॥

जाधे वि य कालगता, ताधे वि य दोण्णि वा दिवसो ।
गच्छेज्ज संजतीणं, अणुसट्ठिं गणधरो दातुं ॥१७२१॥

कालगताए उवरिं पयत्तिणिमादि दुत्थं जाणिय एक्कं दो तिण्णि वा दिणे अणुसट्ठिपदाणट्ठं गच्छति ॥१७२१॥ गम्मति कारणजाते" त्ति मूलदारं गतं ।

इदाणि "[6]पाहुणे" त्ति दारं –

अप्प-बिति अप्प-ततिआ, पाहुणगा आगया सउवयारा ।
सेज्जातर-मामाते, पडिकुट्ठुद्देसिए पुच्छा ॥१७२२॥

"सउवयारे" त्ति जे तिण्णि णिसीहियाओ काउं पविट्ठा ते सुउवयारा ।

---

१ गा० १७०१ । २ गा० १७०१ । ३ गा० १७०१ । ४ गा० १७०१ । ५ गा० १७०१ । ६ गा० १६६६ ।

अहवा – जेसिं आगयाणं उवचारो कीरइ ते सउवयारा, तेसु आगतेसु गणिणी जति थेरी तो अप्प-बीया णिगच्छति । अह तरुणी तो अप्प-ततिया णिगच्छति, पुरतो थेरी ठायति ॥१७२२॥

तेसिं पुण आगयाणं इमो उवयारो –

आसंदग-कट्ठमओ, भिसिया वा पीढगं व छगणमयं ।
तक्खणलंभे असती, पडिहारिय पेह ऽभोगऽण्णे ॥१७२३॥

जति साधुस्स आगतेसु तक्खणादेव आसंदगो कट्ठमओ अज्झुसिरो लब्भति, भिसिगा वा पीढगं वा छगणमय ताहे पाडिहारियं ण गेण्हंति, तक्खणलंभासतीए पाडिहारियं घेत्तु ठवेति, पेहिंति उभयसज्झं, पेहिंति त्ति-पडिलेहिंति । "अभोगऽण्णे" त्ति अण्णो तं ण कोति वि परिभुजति । ते तत्थ सुहासणत्था ठिता णिराबाधं सव्वं पुच्छति ।

[1]पच्छद्धं – सेज्जातर-मामग-पडिकुट्ठल्लगा अभोज्जा उद्देसिय वा जेसु कुलेसु कज्जति ते कुले पुच्छति ॥१७२३॥

इमा पुच्छगदायतगाण विधी –

बाहाए अंगुलीए व, लट्ठीय व उज्जुसंठितो संतो ।
ण पुच्छेज्ज न दाइज्जा, पच्चवाता भवे तत्थ ॥१७२४॥

एगा पएसिणी आयता अंगुली भण्णति । सेसं कठं ॥१७२४॥

अविधीए दाइज्जंते इमे दोसा भवति –

तेणेहि व अगणीण व, जीवितववरोवणं च पडिणीते ।
खरए खरिया सुण्हा, णट्ठे वट्टक्खुरे संका ॥१७२५॥

बाहु-अगुलि-लट्ठिमादिएहिं जं घर दातिय तत्थ तेणेहिं किं चि हडं, अगणिणा वा दड्ढ, तम्मि वा घरे वेरिणा को वि जीवितातो ववगेवितो, दुवक्खरगो वा णट्ठो, दुवक्खरिया वा केण ति हडा, सुण्हा वा केणवि सह विटेण पलाता, वट्टखुरो घोडओ तम्मि वा णट्ठे साधू सकिज्जति । एताहिं दाहिति त्ति ताओ वा संकिज्जति । तम्हा णो अविधीए पुच्छे, णो वा दाते । ते तत्थ अच्छंता णो हसति, णो कदप्पति, ण वा किं चि विसट्ठा राति कह कहेंति ॥१७२५॥

इमं कहेति –

सेज्जातराण धम्मं, कहिंति अज्जाण देंति अणुसट्ठिं ।
धम्मम्मि य कहितम्मी, सव्वे संवेगमावण्णा ॥१७२६॥

उज्जुताण थिरीकरणत्थं, विसीयमाणाण उज्जमणट्ठं, अज्जाण अणुसट्ठिं देति । सड्ढा सजतीतो य सव्वे सवेगमागया, अप्पणो य णिज्जरा भवति ॥१७२६॥ [2]

अहवा – [3]पाहुणगदारस्स इमा अण्णा वक्खा –

अण्णो वि य आएसो, पाहुणग अभासि दुल्लभा वसधी ।
तेणादि चिलिमिणिअंतर चातुस्साले वसेज्जा हिं ॥१७२७॥

---

१ गा० १७२३ पच्छद्धंस वक्खा । २ गा० १७२२ । ३ गा० १६९६ ।

पुव्वादेसाओ इमो अण्णो आदेसो। "अभासित" त्ति कुड्डुकडुविडादि तम्मि य गामे दुल्लभा वसही।

अहवा – पच्चतियविसये सो गामो, तत्थ तेणगाति-भया वसहिं ण लब्भति ताहे संजतीओ वसहिं मग्गंति। जइ ताहिं पि ण लद्धा तो बाहिं रुक्खमूलातिमु वसतु। "तेण" त्ति जइ बाहिं सावय-तेणातिएहिं पच्चवाया भवेज्ज ताहे संजतीवसहीए चिलिमिलि अतरिया चाउस्साले घरे वसेज्जा। हिं पायपूरणे ॥१७२७॥

पच्छिमा चिलिमिणी। जतो भण्णति –

कुड्डंतरिया असती, कडओ पोत्ती व अंतरे थेरा।
ते संतरिता खुड्डा, समणीण वि मग्गणा एवं ॥१७२८॥

अण्णवसहीते अभावे संजता संजतीओ य एक्कघरे वसता कुड्डुतरिया वसति, पिहदुवारे असति कुड्डस्स कडओ अतरे दिज्जति, असति कडगस्स ताहे "पोत्ति" त्ति चिलिमिणि त्ति वुत्तं भवति, पोत्तीएतेण पोत्ति-अभावे वा जओ दढकुड्डं ततो तरुणीओ सजतीओ ठविज्जंति, ताहे मज्झिमा, ताहे थेरी, खुड्डी य। जतो सजतीतो, ततो अतरे थेरा खुड्डा मज्झिमा तरुणा य। समणीण एस चेव मग्गणा। णवरं – सरिसवय वज्जेज्जा॥१७२ ॥

एसा पुण कुड्डघरे विधी –

अण्णाते तुसिणीता, णाते सद्दं करेंति सज्झायं।
अच्चुव्वाता व सुते, अच्छंति व अण्णहिं दिवसं ॥१७२९॥

जति अण्णाया जणेण ठिता तो राओ तुसिणीआ अच्छति, अह णाया तो सद्दसज्झाय करेंति, अतीव उव्वाय अच्चुव्वाता श्रान्ता इत्यर्थः। अच्चुव्वाता वा सुवति, ण परोप्पर संजया संजतीओ य उल्लवेंति। एवं राओ जयणा एसा वुत्ता। कारणओ एग दो तिण्णि वा दिणे अच्छंता दिवसतो अणत्थ उज्जाणादिसु अच्छति ॥१७२९॥

समणी जणे पविट्ठे, णीसंतु उल्लाव ऽकारणे गुरुगा।
पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छिचमढणे गिही मूलं ॥१७३०॥

गिहिजणेसु अप्पणो सयणीयघरेसु पविट्ठेसु ताए णिसंतवेलाए जति समणी सजतेण सम उल्लावं करेति तो चउगुरु पच्छित्त।

अहवा – समणीजणे समणजणे य पविट्ठे जइ एगा अणेगाओ वा एगेहिं वा अणेगेहिं वा सजतेहिं समाणं णिसंतवेलाए अंतो बहिं वा उल्लावं करेंति चउगुरु ते। दिवसतो अच्छंता जति पयला णिद्द तुयट्टणे अच्छि चमढणे चउगुरुं। गिहिदिट्ठे सकिते चउगुरुअ चेव। गिहिदिट्ठे णिस्संकिते मूलं

मत्तएसु वा काउं बाहिं परिट्ठवेंति, एव जयति। जति सजतिवसहिं संजता अदिट्ठा पविट्ठा तो अदिट्ठा एव णिति णिग्गच्छंति। अह दिट्ठा पविट्ठा तो दिट्ठा वा अदिट्ठा वा णिति एस मयणा ॥१७३०॥

तत्थऽण्णत्थ व दिवसं, अच्छंता परिहरंति णिद्दाती।
जतणाए व सुवंति, उभयं पि व मग्गते वसधिं ॥१७३१॥

सजति-वसधीए राओ वसिता दिवसतो तत्थ वा संजतिवसधीए अच्छंति अण्णत्थ वा उज्जाणादिसु, पयलाणिद्दादिपए परिहरंति, जवणियंतरिया वा जयणाए सुवंति, जहा सागारिगो ण पेच्छति। जति ते पाहुणगा

तत्थ किं चि कालं कारणेण अच्छिउकामा तो उभय साहुसाहुणीओ य अण्णवसहिं मग्गति तत्थ ते साहू ठायंति ।।१७३१।।

इदाणिं "[1]गणधरे" त्ति दार –

उच्चारं पासवणं, अण्णत्थ व मत्तएसु व जतंति ।
अदिट्ठ-पविट्ठे वा, दिट्ठा णिंतेहरा भइतं ।।१७३२।।

उच्चारादी ण संजतिकायभूमीए करेंति, अण्णत्थ करेंति ।।१७३२।।

मुच्छा विसूइगा वा, सहसा डाहो जराइ मरणं वा ।
जति आगाढं अज्जाण होति गमणं गणधरस्स ।।१७३३।।

पित्तादिणा मुच्छा, अतिभुत्ते वा विसूतिआ, पित्तेण वा डाहो अग्गिणा वा, डाहजरो वा, मरण वा, "सहस" त्ति अकम्हा जति आगाढं एरिसं अज्जाण होज्ज ताहे दिवसतो रातीए वा गणहरस्स गमणं भवे ।।१७३३।।

अघवा –

पडिणीय-मेच्छ-सावत-गय-महिसा-तेण-साणमादीसु ।
आसण्णे उवसग्गे, कप्पति गमणं गणहरस्स ।।१७३४।।

एतेहिं पडिणीयातिएहिं जता उवसग्गिज्जंति आसण्णे वसहीए ठिता तया गणहरस्स अण्णस्स वा कप्पति तण्णिवारणट्ठा गतु ।

अघवा – "आसण्णे" त्ति आसण्णो उवसग्गो, एसे काले भविस्सति ण ताव भवति, तं णिवारणट्ठा गच्छति ।।१ ३४।।

इदाणिं "[2]महिड्ढि" त्ति दार –

रायाऽमच्चे सेट्ठी, पुरोहिते सत्थवाह पुत्ते य ।
गामउडे, रट्ठउडे, जे य गणधरे महिड्ढीए ।।१७३५।।

जो राया पव्वइओ, अमच्चो मत्री, अट्ठारसण्ह पगतीणं जो महत्तरो सेट्ठि, सपुरजणवयस्स रण्णो जो होमजावादिएहिं असिवादि पसमेति सो पुरोहितो, जो वाणिओ रातीहिं अब्भणुण्णातो सत्य वाहेति सो सत्थवाहो, तस्स पुत्तो सत्थवाहपुत्तो ।

अहवा – राया रायपुत्तो वा एव सव्वेसु । गामउडो गाममहत्तरो, रट्ठउडो रट्ठमहत्तरो । जो अ गणहरो रायादिवल्लभो विज्जातिसयसपण्णो महिड्ढिओ । एते रायातीता साहू सव्वे सजतिवसहिं गच्छति ।।१७३५।।

इमो गुणो –

अज्जाण तेयजणणं, दुज्जण-सचक्कारता य गोरवता ।
तम्हा समणुण्णातं, गणधर-गमणं महिड्ढीए ।।१७३६।।

---

[1] गा० १६९७ । [2] गा० १७०७ ।

तेयो उज्जो जणणं करणं, तेजकरणमित्यर्थः । पडिणीयापि दुजणो सचक्कारा य सासंका भवति, न किंचित् प्रत्यनीकं कुर्वन्तीत्यर्थः । लोगे य अज्जाओ गोरवियाओ भवंति, तम्हा गणहरस्स महिड्ढियाण य गमणं अणुण्णात ॥१७३६॥

ते य रायादि-दिक्खिते वसहिमागते दट्ठुं इमं चिंतेति –

संतविभवा जति तवं, करेंति त्रिप्पजहितूण इड्ढीओ ।
सीयंतथिरीकरणं, तित्थ-विवड्ढी य वण्णो य ॥१७३७॥

संत विद्यमानं, विभवो सचित्ताचित्तादि दव्वसपया, जति ताए छड्डिऊण तव करेति किं अम्हे असंते विभवे पत्थेमाणीओ वि सीतामो, एवं ताओ थिरीकता भवंति, नदिशेनशिष्यवत् । एवं थिरीकरणे कज्जमाणे तित्थवुड्ढी कता भवति । तित्थवड्ढीए य पवयणस्स वण्णो जमो पभावितो भवति ॥१७३७॥

इदाणिं "[1]पच्छादणा य सेहे" त्ति दार – के थी रायपुत्ता समत्तलद्धबुद्धी णिक्खंता तेसिं पिता –

वीसुं भूओ राया, लक्खणजुत्तो ण विज्जइ कुमारो ।
पडिणीएहि य कहिते, आहावंती दवदवस्स ॥१७३८॥

सरीराओ वा जीवो, जीवाओ वा सरीर वीसुं पृथग्भूत राजा मृत इत्यर्थः । अमच्चादिया राजारिहं कुमार वीणति "इमो रज्जारिहो" त्ति, जे उत्तमा रज्जारिहा ते णिक्खता, ततो पडिणीएहिं कहिय ते विहरमाणा इहेव अमुगुज्जाणे संपत्ता, ततो अमच्चातीया णिरुत्त जाणिऊण रायहत्थि रायस्स छत्तं चामरं पाउया खग्ग एवमाति रायारिहं घेत्तु आधाविउमारद्धा । कह ? "दुत दुतं" शीघ्रमित्यर्थः ॥१७३८॥

ते पुण इमेण कारणेण ते पडिणीया कहेति –

अति सिं जणम्मि वण्णो, य संगती इड्ढिमंतपूया य ।
रायसुयदिक्खितेणं, तित्थविवड्ढी य लद्धी य ॥१७३९॥

अतीव एतेसिं जणे लोगे जसो, इमेण रायपव्वइएण राइणो सगतिं करिस्सति, इड्ढिमंता य अमच्चादिता एयप्पभावेण पूएस्संति, राया एत्थ पव्वयति, अण्णे वि अमच्चातीया पव्वयति, एव तित्थवुड्ढी । तप्पभावेण वत्थअसणादिएहिं य लद्धी । उण्णिक्खतेण य एते वण्णाइया ण भविस्सति त्ति पडिणीया कहयति ॥१७३९॥

ते य आयरियसमीवे तिण्णि रायपुत्ता –

दट्ठूण य राइड्ढीं, परीसहपराजितो तहिं कोयि ।
आपुच्छति आयरिए, सम्मत्ते अप्पमत्तो हु ॥१७४०॥

त रज्जरिद्धि एज्जमाणिं पासिय एगो परीसहपराजितो आयरियं आपुच्छति – अहं असत्तो पव्वज्ज काउं ।

आयरिएण वत्तव्व "सम्मत्ते अप्पमातो कायव्वो, चेतिय-साहूण य पूयापरेण भवियव्व" ॥१७४०॥

बितिओ आयरिएण भणिओ – अज्जो ! अमच्चातिया आगच्छति उण्णिक्खावणहेउं, तो तुमं ओसराहि किं वा कीरउ ?

---

[1] गा० १३०७ ।

सो भणाति –

किं काहिं ति ममेते, पडलग्गतणं व मे जढा इड्ढी ।
को वाऽणिट्ठफलेहिं, चलेहि विभवेहि रज्जेज्जा ॥१७४१॥

किं ममच्चाति मम काहिंति, जहा पडे लग्गं तण विघुव्वति एवं मए वि इड्ढी विघूता, मा तुब्भे बीहेह, रज्जस्स विसयाण भुत्ताण फल नरम्रो, चला भ्रघुवा, तेसु को राग करेज्ज ? उत्तरमहुरवणिजवत् । बितितो धितिघणियबद्धकच्छो पागडो चेव सव्वे उवसग्गे जिणित्ता सजमं करेति ॥१७४१॥

त रज्जरिद्धि एज्जमाणि दट्ठुं सोउं वा –

ततिग्रो संजम-अट्ठी, आयरिए पणमिऊण तिविधेणं ।
गेलण्णं णियडीए, अज्जाणमुवस्सयमतीति ॥१७४२॥

ततिम्रो रायपुत्तो तिविधेणं ति मणोवातिकाएहिं । गेलण्ण णियडी भ्रयिगेलण्णेण संजतीण उवस्सय म्रतीति ॥१७४२॥

अंतद्धाणा असती, जति मंसू लोय अंबिली-बीए ।
पीसित्ता देंति मुहे, अप्पगासे ठवंति य विरेगो ॥१७४३॥

जति मतो भ्रजणं वा भ्रतद्धाणिय वा भ्रत्थि तो अंतद्धितो कज्जति, भ्रह अंतद्धाणस्स भ्रसति ताहे संजतिवसहिं णिज्जति । "जति मसु" त्ति - जति स्मश्रु भ्रत्थि तो लोभ्रो कज्जति, ताहे भ्रबिल-बीयाणि पीसित्ता मुहमालिप्पति, सजतिवसहीए भ्रप्पगासे ठविज्जति, विरेभ्रो से दिज्जति ॥१७४३॥

संथार कुसंघाडी, अमणुण्णे पाणए य परिसेओ ।
घंसण पीसण ओसध, अद्धिति खरकम्मि मा बोलं ॥१७४४॥

संथारगे ठविज्जति । मइला फट्टा कुसंघाडी, सेसा (तारा) से पाउणिज्जति । भ्रमणुण्ण गधोलय पाणीयं, तेण से परिसेभ्रो कज्जति । भ्रण्णा सजतीभ्रो भ्रोसघं घसति, भ्रण्णाभ्रो भ्रोसह पीसति, भ्रण्णाभ्रो करतलपल्हत्थमुहीभ्रो भ्रद्धितिं करेमाणीभ्रो भ्रच्छति । खरकम्मिय त्ति रायपुरिसा, तेसागतेसु भण्णति – "मा" प्रतिषेधे, "बोल" त्ति बोल, तं मा करेह, एसा पवत्तिणी गिलाणा, ण सहति बोल ति ॥१७४४॥

इदाणिं "[1]भ्रसहुस्स चउक्कभयण" त्ति दार –

दोण्णि वि सहू भवंति, सो वऽसहू सा व होज्ज तू असहू ।
दोण्णं पि हु असहूणं, तिगिच्छ-जतणा य कायव्वा ॥१७४५॥

पढमभगे–साधुणी वि सहू, साहू वि सहू । बितीयभगे–साधुणी सहू 'सो वऽसहू' त्ति साहू भ्रसहू । ततियभगे – साधुणी भ्रसहू, साहू सहू । चउत्थभगे – साहू साहुणी य दो वि भ्रसहू । चउसु वि भगेसु तिगिच्छाए जयणा कायव्वा ॥१७४५॥

पढमभगो ताव भण्णति ।

---

१ गा० १६९७ ।

साधु-साधुणीण इमा सामायारी –

सोऊणं च गिलाणिं, पंथे गामे य भिक्खचरियाए ।
जति तुरितं णागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥१७४६॥

सोऊणं गिलाणी पथे गामे वा दिवसओ भिक्खावेलाए रात्रो वा जइ तुरियं गिलाणीतो णागच्छति तो चउगुरुगे सवित्थरे लग्गति ॥१७४६॥

जत्थ गामे सा गिलाणी तस्स बाहिरेण साहू वच्चति ।

ताहे गिहिणा भण्णति – तुब्भं गिलाणिस्स पडिजागरणा किं कज्जति ?

साहुणा भणियं – सुट्ठु कज्जति ।

गिहिणा भणियं – जति कज्जति तो एत्थ गामे –

लोलंती छग-मुत्ते, सोत्तुं घेत्तुं दव्वं तु आगच्छे ।
तूरंतो तं वसधिं, णिवेदणं छादणऽज्जाए ॥१७४७॥

एगागी अप्पणो छगण-मुत्ते लोलंती अच्छति । एवं सोउ ताहे साहू ततो चेव दव्व घेत्तूण आगच्छे सजतिवसहिं । ताहे तीए वसहीए बाहिं ठाति । सेज्जियादिए तीए संजतीए णिवेतावेति "बाहिं साधू आगतो" त्ति, गत्तेसु य छादितेसु ताहे साधू पविसति ॥१७४७॥

इमं भण्णति –

आसासो वीसासो, मा भाहि त्ती थिरीकरण तीसे ।
धुविउं चीरऽत्थुरणं, तिस्सप्पण बाहिं कप्पो य ॥१७४८॥

"आसासो" त्ति अह ते सव्वं वेयावच्चं करिस्स । "वीसासो" त्ति तुम मम माया वा भगिणी वा वयाणुरूव भणाति । थिरीकरणं ति दढीकरण । छगण-मुत्तेण लुलितं त सजति तीसे जे उवग्गहिया चीरा चिट्ठति ते पत्थरेति । अभावे तेंमि सो साधू अप्पणगे पत्थरेति । सेसा चीरा छगण-मुत्तेण लुलिता ते वसहीए बाहिं कप्पेति ॥१७४८॥

"वसहिनिवेयणं" एयस्स पयस्स इमा वक्खाणगाहा –

एतेहिं कारणेहिं, पविसंते णिसीहियं करे तिण्णि ।
ठिच्चाणं कातव्वा, अंतर दूरे पवेसे य ॥१७४९॥

एतेहिं कारणेहिं पविसति तो तिण्णि णिसीहियाओ ठिच्चाणं करेति, णिसीहिय काउ ईसिं अच्छति, "अंतरे" त्ति मज्झे, "दूरे" त्ति अग्गद्वारे, "पवेसे" त्ति वसहिआसण्णे ॥१७४९॥

पडिहारिते पवेसो, तक्कज्जमाणणा य जतणाए ।
गेलण्णादी तु पदे, परिहरमाणो जतो खिप्पं ॥१७५०॥

जाहे सेज्जियाए पडिहारित कथितमित्यर्थः ताहे सजतो पविसति । एवं सो संजतो तं कज्ज-गिलाणिकरणिज्ज व्याख्यातजयणाए वक्खमाणाए य जयणाए समाणणत्ति परिसमाप्ति नयतीत्यर्थः ।

जता बहूणं मज्झे गिलाणि पडिजग्गति तदा कारणे विधिपविट्ठो वीसत्थपदं न संभवति । सेसा गिलाणातिपदा जयणाजुत्तो परिहरिमाणो जया पण्णविता भवति तदा खिप्प अतिक्कमति, जयणाजुत्तो वा खिप्पं पण्णवेति ॥१७५०॥

अज्जाए वेयावच्चकरो इमेहिं गुणेहिं जुत्तो –

पियधम्मो दढधम्मो, मियवादी अप्पकोतुहल्लो उ ।
अज्जं गिलाणियं खलु, पडिजग्गति एरिसो साहू ॥१७५१॥

पिय वोल्लेति मियभासी, अप्पमिति अभावे, थणोरूयमातिएहिं ण कौतुकमस्तीत्यर्थ ॥१७५१॥

सो परिणामविहिण्णू, इंदियदारेहि संवरित-दारो ।
जं किंचि दुब्भिगंधं, सयमेव विगिंचणं कुणति ॥१७५२॥

सो इति वेयावच्चकरो साहू, परिणमणं परिणामो, विही-विकप्पे णाणी, परिणामविधिज्ञ इत्यर्थः । इंदिया चेव दारा इंदियदारा, ते सविरता स्थगिता निवारिता इत्यर्थ । ज किं चि काइयसण्णाति दुब्भिगंध तं अण्णस्स अभावे सो सयं चेव विगिंचति ॥१७५२॥

"[1]अप्पकोउहल्ल" इति अस्य व्याख्या –

गुज्झंग-वयण-कक्खोरु-अंतरे तह थणंतरे दट्ठुं ।
संहरति ततो दिट्ठिं, ण य वंधति दिट्ठिए दिट्ठिं ॥१७५३॥

मृगीपद गुज्झंगं, वयणं मुहं, उवच्छगो कक्खा, जहा गामाओ अण्णगामो गामतरं, एवं ऊरुतो अण्णो उरुअंतरं, एवं थणंतरे वि, एतेसु जति दिट्ठिणिवातो भवति तो ततो दिट्ठिं सहरति निवर्तयतीत्यर्थ । न च परस्परत. दृष्टिवन्धं कुर्वन्ति ॥१७५३॥

"[2]जं किं चि दुब्भिगंधं" अस्य पश्चार्धस्य व्याख्या –

उच्चारे पासवणे, खेले सिंघाणए विगिंचणता ।
उव्वत्तण परियत्तण, णंतग णिल्लेवण सरीरे ॥१७५४॥

पुब्वद्धं कंठं । उत्ताणयस्स पासल्लियकरण उव्वत्तणं, इयरदिसीकरणं परियत्तणं णंतग वत्थं, सरीर वा जइ छगणमुत्ताइणा लित्तं तं पि णिल्लेवेति धोवति त्ति वुत्तं भवति ॥१७५४॥

दव्वं तु जाणितव्वं, समाधिकारं तु जस्स जं होति ।
णायम्मि य दव्वम्मी, गवेसणा तस्स कातव्वा ॥१७५५॥

जस्स रोगस्स ज दव्वं पत्थं गिलाणीए वा ज समाहिकारगं तं जाणियव्वं । तस्स दव्वम पयत्तेण गवेसणा कायव्वा, तस्स वा गिलाणिस्स अपत्थं जाणिऊण ण कायव्वं ॥१७५५॥

किरियातीयं णातुं, जं इच्छति एसणादि जतणाए ।
सब्भावणं परिण्णा पडियरण कथा णमोक्कारो ॥१७५६॥

---

१ गा० १७५१ । २ गा० १७५२ ।

किरियाए कीरमाणीए वि जा ण पण्णप्पति सा किरियातीता, तमेरिसि णाउ ज दव्व इच्छति त से एसणादिसुद्ध दिज्जति, असती सुद्धस्स पणगपरिहाणीजयणाए दिज्जति । सा किरियातीया तहा सद्धाविज्जति जहा अणसण पडिच्छति, परिण्णा अणासग परिण्णिणं सव्व पयत्तेण पडियरति, धम्म से कहेति, मरणवेलाए य णमोक्कारो दिज्जति ॥१७५६॥

"किरियस्स सज्झाए" इमा विधी –

सयमेव दिट्ठपाढी, करेंति पुच्छंति अजाणतो विज्जं ।
दीवण-दव्वातिम्मि य, उवदेसे ठाति जा लंभो ॥१७५७॥

सो साधू जइ दिट्ठपाढी, वेज्जगस्स दिट्ठो पाढो जेण सो दिट्ठपाढी, अधीतवेज्जक इति यावत् । दीवण त्ति अहं एगागी मा हुज्ज अवसउणं वेज्जस्स दव्व-खेत्त-काल-भावेसु उवदेसे दिण्णे भणाइ जइ एय ण लभामो तो किं देमो, पुणो पुच्छति, उवदेसे दिण्णे पुणो पुच्छेति 'जइ एय पि ण लभामो" पुणो कहेति, एव ताव पुच्छति जाव लाभो त्ति, ततो ठायति पुच्छाए ॥१७५७॥

अब्भासे व वसेज्जा, संबद्ध उवस्सगस्स वा दारे ।
आगाढे गेलण्णे, उवस्सए चिलिमिलि-विभत्ते ।

रातो वसंतस्स इमा विही – अब्भासे असंबद्धे अण्णघरे वा सबद्धे वसति तस्स वा उवस्सगस्स दार वसति । पच्छद्धं कंठ ॥१७५८॥

त पुण अंतो इमेण कारणेण वसति –

उव्वत्तण परियत्तण, उभयविगिंचणट्ठ पाणगट्ठा वा ।
तक्कर-भय-भीरू य व, णमोक्कारट्ठा वसे तत्थ ॥१७५९॥

उव्वत्तणाति कायव्व । उभय काइयसण्णा तस्स विगिंचणट्ठा उट्ठाणे वा असमत्था वोसिरणट्ठा उट्ठवेति, तण्हाए वा रातो पाणग दायव्व, तक्करभए वा साहू अतो वसति, सा वा भीरु, णमोक्कारो वा दायव्वो । एतेहिं कारणेहिं अंतो वसति ॥१७५९॥

धिति-बलजुत्तो वि मुणी, सेज्जातर-सण्णि-सेज्जगादिजुतो ।
वसति परपच्चयट्ठा, सिलाहणट्ठा य अवराणं ॥१७६०॥

अंतो वसतो इमे वितिज्जते गेण्हति सेज्जातर, सण्णिं सावग, सेज्जगो समोसियगो, तेहिं सह अतो वसति परपच्चयट्ठा अवरे अण्णे साहू, तेसि श्लाघा भवति ॥१७६०॥

जो एवं जहुत्तं विधाण करेति –

सो णिज्जराए वट्टति, कुणति य वयणं अणंतणाणीणं ।
स वितिज्जओ कहेति, परियट्टेगागि वसमाणो ॥१७६१॥

पुव्वद्ध सुगम । सो णिज्जावगो वसतो तस्स वितिज्जगस्स धम्म कहेति । अह एगागी वसति तो परियट्टेति ॥१७६१॥

पडिजग्गिता य खिप्पं, दोण्ह सहू णं तिगिच्छ-जतणाए ।
तत्थेव गणधरो अण्णहिं व [1]जतणाए तो णेति ॥१७६२॥

एवं तेण साधुणा पयत्तेण पडिजग्गिता सा खिप्पं शीघ्रं पण्णता, एव दोण्हं सहूणं तिगिच्छाकरणं जयणाए वुत्तं। जति तत्थेव गणधरो तो वच्चेति, अह अण्णहिं गणधरो तो सत्थेण पट्ठवेति, सयं वा - णेति ॥१७६२॥

णिक्कारणगिं चमढण, कारणगिं णेति अहव अप्पाहे ।
गमणित्थि मीस संबंधि वज्जिए असति एगागी ॥१७६३॥

जा सा गिलाणा संजती सा जति णिक्कारणेण गणातो निग्गता तो चमढेति खरटेति त्ति वुत्त भवति ।

अह कारणिया तो सयं णेति, जाण व सा सयती आयरियाण ताण अप्पाहेति संदिसइ ।

जयणाते तो णेति त्ति इमं वक्खाण "गमणित्थिय" पच्छद्धं ।

इत्थीहि णाल-बद्धाहि नेइ उस्सग्गओ तयं सो उ ।
मीसि त्ति इत्थिपुरिसेहि नाल-बद्धेहि तदभावे ॥१७६४॥
तह इत्थि णाल-बद्धाहिं पुरिस अणालेहि नवए भद्देहिं ।
तह पुरिसा णालइत्थी, अणाल-बद्धाहि तदभावे ॥१७६५॥
संबंधवज्जिय त्ती, अणाल-बद्धमीसीहिं ।
तदभावे पुरिसेहि, भद्देहिं अणाल-बद्धेहिं ॥१७६६॥
तो पच्छा संथुएहिं, असइ एतेसिं तो सयं णेति ।
दूराहि पिट्ठओ, जयणाए निज्जरट्ठिओ ॥१७६७॥

जया अप्पणा णेति तया इत्थिसत्थेणं णालाति-बद्धेणं ।

तस्सासति मीसेणं इत्थिपुरिसेण णालाति-बद्धेण णेति ।

तस्सासति इत्थीहिं सबद्धाहि पुरिसेहिं असंबद्धेहि भद्दगेहिं णेति ।

तस्सासति इत्थीहिं असंबद्धाहि भद्दाहि पुरिसेहिं सबद्धेहिं णेति ।

तस्सासति इत्थीहिं पुरिसेहिं य "वज्जिय" त्ति असंबद्धेहिं भद्देहिं णेति ।

तस्सासति पुरिस-सत्थेण संबद्धेण णेति ।

तस्सासति पुरिस-सत्थेण असबद्धेण भद्दगेण णेति ।

तस्सासति पच्छा एगागी णेति, अप्पणा अग्गतो सजती णासण्णे णातिदूरे पिट्ठओ । एवं जयणाए कारणिगिं णेति ॥१७६७॥ पढमभंगो गतो ।

---

१ वक्खा गा० १७६३ । २ गा० १८९ ।

इदाणिं "[1]वितियभंगो" भण्णति –

ण वि य समत्थो सव्वो, हवेज्ज एतारिसम्मि कज्जम्मि ।
कातव्वो पुरिसकारो, समाधिसंधाणणट्ठाए ॥१७६८॥

णाण-दंसण-चरित्ताणं समाधारणं संघणट्ठा पुरिसकारो कायव्वो ॥१७६८॥

सो पुण इमेहिं पगारेहिं असहू ।

सोऊण व पासित्ता, संलावेणं तहेव फासेणं ।
एतेहि असहमाणे, तिगिच्छ जतणाए कातव्वा ॥१७६९॥

भासिय-हसिय-गीय-कूजिय-विविधे य विलवियसद्दे सोऊण णेवत्थिय इत्थि कुचादिएहिं वा अगावयवेहिं पासित्ता, इत्थिए वा सद्धिं उल्लाव करेंतो, इत्थिफासेण वा छुद्धो, एतेहिं जो असहू तेण तिगिच्छा जयणाए कायव्वा ॥१७६९॥

साहू असहू गिलाणिं पुच्छति – तुमं किं सहू असहू ?

ताहे सा गिलाणी भणाति –

अविकोविता तु पुट्ठा, भणाति किं मं ण पाससी णियगे ।
लोलंती छग-मुत्ते ? तो पुच्छसि किं सहू असहू ? ॥१७७०॥

अविकोविता अगीयत्था, णियगे आत्मीये ॥१७७०॥

साधू भणाति –

जाणामि णाम एतं, देहावत्थं तु भगिणि ! जा तुब्भं ।
पुच्छामि धितिबलं ते, मा बंभविराधणा होज्ञा ॥१७७१॥

णामसद्दो पादपूरणे अवधारणे वा ॥१७७१॥

इयरध वि ताव सद्दे, रूवाणि य बहुविधाणि पुरिसाणं ।
सोतूण व दट्ठूण व, ण मणक्खोभो महं कोयि ॥१७७२॥

सा साधुणी भणाति – इहरहे त्ति हट्ठा वलियसरीरा गीतादिए सद्दे सोऊण णेवत्थेहिं बहुविहा पुरिसरूवाते दट्ठूण न कोति त्ति कश्चित् स्वल्पोऽपि न भवतीत्यर्थः ॥१७७२॥

किं चान्यत् – **संलवमाणी वि अहं, ण यामि विगतिं ण संफुसित्ताणं ।**
हट्ठा वि किंमु य इण्हिं, तं पुण णियगं धितिं जाण ॥१७७३॥

दिवसेऽपि पुरिसेण संलवंती पुट्ठा वा विगारं ण गच्छामि, सुद्धवभयारधारणातो, असुद्धभावगमणं विगारो विगती भण्णति, हट्ठा बलिया णिरुयसरीरा, एण्हि-एमाए गिलाणवत्थाए त्ति ।

सा त साधु भणति – तुम णियगं आत्मीय धितिं जाण ॥१७७३॥

---

१ गा० १७४३ ।

सो भग्गति साधम्मिं, सण्णि अहाभद्दियं च सूतिं च ।
देति य से वेतणयं, भत्तं पाणं व पायोग्गं ॥१७७४॥

सो असहू साहू तत्थ वा अण्णत्थ वा गामे संभोतियमसंभोतियं वा संजतिं मग्गति । तासिं असति सण्णि साविय, असति अहाभद्दिय चेव सूइं, जा अगारीओ वियावेति सा सूती । अणिच्छंती वेयणएण विणा वेयणग पि देति । "च" सद्दातो भत्तपाणं पि देति, गिलाणीए य भत्तपाणं पाउग्गं उप्पादेति, पाउग्गगहणातो एसणिज्जं पत्थं च, च सद्दातो अणेसणिज्ज पि ॥१७७४॥

एतासिं असतीए, ण कधेति जधा अहं खु मी असहू ।
सद्दाती-जतणं पुण, करेमि एसा खलु जिणाणा ॥१७७५॥

अहं खु मी आत्मावधारणे, अहमेव असहू । "पुण" सद्दो अनृतवाक्यप्रतिपादने, "खलु" सद्दो - आज्ञावधारणे ॥१७७५॥

सद्दादी इमा जयणा -

सद्दम्मि हत्थवत्थादिएहिं दिट्ठीए चिलिमिलंतरितो ।
संलावम्मि परम्मुहो, गोवालग-कंचुओ फासे ॥१७७६॥

सद्देण जो असहू सो तं गिलाणिं भणाति - मा ममं वायाए किंचि आणवेज्जासि, हत्थेण वा वत्थेण वा अंगुलीयाए वा दाएज्जसि ।

दिट्ठि-कीवो - सव्वं चिलिमिलियंतरितो करेति ।

सलाव-कीवो - अवस-संलवियव्वे परम्मुहो संलवति ।

फास-कीवो - तं पाउणिज्जतो अप्पणो गोवालकंचुय काउं उव्वत्तणाति करेति ।

एस पुण कञ्चुगो आचार्येण दर्शितो ज्ञेय: ॥१७७६॥ गतो बितियभंगो ।

इदाणिं [1]ततिओ भगो -

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीए वि होइ असहूए ।
दोण्हं पि तु असहाणं, तिगिच्छ जतणाए कायव्वा ॥१७७७॥

पुव्वद्ध कठं । गतो ततियभगो ।

इदाणिं [2]चउत्थो - "दोण्ह पि" पच्छद्ध । दोण्ह पि साधुसाधुणीणं उवरिमेसु तिसु भगेसु जा जयणा सा जहासभवं सव्वे चउत्थे कायव्वा । गतो चउत्थो भगो ॥१७७७॥

ततिय-चउत्थेसु असहू संजती इमं भणाति (भणेज्जा)

आतंक-विप्पमुक्का, हट्ठा बलिया य णिव्वुया संती ।
अज्जा भणिज्ज कायी, जेट्ठज्जा वीसमामो ता ॥१७७८॥

जहा धणेण विप्पमुक्को निद्धणो भवति एव आयकविप्पमुक्का हट्ठा भण्णति । "हट्ठे" त्ति निरोगा,

---

१ गा० १७४३ । २ गा० १७४३ ।

उवचियमंसा वलिया, सत्थिंदिया सुही निव्वुता भणति – सजमभरोक्कंताण तप्परिच्चाए जहासुहं विहारो वीसमणं[1] ॥१७७८॥

किं चान्यत् –

दिट्ठं च परामट्ठं च, रहस्सं गुज्झमेक्कमेक्कस्स ।
तं विस्समामो अम्हे, पच्छा वि तवं करिस्सामो ॥१७७९॥

मुच्छियपडियाए अपाउयसुत्ताए वा वेयणट्टवेलाए उड्ढणिवेसणातिसु वा किरियासु दिट्ठं, 'च" सद्दाओ अणेकसो, परिवत्तणादिकिरियासु परामट्ठं, चसद्दाओ अणेगसो रहस्संगा ऊरुगाती, सति रहस्से वि गुज्झगा मृगीपदमित्यर्थः ।

अहवा – रहस्सं अरुह जं गुज्झं तं रहस्सगुज्झं एक्कमेक्कस्स मया तुज्झ ममं पि तुमे । पच्छिमे-काले, "अवि" पदत्यसभावणे "[2]पच्छावि ते पयाया" कारगगाहा ॥१७७९॥

इय विभणिओ उ भयवं, पियधम्मोऽवज्जभीरु संविग्गो ।
अपरिमितसत्तजुत्तो, णिक्कंपो मंदरो चेव ॥१७८०॥

"इय" त्ति एव। जहा मंदरो वायुना न कंपते एवं परिभोग-णिमतण-वायुणा ण कंपिज्जते॥१७८०॥

"[3]पच्छावि तव करिस्सामो" त्ति भणति तेण साधुणा –

उद्धंसित्ता य तेणं, सुट्ठु वि जाणाविया य अप्पाणं ।
चरसु तवं णिस्संका, तु आसिअं सो तु चेतेति ॥१७८१॥

एव भणंतीए तीए जो उज्जोता घसिता उद्धंसिता, तेण साहुणा ।

अहवा – "उद्धंसिय" त्ति-खरटिया णिधम्मे एरिसं दुक्ख अणुभवियं, ण वेरग्ग जाय, मया वि साधम्मिणि त्ति जीवाविया, इहरा मता होतं। सुट्ठु त्ति पसंसा। चसद्दो अतिमयवयणपदरिसणे। अम्हे जाणा-विया, चसद्दो ति निद्देसे, त्वया अप्पा उपदेसो "चरसु" पच्छद्धं। "आसिअ" ति णिग्गच्छति, तस्मान्निर्ग-मन करोतीत्यर्थः ॥१७८१॥

एसेव गमो नियमा, पण्णवण-परूवणासु अज्जाणं ।
पडिजग्गंति गिलाणं, साधुं अज्जा उ जयणाए ॥१७८२॥

चउभगेण पण्णवणा, एकैकभंगस्वरूपेण अक्खाण परूवणा, "जयणाए" ति ॥१७८२॥

इमा जयणा संजतीए वि साधुपडियरणे –

सा मग्गति साधम्मीं, सण्णि-अहाभद्द-संचरादिं वा ।
देति य से वेयणयं, भत्तं पाणं च पाउग्गं ॥१७८३॥

संचरो ण्हाणिया सोधओ। शेषं पूर्ववत् ॥१७८३॥

कारणा अविधिते वि सजति-वसहिं पविसेज्ज –

---

१ स्वस्थेन्द्रिया। २ दशवैकालिकचतुर्थाध्ययने। ३ गा० १७७९।

बितियपदमणप्पज्झे, पविसे अविकोविते व अप्पज्झे ।
तेणऽगणि-आउ-संभम, बोहिगमादीसु जाणमवि ॥१७८४॥

अप्पज्झो, अकोविओ सेहो, तेणातिसम्भमेसु जाणतो वि सहसा पविसे ॥१७८४॥

जे भिक्खू णिग्गंथीणं आगमण-पहंसि डंडगं वा लट्ठितं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अण्णयरं वा उवगरणजायं ठवेति; ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जेण पहेण पक्खियादिसु आगच्छति तम्मि पहे, दंडो बाहुप्पमाणो, लट्ठी आयप्पमाणा, अण्णतरग्गहणा ओहिय उवग्गहिअ वा णिक्खिवति, तम्मि पहे मुचति, तस्स मासलहुं आणादिया य दोसा ।

कह उवकरणस्स णिक्खेवसंभवो ? उच्यते –

णिसिदंतो व ठवेज्जा, पडिलेहंतो व भत्तपाणं तु ।
संथार-लोय-कितिकम्म कतितवा वा अणाभोगा ॥१७८५॥

णिसियंतो रयहरणं मुंचति. भत्तपाणाति वा पडिलेहतो, संथारगं बंधंतो मुयंतो वा, लोयं वा करेंतो, कितिकम्मं विस्सामणं त वा करेंतो, माताए वा कतितवेण मुचति, अणाभोगेण वा । एतेहिं कारणेहिं रयोहरणादि मुचेज्ज ॥१७८५॥

निग्गंथी-गमण-पहे, जे भिक्खू निक्खवे कइतवेणं ।
अन्नतरं उवकरणं, गुरुगा लहुगो इतरि आणा ॥१७८६॥

कइतवेण मेहुणट्ठस्स चउगुरुग, इतर अकेतव अणाभोगो, अणाभोगेण मुचति मासलहुं, आणादिया य दोसा भवति ॥१७८६॥

इमा चरित्तविराहणा –

पडिपुच्छ-दाण-गहणे, संलावऽणुराग-हास-खेड्डे य ।
भिन्नकधादि-विराधण, दट्ठूण व भाव-संबंधो ॥१७८७॥

पढमा पुच्छा, बितिया "[1]पडिपुच्छा", तस्सिम वक्खाणं –

कस्सेयंति य पुच्छा, ममं ति कातूण किं चुतं ? बितिया ।
चित्तं ण मे सधीणं, पक्खित्ते दट्ठु एज्जंति ॥१७८८॥

रयोहरणादि काति संजती घेत्तूणं पुच्छति – कस्सेयं ति रयोहरणं ? ।

साहू भणाति – "ममेयं ति काऊण" ममीकृते साधुना इत्यर्थः ।

अहवा – साहूणं ति पढमपुच्छा, किं चुयं ? बितियपुच्छा, एस पडिपुच्छा दट्ठव्वा ।

ततो साहू भणाति – 'चित्तं ण मे सहीणं" ति ण मे वसं वट्टति चित्तं ।

कस्माद्धेतो ? पक्खीए तुमं आगच्छमाणी दिट्ठा ॥१७८८॥

---

१ गा० १७८७ ।

सा भणाति –

किं च मए अट्ठो मे ? आमं णणु दाणि ऽहं तुह सहीणा ।
संपत्ती होतु कता, चउत्थ पच्छा तु एक्कतरो ॥१७८९॥

साहू भणाति – "आमं" अनुमतार्थे, इदाणिं तुह सहीणा आयत्तेत्यर्थः । ततियपुच्छा गता । संपत्ती सागारियासेवणा । चउत्थं पुच्छं । संजतो करेति संजती वा ॥१७८९॥ "पडिपुच्छ" त्ति गय ।

इदाणिं "[1]दान-गहणे" त्ति –

भणितो य हंद गेण्हह, हत्थं दातूण साहरति भुज्जो ।
तुह चेव होतु घेत्तुं, व मुंचते जा पुणो देति ॥१७९०॥

हदेत्यामंत्रणे । संजतो हत्थं पसारेऊण भुज्जो पडिसाहरति, भणति य तुज्झेव भवतु ।

अहवा – सो संजतो तीए हत्थाओ घेतूण पुणो मुचति । कस्माद्धेतो ? "जा पुणो देति" – जेण द्वितीयवारं मम देति, देंतीए य पुणो हत्थफासो भविस्सति तस्माद्धेतो. ॥१७९०॥

इदाणिं "[2]सलावो" साहू भणाति –

धारेतव्वं जातं, जं ते पउमदल-कोमलतलेहिं ।
हत्थेहिं परिगहितं, इति हासऽणुराग-संबंधो ॥१७९१॥

इति हासमेतत्, इति हासातो अणुरागो भवति । ततो य परोप्पर भावसंबंधो ॥१७९१॥

इदाणिं "[3]अणुरागो" त्ति –

संवालादणुरागो, अणुरत्ता बेति मे मए दिण्णं ।
इतरो चिय पडिभणती (तुज्झ) व जीतेण जीवामो ॥१७९२॥

अणुरागो भवति । इदाणिं "हास-खेड्डु" य त्ति - संजती अणुरत्ता बेइ – "मे मए दिण्ण" मे इति भवत । इतरो – साहू भणति-जं पि मम जीवितं तं पि तुज्झायत्तं, तुज्झच्चएण जीविएण जीवामो ॥१७९२॥

एवं परोप्परस्सा, भावणुबंधेण होंति मे दोसा ।
पडिसेवण-गमणादी, गेण्हदिट्ठेसु संकादी ॥१७९३॥

पडिसेवणा चउत्थस्स, एगतरस्स दोण्ह वा गमणं उण्णिक्खमणं, आदिसद्दातो सलिंगट्ठितो वा अणायार सेवति । संजतो वा वत्तिणिं, वतिणी वा संजतं उदिण्णमोहा बला वा गेण्हेज्जा ।

अहवा – खरकम्मिएहिं गेण्हण, हास, खेड्डुं वा करेंताणि सागारिएण दिट्ठाणि । संकिते चउगुरुं, णिस्संकिते मूलं ।

अहवा – दिट्ठे घोडिय-भोतिकादि-पसंगो ॥१७९३॥

बंभव्वए विराधण, पुच्छादीएहि होति जम्हा उ ।
णिग्गंथी-गमण-पहे, तम्हा उ न निक्खिवे उवधिं ॥१७९४॥ कंठा

---

[1] गा० १७८७ । [2] गा० १७८७ । [3] गा० १७८७ ।

वितियपदमणाभोगे, पडिते पम्हुट्ठ संभमेगतरे ।
आसण्णे दूरे वा, णिवेद जतणाए अप्पिणणं ॥१७६५॥

पम्हट्ठं णाम विस्सरियं । एगतरसभमो सावय-अगणि-आउमाति, सो संजयाण उवहिं वसहीए आसण्णे वा पडितो दूरे वा, जति आसण्णे तो णिवेदेंति, अह दूरे तो घेत्तु जयणाए अप्पिणिंति ॥१७६५॥

आसण्णे साहंति, दूरे पडियं तु थेरिगा णेंति ।
सण्णिक्खिवंति पुरतो, गुरूण भूमिं पमज्जित्ता ॥१७६६॥

वसहीए जइ आसण्णे पडियं, तो ण गेण्हंति । णियत्तिउं थेरिया गुरूण साहृति । अह दूरे पडियं तो थेरिया गिण्हति, तरुणी वि घेत्तुं थेरियाण समप्पेंति, ता थेरिया संजयवसहिमागतु पमज्जित्ता भूमिं गुरूण पुरतो णिक्खिवति । एसा अप्पिणणे जयणा भणिया ॥१७६६॥

जे भिक्खू णवाइं अणुप्पणाइं अहिगरणाइं उप्पाएति,
उप्पाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

नव यत् पुरातन भवति, अणुप्पण्णं संपयकाले अविज्जमाणं, अधिकं करणं अधिकरणं, सयमयोगातिरिक्तमित्यर्थ, अधोकरणं अधिकरणं, अधोध: संयमकंडकेषु करोतीत्यर्थं । नरकतिर्यग्गतिषु वा आत्मानमधितिकरणं वा अधिकरणं अल्पसत्वमित्यर्थं । अधीकरणं वा, न धी अधी, अधीकरण अवृद्धिकरणमित्यर्थं । "उप्पाए" त्ति उत्पादनमुत्पत्ती, जो उप्पाएति तस्स मासलहु पच्छित्तं ।

इमा सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती –

णामं ठवणा दविए, भावम्मि चतुव्विधं तु अहिगरणं ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१७६७॥

णाम-ठवणाओ गयाओ । दव्वओ आगमओ य नो आगमओ य, आगमतो जाणओ अणुवउत्तो, णो आगमओ जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्तं इम चउव्विह –

णिव्वत्तण णिक्खिवणे, संजोगण णिसिरणे य बोधव्वे ।
अट्ठ चतुविधं दुविधं, तिविधं च कमेण णातव्वं ॥१७६८॥

णिव्वत्तणाधिकरण अट्ठविधं, णिक्खिवणं चतुव्विध, सजोयणाधिकरणं दुविध, णिसिरणं तिविह । एव पच्छद्ध कमेण पुव्वद्धे जोएयव्वं ॥१७६८॥

णिव्वत्तणाधिकरणं दुविधं – मूलकरणं उत्तरकरणं च, तत्थ मूल णिव्वत्तणाधिकरण अट्ठविहं भण्णति –

पढमे पंच सरीरा, संघाडण साडणे य उभए वा ।
पडिलेहणा पमज्जण, अकरण अविधीए णिक्खिवणा ॥१७६६॥

पढमे त्ति णिव्वत्तणाधिकरणे पंचसरीरा, ओरालियादि, सघातकरणं, साडकरण, उभयकरणं च, एत अट्ठविह मूलकरण । निक्खिवणाधिकरण चउव्विह इम – पडिलेहणाए पमजणाए य अकरणे दो, एतेसिं चेव अविधिकरणे, एते चउरो ॥१७६६॥

संजोयणाधिकरणं दुविधं इमं –

भत्तोवधिसंजोए, णिसिरण सहसा पमादऽणाभोगे ।
मूलादि जाव चरिमं, अहवा वी जं जधिं कमति ॥१८००॥

भत्तसंजोयणा, उवधिसंजोयणा य, एते दो णिसिरणाधिकरण । तिविध इमं – सहसा णिसिरणं, पमातेण णिसिरण, अणाभोगेण वा । एव कमेण भेया भणिता ॥१८००॥

णिव्वत्तणाधिकरणसरूवं भण्णति –

णिव्वत्तणा य दुविधा, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
मूले पंचसरीरा, दोसु तु संघातणा णत्थि ॥१८०१॥

णिव्वत्तणाधिकरणं दुविधं - मूलगुण-णिव्वत्तणाधिकरण, उत्तरगुण - णिव्वत्तणाधिकरणं च । मूले ओरालियादि पंच सरीरा दट्ठव्वा । दोसु य तेयकम्माएसु सव्वसंघातो णत्थि, अनाद्यत्वात् ॥१८०१॥

संघातणा य पडिसाडणा य उभयं व जाव आहारं ।
उभयस्स अणियतठिती, आदि अंतेगसमओ तु ॥१८०२॥

त्रिक त्रिष्वपि सम्भवति, उभय संघातपरिसाडा, तस्स ठिती अणियता द्विकादिसमयसम्भवात् । संघातो आतीए समए, सर्वपरिसाडो अते, एए दोण्णि एगसमतिता ॥१८०२॥

सर्वसघातप्रदर्शनार्थमाह –

हविपूयो कम्मगरे, दिट्ठंता होंति तिसु सरीरेसु ।
कण्णे य खंधवण्णे, उत्तरकरणं व तीसु तु ॥१८०३॥

हवि घितं, तत्थ जो पूतो पच्चति सो हविपूयो, सो य घयपुण्णो भण्णति संघायं घते पक्खित्ते, पढमसमए एगंतेण घयग्गहण करेति वितियादिसमएसु गहण मुंचती य । कम्मकारो लोहकारो, तेण जहा तवियमायस जले पक्खित्त पढमसमए एगतेण जलादाण करेति, वितियादिसमएसु गहणं मुंचती य । एवं तिसु ओरालियादिसरीरेसु पढमसमए गहणमेत्र करेति, वितियादिसमएसु सघातपरिसाडा, तेयगकम्माणं सव्वकालं संघाडपरिसाडो अनादित्वात् । पचण्ह वि अते सव्वसाडो ।

अहवा तिण्हं ओराल - विउव्वि - आहारगाण मूलगकरणा अट्ठ - सिरो उरं उदर पिट्ठी दो वाहाओ दोण्णि य ऊरु, सेस उत्तरकरणं ।

अहवा तिसु आइल्लेसु ओरालादिसु उत्तरकरणं कण्णेसु - वेहकरण, छेज्जेण खधकरण, त्रिफलादि घृतादिना वन्नकरणं ॥१८०३॥

अहवा इमं चउव्विह दव्वकरण –

संघाडणा य परिसाडणा य मीसे तहेव पडिसेहो ।
पड संख सगड थूणा उड्ढ-तिरिच्छातिकरणं तु ॥१८०४॥

संघायकरण, पडिसाडणाकरणं, संघायपडिसाडणाकरणं, "पडिसेहो" त्ति - णो सघातो णो पडिसाडो ।

जहासंखं उदाहरणाणि – पड-संख-सगड-थूणाए य उड्ड-तिरिच्छाति-करणं ।

अहवा – तिसु आइल्लेसु णिव्वत्तणाधिकरणं । तत्थ ओरालिय एगिंदियादि पचविधं, तं 'जोणिपाहुडातिणा' जहा सिद्धसेणायरिएण अस्साए कता। जहा वा एगेण आयरिएण सीसस्स उवदिट्ठो जोगो जहा महिसो भवति । तं च सुयं आयरियस्स भाइणितेण । सो य णिधम्मो उण्णिक्खतो महिसं उप्पादेउं सोयरियाण हट्ठे विक्किणति । आयरिएण सुयं । तत्थ गतो भणाति – किं ते एएण ? अहं ते रयणजोग पयच्छामि, दव्वे आहाराहिते य आहरिता, आयरिएण सजोतिता, एगंते थले णिक्खित्ता, भणितो एत्तिएण कालेण ओक्खणेज्जाहि, अहं गच्छामि, तेण उक्खता दिट्ठीविसो सप्पो जातो, सो तेण मारितो, अधिकरणच्छेओ, सो वि सप्पो अंतोमुहुत्तेण मओ । एव जो णिव्वत्तेइ सरीर अधिकरण । कहं ? जतो सुत्ते भणिय –

"[1]जीवे णं भते ! ओरालियसरीर णिव्वत्ते माणे किं अधिकरण अधिकरणी?

जीवो अधिकरणी, सरीर अधिकरण" । णिवत्तणाधिकरण गतं ।।१८०४।।

इदाणिं णिक्खिवणाधिकरणं । त दुविध - लोइय लोउत्तरिय च । तत्थ लोइयं अणेगविध –

गल-कूड-पासमादी, उ लोइया उत्तरा चउविकप्पा ।

पडिलेहणा पमज्जण अधिकरणं अविधि-णिक्खिवणा ।।१८०५।।

गलो दडगस्स अतो लोहकटगो कज्जति, तत्थ मसपेसी कीरति, सो दीहरज्जुणा बद्धो मच्छट्ठा जले खिप्पइ । कूडंमियादीणं अट्ठा णिक्खिप्पइ । पासं त्ति राईण अट्ठा निक्खिप्पइ । आतिसद्दावो वा [2]ओराण [3]उलाणसिगतससयाण जालच्छइयाए । एवमादि लोइयाणि ।

लोउत्तरिय तं चउव्विह - पच्छद्धं ।

ण पडिलेहेत्ति, न पमज्जति एगो विगप्पो ।

न पडिलेहेइ, पमज्जति विइओ विगप्पो ।

पडिलेहेइ, न पमज्जइ ततिओ विगप्पो ।

जं तं पडिलेहे ति पमज्जति, त दुप्पडिलेहिय दुप्पमज्जियं, दुप्पडिलेहियं सुपमज्जिय, सुप्पडिलेहिय दुप्पमज्जिय । एते तिण्णि वि भगा चउत्थो विकप्पो । एसा अविधि-णिक्खिवणा अधिकरणं ।

सुप्पडिलेहिय सुप्पमज्जियं एस सुद्धो अधिकरणं न भवति ।।१८०५।।

इदाणिं संजोयणा, सा दुविहा-लोइया लोउत्तरिया य । लोइया अणेगविहा –

विसगरमादी लोए, उत्तरसंयोग मत्तउवहिम्मि ।

अंतो बहि आहारे, विहि अविधि सिव्वणाउवधी ।।१८०६।।

जाणि दव्वाणि सजोइयाणि विस भवति ताणि संजोएति, विसेण वा अण्णदव्वाणि सजोएति, जेण

---

१ भगवत्या पाठोऽयमेवरूपः –

जीवे ण भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी, अधिकरण ?

गोयमा ! अधिकरणी वि अधिकरणं पि ।

से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ – "अधिकरणी वि, अधिकरण पि"

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव – अधिकरणं पि । भग० श० १६ उ० १

२ चारू । ३ बाजपक्षी ।

गरितो अच्छति ण मरति सहसा सो गरो, सो वि दव्वसंजोगा भवति । आदिसद्दातो अणेगरोगउप्पायगा जोगा संजोएति ।

लोउत्तरिया संजोयणा दुविहा – भत्ते उवकरणे य । आहारे दुविहा – अंतो बाहिं च । अतो त्ति वसहीए। सा तिविहा – भायणे हत्थे मुहे य । तत्थ भायणे खीरे खड, हत्थे गुलं मंडएण, मुहे मंडग पक्खिविता पच्छा गुलाति पक्खिवति । बाहिं भिक्ख चेव अडंतो जं जेण सह संजुज्जति त ओभासिउ संजोएति ।

उवधिं णिक्कारणे अविधीते सिव्वति, णिक्कारणे विधीए, कारणे अविधीए, एते तओ वि भंगा अधिकरणं, चउत्थो सुद्धो ॥१८०६॥

इदाणिं णिसिरणा दुविधा – लोइया लोउत्तरिया य । लोइया अणेगविधा –

कंडादि लोअ णिसिरण, उत्तरे सहसा पमायऽणाभोगे ।
मूलादी जा चरिमं, अधवा वी जं जहिं कमति ॥१८०७॥

कडं णिसिरति, आदिसद्दातो गोप्फणपाहाणं कणयं सत्ति वा ।

लोउत्तरिया णिसिरणा तिविधा – सहसा, पमाएण, अणाभोगेण य । पुव्वाइट्ठेण जोगेण किं चि सहसा णिसिरति, पंचविधपमायऽण्णतरेण पमत्तो णिसिरति, एगत [1]विस्सती अणाभोगो तेण णिसिरति ।

इदाणिं णिव्वत्तणातिसु पच्छित्तं –

तत्थ णिव्वत्तणा "मूलाति" पच्छद्धं । एगिंदियादि-णिव्वत्तयतस्स अभिक्खसेवं पडुच्च पढमवाराए मूलं, वितियवाराए अणवट्ठ, ततियवाराए पारंचिय ।

अधवा – जे जहिं कमति त्ति संघट्टणादिकं आयविराहणादिणिप्फण्णं वा ॥१८०७॥

एगिंदियमादीसु तु, मूलं अधवा वि होति सट्ठाणं ।
झुसिरेतरणिप्फण्णं, उत्तरकरणंमि पुव्वुत्तं ॥१८०८॥

एगिंदियं जाव पंचिदिय णिव्वेत्तेंतस्स मूल ।

अहवा – वि होति सट्ठाणं ति "[2]छक्काय चउसु" गाहा ।

परित्त णिव्वत्तेति चउलहुं । अणते चउगुरुं । बेइंदिएहिं छल्लहुं । तेइंदिएहिं छग्गुरु । चउरिंदिएहिं छेदो । पंचिदिएहिं मूलं । उत्तरकरणे झुसिराझुसिरणिप्फण्णं पुव्वुत्तं इहेव [3]पढमुद्देसए पढमसुत्ते ॥१८०८॥

णिक्खिव-संजोग-णिसिरणेसु इमं पच्छित्तं –

तिय मासिय तिग पणए, णिक्खिव संजोग गुरुगा-लहुगा वा ।
झुसिरेतर-संतर-णिरंतरे य वुत्तं णिसिरणम्मि ॥१८०९॥

सत्तभंगीए पढम-वितिय-ततिएसु भंगेसु मासलहुं, चउत्थ-पंचम-छट्ठसु पणयं, चरिमो सुद्धो, तवकाल-विसेसितो कायव्वो । आहारे उवकरणे वा रागे चउगुरुगं, दोसे चउलहुग ।

अहवा – सामण्णेण आहारे चउगुरुगा, उवकरणे लहुगो । णिसिरणे झुसिरे अझुसिरे य संतरणिरंतरेसु वुत्तं पच्छित्त पढमसुत्ते ॥१८०९॥ दव्वाहिकरण गयं ।

---

१ विस्सरई विस्मृतिः । २ गा० ११७ पृ० ४९ पीठिकायाम् । ३ गा० ५०३ पृ० ४ ।

इदाणिं भावाधिकरणं –

जोगे करणे संरंभमादि चतुरो तहा कसायाणं ।
एतेसिं संजोगे, सतं तु अट्ठुत्तरं होइ ॥१८१०॥

सरंभो, समारंभो, आरंभो ।

एतेसिं अघो मण-वय-काया तिण्णि ठावेयव्वा ।

तेसिं पि अहो करणकारावणाणुमती य तिण्णि ठावेयव्वा ।

एतेसिं पि अघो कोह-माण-माया-लोभा चउरो ठावेयव्वा ।

इमो पुणो चारणप्पगारो ।

सरंभ मणेण करेति कोहसपउत्ते । एवं माणतिया वि ।

एते करणे चउरो, कारावणे वि चउरो, अणुमतीते वि चउरो ।

एवं-वारस मणेण लद्धा । वाए वि बारस । काएण वि बारस । एते संरमेण छत्तीस लद्धा ।

एवं समारमेण वि छत्तीस। आरंमेण वि छत्तीसं । सव्वे वि मेलिया अट्ठुत्तर सत भवति ॥१८१०॥

संरंभ मणेणं तू, करेंति कोवेण संपउत्तो उ ।
इय माण-माय-लोभे, चउरो होती तु संजोगा ॥१८११॥

चतुरेते करणेणं, कारवणेणं च अणुमतीए य ।
तिण्णि चतुक्का बारस, एते लद्धा मणेणं तु ॥१८१२॥

संकप्पो संरंभो, परितावकारो भवे समारंभो ।
आरंभो उद्दवओ, सव्वणयाणं तु सुद्धाणं ॥१८१३॥

एतेसामण्णतरं, अधिकरणं जो णवं तु उप्पाए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१८१४॥

एतेसिं दव्वभावाधिकरणाणं अण्णतर अणुप्पण्णं उप्पाएति जत्थ मासलहुं तत्थ सुत्तणिवातो, सेसा अत्थओ विकोवणट्ठा पच्छित्ता दिण्णा ॥१८१४॥

इह पुण सुत्ते भावाधिकरणेण पढमभगेण अधिकारो ।

इमे य दोसा –

तावो भेदो अयसो, हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं ।
साहुपदोसो संसारवड्ढणो साहिकरणस्स ॥१८१५॥

अतिभणिय-अभणिते वा, तावो भेदो उ जीवचरणेसु ।
रायकुलम्मि य दोसा, खुमेज्ज वा णीयमित्तादी ॥१८१६॥

तप्पति अहं तेण अतीव एव भणितो, मए सो वा अतीव भणिओ पच्छा तप्पइ, अमुगो वा मए ण भणिओ त्ति पच्छा तप्पति । भेदो दुविधो – जीवे चरणे य । जीए कलहिउं पच्छा एगतरो दो वि वा अप्पाणं

मारेंति, उण्णिक्खमति वा चरणे, अण्णोण्णपक्खेण वा गच्छभेओ भवति। पदोसेण वा रायकुले कहेज्ज, तत्थ गेण्हणादिया दोसा, एगतरस्स दोण्ह वा णीया खुमेज्ज, ते पंतवणादि करेज्ज, ताण वा परोप्परं कली भवे, लोगे अयसो "अहो डोंबा विव सततं कलहसीला, रोसणा, पेसुण्णभरिता"। तव्वेलं ण पढंति णाणहाणी, साधुपदोसे दंसणहाणी, अत्राच्छल्यकरणा – "जं अज्जित चरित्त" कारक गाहा। एव चरणहाणी।

किं चान्यत् – साधुपदोसेण य संसारवड्डी भवति। एते साधिकरणस्स दोसा जम्हा तम्हा णो अधिकरणं उप्पाएति ॥१८१६॥

कारणे उप्पाएज्ज –

बितियपदमणप्पज्झे, उप्पादऽविकोवितेव अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, विगिंचणट्ठाए उप्पाए ॥१८१७॥

अणप्पज्झो, अकोवितो वा सेहो अणरिहो कारणे पव्वावितो कते कारणे सो अधिकरण काउ विगिंचियव्वो ॥१८१७॥

जे भिक्खू पोराणाइं अहिगरणाणि खामिय विओसमियाइं पुणो उदीरेइ,
उदीरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

पोराणा पूर्वमुत्पन्ना। अधिकरणं पूर्ववत्। रोसावगमो खमा। त च भण्णति तिविधं – खामियं ओसविय मिच्छादुक्कडप्पयाणं।

अहवा – खामियं वायाए, मणसा विओसवियं व्युत्सृष्टं, ताणि जो पुणो उदीरति उप्पादयति तस्स मासलहु।

खामित विउसविताइं, अधिकरणाइं तु जे पुणोप्पाए।
ते पावा णातव्वा, तेसिं तु परूवणा इणमो ॥१८१८॥

पावा ण साधुधर्मे व्यवस्थिता इत्यर्थः। कह उप्पाएति ? के ति साहुणो पुव्वकलहिता तम्मि य खामिय विओसविते। तत्थेगो भणति – अह णाम तुमे तदा एवं भणितो आसि ण जुत्तं तुज्झ।

इयरो पडिभणाति – अहं पि ते किं ण भणितो ?

इतरो भणाति – इयाणि ते किं मुयामि ? एवं उप्पाएति स उप्पायगो ॥१८१८॥

उप्पादगमुप्पण्णो, संबद्धे कक्खडे य बाहू य।
आविट्टणा य मुच्छण, समुघाय ऽतिवायणे चेव ॥१८१९॥

पुणो विकलुसिता उप्पण्णं, संबद्धं णाम वायाए परोप्पर सेविउमारद्धा, कक्खड णाम पासट्ठितेहिं विओसविज्जमाणा वि णोवसमति, 'बाहूअं' ति - रोसवसेण बलोवलिं जुज्झं लग्गा, आविट्टणा एगो णिहओ, जो सो णिहतो सो मुच्छितो, मारणंतियसमुग्घाएण समोहितो, अनिवायणा मारणं ॥१८१९॥

एतेसु णवसु ठाणेसु उप्पायगस्स इमं पच्छित्तं –

लहुओ लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहु गुरुगा य।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥१८२०॥

बितियादिसु चउलहुगादी पच्छित्ता, उप्पादगपदं ण भवति त्ति काउं ॥१८२०॥

तावो भेदो अयसो, हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं ।
साधुपदोसो संसारवड्ढणो होतुदीरंते ॥१८२१॥
बितियपदमणप्पज्झे, उदीरे अविकोविदे व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, विगिंचणट्ठा उदीरेज्जा ॥१८२२॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू मुहं विप्फालिय विप्फालिय हसति, हसंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२७॥

मुख वक्त्र वयण च एगट्ठ, विप्फालेति विड्डाडेति. अतीव फालेति विप्फालेति वियभमाणो व्व विविधै प्रकारैः फालेति विप्फालेति विडालिकाकारवत् । वीप्सा पुन. पुन ।

मोहनीयोदयो, हास्य तस्स चउव्विहा उप्पत्ती –

पासित्ता भासित्ता, सोतुं सरितूण वा वि जे भिक्खू ।
विप्फालेत्ताण मुहं, सवियार कहक्कहं हसती ॥१८२३॥

असवुडादि पासित्ता, वाचि विक्खलियं भासित्ता, णमोक्कारणिज्जुत्तीए काग - सरडादि - अक्खाणगे सुणेत्ता, पुव्वकीलिया ति सरिऊण, मोहमुदीरक अण्णस्स वा हासुप्पायग सविकार महतेण वा उक्कलियासद्देण कहक्कह भण्णति ॥१८२३॥

जो एवं हसति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, सवियार कहक्कहं ण हसे ॥१८२४॥

को दोसो ?

पुव्वामयप्पकोवा, अभिणवसूलं च मत्तगहणं वा ।
असंवुडणं वि भवे, तावसमरणेण दिट्ठंतो ॥१८२५॥

पुव्वामयो सूलाति रोगो सो उत्रसतो पकोव गच्छति । कण्णस्स अहो महता गलसरणी मत्ता भणंति ता घेप्पेज्ज । मुहस्स वा असवुडण भवेज्ज, जहा सेट्ठिस्स मुंह विप्फाडिय हसमाणस्स तारिसं चेव - थद्ध ताहे वेज्जेण अयपिंड तावेत्ता मुहस्स ढोइत सपुड जात । किं चान्यत् – पचसता तावसा णं मोयए भक्खति । तत्थ एगेण अदेसकाले दाढिया मोडिया, सव्वे पहसिता, गलग्गेहिं मोयगेहिं सव्वे मता ॥१८२५॥

किं चान्यत् –

आसंक-वेरजणगं, परपरिभवकारणं च हासं तु ।
संपातिमाण य वहो, हसओ मतएण दिट्ठंतो ॥१८२६॥

परस्स आसका अह अणेण हसितो त्ति, किं वा अहमणेण हसितो वेरसंभवो भवति, हसतेहिं परपरिभवो कतो भवति, संपातिमादि मुहे पविसंति ।

भयगदिट्ठंतो य भणियव्वो –

राया सह देवीए ओलोयणे चिट्ठति। देवी भणति रायं – [1]मुतं माणुसं हसति ! राया ससभते कहं कत्थ वा? साधु दरिसेति। राया भणति – कहं मतो त्ति? देवी भणति – इहभवे सव्वसुहवर्जितत्वात् मृतो मृतवत् ॥१८२७॥

बितियपदमणप्पज्झे, हसेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, सागारितमाइकज्जेसु ॥१८२७॥

सागारियमातिकज्जेसु सागारिय मेहुणं, तं कोति पडिबद्धवसहीए सेवति, ताहे हसिज्ज ति जेण 'णातोमि" त्ति लज्जियाण मोहो णासति ।

अहवा – मा अपरिणया इत्थियाए सद्दं सुणेंतु त्ति - हसिज्जति । आतिसद्दातो कारणे जागरातिसु ॥१८२७॥

जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू कुसीलस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू कुसीलस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू नितियस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू नितियस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू संसत्तस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू संसत्तस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

णाण-दसण-चरित्ताण पासे ठितो पासत्थो, ओसन्नदोसो उस्सन्नो, उयो वा सजमो तम्मि सुण्णो उस्सण्णो, कुच्छियसीलो कुसीलो, बहुदोसो संसत्तो, दव्वाइए अमुयत्तो णितिओ, एतेसिं सघाडयं देति पडिच्छति वा तस्स मासलहुं ।

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-नितियवासीणं ।
जे भिक्खू संघाडं, दिज्जा अहवा पडिच्छेज्जा ॥१८२८॥
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, णो दिज्जा णो पडिच्छेज्जा ॥१८२९॥

"तेणं" ति संघाडएण ॥१८२९॥

---

१ मृत ।

इमा चारित्तविराहणा –

अविसुद्धस्स तु गहणे, आवज्जण अगहिते य अहिगरणं।
अप्पच्चओ गिहीणं, किं णु हु धम्मो दुहाऽऽदिट्ठो ॥१८३०॥

साहू तेण संघाडएण सम हिंडतो जेण दोसेणासुद्ध गेण्हति तमावज्जति। अह साहू ण गेण्हति तो पासत्थस्स अचियत्तं, कलह वा करेति। साहुणा पडिसिद्धे पासत्थेण गहिते जति साहू तुसिणीओ अच्छति एत्थ अणुमतीदोसो भवति। अपच्चओ गिहीण भवति, इम च भणिज्जा–किं तित्थकरेण दुविधो धम्मो कहितो ? ॥१८३०॥

एवं भणिए –

जति अच्छती तुसिणिओ, भणति त एवं पि देसिओ धम्मो।
आसातणा सुमहती, सो च्चिय कलहो तु पडिघाते ॥१८३१॥

पासत्थाणुअत्तीए जइ साधू तुसिणिओ अच्छति, अणुमतीं वा करेति, तो सुमहती आसायणा दीहं च संसार णिव्वत्तेति।

अहवा – साधू भणति – "ण वट्टति, पासत्थवयण च पडिघाएति", ताहे पासत्थो चिंतेति म ओभासेति, सो चेव कलहो ॥१८३१॥

पासत्थाइया इमेण दोसे परिहरंति –

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-णितियवासीणं।
उग्गम उप्पादण एसणाए बातालमवराधा ॥१८३२॥

अहाच्छंदो अहा से अप्पणो छंदो अभिप्पाओ तहा पन्नवेति – उग्गमदोसा सोलस, उप्पादणा दोसा सोलस, दस एसणा दोसा ॥१८३२॥

संविग्गा पुण इमेण विधिणा परिहरति –

उग्गम उप्पायण एसणाए तिण्हं पि तिकरणविसोधी।
पासत्थे सच्छंदे कुसीलणितिए वि एमेव ॥१८३३॥

तिण्ह त्ति आहार उवहि सेज्जा, तिण्णि कारणा तिकारणा, तेहिं सुद्धं तिकरणसुद्ध ॥१८३३॥

एयस्स पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

मणउग्गमआहारादीया तिया तिण्णि तिकरणविसुद्धा।
एक्कासीती भंगा, सीलंगगमेण णेतव्वा ॥१८३४॥

आहारउग्गमेणं, अविसुद्धं ण गेण्हे ण वि य गेण्हावे।
ण वि गेण्हंतणुजाणे, एवं वायाए काएणं ॥१८३५॥

एमेव णव विकप्पा, उप्पातण एसणाए णव चेव।
एए तिण्णि उ नवया, सगवीसाहारे भंगा तु ॥१८३६॥

एमेवोवधिसेज्जा, एक्केक्क सत्तवीस भंगा तु ।
एते तिण्णि वि मिलिता, एक्कासीती भवे भंगा ॥१८३७॥

मणाति-तिय । उग्गमाति-तिय, आहाराति-तिय, एते तिण्णि तिया तिकरणविसुद्धा कायव्वा ।

इमेण एक्कासीति भंगा-कायव्वा ।

आहारोवहिसेज्जा एयस्स हेट्ठा उग्गमाति-तियं ।

एयस्स वि हेट्ठा मणाति-तियं ।

एयस्स वि हेट्ठा करणं-तियं ।

इमं च उच्चारणं

आहारं उग्गमेण असुद्धं मणेण ण गेण्हति, ण गेण्हावेति, गेण्हंत णाणुमोयति ।

एते मणेण तिण्णि, वायाते तिण्णि, काएण वि तिण्णि । एते णव उग्गमेण लद्धा ।

उप्पादणाए वि णव । एसणाए वि णव । एते सत्तावीस आहारे ।

उवकरणे वि सत्तावीसं । सेज्जाए वि सत्तावीस । सव्वे एक्कासीति ।

जहा एते वायालीसं अवराहे एक्कासीतीए परिहरति, एवं पासत्थे अहाछंदे कुसीले ससत्ते णितिए, अविसद्दाओ ओसण्णे, एतेसिं सघाडगं तिकरणविसोहीए ण देज्जा, ण पडिच्छेज्जा, एक्कासीतीए वा भगविकप्पेहिं परिहरेज्जा ॥१८३७॥

एताइं सोहिंतो, चरणं सोहेति संसओ नत्थि ।
एतेहिं असुद्धेहिं, चरित्तभेदं वियाण हि ॥१८३८॥

एते आहारातीए एक्कासीतीए भगेहिं सोधयतो चरित्तं सोहेति ॥१८३८॥

एव अत्थेण पडिसिद्धे पासत्थत्तणे, जा तेहिं सह संसग्गी सा पडिसिज्झति –

पडिसेधे पडिसेहो, असंविग्गे दाण माति-तिक्खुत्तो ।
अविसुद्धे चतुगुरुगा, दूरे साधारणं काउं ॥१८३९॥
पासत्थादि-कुसीले, पडिसिद्धे जा तु तेहिं संसग्गी ।
पडिसिज्झति एसो खलु, पडिसेहे होति पडिसेहो ॥१८४०॥

पासत्थेण ण भवियव्वं एस पडिसेहो । सेस कठं ।

"[1]असंविग्गे दाणं" ति अस्य व्याख्या –

दाणाई-संसग्गी, सइं कयपडिसिद्धे लहुय आउट्टे ।
सब्भावति आउट्टे, असुद्धगुरुगो उ तेण परं ॥१८४१॥

जति पासत्थातियाण सघाडगस्स वत्थातियाण वा दाणं करेति एस संसग्गी । सइ एक्कसिं ससग्गिं करेति, पडिसिद्धो पचोइओ आउट्टो, मासलहुं से पच्छित्तं, सब्भावति आउट्टेति, एव वितियवाराए त्रि

१ गा० १८३९ ।

मासलहुं, ततियवाराए वि आउट्टस्स मासलहुं, तेण परं चउत्थवाराए णियमा असुद्धे त्ति मायावी, आउट्टस्स मासगुरुं ॥१८४०॥

"[1]माति तिक्खुत्तो" त्ति अस्य व्याख्या –

तिक्खुत्तो तिण्णि मासा, आउट्टंते गुरू उ तेण परं ।
अविसुद्धं तं वीसुं, करेंति जो भुंजते गुरुगा ॥१८४१॥

तिण्णि वारा ति-खुत्तो, तिण्णि वारा आउट्टंतस्स तिण्णि मासलहुं, तिण्हं वाराणं परेणं तेण परं, चउत्थवाराए णियमा मायी आउट्टे मायाणिप्फण्णं मासगुरुं ।

"[2]अविसुद्धे चउगुरुगा" अस्य व्याख्या – "अविसुद्ध" गाहद्ध । पासत्थ-ससग्गीकारी जति आलोयणं ण [3]पडिच्छिओ अविसुद्धो, तं अणाउट्टंतं वीसुं करेंति वीसु भोगमित्यर्थः । जो त अण्णो साधू सभुञ्जति तस्स चउगुरुं ॥१८४२॥

चोदग आह – कम्हा पढम-वितिय-ततियवारासु मासलहु, चउत्थवाराए मासगुरुं ?

आयरियो आह –

सति दो तिसिय अमादी, ततिया सेवीतु णियम सो मायी ।
सुद्धस्स होति चरणं, मायासहिते चरणभेदा ॥१८४३॥

सइं पढमवारा, दो बितिय वारा, ति ततियवारा, सिता माती तिसिता सेविउ जाव जति अमाती तो मासलहुं, अह माती तो मासगुरुं । तेण पर णियमा माती तेण मासगुरुं । पच्छद्ध कठ ॥१८४३

"[4]दूरे साधारण काउ" ति अस्य व्याख्या –

समणुण्णेसु विदेसं, गतेसु अण्णाऽऽगता तहिं पच्छा ।
ते वि तहिं गंतुमणा, पुच्छंति तहिं मणुण्णे तु ॥१८४४॥

कयाइ संभोतिया साहू विदेसं गता, अण्णे य संभोतिया अण्णाओ विदेसाओ त चेव गच्छम।गता, जे ते विदेसं गता ते तेहिं आगतुएहिं ण दिट्ठा, ते वि आगतुगा त चेव देस गतुकामा पुच्छति, अत्थि केयी तहिं अस्माक संभोइया ? ॥१८४४॥

एव पुच्छते –

अत्थि त्ति होइ लहुओ, कयाइ ओसण्ण भुंजणे दोसा ।
णत्थि ति लहुओ भंडण, ण खेत्तकहणं ण पाहुण्णं ॥१८४५॥

आयरितो जइ भणति अत्थि तो मासलहुं, "[5]कताति ते ओसण्णी, भूता होज्ज, ताहे गुरुवयणओ संभुञ्जमाणा ओसण्णसंभुत्तदोसे पावेज्ज । अह वि गुरु भणति णत्थि तह वि मासलहुं, यतः गुरुवयणाओ तेहिं सद्धिं सभोग ण करेंति, ताण य अपत्तियं, असंखडदोसा, ण य मास-कप्पजोगे खेत्ते कहेंति, णेव पाहुण्णं करेंति ।

---

१ गा० १८३६ । २ गा० १८३९ । ३ पडिच्छिओ प्रतीष्ट । ४ गा० १८३९ । ५ कदाचित् ।

जम्हा एते दोसा तम्हा आयरिएणं इमं भणियव्वं –

आसि तदा समणुण्णा, भुंजध दव्वादिएहि पेहित्ता।
एवं भंडणदोसा, ण होंति अमणुण्णदोसा य ॥१८४६॥

दव्व-खेत्त-काल-भावेहिं पडिलेहेत्ता भुंजेज्जह, एवं साधारणे सव्वदोसा परिहरिया भवति ॥१८४६॥

कारणा देज्ज वा पडिच्छेज्ज वा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोधए वा, देज्जा अधवा पडिच्छेज्जा ॥१८४७॥

असिवे कारणे एगागी, एगाणियस्स बहु दोस-गुणं जाणित्ता पासत्थ-संघाडग पडिच्छति। पासत्थस्स वा संघाडगो भवति, अफव्वतो रायदुट्ठे रायवल्लभेण समाणं ण घेप्पति, भए बितिओ सहाओ भवति, गेलण्णे पडियरणं, अद्धाणे सहाओ, रोधणिग्गमणट्ठा, एतेहिं कारणेहिं सव्वत्थ पणगादि-जयणाए जाहे मासलहु पत्तो ताहे देति वा पडिच्छति वा ॥१८४७॥

जे भिक्खू उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू ससरक्खेण वा [1]मट्टिया-संसट्ठेण वा ऊसा-संसट्ठेण वा लोणिय-संसट्ठेण वा हरियाल-संसट्ठेण वा मणोसिला-संसट्ठेण वा वण्णिय-संसट्ठेण वा गेरुय-संसट्ठेण वा सेडिय-संसट्ठेण वा सोरट्ठिय-संसट्ठेण वा हिंगुल-संसट्ठेण वा अंजण-संसट्ठेण वा लोद्ध-संसट्ठेण वा कुक्कुस-संसट्ठेण वा पिट्ठ-संसट्ठेण वा कंतव-संसट्ठेण वा कंदमूल-संसट्ठेण वा सिंगबेर संसट्ठेण वा पुप्फ-संसट्ठेण वा उक्कुट्ठ-संसट्ठेण वा असंसट्ठेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

गिहिणा सचित्तोदगेण अप्पणट्ठा धोयं हत्थादि, अपरिणयं उदउल्ल भण्णति। पुढविमओ मत्तओ। कसमयं भायणं। अजणमिति सोवीरय रसंजणं वा। ते पुढविपरिणामा वण्णिया, जेण सुवण्णं वणिज्जति। सोरट्ठिया तुवरि मट्टिया भण्णति। तंदुलपिट्ठ आम असत्थोवहतं। तदुलाण कुक्कुसा। सचित्तवणस्सती–चुण्णो [2]ओक्कुट्ठो भण्णति। असंसट्ठं अणुवलित्तं।

उदउल्ल मट्टिया वा, ऊसगते चेव होति बोधव्वे।
हरिताले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥१८४८॥

---

१ अत्रोक्तानि कतिपयपदानि भाष्यचूर्णोर्न व्याख्यातानि। २ कुट्टितवनस्पतिचूर्णः।

गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुसकते य ।
उक्कट्ठमसंसट्ठे, णेतव्वे आणुपुव्वीए ॥१८४६॥

एत्तो एगतरेणं, हत्थेणं दव्विभायणेणं वा ।
जे भिक्खू असणादी पडिच्छते आणमादीणि ॥१८५०॥

उदउल्लादीएसु, हत्थे मत्ते य होति चतुभंगो ।
पुढविआउवणस्सति, मीसे संयोगपच्छित्तं ॥१८५१॥

हत्थे उदउल्ले, मत्ते उदउल्ले, ।१। हत्थे उदउल्ले नो मत्ते ।२।
नो हत्थे, मत्ते ।३। नो हत्थे नो मत्ते ।४।
एव पुढवादिसु चउभगो ।
एते चउरो भंगा पुढवी-आउ-वणस्सतीसु सभवति, नो सेसकाएसु ।
मीसेसु वि चउभगा कायव्वा । "संजोगपच्छित्त" ति पढमभगे दो मासलहु, सेसेसु एक्केक्क । चरिमो सुद्धो ।
अहवा – "मीसे सजोगपच्छित्त' ति सचित्तआउणा उदउल्लो हत्थो, मीसपुढवीकायगतो मत्तो । एत्थ ज पच्छित्त त सजोगपच्छित्त भवति । एव सर्वत्र योज्यम् ॥१८५१॥

असंसट्ठे इमं कारण –

मा किर पच्छाकम्मं, होज्ज असंसट्ठगं तओ वज्जं ।
कर-मत्तेहिं तु तम्हा, संसट्ठेहिं भवे गहणं ॥१८५२॥

कारणे गहणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोधए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥१८५३॥

"जयणाए गहण" ति जया पणगपरिहाणीए मासलहु पत्तो ततो गेण्हति । १८५३॥

जे भिक्खू गामारक्खियं अत्तीकरेइ; अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥
जे भिक्खू गामारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥
जे भिक्खू गामारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अत्तीकरेइ, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥
जे भिक्खू रण्णारक्खियं अत्तीकरेइ, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू रण्णारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू रण्णारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

एवं पण्णरस सुत्ता उच्चारेयव्वा, अर्थः पूर्ववत् ।

अत्तीकरणादीसुं, रायादीणं तु जो गमो भणिओ ।
सो चेव णिरवसेसो, गामादारक्खिमादीसुं ॥१८५४॥

जो गमो भणितो इहेव उद्दंसगे आदिसुत्तेसु ॥१८५३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५८।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५९।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६०।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६१।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संबाहेंतं वा पलिमद्दंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६२।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६३।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदेज्ज वा
विच्छिदेज्ज वा, अच्छिदेंतं वा विच्छिदेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।६७।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता
विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६८।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता
विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता -
विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा
आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता-
विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोल्लेत्ता पधोएत्ता
आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा,
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता
नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलित्ता पधोइत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता
अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवणजाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा,
धूवंतं वा पधूवंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा अंगुली निवेसिय
निवेसिय नीहरइ, नीहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाओ नह-सीहाओ दीहाइं रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू० ॥७५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा,
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥८२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उवट्टंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा,
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोल्लेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥८८॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं उत्तरोट्ठाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं अच्छिपत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि आमज्जेज वा पमज्जेज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९२॥

जे भिक्खू अण्णमण्स्स अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं भुयग-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९८॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा दंत-मलं वा
नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा
नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१००।।

जे भिक्खू गामाणुगामियं दूइज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेइ
करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०१।।

इत्यादि [1]एक्कतालीसं सुत्ता उच्चारेयव्वा जाव अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेति इत्यादि अर्थः पूर्ववत् ।

पादादी तु पमज्जण, सीसदुवारादि जो गमो ततिए ।
अण्णोऽण्णस्स तु करणे, सो चेव गमो चउत्थम्मि ।।१८५५।।

तृतीयोद्देशकगमेन नेयं ।।१८५५।।

जे भिक्खू साणुप्पए उच्चारपासवणभूमिं ण पडिलेहेति,
ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०२।।

साणुप्पओ णाम चउभागावसेसचरिमाए उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहियव्वाओ त्ति, ततो कालस्स पडिक्कमति, ततो पडिलेहेति, एस साणुप्पओ जति ण पडिलेहेति तो मासलहु, आणादिया दोसा ।

पासवणुच्चाराणं, जो भूमी अणुपदे ण पडिलेहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।१८५६।।

अपडिलेहिते इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, अहि विच्छुअ सण्ण-मुत्तमादीसु ।
वोसिरण-णिरोधेसु, दोसा खलु संजमायाए ।।१८५७।।

अपडिलेहिते जति वोसिरति ततो दव्वओ छक्कायविराहणा सम्भवति । भावतो पुण विराधिता एस संजमविराधणा । बिलाति सभवे अपडिलेहिते अहिविच्छुगादिणा खज्जति आयविराहणा । मुत्तेण वा पुरीसेण वा आदिसद्दातो वतपित्तादिणा पायं लेवाडेज्ज, ततो उवकरणविणासो वा, सेहविप्परिणामो वा । अपडिलेहिय वा थंडिल ति णिरोह करोति वोसिरति, एव च "मुत्तणिरोहे चक्खु, वच्चणिरोहे जीवियं" एत्थ वि आयविराहणा ।।१८५७।।

जम्हा एते दोसा तम्हा –

चउभागसेसाए, चरिमाए पोरिसीए तम्हा तु ।
पयतो पडिलेहिज्जा, पासवणुच्चारमादीणं ।।१८५८।।

चरिमा पच्छिमा, पयतो प्रयत्नवान् ।।१८५८।।

---

१ किन्तु सूत्र-गणनया ५३ सङ्ख्याकानि सूत्राणि भवन्ति ?

भवे कारणं ण पडिलेहेज्जा वि –

गेलण्ण रायदुट्ठे, श्रद्धाणे संभमे भएगतरे ।
गामाणुगामवियले, अणुप्पत्ते वा ण पडिलेहे ॥१८५९॥

गिलाणो ण पडिलेहेइ, श्रगिलाणो वि गिलाणकज्जे श्राउलो ण पडिलेहेति, रायदुट्ठेण वा ण णिग्गच्छति, श्रद्धाणट्ठो वा सत्थट्ठाणं वियाले पत्तो, अगणिमाति-सभमे ण वा पडिलेहेति, मासकप्पविहारगामाश्रो गच्छतो श्रण्णो श्रणुकूलो गामो तं वियाले पत्तो । एतेहिं कारणेहिं श्रपडिलेहेंतो सुद्धो ॥१८५९॥

जे भिक्खू तश्रो उच्चार-पासवण-भूमीश्रो ण पडिलेहेइ,
ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०३॥

ततो-त्रय सूचनात् सूत्रमिति द्वादशविकल्पप्रदर्शनार्थं त्रयो ग्रहणं श्रपडिलेहंतस्स मासलहुं, श्राणातिया य दोसा ।

पासवणुच्चारादीण भूमीश्रो जो तश्रो (उ) पडिलेहे ।
श्रंतो वा वाहिं वा, अहियासिं वा श्रणहियासिं ॥१८६०॥

श्रंतो णिवेसणस्स काइभूमीश्रो श्रणहियासियाश्रो तिन्नि – श्रासन्न मज्झ दूरे । श्रहियासियाश्रो वि तिन्नि-श्रासन्न मज्झ दूरे । एया काइयभूमीश्रो । वहिं णिवेसणस्स एवं चेव छ काइभूमीश्रो एवं पासवणे बारस, सण्णाभूमीश्रो वि बारस, एव च ताश्रो सव्वाश्रो चउव्वीसं ।

किं णिमित्तं तिण्णि तिण्णि पडिलेहिज्जंति ? कयाति एक्कस्स वाघातो भवति तो बितियादिसु परिट्ठविज्जति । पासवणे तयो श्रपेहणे चेल्लगउट्टदिट्ठंतो भाणियव्वो । श्रणधियासियकारण कोवि श्रतीव उव्वाहितो जाव दूर वच्चति ताव श्रायविराहणा भवे तेण श्रासण्णे पेहा ॥१८६०॥

जो एया ण पडिलेहेति तस्स श्राणादिया दोसा ।

सो श्राणा श्रणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविहं ।
पावति जम्हा तेणं, चउवीसं भूमि-पडिलेहे ॥१८६१॥

वितिय पदगाहा –

छक्कायाण विराहण, श्रहि विच्छुग सण्ण-मुत्तमादीसु ।
वोसिरण निरोहेसुं दोसा खलु संजमाताए ॥१८६२॥

गेलण्ण रायदुट्ठे, श्रद्धाणे संभमे भएगतरे ।
गामाणुगामवियले, अणुप्पते वा ण पडिलेहे ॥१८६३॥

जे भिक्खू खुड्डागंसि थंडिलंसि उच्चार-पासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

रयणिपमाणातो जं श्रारतो तं खुड्डं, तत्थ जो वोसिरति तस्स मासलहुं श्राणादिया य दोसा ।

वित्थारायामेणं, थंडिल्लं जं भवे रतणि-मित्तं ।
चतुरंगुलोवगाढं, जहण्णयं तं तु वित्थिण्णं ॥१८६४॥

वित्थारो पोहच्चं, आयामो दिग्घत्तणं, रयणी हत्थो तम्माणे ठितं रयणीमेत्तं । जस्स थंडिल्लस्स चत्तारि अंगुला अहे अचित्ता तं चउरंगुलोवगाढं । एयप्पमाणं जहण्णं वित्थिण्णं ॥१८६४॥

एत्तो हीणतरागं, खुड्डागं तं तु होति णातव्वं ।
अतिरेगतरं एत्तो, वित्थिण्णं तं तु णायव्वं ॥१८६५॥

सव्वुक्कोसं वित्थिण्णं वारसजोयणं, तं च जत्थ चक्कवट्टिखंधावारो ठिओ ।

पासवणुच्चारं वा, खुड्डाए थंडिलम्मि जो भिक्खू ।
जति वोसिरती पावइ, आणा अणवत्थमादीणि ॥१८६६॥

छक्कायाण विराधण, उभएणं [1]पावणा तसाणं च ।
जीवित-चक्खु-विणासो, उभय-णिरोहेण खुड्डाए ॥१८६७॥

आसण्णे छक्काया ते उभएणं काइयसण्णाए प्लावेंति, तसाणं च प्लवणा, खुड्डय काउं ण वोसिरति तेण जीविय-चक्खु-विणासो भवति ॥१८६७॥

वितियपद –

थंडिल्ल असति अद्धाण रोधए संभमे भयासण्णे ।
दुव्वलगहणि गिलाणे, वोसिरणं होति जतणाए ॥१८६८॥

असति प्पमाणजुत्तस्स थंडिलस्स, चोरसावयभया पमाणजुत्त ण गच्छति, "आसण्णे" त्ति - अणहियासओ प्पमाणजुत्तं गतुं ण सक्कति, दुव्वलगहणि वा ण तरति गंतुं । इमा जयणा – एत्थ सण्णं वोसिरति कातिय अण्णत्थ, अह काइयं पि आगच्छति ताहे कातियं मत्तए पडिच्छति ॥१८६८॥

जे भिक्खू उच्चारपासवणं अविधीए परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

थंडिलसामायारी ण करेति एसा अविधी, तीए वोसिरति तस्स मासलहु ।

आणादिया य दोसा –

पासवणुच्चारं वा, जो भिक्खू वोसिरेज्ज अविधीए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१८६९॥

इमा विही –

[1]पडिलेहणा दिसाणं, पायाण [2]पमज्जणा य कायदुवे ।
[3]भयणा [4]छाया दिसे [5]ऽभिग्गहे य जतणा इमा तत्थ ॥१८७०॥

---

१ प्लावना ।

अणाभोगेण वा अधिट्ठेति, दुट्ठादि वा सो अधिट्ठेति, पुण ण किं चि भणाति, तेण कज्जं तक्कज्ज, संथारगसामिम्मि पविसते तक्कज्जे य उप्पण्णे अधिट्ठिते, आसण्णं तुरियं तुरिए अधिट्ठेत्ता पच्छा अणुण्णवेंति। अद्धाण पवण्णा वा ॥१९६२॥

इमं वसहीए बितियपदं –

> अद्धाणे गेलण्णे, ओमऽसिवे गामाणुगामि वि-वेले ।
> तेणा सावय मसगा, सीतं वा तं दुरहियासं ॥१९६३॥

अद्धाणादिएहिं कारणेहिं अणणुण्णवेंता अहिट्ठेंति, बहिं रुक्खमूलातिसु ण वसंति ॥१९६३॥

तेणातिएहिं कारणेहिं जं पुण संथारयं वसही वा अणणुण्णातं अधिट्ठेति त इमेसिं –

> सण्णी सण्णाता वा, अहभद्दा ऽणुग्गहो त्ति णे मण्णे ।
> सुण्णे य जहा गेहे, अणणुण्णवितुं तदा ऽधिट्ठे ॥१९६४॥

सण्णी सावओ, सयणा वा, अहाभद्दओ वा अणुग्गहं भणति जो तस्स सथारगो वा वसही वा अधिट्ठिज्जति ॥१९६४॥

जे भिक्खू सण-कप्पासओ वा उण्ण-कप्पासओ वा पोंड-कप्पासओ वा अमिल-कप्पासओ वा दीहसुत्ताइं करेति, करेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२४॥

दीर्घ-सूत्रं करोति, दीहसुत्तं णाम कत्तति, तस्स मासलहुं ।

> पोंडमयं वागमयं, वालमयं वा वि दीह सुत्तं तु ।
> जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावति आणमादीणि ॥१९६५॥
>
> सुत्तत्थे पलिमंथो, उड्डाहो झुसिरदोस सम्मद्दो ।
> हत्थोवघाय संचय, पसंग आदाण गमणं च ॥१९६६॥

तं करेंतस्स सुत्तत्थपरिहाणी, गारत्थिएहिं दिट्ठे गिहिकम्मं ति उड्डाहो, झुसिरं च तं, तम्मि झुसिरे दोसा भवति, मसगादि-संपातिमा सवज्झंति, पिंजिज्जते वाउकायवधो, सम्मद्दोसो य ।

अवि य भणियं –

"[1]जीवेणं भंते ! सता समितं एयति वेयति चलति घट्टति फदति ताव णं बंधति" – संजमविराहणा, हत्थोवघातो आयविराहणा, संचए पसंगो ।

अहवा – अतिपसगो तणवुणणादियं पि करेज्ज, सेहस्स य उण्णिक्खिउकामस्स आयाणं भवति, आदाणे य गमणं भवति ॥१९६६॥

भवे कारणं करेज्जा वि –

> अद्धाण णिग्गतादी, झामिय वूढे तहेव परिजुण्णे ।
> दुब्बलवत्थे असती, दीहे वि हु सुत्तए कुज्जा ॥१९६७॥

---

१ भग० श० ३ उ० ३। किन्तु तत्र "ताव णं बंधति" इत्यशः नोपलभ्यते ।

"अद्धाणे" त्ति दारं।

चोदगाह – अद्धाणं किं दार-गाहा गम्मति ?

आयरियाह - सुणेहि –

उद्दरे सुभिक्खे, अद्धाण पवज्जणा तु दप्पेणं।
लहुया पुण सुद्धपदे, जं वा आवज्जती तत्थ ॥१६६८॥

दुविधा दरा वण्णदरा य पोट्टदरा य, ते उद्धं पुरेंति जत्थ त उद्दरं। जत्थ पुण सुलभ भिक्खं तं सुभिक्खं।

उद्दरगहणातो णणु सुभिक्ख गहिय ?

आयरिय आह – णो।

कुतः ? चउभंगसंभवात्।

उद्दरं, सुभिक्खं। णो उद्दरं, सुभिक्खं।

उद्दर, णो सुभिक्खं। णो उद्दर, णो सुभिक्खं।

पढम-तइयभगेसु जो अद्धाण दप्पेण पडिवज्जति तस्स चउलहुयं। सुद्धपदे अह आय-संजमविराहण किं चि आवज्जति तो तण्णिप्फण्णं भवंति ॥१६६८॥

कारणेण गच्छेज्जा –

णाणट्ठ दंसणट्ठा, चरित्तट्ठा एवमादि गंतव्वं।
उवगरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण जयणाए ॥१६६६॥

णाणादि-कारणेहिं जता गम्मति तता अद्धाणोवकरणोग्गाहितेण पडिलेहितेण सत्थेण सुद्धेण जयणाए गंतव्व। एसा गाहा उवरिं सवित्थरा वण्णिज्जेहिति ॥१६६६॥

सत्थे वि वच्चमाणे, अस्संजत-संजते तदुभए य।
मग्गंते जयणदाणं, छिण्णं पि हु कप्पती घेत्तुं ॥१६७०॥

णाणाति-कारणेहिं गम्ममाणे अतरा तेणा भवति, ते य चउव्विहा –

अस्संजय-पता पढमो भगो, सजय-पंता बितियभगो।

तदुभयपता-ततिय भगो, तदुभयभद्दा चउत्थो भगो ॥१६७०॥

एतेसिं भंगाण फुडीकरणत्थं इमा गाहा –

संजत-भद्दा गिहि-भद्दगा य पंतोभए उभय-भद्दा।
तेणा होंति चउद्धा, विगिंचणा दोसु तु यतीणं ॥१६७१॥

सजयभद्दा णो गिहिभद्दा, णो सजयभद्दा गिहिभद्दा।

उभयपंता, उभयभद्दा। बितिय-ततिएसु जतीण विकिंचणा भवति ॥१६७१॥

"[1]मग्गति" अस्य व्याख्या –

जइ देंत ऽजाइया जा, इयत्ति न वि देंति लहुग-गुरुगा य ।
सागारदाण गमणं, गहणं तस्सेव ण ऽण्णस्स ॥१६७२॥

साहू अजातिता गिहीहिं जति ताण चीरे देंति तो चउलहु । अह जातिता ण देंति तो चउगुरुगं । अदिण्णे उड्डाहं, पदोसं वा करेज्ज । "सागारं" पडिहारियं देंति, जस्स तं चीरं दिण्णं सो जति अण्णेण पहेण गच्छति साधूण वि ततो गमणं चीरट्ठा, जाहे अद्धाणातो विणिग्गतो तस्समीवातो साधू तमेव चीरं गेण्हति णो अण्णं ॥१६७२॥

"[2]जयणादाण" इमं ।

दंड-पडिहार-वज्जं, चोल-पडल-पत्तबंध-वज्जं च ।
परिजुण्णाणं दाणं, उड्डाह पदोस रक्खट्ठा ॥१६७३॥

महंता जुण्ण कवली सरडिता डडपरिहारो भण्णति । डडपरिहारो, चोलपट्टो, पडला, पत्तगबंधो एते ण दिज्जति । अवसेसा पडिजुण्णा दिज्जंति – उड्डाह-पदोस-रक्खट्ठा ॥१६७३॥

"[3]छिण्णं पि हु कप्पते घेत्तुं" तमेव, अविसद्दातो –

धोतस्स व रत्तस्स व, अण्णस्स व गेण्हणम्मि चउलहुगा ।
तं चेव घेत्तु धोत्तं, परिभुंजे जुण्णमुज्झे वा ॥१६७४॥

जति तेण गिहत्थेण धोअ रत्त वा अण्णहा वा असाहुपाओग्गं कतं ति ण गेण्हाति तो चउलहुगा, अतो तमेव घेत्तु धोतं साधुपाओग्ग काउं परिभुजति, अतिजुण्णं वा उज्झति ॥१६७४॥ पढमो भंगो गतो ।

इदाणिं बितियभंगो । तत्थ पुणो चउभंगो संभवति –

सजतीतो विवित्ता, णो सजता । णो संजतीओ विवित्ता, संजता ।

संजतीतो संजता विवित्ता । णो संजतीओ णो संजता विवित्ता ।

सट्ठाणे अणुकंपा, संजति पडिसारिते णिसड्ढे य ।
असती तदुभए वा, जतणा पडिसत्थमादीसु ॥१६७५॥

जत्थ संजता गिही य उद्दूढा ण सजतीओ तत्थ संजतीण सट्ठाणं साहू ते अणुकंपियव्वा तेषा दातव्यमित्यर्थः । साहूहिं संजतिसंतियं पाडिहारियं घेत्तव्वं ।

जत्थ संजतीओ गिहत्था य उद्दूढा ण संजता तत्थ साधूणं संजतीतो सट्ठाणं तासां दातव्यम् । तासिं पुण देंतेहिं णिसट्ठं णिद्देज्जं दातव्य ।

तदुभय साधु-साधुणीओ य । तेसिं असतीते जयणाए पडिसत्थमादिएसु मग्गंति ॥१६७५॥

ण विविचा जत्थ मुणी, समणी य गिही य तत्थ उद्दूढा ।
सट्ठाणऽणुकंपतहिं, समणुण्णितरेसु वि तहेव ॥१६७६॥

---

१ गा० १६७० । २ गा० १६७१ । ३ गा० १६७१ ।

समणुण्ण संभोतिता, इतरे पासत्थादि, पच्छा गिही, सव्वाभावे वि सव्वत्थ । पुव्वं संजतीओ अणुकंपणिज्जा, सेसेसु सव्वत्थ आसण्णतरं ठाणं अणुकंपणिज्जं ॥१९७६॥

लिंगट्ठ भिक्ख सीते, गिण्हंती पाडिहारियमिमेसु ।
अमणुण्णेतरगिहिसुं, जं लद्धं तंणिभं देंति ॥१९७७॥

सव्वायरेण लिंगट्ठा रयहरणं घेत्तव्वं । पत्तगबंधो भिक्खट्ठा । सीयट्ठा पाउरणं । सव्वहा अलभंते पाडिहारियं इमेसु गेण्हति – अमणुण्णा असंभोतिता, इतरे पासत्थादि, पच्छा गिहीसु । जं चोलपट्टादि लद्धं तण्णिभं पडिसमप्पेंति । इह द्वितीयभंगे व्याख्यायमाने प्रथम-तृतीय-चतुर्थ-भंगा अपि लेशेन स्पृष्टा । गतो वितियभंगो ॥१९७७॥

इदाणि ततिओ –

उड्ढे वि तदुभए, सपक्ख परपक्ख तदुभयं होति ।
अहवा वि समण समणी, समणुण्णितरेसु एमेव ॥१९७८॥

उद्दूढं मुषितं, तदुभय – सपक्खो संजता, परपक्खो गिहत्था ।

अहवा – तदुभयं – समणा, समणीओ य ।

अहवा – समणुण्णा संभोइया, इतरे असंभोइता ।

अहवा – संविग्गा, इयरे असंविग्गा ॥१९७८॥

समणुण्णेतर गिहि-संजतीण असति पडिसत्थ-पल्लीसु ।
तिण्हट्ठाए गहणं, पडिहारिय एतरे चेव ॥१९७९॥

समणुण्णा संभोइया, इतरे असंभोइया पासत्थाइणो वा गिहीसु वा संजतीसु य "असति" त्ति अभावे सत्थाइयाण पडिसत्थे पल्लीसु वा जतंति पणगहाणीए । संजतीण णत्थि जयणा, तासिं जहेव लब्भति तहेव घेत्तु गत्तच्छायणं कज्जति । "तिण्ह" ति लिंग-भिक्ख-सीयट्ठा गहणं करेंति । इतरेसु पडिहारियस्स, "एतरे" त्ति पासत्था । च सद्दातो असंभोतियगिहि-संजतीसु य, "एव" अवधारणे,

अहवा – एव घेत्तु अण्णम्मि लद्धे पडिहारिय तण्णिभ अप्पेंति ॥१९७९॥

एवं तु दिया गहणं, अहवा रत्तिम्मि लेज्ज पडिसत्थे ।
गीतेसु रत्ति-गहणं, मीसेसु इमा तहिं जयणा ॥१९८०॥

पणगहाणीए एगम्मि पडिसत्थे इमा जयणा – जति सव्वे गीतत्था तो रातो चेव गेण्हति ॥१९८०॥

अहवा – अगीतत्थमीसा तो इमा जयणा –

वत्थेण व पाएण व, णिमंतएऽणुग्गते च अत्थमिते ।
आदिच्चो उदिए त्ति य, गहणं गीयत्थ-संविग्गे ॥१९८१॥

पडिसत्थो कोइ अणुग्गते अत्थमिते वत्थेण णिमंतेति, तत्थ जति एक्को वा रातो चेव गंतुकामो ताहे गीयत्था भणंति – तुम्हे वच्चह अम्हे उइते आइच्चे घेत्तुमागच्छिस्सामो, ते रातो चेव घेत्तु सत्थस्स मग्गतो णातिदूरे आगच्छंति, ठिते य सत्थे आगता आलोएंति । उदिते आदिच्चे गहण कायति । एवं गीयत्थसंविग्गा गेण्हति ॥१९८१॥

पल्लि-पडिसत्थाण वा अभावे –

खंडे पत्ते तह दब्भ-चीवरे तह य हत्थ-पिहणं तु ।
अद्धाण-विवित्ताणं, आगाढं सेस ऽणागाढं ॥१६८२॥

चर्मखण्डं, शाकादिपत्रं, दब्भं, चीरं, घण गुप्फति, जहा मग्गपालीए । सव्वाभावे गुज्झदेसो हत्थेण पिहिज्जति, एस संजतीए विधी, संजतिमीसेसु वा । एगागियाण सजयाणं इच्छाए तम्मि विहाणे अद्धाणे विवित्ताण आगाढ कारणं, सेसं अद्धाण तम्मि उवकरणाभावे, अणागाढं ण भण्णति, सेसं वा झामिताइ ते अणागाढा ॥१६८२॥

असति विहि-णिग्गता, खुड्डगादि पेसंति चउसु वग्गेसु ।
अप्पाहेंति वऽगारं, साधुं च वियारमादिगतं ॥१६८३॥

असति त्ति पडिसत्थपल्लिमाइसु, अभावे उवकरणस्स, अद्धाणातो णिग्गता खुड्डगं पेसंति । चउसु वग्गेसु-संजति संजय सावग साविगाण य, एतेसिं चेव चउण्ह वग्गाण अप्पाहेंति । अहाभद्दगाण वा खुड्डगाभावे वियारमातिगयं साधु भणंति – मुसियामो चीरे णीणेह । एत्थ सजया सड्ढगा य संजयाण हत्थाहत्थिं, सजती सड्ढिका य सजतीण देंति हत्थाहत्थिं ॥१६८३॥

जत्थ संजतीतो संजताण देंति, संजता वा सजतीणं तत्थिमा विही –

खुड्डी थेराणप्पे, आलोगितरी ठवेत्तु पविसंति ।
ते वि य घेत्तुसतिगता, समणुण्णजढे जयंतेवं ॥१६८४॥

खुड्डीणं असति इतरा तरुणी मज्झिमी साहु आलोइए उवकरणं ठवित्तु पविसति । ते साधू तं उवकरणं परिहेत्ता गामं पविसति । समणुण्णा संभोइया तेसु विरहिए एवं जयति ॥१६८४॥

यथा वक्ष्यति –

अद्धाण-णिग्गतादी, संविग्गा दुविध सण्णि असण्णी ।
संजति एसणमादी, असंविग्गा दोण्णि वी वग्गा ॥१६८५॥

जे अद्धाणणिग्गता मुसिता आदिसद्दातो अणिग्गता वा जे विसूरंति ते वक्खमाणविहाणेण जयति ।
सविग्गा दुविहा – संभोतिता अण्णसंभोइया य ।
सण्णी दुविधा – संविग्गभाविया असंविग्गभाविया य ।
असण्णी दुविधा – आगाढ - मिच्छदिट्ठी अणागाढ मिच्छद्दिट्ठी य ।
उज्जमंतसंजतीसु विकप्पो णत्थि । दोण्णि वग्गा – साहुवग्गो साहुणिवग्गो य पुणो ।
एक्केक्को दुविधो कज्जति – संविग्गपक्खिओ असविग्गपक्खिओ य ॥१६८५॥

"[1]संण्णि - असण्णि" त्ति अस्य व्याख्या –

संविग्गेतरभाविय, सण्णी मिच्छो तु गाढऽणागाढे ।
असंविग्ग-मिगाहरणं, अभिगह-मिच्छेसु विसं हीला ॥१६८६॥

---

१ गा० १६८५।

पुव्वद्धं गतार्थं । असंविग्गभाविता ते भगा। हरिणदिट्ठतेण अकप्पियं देंति । आगाढमिच्छादिट्ठी विसवादेति, हील वा करेति, तेण तेसु पढमं ण गेण्हति ॥१९८६॥

एतेसु पढमं गेण्हति –

संविग्ग-भावितेसुं अणगाढेसुं जतंति पणगादी ।
उवएसो संघाडग, पुव्वगहितं तु अण्णेसु ॥१९८७॥

सविग्गभावितेसु सुद्ध, तेसु असति अणागाढमिच्छेसु सुद्धं, तेसु असति असंविग्गभावितेसु सुद्ध । तेसु असति अणागाढभावितेसु सुद्ध, तेसु असति अण्णसंभोतियोवदिट्ठकुलेसु मग्गति सुद्धं, असति अण्णसभोतिय-सघाडएण सुद्धं, असति "अण्णेसु" ति अण्णसभोतितेसु ज पुव्वोवग्गहियं सुद्ध ॥१९८७॥

अण्णसंभोतितेसु उक्तोप्यर्थः पुनरुच्यते विशेषज्ञापनार्थम् ।

उवएसो संघाडग, तेसि सट्ठाइ पुव्वगहियं तु ।
अहिणव-पुराण सुद्धे, उत्तरमूले सयं वा वि ॥१९८८॥

अण्णसभोतितेसु उवदेससघाडगविधि जाहे अइक्कतो ताहे अण्णसभोतिएसुं पुव्वोगहिय सयट्ठाए उत्तरमूलगुणेसु सुद्ध, त अहिणव पुराणं वा, पुव्व अहिणवं गेण्हति, पच्छा पुराणं । "जतति पणगाइ" त्ति – ततो पच्छा पणगपरिहाणीए जतति, जाहे मासलहु पत्ता ताहे पासत्थादिसु ॥१९८८॥

उवएसो संघाडग, पुव्वग्गहितं च णितियमादीणि ।
अभिणव-पुराण सुद्धं, पुव्वमभुत्तं ततो भुत्तं ॥१९८९॥

णितियातितेसु उवदिट्ठघरेसु मग्गति । असति णितिगातिसघाडगेण उप्पाएति । असति तेसु चेव णितियातिएसु जं पुव्वोगहितं सुद्धं णवं अपरिभुत्त त गेण्हति । तस्सासति तेसु चेव ज तं पुव्वोगहित्त । पुराणं अपरिभुत्तं गेण्हति ॥१९८९॥

अस्यैवार्थस्य विशेष-ज्ञापनार्थं पुनरप्याह –

उत्तरमूले सुद्धे, णवग-पुराणे चउक्कभयणेवं ।
परिकम्मण-परिभोगे, ण होंति दोसा अभिणवम्मि ॥१९९०॥

मूलगुण- उत्तरगुणेसु सुद्धं णव अपरिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव पुराणं अपरिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव णव परिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव पुराणं परिभुत्तं । एव बितियादि-विकप्पेसु वि चउरो भगा भणितव्वा । कम्हा णवं पुव्वं ? अत्र कारणमाह "परिकम्मण" पच्छद्धं । ण परिकम्मणदोसो, सुगधवासियाविधि-परिभोगदोसा य ण भवंति ॥१९९०॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवणट्ठा सयं व गहणट्ठा ।
आगाढकारणम्मी, जहेव हंसादिणं गहणं ॥१९९१॥

सव्वहा असति उवकरणस्स सक्कादि-परलिंगकरणं कज्जति, तेण लिंगेण उवासगादि पण्णविज्जति, तल्लिंगट्ठितेहिं वा उवकरणं घेप्पति, अण्णहा ण लब्भति । सव्वहा अभावे जहेव हंसतेल्लादियाण गहणं दिट्ठ उवकरणस्स वि तहेव ।

अथवा – हंसो तेणगो, जहा हंसो गहणं करेति कज्जति, तहावि असति सुत्तं जाएत्ता तुणावेति। असति सुत्तं जाएत्ता अप्पसागारिए तंतु काएति। कारणा असति दीहसुत्तयं पि करेति ॥१६६१॥

सेडुग रूते पिंजिय, पेलुग्गहणे य लहुग दप्पेणं।
तक्कालेसु विसिट्ठा, कारणे अक्कमेण ते चेव ॥१६६२॥

सेडुओ कप्पासो, रूअं उट्टियं, रूयपडलं पिंजियं, तमेव वलितं पेलू भण्णति। एतेसिं दप्पतो गहणे चउलहुं तक्कालविसिट्ठं। कारणे पुव्वं पेलू, पच्छा रुतं, पच्छा सेडुओ। उक्कमगहणे चउलहुं ॥१६६२॥

एवं –

कडजोगि एक्कगो वा, असतीए णालबद्ध-सहितो वा।
णिप्फाते उवगरणं, उभओ पक्खस्स पाउग्गं ॥१६६३॥

कडजोगी गीतत्थो. जेण वा गिहवासे कत्तियं तंतुकातितं वा सो कडजोगी, एक्कओ उवकरणं उप्पाएति, एरिसस्स असती णालबद्ध सजती-सहिओ उभयपक्खस्स पाओग्गं उवकरणं उप्पाएति ॥१६६३॥

अग्गीतेसु विगिंचे, जह लाभं सुलभ-उवधि-खेत्तेसु।
पच्छित्तं च वहंती, अलाभे तं चेव धारेंति ॥१६६४॥

अगीतवतिमिस्सा सुलभउवधिखेत्तेसु गता अण्णोवकरणे लब्भमाणे पुव्वोवकरण जहालाभं विकिंचिंति, अहालहुगं च पच्छित्तं वहति अगीयपच्चयणिमित्तं, अण्णस्स अभावे त चेव धरेंति। अह सव्वे गीयत्था ताहे अण्णम्मि अलब्भमाणे ज आहाकम्मकडं विधीए उप्पाइयं त परिच्चयंति वा ण वा इच्छेत्यर्थः ॥१६६४॥

एसेव गमो णियमा, सेसेसु पदेसु होइ णायव्वो।
झामितमादीएसुं, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१६६५॥ कठा

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

सचित्ता जीवसहिता, वेणू वंसो, वेत्तो वि वसभेओ चेव, दारु सीसवादिकरणं। परहस्ताद् ग्रहणमित्यर्थः। ग्रहणादुत्तरकालं अपरिभोगेण धरणमित्यर्थः।

सच्चित्तमीसगे वा, जे भिक्खू दंडए करे धरे वा।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६६६॥

सयमेव छेदणम्मी, जीवा दिट्ठे परेण उड्डाहो।
परछिण्ण मीसदोसा, भारेण विराहणा दुविधा ॥१६६७॥

सयं छेयणे जीवोवघातो, परेण दिट्ठे उड्डाहो भवति। परछिण्णे वि मीसवणस्सति त्ति जीवोवघोता भवति, सार्द्रत्वाच्च। गुरु. गुरुत्वादात्मसंयमोपघातः ॥१६६७॥

सुत्तणिवातो एत्थं, परच्छिण्णे होति दंडए तिविधे।
सो चेव मीसओ खलु, सेसे लहुगा य गुरुगा य ॥१९९८॥

तिविधो – वंस-वेत्त-दारुमयो य, सो चेव परच्छिण्णो मीसो भवति, एत्थ सुत्तणिवातो सेस त्ति – सचित्ते परित्ते चउलहुआ, अणंते चउगुरुयं ॥१९९८॥

वितियपदमणप्पज्झे, गेलण्णऽद्धाण सावयभए वा।
उवधी सरीर तेणग, पडिणीते साणमादीसु ॥१९९९॥

अणप्पज्झो करेति ॥१९९९॥

गिलाण-अद्धाणेसु इमं वक्खाणं –

वहणं तु गिलाणस्सा, बाला उवधी पलंब अद्धाणे।
अच्चित्ते मीसेतर, सेसेसु वि गहण जतणाए ॥२०००॥

गिलाणो वालो उवही पलवाणि वा अद्धाणे वुज्झंति, सावयभए णिवारणट्ठा घेप्पंति, उवहिसरीराण वहणट्ठा तेणग-पडिणीय-साणमादीण णिवारणट्ठा पुव्व अचित्तं, पच्छा मीसं, "सेसा" परित्ताणंता, पुव्वं परित्तं, पच्छा अणंतं ॥२०००॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०। २८॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

चित्रक एकवर्ण.। विचित्रो नानावर्ण । करेति धरेति वा तस्स मासलहुं।

चित्ते य विचत्ते य, जे भिक्खू दंडए करे धरे वा।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२००१॥

चित्तो णाम एगतरेण वण्णेण उज्जलो, विचित्तो दोहिं वण्णेहिं, चित्तविचित्तो पचवण्णेहिं ॥२००१॥

सहजेणागंतूण व, अण्णतरजुओ य चित्तवण्णेणं।
दुप्पभितिसंजुओ पुण, विचित्ते अविभूसिए सुत्तं ॥२००२॥

सहजो णाम तद्द्रव्योत्थित', कल्मापिका वंशडडकवत्, आगंतुको चित्रकरादिचित्रित , सूत्रस्याभिप्रायो अविभूपाभूपिते प्रायश्चित्तं भवति ॥२००२.।

बितियपदमणपज्झे, गेलण्णे असती अद्धाण-संभम-भए वा ।
उवधी सरीर तेणग, पडिणीए साणमादिसु वि ॥२००३॥

अण्णंसि डडगाणं अभावे चित्तविचित्तादि गेण्हति ॥२००३॥

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा
परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा
परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा
परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू नवग-णिवेसंसि वा गामंसि वा-जाव-सन्निवेसंसि वा
अणुप्पविसित्ता असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

पढमा वासं णव, करातियाण गम्मो गामो, करो जत्थ ण विज्जति तं णगर, धूली पगारो जस्स तं खेड, कुणगरं कब्बड, अड्ढाइज्जजोयणमब्भंतरे जस्स गोडलादीणि णत्थि तं मडव, जलेण थलेण दोसु वि मुह दोणमुह, जलपट्टणं पुरिमाती, थलपट्टणं आणदपुराति, आसमं तावसासमादि, सत्थट्ठाणं णिवेसण, वणिया जत्थ केवला वसंति णिगम, वासासु किंसि काउं पभायवरिसे तं धण्णं जत्थ दुग्गे संवोढु वसति त सबाहं, रायाधिट्ठिया रायहाणी-एतेसु जो असणादि गेण्हति तस्स मासलहुं आणादिया य भद्द-पतदोसा य ।

गामाइ-सण्णिवेसा, जेत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसू असणादीणि, गेण्हंताऽऽणाइणो दोसा ॥२००४॥

मंगलममंगले या, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे ।
दोसा णिव्विसमाणे, पुढवीमादीण चिट्ठम्मि ॥२००५॥

भद्दो अणावासिउ कामो वि साहुं दट्ठूण मगल त्ति काउ आवासेति, एव पवत्तणं । थिरीभूते य भणति–अहो साहुदरिसणं धण्णं, साधूण वा पढम भिक्खापदाण कतं तेण थिरीभूता । अण्णतर उग्गमदोस तेसिं अण्णेसिं वा करेज्ज । पंतो पुण आवासिउकामो वि साधु दट्ठु अमगल ति काउ णावासेति, एवं णिवत्तणं । अत्थिरे वा जाते भणंति–"कुतो अम्हाणं सुहं" ति ज पढमं ते लुत्तसिरा दिट्ठा, पडिलाभिया वा, भिक्ख वा तेहिं भमाडिता, तेसिं अण्णेसिं वा तत्थ वा भत्ताति णिवारियंति, अतरायदोसा य । एए निविस्समाणे दोसा । णिविट्ठे सचित्तपुढवियसंघट्टणादिदोसा, आदिसद्दाओ आकहरियक्काओ वा भवे ॥२००५॥

मंगल-बुद्धिपवत्तण, अधिकरण थिरम्मि होति तं चेव ।
अप्पडिपोग्गलठाणे, ओभावणमंतरायादी ॥२००६॥

पूर्वार्धं गतार्थम् । ठाण त्ति ठायताण साहुदरिसणे ।

अहवा – अहापडिवत्तीए एतेसिं अपडिपुग्गल णाम दारिद्दता ताहे बहुजणमज्झे पंता ओभासति अण्णेसिं पि दिज्जमाणे णिवारेंति, अंतरायदोसा ॥२००६॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणा गहणं तु गीयत्थे ॥२००७॥

जयणाए गीयत्थो गहणं करेति ॥२००७॥

सा इमा जयणा –

पुव्वपवत्ते गहणं, उक्खित्तपरंपरे य अणभिहडे ।
चुल्लीपदेसरसवति, परिमलिते रुक्खदड्ढादी ॥२००८॥

णवग-णिवेसे पुव्वपव्वत्तपरिवेसणाए गेण्हति मा पवत्तणे दोसो भविस्सति । ज पुव्वुक्खित्तं परंपरणिक्खित्तं च तं गेण्हति सट्ठाणट्ठं, नो अभिहडं । चुल्लिपदेसे विद्धत्थो पुढविकाओ तत्थ गेण्हति, भत्तरसवइपएसे ज वा गोरूगमादीहिं परिमलियं ठाणं तत्थेव गेण्हंति, रुक्खो वा जत्थ दड्ढो, आदिसद्दातो गोमुत्तिगादिसु ॥२००८॥

जे भिक्खू नवग-निवेसंसि वा अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तउआगरंसि वा
सीसागरंसि वा हिरण्णागरंसि वा सुवण्णागरंसि वा
रयणागरंसि वा वइरागरंसि वा अणुप्पविसित्ता
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ;
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

अयं लोहं, त जत्थ उप्पज्जति सो अयागरो, तवु, तव, सीसग, हिरण्णं रुप्पयं, सुवण्णं, वइर रत्न विशेष· पाषाणकः तत्थ जो गेण्हति तस्स मासलहुं, आणादिया दोसा ।

अयमाइ आगरा खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसू असणादीणि, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ॥२००९॥

मंगलममंगले वा, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे ।
दोसा णिव्विसमाणे, इमे य दोसा णिविट्ठम्मि ॥२०१०॥

पूर्ववत् ।

इमे य दोसा णिविट्ठे –

पुढवि-ससरक्ख-हरिते, सचित्ते मीसए हिए संका ।
सयमेव कोइ गिण्हति, तण्णीसाए अहव अण्णे ॥२०११॥

णवग-णिवेसे असत्थोवहता सचित्तपुढवी ।

अहवा – धाउ-मट्टिता खता ताए हत्था खरंटिता, ससरक्खेण वा हत्थेण देज्ज, णवग-णिवेसे वा हरियसभवो, सचित्तमीसस्स । तत्थ अण्णेण सुवण्णातिते हरिते साहू संकिज्जति ।

अहवा – कोइ सजतो लुद्धो उण्णिक्खमिउकामो सयमेव गेण्हति ।

अहवा – साहुणिस्साते अण्णो कोइ गेण्हति । तत्थ आसकाए गेण्हण-कड्ढणातिया दोसा । जम्हा एते दोसा तम्हा णवगणिवेसेसु णो गेण्हेज्ज ॥२०१२॥

कारणा गेण्हेज्जा वि –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥२०१२॥ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू मुह-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू दंत-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू उट्ठ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू नासा-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०३९॥

जे भिक्खू कक्ख-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू हत्थ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू नह-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू पत्त-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू पुप्फ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू फल-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०४५॥

जे भिक्खू वीय-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू हरिय-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

❀　　❀　　❀

जे भिक्खू मुह-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू॥४८॥

जे भिक्खू दंत-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू उट्ठ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू नासा-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू कक्ख-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू हत्थ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू नह-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू पत्त-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू पुप्फ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू फल-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू बीय-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू हरिय-वीणियं वाएइ, वायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

मुह-वीणियातीहिं वादिअशब्दकरण। वितियसुत्ते मुहवीणिय करेंतो मोहोदीरके सद्दे करेति, अण्णतर-ग्रहणात् संयोगमवेक्खति, तं पगारमावण्णाणि तहप्पगाराणि, तत-वितत-प्रकारमित्यर्थः।

मुहमादि वीणिया खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते।
सद्दे अणुदिण्णे वा, उदीरयंतम्मि आणादी ॥२०१३॥

अणुदिण्णं जे मोहं जणेति, उवसत वा उदीरेति ॥२०१३॥

सविगार अमज्झत्थे, मोहस्स उदीरणा य उभयो वि।
पुणरावत्ती दोसा, य वीणिगाओ य सद्देसु ॥२०१४॥

सविगारता भवति, लोगो य भणति – अहो इमो सविकारो पव्वतितो। मज्झत्थो रागदोस-विजुत्तो, सो पुण अमज्झत्थो। अप्पणो परस्स य मोहमुदीरेति, पुणरावत्ति णाम कोइ भुत्तभोगी पव्वतितो सो चिंतेति अम्हं वि महिलाओ एवं करेंति, तस्स पुणरावत्ती भवति। अण्णेसिं वा साहूण सुणेत्ता पडिगमणादयो दोसा भवति। वीणियासु वीणियासद्देसु य एते दोसा भवंति ॥२०१४॥

इत्थि-परियार-सद्दे, रागे दोसे तहेव कंदप्पे।
गुरुगा गुरुगा गुरुगा, लहुगा लहुगो कमेण भवे ॥२०१५॥

इत्थि-सद्दे चउगुरुं। परियार-सद्दे चउगुरुं। अण्णतर-सद्द रागेण करेति चउगुरु। एतेसु तिसु चउ गुरुगा। दोसेण करेति चउ लहुगा। कदप्पेण करेति मासलहुं ॥२०१५॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविओ व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, सण्णा सागारमादीसु ॥२०१६॥

अणप्पज्झो करेति, अविकोवितो वा सेहो करेति, दिया रातो वा अद्धाणे मिलणट्ठा सण्णासद्द करेति, भावसागारियपडिबद्धाए वा वसहीए सद्दं करेंति, जहा त ण सुणेंति ॥२०१६॥

जे भिक्खू उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

उद्दिश्य कृता औद्देशिका, उवागच्छति प्रविसति तस्स मासलहुं।

ओहेण विभागेण य, दुविहा उद्देसिया भवे सिज्जा।
ओहेणेवतियाणं, बारसभेदा विभागम्मि ॥२०१७॥

ओहो सखेवो अविसेसियं समणाणं वा माहणाण वा ण णिद्दिसति। एवं वा अविसेसिते पचण्ह वा छण्ह वा जणाण अट्ठाए कता जाहे पविट्ठा भवति ताहे जो अण्णो गणणादिक्कतो पविसति तस्स कप्पति। एसा हु उद्देसिया बारसभेया विभागे भवति ॥२०१७॥

जामातिय-मंडवओ, रसवति रह-साल-आवण-गिहादी ।
परिभोगमपरिभोगे, चउण्हट्ठा कोइ संकप्पे ॥२०१८॥

जामातिया-णिमित्तं कायमाणमडवो कतो आसी, भत्ते वा रसवती कता आसी, रहट्ठाए वा साला कता आसी, ववहरणट्ठा वा आवणो कतो आसी, अप्पणो वा गिहं कतं आसी, अप्पणा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा अप्पणो णिरुवभोजीभूय ण भुजति ॥२०१८॥

इमेसिं चउण्ह –

उद्देसगा समुद्देसगा य आदेस तह समादेसा ।
एमेव कंडे चउरो, कम्ममिवि होति चत्तारिं ॥२०१९॥

एयस्स इमं वक्खाणं –

जावंतियमुद्देसो, पासंडाणं भवे समुद्देसो ।
समणाण तु आदेसो, निग्गंथाणं समादेसो ॥२०२०॥

आचंडाला जावंतियं उद्देसं भण्णति । सामण्णेणं पासंडीणं समुद्देसं भण्णति । समणा णिग्गंथ सक्क तावसा गेरु य आजीव-एतेसु उद्दिट्ठं आदेसं भण्णति । णिग्गंथा साहू, तेसिं उद्दिट्ठ समादेस भण्णति ॥२०२०॥ कडे वि एते चेव चउरो भंगा ।

इमं विसेसलक्खणं –

सडित-पडिताण करणं, कुड्डकडादीण संजतट्ठाए ।
एमादिकडं कम्मं, तु भंजितुं जं पुणो कुणति ॥२०२१॥

कुड्डकडातीणं सडितं संजयट्ठा करेति, कुड्डकडातीण खडं पडियं संजयट्ठा करेति, आदिग्गहणेणं छावण-थूणादियाण एवमादि कडं भण्णति । कम्मं पुव्वकयं भंजित्ता तेणेव दारुणा चोक्खतर अण्णं करेति ॥२०२१॥

तं कम्मं भण्णति –

उद्देसियम्मि लहुगो, चउसु वि ठाणेसु होइ उ विसिट्ठो ।
एमेव कडे गुरुओ, कम्मादिम-लहुग तिसु गुरुगा ॥२०२२॥

ओहुद्देसे मासलहुं । विभागुद्देसे चउसु वि भंगेसु मासलहुं तवकालविसिट्ठं । कडे चउसु वि भेदेसु मासगुरुं तत्रकालविसेसियं । कम्मे जावतियभेदे चउलहुयं । सेसेसु तिसु चउगुरुं ॥२०२२॥

सुत्तणिवातो ओहे, आदिविभागे य चउसु वि पदेसु ।
एतेसामण्णतरं, पविसंताऽऽणादिणो दोसा ॥२०२३॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए कप्पती वसितुं ॥२०२४॥

जयणा जाहे पणगहाणीए मासलहु पत्तो ॥२०२४॥

जे भिक्खू स-पाहुडियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जम्मि वसहीए ठियाण कम्मपाहुडं भवति सा स-पाहुडिया छावण-लेवणादि-करणमित्यर्थः।

सा इमा सपाहुडिया –

पाहुडिया वि हु दुविधा, बादर सुहुमा य होंति णायव्वा ।
एक्केक्का वि य तत्था, पंचविहा होंति भज्जंती ॥२०२५॥

बायरा पंचभेया, सुहुमा पंचभेया ॥२०२५॥

इमा बायरा पंचविधा –

विद्धंसण[1] छावण[2] लेवणे[3] य भूमी-कम्मे[4] पडुच्च[5] पाहुडिया ।
ओसक्कणऽहीसक्कण, देसे सव्वे य णायव्वा ॥२०२६॥

विद्धंसण भंजण। छज्जकरणं छायणं। कुड्डाण लिंपणं लेवण। भूमीए समविसमाए परिकम्मणं भूमीकम्मं। कालाण उस्सक्कण ओसक्कण, कालस्स संवद्धण उस्सक्कणं। एव एक्केक्क (देसे) दट्ठव्वं। विद्धसणादिया य दोसा सव्वे य दट्ठव्वा ॥२०२६॥

विद्धंसणे उस्सक्कणं इम –

गिहवतिणा चिंतियं – इमं गिह जेट्ठमासे भजिउ अण्णं नवक काहामि, जेट्ठमासे य तत्थ साहू मासकप्पेण ठिता।

ताहे सो चिंतेति –

अच्छंतु ताव समणा, गत्तेसु भंतुं ततो णु काहामो ।
ओभासिए व संते, ण एंति ता भंतुंणं कुणिमो ॥२०२७॥

इदाणिं अच्छतु, गतेसु एतेसु आसाढमासे भंजिऊण करिस्सामि, एसा उस्सक्कणा। खेत्तपडिलेहगेहिं ओभासियं लद्ध ताहे चिंतेति – जेट्ठमासे साहू ठायंति तदा दुक्ख कज्जति, अतो जाव ते णागच्छंति ताव वइसाहे चेव भजणं करेमि। एवं ओसक्कणा भवति ॥२०२७॥

एसेव गमो णियमा, छज्जे लेप्पे य भूमि-कम्मे य ।
तेसाल चउस्साले, पडुच्च करणं तु जति णिस्सा ॥२०२८॥

एव छावणे लेवणे भुमीकम्मे उस्सक्कण अहिसक्कणाओ दट्ठव्वाओ। इयाणिं पडुच्च करणं त इमेरिस "तेसाल" पच्छद्धं-आयट्ठा तेसाल काउकामो साहुं "पडुच्च" चाउसाल करेति ॥२०२८॥

अहवा –

पुव्वघरं दाऊणं, जई ण अण्णं करेति सट्ठाए ।
कातुमणो वा अण्णं, ण्हाणादिसु कालमोसक्के ॥२०२९॥

पुव्वकयं घरं सम्रट्ठा, एयं साहूण दाउं अप्पणो अट्ठाए अण्णं करेति। एवं वा पडुच्चकरणं।

अहवा – कोइ सड्ढो अण्णघरं अप्पणो अट्ठाते काउकामो जेट्ठमासे, तत्थ ण्हवणं रहजत्ता वा वैसाहमासे भविस्सति, ताहे चिंतेति – अणागयं करेमि जेण तत्थ साहुणो चिट्ठति। एस ओसक्कणा साहु पडुच्च ।।२०२९।।

एमेव य ण्हाणादिसु, सीतलकज्जट्ठ कोइ उस्सक्के ।

मंगलवुद्धी सो पुण, गतेसु तहियं वसितुकामो ।।२०३०।।

एमेव कोति सड्ढो सीयकाले काउकामो चिंतेति – वैसाहमासे इह ण्हवणं तत्थ य साहुसमागमो भविस्सति, तं च तदा णवघरं साहूण सीयल भविस्सति तम्हा ण्हवणकालासण्णमेव करिस्सामिं एव साहवो पडुच्च उसक्कणा। सो पुण ओसक्कण अहीसक्कणं वा करेति मंगलबुद्धीए, पुव्वं साहवो परिभुजतु त्ति तेसु य साहुसु गतेसु तम्मि य घरे अप्पणा वसिस्स ति, एय वा पडुच्चकरण ।।२०३०।। बातर-पाहुडिता गता।

इदाणिं सुहुमा –

सम्मज्जण वरिसीयण, उवलेवण पुप्फदीवए चेव ।

ओसक्कण उसक्कण, देसे सव्वे य णायव्वा ।।२०३१।।

सम्मजण त्ति पमजणं, उदगेण वरिसण आवरिसणं, छवणमट्टियाए लिंपण उवलेवण, पुप्फोवयारप्पदाणं, दीवग-पज्जालणं वा, एते – पुव्वमप्पणो कज्जमाणे चेव। णवरं – साधवो पडुच्च ओसक्कणं उस्सक्कणं वा। एतेसिं पि करणं देसे सव्वे वा ।।२०३१।।

इमं ओसक्कास्सक्कविहाणं –

जाव ण मंडलिवेला, ताव पमज्जामो होति ओसक्का ।

उट्ठेंति ताव पडिउं, उस्सकणमेव सव्वत्थ ।।२०३२।।

एवं सव्वत्थ आवरिसणाइएसु वि ।।२०३२।।

इमं पच्छित्तं –

सव्वम्मि उ चउलहुगा, देसम्मि य वादरा य मासो तु ।

सव्वम्मि मासियं तू, देसे भिण्णो उ सुहुमाए ।।२०३३।।

विद्धसणातिएसु पचसु वि सव्वे चउलहुगा, देसे मासलहुं। सम्मजणातिएसु पचसु वि मासलहुं सव्वे, देसे भिण्णमासो ।।२०३३।।

सा पुण सुहुमा पाहुडिया कालतो –

छिण्णमछिण्णाकाले, पुणो य णियया य अणियया चेव ।

णिद्दिट्ठमणिद्दिट्ठा, पाहुडिया अट्ठभंगा उ ।।२०३४।।

जीसे उवलेवणादि-परिच्छिण्णे काले कज्जति सा छिण्णा, इतरा अच्छिण्णा, छिण्णकाले जा अवस्सं कज्जति सा णियया, इतरा अणियता, पुरिसो पाहुडियकारगो इंददत्तादि-णिद्दिट्ठो, णामेण अणुवलक्खितो अणिद्दिट्ठो। छिण्ण-णियय-णिद्दिट्ठ, एतेसु तिसु वि पदेसु अट्ठभंगा कायव्वा ।।२०३४।।

कालतो इमा छिण्णा –

मासे पक्खे दसरातए य पणए य एगदिवसे य ।
वाघातिमपाहुडिया, होति पवाता णिवाता य ॥२०३५॥

मासते पक्खंते दसराते पणए एगदिवसे एगतरातो णिरतरा वा दिणे दिणे एसा छिण्णा । अछिण्णा पुण णज्जति कम्मि (कस्मिंचित्) इ दिवसे ? काए वेलाए ? जा सुत्तत्थपोरिसिवेलासु पाहुडिया कज्जति सा वाघातिमा ॥२०३५॥

छिण्णकाले णिव्वाघातिमा इमा –

पुव्वण्हे अवरण्हे, सूरम्मि अणुग्गते व अत्थमिए ।
मज्झण्हे इय वसती, सेसं कालं पडिकुट्ठा ॥२०३६॥

पुव्वण्हे जा अणुग्गते सूरिए, अवरण्हे जा अत्थमिए सूरिए, मज्झण्हे कालवेलाए अत्थपोरिसि-उट्ठियाण । एतेसु कालेसु जा पाहुडिया कज्जति सा अव्वाघातिमा । सेसं काल पडिकुट्ठा ॥२०३६॥

पुरिसज्जाओ अमुओ, पाहुडिया कारओ त्ति निद्दिट्ठो ।
सेसा तु अणिद्दिट्ठा, पाहुडिया होति णायव्वा ॥२०३७॥

जातय-ग्रहणं स्त्रीपुंनपुंसकप्रदर्शनार्थम् ॥२०३७॥

मासस्य य। क्रियते सा इमेण कारणेण णिव्वाघातिमा भवति –

काऊण मासकप्पं, वयंति जा कीरते उ मासस्स ।
सा खलु णिव्वाघाता, तं वेलाऽऽरेण णिंताणं ॥२०३८॥

कयाए पाहुडियाए पतिट्ठा मासकप्पं काऊण पाहुडियकरणकालाओ आरेण णिगच्छमाणाण णिव्वाघाता भवति ॥२०३८॥

"[1]पवाय-णिवाता य" त्ति अस्य व्याख्या –

अवरण्ह गिम्हकरणे, पवाय सा जेण णासयति घम्मं ।
पुव्वण्हे जा सिसिरे, णिव्वात णिवाय सा रत्तिं ॥२०३९॥

गिम्हकाले अवरण्हे उवलेवणकारणेण सीतत्वात् घर्मं नाशयति यतस्तस्मात् प्रवाता । शिशिरकाले पुव्वण्हे उवलेवणकारणेण सव्वदिणेण 'णिव्वात" त्ति उव्वाणा, सा रात्रौ णिवाता भवति, व्यपगतनेहत्वात् ॥२०३९॥

पुव्वण्हमपट्ठविते, अवरण्हे उट्ठितेसु य पसत्था ।
मज्झण्ण-णिग्गएसु य, मंडलि सुत पेह वाघातो ॥२०४०॥

पुव्वण्हे अपट्ठविते अणुग्गए सूरिए अपट्ठविते सज्झाते, अवरण्ह उट्ठितेसु, मज्झण्हे भिक्ख-णिग्गतेसु, एया पसत्थाओ जेण सुयभोयणमंडलीए उवकरणपेहणाए य अव्वाघायकरा, सेसकाल व्याघातकरा इत्यर्थ. । तम्हा एयद्दोसपरिहरणत्थं अपाहुडियाए वसहीए वसियव्व । ॥२०४०॥

कारणे सपाहुडियाए वसंतो [2]पढमभंगे वसति ।

सेसेसु वि भंगेसु वसंतस्स इमा जयणा –

तं वेलं सारवेंती, पाहुडिया-कारयं व पुच्छंति ।
मोत्तूण चरिमभंगं, जयंति एमेव सेसेसु ॥२०४१॥

जं वेलं पाहुडिया कज्जति तं वेलं उवकरणं सारवेंति ।

अहवा – पाहुडियाकारगं पुरिसं पुच्छंति कं वेलं काहिसि, चरिमभंगं मोत्तु सेसभगेसु एवं जतंति ॥२०४१॥

चरिमे वि होइ जयणा, वसंति आउत्तउवहिणो णिच्चं ।
दक्खे य वसतिपाले, ठवेंति थेरे पुणित्थीसु ॥२०४२॥

चरिमे वि इमा जयणा – णिच्चं आउत्ता उवहीए अच्छति, दक्खे य वसहिपाले ठवति, अणित्थीसु वा पुरिसेसु त्ति तरुणे वसहिपाले ठवेंति, अह इत्थीओ थेरे ठवेंति ॥२०४२॥

देसम्मि बायरा ते, सुत्तणिवातो उ णिवतती एत्थं ।
सव्वम्मि य सुहुमाए, तं सेवंतम्मि आणादी ॥२०४३॥

बादराए देसे सुहुमाए सव्वे एत्थ सुत्तणिवातो भवति आणातिया य दोसा, सेसं विकोवणट्ठा भणियं ॥२०४३॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणाए कप्पती वसितुं ॥२०४४॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सपरिकम्मं सेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

सह परिकम्मेण सपरिकम्मा, मूलगुणउत्तरपरिकर्म यस्यास्तीत्यर्थ. ; तस्स मासलहुं आणाइया य दोसा ।

सपरिकम्मा सेज्जा, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
एक्केक्का वि य एत्तो, सत्तविहा होइ णायव्वा ॥२०४५॥

सपरिकम्मा सेज्जा दुविहा । एक्केक्का पुण सत्तविहा ॥२०४५॥

इमे मूलगुणा सत्त –

पट्टीवंसो दो धारणाओ चत्तारि मूलवेलीओ ।
मूलगुण-सपरिकम्मा, एसा सेज्जा उ णायव्वा ॥२०४६॥

---

१ गा० १४३ । २ गा० १४२ ।

इमे उत्तरगुणेसु मूलगुणा सत्त –

वंसग कडणोक्कंपण, छावण लेवण दुवारभूमी य।
सप्परिकम्मा सेज्जा, एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥२०४७॥

वस इति दडगो, आकडण कुड्डकरणं, दंडगोवरि ओलवणं उक्कंपण, दब्भातिणा छायण, कुड्डाण लेवण, बृहदल्पकरणं दुवारस्स, विसमाए समीकरणं भूकर्म, एसा सपरिकम्मा। उत्तरगुणेसु एते मूलगुणा इत्यर्थ ॥२०४७॥

इमे उत्तरोत्तरगुणा विसोहिकोडिट्ठिया वसहीए उवघायकरा।

दूमिय धूमिय वासिय, उज्जोवित बलिकडा अवत्ता य।
सित्ता सम्मट्ठा वि य, विसोहिकोडी कया वसही ॥२०४८॥

दूमियं उल्लोइयं, दुग्गंधाए धूवाइणा धूवियं, दुग्गंधाए चेव पडिवासिणा वासाण, रयणप्पदीवादिणा उज्जोवित, कूरातिणा बलिकरणं, छगणमट्टियाए पाणिएण य अवत्ता, उदगेण केवलेण सित्ता, बहुकाराइणा सम्मट्ठा प्रमार्जिता ॥२०४८॥

इमं पच्छित्तं –

अप्फासुएण देसे, सव्वे वा दूमितादि चउलहुआ।
अप्फासु धूमजोती, देसे वि तहिं भवे लहुगा ॥२०४९॥

दूमियाइ- सत्तसु पदेसु अफासुएण देसे सव्वे वा चउलहुअ, धूवजोती णियमादेव अफासुय, एतेसु देसे वि चउलहुअ ॥२०४९॥

सेसेसु फासुएणं, देसे लहु सव्वहिं भवे लहुगा।
सम्मज्जण साह कुसादिछिण्णमेत्तं तु सच्चित्तं ॥२०५०॥

सेसेसु पंचसु पएसु फासुएण देसे मासलहुं सव्वहिं चउलहुगा। सम्मज्जणं सचित्तेणं कह भवति ? भण्णति – सचित्तेण कुसादिणा छिण्णमेत्तेण संभवति ॥२०५०॥

वसधीए मूलुत्तरगुणसंभवे चउक्कभंगो भण्णति।

मूलुत्तरे चतुभंगो, पढमे वितिए य गुरुदुग-सविसेसा।
ततियम्मि होति भयणा, अत्तट्ठकडे चरिमसुद्धो ॥२०५१॥

पढमो – मूलगुणेसु असुद्धो, उत्तरगुणेसु असुद्धो।

बितितो – मूलगुणेसु असुद्धो, उत्तरगुणेसु सुद्धो।

ततियो – उत्तरगुणेसु असुद्धो, मूलगुणेसु सुद्धो।

चरिमो – दोसु वि सुद्धो।

पढमभगे चउगुरु तवकालविसिट्ठं।

वितिए तं चेव तवविसिट्ठं।

तइयभंगे भयणा – जति वंसकडणातियाते मूलगुणघाति त्ति चउग्गुरुं कालगुरुं, (अ) धूविया वितिया ते विसोहिकोडि त्ति काउं मासलहुं। एत्थ य सुत्ताणि वा।

यस्मान्मूलगुणोत्तरगुणा आत्मार्थं कृता तस्माच्चरिम. शुद्धः।

अघवा – दूमियाती अत्तट्ठिया सुद्धा, चरिमभंगो विसुद्धो चेव ॥२०५१॥

न केवलं एते वसहीए उवघायकारणा।

अण्णे य इमे –

संठावण[1] लिंपणता[2], भूमी-कम्मे[3] दुवार[4] संथारे[5]।

थिग्गलकरणे[6] पडिवुज्जणे[7] य दग-णिग्गमे[8] चेव ॥२०५२॥

संकम-करणे[9] य तहा, दग-वात[10] बिलाण[11] होति पिहणे य।

उच्छेव[12] संधिकम्मे[13], उवघाय उवस्सेते ॥२०५३॥

चत्तारि दारा एगगाहाए वक्खाणेति –

सडितपडिताण करणं, संठवणा लिंप भूमि-कुलियाणं।

संकोयण वित्थरणं, पडुच्च कालं तु दारस्स ॥२०५४॥

अवयवाण साडगो एगदेसखंडस्स पडणं एतेसिं संठवणा, लिंपण भूमि-कुलियाणं कुड्डं, भूमीए विसमाए समीकरणं भूमि-परिकम्मं, सीतकाल पडुच्च वित्तिण्णदुवारा सकुडा कज्जति, णिवायट्ठा गिम्हं पडुच्च सकुडदुवारा विसाला कज्जति पवायट्ठा ॥२०५४॥

तज्जातमतज्जाता, संथारा थिग्गला तु वातट्ठा।

पडिवुज्जणा तु तेसिं, वासा सिसिरे निवायट्ठा ॥२०५५॥

संथारा तज्जाया उवट्टगा करेंति, अतज्जाया कंबिआया करेंति। थिग्गल ति गिम्हे वातागमट्ठा गवक्खादि छिड्डे करेंति वासासु वा सिसिरेसु वा णिवातट्ठा तेसिं चेव पडिवुज्जणा ॥२०५८॥

दग-णिग्गमो पुव्वुत्तो, संकमो दगवातो सीभरो होति।

तिण्हं परेण लहुगा, थिग्गल उच्छेय जति वारा ॥२०५६॥

दग-णिग्गमो दग-वीणिया, सा य बितिओद्देसगे पुव्वुत्ता। संकमो पयमग्गो, सो वि तत्थेव पुव्वुत्तो। दगवातो सीतभरो, सा य उज्झंवणी भण्णति। मूसगाति-कय-विलाण पिहणं करेति। परिपेलव च्छातिते णेव्वे गलणं उच्छेवो। कडगस्स य सधी असवुडा, तीए संवुडकरण संधिकम्मं। एवं कुड्डस्स वि।

इम पच्छित्त– एक्कं थिग्गल करेति मासलहुं। दोसु दो मासा। तिसु तिण्णि मासा। तिण्ह परेण चउलहुगा, पडिवुज्जणे वि एव चेव। उच्छेव जति वारा लिंपति साहति भंडगं वा उड्डेति तति चउलहुगा।

अण्णे भणंति – मासलहुं ॥२०५६॥

दगवाय संधिकम्मे, लहुग बिले होंति गुरुग मूलं वा ।
अप्फासु फासुकरणं, देसे सव्वे य सेसेसु ॥२०५७॥

दगवाते संधिकम्मे य एतेसु चउलहुगा । वसिमे बिले मूलं, अवसिमे चउगुरुं । "सेसेसु" त्ति – संठवण-लिपण-भूमिकम्मे य अफासुएण देसे सव्वे वा चउलहुं । एतेसु चेव फासुएण देसे मासलहुं ; सव्वे चउलहुं । संथारदुवारे चउलहुं, उदग-वाह-संकमेसु मासलहुं ॥२०५७॥

पच्छा एते मूलुत्तरदोसा केवतिकालं परिहरियव्वा ? उत्तरमाह –

कामं उदुविवरीता, केइ पदा होंति आयरणजोग्गा ।
सव्वाणुवाइ केई, केइ तक्कालुवट्ठाणा ॥२०५८॥

काममवधृतार्थे द्रष्टव्य. । किमवधृतं ? यथा वक्ष्यति ।

"उडुविवरीय" त्ति पूर्वार्धस्य व्याख्या –

हेमन्तकडा गिम्हे, गिम्हकडा सिसिर-वासे कप्पंति ।
अत्तट्ठित-परिभुत्ता, तद्दिवसं केइ ण तु केई ॥२०५९॥

उत्तरगुणोवघाता हेमतजोग्गा जे कया ते गिम्हे अजोग त्ति काउं कप्पति । गिम्हे जे कता पवातट्ठा ते सिसिर-वासासु अजोग त्ति काउ कप्पंति । केति दूमितादि गिहीहिं अत्तट्ठिया परिभुत्ता तक्काले चेव कप्पंति । "[1]सव्वाणुवाति केइ" ति - सव्वकालं अणुअत्तति, तद्दोसभावेन न कदाचित् कल्पति । ते च मूलगुणा इत्यर्थ ।

"[2]केइ तक्कालुवट्ठाण" त्ति अस्य व्याख्या –

"अत्तट्ठियपरिभुत्ता तद्दिवसं" । केइ गिहीहिं अत्तट्ठियपरिभुत्ता तद्दिवसं चेव साधूणं कप्पंति ।

अहवा – तं कालं तं उडु वज्जेउं अण्णकाले उवट्ठायति, ण उ केति त्ति मूलगुणा । गतार्थम् ॥२०५९॥

सुत्तणिवाओ एत्थं, विसोहिकोडी य णिवयई णियमा ।
एए सामण्णयरं, पविसंताऽऽणाइणो दोसा ॥२०६०॥

दुमितादिएसु सुत्तणिवातो ॥२०६०॥

भवे कारण –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तमट्ठे, चरित्तऽसज्झाइए असती ॥२०६१॥

उत्तिमट्ठपडिवण्णओ साहू अण्णा य वसही ण लब्भति, जा य लब्भति सा उत्तिमट्ठपडिवण्णाण पाउग्गा ण भवति, चरित्तदोसो वा अण्णासु वसहीसु, असति णाम णत्थि अण्णा वसहि, बाहिं च असिवाति, तेण ण गच्छति, अण्णं वा मासकप्पपाउग्ग खेत्तं णत्थि ॥२०६१॥

---

१ गा० २०५८ । २ गा० २०५८ ।

आलंवणे विसुद्धे, सत्तदुगं परिहरिज्ज जतणाए ।
आसज्ज तु परिभोगं, जतणा पडिसेह संकमणं ॥२०६२॥

आलवणं कारणं, विसुद्धे स्पष्टे कारणेत्यर्थः । सत्तदुग मूलगुणा पट्ठिवंसादि सत्त, उत्तरगुणा वि वमगादि सत्त, एते वे सत्तगा "परिहरे" णाम परिभुंजे, जयणाए पणगपरिहाणीए जदा मासलहुगादि पत्तो । कारणं पुण आसज्ज पडिसेहिय वसहीसु परिभोग काउकामो अप्पवहुयजयणाए पणगपरिहाणीए जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे ॥२०६२॥

इमं अप्पवहुय –

एगा मूलगुणेहिं, तु अविसुद्धा इत्थि-सारिया वितिया ।
तुल्लारोवणवसही, कारणे कहिं तत्थ वसितव्वं ॥२०६३॥

एगा मूलगुणेहि असुद्धा, अवरा सुद्धा, णवरं-इत्थिपडिवद्धा । दोसु य चउगुरुं कहिं ठाम्रो॥२०६३॥

एत्थ भण्णति –

कम्मपसंगऽणवत्था, अणुण्णदोसा य ते समतीता ।
सतिकरणभुत्तऽभुत्ते, संकातियरी यऽणेगविधा ॥२०६४॥

आहाकम्मियसेज्जपरिभोगे आहाकम्मे पसंगो कतो भवति-परिभुंजति त्ति पुणो पुणो करेति । एवं प्रसग. । एगेण आयरिएण एगा आहाकम्मा सेज्जा परिभुत्ता, अण्णे वि परिभुंजति त्ति अणवत्था कता भवति । परिभुंजतेण य पाणिवहे अणुण्णा कया भवति । एते उक्ता दोषाः । एतेषा प्रति अतिक्रान्ता भवन्ति । इतरी णाम इत्थीपडिवद्धा । ताहे भुत्तभोगीण सतिकरणं अभुत्तभोगीण कोउअ, पडिगमणादी दोसा, गिहीण य संका । एतें एतट्ठिया णूण पडिसेवति । सकिते ङ्का । णिस्संकिए मूलं । इत्थिसागारिए एव अणेगे दोसा भवन्ति । तम्हा आहाकम्माए ठायति ॥२०६४॥

अधवा गुरुस्स दोसा, कम्मे इतरी य होति सव्वेसिं ।
जइणो तवो वणवासे, वसंति लोए य परिवातो ॥२०६५॥

आहाकम्मवसहीए गुरुस्स चेव पच्छित्त, ण सेसाणं । जतो भणितं "कस्सेयं पच्छित्तं ? गणिणो" । इतरीए इत्थिसागारियाए सव्वसाहूण सति करणादिया दोसा, लोगे य परिवातो "साहु तवोवणे वसति" अतिशयवचन ॥२०६५॥

अधवा पुरिसाइण्णा, णातायारे य भीयपरिसा य ।
वालासु य वुड्ढासु य, नातीसु य वज्जइ कम्मं ॥२०६६॥

जा इत्थिसागारिया सा पुरिसाइण्णा पुरिसवहुला इत्यर्थ. । ते वि पुरिसा णाताचारा सीलवता, इत्थियाओ वि सीलवंतीओ भीयपरिसा य ते पुरिसा ।

अहवा – ताओ इत्थियाओ वाला, अप्पत्त-जोव्वणा ।

अहवा – अतीववुड्ढा ।

अहवा – तरुणीओ वि तेसिं साहूण णालबद्धा अगम्माओ, एरिसो आहाकम्म वज्जिज्जति इत्थि-सागारिय ॥२०६६॥

यतश्चैवम् –

तम्हा सव्वाणुण्णा, सव्वनिसेहो य णत्थि समयम्मि ।
आय-व्वयं तुलेज्जा, लाभाकंखि व्व वाणियओ ॥२०६७॥

तस्मात् कारणादेकस्य वस्तुनः सर्वथा सर्वत्र सर्वकालमनुज्ञेति न भवति, नापि प्रतिषेध.। किं तु आय-व्वय तुले यत्र बहुतरगुणप्राप्तिस्तद् भजन्ते वणिजवत् ॥२०६७॥

दव्वपडिबद्ध एवं, जावंतियमाइगासु भइतव्वा ।
अप्पा व अप्पकालं, व ठाउकामा ण दव्वम्मि ॥२०६८॥

एव दव्वपडिबद्धा सेज्जा जावतियमातियासु सेज्जासु अप्पबहुत्तेण भइयव्वा । जत्थ अप्पतरा दोसा तत्थ ठायव्वं ।

अहवा – अप्पा ते साहू अप्पं च काल अच्छिउकामा ताहे दव्वपडिबद्धाए ठायति, ण जावतिय सु ॥२०६८॥

जे भिक्खू "णत्थि संभोगवत्तिया किरिय" त्ति वदति;
वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

नास्तीत्यय प्रतिषेध., "सं" एगीभावे "भुज" पालनाभ्यवहारयो, एकत्रभोजनं सभोग ।

अहवा – सम भोगो संभोगो यथोक्तविधानेनेत्यर्थ । सभुजते वा संभोग, संभुज्जते वा, स्वस्य वा भोग सभोग.। एवं उवसग्गवसा अत्थो वत्तव्वो । "वत्तिया" प्रत्यया क्रिया कर्मबन्ध.। जो एव वयति भापते तस्स मासलहु । एस सुत्तत्थो ।

इयाणिं णिज्जुत्ती –

संभोगपरूवणता[1] सिरिघर-सिवपाहुडे[2] य संभुत्ते ।
दंसण[3] णाण[4] चरित्ते[5], तवहेउं[6] उत्तरगुणेसु ॥२०६९॥

[1]"सभोगपरूवण" त्ति अस्य व्याख्या –

ओह[1] अभिग्गह[2] दाणं[3], गहणे अणुपालणा[4] य उववातो[5] ।
संवासम्मि[6] य छट्ठो, संभोगविधी मुणेयव्वो ॥२०७०॥

ओहद्दारस्स इमे वारस पडिदारा –

उवहि[1] सुत[2] भत्त[3] पाणे, अंजलीपग्गहे[4]ति य ।
दावणा[5] य णिकाए[6] य, अब्भुट्ठाणे[7]ति यावरे ॥२०७१॥

---

१ गा० २०६९ ।

कितिकम्मस्स य करणे, वेयावच्चे करणेति य ।
समोसरण सणिसेज्जा, कधाए य पबंधणे ॥२०७२॥

उवहि त्ति दारस्स इमे छ पडिदारा –

उग्गम उप्पादण एसणा य परिकम्मणा य परिहरणा ।
संजोय-विहि-विभत्ता, छट्ठाणा होंति उवधिम्मि ॥२०७३॥

तत्थ "[1]उग्गम" त्ति दारं अस्य व्याख्या –

समणुण्णेण मणुण्णो, सहितो सुद्धोवधिग्गहे सुद्धो ।
अह अविसुद्धं गेण्हति, जेणऽविसुद्धं तमावज्जे ॥२०७४॥

संभोतितो संभोइएण समं उवहिं सोलसेहिं आहाकम्मतिएहिं उग्गमदोसेहिं सुद्धं उप्पाएति तो सुद्धो । अह असुद्ध उप्पाएति जेण उग्गमदोसेण असुद्धं गेण्हति तत्थ जावतिओ कम्मबंधो जं च पायच्छित्तं तं आवज्जति ॥२०७४॥

एगं व दो व तिण्णि व, आउट्टं तस्स होति पच्छित्तं ।
आउट्टंते वि ततो, परेण तिण्हं विसंभोगो ॥२०७५॥

संभोइओ असुद्ध गेण्हतो चोइओ भणाति – "संता पडिचोयणा, मिच्छामि दुक्कडं, ण पुणो एवं करिस्सामो" एवं आउट्टे जमावण्णो त पच्छित्त दाउं संभोगो ।

एवं बितियवाराए वि, ततियवाराए वि ।

एव ततियवाराओ परेणं चउत्थवाराए तमेव अतियारं सेविऊण आउट्टंतस्स वि विसंभोगो॥२०७६॥

णिक्कारणे अमणुण्णे, सुद्धासुद्धं च जो उ उग्गोवे ।
उवधि विसंभोगो खलु, सोधी वा कारणेसुद्धो ॥२०७६॥

णिक्कारणे अमणुण्णो अण्णसंभोतितो, तेण समाणं सुद्धं असुद्धं जो उवहिं "उग्गोवेति" त्ति - उप्पाएति सो जति चोइतो णाउट्टति सो पढमवाराए चेव विसंभोगो, खलु अवधारणं, अह आउट्टति तो सोही संभोगो य, एवं तिण्णि वारा परतो विसंभोगो कारणे अण्णसंभोतितेण समाणं उवहिं उप्पाएंतो सुद्धो ॥२०७७॥ एवं पासत्थाइएहिं गिहिहिं आहाछंदेहिं य समाणं उग्गतेण सुद्धं असुद्धं वा ।

उप्पाएंतस्स इम पच्छित्तं –

संविग्गमण्णसंभोगिएहि पासत्थमाइ य गिहीहिं ।
संघाडगम्मि मासो, गुरुगा अहाछंद जं च ऽण्णं ॥२०७७॥

सविग्गेहिं अण्णसभोतिएहिं पासत्थातिसु गिहीसु य मासलहुं पच्छित्तं । अहाच्छदे मासगुरुं, अण्णे भणति – चउगुरुं । "जं चऽण्ण" ति ज तेहिं समं असुद्ध गेण्हीहि ति जं च हेट्ठा भणिय – "पासत्थस्स संघाडग

देति" त च आवज्जति । ज च अहाछंदो अहाच्छदप्पण्णवणं पण्णवेज्जा, तं गेण्हेजा, अह तुण्हिक्को अच्छति तो अणुमोयणा पडिघाए अधिकरणादि ।।२०७७।।

संजतिवग्गे चेवं, समणुण्णितराण णवरि सव्वासिं ।
संविग्गासंविग्गाण, होंति णिक्कारणे गुरुगा ।।२०७८।।

जति सजतीहिं संविग्गाहिं असंविग्गाहिं वा संभोइयाहिं असभोइयाहिं वा समाण उग्गमेण सुद्धं असुद्ध वा उवधिं उप्पाएति तो चउगुरुगं ।।२०७८।। एवं ताव पुरिसाण गतं ।

इत्थीण भण्णति –

एमेव संजतीण वि, संजतिवग्गे गिहत्थवग्गें य ।
साधम्मि एतरासु य, णवरं पुरिसेसु चउगुरुगा ।।२०७९।।

सजतीण इत्थिवग्गे जहा साधूण पुरिसवग्गे तहा वत्तव्व । जहा साधूण इत्थिवग्गे तहा तेसिं पुरिसवग्गे वत्तव्व । साहम्मगहणातो साहू, इतरगहणातो गिहत्था, णवरं-पुरिसवग्गे तेसिं चउगुरुगादि ।।२०७९।।

संघाडं दाऊणं, आउट्टंतस्स एक्कतो तिण्णि ।
ण होति विसंभोगो, तेण परं णत्थि संभोगो ।।२०८०।।

एव असंभोतितातियाण सघाडगं दाऊण पडिचोइओ आउट्टो मासलहुं संभोगो य ।
बितियवाराए वि चोतिओ आउट्टस्स मासलहुं संभोगो य ।
ततियवाराए वि चोतिओ आउट्टस्स मासलहु सभोगो य ।
चउत्थवाराए जइ देति सघाडयं तो पच्छित्तवुड्ढी मासगुरुं विसंभोगो य ।।२०८०।।
सीसो पुच्छति – पच्छित्तवुड्ढी कतिप्पगारा ?
आयरियाह –

पच्छित्तस्स विवड्ढी, सरिसट्ठाणातो विसरिसे तमेव ।
तप्पभिती अविसुद्ध मादी संभुंजतो गुरुगा ।।२०८१।।

पच्छित्तस्स वुड्ढी दुविधा – सट्ठाणवुड्ढी परट्ठाणवुड्ढी य ।

तत्थ सट्ठाणवुड्ढी तिण्णि वारा मासलहूं चउत्थवाराए तमेव मासगुरुं । एव चउलहुओ चउगुरुं छल्लहुओ छग्गुरुं । एस सट्ठाणवुड्ढी ।

परट्ठाणवुड्ढी विसरिसं –

जहा मासलहुयाओ दोमासियं, दुमासातो तेमासितं, एवं सव्वा विसरिसा परट्ठाणवुड्ढी । तओ वारा अमायी, ततो परतो णियमा मायी अविसुद्धो य, सो विसभोगी कज्जति । जो तं सभुंजति तस्स चउगुरुगा ।।२०८१।।

एमेव सेसगाण वि, अवराहपयाणि जाव तप्पभितिं ।
आउट्टिऊण पुणरवि, णिसेवमाणे विसंभोगो ।।२०८२।।

अणिहिट्ठसव्वेसु सेसेसु अवराहपदेसु सव्वेसु सट्ठाणपच्छित्तं, तिण्णि वारा आउट्टिऊणं पुणरवि चउत्थवाराए णिसेविणो सट्ठाणवुड्ढी वा परट्ठाणवुड्ढी वा पच्छित्तस्स भवति विसंभोगो य ॥२०८२॥

स किमवि कातूणऽधवा सुहुमं वा वादरं व अवराहं ।
णाउट्ट विसंभोगो, असद्दहंते असंभोगो ॥२०८३॥

अहवा – एक्कसि सुहुमं वादर वा अवराहपदं काऊण जो ण आउट्टति सो वि विसभोगी कज्जति, जो वा एयं उग्गमदारत्थं परूवियं ण सद्दहति सो वि असभोगी कज्जति ॥२०८३॥ उग्गमे त्ति दार गत ।

[1]इदाणिं "उप्पायण-एसण" त्ति दो दारा –

उप्पायणेसणासु वि, एमेव चउक्कओ पडोयारो ।
पुरिसाण पुरिस-इत्थिसु, इत्थीणं इत्थि-पुरिसेसु ॥२०८४॥

चउक्कओ इमो पडोयारो –

पुरिसा पुरिसेहिं संभोइया - अण्णसंभोतिएहि पासत्थाति ।

अहवा – गिहत्थ अहाच्छदेहिं समं एक्को पडोयारो ।

पुरिसा इत्थियाहिं संभोतिय - अण्णसंभोतिय - गिहत्थीहिं समं बितितो गमो ।

इत्थिया इत्थियाहिं संभोतिय - अण्णसंभोतिय - गिहत्थीहिं समं तइओ पडोयारो ।

इत्थिया पुरिसेहिं संभोतिया - संभोतिएहिं सव्वेहिं सम चउत्थो पडोयारो ।

"उप्पायण-एसण" त्ति अभिलावो कायव्वो । शेषं पूर्ववत् ॥२०८७॥

इदाणिं "परिकरणे" त्ति दारं ।

पडिकम्मणा णाम जं उवहिं प्पमाणप्पमाणेणं सजयपाउग्गं करेति ।

एत्थ चत्तारि भंगा –

परिकम्मणे चउभंगो, कारणविधि बितिओ कारणाअविधी ।
णिक्कारणम्मि य विधी, चउत्थो णिक्कारणे अविधी ॥२०८५॥

कारणे विधीए परिकम्मेति ॥१॥ कारणे अविधीए परिकम्मेति ॥२॥
णिक्कारणे विधीए ॥३॥ णिक्कारणे अविधीए । क्क ॥२०८५॥

कारणमणुण्ण-विधिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिण्णि ।
तवकालेहि विसिट्ठा, अंते गुरुगा य दोहिं वि ॥२०८६॥

एत्थ पढमभंगो अणुण्णातो । तेण परिकम्मंतो सुद्धो । सेसेहिं तिहिं भंगेहि मासलहु तवकालविसिट्ठा । अतिमभगे दोहि वि गुरु ॥२०८६॥

कारणमकारणे वा, विहि अविहीए उ मासिया चउरो ।
संविग्गअण्णसंभोइएसु गिहिणं तु चउलहुगा ॥२०८७॥

---

1 गा० २०७३ ।

न अपवादकारणमत्र गृहीतव्यम् । उवधेः प्रयोजनमत्र ग्राह्यम् । अतो भणति – संविग्गेहिं अण्ण-संभोतिएहिं समं कारणे विधीए अविधीए वा, णिक्कारणे विधिए अविधिए वा चउसु भंगेसु चउरो मासिया हवंति, गिहिपासत्थाइएहिं समं चउलहुगा चउरो, अहाच्छंदेहिं समं चउगुरुगा चउरो । सव्वे तवकाल-विसेसिता ॥२०८७॥

समणुण्ण-संजतीणं, परिकम्मेऊण गणहरो देति ।
संजति-जोग्ग विधीए, अविधीए चउगुरू होति ॥२०८८॥

संभोतियाणं संजतीण उवधिं विहिणा संजतिपाउग्गं गणहरो परिकम्मेत्ता देंतो य सुद्धो । अह अविधीए परिकम्मेत्ता देति तो चउगुरु ॥२०८८॥

पासत्थि अण्णसंभोइणीण विहिणा उ अविहिणा गुरुगा ।
एमेव संजतीण वि, णवरिं मणुण्णेसु वी गुरुगा ॥२०८९॥

पासत्थादीहिं असंभोतितार्हिं संजतीहिं संभोइयाहिं वा गिहत्थीहिं वा कारणे विधीए अविधीए वा, णिक्कारणे विधीए अविधीए वा उवधिं परिकम्मेति चउगुरुं तवकालविसिट्ठं । एव संजतीण वि संजतीहिं समाणं परिकम्मण करेंतीण । सजतीओ पुरिसाण परिकम्मेउ ण देंति, ण वा तेहिं समाणं परिकम्मेउं देंति । अध परिकम्मेउं देंति, तेहिं वा समाण परिकम्मेंति तो समणुण्णेसु वि चउगुरुगा तवकालविसिट्ठा ॥२०८९॥ "परिकम्मणे" त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]परिहरणे" त्ति दारं । परिहरणा णाम परिभोगो ।
कारणे विधीए परिभुंजति ।१। कारणे अविधीए ।२।
णिक्कारणे विधीए ।३। णिक्कारणे अविधीए ।४।

विधिपरिहरणे सुद्धो, अविहीए मासियं मणुण्णेसुं ।
विधि अविधि अण्णमासो लहुगा पुण होंति इतरेसुं ॥२०९०॥

"मणुण्णेसु" त्ति संभोतितेसु समाण ,पढमे भंगे उवकरणं परिभुंजतो सुद्धो, सेसेसु तिसु भंगेसु मासलहुं तवकालविसिट्ठं । अण्णसंभोइएसु समाण उवकरणं परिभुंजति । चउसु वि मासलहु तवकालविसेसियं । "इयरेसु" त्ति पासत्थाइसु गिहीसु य समं उवकरणपरिभोगे चउसु वि चउलहुगा तवकालविसेसिया । अहाच्छंदेसु चउगुरुं तवकालविसेसियं ॥२०९०॥

संजतिवग्गे गुरुगा, एमेव य संजतीण जतिवग्गे ।
णवरिं संजतिवग्गे, जह जतिणं साहुवग्गम्मि ॥२०९१॥

संजति-गिहत्थीहिं समाणं चउसु वि भंगेसु चउगुरुगा तवकालविसिट्ठा । जहा सजयाण संजतीवग्गे भणियं एवं संजतीण संजयवग्गे वत्तव्वं, णवरं- सजतीणं गिहत्थीहिं पासत्थीहिं संजतीहिं समाणं परिभोगविधी भणियव्वो, जहा संजयाण साधुवग्गे भणितं तहा भणियव्वं ॥२०९१॥ "परिहरण" त्ति दारं गत ।

---

[1] गा० २०७३ ।

इदाणि "[1]संजोयण" त्ति दार –

दस दुयए संजोगा, दस तियए चउक्कए उ पंचगमा ।
एक्को य पंचगंमी, णवरं पच्छित्त-संजोगा ॥२०६२॥

दस दुयसंजोया, दस तियसंजोया, पच चउक्कसंजोया, एक्को पंचग-संजोगो । तत्थ दस दुग्र सजोग्रा संभोतितो सभोतिएण समं उग्गमेण उप्पादणाए य सुद्धं उवहिं उप्पादेति । सभोतितो संभोइएण समं उग्गमेण एसणाए य सुद्धं उवधि उप्पाएति ।२। एवं परिकम्मणा ।३। परिहरणा ।४। एते उग्गम ग्रमुयंतेण लद्धा । एव उप्पायणं ग्रमुयंतेहिं तिण्णि लब्भति । एसणं ग्रमुयतेहिं दो लब्भंति । परिकम्मणपरिभोगे एक्को । एते सव्वे दसदुगसंजोग्रा ।

इदाणि तिय-सजोया भण्णंति –

संभोतिग्रो संभोतिएणं सह उग्गमउप्पादणेसणा सुद्धं उवहिं उप्पाएत्ति, एवं उग्गमउप्पायण-परिकम्मणाए वि ।२।, उग्गमउप्पायण परिहरणाए वि ।३। एव उवज्जिऊण दस तिगसजोगा भाणियव्वा । तहा पंच चउक्कसंजोगा भाणियव्वा । एगो य पंचगसंजोगो भाणियव्वो । एवं एते छव्वीसं भंगा ॥२०६२॥ एत्थ सभोइए समाणं सव्वत्थ सुद्धो ।

इदाणि ग्रण्णसंभोतियातीहिं भाणियव्वं । तस्य ज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

संजोय-विधि-विभागे, चउपडोयारो तहेव गमग्रो उ ।
समणुण्णाऽसमणुण्णा, इतरे एमेव इत्थी वि ॥२०६३॥

संजोग एव विधि, उग्गमादिभेदमपेक्ष्य स विधिर्विकल्पो भवति । तस्य विभागे क्रियमाणे छव्वीसं भगा भवति । एतेसु एक्के भंगे चउप्पडोयारो गमग्रो, जहा उग्गमदारे तहा विस्तरेणात्रापि ।

तथापि स्मरणार्थं सक्षेपेण इदमाह –

"समण" त्ति । साधू, ते समणुण्णा ग्रमणुण्णा, 'इतरे' गिहिपासत्थादि ग्रहाच्छंदो य, एस एक्को पडोयारो । पुरिसाणं इत्थीहिं वितिग्रो । एमेव इत्थीहिं वि दो गमा – इत्थीणं इत्थीहिं, इत्थीण पुरिसेहिं । एत्थ संजोगपच्छित्तं, जहा दुगसंजोगे जं उग्गमदोसे उप्पायणादोसे य एते दो वि दायव्वा, एवं सेसभगेसु वि सजोगपच्छित्तं ॥२०६३॥ "उवहि" त्ति दार गयं ।

इदाणि "सुत्ते" त्ति दारं –

वायण[1] पडिपुच्छण[2], पुच्छणा[3] य परियट्टणा[4] य कधणा[5] य ।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, छट्ठाणा होंति उ सुतम्मि ॥२०६४॥

संभोतितो संभोइयं विधिणा वाएति सुद्धो । ग्रविधीए ग्रणिसिज्ज ग्रपात्र पात्रं वा ण वाएति, एवं ग्रविधीए वायतस्स पच्छित्तं ॥२०६४॥

ग्रसंभोतिगो वा –

ग्रण्णे वायण लहुगो, पासत्थादीसु लहुग गुरुगा य ।
सट्ठाणे इत्थीसु त्रि, एमेव-त्रिवज्जए गुरुगा ॥२०६५॥

---

१ गा० २०७३ ।

अण्णं संभोइयं अविधिमागयं अणुवसंपण्णं वा वाएति मासलहुं, पासत्थादी गिही वा वाएति चउलहुं, अहाच्छंदं वाएंतस्स चउगुरुगा - एस एक्को पडोयारो — बितिम्रो इत्थीणं इत्थीवग्गे एवं चेव पच्छित्तं जं पुरिसाणं सट्ठाणे। विवज्जते गुरुगा। पुरिसाणं इत्थीवायणाए चउगुरुगा ततिम्रो गमो। इत्थीणं पुरिस-वायणाए चउगुरुगा चेव, चउत्थो गमो। वायणा गता।

इदाणिं "[1]पडिपुच्छणे" त्ति एत्थ वि चत्तारि - पडोयारा पायच्छित्ता भाणियव्वा।

एवं "पुच्छणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

"परियट्टणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

"अणुओगकहणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

संक्षेपेन एव विधिः, सो छव्वीसतिभंगविभागेण विभत्तो, एत्थ वि चत्तारि पडोयारा ॥२०९५॥

इदाणिं एतेसु वायणादिसु साववातं विशेषमाह —

पडिपुच्छं अमणुण्णे, वि देंति ते वि यतओ पडिच्छंति।
अण्णासती अमणुण्णीण देंति सव्वाणि वि पदाणि ॥२०९६॥

अमणुण्णे पडिपुच्छं देति, ते वि अमणुण्णा ततो पडिपुच्छं दिज्जंतं पडिच्छंति न दोष.। संजतीण जइ आयरियं मोत्तु अण्णा पवत्तिणीमाती वायंती णत्थि, आयरिओ वायणातीणि सव्वाणि एताणि देति न दोषः ॥२०९६॥ "सुत्ते" त्ति दार गतं।

इदाणिं "[2]भत्त-पाणे" त्ति दारं —

उग्गम[1] उप्पायण[2] एसणा[3] य[4] संभुंजणा[5] णिसिरणा य।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, भत्ते पाणे वि छट्ठाणा ॥२०९७॥

अस्य व्याख्या सदृशस्यातिदेश. —

जो चेव य उवधिम्मि, गमो तु सो चेव भत्त-पाणम्मि।
भुंजणवज्ज मणुण्णे, तिण्णि दिणे कुणति पाहुण्णं ॥२०९८॥

जहा उवहिम्मि उग्गम-उप्पायण-एसणासु भणिय चउपडोयारं तहा इहापि भाणियव्व भुजणमेग दार वज्जेउं। णवर - आहारे पि अभिलावविसेसो।

इदाणिं "[3]भुंजणे" त्ति दारं — समणुण्णो समणुण्णेण समं भुजंतो सुद्धो, समणुण्णे य तिण्णि दिणे पाहुण्णं करेति, अह ण करेति अविधीए भुजति अपरिहेण वा कुट्ट-क्खयाति-सहिएण सम भुजति तो चउलहुं विसंभोगो य। अण्णसंभोइएण सम भुजति मासलहुं, तस्स वि तिण्णि दिणे पाहुण्णं करेति ॥२०९८॥

इमेण विधिणा —

ठवणाकुले व मुंचति, पुव्वगतो वा वि अहव संघाडं।
अविसुद्ध भुंजगुरुगा, अविगडितेणं च अण्णेणं ॥२०९९॥

---

१ गा० २०९४। २ गा० २०७१। ३ गा० २०९७।

ठवणकुले वा मुंचति, सड्ढाइ ठवणकुलेसु वा पुव्वगतो दव्वावेति, अहवा – सघाडयं देति । "अविगडियेणं च अण्णेण" त्ति अह अण्णसंभोतिएण सम अणाभोतिए एगमडलीए भुजति तो मासलहुं तिण्णि वारा, परतो मासगुरुं विसंभोगे य । जो तं अविसुद्धं भुजति तस्स चउगुरुगा । एव जत्थ चउलहुगा तस्स तिण्णि वारा आउट्टतस्स चउलहुं चेव, चउत्थवाराए चउलहुगा विसंभोगो य । जो त अविसुद्धं भुजति तस्स चउलहुगा । एव जत्थ चउगुरुं तत्थ आउट्टंतस्स तिण्णि वारा चउगुरुं चेव, चउत्थवाराए छल्लहुं । जो त संभुंजति तस्स चउगुरुं । एवं सव्वतवारिहेसु वत्तव्व ॥२०९९॥

समणि मणुण्णी छेदो, अमणुण्णी भुंजणे भवे मूलं ।
पासत्थे केयि छल्लहु, सच्छंदेणं तु छग्गुरुगा ॥२१००॥

समणीए मणुण्णाए सम एगमडलीए भुंजति छेदो, अण्णसंभोतिणीए मूल, पासत्थादि-गिहत्थेसु चउलहुयं, अहच्छंदे चउगुरुयं ।

केइ आयरिया भणंति–पासत्थाइगिहत्थेसु छल्लहुं, अहच्छदे छग्गुरु । जहा साधूण सपक्ख-परपक्खेसु भणियं, एवं संजतीण वि सपक्ख-परपक्खेसु वत्तव्वं ॥२१००॥ "भुंजणे" त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]णिसिरणे" त्ति दारं –

समणुण्णस्स विधीए, सुद्धो णिसिरंतो भत्त-पाणं तु ।
अमणुण्णेतरसंजति, लहुओ लहुगा य गुरुगा य ॥२१०१॥

समणुण्णो संभोतितो, तस्स आसण्णा वलियविधीए णिसिरतो सुद्धो । "अमणुण्णेयर" त्ति - पासत्थाती गिहत्था य, अहाछदा सजतीओ य । जहा सखं पच्छित्तं – लहुओ लहुआ अधाच्छदसजतीसु गुरुगा । एव सजतीण वि सपक्ख-परपक्खेसु णिसिरणं पच्छित्तं च वत्तव्व ॥२१०१॥

भुंजण-वज्ज-पदाणं, कज्जे अणुण्णातु अधव थी-वज्जा ।
अण्णे भायण असती, इतरे व सति सढे वा वि ॥२१०२॥

अण्णसंभोइयाईणं भुजणपदं वज्जेऊणं अण्णेसु सव्वपदेसु असिवादि-कज्जेसु अणुण्णा, भोयणे वि अणुण्णा, कारणे इत्थीओ मोत्तूण । "अण्णे" त्ति अण्णसभोतिया, तेसिं भायणस्स असतीए ।

कह पुण भायणस्स असती होज्जा ? तेसु सिया अण्णसंभोतियाण साहूण सगासमागता तेसिं च भायणाणि भरियाणि ताहे ओहेणालोएत्ता एगट्ठ भुजति । "इतरे" णाम पासत्थातीहिं तेहिं समं एरिसा चेव भायणाण असती होज्जा ते वा साधूहिं समं भुंजेज्ज ।

अहवा – एरिसा चेव भायणा असतीए अण्णसंभोइयाहिं समं संखडीए उवट्ठिया तत्थ तेण संखडित्तेण भोयणं सव्वेसिं णिसट्ठं, अण्णसंभोतियाति-भायणेसु गहिय "सढे वा वि" त्ति - सढा भणेज्ज – "उट्ठेह भायणाणि" जाहे भागो दिज्जति ।

अहवा – अम्हेहिं समं भुंजह ते जाणति न एते अम्हेहिं समं भुंजिहिंति, एयं भत्तपाणं सव्वं अम्हं चेव होति, एते सढा णाऊणं भायणेसु वा गेण्हे एगट्ठ वा भुंजे ॥२१०२॥ "भत्तपाणे" त्ति गयं ।

१ गा० २०६७ । २ गा० २०७१ ।

इदाणिं "अंजलिपग्गहे" त्ति दारं –

वंदिय[1] पणमिय[2] अंजलि[3], गुरुग्रालावे[4] अभिग्गह णिसिज्जा[5] ।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, अंजलि पग्गहे वि छट्ठाणा ॥२१०३॥
पणवीसजुतं पुण, होइ वंदणं पणमितं तु मुद्धेणं ।
हत्थुस्सेह णमो त्ति य, णिसज्ज करणं च तिण्हट्ठा ॥२१०४॥

पणवीसावसयजुत्त वंदण – गाहा – चउसिरं बारसावत्तं, दुपवेसं दुग्रोणय तिगुत्तं च ।
अहाजाय णिक्खमेगं, वंदणयं पणवीसजुयं ।

मुद्धाणं सिर तेण पमाणकरणं भण्णति, एगेण वा दोहिं वा मउलिएहिं हत्थेहिं णिडालसंठितेहिं अजली भण्णति । भत्ति-बहुमाण-णेह भरितो सरभस "णमो खमासमणाणं ति" तो गुरुग्रालावो भण्णति । णिसज्जकरणं तिण्हट्ठा सुत्तपोरिसीए अत्थपोरिसीए ततिया आलोयण णिमित्तं अवराहालोयणा पक्खियाइसु वा एसा अभिग्गह-णिसेज्जा भण्णति । एयाणि सव्वाणि संभोइयाणं अण्णसंभोइयाण य संविग्गाण करेंतो सुद्धो ॥२१०४॥

पासत्थाइयाण करेति, संविग्गाण ण करेति तो इम पच्छत्त –

इतरेसु होंति लहुगा, संजति गुरुगा य जं च आसंका ।
सेसाऽकरणे लहुओ, लहुगा वत्थुं वा आसज्ज ॥२१०५॥

इतरा पासत्थाइया गिहत्था य, तेसु वदणं करेतस्स चउलहुं, जति संजतीण वदणं करेति तो चउगुरुगं, 'ज च" त्ति अन्यच्च आसंका भवति किं मेहुणत्थी, अह कुवियं पसादेति ।

अहवा – जं च आसकिते पच्छित्त च पावति, सकिते छ्, णिस्सकिते मूल । सेसाणं - संभोतियाअसभोतिताणं संविग्गाण वदणस्स अकरणे मासलहुं, आयरियाति-वत्थु वा आसज्ज चउव्विहं भवति–आयरियस्स वदण ण करेति चउलहु, उवज्झायस्स ण करेति मासगुरु, भिक्खुस्स मासलहु, खुड्डुस्स भिण्णमासो ॥२१०५॥

अविरुद्धा सव्वपदा, उवस्सए होंति संजतीणं तु ।
अतिघरपत्तगुरुम्मि य, बहिया गुरुगा य आणादी ॥२१०६॥

साधु-उवस्सए पक्खियातिसु आगताण सजतीण वदणातिया पदा सव्वे अविरुद्धा भवति । अह बाहिं भिक्खाद्गिताओ वदणादि करेंति तो चउगुरुगा आणादिया य दोसा, सकातिया य ।

किं ण पमाणेण विण्णवितो होज्ज ? सपक्खे पुण बहिणिग्गता वंदणाति-करेंति जह साहू साहूणं । संजोगे छव्वीसं भंगा ॥२१०६॥ "अभिग्गह-णिसज्ज" त्ति गत ।

इदाणिं "[1]दावणं" त्ति दारं –

सेज्जोवहि[1] आहारे[2], सीसगणाणुप्पदाण[3] सज्झाए[4] ।
संजोग[5]-विहि-विभत्ता, दवावणाए वि छट्ठाणा ॥२१०७॥

सेज्जोवहि आहारो एते तिण्णि जहा णिसिरणद्दारे, सज्झाओ जहा सुत्तद्दारे ॥२१०७॥

---

[1] गा० २०११ ।

सीसगणाणुप्पत्ताणे त्ति अस्य व्याख्या –

सीसगणम्मि विसेसो, अण्णेसु वि कारणे हरा लहुओ ।
इयरेसि देंति गुरुगा, संजतिवग्गे य जो देति ॥२१०८॥

सीसगणाणुप्पयाणं एक्के विसेसो, सेसा दो पूर्ववत् ।

"अण्णे" त्ति अण्णसंभोतिया, तेसु सुअ-वत्थाइयेहिं संगहं कातुं असत्तेसु एएण कारणेण देंतो सुद्धो, इहर त्ति णिक्कारणा सीसगणं देंति तो मासलहुं, पासत्थादीण देति चतुगुरुगा, जति सजतिवग्गे संजतिं देति तस्स वि चतुगुरुगं ॥२१०८॥

समणी उ देति उभयं, जतीण जतो वि सिस्सिणी तीए ।
छंदनिकाय निमंतण, एगट्ठा तत्थ वि तहेव ॥२१०९॥

समणी संभोइयाण उभयं पि देति सुद्धा । उभयं पि णाम सीस सीसिणिं । "जतो" त्ति - साधू, सो वि संभोतियाए संजतीए सिस्सिणिं देंतो सुद्धो । "दावण" ति गयं ।

इयाणि "[1]णिकायण" त्ति दारं –

"छंदणं ति वा "णिकायणं" त्ति वा "णिमतणं" त्ति वा एगट्ठं ॥२१०९॥

सेज्जोवहि[1,2] आहारे,[3] सीसगणाणुप्पदाण[4] सज्झाए[5] ।
संजोग-विधि-विभत्ता,[6] णिकायणाए वि छट्ठाणा ॥२११०॥

जहेव दावणा-दारं, तहेव णिकायणा-दारं पि अविसेसं भाणियव्वं ॥२११०॥ णिकायण त्ति गयं ।

इयाणि "[2]अब्भुट्ठाणे" त्ति दार ।

तस्सिमाणि छद्दाराणि –

अब्भुट्ठाणे[1] आसण,[2] किंकर[3] अब्भासकरण[4] अविभत्ती[5] ।
संजोग-विधि-विभत्ता,[6] अब्भुट्ठाणे वि छट्ठाणा ॥२१११॥

जह चेव य कितिकम्मे, तह चेव य होति किंकरो जाव ।
सव्वेसिं पि भुताणं, धम्मे अब्भासकरणं तु ॥२११२॥

अब्भुट्ठाणादिया-जाव-किंकरो एते तिण्णि दारा जहा कितिकम्मं तहा वत्तव्वं । एत्थ पुण किति-कम्मं-वंदण, तं च पज्जायवयणेण अंजलिपग्गहो भणिओ, आयरियस्स छंद अणुवत्तति-किं करेमि त्ति किंकर', गिलाणस्स पाहुणयस्स य आगयस्स भणाति–संदिसह विस्सामणादि किं करेमि त्ति ।

"[3]अब्भासकरण त्ति दारं – अभ्यासे वर्तयति अभ्यासवर्ती, अभ्यास करोतीत्यर्थ । सव्वेसिं पि चउव्विह-समण-संघातो जो सामत्थे करेंतो सुद्धो अकरेंतस्स पच्छित्त विसभोगो य ।

---

१ गा० २०५१ । २ गा० २०७१ । ३ गा० २१११ ।

इदाणिं "[1]अविभत्ती दारस्स" इम वक्खाणं –

भुंजण-वज्जा अण्णे, अविभत्ती इतर लहुग गुरुगा य ।
संजति थेर-विभत्ती, माता इतरीसु गुरुगा उ ॥२११३॥

एगट्ठभोयणं मोत्तूण अण्णसंभोतिताण वि अविभत्तिं करेंतो सुद्धो, पासत्थाइगिहत्थेसु जइ अविभत्ति करेति तो चउलहुगा, अहच्छंदे चउगुरुगा, संजतीण जा थेरी सविग्गा तीसे इमेरिसी अविभत्ती कायव्वा-तुम मम माया वा भगिणी वा जारिसी, णाहं तुज्झ अप्पणो मायाए भइणीए वा विसेसं मण्णामि । "इयरीसु" त्ति पासत्थाइयासु गिहत्थीसु अविभत्तिं करेति चउगुरुगा, संविग्गासु तरुणिसजतीसु जइ अविभत्तिं करेति असुद्ध-भावितो चउगुरुगा, अह च सुद्धभावो करेति तो सुद्धो ॥२११३॥ "अब्भुट्ठाणे" त्ति गय ।

इयाणि "[2]कितिकम्मस य करणं" त्ति दारं ।

तस्स इमाणि छद्दाराणि –

सुत्तायामसिरोणत, मुद्धाणं सुत्तवज्जियं चेव ।
संजोग-विधि-विभत्ता, छट्ठाणा होंति कितिकम्मे ॥२११४॥
सुत्तं कड्ढति वेट्ठो, उट्ठ-णिवेसादि ण तरती काउं ।
आयामे पुण वेट्ठो, करोति वितिओ ससुत्तपरो ॥२११५॥

जो साहू वाएण गहितो उट्ठेऊण णिवेसिउ वा ण सक्केति, हत्थावि से वातेण गहिता चालेऊ ण तरति, ताहे सो आवत्ते दाउ असत्तो णिविट्ठो चेव वंदणगसुत्तं अक्खलियादि प्रतिपद कड्ढति । सुत्ते त्ति गत ।

इदाणिं "[3]आयाम" त्ति अस्य व्याख्या –

आयामे पच्छद्धं । उट्ठेउं णिवेसिउ वा असत्तो उवविट्ठो चेव आवत्ते ससुत्ते करेउ तरति ।

अहवा – पूर्वात् (अ) क्लिष्टतरो यस्मात् स सूत्रानावर्तान् करोति ॥२११५॥ आयामे त्ति गतं ।

इदाणिं "[4]सिरोणय" ति दारं, अस्य व्याख्या –

रातिणिय-सारिअतरणं, सिरप्पणामं करेति ततिओ उ ।
महुरोगी आयामे, मुद्ध समत्ते ऽधव गिलाणो ॥२११६॥

कम्मि य गच्छे कस्स ति साहुस्स ओमरातिणिओ आयरिओ होज्ज, तेणं आयरिएणं मज्झिमए वदणए रातिणियस्स वंदणं दायव्व, तेण य रातिणिएणं सो आयरिओ वुत्तओ होज्ज – मा तुमं मम वदणयं देज्जह, मा सेहा परिभविस्संति त्ति काउं, ताहे सो सिरेणं पणामं करेति, सुत्तं उच्चारेउं, सागारिए वा सुत्तं अणुच्चारेऊण सिरप्पणाम करेति । "अतरणे" त्ति - गिलाणो, सो वि एवं चेव । "सिरोणयं" ति गयं ।

इदाणिं "[5]मुद्धाण" – समत्ते वंदणे जं आयरिओ पणाम करेति एयं मुद्धाण अह व असत्तो गिलाणो मुद्धमेव केवलं पणामेति, मुद्धाणं आवत्तं सूत्रादिवर्जिता मूर्ध्नं एव केवला क्रिया इत्यर्थ ॥२११६॥ "मुद्धाणं" ति गयं ।

---

१ गा० २१११ । २ गा० २०७२ । ३ गा० २११४ । ४ गा० २११४ । ५ गा० २११४ ।

इयाणिं "[1]सुत्तवज्जिउं" ति अस्य व्याख्या –

"मुहरोगी आयामे" एस सव्वं उट्ठणिवेसावत्तादि करेति, मुहरोगे सुत्तं उच्चारेउं ण सक्केति, मणसा पुण कड्ढति। छट्ठे वि "[2]संजोगद्दारे" सजोगा भाणियव्वा।

जह चेवऽब्भुट्ठाणे, चउक्कभयणा तहेव कितिकम्मे।
संजति संजयकरणे, ण मुद्ध केई तु रयहरणं ॥२११७॥

जहा अब्भुट्ठाणदारे वुत्तं तहेव इह पि।

चउक्कभयणा णाम –

संजता संजताणं। संजया संजईण।

संजतीओ संजयाण। संजतीओ संजतीण।

सपायच्छित्तं जहा कितिकम्मे वि तहा कायव्वमित्यर्थः। जत्थ संजतीओ संजयाण कितिकम्मं करेंति तत्थ सव्वं उद्धट्ठिता सुत्तावत्ताइ करेंति, ण मुद्धाणं ठिए रयहरणे पाडेंति।

इह केयी आयरिया भणंति –

उद्धट्ठिता चेव रयोहरणे सिरे पणामेंति, तं चेव तेसिं मुद्धाणं ॥२११७॥ कित्तिकम्मकरणे त्ति गत।

इयाणिं "[3]वेयावच्चकरणे" त्ति दारं –

आहार[1] उवहि[2] विमत्ता[3], अधिकरण-विओसणा[4] य सुसहाए[5]।
संजोग[6]-विहि-विभत्ता, वेयावच्चे वि छट्ठाणा ॥२११८॥

अधिकरणं कलहो, तस्स विविधं ओसवणं विओसवणं ॥२११८॥

ओसवणं अधिकरणे, सव्वेसु वि सेस जह उ आहारे।
असहायस्स सहायं, कुसहाए वा जहा सीसे ॥२११९॥

त अधिकरणं उप्पण्णा सव्वेहिं उवसमियव्वं मोत्तु गिहत्थो। सेसा आहार उवहि मत्तओ य जहा आहारे तहा वत्तव्वं, णवरं – तिण्णि मत्तया-उच्चारे पासवणे खेलमत्तओ य।

"[4]सुसहाय" त्ति अस्य व्याख्या –

असहायस्स सहायं देति, कुसहायस्स वा सुसहायं देति। एवं जह सीसगणप्पदाणे तहा इमं पि दट्ठव्वं, णवरं – अजाणं सहायो वि दिज्जति पंथाइसु, जति ण देंति तो चउलहु ॥२११९॥ वेयावच्चे त्ति गत।

इदाणिं "[5]समोसरणे" त्ति दारं –

वास[1] उडु[2] अहालंदे, साहारोग्गह[3] पुहत्त इत्तरिए[4]।
वुड्ढा[5] वास समोसरणे[6], छट्ठाणा होंति पविभत्ता ॥२१२०॥

---

१ गा० २११४। २ गा० २११४। गा० २०७२। ४ गा० २११८। ५ गा० २०७२।

एत्थ णत्थि संजोगो, पूरेंति चेव छप्पया—वासा, उडु, अहालंदे त्ति, इत्तरीए, वुड्डवासे, समोसरणे। एते संजोगवज्जिया छप्पया।

अहवा — आएसंतरेण इमे छप्पया।

वास उडु अहालंदे, एते च्चिय होंति छप्पया गुणिता।
साधारणोग्गहेणं, पत्तेगेणं तुभयकाले ॥२१२१॥

वासोग्गहो, उडुबद्धोग्गहो, अहालदोग्गहो, एते तिण्णि वि उडुबद्ध-वासाकाले साधारण-पत्तेगेण य दोहिं गुणिया छप्पया भवंति। इत्तरिओ वुड्डवासो समोसरणोग्गहो य एते उडुबद्धवासोग्गहेसु पइट्ठा।

अहवा — इत्तिरिओ समोसरणोग्गहो य अहालंदे पइट्ठा। वुड्ढ.वासो उडुबद्धवासोग्गहेसु पइट्ठो।

वासोग्गहो दुविधो — साधारणोग्गहो पत्तेगो य। एव उडुबद्धोग्गहो वि, एव अहालंदोग्गहो वि ॥२१२१॥

पडिबद्धलंदि उग्गह, जं णिस्साए तु तस्स तो होति।
रुक्खादी पुव्वठिते, इत्तरि वुड्ढे स ण्हाणादी ॥२१२२॥

जे अहालंदिया गच्छपडिबद्धा तेसिं जो उग्गहो सो जं निस्साए आयरिय विहरति तस्स सो "उग्गहो" भवति। रुक्खाति-हेट्ठिताण वीसमणट्ठा इत्तरिओ उग्गहो भवति। तत्थ जो पुव्व अणुण्णावेउ ठितो तस्स सो उग्गहो। अध समगं अणुण्णविउं ताहे साधारणो भवति। वुड्ढावासोग्गहो जंघाबलपरिखीणस्स भवति। सो वि साधारण पत्तेगो भवति। समोसरणं ण्हाण अणुयाण पडिमाति-महिमा एतेसु साहू मिलति तं समोसरण। एत्थ पत्तेयो ण भवति ॥२१२२॥

साधारण-पत्तेगो, चरिमं उज्जित्त उग्गहो होति।
गेण्हमदेंताऽऽरुवणा, सच्चिताचित्तणिप्फण्णा ॥२१२३॥

आइल्ला पंच दुविधा — साधारणा होज्ज, पत्तेगा वा। चरिमो णाम समोसरण, तत्थ उग्गहो णत्थि, तत्थ वसहीए उग्गहमग्गणा, वसही साधारणा पत्तेया वा, एतेसु उग्गहेसु आउट्टियाए अणाभव्वं गेण्हंताणं अणाभोगेण वा पुव्वोग्गहिय अदेंताणं "आरुवण" त्ति-पच्छित्त भवति। तं सचित्ताचित्तणिप्फण्ण, अचित्ते उवहि-णिप्फण्ण, सचित्ते चउगुरुं, आएसेण अणवट्ठो ॥२१२३॥

समणुण्णमणुण्णे वा, अदितऽणाभव्वगेण्हमाणे वा।
संभोग वीसु करणं, इतरे य अलंभे य पेल्लति ॥२१२४॥

संभोतितो जो अणाभव्वं गेण्हंति गहिय वा ण देति सो संभोगातो वीसु पृथक् क्रियते। असभोइओ वि अणाहव्वं गेण्हति, गहियं वा ण देति, जेसिं सो संभोइओ ते तं विसंभोग करेंति। 'इयरे" त्ति-पासत्थाती, तेसिं णत्थि उग्गहो, अणुग्गहे वि पासत्थाइयाण जति खुड्डगं खेत्तं अण्णओ य सविग्गा संथरता पेल्लंति तत्थ सचित्ताचित्तणिप्फण्णं। अह पासत्थादियाण वित्थिण्णं खेत्तं, ते य ण देंति, अण्णतो य असथरता, ताहे संविग्गा पेल्लं त्ति, सचित्ताइयं च गेण्हता सुद्धा ॥२१२४॥ समोसरणे त्ति दार गतं।

इदाणिं "[1]सण्णिसेज्ज" त्ति दारं –

परियट्टणाणुओगो, वागरण पडिच्छणा य आलोए ।
संजोग-विधि-विभत्ता, सण्णिसेज्जे वि छट्ठाणा ॥२१२५॥

सणिसेज्जो व गतो पुण, तग्गतेण परियट्टणे हवति सुद्धो ।
अण्णेण होति लहुओ, इतरे लहुगा य गुरुगा य ॥२१२६॥

दोण्णि आयरिया संभोतिया संघाडएण परियट्टति, पत्तेयं णिसेज्जगता सुद्धा, तग्गएण णिसिज्जा-गतेणेत्यर्थ. । अह अण्णसंभोतिएण तो मासलहुं भवति । "इतरेहिं" ति पासत्थाइएहिं गिहत्थेहिं य समं तो चउलहुं । अहाच्छंदगिहत्थीहिं संजतीहिं च समं णिक्कारणे परियट्टेति चउगुरुं । संजतीण वि इत्थीपुरिसेसु एयं चेव भाणियव्व ॥२१२६॥ "परियट्टणे" त्ति गत ।

इदाणिं "[2]अणुओगे" त्ति दारं –

अणिसेज्जा अणुओगं, सुणेंति लहुगा उ होंति देंते य ।
वागरण णिसेज्जगतो, इतरेसु वि देंतऽसुद्धो तु ॥२१२७॥

अक्ख - णिसेजाए विणा अणुओगं कहेंतस्स सुणेंतस्स य चउलहुगा । संजतीण अक्ख णिसेज्जा णत्थि । सेसं विधि करेति ।

इयाणिं "वागरणे" त्ति पृष्टः सन् व्याकरोति" "वागरणं" पच्छद्धं । इतरे णाम पासत्थादी, अपिशब्दात् गिहत्थाण वि गिहत्थीण वि संजतीण वि देंतो असुद्धो ॥२१२७॥

"[1]पडिपुच्छणालोए" त्ति दो दारा एगट्ठ वक्खाणेति –

जो उ णिसज्जोवगतो, पडिपुच्छे वा वि अह व आलोवे ।
लहुया य विसंभोगो, समणुण्णो होति अण्णो वा ॥२१२८॥

णिसज्जाए उवविट्ठो णिसज्जोवगतो भवति, जति सुत्तमत्थं वा पडिच्छति ।

अहवा – णिसेज्जोवविट्ठो आलोयणं देति तस्स मासलहु । अणाउट्टतो य विसंभोगो कज्जति । समणुण्णो वि जो उवसंपण्णो सो, विसंभोगी कज्जति ।

अहवा – जेसिं सो संभोतिगो से विसंभोगं करेंति ॥२१२८॥

इदाणिं "[2]सजोगो" त्ति छट्ठ दारं जहा सभवं भाणियव्वं। सण्णिसेज्ज त्ति गतं।

इयाणिं [3]कहाए पबंधणे" त्ति दारं –

वादो जप्प वितंडा, पइण्णग-कहा य णिच्छय-कहा य ।
संजोग-विहि-विभत्ता, कध-पडिवन्धे वि छट्ठाणा ॥२१२९॥

---

१ गा २०७० । २ गा० २११५ । ३ गा० २०७२ ।

वादं जप्प वितंडं, सव्वेहि वि कुणति समणि-वज्जेहिं ।
समणीण वि पडिकुट्ठा, होंति सपक्खे वि तिण्हि कहा ॥२१३०॥

मतमभ्युपगम्य पंचावयवेन त्र्यवयवेन वा पक्ष-प्रतिपक्षपरिग्रहात् छलजातिविरहितो भूतार्थान्वेषणपरो वादः ।

परिगृह्य सिद्धान्तं प्रमाणं च छल-जाति-निग्रह-स्थानपरं भाषण यत्र जल्प. ।

यत्रैकस्य पक्षपरिग्रहो, नापरस्य, दूषणमात्रप्रवृत्तः स वितंडः ।

साधू वाद जल्पं वितंडं वा एता तिण्णि वि कहा समणीवज्जेहिं असंभोतियातीहिं सव्वेहिं अण्णतित्थिएहिं वि समं करेति । समणीण समणीओ सपक्खो, तेहिं वि समाणं तिण्णि – वाद-जल्प-वितंड - कहा य पडिकुट्ठा प्रतिषिद्धा इत्यर्थः ॥२१३०॥

उस्सग्गा पइन्न-कहा य, अववातो होति णिच्छय-कथा तु ।
अहवा ववहारणया, पइण्णसुद्धा य णिच्छइगा ॥२१३१॥

उस्सग्गो पइन्नकहा भण्णति, अववातो णिच्छयकहा भण्णति ।

अहवा – णेगम-संगह-ववहारेहिं जं कहिज्जति सा पइण्णकहा, रिजुसुत्तादिएहिं सुद्धणएहिं जं कहिज्जति सा णिच्छयकहा ॥२१३१॥ एस बारस विहो ओहो ।

इमो विभागो –

बारस य चउव्वीसा, छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य ।
बावत्तरी विभत्ता, चोयालसयं तु संभोए ॥२१३२॥

सव्वे बावत्तरी तिगादिएहिं गुणिया इमं भवति –

दो चेव सया सोला, अट्ठासीया तहेव दोण्णि सया ।
तिण्णि य सट्ठिसयाइं, चत्तारि सया य बत्तीसा ॥२१३३॥

जहा बारस दुगातिएहिं गुणिया इमं भवति –

बारस य चउव्वीसा, छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य ।
बावत्तरि छग्गुणिया, चत्तारि सया तु बत्तीसा ॥२१३४॥

तहा बावत्तरीवि दुगादिएहिं गुणिया पज्जते छग्गुणिया चत्तारि सया तु बत्तीसा भवति ।

एतेसिं तु पदाणं, करणे संभोग अकरणे इतरो ।
दोहि विमुक्के चउवीस होंति तस्सहिते इतरो उ ॥२१३५॥

एतेसिं ओहसंभोतियपदाण दुगमाइगुणकारुप्पण्णाण विभागपदाणं जहुत्ताण करणे संभोगो, अकरणे पुण "इतरे" त्ति विसंभोग इत्यर्थः । इयाणिं दुगातिगुणकारसरूवं भण्णति – "दोहिं" पच्छद्ध । ते चेव बारस दोहिं

रागदोसविप्पमुक्कस्स चउव्वीसतिविधो संभोगो भवति, तेहिं चेव सहितस्स चउव्वीसतिविधो विसंभोगो भवति ॥२१३५॥

णाणादी छत्तीसा, चउक्कसायविवज्जितस्स अडयाला।
संवर सट्ठि दुसत्तरि, छहि अहव त एव छद्दारा ॥२१३६॥

एवं णाण-दंसण-चरित्तेहि तिहिं गुणिता बारस छत्तीसतिविधो संभोगो भवति।

अण्णाणादिएहिं तिहिं छत्तीसतिविधो विसंभोगो भवति।

चउक्कसायावगयस्स चउग्गुणा बारस अडयालीसतिविधो संभोगो, सो चेव चउक्कसायसहियस्स विसंभोगो। संवरो पंचमहव्वयाति, तेहिं गुणिया सट्ठी। रातीभोयणसहितेहिं छग्गुणिया वारस बावत्तरी भवंति।

अधवा – उवधिमातिया त एव बारसदारा एक्केक्कं छव्विध, ते मिलिया बावत्तरी भवंति जहा बारस दुगातिएहिं गुणिया ॥२१३६॥ एवं –

बावत्तरिं पि तह चेव, कुणसु रागादिएसु संगुणितं।
अकप्पादि छहि पदेहिं, चत्तारि सया उ बत्तीसा ॥२१३७॥

अकप्पो, आदिसद्दातो गिहिभायणं, पलियंक णिसेज्जा, सिणाणं, सोभकरणं।

अहवा – अकप्पछक्कं, आदिसद्दातो वयछक्क कायछक्कं च। एतेसिं अण्णतरेण छक्केण गुणिया बावत्तरि, चत्तारि सता बत्तीसा भवंति ॥२१३७॥ "ओहे" त्ति दारं गतं।

इदाणिं "अभिग्गहे" त्ति दारं –

अभिग्गहसंभोगो पुण, णायव्वो तवे दुवालसविधम्मि।
दाणग्गहेण दुविधो, सपक्खपरपक्खतो भइतो ॥२१३८॥

अभिरामिमुख्येन ग्रहो अभिग्गहो, सो वि तवे दुवालसविधे जहासत्तीए अभिग्गहो घेत्तव्वो, सत्ति परिहावेमाणस्स पच्छित्तं।

इदाणिं "[1]दाणग्गहणे" त्ति दारं –

दाणग्गहणे दुविधो संभोगो – सपक्खे परपक्खे य।

एत्थ चउक्को भंगो –

दाणं गहणं, एत्थ संभोतिता। दाणं नो गहणं, एत्थ सजतितो।

नो दाणं गहणं, एत्थ गिहत्था। नो दाणं नो गहणं, एत्थ पासत्थाती।

पढम-बितिया सवक्खे, ततितो परपक्खे। चउत्थो संभोगं पति सुण्णो ॥२१३८॥ दाणग्गहणे त्ति दार गतं।

इदाणिं "[2]अणुपालण" त्ति दारं –

अणुपालण-संभोगो, णायव्वो होति संजतीवग्गे।
उववाते संभोगो, पंचविधुवसंपदाए तु ॥२१३९॥

१ गा० २०७१। २ गा० २०७१।

खेत्तोवहिसेज्जाइएसु खेत्तसंकमणेसु य संजतीओ विधीए अणुपालेयव्वातो ।

इदाणिं "[1]उववाते" ति पच्छद्धं – उववातो उवसंपज्जणं, उवसंपताए सभोगो भवति ॥२१३९॥

सा य उवसंपया इमा पंचविधा –

सुत सुह-दुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होइ बोधव्वो ।
उववाते संभोगो, पंचविगप्पो भवति एसो ॥२१४०॥

सुत्तत्थाण णिमित्त उवसंपया सुत्तोवसपया ।

सुहदुक्खोवसपया धाउविसवादादिएहिं अहिडक्कातीहिं वा आगंतुगेहिं बहुं पच्चवायं माणुस्सं जाणिऊण अण्णतरेण मे रोगातकेण वाहियस्स ममेते वेयावच्च काहिंति, अहं पि एतेसिं करिस्सामि अतो असहायो गच्छे उवसपयं पवज्जति । एस सुहदुक्खोवसंपया ।

एक्कस्स आयरियस्स बहुगुणं खेत्तं तमण्णो आयरिओ जाणिऊण अणुजाणावेऊण तस्स खेत्ते ठायति एस खेत्तोवसंपया ।

दुवे आयरिया आणदपुरातो महुरं गतुकामा ताण एक्को देसितो एक्को अदेसितो ।

देसिओ अप्पणो पुरिसकारेण पत्थिओ ।

अदेसिओ विसण्णो, देसियं भणति – अहं तुहप्पभावेण तुमे समाणं महुर गच्छे ।

देसितो तस्सोवसंपण्णस्स मग्गाणुरूवं उवएसं पयच्छति, एस मग्गोवसंपदा गया ।

सुरट्ठाविसए दुवे आयरिया, एगो तत्थ वत्थव्वो, सो आगतुगस्स सुगम-दुग्गमे मग्गे सुहविहारे य खेत्ते सव्वं कहेति, सचित्ताइयं उप्पण्णं सव्वं तेण वत्थव्वस्स णिवेदियव्वं, एस विणओवसंपदा । एस पचविधो उववायसंभोगो ॥२१४०॥ "उववाते" त्ति दार गतं ।

इदाणिं "[2]संवासे" त्ति दार –

संवासे संभोगो, सपक्ख-परपक्खतो य णायव्वो ।
सरिकप्पेसु सपक्खे, परपक्खम्मी गिहत्थेसु ॥२१४१॥

संवास-संभोगो दुविधो – सपक्खे परपक्खे य, सरिसो कप्पो जेसिं ते सरिसकप्पा सभोतिया इति यावत् । सपक्खे सरिसकप्पेसु सवासो, ण अण्णसंभोतिआइसु, परपक्खे गिहत्थेसु संवासो ॥२१४१॥

इयाणिं एतेसु चेव अभिग्गहातिएसु पच्छित्ता ।

तवे सत्ति परिहरेंतस्स इमं पच्छित्तं –

पक्खिय चउवरिसे वा, अकरणे आरोवणा तु सति विरिए ।
सेसतवस्स अकरणे, लहुगो अमणुण्णता चेव ॥२१४२॥

पक्खिए चउत्थ ण करेति, चउत्थं चेव पच्छित्तं । चाउम्मासिए छट्ठं ण करेति, तं चेव पच्छित्तं । संवच्छरे अट्ठमं ण करेति, अट्ठमं चेव पच्छित्त । सेसो तवो आवकहिगमणासगं मोत्तुं बारसविहो तं ण करेति मासलहुं, अणाउट्टंते य अमणुण्णया असंभोगो ॥२१४२॥

---

३ गा० २०७१ । २ गा० २०७१ ।

दाणग्गहणे इमं –

चउभंगो दाणगहणे, मणुण्णे पढमो तु संजती वितिओ ।
गिहिएसु होति ततिओ, इयरेसु तु अंतिमो भंगो ॥२१४३॥

गतत्था । अण्णसंभोतिएसु तिसु भंगेसु मासलहुं । गिहत्थ पासत्थाइयाण तिसु भंगेसु चउलहुं । अहाच्छंदं पडुच्च तिसु वि भंगेसु चउगुरुगं । पढम-ततिएसु संजतिं पडुच्च चउगुरुं ॥२१४३॥

अणुपालणं पडुच्च इमं –

अविधी अणुपालेंते, अणाभवंतं व देंतगेण्हंते ।
पच्छित्त वीसुकरणे, पच्छाऽऽउट्टं व संभुंजे ॥२१४४॥

संजतीओ अविधीए अणुपालेति अणाभव्वं च तेसिं देति, जहा रयहरणं दंडियं सबिंटयं वा लाउयं सविसाण वा भिसियं, तेसिं वा हत्थाओ गेण्हति चउगुरुगं पच्छित्तं । अणाउट्टंतस्स वीसुकरण, पुणो वा आउट्टं संभुंजे ॥२१४४॥

इदाणिं उववाते –

संभोगमण्णसंभोइए, व उववाततो उ संभोगो ।
संवासो तु मणुण्णे, सेसे लहु लहुग गुरुगा य ॥२१४५॥

संभोतितो पवसितो पच्चागओ आलोयणउववातेण संभोगो, अण्णसंभोतिओ वि आलोयणं देंतो उवसंपज्जति । संभोतितो अणालोइय उवसंपज्जावंतस्स मासलहुं, विसंभोगो य ।

अहवा – [1]"*अणाभव्वं देंतो गेण्हंति*" *त्ति एवं वयणं एत्थ उववाते दट्ठव्व, सचित्ताचित्तणिप्फण्णं* पायच्छित्तं दायव्व ।

इयाणिं "संवासे" ति पच्छद्धं – संभोइओ सभोइएसु वसंतो सुद्धो । "सेस" त्ति अण्णसंभोतियादिया अण्णसंभोतिएसु मासलहु, पासत्थादि-गिहीसु चउलहुगं, अहाच्छंदे संजतीसु य चउगुरुगा । संजतीण वि एवं चेव, सरिसवग्गे विसरिसवग्गे य वत्तव्वं । एस ओहातिएहिं संवास-पज्जवसाणेहिं छहिं दारेहिं संभोगविही भणितो ॥२१४५॥

जस्सेतेसंभोगा, उवलद्धा अत्थतो य विण्णाया ।
णिज्जूहितुं समत्थो, णिज्जूढे यावि परिहरितुं ॥२१४६॥

सुत्तपदेहिं उवलद्धा अत्थावधारणे य विण्णाया सो परं सीदंतं णिज्जूहिउ समत्थो, अप्पणा णिज्जूढं परेण वा णिज्जूढ परिहारिउं समत्थो भवति ॥२१४६॥

सरिकप्पे सरिच्छंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
कुव्वे संथव तेहिं, णाणीहि चरित्तगुत्तेहिं ॥२१४७॥

थेरकप्पियस्स थेरकप्पिओ चेव सरिसकप्पो, दव्वादिएहिं अभिग्गहेहिं सरिसच्छदो दट्ठव्वो,

१ गा० २१४४ ।

सामायियचरित्तिणो सामायियचरित्ती तुल्ल-चरित्ती अज्झवसाणविसेसेण वा संजमकडएसु विसिट्ठतरो, एरिसेहिं समाणं सथवो सवासो णाणीहिं। चरित्तेण गुत्ता, चरित्ते वा गुत्ता, ते चरित्त-गुत्ता ॥२१४ ॥

सरिकप्पे सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा।
आदेज्ज भत्तपाणं, सएण लाभेण वा तुस्से ॥२१४८॥

एरिसेण साहुणा भत्तपाणं आनीय आताए–आत्मीयेन वा लाभेन तुष्ये, न हीनतरसत्क गृण्हे ॥२१४८॥

किं चान्यत् –

ठितिकप्पम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविधमण्णयरे।
उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिकप्पो स संभोगो ॥२१४९॥

[1]"आचेल्लक्कुद्देसिय, सेज्जातर-रायपिंड-कितिकम्मे।

वयजेट्ठ-पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणकप्पे"।

एयम्मि जो दसविधे ठियकप्पे ठितो।

दुविधो य ठवणाकप्पो – सेहठवणाकप्पो-अट्ठारसपुरिसेसुइत्यादि।

अकप्पठवणाकप्पो '[2]वयछक्क-कायछक्क' इत्यादि, णासेवतीत्यर्थः।

जो एयम्मि दुविधे ठितो; पिंडस्स जा विसोही इत्यादि, एयम्मि उत्तरगुणे कप्पे जो सरिसकप्पो; स संभोगो भवति इति ॥२१४९॥ एस संभोगो सप्पभेओ वण्णिओ। एस य पुव्वं सव्वसविग्गाणं अड्ढभरहे एक्क संभोगो आसी, पच्छा जाया इमे संभोइया इमे असंभोइया।

शिष्य आह – किं कारणं एत्थ ?

आयरिओ – इमे उदाहरणे कप्पे उदाहरति –

अगडे[1] भातुए[2] तिल[3] तंडुले[4] य सरक्खे[5] य गोणि[6] असिवे।
अविणट्ठे संभोए, सव्वे संभोइया आसी[3] ॥२१५०॥

[4]अगड-पयस्स वक्खाण –

आगंतु तदुत्थेण व, दोसेण विणट्ठे कूवे ततो पुच्छा।
कओ आणीयं तुदयं, अविणट्ठे णासि सा पुच्छा ॥२१५१॥

एगस्स नगरस्स एक्काए दिसाए बहवे महुरोदगा कूवा। तत्थ य केई कूवा आगंतुय तदुत्थेहिं मोहिं दुट्ठोदगा जाता। आगंतुएण तया विसातिणा, तदुत्थेण खार-लोण-विस-पाणियसिरा वा जाता। तत्थ य केसुइ कूवेसु पाणिय पिज्जमाण कुट्ठादिणा सरीरं सदूसणकरं भवंति। केइ ण्हाणाइसु अविरुद्धा। केति ण्हाणाइसु वि विरुद्धा। एतद्दोसदुट्ठे णाउ बहुजणो दगादि वारेति। आणिए य कओ आणियंति पुच्छा। जति णिद्दोसं तया परिभुजति। अह सदोसं जइ जाणतेण आणियं ताहे तओ वा वाराओ फेडिज्जति तज्जिजति य। अह अजाणंतेणं तो वारिज्जति, मा पुणो आणिज्जासि। एव असभोतिया वि केति चरित्त-सरीर-उत्तरगुण-दूसगा

१ एकादशोद्देसके। २ दशवैकालिके अ० ६ गा० ८। ३ समणा (पा०)। ४ गा० २१५०।

केति चरित्त-जीविय-ववरोवगा, केति संफास-परिभोगिणो, केति पुण संफासओ वि वज्जिता। जाव य अविणट्ठपाणिया ताव पुच्छा वि णासी ॥२१५१॥

[1]"भाउय" पयस्स वक्खा –

भोइयकुलसेविआओ दुस्सीलेक्के उ जाए ततो पुच्छा।
एमेव सेसएसु वि, होइ विभासा तिलादीसु ॥२१५२॥

दो कुलपुत्ता भायारो रण्णो भयरहिया सेवगा सव्वावारियप्पवेसा। तेसिं कणिट्ठेण अंतपुरे अणायारो कओ। तस्स पवेसो वारिओ। जेट्ठो वि तद्देसेण रण्णो अणिवेइते पवेसं ण लहति। रण्णा पुच्छिज्जति– जेट्ठो, कणिट्ठो? जेट्ठो त्ति कहिते पविसति। पुव्वं एसा पुच्छा णासी। एवं संभोइया वि, उवणयविसेसो भाणियव्वो। एवं सेसेसु वि तिलादिएसु विसेसा कता। पुव्वं सव्वावणेसु तिला अब्भतिया विक्कायता ततो एगेण वाणिएण पूतिता पागडिया, ततो पभिति पुच्छा पयट्टा। एवं तंदुलेसु वि।

एगम्मि नगरे एगदिसाए बहुवे देवकुला, तेसु सव्वेसु सुसीला वसति। बहुजणा ते सव्वे अविसेसेण पूएति। पच्छा केसु वि देवकुलेसु दुस्सीला जाया। ततो आमंतणे पुच्छा पयट्टा कतमे निमंतिताम त्ति।

एगम्मि गामे एगो गोवग्गो असिवग्गहितो आओ। पुव्वं ततो गामाती आणीयासु गोणीसु नासी पुच्छा। पच्छा तम्मि गामे असिवग्गहिय त्ति पुच्छा पयट्टा। एवं साहम्मिओ वि परिक्खिउं परिभुंजियव्वो।२१५२

इमा परिक्खा –

साधम्मत वेधम्मत, निघरिस-भाणे तहेव कूवे य।
अविणट्ठे संभोए, सव्वे संभोइया आसी ॥२१५३॥

समाणधम्मता साहम्मता, तं णाऊणं परिभुंजति। विगयधम्मो वेधम्मता, त वेधमत्तं णाऊण ण परिभुंजति। यथा सुवण्णं णिग्घरिसे परिक्खिज्जति एव अण्णायसीलस्स भायणेण परिक्खिज्जइ। भायणस्स तलं ण घृष्टं, उवकरणं वा अविधीए सिव्वितं दीसवि, तथा आलएण विहारेण इत्यादि, एवमाइएहिं सीयंतो णज्जति। "तहेव कूवे य" त्ति - जहा कूवाती णाउ परिहरिया एवं एसो वि परिक्खिउ परिहरिज्जति। पुव्वि पुण "अविणट्ठे" पच्छद्धं; पूर्वं आसीदित्यर्थः ॥२१५३॥ "सभोगपरूवण" त्ति मूलदारं गतं।

इदाणिं [2]"सिरिघर सिव पाहुडे य संभुत्ते" त्ति अस्य व्याख्या –

सीसो पुच्छति – कतिपुरिसजुगे एक्को सभोगो आसीत्? कम्मि वा पुरिसे असंभोगो पयट्टो केव वा कारणेण?

ततो भणति –

संपति-रण्णुप्पत्ती सिरिघर उज्जाणि हेट्ठ वोधव्वा।
अज्जमहागिरि हत्थिप्पभिती जाणह विसंभोगो ॥२१५४॥

वद्धमाणसामिस्स सीसो सोहम्मो। तस्स जबुणामा। तस्स वि पभवो। तस्स सेज्जंभवो। तस्स वि सीसो जसभद्दो। जसभद्दसीसो सभूतो। सभूयस्स थूलभद्दो। थूलभद्दं जाव-सव्वेसिं एक्कसभोगो आसी।

१ गा० २१५०। २ गा० २०७०।

थूलभद्दस्स जुगप्पहाणा दो सीसा – अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य। अज्जमहागिरी जेट्ठो। अज्जसुहत्थी तस्स सट्ठियरो।

थूलभद्दसामिणा अज्जसुहत्थिस्स नियओ गणो दिण्णो। तहा वि अज्जमहागिरी अज्ज-सुहत्थी य पीतिवसेण एक्कओ विहरति।

अण्णया ते दो वि विहरंता कोसबाहार गता। तत्थ य दुब्भिक्ख।

ते य आयरिया वसहिवसेण पिहप्पिह ठियाणं एगम्मि व सेट्ठिकुले साधूहिं मोयगादि खज्जगविहाणं भत्तं च जावतियं लद्ध।

एगो रको त साहुं दट्ठुं ओभासति।

साहूहिं भणियं – अम्ह आयरिया जाणगा, ण च सक्केमो दाउ।

सो रको साधुपिट्ठतो गतुं अज्जसुहत्थि ओभासति भत्तं।

साहूहिं वि सिट्ठ – अम्हे वि एतेण ओभासिता आसीत्।

अज्जसुहत्थी उवउत्तो पासति - पवयणाधारो भविस्सति। भणितो - जति णिक्खमाहि। अब्भुवगतं। णिक्खंतो सामातियं कारवेत्ता जावतियं समुदाणं दिण्णं, तद्दिणरातीए चेव अजीरतो कालगओ। सो अवत्तसामातिओ अधकुमारपुत्तो जातो।

"तस्स उप्पत्ती" –

चंदगुत्तस्स पुत्तो बिंदुसारो। तस्स पुत्तो असोगो। तस्स पुत्तो कुणालो। तस्स बालत्तणे चेव उज्जेणी कुमारभुत्ती दिण्णा। ताहे वरिसे वरिसे दूओ पाडलिपुत्तं असोगरण्णो पयट्टेइ।

अण्णया असोगरण्णा चिंतिय – इदाणिं कुमारो धणुवेइयाण कलाण जोग्गो। ततो असोगरण्णा सयमेव लेहो लिहिओ – "इदाणिं अधीयतां कुमारः कलाइ" त्ति लिखित।

रण्णो अणाभोगेण कुमारस्स य कम्मोदएण भवियव्वयाए अगारस्स उवरिं बिंदू पडिओ।

[1]केति भणंति –

"राया लिहिउ असवत्तियं लेह मोत्तुं वच्चाघरे पविट्ठो, एत्थतरे य मातिसवत्तीए अणुव्वाएउं अगारस्स बिंदू कतो"।

रण्णा पच्चागतेण अवायित्ता चेव सवत्तितो, बाहिं रण्णा णामकिओ मुद्दिओ, उज्जेणी णीतो। लेहगो वाएत्ता तुण्हिक्को ठितो। कुमारेण सयमेव वातिओ।

कुमारेण चिंतितं – जइ रण्णो एवं अभिप्पेयं पीती वा तो एवं कज्जति। अम्ह य मोरियवसे अपडिहता आणा। णाहं आणं कोवेमि। सलागं तावेत्ता सयमेव अक्खीणि अजिताणि। रण्णो जहावत्तं कहियं, अधीकयो ता किमंधस्स रज्जेण। एगो से गामो दिण्णो। तंमि गामे - अच्छंतस्स कुणालकुमारस्स सो रको घरे उप्पण्णो। णिवत्ते बारसाहे "संपत्ती" से णामं कतं।

सो य कुणालो गंधव्वे अतीव कुसलो। ताहे सो य अणायचज्जाए याति, सामंत-भोतिय-कुलेसु गायति। अतीव जणो अक्खित्तो। असोगरण्णा सुय, आणितो जवणियंतरितो गायति।

---

१ यथाह भद्रेश्वरसूरिः कथावल्या द्वितीयखडे।

राया आउट्टो भणाति – किं देमि ? तेण भणियं –

गाहा–[1]चंद्रगुत्त-पपुत्तो उ, बिंदुसारस्स नतुओ। असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणि ॥

रण्णा भणियं – थोव ते जाइत,

मतीहिं भणियं – बहुतं जातित।

कहं ?

रज्जं कागिणी भण्णति।

रण्णा भणियं – कि ते अंधस्स रज्जेण ?

तेण भणितं–पुत्तो मे।

रण्णा भणिय–संपति पुत्तो वि ते।

[2]अण्णे एत्थ णामकरणं भणंति –

उज्जेणी से कुमारभोत्ती दिण्णा। तेण सुरट्ठविसओ [3]अंधा दमिला य उयविया। अण्णया आयरिया पतीदिस (?) जियपडिमं वंदिउं गताओ। तत्थ रहाणुजाणे रण्णो घरे रहो परिअचति, सपतिरण्णा ओलोयणगतेण 'अज्जसुहत्थी' दिट्ठो। जातीसरण जातं। आगओ पाएसु पडिओ। पच्चुट्ठिओ विणओणओ भणति – भगव ! अहं ने कहिं दिट्ठो ? सुमरह।

आयरिया उवउत्ता – आमं दिट्ठो। तुमं मम सीसो आसि। पुव्वभवो कहितो। आउट्टो। धम्मं पडिवण्णो। अतीव परोप्परं णेहो जाओ। तत्थ य महागिरी गिरिघरायवणं आवासितो। अज्जसुहत्थी सिवघरे आवासितो। ततो राया अभिक्खं अभिक्खं अज्जसुहत्थिं पज्जुवासति पवयण-भत्तीए अप्पणो विसए जणं-पिंडेतूणं भणाति – तुब्भे साधूणं आहारातिपायोग्गं देह। अहं भे मोल्लं देहामि।

अज्जसुहत्थी सीसाणुरागेण साहू गेण्हमाणे सातिज्जति, णो पडिसेहेति। तं अज्जमहागिरी जाणित्ता अज्जसुहत्थिं भणाति – अज्जो ! कीस रायपिंडं पडिसेवह ?

तओ अज्जसुहत्थिणा भणिय – जहा राया तहा पया, ण एस रायपिंडो। तेल्लिया तेल्लं, घयगोलिया घयं, दोसिया वत्थाइं, पूव्या भक्खभोज्जे देंति, एवं साहूण सुभविहारे। अज्जमहागिरी माति त्ति काउं अज्जसुहत्थिस्स करातितो। एस सिस्साणुरागेण ण पडिसेहेति।

ततो अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थिं भणाति – अज्जप्पभिति तुमं मम असंभोतिओ।

एवं "पाहुड" कलह इत्यर्थः।

ततो अज्जसुहत्थी पच्चाउट्टो मिच्छादुक्कडं करेति, ण पुणो गेण्हामो। एवं भणिए समुत्तो। एत्थ पुरिसे विसंभोगो उप्पण्णो। कारणं च भणिय।

ततो अज्जमहागिरी उवउत्तो, पाएण "मायाबहुला मणुय" त्ति काउ विसंभोगं ठवेति ॥२१५४॥ "सिरिघर-सिव – पाहुडे य संभुत्ते" ति दार गतं।

इदाणिं "[4]दंसणे" त्ति दारं –

सद्दहणा खलु मूलं, सद्दहमागस्स होति संभोगो।

णाणंम्मि तदुवओगो, तहेव अविसीयणं चरणे ॥२१५५॥

---

१ बृहत्कल्प द्वितीयोद्देशे। २ कथावल्यादी। ३ आंध्र देश। ४ गा० २०६६।

सद्दहणं दरिसणं, तं मोक्खमग्गस्स मूलं, खलु अवधारणे, सुत्ते जे भावा पण्णत्ता उस्सग्गाववाइएहिं ववहार-णिच्छयणएहिं वा इम वा संभोगं परूवियं सद्दहमाणस्स सभोगो, अण्णहा असभोगो। दंसणे त्ति गतं।

इदाणिं "[1]णाणे" त्ति दारं–"णाणम्मि तदुवओगो"। सुअणाणोवएसे उवउज्जति–[2]किं मे कडं, किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं ण समायरामि, एवं णाणोवओगेणं उवउज्जमाणो सभोइओ, अन्नहा असंभोइओ, उवउज्जमाणस्स य णाणं भवति।

इयाणिं "[3]चरित्तं" जति चरित्तेण विसीयति उज्जयचरणो तो संभोतिओ, अण्णहा विसभोइओ मा विसभोगो भविस्सामि त्ति उज्जमति। [4]"तवहेउं"-तवकारणमित्यर्थः। तवे वीरियं हावेंतो विसभोगो कज्जमाणो तहेव उज्जमति, ण य इहलोगासंसित तवं करेति, णिज्जरट्ठा य तवं करेंतो सभोतिगो, अन्नहा विसभोओ ॥२१५५॥

विसभोओ किं उत्तरगुणे मूलगुणे ?

आयरिओ भणति – उत्तरगुणे।

अथवा – उत्तरगुणेसु सीयंतो सभोतिओ त्ति काउं चोतिज्जति। एवं चोयणाए उत्तरगुणसरक्खणे मूलगुणा सरक्खिया भवंति।

एयस्स अत्थस्स पडिसमावणत्थ भण्णति –

दंसण-णाण-चरित्ताण वड्ढिहेउं तु एस संभोओ।
तवहेउ उत्तरगुणेसु चेव सुहसारणा भवति ॥२१५६॥

एव दसण-णाण-चरित्ताण परिवुड्ढी-णिमित्तं संभोगो इच्छिज्जति। तवहेउं - तववुड्ढीनिमित्त च संभोगो इच्छिज्जइ। उत्तरगुणेसु य सीयंतो संभोतिगो त्ति काउ सुहसारणाओ भवंति। एवं चरित्तरक्खणा कता भवति ॥२१५६॥

एतेसामण्णतरं, संभोगं जो वदेज्ज णत्थि त्ति।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२१५७॥ कंठा

वितियपदमणप्पज्झे, वदेज्ज अविकोविदे व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादि गच्छट्ठा ॥२१५८॥

पासत्थांतीहिं समाणं संभोगेण णत्थि कम्मबंधो त्ति अणप्पज्झो भणेज्ज, सेहो वा अविकोवितो भणेज्ज, गीयत्थो वा विकोविओ भया भणेज्ज, 'तव्वाती' कोति दडिओ हवेज्ज "णत्थिसंभोगवत्तिया किरिय" त्ति तम्मि पण्णवेंति, तुण्हिक्को अच्छति, भया पुच्छिओ वा "आमं" ति भणेज्जं, अप्पणो गच्छस्स व रक्खणट्ठा भणेज्जा ॥२१५८॥

जे भिक्खू लाउय-पातं वा दारु-पातं वा मट्टिया-पातं वा अलं थिरं धुवं धारणिज्जं परिभिंदिय परिभिंदिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

---

१ गा० २०६१। २ दशा० द्वि० चू० गा० १२। ३ गा० २०६६। ४ गा० २०६६।

अकारलोपाओ लाउयं दारुयं, मुदणघडियं, मट्टियामयं कुभारघडियं, अलं पज्जत्तं, थिरं दढ, धुवं अपरिहारियं, धारणिज्ज लक्खणजुत्तं, खडाखडिकरणं पलिभेओ भण्णति, जो एव करेति तस्स मासलहु ।

जं पज्जतं तमलं, दढं थिरं अपरिहारिय धुवं तु ।
लक्खणजुत्तं पायं, तं होती धारणिज्जं तु ॥२१५६॥

गतार्थः ॥२१५६॥ एतेसु चउसु पदेसु सोलस भंगा । अलं थिर धुवं धारणिज्जं, एस पढमो भंगो । सेसा कायव्वा ।

एत्तो एगतरेणं, गुणेण सव्वेहि वा वि संजुत्तं ।
जे भित्तूणं पादं, परिट्ठवे आणमादीणि ॥२१६०॥

कंठा ॥२१६०॥ भित्तु परिट्ठवेंति ।

इमेसि विराहणा हवेज्ज –

अद्धाण-णिग्गयादी, झामिय सेसे व तेण पडिणीए ।
आय पर तदुभए वा, असती जे पाविहिति दोसा ॥२१६१॥

अद्धाण-णिग्गता साधू आगया अज्झायणा, तेहिं ते जातिता, पलिभिण्णादि परिट्ठवेति किं देंतु ? जति ण देंति ताहे जं ते पाविहिंति तमावज्जति । अह देंति अप्पणो हाणि । आदिसद्दातो असिवणिग्गता आगता । एव ओमेण, रायदुट्ठ-गिलाणकारणेण ।

अहवा – तेसिं चेव झामियं उपकरणं परस्स वा उभयस्स वा सेहा वा पडुप्पण्णा भायणा सति ण पव्वावेंति, ज ते गिहारंभे काहिति तमावज्जे ।

अहवा – अण्णेसिं सभोतियाण सेहा उवट्ठिता, ते भायणाणि मग्गंति, जति ण देंति अप्पणो हाणि ।

अहवा – तेणेहिं उवकरणं अवहरियं, अप्पणो परस्स उभयस्स वा । एवं पडिणीएहिं अवहित जे दोसे पाविहिंति तमावज्जे ॥२१६१॥

अद्धाण णिग्गतादी, ण य देंते हाणि अप्पणो देंते ।
गिहिभाणेसण पोरिसि, कायाण विराधणमडंतो ॥२१६२॥

पुव्वद्धं गतार्थं । पलिभिंदिय परिट्ठवितेसु भायणासति जति गिहिभायणपरिभोगं करेति, अणेसणीयं वा गेण्हति, भायणे वा गवेसंतो पोरिसिभंगं करेति, भायणट्ठा वा अडतो कायविराहणं करेति ॥२१६२॥ सव्वेसेतेसु पच्छित्तं वत्तव्वं ।

एतद्दोसपरिहरणत्थं –

तम्हा ण वि भिंदिज्जा, जातमजातं विगिंचते विधिणा ।
विस विज्ज मंत थंडिल्ल, असती तुच्छे य वितियपदं ॥२१६३॥

विस-विज्जाति-कय जायं, णिद्दोसं अजायं, दुविहं पि जहाभिहिअं विधीए विगिंचए, कारणे भिंदित्ता वि परिट्ठवेति । विसभावियं विज्जाए मंतेण वा अभियोजित थंडिलस्स वा सति तुच्छं वा डहरयं ण तक्कज्जसाहयं, एतेहिं कारणेहिं भिंदिउं परिट्ठवेति ॥२१६३॥

जे भिक्खू वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा अलं थिरं धुवं धारणिज्जं पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०६५॥

खोम्मिय कप्पासाति वत्थ, उण्णिगकप्पासाति कंबलं, रय-हरणं पायपुंछण, उवग्गहिय वा, वा, पलिछिदिय शस्त्रादिना ।

जे भिक्खू दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा पलिभंजिय पलिभंजिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्ज्ञति ॥सू०॥६६॥

हत्थेहिं आमोडणं पलिभंजण ।

पायम्मि य जो उ गमो, णियमा वत्थम्मि होति सो चेव ।
दंडगमादीसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥२१६४॥

जे भिक्खू अइरेय-पमाणं रयहरणं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

रओ दव्वे भावे य । त दुविहं पि रयं हरतीति रयोहरण । अतिरेग धरेंतस्स मासलहु ।

गणणाए पमाणेण य, हीणातिरित्तं च अवचितोवचितो ।
झुसिरं खर-पम्हं वा, अणेगखंडं च जो धारे ॥२१६५॥

सव्वेसु वि झुसिरवज्जेसु मासलहुं, झुसिरे चउलहु, गणणाए उदु-बद्धे एग, वासासु दो, पमाणपमाणेण बत्तीसंगुलदीहं । जति हीणं एत्तो पमाणाओ करेति तो ओणमतस्स कडिवियडणा, अपमज्जतस्स पाणविराहणा, अतिरित्ते अधिकरण भारो य संचयदोसा य ।

अहवा – सारत्तं एग धरेति त हिंडंतस्स उल्ल, जति तेण उल्लेण पमज्जति तो उंडया भवंति, तारिसेण पमज्जंतस्स असजमो, अपमज्जंतो असजतो। भारिये आयविराहणा । पोरप्पमाणातो ज ऊणं तं अवचिय, तम्मि भामाणविराहणा।, जं पोरप्पमाणातो अतिरित्त त उवचियं तम्मि भारो भयपरितावणादि, अतिरित्ते अधिकरण च सचयदोसा । झुसिरं कोयवगणपावारगणवयगेसु अतिरोमघूलय वा झुसिरं वा एतेसु सजमविराधणा । पडिलेहणा य ण सुज्झति । खरा णिसड्ढा दसाओ जस्स त खरपम्हं । एत्थ पमज्जणे कुथुमादिविराधणा । अणेगसिव्वणीहिं अणेगखडझुसिरं भवति, एत्थ विं सजमविराहणा । सिव्वंतस्स य सुत्तत्थपलिमथो । २१६५ ।

जो एवं धरेति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावइ जम्हा तम्हा, ण वि धारे हीणमइरित्तं ॥२१६६॥

हीणे कुज्जविवत्ती, अतिरेगे संचतो अ अधिकरणं ।
झुसिरादि उवरिमेसुं, विराहणा संजमे होति ॥२१६७॥

बत्तीसंगुलातो हीणतर । शेषं गतार्थं ॥२१६७॥

हीणाधिए य पोरा, भाणविवत्ती य होति भारो य ।
कडिवियणा य अदीहे, उण्णम उड्डाहमादीया ॥२१६८॥

अंगुट्ठपोराम्रो हीणं अवचियं, अहिय उवचियं, हीणे भायणविवत्ती, अधिए भारो बत्तीसंगुलातो हीणं अदीह भवति, तम्मि उणमंतस्स कडिवियणा, अति श्रोणते य जलहरपलंबणे उड्डाहो ॥२१६८॥

उडु-वासासु धरणे इमं पमाणं –

एगं उडुबद्धम्मि, वासावासासु होति दो चेव ।
दंडो दसा य तस्स तु पमाणतो दोण्ह वी भइया ॥२१६९॥

जति दडो हत्थपमाणो तो दसा अट्ठंगुला । इह दडग्गहणातो गब्भदंडिया रयोहरणपट्टगो वा । अह दडो वीसंगुलो तो दसा बारंगुला । अह दंडगो छव्वीसंगुलो तो दसा छ अंगुला । एवमाइ भयणा ॥२१६९॥

इमेरिसं धरेयव्व –

पडिपुण्ण हत्थ पूरिम, जुत्तपमाणं तु होति णायव्वं ।
अप्पोलम्मि तु पम्हं, च एगखंडं चऽणुण्णातं ॥२१७०॥

बत्तीसगुलपडिपुण्ण बाहिरणिमज्जाए सह हत्थपूरिम, एरिस जुत्तपमाण रओहरण । पोल्लडय पोल्ल अपोल्ल, अज्झुसिरमित्यर्थः, मउअ दसम्मि उ पोम्ह, एगखड च एरिसं अणुण्णातं ॥२१७०॥

भवे कारण जेण सव्वाण वि धरेज्जा –

बितियपदमणप्पज्झे, असइ पुव्वकय दुल्लभे चेव ।
सण्हे थुल्ले य खरे, एगस्स सती य दुगमादी ॥२१७१॥

अणप्पज्झो सव्वाणि करे धरेति वा । अप्पज्झो वि असति जहाभिहियस्स हीणातिरित्तिए करेज्ज वा, पुव्वकत वा हीणातिरित्तादिय, दुल्लभ वा, जाव लभति ताव हीणातिरित्ताए वि धरेति, असतीए सण्ह वा धरेति, थूलं वा धरेति, खरदसं वा धरेति, एगखडस्स वा असति दुगति-खंडं धरेति ॥२१७१॥

सण्हे करेति थुल्लं, उ गब्भयं परिहरेंति तं थुल्ले ।
झुसिरेऽवणेतिं लोमे, खरं तु उल्लं पुणो मलए ॥२१७२॥

सण्हे रयहरणपट्टते थूल गब्भय करेति । अह थूलो रहरणपट्टतो ताहे रयहरणगब्भय परिहरेंति । गब्भए वा थूले तं पट्टय परिहरेंनि । रोमज्झुसिरे तो रोमे अवणेति । अह खरदसं ताहे उल्लेउ पुणो मलिज्जनि ॥२१७२॥

जे भिक्खू सुहुमाइं रयहरण-सीसाइं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

सुहुमा सण्हा, रयहरणसीसगा दसाओ ।

जे भिक्खू सुहुमाइं, करेज्ज रयहरण-सीसगाइं तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२१७३॥

इमे दोसा –

मूढेसु सम्मद्दो, झुसिरमणाइण्णदुब्बला चेव ।
सुहुमेसु होंति दोसा, बीतियं कासी य पुव्वकते ॥२१७४॥

मूढेसु सम्मद्ददोसो, झुसिरदोसो, साधूहिं अणाइण्णो, दुव्वला य भवंति । बितियपद अणप्पज्झाइ पुव्वकते वा ॥२१७४॥

जे भिक्खू रयहरणं कंडूसग-बंधेणं बंधति, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

कडूसगबधो णाम जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवति ताहे उण्णियदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कडूसगपट्टओ भण्णति ।

कंडूसगबंधेणं, तज्जइतरेण जो उ रयहरणं ।
बंधति कंडूसो पुण, पट्टउ आणादिणो दोसा ॥२१७५॥

आणाइणो दोसा मासलहु च ॥२१७५॥

इमे य दो दोसा –

अतिरेगउवधिअधि करणमेव सज्झाय-झाण-पलिमंथो ।
कंडूसगबंधम्मी, दोसा लोभे पसज्जणता ॥२१७६॥

अतिरेगोवहि निरुवओगत्तणओ य अधिकरणं, तस्स सिव्वणधोवणा बधण-मुयणेहिं सुत्तत्थपलिमथो, य पसगो, णट्ठे हिय-विस्सरिएहिं य अधिती भवति ॥२१७६॥

बितियपदमणप्पज्झे, असतीए दुब्बले य पडिपुण्णे ।
एतेहिं कारणेहिं, संबद्धं कप्पती काउं ॥२१७७॥

एगम्मि पएसे दुब्बल, ताहे पडिसवडि करेंति, अपडिपुण्ण वा तेण वेढेत्ता हत्थपूरिम करेंति । एतेहिं कारणेहिं तयेव थिग्गलकारेणं सबद्ध करेति, जेण एगपडिलेहणा भवति ॥२१७७॥

जे भिक्खू रयहरणं अविहीए बंधति, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

अवसव्वादि अविधिबंधो ।

जे भिक्खू रयहरणं एक्कं बंधं देति देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

एगबंधो एगपासिय ।

जे भिक्खू रयहरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

तिपासितातो परं चउपासियादि । आणादिणो य दोसा । बहुबंधणे सज्झायझाणे य पलिमंथो य भवति ।

एतेसिं तिण्ह वि सुत्ताण इमो अत्थो ।

तिण्हुवरि बंधाणं, डंड-तिभागस्स हेट्ठ उवरिं वा ।
दोरेण असरिसेण च संतरं बंधणाणादी ॥२१७८॥

दंडतिभागस्स जति हेट्ठा बंधति, उवरिं वा बंधति, असरिसेण वा दोरेण अतज्जाइएण बंधतो वा संतरं दोरं करेति तो आणातिया दोसा, सव्वेसु मासलहुं ॥२१७८॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा तिपासियं खलु, दंडतिभागे उ सरिसदोरेणं ।
रयहरणं बंधेज्जा, पदाहिण णिरंतरं भिक्खू ॥२१७६॥

बितियपदमणप्पज्झे, बंधे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, असती अण्णस्स दोरस्स ॥२१८०॥

अण्णासति तज्जातियस्स ॥२१८०॥

जे भिक्खू रयहरणं अणिसट्ठं धरेति, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

अणिसट्ठं णाम तित्थकरेहिं अदिण्णं, तस्स मासलहुं आणादिणो य दोसा ।

णिज्जुत्ती इमा –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य चउव्विधं तु अणिसट्ठं ।
बितिओ वि य आएसो, जं ण वि दिण्णं गुरुजणेणं ॥२१८१

पंचतिरित्तं दव्वे उ, अचित्तं दुल्लभं च दोसुं तु ।
भावम्मि वन्नमोल्ला, अणणुण्णायं व जं गुरुणा ॥२१८२॥

दव्वतो पंचण्हं अइरित्तं-उण्णियं उट्टियं सण वच्चय मुंज-पिच्च वा । एतेसिं पचण्हं परतो णाणुण्णात, "दोसु" खेत्त-कालेसु जं अच्चित्त दुल्लभ वा तं णाणुण्णातं, भावतो ज वण्णड्ढ, महद्धण-मोल्ल व, तं णो तित्थकरेहिं णिसट्ठं ण दत्तमित्यर्थः ।

अहवा – बितिओ आएसो – जं गुरुजणेण नो अणुन्नायं तं अणिसिट्ठं ॥२१८२॥

एतेसामण्णतरं, रयहरणं जो धरेज्ज अणिसट्ठं ।
आणाति विराहणया, संजम मुच्छा य तेणादी ॥२१८३॥

महद्धणे वण्णड्ढे वा मुच्छा भवति । रागो रागेण संजमविराधणा, तेणातिएहिं वा हरिज्जति ॥२१८३॥

बितियपदमणप्पज्झे, धरेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा असती, धरेज्ज असिवादिवेगागी ॥२१८४॥

असिवेण एगागी जातो । तेण कस्स णिवेएउ ? गुरू णत्थि । एवं अणिसट्ठं पि धरेज्ज ॥२१८४॥

जे भिक्खू रओहरणं वोसट्ठं धरेइ, धरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

आउग्गहखेत्ताओ, परेण जं तं तु होति वोसट्ठं ।
आरेणमवोसट्ठं, वोसट्ठे धरेंत आणादी ॥२१८५॥

वोसट्ठं णाम आउग्गहातो परेण। ज पुण आतोग्गहे वट्टति तं अवोसट्ठ। आयपमाण खेत्त आयोग्गहे। इह पुण रयोहरणं पडुच्च समंततो हत्थो, हत्थाओ पर ण पावति त्ति वोसट्ठं भण्णति ॥२१८५॥

वोसट्ठ-धरणे इमे दोसा –

मूइंगमाति-खइते, अपमज्जंते तु ता विराधेति।
सप्पे व विच्छुगे वा, जा गेण्हति खइए आताए ॥२१८६॥

मूइगा पिपीलिता एताहिं खतितो, आदिसद्दातो मक्कोडगातिणा। जति अपमज्जिउ रयोहरणेण कंडूयति तो विराहेति। रयहरणं अपावेंतो वा सहसा कडूयति तो विराहेति। आरुढो सप्पो विच्छुगो वा आगतो जाव रयहरणं गेण्हति ताव खइओ मतो, आयविराहणा ॥२१८६॥

वितियपदमणप्पज्झे, धोतुल्ल-गिलाण-संभमेगतरे।
असिवादी परलिंगे, वोसट्ठं पी धरेज्जाहि ॥२१८७॥

अणप्पज्झो धरेति, धोवं वा जाव उच्चादि, नइसंतरणे वा उल्ल, गिलाणो गिलाणपडियारगो वा उव्वत्तणाइ करेंतो, अगणिसभमे वा धरेंतो, असिवादिकारणेण वा परलिंग गहिय। एतेहिं कारणेहिं वोसट्ठ पि धरेज्ज ॥२१८७॥

मुहपोत्ति-णिसेज्जाए, एसेव गमो उ होइ णायव्वो।
वोसट्ठमवोसट्ठे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥२१८८॥

मुहपोत्तियणिसेज्जाए एसेव गमो वोसट्ठावोसट्ठेसु पुव्वावरपतेसु ॥२१८८॥

जे भिक्खू रओहरणं अभिक्खणं अभिक्खणं अधिट्ठेति,
अधिट्ठंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

अधिट्ठणं णाम ज णिसेज्जवेढिए चेव उवविसणं, एय अहिट्ठणं, मासलहुं, आणादिया य दोसा।

तिण्हं तु विकप्पाणं, अण्णतराएण जो अधिट्ठेज्जा।
पाउंछणगं भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥२१८९॥

इमे तिण्णि विकप्पा –

दोहि वि णिसिज्जणेहिं, एक्केण व बितिओ ततिय पादेहिं।
अहवा मग्गतो एक्को, दोहि वि पासेहि दोण्णि भवे ॥२१९०॥

णिसेज्जणा पुता भण्णति, तेहिं दोहिं वि उवविसति, एक्को विकप्पो। एगेण वा बितिओ विकप्पो। दोसु पायपण्हिआसु अक्कमति। ततिओ विकप्पो।

अहवा– मग्गतो त्ति पिट्ठतो अक्कमति। एगो विकप्पो। दोसु पासेसु पुतोरुएसु अक्कमति। एते दो विकप्पा। एते वा तिण्णि ॥२१९०॥

बितियपदमणप्पज्झे, अधिट्ठे अविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, मूसग-तेणातिमादीसु ॥२१९१॥

मूसगेण वा कुट्टिज्जति, तेणगेसु वा हरिज्जति, आदिसद्दातो चेडरूवाणि वा हरेज्जा, पडिणीओ वा तेण अधिट्ठेज्ज ॥२१९१॥

जे भिक्खू रयहरणं उस्सीस-मूले ठवेति, ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू रयहरणं तुयट्टेइ, तुयट्टेंतं वा सातिज्जति

तं सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०॥७७॥

त सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं । सीसस्स समीवं उवसीसं, वकारलोपात् तत्स्थानवाची मूलशब्द. । सीसस्स वा उवखंभणं उसीसं ट्ठवणं णिक्खेवो सुत्तपडिसेधितं, सेवमाणे आवज्जति-पावति, परिहरण परिहारो, चिट्ठति जम्मि तं ठाणं, लहुगमिति उग्घातिय ।

जे भिक्खू तुयट्टेंते, रयहरणं सीसते ठवेज्जा हि ।
पुरतो व मग्गतो वा, वामगपासे णिसण्णो वा । २१९२॥

त्वग्वर्तनं तुयट्टणं शयनमित्यर्थः, वामपासे, दाहिणपासे वा उवरिहुत्तदसं, पादमूले वा ठवेति, ण केवलं णिसण्णो, णिसण्णो वा पुरओ मग्गओ वा वामपासे ठवेति ॥२१९२॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, दाहिणपासम्मि तं कुज्जा ॥२१९३॥

तम्हा णिवण्णो णिसण्णो वा दाहिणपासे अधोदसं करेज्जा ॥२१९३॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
ओवास असति मूसग-तेणगमादीसु जाणमवि ॥२१९४॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥

षष्ठ उद्देशकः

पंचमउद्देसाओ छट्ठस्स इमो संबंधो –

उस्सीसग-गहणेणं, निसि सुवणं निसि समुब्भवे।
गुरुलहुगा चउ मासा, वुत्ता चउमासिया इणमो ॥२१९५॥

पंचमस्स अंतिमे सुत्ते उस्सीसगगहणं कत, तेण रत्ति सुवणं वक्खायं, रातो सुव्वति, दिवसतो ण कप्पति सुविउं। रातो य समुब्भवो मोहो भवति। तेण य उदिण्णेण कोइ मेहुणपडियाए माउग्गामं विण्णवेज्ज। एस संबंधो।

अहवा – इमो अण्णो सबंधो –

आइल्लएसु पंचसु उद्देसएसु गुरु लहु मासो भणितो, इयाणिं चउम्मासिया गुरुलहुगा भण्णति ॥२१९५॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणपडियाए विण्णवेति,
विण्णवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

मातिसमाणो गामो मातुगामो। मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति। मिहुणभावो मेहुणं, मिथुनकर्म वा मेहुनं अब्रह्मामित्यर्थः। मिथुनभावप्रतिपत्तिः। पडिया मैथुनसेवनप्रतिज्ञेत्यर्थः। विज्ञापना प्रार्थना।

अधवा – तद्भावसेवनं विज्ञापना, इह तु प्रार्थना परिगृह्यते। सुत्तत्थो।

अधुना – निर्युक्तिविस्तर –

माउग्गामो तिविहो, दिव्वो माणुस्सतो तिरिक्खो अ।
एक्केक्को वि य दुविहो, देहजुतो चेव पडिमजुओ ॥२१९६॥

सो मातुग्गामो तिविधो – दिव्वो माणुस्सतो तिरिच्छो। पुणो एक्केक्को दुविधो कज्जति – देहजुतो, लेप्पगादि-पडिमाजुत्तो य ॥२१९६॥

देहजुतो वि य दुविहो, सज्जीवो तह य चेव णिज्जीवो।
सण्णिहितमसण्णिहितो, दुविधो पडिमाजुतो होति ॥२१९७॥

देहं सरीरमित्यर्थः । देहजुतो पुण दुविघो – सचेयणो अचेयणो य । पडिमाजुतोवि दुविघो कज्जति – सन्निहिओ असन्निहिओ य ॥२१९७॥ एस दिव्वभेतो भणितो। माणुस-तिरिच्छएसु एस चेव भेदो भाणियव्वो ।

दिव्वे अचित्तदेहजुते इमं भण्णति –

पण्णवणामेत्तमिदं, जं देहजुतं अचेतणं दिव्वं ।
तं पुण जीव-विमुक्कं, भिज्जति स तथा जह य दीवो ॥२१९८॥

यस्मादचित्तं देवशरीर नास्ति, तस्मात् प्रज्ञापना मात्रं। तं पुण इमेण कारणेण नत्थि – जीवविमुक्क-मेत्तमेव स तहा भिज्जति, प्रदीपशिखावत् ॥२१९८॥

एक्केक्को वि य तिविधो, जहण्णओ मज्झिमो य उक्कोसो ।
परिगहियमपरिगहिओ, एक्केक्को सो भवे दुविहो ॥२१९९॥

सो माउग्गामो दिव्वातिओ एक्केक्को तिविघो - जहण्णमज्झिमुक्कोसो । वाणमंतर जहण्णं, भवणजोइसिया मज्झिमं, वेमाणियं उक्कोसं। माणुसेसु पायावच्चं जहण्णं, कोडुंबियं मज्झिमं, दंडिय उक्कोसं। तिरिएसु जहण्णे अय-एलगादि । मज्झिमं व लवा - महासद्दियादि, उक्कोस गो-महिसादि । एक्केक्कं पुणो सपरिग्गहापरिग्गहभेएणं दुविहं कज्जति ।।२१९९।।

सपरिग्गह पुणो तिविधं इमेहिं कज्जति –

पायावच्च कुडुंबिय, दंडियपरिग्गहो भवे तिविधो ।
तव्विवरीओ य पुणो, णातव्वऽपरिग्गहो होति ॥२२००॥

एतेहिं तिहिं परिग्गहियं सपरिग्गहं, एयव्वतिरित्तं अपरिग्गह ॥२२००॥

एव तियभेदपरूवियस्स माउग्गामस्स विण्णवणा दुविहा –

दिट्ठमदिट्ठा य पुणो, विण्णवणा तस्स होइ दुविहा उ ।
ओभासणयाए या, तब्भावासेवणाए य ॥२२०१॥

विण्णवणा दुविघा । ओभासणता प्रार्थनता, मैथुनासेवनं तद्भावासेवन ॥२२०१॥
इयाणिं एतेसिं भेयाणं ओभासणाए तब्भावासेवनाए य पच्छित्तं भण्णति ।

तत्थ पढमं तब्भावासेवणाए भण्णति –

मासगुरुगादि छल्लहु, जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे ।
अपरिग्गहितऽचित्ते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०२॥

दिव्वे देहजुत्ते अचित्ते अपरिग्गहं जहण्णयं अदिट्ठे सेवति मासगुरुं । दिट्ठे ङ्का । एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे ङ्क । दिट्ठे ङ्का ।

एयम्मि चेव उक्कोसए अदिट्ठे ङ्का। दिट्ठे फुं । एयं अपरिग्गहं गयं ॥२२०२॥

इयाणिं एत चेव अचित्तं पायावच्चपरिग्गह भण्णति –

चउलहुगादी मूलं, जहण्णगादिम्मि होति अच्चित्ते ।
तिविहे अपरिग्गहिते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०३॥

दिव्वे देहजुते अचित्ते पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे ङ्का।
एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे फुं।
एतम्मि चेव उक्कोसए अदिट्ठे दिट्ठे फा।
कोडुविए चउगुरुगातो आढत्तं अट्ठोक्कतीए छेते ठाति।
दंडिय – पडिग्गहे छल्लहुयातो आढत्तं अट्ठोक्कंतीए मूले ठाति। गतं अचित्तं ॥२२०३॥
इयाणि सचित्तं भण्णति –

चतुगुरुगादी छेदो जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे।
अपरिग्गहिते देहे, दिट्ठादिट्ठे य सच्चित्ते ॥२२०४॥

दिव्वे देहजुते सचित्ते अपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे ङ्का। दिट्ठे फुं,
एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे फुं। दिट्ठे फा।
एयम्मि चेव उक्कोसए अदिट्ठे फा। दिट्ठे छेतो। दिव्व सचित्तं अपरिग्गहं गतं ॥२२०५॥
इयाणि सपरिग्गहं –

छल्लहुगादी चरिमं, जहण्णगादिम्मि होति सच्चित्ते।
तिविहे ति-परिग्गहिते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०५॥

दिव्वं देहजुत्तं सचित्तं पायावच्चपरिग्गहं जहण्णयं अदिट्ठे फुं। दिट्ठे फा।
एयम्मि चेव मज्झिमे अदिट्ठे छेतो। दिट्ठे मूलं।
कोडुवियपरिग्गहे छग्गुरुगातो अणवट्ठे ठायति।
दंडियपरग्गहे छेयाति पारंचिए ठायति ॥२२०५॥ दिव्व देहजुयं गत।
इयाणि पडिमाजुत भण्णति।
तत्थिमो अतिदेसो –

सण्णिहितं जह स-जियं, अच्चित्तं जह तथा असण्णिहितं।
पडिमाजुतं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२०६॥

जहा दिव्वं देहजुयं सचित्तं भणिय सण्णिहियं पडिमाजुयं वत्तव्व।
जहा दिव्वं देहजुत्तं अचित्तं भणियं, तहा असण्णिहियं पडिमा जुत्तं वत्तव्वं। दिव्वं गतं।
इयाणि माणुसं तिरिक्खजोणियं च भण्णति।
ते वि अविसिट्ठा एवं चेव भाणियव्वा ॥२२०६॥
णवरं–इमो विसेसो –

पच्छित्तं दोहि गुरुं, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से।
तेरिच्छे दोहि लहू, तवारिहं विण्णवंतस्स ॥२२०७॥

जे दिव्वे तवारिहा ते दोहिं वि तवकालेहिं गुरुगा। माणुस्से जे तवारिहा ते तवगुरुगा। तेरिच्छे जे तवारिहा ते कालगुरु।

अहवा – दोहि वि तवकालेहिं लहुगा। तब्भावासेवविण्णवणाए एयं पच्छित्तं वुत्तं ॥

अहवा – इमो अण्णो तब्भावासेवणपायच्छित्तदाणविगप्पो।

तिण्णि पया तेरिच्छा ठावेयव्वा – दिव्व-मणुय-तिरिया।

तेसिमहो दो पता ठावेयव्वा - देहजुत्तं, पडिमाजुयं च।

तेसिं पि अहो तिण्णि पया ठावेयव्वा – जहण्ण मज्झिम मुक्कोसं च।

तेसिमघो तिण्णि पया ठावेयव्वा – पायावच्च - कोडुंबिय-दंडियमपरिग्गहा।

तेसिमहो दो पया ठावेयव्वा – अचित्तं, सचित्तं च।

तेसिमहो दो पया ठावेयव्वा - अदिट्ठं दिट्ठं च ॥२२०७॥

एवं ठाविएसु इमा गाहा पढियव्वा –

> अयमण्णो उ विगप्पो, तिविहे तिपरिग्गहम्मि णायव्वो।
> सजिएयर पडिमजुए, दिव्वे माणुस्स तिरिए य ॥२२०८॥

"तिविह" त्ति - जहण्णादिया तिपरिग्गहिया पायातिया तिया सजीवं-सचेयणं, इयरं च अचेयणं। पडिमाजुतं सण्णिहिय असण्णिहियं च। दिव्वादिय च तिविह, णरादाओ दिट्ठ अदिट्ठं ॥२२०८॥

एतेसिं अहो इमे सत्त पायच्छित्तपया ठावेयव्वा –

> चत्तारि छच्च लहुगुरु, छम्मासिओ छेओ लहुगगुरुगो य।
> मूलं जहण्णगम्मि वि, णिसेवमाणस्स पच्छित्तं ॥२२०९॥

चउलहुगं चउगुरुं छल्लहुं छग्गुरुं छल्लहुछेदो छग्गुरुछेदो मूल च। एते अहोयकतीए चारेयव्वा।

इमो चारणियप्पगारो –

दिव्वे देहजुते जहण्णए पायावच्चपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे ङ्का।

दिव्वे देहजुते जहण्णए पायावच्चपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे ङ्का। दिट्ठे फ्रुं।

दिव्वे देहजुते जहण्णए कोडुंबियपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे फ्रुं। दिट्ठे फ्रां।

दिव्वे देहजुते जहण्णए कोडुंबियपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे फ्रां। दिट्ठे छल्लहुछेदो।

दिव्वे देहजुते जहण्णए दंडियपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठं फ्रुं। दिट्ठं फ्रां। (छग्गुरुछेदो)।

दिव्वे देहजुते जहण्णए दंडियपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे छग्गुरुछेदो, दिट्ठे मूलं ॥२२०९॥

एयं जहण्णाते तब्भावविण्णवणाए[1] य भणियं।

इयाणिं मज्झिमे –

> चउगुरुगा छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेदो लहुग गुरुगो य।
> मूलं अणवट्ठप्पो, मज्झिमए सेवमाणस्स ॥२२१०॥

एसेव चारणियप्पगारो, णवरं–चउगुरुगा पारद्धं अणवट्ठे ठायति ॥२२१०॥

---

१ सेवणाए।

इयाणिं उक्कोसं –

तव छेदो लहु गुरुगा, छमासिउ मूलसेवमाणस्स ।
अणवट्ठप्पो पारंचिओ य उक्कोसविण्णवणे ॥२२११॥

तवगहणातो छल्लहु छग्गुरुगा । छेयग्गहणातो छल्लहुछेदो, छग्गुरुछेदो । सेसं गथपसिद्धं । एत्थ छल्लहु आढत्त पारंचिए ठाति । देहजुत्तं गतं ॥२२११॥

इम पडिमाजुयं –

सण्णिहियं जह सजियं, अच्चित्तं जह तहा असण्णिहियं ।
पडिमाजुयं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२१२॥
पच्छित्तं दोहि गुरुं, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से ।
तेरिच्छे दोहि लहु, तवारिहं विण्णवेंतस्स ॥२२१३॥

पूर्ववत् । एते पच्छित्ता दिव्वे दोहिं गुरू, मणुस्से तवगुरू, तेरिच्छे कालगुरू ।

अहवा–दोहिं लहु ।

अहवा – मणुस–तिरिएसु इमो अण्णो विकप्पो ।

अहवा – जं भणियं तं दिव्वे चेव ॥२११३॥

इयाणिं माणुस-तिरिएसु भण्णति ।

तत्थ वि इमं मणुएसु –

चउगुरुगा छग्गुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होंति ।
छग्गुरुगा छेदो, मूलं अणवट्ठप्पो य मज्जिमए ॥२२१४॥

माणुस्सं जहण्णं पायावच्चपरिग्गह अदिट्ठ सेवति ङ्का । दिट्ठे फ्रुं ।

कोडुंबिए अदिट्ठे सेवति फ्रुं । दिट्ठे छेदो ।

दंडिए अदिट्ठे सेवति छेदो, दिट्ठे मूलं ।

एवं जहण्णए । मज्झिमे पच्छद्ध-छग्गुरुग आढत्त अणवट्ठे ठाति ॥२२१४॥

इमं उक्कोसे –

छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होति पारंची ।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, माणुस्से विण्णवेंतस्स ॥२२१५॥

छेयातो आढत्तं पारंचिए ठाति ॥२२१५॥ माणुसं गयं ।

इयाणिं तिरियाण –

चउलहुगा चउगुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।
चउगुरु छेदो मूलं, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥२२१६॥
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होति पारंची ।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, तेरिच्छं विण्णवेंतस्स ॥२२१७॥

जहा माणुसे चारणा तहा एयम्मि दट्ठव्वं ॥२२१७॥

मेहुणभावो तब्भावसेवणे सेवगस्स पच्छित्तं ।
वुत्तं वोच्छामेत्तो, ओभासंतस्स पच्छित्तं ॥२२१८॥

मेहुणसेवणं तद्भावसेवणा, ताए पच्छित्तं भणियं ।

अहवा – इमो अण्णो तद्भावसेवणे पच्छितविकप्पो ।

मासगुरुं चउगुरुगा, दो चतुगुरुगा य लहुय लहुया य ।
दो चतुलहुगा य तहा, दिव्वे माणुस्स तेरिच्छे ॥२२१९॥

अविसेसिते देहसंजुत्ते अचित्ते अपरिग्गहे अदिट्ठे मासगुरुं । दिट्ठे चउगुरुं
अविसेसिते देहसंजुत्ते सचित्ते अविसेसियपरिग्गहे अदिट्ठे चउगुरुं । दिट्ठे वि चउगुरुं ।
अविसेसिते देहजुते अपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे मासलहुं । दिट्ठे चउलहुं ।
अविसेसिते देहजुते अचित्ते अविसेस-परिग्गहे अदिट्ठे चउलहुं । दिट्ठे वि चउलहुं ।
दिव्व-माणुस-तिरिएसु अविसेसियं भणियं ॥२२१९॥ एवं देहजुयं गयं ।

इमं पडिमाजुय –

सण्णिहियं जह सजियं, अचित्तं जह तहा असण्णिहियं ।
पडिमाजुयं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२२०॥

पच्छित्तं दोहि गुरु, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से ।
तेरिच्छे दोहि लहू, तवारिहं विण्णवेंतस्स ॥२२२१॥

पूर्ववत् ॥२२२२॥ तब्भावसेवणो ततिओ विकप्पो गओ ।

[1]"वोच्छामेत्तो ओभासंतस्स पच्छित्तं" ति अस्य व्याख्या –

अविसेसितमदिट्ठे, गुरुगो दिट्ठे य होंति गुरुगा उ ।
दिव्वनरअदिट्ठ गुरुगो, दिट्ठे गुरुगा य दोहिं पि ॥२२२२॥

दिव्व-मणुय-तिरियविसेसेणं अविसेसियं ओभासति अदिट्ठे मासगुरुं । दिट्ठे चउगुरुगा ।
इयाणि-विसेसियं दिट्ठ अदिट्ठं ओभासति ।
(देवेसु अदिट्ठे) मासगुरुं, नरेसु (अदिट्ठे) ओभासति मासगुरुं । एवं चेव दोहिं वि दिट्ठेसु चउगुरुगा ॥२२२२॥

तिरियमचेतसचेते, गुरुओ अदिट्ठे दिट्ठे चउलहुगा ।
ओभासंतस्सेवं, तब्भावासेवणे वुत्तं ॥२२२३॥

---

1 गा० २२१८ ।

तिरिएसु चेयणे अचेयणे वा अदिट्ठे ओभासति मासगुरु । दोसु वि दिट्ठेसु चउलहुगा । एय ओभासंतस्स वुत्तं । तब्भावासेवणे पुणः पुरा वुत्तं ।

सीसो पुच्छति – सचित्ते ओभासण भवति, अचित्ते ओभासणा कहं संभवति ?

आयरिओ आह – अचित्ते संकप्पकरणा चेव ओभासणा ॥२२२३॥

एतेसामण्णतरं, माउग्गामं तु जो उ विण्णवए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२२२४॥

पूर्ववत् ॥२२२४॥ पडिमाजुत्तं जं सण्णिहिय त दुविधं – पंता, भद्दा वा ।

सण्णिहिय-भद्दियासु, पडिबंधो गिण्हणादिओ दोसा ।
पंतासु लग्गकड्ढण, खित्ताती दिट्ठ पत्थारो ॥२२२५॥

पडिमाजुते सण्णिहिते भद्दिया इत्थिविब्भमे करेज्ज, ताहे तत्थेव से पडिबधो भवेज्ज । एस अदिट्ठे दोसो ।

अह केणति दिट्ठो ताहे उड्डाहो गेण्हण-कड्ढणादओ दोसा । पतासु इमे अदिट्ठे दोसा पंता - पडि-सेवत तत्थेव लगेज्ज, श्वानवत् ।

अह केणइ दिट्ठो ताहे गेण्हणादयो दोसा । अहवा – सा पंता खित्तातियं करेज्जा । दिट्ठे पत्थारदोसे य । पत्थारो णाम एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खय-दिक्खगस्स (अह) दोसो, ॥२२२५॥ एते सण्णिहिते दोसा वुत्ता ।

इमे असण्णिहिते –

एमेव असण्णिहिते, लग्गण-खेत्तादिया णवरि णत्थि ।
तत्थेव य पडिबंधो, दिट्ठे गहणादिया उभए॥२२२६॥

दिट्ठे गेण्हणादिया दोसा असण्णिहिए वि भवति । "उभए" त्ति अप्पणो परस्स य आयरियादीण ॥२२२६॥

सुत्तणिवातो एत्थं, चउगुरुगा जेसु होंति ठाणेसु ।
उच्चारितऽत्थ सरिसा, सेसा तु विकोवणट्ठाए ॥२२२७॥

बितियपद[1]मणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविह[2] तेइच्छे ।
अभिओग[3] असिव[4] दुब्भिक्खमादिसु[5] जा जहिं जयणा ॥२२२८॥

अणप्पज्झो विण्णवेज्जा वि ण य पच्छित्त पावेज्जा । अप्पज्झो वा दुविधे तेइच्छे करेज्जा–सणिमित्ते अणिमित्ते वा मोहोदए तिगिच्छा ॥२२२८॥

तत्थिमा जयणा –

मोहोदय अणुवसमे, कहणे अकहेंत होंति गुरुगा उ ।
कहितोपेहा गुरुगा, जं काहिति जं च पाविहिती ॥२२२९॥

साहुस्स मोहे उदिण्णे अणुवसमंते आयरिस्स कहेयव्व । जइ आयरियस्स न कहेति तो साहुस्स चउगुरु' पच्छित्तं । अह कहिते आयरिओ उवेहं करेति तो आयरियस्स चउगुरुगा, उवेहकरणे जं सो मोहोदया हत्थकम्माति काहिति तं सव्वं आयरियस्स पच्छित्तं, जं च गेण्हणादियं उड्डाहं पाविहिति तं पि आयरिओ पावति ।।२२२९।।

दुविधे तेगिच्छम्मी, णिव्वीइतियमादियं अतिक्कंतो ।
अट्ठाणसद्दहत्थे, पच्छाऽचित्ते गणे दोच्चं ।।२२३०।।

तम्हा आयरिएण दुविध-मोहोदए तेइच्छं णिव्विगतिमाति कारवेयव्वं ।

णिव्वितियं करेउ ।

तह वि ण ट्ठिते णिव्वीतियं निव्वलं आहारेइ ।

तह वि अट्ठते ओमं आयंबिलाति उद्धट्ठाणाइयं पि अतिक्कंतो ताहे अट्ठाणेसु ठायति, दुवक्खरियं पाडयं ।

तह वि अट्ठते सद्दपडिबद्धं गच्छति ।

तह वि अट्ठंते असागारिए हत्थकम्मं करेइ ।

तह वि अट्ठंतें अचित्ते इत्थीसरीरे वीयनिसग्ग करेइ ।

तह वि अट्ठते "गणे दोच्च" त्ति-पिहट्ठितो गणस्स दोच्चभगेण कढिणं पडिसेवति । एस अक्खरत्थो ।।२२३०।।

इयाणि एतीए चेव गाहाए सवित्थरो अत्थो भण्णति –

उवभुत्त-थेरसद्धिं, सद्दजुता वसहि तह वि उ अठंते ।
अच्चित्त-तिरिय-णारिसु, णारिं णिव्वेगलक्खेज्ञा ।।२२३१।।

[१]-'अट्ठाण सद्दे" त्ति अस्य व्याख्या – भुत्तभोगिणो जे थेरा तेहिं सद्धिं दुवक्खरियातिपाडगे सद्दपडिबद्धाए य ठायति, जति णाम आलिंगणोवगूहण-चुंबणेत्थिसद्द परिचारणसद्दं वा सोउं वीयनिसग्गो भवेत् । [२]"पच्छा अचित्ते" ति अस्य व्याख्या – "अचित्त" पच्छद्धं ।

तह वि अट्ठते अचित्ते तिरिय-णारी-सरीरं पडिसेवति तिण्णि वारा ।

तह वि अट्ठंते माणुस्सीए अचित्तसरीरे, तं पुण जइ णिव्वंगं तो खयं करेइ, मा वेयालो हि त्ति । तत्थ वि तिण्णि वारा ।।२२३१।।

तह वि अट्ठते "गणे दोच्चं" ति दोच्चग्गहणेण वितिओ भंगो गहितो । वितियभंगग्गहणातो चत्तारि भंगा सूविता ।

ते य इमे –

सलिंगेण सलिंगे । सलिंगेण अण्णलिंगे ।

अण्णलिंगेण सलिंगे । अण्णलिंगेण अण्णलिंगे ।

सलिंगट्ठितेण अण्णलिंगे सेवियव्वं ।

---

१ गा० २२३० । २ गा० २२३० ।

तं पुण इमाए जयणाए –

लिंगेण चेव किढिया, दियासु जा तिण्णि तेण परमूलं ।
तत्तो चउत्थभंगे, सेसा भंगा पडिक्कुट्ठा ॥२२३२॥

सलिंगेण परलिंगे सेवमाणो गणाओ उवमुत्तथेरेहिं सद्धि अण्णवसहीए ठाविज्जति । तत्थंधकारे किढि-सड्ढीए मेलिज्जति, जहा अण्णोण्णं ण पस्सति । एवं तिण्णि वारा । जति उवसतं सुंदरं । उवसतस्स चउगुरु । तिण्ह वाराणं परतो परिसेवमाणस्स मूलं । तह वि अट्ठंतो ततो चउत्थ भगे सेवति, तत्थ वि तिण्णि वारा, परतो मूल । सेसा पढम–ततियभगा पडिक्कुट्ठा ॥२२३२॥

पढमभंगे इमा भवति –

सद्देसे सिस्सिणि सज्झंऽतेवासिणी कुल-गणे य संघे य ।
कुलकण्णगा कुलवधू, विधवा य तहा सलिंगेणं ॥२२३३॥

सदेसे परदेसे वा सिस्सिणी पडिसेवति, सज्झिविय पडिसेवति, अंतेवासिणी पडिच्छिगा ।

अहवा – सज्झंतिगस्स अंतेवासिणी भत्तुज्जिकेत्यर्थं, कुले चिय, गणे चिय, सघे चिय वा सेवति ।

बितियभंगेण इमा जइ पडिसेवति –

पितृमातृविशुद्धां कुलकन्यां अभिण्णजोणीं जति तं पडिसेवति, विगतधवं वा रंडं, कुलवधु वा, पडिसवति सलिंगेण ॥२२३३॥

ऐत्थ भंगेसु इमं पच्छित्तं –

लिंगम्मि य चउभंगो, पढमे भंगम्मि होति चरिमपदं ।
मूलं चउत्थभंगे, बितिए ततिए य भयणा तु २२३४॥

सलिंग परलिंगेहिं चउभगो । तत्थ पढमभगे पडिसेवंतस्स णियमा चरिमपद । चरिमे णियमा मूलं । बितिय ततियभंगेसु भयणा पच्छित्त ॥२२३४॥

द्वितियभंगे इमा भयणा –

अण्णत्थ सलिंगेणं, कन्नागमणम्मि होति चरिमपदं ।
विहवाए होति णवमं, अविहवणारी य मूलं तु ॥२२३५॥

"अण्णत्थ" त्ति-अण्णलिंगिणी, सलिंगेण पडिसेवति । कण्णं चरिम, विहवाए अणवट्ठो, अ-विधवाए मूलं ॥२२३५॥

अहवा – वितियभगे चेव इमं पच्छित्तं ।

अथवा पायावच्ची, कोडंविणि दंडिणी य लिंगेणं ।
मूलं अणवट्ठप्पो, चरमपदं पावती कमसो ॥२२३६॥

पायावच्चीए मूलं, कोडुंविणीए अणवट्ठं, डडिणीए चरिम ॥२२३६॥

ततियभगे इमा भयणा –

अण्णेण सलिंगम्मि य, सिस्सिणी सज्झंतिगी कुले चरिमं ।
णवमं गणिच्चियाए, संघच्चीए भवे मूलं ॥२२३७॥

अण्णलिंगेण सलिंग पडिसेवति । सिस्सिणि सज्जतिया, सिस्सिणि कुलेच्चिया, एतेसु चरिम, गणेच्चियाते अणवट्ठो, संघेच्चियाए मूलं ॥२२३७॥

वितियभंगपडिसेवणाए अणुवसंतो चरिमभगेण पडिसेवति ।

तत्थिमा जयणा –

गंतूण परविदेसं, लिंगविवेगेण सड्ढि किढिगासु ।
पुव्वभणिया य दोसा, परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥२२३८॥

जम्मविहारभूमीओ वज्जेउं परविदेसं गतूण सलिंगं मोत्तु किढि-सड्ढिगातिएसु एक-दो-तिण्णिवारा, परतो मूलं । पुव्वभणिया य इमे–कण्णा कूलवधू विधवा अमच्ची रण्गो महादेवी पयत्तेणं परिहरियव्वा ॥२२३८॥

सेसासु पडिसेवंतो इमं जयणं करेइ –

जोणी वीए य तहिं, चउक्कभयणा उ तत्थ कायव्वा ।
एग दुग तिण्णि वारे, सुद्धस्स उ वड्ढिता गुरुगा ॥२२३९॥

इत्थीए जाव पणपन्न वासा ण पूरेंति ताव अमिलायजोणी, अत्तव्वं भवति, गर्भं च गृण्हातीत्यर्थं ।

पणपन्नवासाए पुण कस्सइ अत्तव्वं भवति, ण पुण गब्भं गेण्हति ।

पणपण्णाते परतो णो अत्तव्वं, णो गब्भ गेण्हति, एसा दुस्समं वाससतायुए य पडुच्च पण्णवणा, परतो पुण आउसद्धं सव्वाउय-वीसति-भाग-सहियं एसा अमिलायजोणी आतवं भवति । कालो-जाव-पुव्व कोडीयायुया परत. सकृत् प्रसवर्धामिण्यः अमिलाणयोनयश्च अवस्थितयौवनत्वात् ।

जस्स पणपण्णवासा ण पूरंति तस्सिमो चउभंगो –

सवीयाए अतो वीयं परिसाडेति, सवीयाए बाहिं, अवीयाए अंतो, अवीयाए बाहिं ।

पणपण्णपूरवासाए एस चेव चउभंगो । एत्थ वीयगहणातो अत्तवदिणा घेप्पंति ॥२२३९॥

एतेसु भंगेसु इमं पच्छित्तं –

सवीयम्मि अंतो मूलं, वाहिर-पडिसाडणे भवे छेदो ।
पणपण्णिगाइ अंतो, छेदो बाहिं तु छग्गुरुगा ॥२२४०॥

पणपण्णवरिसा जस्स ण पूरंति ताए तिसु अत्तवदिणेसु तारिसाए सवीयाए अतो वीयपोग्गले परिसाडेति मूलं । अह बाहिं तो छेतो । पणपण्णपूरवरिसाए सवीयाए अतो छेतो । बहिं छग्गुरुगा ॥२२४०॥

अण्णे भणंति –

छेदो छग्गुरु अहवा, दसण्ह अंतो वहिं व आरेणं ।
पणपण्णायपरेणं, छग्गुरु चउगुरुग अंतो वहिं ॥२२४१॥

उड्ड-संभवदिणाओ-जाव-दसदिणा ण पूरेंति-ताव-अंतो छेतो, बाहिं छग्गुरु । "आरेण" ति – पणपण्णवासियाए आरेण य एय भणिय । सेससव्वभंगेसु पणपण्णाए य परतो छप्पण्णादिवरिसेसु अंतो छग्गुरुगा, बाहिं चउगुरुं । एवं सणिमित्ते अणिमित्ते वा पडिसेवतस्स एसा जयणा ॥२२४१॥ तेइच्छं ति दारं गतं ।

इयाणि "[1]अभिओगे" त्ति दारं –

> कुलवंसम्मि पहीणे, रज्जं अकुमारगं परो पेल्ले ।
> तं कीरतु पक्खेवो, एत्थ उ बुद्धीए पाहण्णं ॥२२४२॥

अभिओगे ण पडिसेवेज्जा ।

तत्थिमं उयाहरणं – कोइ अपुत्तो राया अमच्चेहिं भणिओ अपुत्तस्स तुज्झ कुलवंसे पहीणे अकुमारस्स य परो पेल्लेहिति रज्जं, किं कज्जउ, भणइ–"तुज्झ बुद्धीए पाहण्णं वट्टति ।" मंतीहिं भणियं-अंतपुरे कोइ खिप्पउ, तुह खेत्तज्जायया तुह ते पुत्ता । राया भणइ–अयसो मे भविस्सति । ते भणंति "जहा अयसो ण भवति तहा कज्जति । इमे समणा णिग्गथा ण कहंति, एते पक्खिप्पंतु । एव कीरउ । ताहे जे तरुणसंजता ते गहिया एक्कम्मि पासाए छूढा ॥२२४२॥

> तरुणीण य पक्खेवो, भोगेहि निमंतणा य भिक्खुस्स ।
> भोत्तुं अणिच्छमाणे, मरणं व तहिं च वसियस्स ॥२२४३॥
> सुट्ठुल्लसिते भीते, पच्चक्खाणे पडिच्छ गच्छ थेर विदू ।
> मूलं छेदो छग्गुरु, चउगुरु लहुमासो गुरु लहुओ ॥२२४४॥

[2]पेढे पूर्ववत् ॥२२३४॥

एवं ता अहिओगेण पडिसेवंतस्स जयणा भणिया ।

"[3]असिव-दुब्भिक्खादिसु" इमा –

> बहुआइण्णे इतरेसु, गेण्हमाणाण दुल्लभे भिक्खे ।
> असिवम्मि इमा जतणा, दुब्भिक्खे चेव संथरणे ॥२२४५॥

"इतरेसु" पासत्थाइसु बहुयाइण्णे एसणाणेसणेहिं गिण्हतेसु, साहूण एसणिज्जे दुल्लभे, असिवे वा असंथरतो, दुब्भिक्खे वा असंथरंतो, ॥२२३५॥

असिव दुब्भिक्खाणमणागयकाले आयरियाण इमा सामायारी –

> लहुगो य होइ मासो, दुब्भिक्ख-विसज्जणम्मि साहूणं ।
> णेहाणुरागरत्तो, खुड्डो वि य णेच्छती गंतुं ॥२२४६॥
> भिक्खं पि य परिहायति, भोगेहि णिमंतणा य भिक्खुस्स ।
> गेण्हति एगंतरिते, लहुगा गुरुगा य चउमासा ॥२२४७॥
> पडिसेवंतस्स तहिं, छम्मासा होंति छेद मूलं च ।
> अणवट्ठप्पो पारंचिओ य पुच्छा य तिविधम्मि ॥२२४८॥

[4]पेढे पूर्ववत् । णवर-तिविहं–दिव्वं माणुस्सं तेरिच्छं सणिमित्ताणिमित्तोदया ॥२२४८॥

---

१ गा० २२२९ । २ गा० ३६९ । ३ गा० २२२९ । ४ गा० ३९२, ३७४, ३:५ ।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू॥२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ,
संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा
उव्वट्टेत्तं वा परिव्वटेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं णिच्छल्लेइ,
णिच्छल्लेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं जिग्घइ,
जिग्घंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घायइ,
निग्घायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

माउग्गामो पुव्ववण्णिओ, त माउग्गाम हिम्रए ठवेउ, "मम एसा अविरतिअ" त्ति काउं एवं हियए णिवेसिऊण, आत्मनो हस्तकर्म करेति । हस्तकर्म पूर्वं वर्णित, चउगुरुं पच्छित्तं ।

अहवा – "जे" त्ति णिद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णितो, माउग्गामो वि पुव्ववण्णिओ, तस्स माउग्गामस्स मैथुनप्रतिज्ञया हस्तकर्म करोति, अंगुल्यादिना घट्टयतीत्यर्थः. अगादाण ।

मातुग्गामं हियए, णिवेसइत्ताण हत्थकम्मादी ।
जे भिक्खू कुज्जाही, तं मेहुणसण्णितं होति ॥२२४९॥
हत्थाइ-जाव-सोतं, पढमुद्देसम्मि जो गमो भणितो ।
मेहूणं पडियाए, छट्ठुद्देसम्मि सो चेव ॥२२५०॥

इह पुण माउग्गामं हियए काउ करेति तेण चउगुरुग । तं चेव वितियपदं, सच्चेव "अट्ठाणसद्दहत्था-दिया जाव गणे दोच्च" त्ति ।

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए अवाउडिं सयं कुज्जा करेंतं वा (सयं बूया, बूएंतं वा) सातिज्जंति ॥सू०॥११॥

भिक्खू य माउग्गामो य पुव्ववण्णितो । जो त सयमेव अवाउडि करेति ।

अहवा – सयं चेव बूया इच्छामि ते "अज्ज" त्ति आर्ये ! अचेलभावो, अचेलीया अपावृता इत्यर्थ, अगादाणं पुव्ववण्णितं, पासित्तए प्रेक्षितुमिच्छे ज्ञा ।

जे कुज्जा बूया वा, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए ।
इच्छामो ते अज्जे, अचेलियं दट्ठुमाणादी ॥२२५१॥

मैथुनेच्छया आणादिया दोसा भवति । परेण य दिट्ठे सका भोइयघाडियातिया दोसा ॥२२५१॥

अहवा –

णातग कहण पदोसे, सयं दट्ठूण गेण्हणादीया ।
आसुग्गहणं कीवे, अंगादाणं तु मा पेहे ॥२२५२॥

सा कुविया णायग-भोतिगादीण कहेज्ज, ते पदोस गच्छेज्जा, पदुट्ठा ज काहिंति तमावज्जे ।

अहवा – ताहे अगादाणे दातिते सो सयमेव गहण करेज्जा । तत्थ गेण्हण-कड्ढणातिया दोसा । कीवो य आसु पडिसेवण करेज्ज । एत्थ वि गहणपदोसातिया दोसा ।

अहवा – ताए दाइयं ण पुण पडिसेवण देति ताहे सो चिंताए दट्ठुमिच्छति । जम्हा एते दोसा तम्हा अगादाणाणि णो पेहे ॥२२५२॥

किं चान्यत् –

अहभावदरिसणम्मि वि, दोसा किमु जो तदट्ठिओ पेहे ।
अहियं तं बंभवओ, सूरालोगो व चक्खुस्स ॥२२५३॥

अहाभावो – अथाप्रवृत्ति, अहाभावेण वि दिट्ठं मोहुदय भवति, किमु जो मेहुणट्ठी पेहति । तस्स पलोयणं बभचारिणो अहियं भवति जहा चक्खुस्स सूरालोयण ॥२२५३॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२५४॥*

(*अत्र—२२२९, २२३०, २२३१ सख्याका. गाथा पुनः पठनीयाः)

भणेज्ज वा करेज्ज वा, पढमं ता भणाति, जति णेच्छति ताहे अवणेति वि, अभिओगेण वि बला अवणाविज्जति ॥२२४४॥

मोहोदयअणुवसमे, कहणा अकहेंति होंति गुरुगा य ।
कहितापेहा गुरुया, जं काहिति जं च पाविहिति ॥२२५५॥

दुविधे तेइच्छम्मी, निव्वीतियमाइयं अतिक्कंते ।
अट्ठाण सद्द हत्थे, पच्छा चित्ते गणे दोच्चं ॥२२५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा, कलहं बूया, कलहवडियाए बूया, कलहवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

मेहुणट्ठी कुचोरुसिरातिएहिं पंतावेति, जारिसं वा कामातुरो उल्लवति तारिसं चेव बूया, एतेसिं चेव दसणवडियाए वसहीओ साधीओ वाडगाओ गामाओ वा बाहिं गच्छति । जत्थेस कामकलहो सभवति । तस्स चउगुरुं ।

विसयकलहेतरं वा, मातुगामस्स मेहुणट्ठाए ।
जो कुज्जा बूया वा, बहिया गच्छेज्ज आणादी ॥२२५७॥

कलहो दुविहो–विसयकलहो इतरो य । इतरो णाम कसायकलहो । शेषं गतार्थं ॥२२५७॥

इमो विसयकलहो –

काएण व वायाए, वामपत्ताए विसयकलहो तु ।
चंडिक्कितं व पासं, इतरो पुण तीय असहीहिं ॥२२५८॥

वामो कामस्तत्प्रवृत्ति. जा पतावणकिरिया सो कायकलहो । जं कामातुरो थी पुरुसो वा उल्लवति सो वायकलहो । रुट्ठा चंडिकिता, तं चंडिकितं कसातियं पासिऊण साहू तस्साराहणणिमित्तं तीसे विपक्खेहिं सह ज कलहेति, एस "इयरो" कसायकलहेत्यर्थः । ताहे सा आराहिया पडिसेवणं पयच्छेज्ज ॥२२५८॥

इमे दोसा –

पडिपक्खो तु पदुट्ठो, छोभग्गहणादि अहव पंतावे ।
अण्णेसिं पि अवण्णो, णिच्छुभणादी य दियराओ ॥२२५९॥

तीसे पडिपक्खो सण्णाइया इयरे वा ते पदुट्ठा संजयस्स छोभग देज्ज – णूणं तुम एयस्स माणुसस्स कज्ज करेसि, गेण्हण कड्ढणादिए अ दोसे पावेज्ज ।

अहवा – ते पडिपक्खा त संजय आउसेज्ज वा हणेज्ज वा बधेज्ज वा मारेज्ज वा, ते पदुट्ठा अण्णसाधूण वि-अवण्णं वएज्ज, आतोसादिय वा करेज्ज । गामवसहीओ वा णिच्छुभेज्जा, दिया छू । रातो छूा ॥२२५९॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भि क्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२६०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए लेहं लिहति, लेहं लिहावेति, लेहवडियाए वा गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

अप्पणो भावं लिहिउं मेहुणट्ठाए तस्स पट्ठवेति। अण्णेण वि लिहावेति। लिहणट्ठाए वा बहिं गच्छति। चउगुरुं।

लेहो दुविधो –

छण्णेतरं च लेहो, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए।
जे लेहति लेहावति, बहिया गच्छे व आणादी ॥२२६१॥

छण्णो अप्पगासो, इयरो पगडो य ॥२२६१॥

तत्थ छण्णो इमो तिविहो –

लिवि भासा अत्थेण व, छण्णो इतरो लिवीउ जा जहियं।
उत्ताणत्थो सभासा, गतो य अप्पाहितं वा वि ॥२२६२॥

लिवी जा दोहिं मिलिउं उप्पाइया। अधवा – दविडमाई जा जम्मि देसे णत्थि। अणारिया भासा छण्णा। अत्थओ – ज अप्पई ताभिहाणेण लिहितं वा ववहियं वा। "इयरो" अच्छण्णो – जा जहिं पसरइ लिवी ताए लिहइ। उत्ताणट्ठं सभासए वा लिहइ, वाइअ वा फुडवियडत्थ सदिसइ पुरिसो इम लिहिउ पट्ठवेइ अत्थतोऽववहितं ॥२२६२॥

काले सिहि-णंदिकरे, मेहनिरुद्धम्मि अंबरतलम्मि।
मित-मधुर-मंजुभासिणि, ते धन्ना जे पियासहिता ॥२२६३॥

पयपढमक्खरा विण्णवेंति।

इत्थी पडिलेह पयच्छइ –

कोमुति णिसा य पवरा, वारियवामा य दुद्धरो मयणो।
रेहंति य सरयगुणा, तीसे य समागमो णत्थि ॥२२६४॥

पढमपायमक्खरेहिं पडिवयणं।

इमो वि इत्थिलेहो –

एवं पाउसंकाले, वरिसारत्ते य वासितुं मेहा।
होउं णिब्भरभारा, तुरियं संपत्थिया सरदे ॥२२६५॥

इहावि पादपढमक्खरेहिं आयभावपण्णवणं।

तुह दंसण-संजणिओ, हियए चिंतिज्जमाण विलसंतो।
वग्गति य मे अणंगो, सोगुल्लोगेसु अंगेसु ॥२२६६॥

लिक्खंत-णिज्जमाणे, अप्पिज्जंते कहिज्जमाणे वा।
दोसा होंति अणेगा, लिहग-णिवेदंत-णिंताणं ॥२२६७॥

लिक्खंतो केण दिट्ठो तत्थ गेण्हणातिया दोसा। एव णिज्जंतो अतरा केण ति दिट्ठो, गहितो वा, अप्पिज्जतो भोतिगादिणा, सदेसो वा कहेज्जंतो सुतो केणइ। पच्छद्ध गतार्थम् ॥२२६७॥

वितियदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२६८॥

पूर्ववद् ॥२२६८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा भल्लायएण उप्पाएंति, उप्पाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

तेन सेव्यमानेन पुष्यत इति पोपः, आत्मानं वा तेन पोषयतीति पोष, तदर्थिनो वा तं पोषयतीति पोष. मृगीपदमित्यर्थः। तस्य अंतानि पोषतानि। पिट्ठिए अत पिट्ठत अपानद्वारमित्यर्थं। तस्यातानि पिट्ठंतानि। उत् प्राबल्येन पावयति उप्पाएति। जो एवं करेति तस्स चउगुरुं।

भल्लायगमादीसुं, पोसंते वा वि अहव पिट्ठंते।
जे भिक्खू उप्पाए, मेहुणट्ठाए आणादी ॥२२६९॥

आदिसद्दातो चित्रकमूलादिना, आणादिया य दोसा ॥२२६९॥

किं णिमित्तं सोतं उप्पाएति ?

पडिणीयता य अण्णे, आयतिहेतुं व कोउएणं वा।
चीयत्ता य भविस्ससि, पउणिस्ससि ता इमेणं तु ॥२२७०॥

सो साहु तीए अगारीए पडिणीयत्तेण, "अण्णे" त्ति जे तस्स णीता संघाडओ वा तस्स पडिणीययाए, आयतिहेउं एस ममायत्ता जं भणीहामि तं कज्जिता करिस्सति, दंसणकोउएणं वा उप्पक्कं ममेयं दंसेहित्ति काउं।

अधवा – संघाडस्स अचियत्तता। ताहे साहु पुच्छति कथं मम संघाडगस्स चियत्ता भवेज्जामि ताहे सो भणाति – अहं ते एरिसं जोणियालेवं देमि, जेण भोइगस्स चियत्ता भविस्ससि।

अहवा – तस्सा तम्मि देसे किंचि दुक्खति ताहे पुच्छितो भणति – इमेण ओसहेण लिंपाहि, ताहे पउणिस्ससि ॥२२७०॥

इमे दोसा –

दिट्ठा व भोइएणं, सिट्ठे णीया व जं सि काहंति।
परितावणा व वेज्जे, तुवरे लेवट्ठता काया ॥२२७१॥

तं परिभोगकाले भोतिएण दिट्ठं पुच्छिया किमेय ? कहियं, संजएण मे एयं कय। एगतरपओसं गच्छे। जं ते पंतावणादि करिस्संति तमावज्जे, सावज्ज अणागाढातिवेयणं वा पावति त संजयस्स पच्छित्तं। उद्दावणाए मूल। वेज्जा वा ज किरियं करेंता तुवरट्ठया लेवट्ठया वा काए ववरोवेज्ज, एत्थ वि संजयस्स कायणिप्फण्णं ॥२२७१॥

संजएण वा लेवे उवंदिट्ठे आगम्म कहेज्जा –

उप्पक्कमे गत्तं, पेच्छासु ण जा से कीरती किरिया।
ते चिय दोसा दिट्ठे, अंगादाण पासणे जे तु ॥२२७२॥

ताए भणियं उप्पक्क मे गत्त पेच्छामो जा से किरिया किज्जति, ते चेव सव्वे दोसा जे अगायाण-पासणसुत्ते वुत्ता ।।२२७२।।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ।।२२७३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
भल्लायएण उप्पाएत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१५।।

सीतोदग वियडेणं, पासंते वा वि अहव पिट्ठंते ।
जे भिक्खू पाहित्ता, उच्छोले आणमादीणि ।।२२७४।।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ।।२२७५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा
विलिंपेज्ज वा, आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा,
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता
अन्नयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा,
धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१८।।

सीतोदे जो उ गमो, णियमा सो चेव तेल्लमादीसु ।
गंधादीएसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।२२७६।।

सीतोदगेण देसे सव्वे फासुगाफासुगेण उप्पिलावणाइया य दोसा, धोयं तेल्लाइणा मक्खेयव्व, एत्थ वि ते चेव दिट्ठाइया लोद्धादिणा वा सुगधदव्वेण, आउक्काइयादिविराहणा ।।२२७६।।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असती दुब्भिक्खमादीसु जा जहिं जतणा ।।२२७७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कसिणाइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अहयाइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जें भिक्खू माउग्गामसस्स मेहुणवडियाए धोव-रत्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडिवयाए चित्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए विचित्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
॥सू०॥१९॥ ॥सू०॥२०॥ ॥सू०॥२१॥ ॥सू०॥२२॥ ॥सू०॥२३॥

अहयं णाम तंतुग्गत्तं, परिभोगत्तेण धरणं ।

अहवा – धारणं अपरिभोगत्तणेणं, तेसिं दाहामि त्ति धरेति । पाणादिणा मलस्स फेडणं धोय । ते मलिणा धरेति, वर अणुभट्ठाएत्ता संकणिज्जो भविस्सामि एय आयभावियासु धरेति ।

अहवा – सो चेव मलिणो धरेति । वरं मम एयाओ अत्तट्ठभाविताओ मलिणवासस्स वीसभं एति । चित्तं णाम एगतरवण्णुज्जल । विचित्तं णाम दोहिं तिहिं वा सव्वेहिं वा उज्जल । सव्वेसु चउगुरुगं आणादिया य दोसा ।

अह जे य धोयमइले, रत्ते चित्ते तधा विचित्ते य ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंति आणादी ॥२२७८॥

मइले अणुभडहेतुं, आतट्ठित भाविताासु वा वहती ।
आत-पर-मोहउदयट्ठयाए सेसाण दाहामो वा ॥२२७९॥

वहति णाम परिभोगं करेति । सेसा तंतुगयाइया मइल मोत्तुं आय-पर-मोहुदयट्ठयाए वहइ । तेसिं वा दाहिति धरेति त्ति । जति देति ज ताओ काहिति कम्मबंधप्पसगो य दट्ठव्वो ।

अहवा – दंतो दिट्ठो करणं अणुवधीते ॥२२७९॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खादिसू जा जहिं जतणा ॥२२८०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं संबाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं फुमेज्ज वा
रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदेज्ज वा विच्छिदेज्ज वा अच्छि दंतं वा विच्छि दंतं वा
सातिज्जति ।।सू०।।४२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं

अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा,
आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति॥४६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेणं धूवणजाएण
धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा, धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा
अंगुलीए निवेसिय निवेसिय नीहरइ,
नीहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाओ नहसीहाओ कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते फूमेज्ज वा रएज्ज वा,
फूमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे संबाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लो-
ल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे फूमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६५॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा,
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि संबाहेज्ज वा,
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा
कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा
दंत-मलं वा नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा
पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सीस-दुवारियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

मलिणो रयगुंडितो, अचक्खुस्सो वा अणिट्ठच्छवी वा अफुडियहत्थपादो इत्थीणं अकामणिज्जो पादप-मज्जणाती करेति, वरं इत्थीणं कमणिज्जो भविस्सामी ति, चउगुरु आणादिया य दोसा।

पादे पमज्जणादी, सीसदुवारादि जो गमो ततिए।
मेहुण्ण-परिण्णाए, छट्ठुद्देसम्मि सो चेव ॥२२८१॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२८२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खंडं वा सक्करं वा मच्छंडियं वा अन्नयरं वा पणीयं आहारं आहारेइ; आहारेंतं वा सातिज्जति, तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घातियं ॥सू०॥७७॥

मधु-मज्ज-मंसा अववाते दट्ठव्वा, अण्णतर वा णेहावगाढं उवक्खडिय आहारेति, अवर उवचिय-मस-सोणिओ भविस्सामि सुकुमालो य, अतो कमणिज्जो भविस्सामि। उवचियमंससोणिएहिं सुह पडिसेविज्जति, जति एयणिमित्तं भुंजति ङ्का।

खीर-दधिमादीहिं, सेसाहारा विसूइया होंति।
मेहुण्ण-परिण्णाते, ताणाहारेंत आणादी ॥२२८३॥

जइ मेहुणवडियाए आहारेति तो चउगुरु, इहरहा मासगुरु। विगतिपरिवूढदेहस्स ते चेव गमणा-दिया दोसा ॥२२८१॥

णाणादि संधणट्ठा, वि सेविता णेति उप्पहं विगती।
किं पुण जो पडिसेवति, विगती वण्णादिणं कज्जे ॥२२८४॥

जति वि णाणादिसंधणट्ठा विगतिं भुंजति ततोवि विगइ उप्पह णेति, किं पुण जो वण्णातीण अट्ठा मेहुणट्ठा वा विगतिं भुंजति ॥२२८२॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसु जा जहिं जतणा॥२२८५॥पूर्ववत्।

पुरिसाणं जो उ गमो, इत्थीवग्गम्मि होइ सो चेव।
एसेव अपरिसेसो, इत्थीणं पुरिस-वग्गम्मि ॥२२८६॥

पुरिसाणं जो गमो इत्थीवग्गे भणितो जहा "भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए विण्णवेति" एस इत्थीणं पुरिसवग्गे वत्तव्वो – "जा भिक्खुणी वि पिउग्गामं मेहुणवडियाए विण्णवेइ," उस्सग्गाववाएहिं दोसदसणेहिं अत्थो तहेव वत्तव्वो ॥२२८४॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥

सप्तम उद्देशकः

छट्ठुद्देसगे सत्तमुद्देसगो एवं सबज्झति –

आहारमंतभूसा, मालियमादी उ बाहिरा भूसा।
विगती विगतिसहावा, व बाहिरं कुज्ज संठप्पं ॥२२८७॥

छट्ठुद्देसगस्स अंतिमसुत्ते विगतीआहारो पडिसिद्धो, मा तेण विगतिआहारेण य पीणियसरीरस्स अब्भतरभूसा भविस्सति। सत्तमुद्देसगे वि आइमसुत्ते मालिगपडिसेहो, मा बाहिरभूसा भविस्सति।

अहवा – विगतीआहारातो सजमविगतसभावो बाहिरविभूसाणिमित्तं तणमालियाति करेज्ज।

तप्पडिसेहणत्थं इमं सुत्तं –

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअ-दंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा बीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा करेइ; करेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअदंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा बीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअदंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा

कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा वीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा पिणद्धइ, पिणद्धं तं वा सातिज्जति॥सू०३॥

वीरणातितणेहिं पंचवण्णमालियाओ कीरंति जहा महुराए। मुजमालिया, जहा – विज्जातियाणं जडीकरणे।

वेत्त-कट्ठेसु कडगमादी कीरति, कट्ठे वा चुदप्पडिया भवति। मयणे मयणपुप्फा कीरति, पंचवण्णा।

भेंडेसु भेंडाकारा करेंति, मोरंगमयी वा।

मक्कडहड्डेसु हड्डमयी डिंभाण गलेसु वज्झति, हत्थि-दतेसु दंतमयी, वराडगेसु कवडगमयी।

महिससिंगेसु जहा पारसियाणं, पत्तमालिया तगरपत्तेसु माला गुज्झति।

अहवा – विवाहेसु अणेगविहेसु अणेगविहो वंदणमालियाओ कीरति। फलेहिं गुजातितेहिं रुद्दक्खेहिं वा पुत्तजीवगेहिं वा वोंडीचमणे तप्फलेहिं वा माला कीरति। अण्णेण वा कारवेइ, अणुमोयति वा। कयं वा अपरिभोगत्तणेण धरेति, पिणद्धति अप्पणो सरीरं आभरेति, सव्वेसु वि मेहुणपडियाए। एत्थ एक्केक्काओ पदातो आणादिया दोसा आय-संजम-विराहणा य भवति ॥२२८७॥

तणमालियादिया उ, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
मेहुण्ण-परिण्णाए, ता उ धरेंतस्स आणादी ॥२२८८॥

तण-वेत्त-मुंज-कट्ठे, भिंड-मयण-मोर-पिच्छ-हड्डमयी।
पोंडियदंते पत्तादि, करे धरे पिणिद्धे आणादी ॥२२८९॥

सविकारो मोहुद्दीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं।
गहणं च तेण दंडिग, गोमिय भाराधिकरणादी ॥२२९०॥

सलिंगातो सविकारया लब्भति, आय-पर-मोहुदीरणं वा करेति, सुत्तत्थेसु वा पलिमथो, सरागो वा लब्मति, अणाइण्णं तित्थकरेहि य अदिण्णं, तेणगेहिं वा तदट्ठाए घेप्पति, असाहु त्ति काउं दडिगेहिं वा घेप्पति, गोम्मिएहिं घेप्पति, भारेण य आयविराहणा, अणुवकारित्ता य अधिकरणं भवति, फालण-छिंदण घसणादिएसुं वा आतविराहणा, झुसिराझुसिरेहिं य संजमविराहणा, लोगे य उड्डाहो ॥२२९०॥ जम्हा एते दोसा तम्हा ण करेति, णो धरेति, णो पिणद्धति।

भवे कारणं –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा॥२२९१॥

अणप्पज्झो सव्वाण वि करेज्ज, ण य पच्छित्तं। अप्पज्झो वा दुविध तेइच्छे तारिस खरियादीणं आराहणट्ठाए करेज्ज। ताहे ताओ लोभावियाओ पडिसेवणं देज्ज। पढमं ता जाओ अप्पमोल्लाओ वा, पच्छा बहुमोल्लाओ। एवं दुब्भिक्खे वि भेंडगादि कण्णपूरगादि काउं दडियस्स उवट्ठविज्जति, सो परितुट्ठो भत्त दाहिति ॥२२९१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा परिभुंजति, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

हिरण्ण रुप्पं –

अयमादी लोहा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंतस्स आणादी ॥२२९२॥

सविगारो मोहुद्दीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं ।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो नंदिसेणेण ॥२२९३॥

मेहुणट्ठाए करेंते पिणिहितस्स ङ्का. आणादिया य विराहणा । धमंत-फूमंतस्स सजम-छक्काय-विराहणा । राउले वा मूइज्जइ तत्थ बंधणातिआ य दोसा । सुवण्ण वा कारविज्जति, लोहादि वा कुट्टतस्स आयविराहणा वा, तेहिं वा घेप्पेज्ज ॥२२९१॥ जम्हा एते दोसा तम्हा णो करेति, णो धरेति, णो पिणद्धति ।

कारणे कारे –

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२९४॥

रायाभिओगेण मेहुणट्ठे वा करेज । बलामोडीए वा काराविज्जति, दुब्भिक्खे वा असथरतो सय करेज्ज।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा
मुत्तावलीं वा कणगावलीं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा

मुत्तावलीं वा कणगावलीं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंवसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा धरेति;
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा
मुत्तावलीं वा कणगावलिं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंवसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा परिभुंजति,
परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०। ६॥

कुडलं कण्णाभरण, [1]गुणं कडीसुत्तयं, मणी सूर्यमणीमादय, तुडियं बाहुरक्खिया, तिण्णि सरातो तिसरियं, वालभा मउडादिसु ओचूला, अगारीण वा गलोलइया, नाभिं जा गच्छइ सा पलवा सा य उलवा भण्णति । अट्ठारसलयाओ हारो, णवसु अड्ढहारो, विचित्तेहिं एगसरा एगावली, मुत्तिएहिं मुत्तावली, सुवण्णमणिएहिं कणगावली, रयणेहिं रयणावलीं, चउरंगुलो सुवण्णओ पट्टो, त्रिकूटो मुकुट ।

कडगाई आभरणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंतस्स आणादी ॥२२६५॥
सविगारो मोहुद्दीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं ।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो णंदिसेणेण ॥२२६६॥

मेहुणपडियाए ब्भा, जच्चेव लोहेसु विराहणा ।

कारणे –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२६७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईण-पावराणि वा
कंवलाणि वा कंवल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर पावराणि वा
काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहा-सामाणि वा
उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा
सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा
पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा
कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा

---

१ गुणं वा मणिं वा तिसराणि का वालंभाणि वा" एतानि सूत्रे न सन्ति चूर्णौ व्याख्यातानि ।

कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईण-पावराणि वा कंबलाणि वा कंबल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर-पावराणि वा काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि[1] वा आईण-पावराणि वा कंबलाणि वा कंबल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर-पावराणि वा काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहा-सामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा परिभुंजति,
परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अजिण चम्मं, तम्मि जे कीरति ते आईणाणि, सहिण सूक्ष्म, कल्लाणं स्निग्ध, लक्षणयुक्त वा, किं चि सहिण कल्लाण च, चउभंगो। आयं णाम तोसलिविसए सीयतलाए अयाण खुरेसु सेवालतरिया लग्गति, तत्थ वत्था कीरति। कायाणि कायविसए काकजंघस्स जहिं मणी पडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि ताणि कायाणि भण्णंति। दुते वा काये रत्ताणि कायाणि। पोंडमया खोम्मा, अण्णे भणति – रुक्खेहिंतो निग्गच्छति, जहा "वडेहिंतो पादगा साहा"। दुगुल्लो रुक्खो तस्स वागो घेत्तु उदूखले कुट्टिज्जति पाणिएण ताव जाव भूसीभूतो ताहे कज्जेति एतेसु दुगुल्लो, तिरीडरुक्खस्स वागो, तस्स तंतू पट्टसरिसो सो तिरीलो पट्टो, तम्मि कयाणि तिरीडपट्टाणि।

अहवा – किरीडयलाला मयलविसए मयलाणि पत्ताणि कोविज्जति, तेसु वालएसु पत्तुणा दुगुल्लातो अब्भतरहिते ज उप्पज्जति तं अंसुयं, सुहुमतरं चीणंसुय भण्णति। चीणविसए वा जं त चीणसुय, जत्थ विसए जा रगविधी ताए, देसे रत्ता देसरागा। रोमेसु कया अमिला।

१ सूत्रस्थ-पदानि चूर्णौ अनानुपूर्व्या व्याख्यातानि, सूत्रबहिर्भूतानि अपि कानि चित्।

अहवा – णिम्मला अमिला घट्टिणी घटिता ते परिभुज्जमाणा कडं कडेंति। गज्जितसमाणं सद्द करेंति ते गज्जला। फडिगपाहाणनिभा फाडिगा अच्छा इत्यर्थः। कोतवो वरको उवारसा कंबला खरडग-पारिगादि पावारगा, सुवण्णे दुते सुत्त रज्जति, तेण ज वुत तं कणग, अंता जस्स कणगेण कता त कणगयकं, कणगेण जस्स पट्टा कता त कणगपट्टं।

अहवा – कणगपट्टा मिगा, कणगसुत्तेण फुल्लिया जस्स पाडिया तं कणग-खचित्तं, कणगेण जस्स फुल्लिताउ दिण्णाउ तं कणगफुल्लिय। जहा कद्दमेण उड्डेडिज्जति। वग्घस्स चम्म वग्घाणि, चित्तग-चम्मं विवग्घाणि। एत्य छुपत्रिकादि एकाभरणेन भडिता आभरणत्थपत्रिकं चदलेहिक-स्वस्तिक-घटिक-मोत्तिकमादीहिं मडिता आभरणविचित्ता, सुणगागिती जलचरा सत्ता तेसिं अजिणा उट्टा।

अण्णे भण्णंति – उट्टं चम्म गोरमिगाणं अइणा गोरमिगादिणा पेसा पसवा तेसिं अइण।

अण्णे भणंति – पेसा लेसा य मच्छादियाण एते –

सहिणादी वत्था खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते।
मेहुण्ण-परिण्णाए, ताइ धरेंतम्मि आणादी ॥२२९८॥

सविगारो मोहुद्दीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो णंदिमेणेण ॥२२९९॥

आणादि भारो भय-परितावणादि सव्वे दोसा वत्तव्वा।

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३००॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरुंसि वा उयरंसि वा थणंसि वा गहाय संचालेइ, संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

अक्खा णाम संखाणियप्पदेसा। अधवा – अण्णतर इंदियजायं अक्ख भण्णति, उवगच्छया कक्खा भण्णति, वक्खंसि वा ऊरुंसि, हत्थादिएसु वा मेहुणवडियाए सचालेति चउगुरुं।

अक्खादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
जो घेत्तुं संचाले, सो पावति आणमादीणि ॥२३०१॥

आणादिया दोसा, जस्स सा अविरइया रूसति। अहवा – सच्चेव रूसेज्ज, गेण्हणादयो दोसा ॥२२९६॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३०२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं संबाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं लोद्धेण वा
कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं सीओदग-
वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं फुमेज्ज वा
रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा,
अच्छिंदेंतं वा विच्छिंदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा
विसोहेज्ज वा, नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं

अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अण्णयरेणं आलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगेंतं वा मक्खंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरेत्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा धूवंतं वा पधूवंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा अंगुलीए निवेसिय निवेसिय नीहरइ, नीहरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाओ नहसीहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं कक्ख-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं मंसु-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं वत्थि-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०४३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं चक्खु-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४४॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते आघंसेज्ज वा
पघंसेज्ज वा, आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज्ज वा
पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे संबाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे सीओदग-वियडेण वा

उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

❀　❀　❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं उत्तरोट्ठाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि लोद्धेण वा
कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदग-
वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि फुमेज्ज वा
रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं भुमग-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं पास-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा
दंत-मलं वा नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेयं वा
जल्लं वा पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स गामाणुगामंयं दूइज्जमाणे
सीस-दुवारियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।

अण्णमण्णस्स पाए पमज्जति, इमो साहू इमस्स, इमो वि इमस्स । दोण्ह वि एस संकप्पो-माउग्गामस्स अभिरमणिज्जा भविस्सामो त्ति काउं ।

पायप्पमज्जणादी, सीसदुवारादि जो गमो छट्ठे ।
अण्णोण्णस्स तु करणे, सो चेव गमो उ सत्तमए ।।२३०४।।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ।।२३०५।।

इमे अत्थ-सुत्ता –

अण्णोण्ण-करण-वज्जा, जे सुत्ता सत्तमम्मि उद्दिट्ठा ।
उभयस्स वि विण्णवणे, इत्थी-पुरिसाण तो सुणसु ।।२३०६।।

अण्णोण्णकरणसुत्ता जे सत्तमुद्देसे वुत्ता ते वज्जेउं सेसगा पाय-पमज्जणादी-जाव-सीसदुवारादि ।

अहवा – तणमालियादि-जाव-सीसदुवारसुत्तं ते उभयस्स वि इत्थी-पुरिसाणं विण्णवणाए-दट्ठव्वा । किमुक्तं भवति—इत्थी पुरिसं विण्णवेति, पुरिसो इत्थीं विण्णवेति ।।२२६६।।

एसेव गमो णियमा, णपुंसगेसुंपि इत्थि पुरिसाणं ।
पादादि जा दुवारं, सरिसेसु य बालमादीसु ।।२३०७।।

पुरिसो इत्थीणेवत्थं णपुंसगं विण्णवेति । इत्थी वि पुरिसणेवत्थं णपुंसगं विण्णवेति ।

"सरिसेसु बालमादीसु" त्ति-इत्थी इत्थिरूवं बालं चुंवति । पुरिसो पुरिसरूवं बालं चुंवति । चसद्दातो विसरिसेसु अ जति मेहुणवडियाए-बालं चुंवति, आदिसद्दातो अबाल पि, तो चउगुरुं ।

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए अणंतरहियाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा
तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।सू०।।६७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससिणिद्धाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससरक्खाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए महयाकडाए[1] पुढवीए णिसियावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए सीलाए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए लेलूए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कोलावासंसि वा दारूए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगंसि णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

अणंतरहिता णाम सचित्ता । अंते ठिता अता, ण अता अणंता मध्यस्थिता इत्यर्थं । सा सीतवातादिएहिं सत्थेहिं रहिता अशस्त्रोपहता । अशस्त्रोपहतत्वाच्च आद्यपदार्थत्वेन सचित्ताख्यानमित्यर्थं । तम्मि जो मेहुणनिमित्त णिसियावेति तुयट्टावेति वा तस्स सुत्ता । पुढविनिप्फण्ण सुत्त । एव स्वत' अचित्ता आउक्काएण पुण ससणिद्धा, सचित्तपुढविरयेण ससरक्खा, महता कंदा (रूवा) सिला, सचित्ता सचेयणा सिला, लेलू लेट्ठू, कोला घुणा, ताण आवासो घुणितं काष्टमित्यर्थः ।

अहवा – त दारु कोलेहिं विरहियं अणतरेसु जीवेसु पइट्ठिय. इमेसु वा पिपीलियादिअडेसु पडिवद्ध, पाणा कुंथुमादी, सालगादी बीया, दुव्वादी हरिया, उस्सा वा तम्मि ठिता, उत्तिंगो कीलियावासो, पणगो उल्ली, दग पाणीय, कोमारा मट्टिया ।

अथवा – उल्लिया मट्टिया, कोलियापुडगो मक्कडसंताणओ ।

अहवा – संताणओ पिपीलियादीण । मेहुणवडियाए चउगुरुं । संघट्टणादि कायणिप्फण्ण च ।

पुढवीमादीएसुं, माउग्गामे उ मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ।।२३०८।।

---

१ महिआण ।

ते चेव दोसा –

वितियपद्मणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहि जतणा ॥२३०९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा
अणुग्घासंतं वा अणुपाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

एगेण ऊरुएणं अंको, दोहिं पलियंको । एत्थ जो मेहुणट्ठाए णिसियावेति तुयट्टावेति वा ङ्का । ते चेव दोसा । दिट्ठे संकादिया गेण्हणादिया दोसा ।

अनु पश्चाद्भावे, अप्पणा ग्रसितुं पच्छा तीए ग्रासं देति, एवं [1]करोडगादीसु अप्पणा पाउ पच्छा त पाएति ।

अंके पलियंके वा, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ॥२३१०॥
वितियपद्मणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३११॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुग्घासंतं वा अणुपाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

दो सुत्ता । अर्थः तृतीयोद्देशके पूर्ववत् । णवरं – मेहुणवडियाए ङ्का ।

आगंतागारादिसु, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ॥२३१२॥

---

१ नालिकेराम्भस्सु ।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३१३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णतरं तेइच्छं आउट्टति, आउट्टंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

अण्णतर णाम चतुव्विधाए तिगिच्छाए – वादिय - पेत्तिय - सभिय - सण्णिवातियाए आउट्टति णाम करेति ख्ला । जा वि सत्थघसणपीसणविराहणा, ज च सा पउणा असजम काहिति ।

अहवा – से अविरओ पासेज्ज ताहे सो भणेज्ज – केणेस तिगिच्छं काराविते ? अण्णतरस्स पदोस गच्छेज्ज ।

अण्णतरं तेइच्छं, माउग्गाणं तु मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू कुज्जाहि, सो पावति आणमादीणि ॥२३१४॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३१५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अमणुन्नाइं पोग्गलाइं नीहरइ (अवहरति), नीहरंतं (अवहरंतं) वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवकिरति (उवहरति), उवकिरंतं (उवहरंतं) वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

अमणुण्णो पोग्गले अवहरति । मणुण्णे उवहरति सपाडेति ।

अमणुण्णाणऽवहारं, उवहारं चेव तह मणुण्णाणं ।
जे भिक्खू पोग्गलाणं, देहट्ठाणे व आणादी ॥२३१६॥

अवहारो उवहारो वा एक्केक्को दुविधो – सरीरे ठाणे य । सरीरे दुविहो - अतो बाहिं च ॥२३१६॥

इमो अंतो –

वमण-विरेगादीहिं, अब्भंतर-पोग्गलाण अवहारो ।
तेल्लुव्वट्टण-जल-पुप्फ-चुण्णमादीहि बज्झाणं ॥२३१७॥

असुभूसता (असुइसूया) स सद्दूसिय-सेंभिय-पित्त-रुहिरादियाण वमण - विरेयणादीहिं अवहारो । बाहिरो सरीरातो पूय - सोणिय - सिंघाण - लाल - कण्णमलादि तेल्लुव्वट्टणादीहिं वज्ज अवहरति ॥२३१७॥

जत्थ ठाणे अच्छति तत्थिमं करेति ।

कयवर-रेणुच्चारं, मुत्तं चिक्खल्ल-खाणु-कंटाणं ।
सद्दादमणुण्णाणं, करेज्ज तट्ठाण अवहारं ॥२३१८॥

बहु झुसिरदव्वसंकरो कयवरो, रेणू धूली, उच्चार-पासवण-चिक्खल्ल-खाणु-कंटादीय च जहा रुदियादिसट्ठाण असुभगंधाण य अहिमडादीणं तट्ठाणातो अवहारं करेति। सुभाण य उवहारं करेति ॥२३१८॥

आवरिसायण उवलिंपणं च चुण्ण-कुसुमोवयारं च ।
सद्दादि मणुण्णाणं, करेज्ज तट्ठाण उवहारं ॥२३१९॥

जत्थ जत्थ अच्छति सा इत्थी तं ठाणं सपमज्जित्ता उदगेणावरिसति, छगणपाणिएण वा उवलिंपति, पडवासादिए वा चुण्णे उक्खिवति, पुप्फोवयारं वा करेति, गीयादि वा सद्दे करेज्ज, अवणेति उवहरेति वा मेहुणट्ठा ङ्का। दिट्ठे सकादिया दोसा, घरं सजओ सोवेति त्ति उड्डाहो ॥२३१९॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२०॥

जे भिक्खू माउग्गासस्स मेहुणवडियाए अन्नयरं पसु-जायं वा पक्खि-जायं वा पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय (उज्जिहति वा पव्विहति वा) संचालेति (उज्जिहेंतं वा पव्विहेंतं वा) संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८२॥

[1]अमिलाइया पसुजाती। हसचकोरादिया पक्खिजाती। पक्खादिया अंगावयवा पसिद्धा। तेसु गहाय उज्जिहति उप्पाडेति, पगरिसेण वहइ खिवति पव्विहति।

अहवा – प्रतीपं विह पविह मुंचतीत्यर्थ.। मेहुणट्ठाए संचालेति वा ङ्का। सा तडफडेज्जा, तस्स अप्पणो वा आयविराहणा। कायादीण वा उवरि पडेज्ज।

पक्खी-पसुमादीणं, सिंगादीएसु जो उ घेत्तूणं ।
उव्वीहे पव्वीहे, मेहुणट्ठा य आणादी ॥२३२१॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए अन्नयरं पसु-जायं वा पक्खि-जायं वा सोतंसि कट्ठं वा कलिंचं वा अंगुलियं वा सलागं वा अणुप्पवेसित्ता संचालेति, संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

पसू पुव्ववण्णितो, कलिंचो वसकप्परी, घडिया सलागा, अण्णतरं सोतं अहिट्ठाणं, जोणीदारं, वासी अणुकूल पवेसो अणुप्पवेसो, थोय वा पवेसोऽणुप्पवेसो। सचालन विघट्टनं। मेहुणट्ठा ङ्का। आणादिया य दोसा, परितावणादिए मूल, दिट्ठे संकादिया।

पक्खी-पसुमाईणं, जे भिक्खू सोय कट्ठमादीणि ।
अणुपविसेउं चाले, मेहुण्णट्ठाए आणादो ॥२३२३॥

---

1 अमिल – भेड, अमिला – पाडी।

णव सोओं खलु पुरिसो, सोया इक्कारसे व इत्थीणं ।
मणुयगईसू एवं, तिरि-इत्थीणं तु भतियव्वा ॥२३२४॥

दो कण्णा, दो अच्छी, दो णासा, मुह, अंगादाणं, अधिट्ठाणं, च एते नव पुरिसस्स, इत्थीए ते चेव अण्णे दो थणा एते एक्कारस – एवं मणुयगतीए । तिरिएसु इमं भाणियव्व ॥२३२४॥

एक्कार-तेर-सत्तर, दुत्थणि चउ अट्ठ एव भयणा तु ।
णिव्वाघाते एते, वाघाएणं तु भइयव्वा ॥२३२५॥

अयमादिदुत्थणि ११ गवादी १३ सूयरमादी १७ णिव्वाघाए एव । वाघाए एगच्छिणी अया दस सोत्ता, तिपयोधरा गौ ॥२३२५॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२६॥

अणपज्झो (अप्पज्झो) दुविधतेगिच्छाए वा सुक्कपोग्गलणिग्घायणट्ठं, रायाभिओगेण वा, असिवे सजयपता असंजउ त्ति काउं न मारेंति, दुब्भिक्खे वा समुद्देसट्ठा कोति गाविमादी व णेज्जा ॥२३२६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं पसु-जाय वा पक्खि-जायं वा अयमित्थि त्ति कट्टु आलिंगेज्ज वा परिस्सएज्ज वा परिचुंबेज्ज वा विच्छेदेज्ज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा विच्छेदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

आलिंगन स्पर्शन, उपगूहन परिष्वजन, मुखेन चुंबनं, दतादिभिः सकृत् छेदनं, अनेकशो विच्छेदः विविध प्रकारो वा च्छेद वोच्छेदः, जं सा णहमादीहिं परिताविज्जति । दिट्ठे सकादिया दोसा ।

पक्खीपसुमादीणं, एसा इत्थि त्ति जो करिय भिक्खू ।
दंत-णहादीएसुं, मेहुणट्ठा य आणादी ॥२३२७॥

मेहुणट्ठा च्छा ।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादीसू जा जहिं जतणा ॥२३२८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

मेहुणट्ठाए देंति पडिच्छति य च्छ ।

जे भिक्खू असणादी, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
देज्जा व पडिच्छेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥२३२९॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति।।सू०॥८७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८८॥

मेहुणट्ठाए देति पडिच्छति य ङ्क ।

जे भिक्खू वत्थादी, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
देज्जा य पडिच्छेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥२३३१॥
वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३२॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए सज्झायं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९०॥

इह सज्झायग्गहणातो सुत्तमत्थो वा, तं उवदिसति, सव्वे पदा मेहुणट्ठाए ङ्का ।

पंचविधं सज्झायं, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावती आणमादीणि ॥२३३३॥
वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३४॥

दुविधे तेगिच्छाए चरियाणि वा उद्दिसति ॥२३३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरेणं इंदिएणं आकारं करेइ करेंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥९१॥

सोआदि अण्णतरं इंदियं जो मेहुणट्ठाए करेति सो आवज्जति पावति चाउम्मासातो णिप्फण्णं चाउम्मासिय, समयसण्णाए अणुग्घाइयं गुरुग ।

अहवा – छेदो पर्यंवकरणं (पर्यंवापाकरणं) उवघातो, यथा उग्घातियसक्कं । नास्योद्घातः अनुद्घातः। गुरुत्वात् दुस्तरत्वाच्च अनुद्घातमित्यर्थः।

आगारमिंदिएणं, अण्णतराएण मातुगामस्स ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावति आणमादीणि ॥२३३५॥

अण्णतरेण इदिएण इंदियाणि वा आगारे करेति सो आणादिदोसे पावति ॥२३३५॥

इत्थिअणुरत्तस्स पुरिसस्स इमे आगारा –

काणच्छि रोमहरिसो, वेवहू सेओ वि दिट्ठमुहराओ ।
णीसासजुता य कधा, वियंभियं पुरिसआयारा ॥२३३६॥

काणच्छि करेति । जस्स अणुरत्तो दट्ठु रोमचो भवति, हरिसो वा भवति ।

अहवा – रोमाण हरिसो रोमहरिसो रोमचेत्यर्थ., शरीरस्य ईषत् कपो भवति। प्रस्वेदो भवति । दिट्ठीए मुहस्स रागो जायति । सनिश्वास भाषते । पुन. पुनस्तत् कथा वा करोति," पुनः पुन. विजृम्भिका भवति । एते पुरिसागारा ॥२३३६॥

जा पुरिसाणुरत्ता इत्थी तस्सिमे आगारा –

सकडक्खपेहणं वाल-सुंवणं कण्ण-णासकंडुयणं ।
छण्णंगदंसणं घट्टणाणि उवगूहणं बाले ॥२३३७॥

छण्णगदसणं (छण्णगणे य चट्टणा –) ।

णीयल्लयदुच्चरिताणुकित्तणं तस्सुहीण य पसंसा ।
पायंगुट्ठेण मही-विलेहणं णिट्ठुभणपुव्वं ॥२३३८॥

जस्स अणुरत्ता तस्सग्गतो अप्पणो णियल्लगाण दुच्चरियं कित्तेति ।

भूसण-विघट्टणाणि य, कुवियाणि सगव्वियाणि य गयाणि ।
इति इत्थी-आगारा, पुरिसायारा य जे भणिता ॥२३३९॥

एते आगारे करेंतो सघाडादिणा दिट्ठो भत्तसकादि, गेण्हणादि दोसा य ।

बितियपदमणप्पज्झे अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३४०॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए सत्तमो उद्देशओ समत्तो ॥

अष्टम उद्देशक:

उक्त. सप्तम'। इदानी अष्टमः। तस्स इमो संबंधो —

कहिता खलु आगरा, ते उ कहिं कतिविधा उ विण्णेया।
आगंतागारादिसु, सविगारविहारमादीया ॥२३४१॥

सत्तमस्स अंतसुत्ते थीपुरिसागारा कहिता। ते कहिं हवेज्ज ? आगतागारादिसु। ते आगंतागारादी इह समए कतिविहा गामे आगारा विण्णेया ? इह अपुव्वरूवियाणि।

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा एगो इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं अस्समणपाओग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

एगो साहू एगाए इत्थियाए सद्धिं समाणं, गामाओ गामंतरो विहारो।

अहवा—गतागत चकमण सज्झाय करेति, असणादिय वा आहारेति, उच्चार-पासवण परिट्ठवेति। एगो एगित्थीए सद्धि वियारभूमिं गच्छति। अणारिया कामकहा णिरतर वा अप्रिय कहं कहेति कामनिट्ठुर-कहाओ। एता चेव असमणपायोग्गा।

अधवा — देसभत्तकहादी जा सजमोवकारिका ण भवति सा सव्वा असमणपाउग्गा ॥२३४१॥

आगंतारागारे, आरामागारे गिहकुला वसहे।
पुरिसित्थि एगणेगे, चउक्कभयणा दुपक्खे वि ॥२३४२॥

एगे एगित्थीए सद्धिं, एगे अणेगित्थीए सद्धिं, अणेगा एगित्थीए सद्धिं, अणेगा अणेगित्थीए सद्धिं ॥२३४२॥

जा कामकहा सा होतऽणारिया लोकिकी व उत्तरिया
णिट्ठुर भल्लीकहणं, भागवतपदोसखामणया ॥२३४३॥

तत्थ लोइया—णरवाहणदत्तकधा। लोगुत्तरिया—तरंगवती, मलयवती, मगधसेणादी। णिट्ठुरं णाम "भल्लीघरकहणं" — एगो साधू भरुकच्छा दक्खिणापह सत्थेण यातो य भागवएण पुच्छितो किमेयं भल्लीघरं

ति ? तेण साहुणा दारवतिदाहातो आरब्भ जहा वासुदेवो य पयाओ, जहा य कूरवारगभंजणं कोसबारण्णप-वेसो, जहा जरकुमारागमो, जह य जरकुमारेणं भल्लिणा हओ य । एवं भल्लीघरुप्पत्ती सव्वा कहिया । ताहे सो भागवतो पदुट्ठो चिंतेति – जइ एय न भविस्सति तो एस समणो घातेयव्वो । सो गओ दिट्ठो यऽणेण पादे भल्लीए विद्धो । ताहे आगतूण तं साहुं खामेति भणति य मए एवं चिंतियमासी तं खमेज्जासि । एवमादी [1]णिदुरा । एवमादि पुरिसाण वि ता ण जुज्जेति कहिउ, किमु वा एगित्थियाणं ॥२३४३॥

अवि मायरं पि सद्धिं, कधा तु एगागियस्स पडिसिद्धा ।
किं पुण अणारयादी, तरुणित्थीहिं सह गयस्स ॥२३४४॥

माइभगिणिमादीहिं अगमम्मित्थीहिं सद्धिं एगाणिगस्स धम्मकहा वि काउं ण वट्टति । किं पुण अण्णाहिं तरुणित्थीहिं सद्धिं ।

'अण्णा वि अप्पसत्था, थीसु कथा किमु अणारिय असब्भा ।
चंकमण-ज्झाय-भोयण, उच्चारेसुं तु सविसेसा ॥२३४५॥

अण्णा इति धम्मकधा, अविसद्दाओ सवेरग्गा, सा वित्थीसु एगागिणियासु विरुद्धा, किं पुण अणारिया, अणारियाण जोग्गा अणारिया, सा य कामकहा, असभा जोग्गा असब्भा ।

अहवा – असब्भा जत्थ उल्लविज्जंति । चकमणे सति विब्भम-इंगितागार दट्ठु मोहुब्भवो भवति, सज्झाए मणहरसद्देण, भोयणदाणग्गहणातो विसभे, उच्चारे ऊरुगादि-छुण्णंगदरिसणं ॥२३४५॥

भयणपदाण चउण्हं, अण्णतरजुते उ संजते संते ।
जे भिक्खू विहरेज्जा, अहवा वि करेज्ज सज्झायं ॥२३४६॥

भयणपदा - चउब्भगो पुव्वुत्तो ।

असणादी वाऽऽहारे, उच्चारादि य आचरेज्जाहि ।
णिट्ठुरमसाधुजुत्तं, अण्णतरकथं च जो कहए ॥२३४७॥

सोआणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, एए तु पदे विवज्जेज्जा ॥२३४८॥

दिट्ठे सका, भोइगादि, जम्हा एते दोसा तम्हा ण कप्पति विहारादि काउ ॥२३४८॥

कारणे पुण करेज्जा –

वितियपद[1]मणप्पज्झे, गेल[2]ण्णु[3]सग्ग-रो[4]हगऽ[5]द्धाणे ।
सं[6]भम-भ[7]य-वा[8]सासु य, खं[1]तियमादी य णिक्खमणे ॥२३४९॥

अणप्पज्झो सो सव्वाणि विहारादीणि करेज्ज ॥२३४९॥

---

१ णिट्ठुरा ।

इदाणिं "[1]गेलण्णे" –

उद्देसम्मि चउत्थे, गेलण्णे जो विधी समक्खाओ ।
सो चेव य बितियपदे, गेलण्णे अट्टमुद्देसे ॥२३५०॥ कठा

इयाणिं "[2]उवसग्गे" त्ति तत्थिमं उयाहरणं –

कुलवंसम्मि पहीणे, सस-भिसएहिं तु होइ आहरणं ।
सुकुमालिय-पव्वज्जा, सपच्चवाया य फासेणं ॥२३५१॥

इहेव अड्ढभरहे वाणारसीणगरीए वासुदेवस्स जेट्ठभाओ जरकुमारस्स पुत्तो जियसत्तू राया । तस्स दुवे पुत्ता ससओ भसओ य, धूया य सुकुमालिया । असिवेण सव्वम्मि कुलवसे पहीणे तिण्णि वि कुमारगा पव्वतिता । सा य सुकुमालिया जोव्वणं पत्ता । अतीवसुकुमाला रूववती य । जतो भिक्खादिवियारे वच्चइ ततो तरुणजुआणा पिट्ठओ वच्चति । एवं सा रूवदोसेण सपच्चवाया जाया ॥२३५१॥

एतीए गाहाए इमाओ वक्खाणगाहाओ –

जियसत्तु-णरवरिंदस्स, अंगया सस-भिसो य सुकुमाला ।
धम्मे जिणपण्णत्ते, कुमारगा चेव पव्वइया ॥२३५२॥

तरुणाइण्णे णिच्चं, उवस्सए सेसिगाण रक्खट्ठा ।
गणिणि गुरुणो उ कहणं, वीसुवस्सए हिंडए एगो ॥२३५३॥

तं णिमित्त तरुणेहिं आइण्णे उवस्सगे सेसिगाण रक्खणट्ठा गणिणी गुरूण कहेति । ताहे गुरुणा ते सस-भिसगा भणिया–सरक्खह एय भगिणिं । ते घेत्तुं वीसुं उवस्सए ठिया । ते य वलवं सहस्सजोहिणो । ताणेगो भिक्ख हिंडति एगो त पयत्तेण रक्खति। जे तरुणा अहिवडति ते हयविहए काउ घाडेति । एवं तेहिं बहुलोगो विराधितो ॥२३५३॥

तत्थ उ तुरुमिणिणगरीए पंचसतेहिं साहूहिं ठिता सपक्खोमाण च –

हतविहतविप्परद्धे, वण्हिकुमारेहि तुरमिणीणगरे ।
किं काहिति हिंडंतो, पच्छा ससओ व भिसओ वा ॥२३५४॥

चक्की वीसतिभागं, सव्वे वि य केसवाओ दसभागं ।
मंडलिया छब्भागं, आयरिया अद्धमद्धेणं ॥२३५५॥

एवं ते किलिस्समाणे णाउ –

भायणुकम्पपरिण्णा, समोहणं एगो भंडगं चितिओ ।
आसत्थवणियगहणं, भाउ य सारिच्छ दिक्खा य ॥२३५६॥

---

१ गा० २३४९ । २ गा० २३४९ ।

भायणुकंपाए सुकुमालिया अणसणं पव्वज्जति। बहुदिणखीणा सा मोहं गता। तेहिं णाय कालगय त्ति। ताहे त एगो गेण्हति, वितिम्रो उपकरण गेण्हति। ततो सा पुरिसफासेण रातो य सीयलवातेण णिज्जती अप्पातिता सचेयणा जाया। तहावि तुण्हिक्का ठिता, तेहि परिट्ठविया, ते गया गुरुसगासं। सा वि आसत्था। इम्रो य अदूरेण सत्थो वच्चति। दिट्ठा य सत्थवाहेणं गहिया, सभोतिया रूववती महिला कया, कालेण भातियागमो, दिट्ठा, अब्भुट्ठिया य दिण्णा भिक्खा। तहावि साधवो णिरक्खंता अच्छ। तीए भणिय – किं णिरक्खह ?

ते भणंति – अम्ह भगिणीए सारिक्खा हि, किंतु सा मता, अम्हेहिं चेव परिट्ठविया, अण्णहा ण पच्चियंता। तीए भणियं – पत्तियह, अह च्चिय सा, सव्वं कहेति। वयपरिणया य तेहिं दिक्खिया। एवमादिया उवसग्गेण चउब्भगण्णतरेण वसेज्जा ॥२३५६॥

इदाणिं "[1]रोधग" त्ति दारं –

सेणादी गम्मिहिती, खेत्तुप्पादं इमं वियाणित्ता।
असिवे ओमोयरिए, भयचक्काऽणिग्गमे गुरुगा ॥२३५७॥

मासकप्पपाउग्गं खेत्तं भेत्तुं सेणं गम्मिहिति, सेणाए वा अभिपडंतिए ताहे तो खेत्ताओ गम्मति, आदिसद्दाओ [2]संवट्टमि। वासकप्पखेत्ते इमे उवद्दवा होंति – असिवुवघातो ओमवोहिगभओप्पाओ य परचक्कागम्मुयाओ, एते णाउ जति ण णिग्गच्छति तो चउगुरुग पच्छित्तं ॥२३५७॥

आणादिया य दोसा, विराधणा होति संजमाताए।
असिवादिम्मि परुविते, अहिगारो होति सेणाए ॥२३५८॥

अणितस्स आणादी दोसा आयसंजमविराहणा य। जया असिवादी सव्वे प्रतिपदं परूविता भवंति तदा इह सेणापदेणाहिकारो कायव्वो। त पुण असिवादी इमे जाणंति अणागयमेव ॥२३५८॥

अविसेस-देवत-णिमित्तमादि अवितह पवित्ति सोऊणं।
णिग्गमण होति पुव्वं, अण्णाते रुद्धे वोच्छिण्णे ॥२३५९॥

ओहिमादिअतिसएण णायं, देवयाए वा कहियं, अविसंवादिणिमित्तेण वा णायं, पवत्तिवत्ता त वा अवितह णाउं, ततो अणागतं णिग्गंतव्व, अणाते सहसा रोहिते, वोच्छिण्णेसु वा पहेसु ण णिग्गच्छति, ण दोसा ॥२३५९॥

तम्हा अणागय –

सोच्चा व सोवसग्गं, खेत्तं मोत्तव्वमणागतं चेव।
जइ ण मुयति सगाले, लग्गइ गुरुए सवित्थारे ॥२३६०॥

णाउ जति अणागयं ण मुचति तो चउगुरु सवित्थारं भवति ॥२३६०॥

इमो वित्थारो "[3]परिताव महादुक्खो" – कारग गाहा।

---

१ गा० २३४९। २ वक्खा गा० २३७३। ३ बृह० प्रथ० गा० १८९९।

इमेहिं पुण कारणेहिं अणितो वि सुद्धो –

गेलण्ण-रोह-असिवे, रायदुट्ठे भए व ओमम्मि ।
उवधी सरीरतेणग, णाते वि ण होइ णिग्गमणं ॥२३६१॥

गिलाण पडिवद्धो, रोहिते णिग्गमो णत्थि, बाहिं असिवं ।

अहवा – रायदुट्ठ ओम वा बाहिं, उवहिसरीरतेणगा बाहिं ॥२३६१॥

एएहि य अण्णेहि य, न णिग्गया कारणेहि बहुएहिं ।
अच्छंते होति जतणा, संवट्टे णगररोहे य ॥२३६२॥

एतेहिं य अण्णेहिं य कारणेहिं य अच्छताण देससंवट्टेण णगररोधे य इमा जयणा ॥२३६२॥

बोहिगादिभएण परचक्कभएण च बहू गामा संवट्टिया एक्कतो ठिता सवट्टो भण्णति, ते च्चिय रायधिट्ठिता सेणा ।

तेसिमाजयणा –

संवट्टम्मि तु जतणा, भिक्खे भत्तट्ठ-वसहि-थंडिल्ले ।
तम्मि भए पत्तम्मी, अवाउडा एगतो ठंति ॥२३६३॥

तत्थ "[1]भिक्खे" त्ति दार –

वइयासु व पल्लीसु व, भिक्खं काउं वसंति संवट्टे ।
सव्वम्मि रज्जखोभे, तत्थेव य जाइ थंडिल्ले ॥२३६४॥

सवट्टेण वा वासे सच्चित्ते सच्चित्तो पुढविक्काओ त्ति काउं ण हिंडति, पुव्वट्ठितासु वतितासु पल्लीसु वा भिक्ख हिंडता ततो चेव थडिल्ले भोत्तु राओ सवट्टे वसति । अध वइयादि णत्थि, सव्वम्मि रज्जखोभो, तो तत्थेव सवट्टे जाणि थडिल्लअचित्ताइ तेसु भिक्ख गेण्हति ॥२३६४॥

अह णत्थि थडिल्लअचिता ताहे इमा जयणा –

पूअलिय सत्तु ओदण, गहणं पडलोवरिं पगासमुहे ।
सुक्खादीण अलंभे, अजवंते वा विलक्खणता ॥२३६५॥

उल्लम्मि पडते मा पुढविकायविराहणा भविस्सति तेण मडगादि सुक्खपूअलियाए "असंसत्त" सुत्तगाहा । सुक्खोयण वा कुम्मासा, पगासमुहे भायणे गेण्हति, पडलोवरिट्ठिते चेव । अह सुक्खं ण लब्भति, ण वा सरीरस्स जावग, उल्ले घेप्पमाणो लेवाडिते पडले लेवाडगं लक्खेंति । दार ॥२३६५॥

इदाणिं "[2]भत्तट्ठे" त्ति –

पच्छण्णासति बहिता, अह सभयं तेण चिलिमिणी अंतो ।
असती य व सभयम्मि व, धरेंति अद्धंतरे भुंजे ॥२३६६॥

---

१ गा० २३६३ । २ गा० २३६३ ।

संवट्टस्स बाहिरे पच्छण्णे भत्तट्ठं करेतु, असति पच्छण्णस्स सभए संवट्टस्स अतो चेव चिलिमिलिं दाउ भुजति । असति चिलिमिलीए सभए वा चिलिमिली ण पागडिज्जति ताहे अद्धभायणाणि धरेंति, अद्धा कमढगादिसु भुजति ॥२३५६॥

काले अपहुप्पंते, भए व सत्थे व गंतुकामम्मि ।
कप्पुवरि भायणाइं, काउं एक्को उ परिवेसे ॥२३६७॥

अह वारगेण काले ण पहुप्पति, भए वा तुरियं भोयव्व, संवट्टादिसव्वो चलितो गंतुकामो ताहे भायणा कप्पुवरिं ठवेउ सव्वे कमढगादिसु भुजंति, एक्को परिवेसति ॥२३५२॥

पत्तेयचड्डगासति, सज्झिलगा एगतो गुरू वीसुं ।
ओमेण कप्पकरणं, अण्णो गुरु णेक्कओ वा वि ॥२३६८॥

सव्वेसिं चड्डुगा ण पहुप्पंति ताहे सज्झिलगा – जे वा पीतिवसेण एक्कतो मिलति एक्कतो भुजंति, गुरु वीसु भुजति, जाहे भुत्ता ताहे ओमेण आयामण चड्डुगाणं कायव्वं, गुरुसतिय कमढगं ण तेसिं मेलिज्जति, अण्णो कप्पेति । अहवा –अपहुव्वमाणेसु एक्कतो कप्पिज्जंति ॥२३६८॥

इयाणि भायण-कप्पविही –

भाणस्स कप्पकरणं, दड्ढेल्लग-मुत्त-कडुयरुक्खेसु ।
तस्सऽसति कमढ कप्पर, काउमजीवे पदेसे वा ॥२३६९॥

उदित्तगादि दड्ढभूमीए गोमुत्तियपदेसेसु वा खारकडुयरुक्खहेट्ठा वा, एवमादि थंडिलाण असति कमढगे घडादिकप्परे वा भायणस्स कप्पं काउं अण्णत्थ णेउं थंडिले, गते वा संवट्टे पच्छा परिमिलियाजीवपदेसेसु परिठवेंति । स एवातुरे थंडिलस्स वा अभावे धम्माधम्माकासाजीवपदेसवुद्धिकाउ परिट्ठवेति ॥दारं॥२३६९॥

इदाणि "[1]वसहि" त्ति दारं –

गोणादी वाघाते, अलब्भमाणे व बाहि वसमाणा ।
वातदिसि सावतभए, सयं पडालिं पकुव्वंति ॥२३७०॥

संवट्टस्संतो निरावाधे मिलियपदेसे वसंति, अंतो वा – गोणमहिसादिएहिं तडप्फडतेहिं वाघातो, अलभे वा जतो धाडीभयं ततो वज्जेउ वसंति । अह सावयभय ताहे वायाणुकूलं वज्जेंति, अतो बाहिं वा वसमाणा सीत-वातातव-जल-सावतरक्खणट्ठा पुव्वकताए पडालीए ठायंति । असति फासुएहिं सय करेंति । आगाढे वि धारणं[2] काउ वसति । वतिए वि एवं । दारं ॥२३७०॥

इदाणि उच्चारविधी भण्णति ।

"[3]थंडिले" त्ति दारं –

पढमासति सेसाण व, मत्तए वोसिर [4]रयणिए ।
थंडिल्ल निवेसे वा, गतेसु सभए पदेसेसुं ॥२३७१॥

पढमं अणावातमसंलोअं, तस्सासति सेसाण आपायसंलोयादिया, असति दिवसतो अच्छिउं रातो

---

१ गा० २३६३ । २ विधानम् । ३ गा० २३६३ । ४ दिया णिसि पभाते ।

मत्तए वोसिच पभाए थंडिले परिट्ठवेंति, तत्थ सन्निवेसे वा गते वोसिरति परिट्ठवेति वा। अह पिट्ठतो भयं अणधियासो वा ताहे धम्मादिपदेसेसु वोसिरति। दारं।

इदाणिं "तम्मि भए" पच्छद्धं। जो ण परचक्कादिभएण संवट्टे पइट्ठा तम्मि पत्ते परचक्के धाडियागमे वा सव्वोवकरण गुविलपदेसे ठवेउ "अवाउडा एकतो"त्ति अण्णतो एकपदेसे ठायंति ॥२३७१॥

कम्हा एवं करेंति? भण्णति –

जिणलिंगमप्पडिहतं, अवाउडा वा वि दट्ठु वज्जेंति।
थंभणि मोहणिकरणं, कतजोगो वा भवे करणं ॥२३७२॥

अचेलिया जिणलिंग उस्सग्गे ठिया य, एवं ठिते ण कोति उवद्दवेति, एस उववातो अपडिलेहितो जिणमुद्देत्यर्थः।

अहवा – ते तेणग्रा अवाउडे दट्ठु सयमेव वज्जति, विज्ज-मंतपभावेण थभण-मोहणं करेति, सहस्सजोही वा तीसत्थे वा कयजोगो तस्स तारिसे [1]आकंप उभयगच्छसरक्खणट्ठा करण भवे। दार ॥२३७२॥ "संवट्टे" त्ति गत।

इदाणिं "[2]णगररोहे" त्ति दार –

संवट्टणिग्गयाणं, णियट्टणा अद्धरोधजयणा य।
भुत्तट्ठण थंडिल्ले, सरीरभिक्खे विगिंचणता ॥२३७३॥

जे मासकप्पखेत्ताण णिग्गंतु संवट्टे ठिया ते संवट्टणिग्गया। ते इदाणिं [3]खंदचोरएण संवट्टातो णियत्तिउ णगरं पविट्ठा ॥२३७३॥

जे अणगारा तो ण णिग्गता तेसिं इमा अट्ठमासे रोहगजयणा भण्णति –

[4]हाणी जा एगट्ठा, दो दारा कडग चिलिमिणी वसभा।
तं चेव एगदारे, मत्तगसुधोवणं च जतणाए ॥२३७४॥
रोहे उ अट्ठमासे, वासासु सभूमिए णिवा जंति।
रुद्धे उ तेण णगरे, हावंति ण मासकप्पं तु ॥२३७५॥

अट्ठ उदुवद्धिते मासे रोहेउ णिवा वासासु अप्पणो रज्जाति गच्छंति, उडुवद्धे रोहिते तहावि साधू मासकप्पो ण हावियव्वो, अट्ठवसहीओ अट्ठभिक्खायरियातो, अट्ठवसहीओ अमुचंतेण भिक्खायरियाओ ॥८॥७॥६॥५॥४॥३॥२॥१॥ पुणो वि सत्तवसहीओ अमुचंतेण अट्ठादी भिक्खायरिया। एव-जाव-एगा वसही एगा भिक्खायरिया। एतदुक्तं भवति "[5]हाणी जा एगट्ठा।" इमा य गाहा एत्थ-अत्थे जोएयव्वा ॥२३७५॥

भिक्खस्स व वसधीय व, असती सत्तेव चतुरो जा एक्का।
लंभालंभे एक्केक्कगस्सऽणेगा उ संजोगा ॥२३७६॥

कठा। दार ॥२३७६॥ "अद्धरोधगजयण" त्ति गयं।

---

१ आकंपेउ भए गच्छं। २ गा० २३६२। ३ घेरा डालना अथवा शत्रु को छल से मारना। ४ वक्खा गा० २३७५, २३७६, २३७७। ५ गा० २३७४।

इदाणिं "[1]हाणी जा एगट्ठा" त्ति अस्य द्वितीयं व्याख्यानं – सपक्ख - परपक्खवसहिजयणा य भण्णति । तत्थिमे विकप्पा – पत्तेया समणाण । पत्तेया समणीणं । महाजणसम्मदेण वा दुल्लभवसहीए समण - समणीण एगट्ठा ।

अहवा – सव्वपासडित्थीण एगट्ठा । सव्वपासंडपुरिसाण य एगट्ठा ।

अहवा – सव्वपासंड पुरिसइत्थीण एगट्ठा ।

अहवा – सव्वपासंड (समण) पुरिसित्थीण एगट्ठा ।।२३७६।।

पत्तेयसमणविकप्पे "पासंडित्थी" तत्थिमा जयणा –

एगत्थ वसंताणं, पिहं दुवारासती सयं करणं ।
मज्झेण कडगचिलिमिलि [2]तेसुभओ थेर-खुड्डीओ ।।२३७७।।

संजय - संजतीण पत्तेयवसहिअभावे जदा एगवसहीए वसति तहा चउसाले पिहं दुवारे वसति । पिहदुवारासति सयमेव कुड्डं छेत्तु दुवारं करेंति । गिहमज्झे कुड्डासति कडगं चिलिमिलिं वा ठावेंति कडगासणे थेरा ठायंति । संजतीणं खुड्डियाओ थेराण परतो खुड्डा । खुड्डीण परतो थेरी । खुड्डाण परओ मज्झिमा । सजतिवग्गे थेरीण परतो मज्झिमाओ । मज्झिमाण परतो तरुणा । संजतिवग्गे वि मज्झिमाण परतो तरुणीओ । एसा विही दढकुड्डिगिहे । एवं सव्वं वसभा जयणं करेंति ।।२३७७।। पुव्वद्धस्स वक्खाण गतं ।

"[4]तं चेव एगदारे" त्ति अस्य व्याख्या –

दारदुगस्स तु असती, मज्झे दारस्स कडगपोत्ती वा ।
णिक्खम-पवेसवेला, ससद्दपिंडेण सज्झाओ ।।२३७८।।

बितियदुवारस्सासति करणं वा न लब्भति तदा एगदुवारं कडगचिलिमिलीहिं दुधा वि कज्जति, अद्धेण संजया अद्धेण संजतीतो णिग्गच्छंति । अह संकुडं ण लब्भति वा विसज्जिउं ताहे परोप्परं णिग्गमणवेल वज्जेंति वंदेण, ससद्द णिप्फिडंति, पिंडेण सज्झायं करेंति, संगारकहं ण करति पढति वा ।।२३७८।।

"[5]तेसु भतो थेरखुड्डीओ" त्ति अस्य व्याख्या –

अंतम्मि व मज्झंमि व, तरुणी तरुणा तु सव्वबाहिरओ ।
मज्झे मज्झिम-थेरी, खुड्डग-थेरा य खुड्डी य ।।२३७९।।

दढकुड्डे अते सपच्चवायमागासे मज्झे तरुणीओ । शेषं गतार्थम् ।

इदाणिं "[6]मत्तगे" त्ति दार –

[7]पत्तेय समण दिक्खिय, पुरिसा इत्थी य सव्वे एगट्ठा ।
पच्छण्ण कडगचिलिमिलि, मज्झे वसभा य मत्तेणं ।।२३८०।।

पत्तेगा जत्थ त्थीवज्जा सव्वपासंडा एगवसहीए ठिया, जत्थ वा सव्वे पासंडा थीसहिया एगट्ठिया, तत्थिमा जयणा – जो पच्छण्णपदेसो तत्थ ठायति, असति पच्छण्णस्स मज्झेणं कडगचिलिमिली वसभा देंति, अप्पसागारियकाइयभूमीए असति दिवा रातो वा वसभा मत्तगेहिं जतियति । वसभगहणं ते खेत्तण्णा, अप्पसागारियं परिठवेंति । एवं संजतीओ वि पासंडित्थिमज्झे जयंति ।

---

१ गा० २३७४ । २ गा० २३७६ । ३ गा० २३७४ । ४ गा० २३७४ । ५ वक्खा गा० २३७७ । ६ गा० २३७४ । ७ वक्खा गा० २३८२ ।

अहवा – "वसमा य मत्तेणं" ति जत्थ संजतासंजतीणं एगदुवारा एगवसही तत्थ अप्पसागारिय काइयभूमीए असति वाहिं वा सञ्चवातो रातो तरुणीओ अते, मज्झे वा वसभिणीओ, मत्तएसु काइयं वोसिरिउं मज्झिमाण अप्पेंति, ताओ थेरीण, थेरी खुड्डीणं, थेरा वसभाणं, ते परिट्ठवेंति ॥२३८०॥

पच्छण्ण असति णिण्हग, वोडिय भिक्खू असोय सोए य ।
पउरदव-चड्डगादी, गरहा य सअंतरं एक्को ॥२३८१॥

पच्छण्णकडगचिलिमिलीण असति णिण्हएसु ठायंति, तेसु असति वोडिएसु, तेसु असति भिक्खुपएसु, एव पुव्व असोयवादीण, पच्छा सोयवाइसु ठिया, आयमणादिकिरियासु पउरदवेण कज्ज करेंति, चड्डग कमढग, तेसु भुजंति, गरहापरिहरणत्थ, सतर ठिया 'एगे" त्ति खुड्डगादि एगो चड्डगाण कप्प करेति । अहवा – एगो साधू आयमणादिकिरियासु अतरे ठायति ॥२३८१॥

"[1]पत्तेय समणा दिक्खिय" अस्य व्याख्या –

पासंडीपुरिसाणं, पासंडित्थीण वा वि पत्तेगे ।
पासंडित्थि पुमाणं, व एगतो होतिमा जतणा ॥२३८२॥

पुरिसा पत्तेय, इत्थी पत्तेयं ।

अघवा – पुरिसा इत्थी य सव्वे एगतो ठिता । इमा जयणा । "पच्छण्ण असति णिण्हग" अस्यार्थस्य स्पृशन ॥२३८२॥

जे जहिं असोयवादी, साहम्मं वा वि जत्थ तहिं वासो ।
[2]णिहुता य जुद्धकाले, ण वुग्गहो णेव सज्झाओ ॥२३८३॥

साधम्मिया णिण्हयवोडिएसु भिक्खएसु वि कारणियत्त जीवातिपयत्थाणि वा जेसु अत्थित्त तेसु तेसु ठायति, जुद्धकालो रोधगमित्यर्थः । ण तत्थ सपक्ख-परपक्खेहिं सद्धि वुग्गह करेंति, ण च सज्झाय करेंति ॥२३८३॥ "अद्धरोहगजयणा" सम्मत्ता । भत्तट्ठाणे वि एत्थेव गता ।

इदाणिं "[3]थंडिले" त्ति –

तं चेव पुव्वभणियं, पत्तेगं दिस्समत्त कुरुकूयं ।
थंडिल्ल-सुक्ख-हरिते, पवायपासे पदेसे वा ॥२३८४॥

पुव्वभणिय "अणावायमसलोए" एय चेव पत्तेय ।

अहवा – सेसं थंडिलेसु पत्तेयमग्गहणं करेंति ॥२३८४॥

"[4]मट्टिय कुरुकुयं" च अस्य व्याख्या –

पढमासति अमणुण्णे, तराण गिहियाणं वा वि आलोए ।
पत्तेय मत्त कुरुकुय, दवं च पउरं गिहत्थेसुं ॥२३८५॥

पढम अणावायमसंलोय, तस्सासति अमणुण्णाय आवात गच्छेति, तस्सासति पासत्यादियाण । ततो वितियभग असोअ-सोआण गिहिपासडियाण य कमेण आलोय गच्छेति । पच्छद्धं कठ ॥२३८५॥

---

१ गा० २३८० । २ निव्वापारा । ३ गा० २३६३ । ४ दिस्समाणे कुरुगाय । ५ गा० २३८४ ।

तेण पर गिहत्थाणं,असोयवादीण गच्छ आवायं ।
इत्थी णपुंणएसु वि, परम्मुहो कुरुकुया सेव ।।२३८६।।

ततो ततियभंगे गिहिपासंडिय असोय सोयाण कमेण आवात गच्छे। तेण परं वितियभगे इत्थी-णपुंसालोयं गच्छेति। परम्मुहो कुरुकुचं च करेति। ततो ततियभगे इत्थिनपुंसावातं, तत्थ वंदेण वोल करेंता वच्चति। जयणाए पूर्ववत्। एसा थंडिलजयणा।

वाहिं ण लब्भति णिग्गतु जं अंतो थंडिल विदिण्ण तत्थ वोसिरे, जति णत्थ हरितं सुक्खे वोसिरेति, असति सुक्खस्स मलियमीसेसु वोसिरति। अहो य भूमी न पासइ ताहे घम्मादिपदेसेसु वोसिरतो सुद्धो। दारं ।।२३८६।।

इदाणि "[1]सरीरे" त्ति दार –

पच्छण्ण-पुव्वभणिते, विदिण्ण थंडिल सुक्ख हरिते वा।
अगड वरंडग दीहिय, जलणे पासे य देसेसु ।।२३८७।।

रोधगे सरीरपरिट्ठवणविधी अवरदक्खिणाए चेव दिसाए अणावातमसलोय पच्छण्णपुव्वभणियं परिट्ठावणियं से रयहरणादि उवकरण पासे ठविज्जति ।।२३८७।।

अण्णाते परलिंगे, णाउवओगद्ध मा उ मिच्छत्तं।
णाते उड्डाहो वा, अयसो पत्थारदोसा वा ।।२३८८।।

अण्णाओ वा जो तस्स परलिंगं कज्जति। त पि उवओगकालाओ परतो कज्जति, मा सो मिच्छत्तं गमिस्सति। जो जण-णातो तम्मि परलिंग ण कज्जति, मा जणो भणिहिति एते मातिणो, पावायारा, परोव-घातिणो य, एव उड्डाहो, पवयणोवघातो, पत्थारदोसो य। एतद्दोसपरिहरणत्थं सलिंगेण चेव विदिण्णे थंडिले परिट्ठविज्जति। अह हरित ताहे सुक्खसु, असति मीसमलिएसु, अगडे वा अणुण्णाय, पागारोवरिएण वा खिवियव्वं, दीहियाए वा वहंतीए छुभियव्वं, जलणे वा जलते छुभियव्वं। एतेसिं वा पासे ठविज्जति। अह ण लब्भति ताहे घम्मादिपएस त्ति काउ एतेसु खिवति ।।२३८८।।

इदाणि "[2]भिक्ख" त्ति दारं –

ण वि कोइ किं चि पुच्छति, णिंतमणिंतं च वाहि अंतो वा।
आसंकिते पडिसेहो, गमणे आणादिणो दोसा ।।२३८९।।

जत्थ रोघगे अतो वाहिं वा ण को ति पडिपुच्छति, णिप्फिडतो पविसंतो वा तत्थिच्छा, अतो बाहिं वा अडंति। जत्थ आसंकियं "को एस ? कतो वा आगतो ? मा एस अतो कहेहिति, कहिं वा णिग्गच्छति ? मा एम भेद दाहिति" एरिसे आसंकिते पडिसेहे ण गंतव्व। आणादिया य दोसा ।।२३८९।।

पउरऽण्णपाणगमणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता।
सो य इतरे य चत्ता, कुल-गण-संघे य पत्थारो ।।२३९०।।

संथरंतो जति गच्छति चतुगुरु, जो गच्छति तेण अप्पा परिच्चत्तो, इतरे य अच्छता ते य एतेण परिच्चत्ता, वाहिरा वा रिउ त्ति काउं गेण्हंति। भेद पयच्छंति त्ति अब्भंतरा गेण्हति। उभओ वि कुल-गण-संघ-पत्थारसभवो ।।२३९०।।

---

१ गा० २३७३। २ गा० २३७३।

अंतो अलब्भमाणेसणमादीसु होइ जइतव्वं ।
जावंतिए विसोधी, अमच्चमादी अलाभे वा ॥२३९१॥

फासुए एसणिज्जे य अतो अलब्भमाणे अते चेव पणगपरिहाणीए जयंति । जावंतिया विसोहिकोडीए जाव - चउलहुं पत्तो । विसोहिकोडीए असति अमच्चो दाणसड्ढादिया वा श्रोभासिज्जंति, देंताण अविसोहिकोडीए वि घेप्पति ।।२३९१।।

आपुच्छिय आरक्खिय, सेट्ठि सेणावति अमच्च-रायाणं ।
णिग्गमण-दिट्ठरूवे, भासा वि तहिं असावज्जा ॥२३९२॥

तहावि अलब्भते, आरक्खितो कोट्टपालो, तं पुच्छति, अम्हं असंथर णिग्गच्छामो, दारं णे देहि ।

जति सो भणेज्ज – मा णिग्गच्छह, अहं भे देमि, ताहे घेप्पति ।

अह सो भणेज्ज – "णत्थि मे भत्तं, बीहेमि य रण्णो, सेट्ठिं पुच्छह" ।

ताहे सेट्ठिं पुच्छति । एवं सेणावतिं, अमच्चं, रायाणं, देंतेसु गहणं । तेसिं वा अणुण्णाते णिग्गच्छंति । दारपालाण य साहू दरिसिज्जति एते दिट्ठरूवे करेह ।

एते भत्तट्ठा णेंति अंतितिय, ण किं चि तुब्भेहिं वत्तव्वा, बाहिं निग्गएहिं य असावज्जा भासा भासियव्वा ।।२३९२।।

मा णीह सयं दाहं, संकाए वा ण देंति णिग्गंतुं ।
दाणम्मि होइ गहणं, अणुसट्ठादीणि पडिसेहे ॥२३९३॥

आरक्खियादि पुच्छिया भणति – "मा णीह, अम्हे सय भत्त देमो", ते पुण भेदसंकाए णिग्गतुं ण देंति । ते जति अविसुद्धं देंति तहावि गहणं । अह णो भत्त णो णिग्गतुं देंति ताहे अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा-मंतादिया वा पयुज्जंति ॥२३९३॥

जता णिग्गच्छति तदा बहिया वि इमं विधिं पयुंजति –

बहिया वि गमेतूणं, आरक्खगमादिणो ततो णिंति ।
हित-णट्ठ-चारियादि, एवं दोसा जढा होंति ॥२३९४॥

अतो बहिं च गमिते सव्वे चारिगादिदोसा परिचत्ता भवति ॥२३९४॥

बहिया जे साहू पट्ठविज्जति ते इमेहिं गुणेहिं जुत्ता –

पियधम्मे दढधम्मे, संबंधऽविकारिणो [1]करणदक्खे ।
पडिवत्तीण य कुसले, [2]तब्भूते पेसते बहिता ॥२३९५॥

जेसिं अंतो बाहिं च सयणसबंधो अत्थि, अविकारी ण उब्भडवेसा, ण कदप्पसीला भिक्खग्गहादि-किरियदक्खा, पडिवत्ती प्रतिवचन त प्रति कुशला बाहिं खंधारो आगतो तत्थ जे जा उप्पणा, ते बाहिं पेसिज्जंति ।।२३९५।।

---

१ किरिय । २ भूमे (पा०) ।

"[1]भासा वि तहि असावज्ज" त्ति अस्य व्याख्या –

केवइय आस-हत्थी, जोधा धण्णं च केत्तियं णगरे ।
परितंत अपरितंता, णागरसेणा व ण वि जाणे ॥२३९६॥

वाहिरच्चेहिं पुच्छितो ण भणाति, ण जाणामि ॥२२९६॥

ते भणंति – तत्थेव वसंता कहं न याणह ? साहू भणति –

सुणमाणे वि ण सुणिमो, सज्झाए समिति गुत्ति आउत्ता ।
सावज्जं सोऊण वि, ण हु लब्भाऽऽइक्खिउं जइणो ॥२३९७॥

जइ किं चि सुणिमो तहावि सावज्जं न युज्जति अक्खिउ । अतो वि पुच्छितो भिक्खादिउवओगे ण णाय । अतो वहिया य – इम उत्तर "[2]बहु सुणेति" – सिलोगे ।.२२९७॥

एव हिंडते पडुप्पण्णे समुदाणे –

भत्तट्ठणमालोए, मोत्तूणं संकिताइ ठाणाइं ।
सच्चित्ते पडिसेहो, अतिगमणं दिट्ठिरूवाणं ॥२३९८॥

"भत्तट्ठणमालोए" त्ति अस्य व्याख्या –

सावग सण्णिठाणे, ओयत्रितेतर करेंति भत्तट्ठं ।
तेसऽसती आलोए, चड्डग कुरुयाइ णो छण्णे ॥२३९९॥

जत्थ सड्ढो य सड्ढी य उभयं पि अप्पसागारियं तत्थ भत्तट्ठं करेंति, असती [3]एगतरोयविते, इयरग्गहणेण [4]अणोयविएवि, असति अहाभद्दएसु वा, एतेसिं असतीए अडवीए असंकणिज्जे घणदरट्ठाणे वज्जेंता, आलोए पगासे भत्तट्ठं करेंति, चारिगादिसंकाए णो छण्णे करेंति । सचित्तो सेहो जइ को ति पव्वाइउं ठाति तस्स पडिसेहो, न पव्वावेंति । अह कोइ काउ लिंग पविसति, ताहे भणति – अम्हे गया णामकिया दारेण णिग्गता, त जइ तुमे घेप्पसि तो अवस्सं मारिज्जसि, दारे गणिया पुच्छिया भणंति – ण जाणामो कोइ एस त्ति, पविसंता भणंति दारिट्ठ "अम्हे ते चेव इमे दिट्ठरूवे करेसि" ॥२३९९॥

भत्तट्ठितऽपाहाडा, पुणरवि घेत्तु अतिंति पज्जत्तं ।
अणुसट्ठी दारिट्ठे, अण्णे वऽसती य जं अंतं ॥२४००॥

एव भत्तट्ठिया तदूणे भायणे पुणरवि पज्जत्तं घेत्तु अतिंति, जति दारपालो मग्गति वा ण वा पवेसं देति, रुद्धेसु जइ अण्णो कोइ अणुकंपाए देज्ज तत्थ अणुमती, ण वा वारिज्जति, अण्णदातारस्स वा असतीते त जं अत पंतं दिज्जति ॥२४००॥

रुद्धे वोच्छिण्णे वा, दारिट्ठे दो वि कारणं दीवे ।
इहरा चारियसंका, अकाल ओखंदमादीसु ॥२४०१॥

अह णिग्गताण दारं रुद्ध स्थगितमित्यर्थः, गमागमो य वोच्छिण्णो, अब्भिंतरा साहू बाहिरा जे भिक्खाणिग्गया एते वि दो वि दारपालस्स भिक्खादि णिगमणकारणं दीवेंति । इहरा अकहीए साहू णिग्गता,

---

१ गा० २३९२ । २ दश० अ० ८ गा० २० । ३ परिकम्मित । ४ अपरिकम्मित ।

ण ते पविट्ठा, णूणं ते चारिया आगता आसी, जे ते साहू णिग्गता ते ण पविट्ठा, णूणं तेहिं एस उक्खद ओकट्टिओ ॥२४०१॥

बाहिं तु वसितुकामं, अतिणेति पेल्लिया अणिच्छंतं ।
गुरुगा पराजय जए, वितियं रुद्धे य वोच्छिण्णे ॥२४०२॥

भिक्खट्ठताणिग्गताण जइ कोइ साहू बाहिं वसित्तुमिच्छति तं पि ते सहाया बला पवेसति । एगे अणेगे वा णिक्कारणे बाहिं वसते चउगुरुगा । अब्भिंतरिल्लाण पराजय-जए अणेगे दोसा भवति । वितियपदेण सव्व णित्थर णगर रुद्ध, गमनागमो वोच्छिण्णो, एव अपविसतो दारिट्ठे वा अणिवेदेंते सुद्धो ॥२४०२॥ एव रोहकारणे – इत्थीहिं सह विहारादि पदा हवेज्ज । "रोधगे" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]अद्धाणे" त्ति अद्धाणे जत्थ सपच्चवाय । तत्थ जति संजतीतो सत्थेण पधाविता तत्थ सत्थे जति बोधियतेणाइभय हवेज्ज तत्थ गमणे, रात्रो वा सुवताण, इमा जयणा –

मज्झम्मि य तरुणीओ, थेरीओ तासि होंति उभयंतो ।
थेरि बहिट्ठा खुड्डी, खुड्डिबहिट्ठा भवे थेरा ॥२४०३॥

थेरबहिट्ठा खुड्डा, खुड्डबहिट्ठा उ होंति तरुणा उ ।
दुविधम्मि वि अद्धाणे, सपच्चवायम्मि एस गमो ॥२४०४॥

तरुणीओ मज्झे कीरति, तासिं पिट्ठतो अग्गओ य थेरीओ हवत्ति, तासिं उभयते थेरा, थेराण उभयंते खुड्डा, तेसिं उभयतो तरुणा, दुविधं अद्धाण–पंथो मग्गो य । तम्मि सपच्चवाए एस गमो भणितो । एव अद्धाणे वा इत्थीहिं सद्धिं विहारादिया पदा भवे । दारं ॥२४०४॥

इदाणिं "[2]सभम भय वास" तिण्णि वि दारा एगगाहाए दसेति –

आऊ अगणी वाऊ, तेणग रुट्ठादि संभमो भणितो ।
बोहियमेच्छादिभए, गोयरचरियाए वासेणं ॥२४०५॥

आऊमादिया संभमा, बोहियमेच्छादिभय । गोयरं अडता वासेण अब्भहता एगणिलए वि होज्जा ॥२४०५॥

जलसंभमे थलादिसु, चिट्ठंताणं भवेज्ज चउभंगो ।
एगतरुवस्सए वा, वूढगलंते व सव्वत्तो ॥२४०६॥

एगो एगित्थीए सम हवेज्ज, आउक्कायसभमेणं उदगवाहगे थले एगं उण्णयं थलं पव्वयं डोगरं वा, तत्थ चिट्ठताणं चउभगसभवो हवेज्ज । जलसभमे वा खेत्ताओ खेत्तं संकमेज्ज । एत्थ वि चतुभंगसंभवो । एगतरवसधीए वा वूढाए जाव अण्णा वसधी न लब्भति ताव चतुभंगसंभवो, सव्वओ वा एगपक्खस्स वसधी गलति, एव पि एगट्ठिताण चउभंगो ॥२४०६॥

एगतरझामिए उवस्सयम्मि डज्झेज्ज वा वि मा वसधी ।
ऐमेव य वातम्मि वि, तेणभया वा णिलुक्काणं ॥२४०७॥

---

१ गा० २३४९ । २ गा० २३४९ ।

सजत-संजतीण एगतरस्स झामिता वसवी। वसहिसंरक्खट्ठा वा ताण वसधि गता। झामित-वसधिए वा खेत्ताओ खेत्तं संकामिज्जति। एवं वाते वि चउभगसभवो हवेज्ज। तेणगभएण वा गुविले चउभंगसंभवेण णिलुक्का अच्छति ॥२४०७॥

भोइयमाइविरोधे, रट्ठादीणं तु संभमे होज्जा।
वोहिय-मेच्छभए वा, गुत्तिणिमित्तं च एगत्थ ॥२४०८॥

भोइयस्स भोइयस्स विरोहो, एवं गामस्स गामस्स य, रट्ठस्स रट्ठस य, एरिसे संभमे चउभंग-संभमो हवेज्ज। वोहियमेच्छभएण पलायाण चउभगसंभवेन विहारसज्झाय असणादिया, उच्चारादिमा वा एगत्थ णिलुक्काण सभवो हवेज्ज, गुत्तिं वा रक्खणं करेंताण संभवेज्जा ॥२४०८॥

पुव्वपविट्ठेगतरे, वासभएणं विसेज्ज अण्णतरो।
तत्थ रहिते परंमुहो, ण य सुण्णे संजती ठंति ॥२४०९॥

वासासु वासावासे पडंते संजतो सजती वा किं चि णिव्वोवरिसं ठाणं पविट्ठ हवेज्ज, पच्छा इयरं पविसिज्ज। तत्थ जणविरहिते दो वि परोप्पर परंमुहा अच्छति, सज्झायजुत्ता य। सुट्ठु वि वासे पडते संजती सुण्णट्ठाणे णो पविसति। दारं ॥२४०९॥

इदाणिं "[1]खंतिमाईण णिक्खमणे" त्ति –

कारण एग मडंवे, खंतिगमादीसु मेलणा होज्ज।
पव्वज्जमब्भुपगमे, अप्पाण चउव्विहा तुलणा ॥२४१०॥

असिवादिकारणेण एगागिओ छिण्णमडंवं गतो हवेज्ज, तत्थ य "खतियमादी" असंकणित्थी मिलेज्ज, सा य पव्वज्जब्भुवगमं करेज्ज, ततो अप्पाणं चउव्विहाए दव्व-खेत्त-काल-भावतुलणाए तुलेति ॥२४१०॥

एसेव अत्थो इमाहिं गाहाहिं भणति –

असिवादिकारणगतो, वोच्छिण्णमडंव संजतीरहिते।
कहिता कहित उवट्ठिय, असंकइत्थीसिमा जयणा ॥२४११॥

अड्ढाइय जोयणब्भतरे जस्स अण्णं वसिम णत्थि तं छिण्णमडवं सा असंकणिज्जत्थी धम्मे कहिते अकहिते वा पव्वज्जं उवट्ठिता, तत्थिमा जयणा अप्पणो दव्वतो तुलणा ॥२४११॥

इमा तुलणा–

आहारादुप्पादण, दव्वे समुतिं व जाणते तीसे।
जति तरति णित्तु खेत्ते, आहारादीणि वऽद्धाणे ॥२४१२॥

दव्वतो जति आहारं उवहिं सेज्जं वा तरति उप्पाएतु, समुइ णाम-जो तीसे सभावो भुक्खालू सीयालू। जति य तं पढमालियादि सपाडेउं सक्केति, महुरादि पाणगं वा एयाणि उप्पाएउं सक्केति, ततो पव्वावेति। खेत्ततो जइ अद्धाणं णेउं तरति, जति य अद्धाणे आहारादी उप्पाएउं सत्तो ॥२४१२॥

---

१ गा० २३४९।

गिम्हातिकालपाणग, णिसिगमणोमेसु वा वि जति सत्तो ।
भावे कोधादि जई, गाहे णाणे य चरणे य ॥२४१३॥

कालतो जति गिम्हकाले रिउक्खम पाणगं पवायवसही य आदिसद्दातो सीतकालादिसु य ज तम्मि रिउम्मि दुल्लभ तं जति उप्पाएतु सत्तो, रातो वा जति सत्तो णेउं, ओमे वा जति आहारुप्पादण काउ सत्तो, भावे जति अप्पणो कोहादियाणं जय काउ सत्तो, रत्तस्स वा जय कारावेउं सत्तो। णाणचरणाणि वा जति सत्तो अणिव्वेएण गाहेउं, चक्कवालसामायारिं च गाहेउं जइ सत्तो ॥२४१३॥

गुरु गणिणिपादमूलं, एवमपत्ताए अप्पतुलणाए ।
आवकधसमत्थो वा, पव्वावे एतरे भयणा ॥२४१४॥

जो वा जावज्जीव समत्थो वट्टावेउं सो णियमा पव्वावेति, इयरो असमत्थो य, तस्स भयणा। जइ से अण्णो वट्टावगो अत्थि तो पव्वावेति। अह नत्थि न पव्वावेइ। एसा भयणा ॥२४१४॥

अब्भुज्जतमेगतरं, पडिवज्जिउ कामो सो वि पव्वावे ।
गण गणि सलद्धिते उ, एमेव अलद्धिजुत्तो वि ॥२४१५॥

अब्भुज्जियमरण परिण्णादि, अब्भुज्जिय-विहारो जिणकप्पादि। एयं एगतर अब्भुज्जतिविहारं पडिवज्जितुकामो। इत्थिया य उवट्ठिया पव्वज्ज। जति अण्णो गणे गणी सलद्धी अत्थि तीसे परियट्टियव्वा ते ताहे त तस्स अप्पेउ अप्पणा अब्भुज्जविहारं पडिवज्जति। अह णत्थि अण्णो वट्टावगो ताए णो अब्भुज्जय-विहार पडिवज्जइ। तं परियट्टति। किं कारण ? अब्भुज्जियविहारातो तस्स विधिपरियट्टणे बहुतरिया णिज्जरा। अलद्धिजुत्तो वि अण्णवट्टावगसभवे पव्वावेति, इयरहा णो ॥२४१५॥

पव्वावणिज्ज-तुलणा, एमेवित्थ तदिक्खणा होति ।
अविदित-तुलणा उ परे, उवट्ठित-तुलणा य आतगता ॥२४१६॥

जो पव्वावणिज्जो तस्स वि एसेव दव्वादिया चउव्विहा तुलणा कज्जति।

चोदग आह – जति ता तस्स माता वा भगिणी वा तो सो तस्सा समुई जाणाति चेव, किं तुलिज्जति ?

उच्यते – कताइ सो खुड्डुलओ चेव तेसिं मज्झाओ फिडितो तो न जाणइ, एव परे अविदिते तुलणा भवति। जस्स पुण सुह-दुह-कोहादिया समुती णज्जति तस्स नत्थि तुलणा। तम्मि उवट्ठिते आयतुलणा भवति ॥२४१६॥

तस्स पव्वावणिज्जस्स इमा तुलणा भवति –

[1]पारिच्छ पुच्छमण्णह, कायाणं दायणं च दिक्खा य ।
तत्थेव गाहणं पंथे, णयणं अप्पाय इत्तरिया ॥२४१७॥

अस्य विभाषा –

पेज्जाति पातरासे, सयणासणवत्थ पाउरणदव्वे ।
दोसीण दुब्बलाणि य, संयणादि असक्कता एण्हिं ॥२४१८॥

---

१ वक्खा गा० २४२५ परीक्षाद्वारम्।

परिच्छा णाम तुलणा । सा भण्णति –

पुव्वं तुममन्नहा दव्वादिएसु उचिया, इयाणिं पव्वतियाए अण्णहा ।

पुव्व अणुप्पए खीरादिपेज्जाओ इत्थिया (इच्छिया) पायरासा-पढमालिय त्ति वुत्तं भवति, इदाणिं सा णत्थि मज्झण्हे भिक्ख अडित्ता पारेयव्वं । उदुबद्धे सयणभूमीए, इक्कड कढिणादिसंथारगेसु वासासु आसणं ।

पुव्वं आसंसादिसु, इदाणिं उडुबद्धाए णिसज्जाए वासासु णं संथारग-भिसिगादिएसु ।

पुव्वं तुज्झ वत्थपाउरणा महद्धणमुल्ला सण्हा य आसि, इयाणिं ते अमहद्धणमुल्ला थूलकडा य ।

पुव्वं ते रुप्प-सुवण्णादिसु भोयणं, इदाणिं ते लाउ-कमढादिसु ।

आहारो वि ते पुव्व णेहावगाढे रिउक्खमो अणुकूलो य, इदाणिं ते वोसीणो णिव्वलो असंस्कृत. । एण्हिं सयणादिया वि असंस्कृता । "एण्हिं" ति-इयाणिं ॥२४१८॥

पडिकारा य बहुविधा, विसयसुहा आसि तेण पुण एण्हिं ।
चंकमणण्हाण धुवणा, विलेवणा ओसहाइं च ॥२४१९॥

पडियारा णाम सरीरसस्कारा, चंकमणादि विविधरोगोवसमणियओसहाणि । एव दव्वे गतं ॥२४१९॥

इमं खेत्ते –

अद्धाण दुक्ख सेज्जा, सरेणु तमसा य वसधिओ खित्ते ।
परपातेसु गयाणं, वुत्थाण व उदु-सुहघरेसु ॥२४२०॥

मासकप्पे पुण्णे अद्धाणं णिरणुवाणएहिं । दुक्खकारियाओ सेज्जाओ रेणुकज्जवाओ, अजोतिकडाओ तमसाओ, एवं पव्वज्जाए । गिहवासे पुण तुम सिवियादिएहिं आसादिएहिं जाणेहिं उदए वातणिवातेसु य हरितोवलित्तेसु य ऊसिता, कह पव्वज्जाए धितिं करेज्जह ? ॥२४२०॥

आहारादुवभोगो, जोग्गो जो जम्मि होइ कालम्मि ।
सो अण्णहा ण य णिसिं, अकालऽजोग्गो य हीणो य ॥२४२१॥

आहारादिओ उवभोगो जो जम्मि काले जोग्गो सो पव्वज्जाकाले अण्णहा विवरीतो । णिसिं च जावज्जीवं ण भोत्तव्व, दिया वि वेलातिक्कमे लब्भते, अजोग्गो अणणुकूलो, सो वि हीणो ओमोदरियाए ॥२४२१॥

एण्हिं भावे –

सव्वस्स पुच्छणिज्जा, ण य पडिकूलेइ सइरमुइतत्था ।
खुड्डी वि पुच्छणिज्जा, चोदण-फरुसादिया भावे । २४२२॥

गिहवासे राओ पच्चुट्ठिता मुहसलिलादिएहिं सव्वस्स पुच्छणिज्जा आसी, गिहवासे ण ते कोति

पडिकूलं करेति, आगमगमादिएहिं य "सतिर" मिति सेच्छा, "उदित" मिति भाविया, इदाणीं ते खुड्डी वि पुच्छणिज्जा। असामायारिकरणे फरुसवयणेहिं चोतिज्जिहिसि। सव्व सोढव्वं ॥२४२२॥

इमं संखेवओ भण्णति –

जा जेण व तेण जथा, व लालिता तं तहण्णहा भणति ।
सोताइ-कसायण य, जोगाण य णिग्गहो समिती ॥२४२३॥

सुहभाविता अण्णहा भण्णति, ण दुक्खभाविता। सोयादिमिंदियाणं सदा णिग्गहो कायव्वो, कोहादिकसाया जेयव्वा, मणादि अप्पसत्थाण जोगाण णिग्गहो कायव्वो, इरियादिसमितीसु अ सदा समियाए होयव्वं ॥२४२३॥

इयाणिं "[1]कायाणं" ति –

आलिहण-सिंच-तावण-, वीयण-दंत-धुवणादिकज्जेसु ।
कायाणाणुवभोगो, फासुगभोगो परिमितो य ॥२४२४॥

पुढविकाए णो आलिहण विलीहणादी कायव्वा, आउक्काए सिंचणादि, अगणीए तावणादि, वाते वीयणादि, वणस्सतीए दंतधावणादी, एवमादिसु कज्जेसु अणुवभोगो, जो भोगो सो फासुएण, तेण वि परिमितेण ॥२४२४॥

अब्भुवगता य लोओ, कप्पट्ठग लिंगकरण दावणता ।
भिक्खग्गहणं कहेति व, णेति वहं ते दिसा तिण्णि ॥२४२५॥

एवं सव्वं अब्भुवगच्छति जइ तो से लोचो कज्जति। [2]दावण च दिक्खाए त्ति, जो साधू कप्पट्ठगस्स नियसेति, एव से परिहरणलिंगकरणं दाइज्जति "[3]तत्थेव" त्ति छिण्णमडवे, अप्पणो समीवे गहणासेवणसिक्ख गाहेति, उग्गमादि विसुद्धभिक्खागहणं च कारेति, पंथं व णेति, सबद्धइत्थिसहिएण असबधिइत्थीहिं वा पुरिसमीसेण वा सबधिपुरिससत्थेण वा असबंधेहिं वा भद्दगेहिं-जाव-गुरुसमीव पत्ता ताव "[4]इत्तर" दिसाबध करेति। इमं, अहं ते दिसा तिन्नि – अहं ते आयरिओ, अहं ते उवज्झाओ, पवत्तीण य। गरुसमीव पुण पत्ताए गुरू वाहिंति। एवं वितियपदे एगे एगित्थीए सद्धि चउभंगसभव इत्यर्थः ॥२४२५॥

जे भिक्खू उज्जाणंसि वा उज्जाण-गिहंसि वा उज्जाण-सालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाण-गिहंसि वा निज्जाण-सालंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेति, सज्झायं वा करेति, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाओग्गं कहं कहेति,
कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा चरियंसि वा पागारंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेति, सज्झायं वा

---

१ गा० २४१७। २ गा० २४१७। ३ गा० २४१७। ४ गा० २४१७।

करेति, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू दगंसि वा दग-मग्गंसि वा दग-पहंसि वा दग-तीरंसि वा दग-ट्ठाणंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू सुण्ण-गिहंसि वा सुण्ण-सालंसि वा भिन्न-गिहंसि वा भिन्न-सालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं [1]पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५॥

जे भिक्खू तण-गिहंसि वा तण-सालंसि वा तुस-गिहंसि वा तुस-सालंसि वा छुस-गिहंसि वा छुस-सालंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा, परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं [2]पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू जाण-सालंसि वा जाण-गिहंसि वा जुग्ग-सालंसि वा जुग्ग-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ,असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू पणिय-सालंसि वा पणिय-गिहंसि वा परिया-सालंसि वा परिया-गिहसि वा [3]कुविय-सालंसि वा कुविय-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठ-

१ निट्ठुरं । २ निट्ठुर । ३ कमियसालसि वा ।

अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू गोण-सालंसि वा गोण-गिहंसि वा महा-कुलंसि महा-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अन्नयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

उज्जाणं जत्थ लोगो उज्जाणियाए वच्चति, जं वा ईसि णगरस्स उवकंठ ठियं त उज्जाणं।

रायादियाण णिग्गमणट्ठाण णिज्जाणिया, णगरणिग्गमे जं ठियं त णिज्जाणं एतेसु चेव गिहा कया उज्जाण – णिज्जाणगिहा।

नगरे पागारो तस्सेव देसे अट्टालगो।

पागारस्स अहो अट्ठहत्थो रहमग्गो चरिया।

बलाणगं दारं, दो बलाणगा पागारपडिबद्धा। ताण अतरं गोपुरं।

जेण जणो दगस्स वच्चति सो दग-पहो दग-वाहो दग-मग्गो दग-ब्भासं दग-तीर।

सुण्ण गिह सुण्णागार।

देसे पडियसडियं भिण्णागारं।

अधो विसालं उवरुवरिं सवड्डित कूडागारं।

धन्नागारं कोट्ठागार।

दब्भादितणट्ठाण अधोपगास तणसाला।

सालिमादि-तुसट्ठाणं तुस-साला, मुग्गमादियाण तुसा।

गोकरीसो गोमय, गोणादि जत्थ चिट्ठति सा गोसाला, गिह च।

जुगादि जणाण अकुड्डा साला सकुड्डं गिह।

अस्सादिया वाहणा, ताणं साला गिहं वा।

विक्केयं भडं जत्थ छूढ चिट्ठति सा साला गिह वा।

पासडिणो परियागा, तेसिं आवसहो साला गिह वा।

छुहादिया जत्थ कम्मविज्जति सा कम्मंतसाला गिह वा।

मह पाहन्ने बहुत्ते वा, महंतं गिहं महागिह, बहुसु वा उच्चारएसु महागिहं।

महाकुलं पि इब्भकुलादी पाहण्णे बहुजणआइण्ण बहुत्ते।

इमा सुत्तसगहगाहा –

उज्जाणऽट्टाल दगे, सुण्णा कूडा व तुस भुसे गोमे।
गोणा जाणा पणिगा, परियाग महाकुले सेवं ॥२४२६॥

एवं जहा पढमसुत्ते। एव एतेसु उस्सग्गाववातेण चउभंगसभवो वत्तव्वो ॥२४२६॥

इमं "[1]उज्जाणवक्खाणं" –

सभमादुज्जाणगिहा, णिग्गमणगिहा वणियमादिणं इयरे ।
नगरादिनिग्गमेसु य, सभादि निज्जाणगेहा तु ॥२४२७॥

इयरे त्ति णिज्जाणे, वणियमादिया णिग्गमगहिय कय णिज्जाण – गिह ।

अहवा – पच्छद्धेणं वितिय वक्खाणं ॥२४२७॥

सालागिहाण इमो विसेसो –

साला तु अहे वियडा, गेहं कुड्डसहितं तुऽणेगविधं ।
वणिभंडसाल परिभिक्खुगादिमहवहुगपाहुणे ॥२४२८॥

पणियसाला पणियवसवो, महाकुलं पच्छद्धेण व्याख्यातं ।

जे भिक्खू राओ वा वियाले वा इत्थि-मज्झगते इत्थि-संसत्ते इत्थि-परिवुडे अपरिमाणाए कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

संझा राती भणिता, संझाए उ विगमो वियालो तु ।
केसिं ची वोच्छत्थं, पच्छण्णतरे दुविधकाले ॥२४२९॥

रातीति राती संज्ञा, तीए विगमो वियालो ।

अथवा – जसि काले चोरादिया रज्जति सा राती संझावगमेत्यर्थः, ते च्चिय जम्मि काले विगच्छति सो वियालो संझेत्यर्थ ॥२४२९॥

इत्थीणं मज्झम्मी, इत्थी-संसत्तेपरिवुडे ताहिं ।
चउ पंच उ परिमाणं, तेण परं कहंत आणादी ॥२४३०॥

इत्थीसु उभओ ठियासु मज्झ भवति, उरूकोप्परमादीहिं सघट्टतो संसत्तो भवति, दिट्ठीए वा परोप्परं संसत्तो, सव्वतो समता परिवेढिओ परिवुडो भण्णति । परिमाणं-जाव-तिण्णि चउरो पंच वा वागरणानि, परतो छट्ठादि अपरिमाणं कह कहेंतस्स चउगुरुग आणादिया य दोसा ॥२४३०॥ एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

मज्झं दोण्हंतगतो, संसत्तो ऊरुगादिघट्टंतो ।
चतुदिसिठिताहि परिवुडो, पासगताहि व अफुसंतो ॥२४३१॥

अहवा – एगदिसिठियाहिं वि अफुसंतीहिं परिवुडो भणणति ॥२४३१॥

दुविधं च होति मज्झं, संसत्तो दिट्ठि दिट्ठि अंतो वा ।
भावो वि तासु णिहतो, एमेवित्थीण पुरिसेसु ॥२४३२॥

च सद्दाओ संसत्तं पि दुविध – ऊरुगादिघट्टंतो ससत्तो दिट्ठीए वा, इत्थीण वा मज्झे, दिट्ठीण वा मज्झे ।

अहवा – संसत्तस्स इमं वक्खाणं – तेण तासु भावो णिहतो णिवेसितो, ताहिं वा तम्मि णिसेवितो, परस्पर गृद्धानीत्यर्थ. ॥२४३२॥

इमे दोसा –

इत्थीणातिसुहीणं, अचियत्तं आसि आवणा छेदो ।
आत-पर-तदुभए वा, दोसा संकादिया चेव ॥२४३३॥

इत्थीणं जे णायओ भाया पिया पुत्त भच्चयमादी ताण वा जे सुही मित्ता एतेसिं अचियत्तं हवेज, अचियत्ते वा उप्पण्णे दिया असिवावेंति ड्डू । रातो ड्डा । तेसिं अण्णेसिं वा वसहिमादियाण वोच्छेदं करेज्ज आय-पर-उभयसमुत्थाणा एक्कतो मिलियाण दोसा हवेज्ज । अह सकति एते रातो मिलिता किं पुण अणायार करेज्ज, सकिते चउगुरुं, णिस्संकिते मूल । गेण्हणादिया दोसा तम्हा णो रातो इत्थीण धम्मो कहेयव्वो॥२४३३॥

भवे कारणं –

वितियपदमणप्पज्झे, णातीवग्गे य सण्णिसेज्जासु ।
णाताचारुवमग्गे, रण्णो अंतेपुरादीसु ॥२४३४॥

अणवज्झो वा णातिवग्गं वा सो चिरस्स गतो ताहे भणेज्ज – रत्तिधम्मं कहेह, ताहे सो कहेज्ज – वरं; कोइ धम्म पव्वज्जं वा पडिवज्जेज्ज । सावग-सेज्जातर-कुलेसु वा असंकणिज्जेसु अदुट्ठसीलेसु वा णायायारेसु । उवसग्गो वा जहा अतेपुरे अभिवुत्तो ।

अहवा – राया भणेज्ज – अंतेपुरस्स मे धम्म कहेह, ताहे अक्खेज्ज ॥२४३४॥

तत्थिम विधाणं –

णच्चासण्णम्मि ठिओ, दिट्ठिमबंधंतो ईसिं व किढीसु ।
वेरग्गं पुरिसविमिस्सियासु किढिगाजुयाणं वा ॥२४३५॥

णासण्णे ठितो, भणइ य – दूरे ठायह, मा य मे संघट्टेह, तासु दिट्ठिं अबधतो ईसिं वुड्ढासु दिट्ठी ववेंतो वेरग्गकह कहेति, पुरिसविमिस्साण वा कहेति ।

अहवा – सव्वा इत्थीओ ताहे थेरविमिस्साण कहेति ॥२४३५॥

जे भिक्खू सगणिच्चियाए वा परिणिच्चियाए वा णिग्गंथीए सद्धिं गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे ओहयमणसंकप्पे चिंता-सोय-सागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

स-गणिच्चया स-सिस्सिणि, अधवा वि स-गच्छवासिणी भणिता ।
पर-सिस्सिणि पर-गच्छे, णायव्वा पर-गणिच्चीओ ॥२४३६॥

सगणिच्चिया, ससिस्सिणी वा, सगच्छवासिणी वा । परसिस्सिणी वा, परगणवासिणी वा परिगणिच्चिया ॥२४३६॥

पुरतो व मग्गतो वा, सपच्चवाते अपच्चवाते य ।
वच्चंताणं तेसिं, चउक्कभयणा अवोच्चत्थं ॥२४३७॥

पुरतो अग्गतो ठितो साहू वच्चति ।

अहवा – पिट्ठतो मग्गतो ठितो साघू वच्चति ॥२४३७॥

एत्थ चउभगो इमो –

पुरतो वच्चति साधू, अथवा पिट्ठेण एत्थ चउभंगो ।
अहव ण पुरओऽवाओ, पिट्ठे वा एत्थ वा चतुरो ॥२४३८॥

पुरतो साधू वच्चति णो मग्गतो । णो पुरतो मग्गओ वच्चति ।
वहूसु पुरतो वि मग्गतो वि । णो पुरतो णो मग्गतो पक्खापक्खी सुण्णो वा ।

अहवा – इमो चउभंगो –

पुरतो सावायं, णो पिट्ठतो । णो पुरतो, पिट्ठतो सावायं ।
पुरतो वि सावायं, पिट्ठतो वि सावातं । णो पुरतो णो पिट्ठतो सावातं ।
णिब्भए "[1]अव्वोच्चत्थ" गतव्वं – पुरओ साधू, पिट्ठतो संजतीतो ॥२४३८॥

भयणपदाण चतुण्हं, अण्णतरातेण संजतीसहिते ।
ओहतमणसंकप्पो, जो कुज्ज विहारमादीणि ॥२४३९॥

सजतिसहिओ जति ओहियमणसकप्पो विहरति ड्डा ॥२४३९॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, एते तु पदे विवज्जेज्जा ॥२४४०॥

सो पुण किं ओहयमणसकप्पो विहरति ? भण्णति –

अद्धितिकरणे पुच्छा, किं कहितेणं अणिग्गहसमत्थे ।
दुक्खमणाए किरिया, सिट्ठे सत्तिं ण हावेस्सं ॥२४४१॥

ताओ ओहयमणसंकप्प दट्ठु पुच्छति, जेट्ठऽज्जो ? किं अधितिं करेह ?

ताहे संजतो भणेज्जा – जो णिग्गहसमत्थो ण भवति तस्स किं कहिएण ?

ताहे संजतीओ भणंति – "दुक्खे अणाते किरिया ण कज्जति, णाए पुण दुक्खपडियारो सोढो, अप्पणो सत्ति ण हावेस्सं ॥२४४१॥

१ गा० २४३७ ।

एवं भणिते तह वि गारवेण अकहेंते संजतीतो इमं भणंति –

अम्ह वि करेति अरती, इहतदुक्खं इमं असीसंतं ।
इति अणुरत्तं भावं, णातुं भावं पदंसेति ॥२४४२॥

असीसत अकहिज्जत । ताओ अणुगतभावाओ णाउ अब्भुट्ठधम्मो अप्पणो भाव दसेति । आकारविकार करेज्ज । एव सपरोभय – समुत्था दोसा भवति ॥२४४२॥

किं चान्यत् –

पंथे ति णवरि णेम्मं, उवस्सगादीसु एस चेव गमो ।
णिस्संकिता हु पंथे, इच्छमणिच्छे य वावत्ती ॥२४४३॥

निब्भमेत्त णेम ताण पुरतो, णो उवस्सए वि ओहियमणसंकप्पेण अच्छियव्वं, संजती जइ इच्छति ताहे चारित्रविराहणा, जइ णो इच्छइ ताहे संजयस्स आयविराहणा, चिंताए वेहाणस करेज्ज ॥२४४३॥

कारणे –

वितियपदमणप्पज्झे गेलण्णुवसग्ग-दुविधमद्धाणे ।
उवधी सरीर-तेणग, संभम-भय-खेत्त संकमणे ॥२४४४॥

अणप्पज्झो ओहयमणसंकप्पो भवे ॥२४४४॥

गेलण्णे इम –

पाउग्गस्स अलंभे, एगागि-गिलाण खंतियादिसु वा ।
डंडिगमाउवसग्गा, मुच्चेज्ज कथं च इति चिंता ॥२४४५॥

गिलाणपाउग्गं ण लब्भति ताहे अधितिं करेज्ज । खतियादिसु वा गिलाणीसु वा अधितिं करेज्ज ।

उवसग्गे इमं – डडिएण उवसग्गिजंतो उवसग्गिज्जंतीसु वा चित करेज्ज, उवसग्गे डडिएण अप्पणो संजतीण वा उवसग्गे कीरति कह मुचेज्जामो त्ति चित्त करेज्ज ॥२४४५॥

"[1]उवही सरीरतेणग" त्ति अस्य व्याख्या –

उवधी सरीर चारित्त भाव मुच्चेज्ज किह णुहु अवाया ।
ववसायसहायस्स वि, सीयति चित्तं धितिमतो वि ॥२४४६॥

उवधीतेणगा सरीरतेणगा य । सजतीण वा चारित्ततेणगा । कहिं एतेहिंतो अविग्घेण णित्थरेज्ज । एरिसे कज्जे समत्थस्स वि चित्त सीदति ॥२४४६॥

परिसंतो अद्धाणे, दवग्गिभयसंभमं च नाऊणं ।
वोहियमेच्छभए वा, इति चिंता होति एगस्स ॥२४४७॥

[2]अद्धाणे परिस्सतो तण्हा खुहत्तो वा अद्धाण कह णित्थरेज्ज । दगवाहसभमे अग्गिसभमे भयादिसंभमे वा चिंता भवति । वोहियमेच्छभएण वा चिंतापरो भवेज्ज ॥२४४७॥

---

१ गा० २४४४ । २ गा० २४४४ ।

इदाणि "[1]खेत्तसंकमेण" त्ति दारं –

णिग्गंथीणं गणधर-परूवणा खेत्तपेहणा वसधी ।

सेज्जातर वीयारे, गच्छस्स य आणणा दारा ॥२४४८॥

एरिसो संजतीणं गणधरो भवति –

पियधम्मे दढधम्मे, संविग्गेऽवज्ज ओयतेयंसी

संगहुवग्गह-कुसलो, सुत्तत्थविदू गणाधिपती ॥२४४९॥

पियधम्मो णामेगे णो दढधम्मे । एव चउभगो । ततियभंगिल्लो गणधरो । संविग्गो दव्वे भावे य । दव्वे मिगो, भावे साधू । संसारभउव्वग्गो मा कतो वि पमाएण छलिज्जीहामि त्ति सततोवउत्तो अच्छति । वज्जं पाव तस्स भीरू । ओयतेयस्सि त्ति ॥२४४९॥

आरोह-परीणाहो, चितमंसो इंदियाइऽपडिपुण्णो ।

अह ओयो तेयो पुण, होइ अणोत्तप्पता देहे ॥२४५०॥

उस्सेहो आरोहो भण्णति, वित्थारो परिणाहो भण्णति, एते जस्स दो वि तुल्ला, चियमंसो-वलियसरीरो, इदियपडिपुण्णो णो विगलिंदिओ, ण चक्खुविगलादीत्यर्थः । अहेति – एस ओओ भण्णति । तेजो सरीरे । अणोत्तप्पत्ता "अपूप" लज्जायां (अ) लज्जनीयमित्यर्थः । वत्थादिएहिं जो [2]संगहकरो, ओसहभे-सज्जेहिं उवग्गहकरो, क्रियापरो कुसलो, सुतत्थे जाणतो विदू भण्णति । एरिसो गणाहिवती भण्णति ॥२४५०॥ गणधरपरूवणे त्ति दारं गत ।

इदाणीं "[3]खेत्तपेहणे" त्ति दार –

खेत्तस्स उ पडिलेहा, कायव्वा होइ आणुपुव्वीए ।

किं वच्चती गणधरो, जो वहती सो तणं चरइ ॥२४५१॥

खेत्तपडिलेहणकमो जो सो चेव आणुपुव्वी । संजतीणं खेत्तं संजतेहिं पडिलेहियव्व णो सजनीहिं, तत्थ वि गणधरेण ।

चोदगाह – किं वच्चति गणधरो ?

उच्यते – जो वहती सो तणं चरति ।

एवं जो गणभोगं भुंजति सो सव्वं गणचिंताभरं वहति ॥२४५१॥

संजतिगमणे गुरुगा, आणादी सउणि-पेसि-पेल्लणता ।

तुच्छालोभेण य आसियावणादी भवे दोसा ॥२४५२॥

संजतीओ खेत्तपडिलेहगा गच्छंति, तो आयरियस्स चउगुरु आणादिया य दोसा । जहा सउणी वीरल्लस्सउणस्स गंमा भवति, एव ताओ वि दुद्धग्गम्माओ भवति । सव्वस्स अभिलसणिज्जा भवंति, मंसपेसि

१ गा० २४४४ । २ गा० २४४६ । ३ गा० २४४८ ।

व्व विसयत्थीहि य पेल्लिज्जति। तुच्छं स्वल्प, तेण वि लोभिज्जति। आसियावणं हरणं, एवमादि दोसा भवति ॥२४५२॥

तुच्छेण वि लोहिज्जति, भरुयच्छाहरण नियडिसड्ढेणं।
णिंतणिमंतण वहणे, चेइयरूढाण अक्खिवणं ॥२४५३॥

भरुयच्छे रूववतीतो सजतीओ दट्ठु आगतुगवणियओ णियडिसड्डित्तण पडिवण्णो, वीसभिया गमणकाले पव्वत्तिणि विण्णवेति। वहणट्ठाणे मगलट्ठाणतादि विवत्तेमि, सजतीओ पट्ठवेह। पट्ठविया। वहणे चेइयवदणट्ठा आरूढा। पयट्टिय वहणं। "अक्खिवणं" ति एव हरणदोसा भवति ॥२४५३॥

एमादिकारणेहिं, ण कप्पती संजतीण पडिलेहा।
गंतव्वं गणधरेणं, विहिणा जो वण्णितो पुव्वि ॥२४५४॥

पुव्व ति - ओहणिज्जुत्तीए। दारं।

इदाणि [1]"वसहि" दारं –

घणकुड्डा सकवाडा, सागारिय भगिणिमाउ पेरंते।
णिप्पच्चवाय जोग्गा, विच्छिण्ण पुरोहडा वसधी ॥२४५५॥

[2]पक्किटटगादि घणकुड्डा, सह कवाडेण सकवाडा, सेज्जातरमातुभगिणीणं जे घरे ते संजतिवसहीए पेरंतेण ठिता, दुट्ठतेणगादि पच्चवाया णत्थि, महत पुरोहडा य ॥२४५५॥

णासण्ण णाइदूरे, विधवा-परिणतवयाण पडिसेवे।
मज्झत्थ विकाराणं, अकुतूहलभाविताणं च ॥२४५६॥

विहवा रडा, प्रमहंता परिणतवया, मज्झत्था ण कंदप्पसीला, गीतादिविगाररहितातो, सजतीण भोयणादिकिरियासु अकोतुआ, धम्मे साधुसाधुणीहिं वा भाविता एरिसा पडिसेवे सवासिणीओ ॥२४५६॥ वसहि त्ति गतं।

इयाणिं "[3]सेज्जायरे" त्ति दार –

गुत्तागुत्तदुवारा, कुलपुत्ते सत्तिमंत गंभीरे।
भीत परिसमद्दविते, अज्जासेज्जायरे भणिता ॥२४५७॥

कुलपुत्ते ति तिण्णिपदा पढियसिद्धा ॥२४५७॥

सो य इमो–

भोइय-महयरमादी, बहुसयणो पेल्लओ[4] कुलीणो य।
परिणतवओ अभीरू, अणभिग्गहितो अकोहल्ली ॥२४५८॥

सत्तिमतो महतमवि पओयणं अज्ज वसही उप्पण्णे पओयणे अभिरू अणभिग्गहितमिच्छतो। सेस कठ ॥२४५८॥

---

१ गा० २४४८। २ पक्वेष्टकादि। ३ गा० २४४८। ४ पित्तओ पा०।

इयाणि "[1]वीयारे" त्ति, अणावायमसंलोगादी चतुण्हं भंगाण तेसिं कयमो पसत्थो ? तेसिं कि वियारभूमी ? अंतो पसत्था, वाहिं पसत्था ?

भणति –

वीयारे वहि गुरुगा, अंतो विय तइयवज्जते चेव ।
ततिए वि जत्थ पुरिसा, उवेंति वेसित्थियाओ य ॥२४५९॥

उस्सग्गेण सजतीण अतो वियारभूमी, जइ बाहिं वियारभूमी गच्छति तो आयरियस्स चउगुरु । अतो ततियभंगे अणुण्णाय, तत्थ विही-आवात अतो वि सेसभगेसु चउगुरु । ततिए वि जइ पुरिसा आवयति वेसित्थियाओ य तहावि चउगुरुं ॥२४५९॥

जत्तो दुस्सीला खलु, वेसित्थि णपुंस हेट्ठ तेरिच्छा ।
सा तु दिसा पडिकुट्ठा, पढमा वितिया चउत्थी य ॥२४६०॥

परदाराभिगामी दुस्सीला हेट्ठोवासणहेउं जत्थ लोयकरा ठाअति जत्थ य वाणरादि तिरिया बद्धा घिट्ठंति तत्थ इमे उवेंति ॥२४६०॥

चार भड घोड मेंठा, सोलग तरुणा य जे य दुस्सीला ।
उब्भामित्थी वेसिय, अपुमेसु य एंति तु तदट्ठी ॥२४६१॥

पंचालवट्टादि घोडा, सोला तुरगपरियट्टगा, उब्भामगवेसित्थिय अपुमेसु य तदट्ठिणो अण्णे वा आगच्छति ॥२४६१॥

"[2]हेट्ठं" त्ति अस्य व्याख्या –

हेट्ठउवासणहेउं, णेगागमणम्मि गहण उड्डाहो ।
वानर मयूर हंसा, छगलग-सुणगादि-तेरिच्छा ॥२४६२॥

गुज्झदेसोवासणहेउं ते जति उदिण्णमोहा संजतिं गेण्हति तो उड्डाहो ।

[3]"तेरिच्छि" त्ति अस्य व्याख्या – "वानर" पच्छद्धं । एते किल इत्थिय अभिलसति ॥२४६२॥

जइ अंतो वाघातो, वहिया सिं ततियया अणुण्णाता ।
सेसा णाणुण्णाया, अज्जाण वियारभूमीओ ॥२४६३॥

वहिया वि इत्थियावातो ततियभगो, तो अणुण्णाओ ॥दारं॥२४६३॥

इदाणिं "[4]गच्छस्स आणण" त्ति दारं –

पडिलेहियं च खेत्तं, संजतिवग्गस्स आणणा होंति ।
णिक्कारणम्मि मग्गतो, कारण पुरतो व समगं वा ॥२४६४॥

जया खेत्ताओ खेत्त सजतीतो संचारिज्जंति तदा णिब्भए णिरावाहे साधू पुरओ ठिता ताओ य

---

१ गा० २४४८ । २ गा० २४६० । ३ गा० २४६० । ४ गा० २४४८ ।

मग्गतो ठिता आगच्छंति । भयातिकारणे पुण साधू पुरतो मग्गतो पक्खापक्खियं वा समंतग्रो वा ठिया गच्छति ॥२४६४॥

णिप्पच्चवाय-संबंधि-भाविते गणधरप्पबितिय-ततिम्रो ।
णेति भए पुण सत्थेण, सद्धिं कतकरणसहितो वा ॥२४६५॥

संजतीण संबंधिणो जे संजता तेहिं सहितो गणधरो अप्पबितिम्रो अप्पततिम्रो वा णिप्पच्चवाए णेति । सपच्चवाए सत्थेण सद्धि णेति । जो वा संजतो सहस्सजोही सत्थे वा कयकरणो तेण सहितो णेति ॥२४६५॥

उभयट्ठातिणिविट्ठं, मा पेल्ले वइणि तेण पुरएगे ।
तं तु ण जुज्जति अविणय, विरुद्ध उभयं च जतणाए ॥२४६६॥

एगे आयरिया भणति – पुरतो वि ठिया सजतीतो गच्छंतु ।

किं कारणं ? आह – काइयसण्णाणिविट्ठं संजयं मा वइणी पेल्लिहिति, सो वा वइणिं, तम्हा पुरओ गच्छतुं ।" तं ण जुज्जति । कम्हा ? तासिं अविणतो भणति, लोगविरुद्धं च । तम्हा उभयं जयणाए करेज्ज ।

का जयणा ? जत्थ एगो काइयं सण्णं वोसिरति तत्थ सव्वे वि चिट्ठंति, ततो वि चिट्ठते दट्ठु मग्गतो चेव चिट्ठति, ताओ वि पिट्ठतो सरीरचिंत्तं करेंति । एवं दोसा ण भवति ॥२४६६॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अंतो उवस्सयस्स
अद्धं वा रातिं कसिणं वा रातिं संवसावेइ
संवसावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

"णायगो" स्वजनो, "अणायगो" अस्वजन, "उवासगो" श्रावक, इयरो अणुवासगो । "अद्ध" रातीए दो जामा, "वा" विकप्पेण एगं वा जामं, चउरो जामा कसिणा राती, वा विकप्पेण तिण्णि जामा । एगवसहिए सवासो "वसाहि" त्ति भणाति, अण्ण वा अणुमोदति । जो तं न पडिसेवेति, अण्ण वा अपडिसेघतं अणुमोयति तस्स चउगुरु ।

णातगमणातगं वा, सावगमस्सावगं च जे भिक्खू ।
अद्धं वा कसिणं वा, रातिं तू संवसाणादी ॥२४६७॥

आणा अणवत्थिया दोसा ॥२४६७॥

साधुं उवासमाणो, उवासतो सो वती य अवती वा ।
सो पुण णातग इतरे, एवऽणुवासे वि दो भंगा ॥२४६८॥

साधुं उवासतीति उवासगो, थूलगपाणवहादिया वता जेण गहिता सो वती, इयरो अवती । सो दुविहो वि सयणो असयणो य । एवं अणुवासए वि दो भगा । "भगा" इति प्रकारा इत्यर्थं ।

इमं पुण सुत्तं इत्थि पडुच्च –

इत्थि पडुच्च सुत्तं, सहिरण्ण सभोयणे च आवासे ।
जति णिस्सागय जे वा, मेहुण-णिसिभोयणे कुज्जा ॥२४६९॥

जइ इत्थी उवसग्गे संवसति, सइत्थीओ वा पुरिसो, अणित्थीओ वा सहिरण्णो, गहियभत्तपाणो जो, एते साधुवसहीए आवासेति, रातो साधु वा पडुच्च आगता वसधिठिया मेहुणं करेंति. रातो वा भुजति, एएसु सुत्तणिवातो छक्का। एतद्दोसविप्पमुक्के पुरिसे छक्क ॥२४६६॥

कह पुण अद्धराइए एगं वा जाम तिण्णि वा जामा सभवति ? –

जति पत्ता तु निसीधे, पए व णितेसु अद्धमण्णयरे ।
एगतरमुभयतो वा, वाघातेणं तु अद्धणिसिं ॥२४७०॥

जइ अड्ढरत्ते वा एगम्मि वा जामे गते तिहिं वा जामेहिं गतेहिं पत्ता हवेज्ज "एगतर" त्ति - गिहत्था संजता वा, "उभय" त्ति गिहत्था संजता य। एवं वाघायकारणेण वा अप्पणो वा रत्तीए पए णिग्गच्छंताण अद्धणिस्सादि सभवो भवति ॥२४७०॥

गिहिणा सह वसंताणं इमे दोसा –

सागारिय अधिकरणे, भासादोसा य वालमातंके ।
आउय-वाघातम्मि य, सपक्ख-परपक्ख-तेणादी ॥२४७१॥

काइयसण्णावोसिरणे उदगस्स अभावे कारणतो मोयायमणेण वा पादपमज्जणे वा सागारियं भवति, आउज्जोवणवणियादिअधिकरणं ।

अहवा – णिताणिते चलणादिसघट्टिते 'अधिकरणं" कलहो हवेज्ज । जति सजतिभासाहिं भासति तो गिहत्था गेण्हति । अह गारत्थियभासाहिं भासति तो असजतो वोलिंति । सो गिहत्थो सप्पेण खइतो आयंकेण वा मतो अधायुकालेण वा मतो ताहे संका ॥२४७१॥

किंचण अट्ठा एएहिं, घातितो गहण-दोस-गमणं वा ।
अण्णेण वा वि अवहिते, संका गहणादिया दोसा ॥२४७२॥

णूण एयस्स गिहत्थस्स किंचणं आसि तं आयु संजएहिं उद्दविओ, गेण्हणादिया दोसा। "सपक्खे" त्ति कोइ सेहो असेहो वा अव्वुट्ठधम्मो तं हिरण्णं जागित्ता तं से हरिउ णासेज्जा । एयं गमणग्गहणं । "परपक्खे" त्ति सहिरण्णगं जागित्ता त गिहत्थं अण्णो कोइ गिही हरेज्ज ताहे संजता संकिज्जंति । ताहे सो रायकुल गतु कहेज्ज, सजएहिं मे हिरण्ण आसियावियं । तत्थ गेण्हणादिया दोसा । आदिग्गहणातो वा उभयं हरेज्ज ॥२४७२॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा ण संवसेज्जा, खिप्पं णिक्कामते तओ ते उ ।
जे भिक्खू ण णिक्खामे, सो पावति आणमादीणि ॥२४७३॥

णिक्खमणं णिप्फेडणं, "ततो" त्ति आश्रयात्, ते इति गृहस्था. साधूहिं वत्तव्वा "णिग्गच्छह" त्ति ॥२४७३॥

भवे कारणं –

वितियपदं गेलण्णे, पडिणीए तेण सावयभए वा ।
सेहे अद्धाणम्मि य, कप्पति जतणाए संवासो ॥२४७४॥

गिलाणट्ठा वेज्जो आणितो, पडिणीए वा उवद्दवेंते कोति विइज्जो आणिज्जति। एवं तेणसावयभएसु वा सेहो वा जाव ण पव्वाविज्जति, अद्धाणीए वा सह आगतं ण णिक्खामे "अद्धाणपवण्णा वा समग पविट्ठा" ॥२४७४॥

आगंतुगं तु वेज्जं, अण्णट्ठाणासती य संवसते।
पडिणीए तु गिहीणं, अल्लियति गिही व आणेति ॥२४७५॥

गतार्था। [1]जयणा जहा अधिकरण उड्डाहादी ण भवति तहा जयतीत्यर्थ. ॥२४७५॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अंतो उवस्सयस्स अद्धं वा रातिं कसिणं वा रातिं संवसावेति, तं पडुच्च निक्खमति वा पविसति वा, निक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

"पडुच्च" त्ति जाहे सो गिहत्थो काइयादि णिग्गच्छति ताहे सजतो वि चिंतते "एस काइयं गतो अहमवि एयण्णिस्साए काइयं गच्छामि, उट्ठावेति वा एहि, वच्चामो।

संवासे जे दोसा, णिक्खमण-पवेसणम्मि ते चेव।
णातव्वा तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥२४७६॥

जे सवासे अधिकरणादी दोसा भवति ते णिग्गच्छते वि ॥२४७६॥

इमे अधिकतरा –

गिहिसहितो वा संका, आरक्खिगमादि गेण्हणादीया।
उभयाचरणद्वासति, अवण्ण-अपमज्जणादीया ॥२४७७॥

गिहत्थसहितो त्ति काउ चोरपारदारिओ त्ति काउ सका भवति, ताहे दडपासियादीहिं गेण्हणादी दोसा। काइयसण्णा-उभय, त वोसिरतो दवादि असतीए उड्डाहो लोगो अवण्ण भासति, पादथंडिलादी य ण पमज्जति सजमविराहणा ॥२४७७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिंड-नियरेसु वा इंद-महेसु वा खंद-महेसु वा रुद्द-महेसु वा मुगुंद-महेसु वा भूत-महेसु वा जक्ख-महेसु वा णाग-महेसु वा थूभ-महेसु वा चेइय-महेसु वा रुक्ख-महेसु वा गिरि-महेसु वा दरि-महेसु वा अगड-महेसु वा तडाग-महेसु वा दह-महेसु वा णदि-महेसु वा सर-महेसु वा सागर-महेसु वा आगर-महेसु वा अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महा-महेसु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

---

१ गा० २४७४।

खत्तिय इति जातिग्गहणं, मुदितो जाति-सुद्धो, पितिमादिएण अभिसित्तो मुद्धाभिसित्तो, समवायो गोट्ठिभत्तं, पिंडणिगरो दाइभत्त, पिति-पिंडपदाण वा पिंडणिगरो, इंदमहो, खघो स्कन्द कुमारो, भागिणेयो रुद्रः, मुकुन्दो बलदेवः, चेतितं देवकुलं, कहिं चि रुक्खस्स जत्ता कीरइ गिरिपव्वइए जत्ता, णागदरिगादि धाउवायविलं वा मेसा पसिद्धा । एतेसिं एगतरे महे जत्थ रण्णो असिया, पत्तेगं वा रण्णो भत्ते जो गेण्हति ङ्का ।

समवायाई तु पदा, खत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसिं असणादीणं, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ॥२४७८॥

गणभत्तं समवाओ, तत्थ ण कप्पं जहिं णिवस्संसी ।
पितिकालो पिंडनिवेदणं तु णिवणीयसामण्णो ॥२४७९॥

पितृपिंडप्रदानकालो मघा (यथा) श्राद्धेषु भवति ॥२४७९॥

इंदमहादीएसुं, उवहारे णिवस्स जणवतपुरे वा ।
णितिमिस्सितो न कप्पति, भद्दग-पंतादि दोसेहिं ॥२४८०॥

इदादीण महेसु जे उवहार णिज्जति वलिमादिया जणेण पुरेण वा, ते जइ णिवपिंडवइमिस्सितो ण सकप्पति, भद्रपंतादिया दोसा ॥२४८०॥

रण्णो पत्तेगं वा, वि होज्ज अहवा वि मिस्सिता ते तु ।
गहणागहणेगस्स उ, दोसा उ इमे पसज्जंति ॥२४८१॥

अण्णसंतिय गेण्हति, रण्णो संतियस्स अग्गहणं । अह रण्णस्सेगसतियस्स वा गहणे अग्गहणे वि दोसा ॥२४८१॥

गहणे दुविधा – भद्द-पंतदोसा इमे –

भद्दगो तण्णीसाए, पंतो घेप्पंत दट्ठूणं भणति ।
अंतो घरे इच्छध, इह गहणं दुट्ठधम्मोत्ति ॥२४८२॥

भद्दतो चिंतेति एएण उवाएण गेण्हति ताहे अभिक्खणं समवायादिसखडीतो करेति, लोगेण वा सम पत्तेगं वा । पतो तत्थ समवायादिसु घेप्पंतं दट्ठूण भणति – अंतो मम घरे ण इच्छह इय मम संतियं जणवयभसेण सह गेण्हह, अहो ! दुट्ठधम्मो, ततो सो रुट्ठो ॥२४८२॥

भत्तोवधिवोच्छेदं, णिव्विसय-चरित्त-जीवभेदं वा ।
एगमणेगपदोसे, कुज्जा पत्थारमादीणि ॥२४८३॥

भत्तादी वोच्छेदं करेज्ज, मा एतेसिं को उवकरणं देज्ज, णिव्विसए वा करेज्ज, चरित्ताओ वा भसेज्ज, जीवियाओ वा ववरोवेज्ज, एगस्स वा पदुस्सेज्ज अणेगाण वा । कुल-गण-संघे वा पत्थारं करेज्ज ॥२४८३॥

इमे अगहणे दोसा –

तेसु अगेण्हंतेसू, तीसे परिसाए एवमुप्पज्जे ।
को जाणति किं एते, साधू घेत्तुं ण इच्छंति ॥२४८४॥

साधूहिं अगेण्हतेहिं तीसे गोट्ठि परिसाए एव चित्तमुप्पज्जति को पुण कारणं जाणेज, किमिति-कस्माद्धेतोरित्यर्थः ॥२४८४॥

इतरेसिं गहणम्मी, णिव-चोल्लग-वज्जणे जणासंका ।
जातीदोसं से ते, जाणंतागंतओ सो य ॥२४८५॥

इयरे गोट्ठियजणा तेसिं चोल्लगस्स गहणे णिवचोल्लगस्स वज्जणे जणस्स आसंका भवति – एते [1]साधु नूण से हीणजाति त्ति जाणति दोस । सो य तत्थ आगंतुगो करकडुवत् । जणेण घूसियं, रण्णा उवालद्धं, ताहे पदुट्ठो भत्तोवहिवोच्छेदादिए दोसे करेज ॥२४८५॥

तम्हा ण तत्थ गमणं, समवायादीसु जत्थ रण्णो उ ।
पत्तेगं वा भत्तं, अण्णेण जणेण वा मिस्सं ॥२४८६॥

गोट्ठियसमवायभत्तेसु वा पत्तेयभद् कुलगणसम्मिस्सं वा रण्णो णो गेण्हे ॥२४८६॥

बितियपदं गेलण्णे, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णातं ॥२४८७॥

आगाढे गेलण्णे अण्णतो ण लब्भति ताहे घेप्पति, अभिक्खणं णिमंतमाणस्स घेत्तु पसंग वारेंति, जं वा से णत्थि तं मग्गंति, दुल्लभं दव्वं तं च अण्णतो णत्थि, असिवगहिया अण्णे गिहा, नो रण्णो । ओमे रण्णो गेहे लब्भति, अण्णो अधिकतरो राया पदुट्ठो, अण्णतो बोहिगादि भय, एवमादिएहिं कारणेहिं गहणं अणुण्णाय ॥२४८७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं
उत्तर-सालंसि वा उत्तर-गिहंसि वा रीयमाणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

अत्थानिगादिमडवो उत्तरसाला, हयगयाण वा साला उत्तरसाला, मूलगिहमसंबद्धं उत्तरगिह ।

उत्तर-साला उत्तर-गिहा य रण्णो हवंति दुविधा तु ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२४८८॥ कंठा

सालत्ति णवरि णेमं, उज्जाण-पवेसण सव्वहिं वज्जे ।
सालाणं पुण गहणं, हतादि हितणट्ठमासंका ॥२४८९॥

णिभमेत्त "णेम" उदाहरणमात्र, हयादि हिते णट्ठे वा संका भवति । कल्ले एत्थ संजया आगया, तेहिं हडं हडेतु वा अण्णेसिं कहियं, तेहिं वा हड ॥२४८९॥

---

१ ते "साधू णूण से हीण-जातिदोसं जाणति सो ।

[1]"उत्तरसालागिहाणं" इमं वक्खाणं –

मूलगिहसंबद्धा, गिहा य साला य उत्तरा होंति ।
जत्थ व ण वसति राया, पच्छा कीरंति जावऽण्णे ॥२४६०॥

जत्थ वा कीडा पुव्व गच्छति ण वसति ते उत्तरसालागिहा वत्तव्वा । जे वा पच्छा कीरंते ते उत्तरसालागिहा । एतेसु ठाणेसु मीस अमीसं वा जो गेण्हति ते चेव दोसा । त चेव पच्छित्तं । तं चेव वितियपदं ॥२४६०॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं हय-सालागयाण वा गय-सालागयाण वा मंत-सालागयाण वा गुज्झ-सालागयाण वा रहस्स-सालागयाण वा मेहुण-सालागयाण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति,पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१६॥

हयगयसालासु हयगयाण उवजेवण पिंडमाणिय देति, तत्थ रायपिंडो अंतरायदोसो य सेससालासु पइट्ठा भत्ता ।

अहवा – सुत्ताऽभिहियसालासु ठितादीण अणाहादियाण भत्तं पयच्छति । जो गेण्हति ड्डा ।

हयमादी साला खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२४६१॥

रण्गो रायपिंडो त्ति ण गेण्हति, अण्णेसिं गेण्हति ? जे ईसरादिया दसणपट्टगे आणेंति । अण्णेसिं तस्स गहणसभवो भवति ॥२४६१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं सण्णिहि-सण्णिचयाओ खीरं वा दहिं वा णवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खंडं वा सक्करं वा मच्छंडियं वा अण्णयरं वा भोयणजातं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

सन्निही णाम दधिखीरादि ज विणासि दव्वं, जं पुण घय-तेल्ल-वत्थ-पत्त-गुल-खड-सक्कराइय अविणासि दव्व, चिरमवि अच्छइ ण विणस्सइ, सो सचतो । विडं कृष्णलवणं, सामुद्रकादि उद्भिज्जं ।

सण्णिधिसण्णिचयातो, खीरादी वत्थपत्तमादी वा ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२४६२॥

ओदण-गोरसमादी, विणासि दव्वा तु सण्णिधी होंति ।
सक्कुलि-तेल्ल-घय-गुला, अविणासी संचइय दव्वा ॥२४६३॥

---

१ गा० २४५८ ।

"सक्कुली" पर्पटि ॥२४९३॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं उस्सट्ठ-पिंडं वा संसट्ठ-
पिंडं वा अणाह-पिंडं वा किविण-पिंडं वा वणीमग-पिंडं वा
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥१८॥

ओसट्ठे उज्झिय-धम्मिए उ संसट्ठे सावसेसे उ ।
वणिमग जातणपिंडो, अणाहपिंडे अबंधूणं ॥२४९४॥

ऊसट्ठे उज्झिय-धम्मिए । ससत्तपिंडो भुत्तावसेस । वणिमगपिंडो णाम जो जायणवित्तिणो, दाणादि फल लवित्ता लभति, तेसिं जं कड त वणिमगपिंडो भण्णति । अणाहा अबधवा, तेसिं जो कओ पिंडो । एतेसिं जो गेण्हति ड्का ॥२४९४॥

एतेसामण्णतरं, जे पिंडं रायसंतियं गिण्हे ।
ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होइ वितियपदं ॥२४९५॥

दोसा ते चेव, बितियपद ॥२४९५॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

नवम उद्देशक:

जे भिक्खू रायपिंडं गेण्हइ, गेण्हंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू रायपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

इमो संबघो –

पत्थिव-पिंडऽधिकारो, अयमवि तस्सेव एस णवमस्स ।
सो कतिविधोत्ति वा, केरिसस्स रण्णो विवज्जो उ ॥२४६६॥

अट्ठमुद्देसगस्स अतिमसुत्ते पत्थिवपिंडविचारो, इहावि णवमस्स आदिसुत्ते सो चेवाधिकतो । एस सबंधो । सो कतिविहो पिंडो ? केरिसस्स वा रण्णो वज्जेयव्वो ? ॥२४९६॥

जो मुद्धा अभिसित्तो, पंचहि सहिओ पभुंजते रज्जं ।
तस्स तु पिंडो वज्जो, तव्विवरीयम्मि भयणा तु ॥२४९७॥

मुद्धं पर प्रधानमाद्यमित्यर्थः, तस्स आदिराइणा अभिसित्तो मुद्धो मुद्धाभिसित्तो, सेणावइ अमच्च पुरोहिय सेट्ठि सत्थवाहसहिओ रज्ज भुजति । एयस्स पिंडो वज्जणिज्जो । सेसे भयणा । जति अत्थि दोसो तो वज्जे, अह णत्थि दोसो तो णो वज्जे ॥२४९७॥

मुदिते मुद्धभिसित्तो, मुदितो जो होति जोणितो सुद्धो ।
अभिसित्तो च परेहिं, सयं च भरहो जधा राया ॥२४९८॥

मुइए मुद्धाभिसित्ते । मुइते, णो मुद्धाभिसित्ते । णो मुइए, मुद्धाभिसत्ते । णो मुइते णो मुद्धाभिसित्ते । (एस चउभगो) मुइतो जो उदितो उदियकुल-वंस-संभूतो, उभयकुलविसुद्धो, मुद्धाभिसित्तो मउडपट्टबधेन पि (प) र्याहि वा अप्पणा वा अभिसित्तो जहा भरहो । एस मुद्धाभिसित्तो ॥२४९८॥

पढमग-भंगो वज्जो, होतु व मा वा वि जे तहिं दोसा ।
सेसेसु होति पिंडो, जहिं दोसा तं विवज्जंति ॥२४९९॥

पढमभंगो वज्जो, सेस-ति-भगे अपिंडो, अपिंडे वि जत्थ दोसा सो वज्जणिज्जो ॥२४९९॥

राय-पिंडस्स इमो भेओ –

असणादिया चउरो, वत्थे पाए य कंबले चेव ।
पाउंछणगा य तहा, अट्ठविहो राय-पिंडो उ ॥२५००॥ कंठा

अट्ठविध-राय-पिंडे, अण्णतरागं तु जो पडिगाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५०१॥

अण्णतरं जो गेण्हति छ्ढा । आणादिया य दोसा ॥२५०१॥

ईसर-तलवर-माडंबिएहिं सेट्ठीहिं सत्थवाहेहिं ।
णिंतेहि य अणिंतेहि य, वाघाओ होइ भिक्खुस्स ॥२५०२॥

ईसरभोइयमादी, तलवरपट्टेण तलवरो होइ ।
वेंटणबद्धो सेट्ठी, पच्चंतणिवो तु माडंबी ॥२५०३॥

इश ऐश्वर्ये, ऐश्वर्येण युक्तः ईश्वरः, सो य गामभोतियादिपट्टबंधो । रायप्रतिमो चामरविरहितो तलवरो भण्णति । जम्मि य पट्टे सिरिया देवी कज्जति तं वेंटणग, तं जस्स रण्णा अणुन्नातं सो सेट्ठी भण्णति । जो छिण्णमंडवं भुंजति सो माडंबिओ, पच्चंतविसयणिवासी राया माडंबिओ जो सरज्जे परज्जे य पत्तभिण्णातो । सत्थं वाहेति सो सत्थवाहो ॥२५०२ । २५०३॥

जा णिंति इंति ताव ऽच्छणे उ सुत्तादिभिक्खपरिहाणी ।
रीया असंगलं ति य, पेल्ला हणणा इहरधा वा ॥२५०४॥

एतेहिं एवमादीएहिं पविसंतेहिं वा णिक्खमंतेहिं वा वाघातो भिक्खुस्स भवति । आस-हत्थि-पाय ति-रहसंघट्टे पविसंतस्स भायणाणि भिज्जेज्ज। अण्णतरं वा इंदियजायं लुसेज्ज । अह जाव ते अंतिति णिंति वा ताव उदिक्खंते तो सुत्तत्थभिक्खापरिहाणी य भवति । इरिओवउत्तस्स अभिघाओ भवति, आसादि णिरिक्खतस्स संजमविराधना, कस्स "असंगलं" ति काउं अस्सादिणा पेल्लणं, कस्सादिणा वाघातं देज्जा । "इहरह" त्ति-जणसम्मद्दे अहाभावेणं पेल्लणं घातो वा भवे ॥२५०४॥

अहवा – तत्थिमे दोसा –

लोभे एसणघातो, संका तेण णपुंस इत्थी य ।
इच्छंतमणिच्छंते, चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥२५०५॥
अण्णत्थ एरिसं दुल्लभं ति गेण्हे अणेसणिज्जं पि ।
अण्णेण वि अवहरिते, संकेज्जति एस तेणो त्ति ॥२५०६॥
[1]वाघातो सज्झाए, सरीरवाघात भिक्खवाघातो ।
राखत्तिय चउभंगो, इत्थं वाघातदोसा य ॥२५०७॥

रायकुलघरं पविट्ठस्स अंतेपुरियाहिं उक्कोसं दव्वं णीणियं, त च अणेसणिज्जं ।

सो चिंतेति--अण्णत्थ एरिसं णत्थि, दुल्लभं वा दव्वं, ताहे लोभेण अणेसणिज्जं पि गेण्हेज्जा । "संका तेण" त्ति रण्णो वा घरे [1]उच्छुद्धविप्पइण्णे अण्णेण वि अवहडे संजतो आराती त्ति सकिज्जति । लुद्धो वा अप्पणो चेव कए गेण्हणादिया दोसा ।

अथवा – तेणगो चिंतेति – एतेण लिंगेण पवेसो लब्भिहिति, लिंगं काउं पविसेज्ज ॥२५०७॥

---

१ प्रक्षिप्त विप्रकीर्णं ।

"¹णपुंसइत्थिय" त्ति अस्य व्याख्या –

अलभंता पवियारं, इत्थि णपुंसा बला पि गेण्हंति ।
आयरियकुल-गणे वा, संघे व करेज्ज पत्थारं ॥२५०८॥

इत्थि-णपुंसा तत्थ णिरुद्धेंदिया विरहितोगासे बला वि साहू गेण्हेज, जति पडिसेवति चरित्तवि-राहणा, अह तीए भणितो णेच्छति ताहे सा कूवेज – एस मे समणो बला गेण्हति, तस्स पंतावणादिया दोसा । एव आय-पर-उभयसमुत्था य दोसा भवंति ।

अहवा – रुट्ठो राया आयरिय-कुल-गण-संघपत्थारं करेज ॥२५०८॥

अण्णे वि होंति दोसा, आइण्णे गुम्मरयणमादीया ।
तण्णीसाए पवेसो, तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥२५०६॥

रयणादि – आइण्णे गुम्मिय तिट्ठाणइल्ला अइभूमि पविट्ठो तेहिं घेप्पइ हम्मति वा, तण्णीसाए वा अवहरणट्ठा अण्णो पविसति, वाणरादि वा तिरिया दुट्ठा तेहिं उवद्दविज्जंति, अणारियपुरिसा वा दुट्ठा वा हणिज ॥२५०६॥

"²आइण्णे" त्ति अस्य व्याख्या –

आइण्णे रयणाइं, गेण्हेज्ज सयं परो व तण्णीसा ।
गोमिय-गहणा हणणा, रण्णा य णिवेदिते जे तु ॥२५१०॥

रण्णो वावाओ, रण्णो वा उवण्णीए (उवणीता) जं राय पंतावणाइ करिस्सति ॥२५१०॥

चारिय-चोराभिमरा, कामी पविसंति तत्थ तण्णीसा ।
वाणर-तरच्छ-वग्घा, मिच्छादि-णरा व घातेज्जा ॥२५११॥

एते साधुणिस्साए पविसेज । जति वि साहुस्स पवेसो अणुण्णातो तहा वि मेच्छमणुया अयाणंता घाएज ॥२५११॥

भवे कारणं –

दुविधे गेलण्णम्मि य, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णातं ॥२५१२॥

आगाढं अणागाढं च । अणागाढे तिक्खुत्तो मग्गिऊण जति ण लब्भति ताहे पणगपरिहाणीए जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे गेण्हति, आगाढे खिप्पमेव गेण्हति ।

"भिक्खं गेण्हाहि" त्ति णिमंतिओ रण्णा, भणाति – "जइ पुणो ण भणिहिमि तो गेण्हामो" णिब्बंधे वा गेण्हति । दव्वं वा किं चि दुल्लभं तित्तमहातित्तगादी, असिवे वा अण्णतो अलभमाणे राजकुलं वा असिवेण णो गहियं तत्थ गेण्हति । ओमे वा अण्णतो अलभंते, अण्णम्मि वा असिवे, राया ण पदुट्ठ, कुमारे वा, ताहे रण्णो घरातो अभिगच्छंतो गेण्हति । बोहिग-मेच्छ-भए वा तत्थ ठितो गेण्हति । एवमादिएहिं कारणेहिं गहणं रायपिंडस्स अणुण्णातं ॥२५१२॥

---

१ गा० २५०५ । २ गा० २५०६ ।

जे भिक्खू रायंतेपुरं पविसति, पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

अंतेउरं च तिविधं, जुण्ण णवं चेव कण्णगाणं च ।
एक्केक्कं पि य दुविधं, सट्ठाणे चेव परठाणे ॥२५१३॥

रण्णो अंतेपुरं तिविध – ण्हसियजोव्वणाओ अपरिभुज्जमाणीओ अच्छंति, एयं जुण्णंतेपुरं। जोव्वणयुत्ता परिभुज्जमाणीओ नवंतेपुरं। अप्पत्तजोव्वणाण रायदुहियाण संगहो कन्नतेपुरं। तं पुण खेततो एक्केक्कं दुविध – सट्ठाणे परट्ठाणे य। सट्ठाणत्थं रायघरे चेव, परट्ठाणत्थं वसंतादिसु उज्जाणियागयं ॥२५१३॥

एतेसामण्णतरं, रण्णो अंतेउरं तु जो पविसे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५१४॥

इमे दोसा –

दंडारक्खिय दोवारेहिं वरिसधर-कंचुइज्जेहिं ।
णिंतेहि अणिंतेहि य, वाघातो चेव भिक्खुस्स ॥२५१५॥

एतीए गाहाए इमं वक्खाण –

दंडधरो दंडारक्खिओ उ दोवारिया उ दारिट्ठा ।
वरिसधर-वद्ध-चिप्पिति, कंचुगिपुरिसा तु महतरगा ॥२५१६॥

दंडगहियग्गहत्थो सव्वतो अंतेपुरं रक्खइ। रण्णो वयणेण इत्थिं पुरिसं वा अंतेपुरं णीणंति पवेसेति वा, एस दडारक्खितो।

दोवारिया दारे चेव णिविट्ठा रक्खति।

वरिसधरा जेसि जातमेत्ताण चेव दोभाउयाच्छेज्जं दाऊणं गालिता ते वद्धिता। जातमेत्ताण चेव जेसि मेलितेहिं चोतिमा ते चिप्पिसा।

रण्णो आणत्तीए अंतेपुरियसमीवं गच्छंति, अंतेपुरियाणत्तीए वा रण्णो समीवं गच्छंति ते कंचुइया।

जे रण्णो समीवं अंतेपुरियं णयंति आर्णेति वा रिउण्हायण्हातं वा कहं कहेंति, कुवियं वा पसादेंति, वहेंति य रण्णो, विदिते कारणे अणगतो वि ज अग्गतो काउं वयंति, ते महतरगा ॥२५१६॥

अण्णे य इमे दोसा –

अण्णे वि होंति दोसा, आइण्णे गुम्मरयणइत्थीओ ।
तण्णीसाए पवेसो, तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥२५१७॥ पूर्ववत्

सद्दाइ इंदियत्थोवओगदोसा ण एसणं सोधे ।
सिंगारकहाकहणे, एगतरुभए य वहु दोसा ॥२५१८॥

तत्थ गीयादिसद्दोवओगेण इरियं एसणं वा ण सोहेति, तेहिं पुच्छितो सिंगारकहं कहेज्ज, तत्थ य आयपरोभयसमुत्था दोसा ॥२५१८॥

इमे परट्ठाणे –

बहिया वि होंति दोसा, केरिसिया कहण-गिण्हणादीया ।
गव्वो वाउसियत्तं, सिंगाराणं च संभरणं ॥२५१९॥

उज्जाणादिठियासु कोइ साधू कोउगेण गच्छेज्ज, ते चेव पुव्ववण्णिया दोसा, सिंगारकहाकहणे वा गेण्हणादिया दोसा, अंतेपुरे धम्मकहणेण गव्वं गच्छेज्ज, ओरालसरीरो वा गव्वं करेज्ज, अंतेपुरे पवेसे उब्भासितोऽम्हि हत्थपादादिकप्पं करेंते वाउसदोसा भवंति, सिंगारे य सोउं पुव्वरयकीलिते सरेज्ज ।

अहवा – ताओ दट्ठु अप्पणो पुव्वसिंगारे संभरेज्ज, पच्छा पडिगमणादि दोसा हवेज्ज ॥२५१९॥

बितियपदमणाभोगा, वसहि-परिक्खेव सेज्ज-संथारे ।
हयमाई दुट्ठाणं, आवतमाणाण कज्जे व ॥२५२०॥

अणाभोगेण पविट्ठो ।

अहवा – अंतेपुरं परट्ठाणत्थ साधुणा ण णातं – "एयाओ अंतेपुरिओ" त्ति, पुव्वाभासेण पविट्ठो अयाणंतो ।

अहवा – साहू उज्जाणादिसु ठिता, रायंतेउरं च सव्वओ समंता आगतो परिवेढिय ठिय, अण्णवसहि–अभावे य तं वसहिं अंतेपुर मज्झेण अंतिति णिंति वा ।

अहवा – संथारगस्स पच्चप्पणहेउं पविट्ठो ।

अहवा – सीह-वग्घ-महिसादियाण दुट्ठाण पडिणीयस्स वा भया रायंतेपुरं पविसेज्ज । अण्णतो णत्थि णीसरणोवातो, "कज्जे" त्ति कुल-गण-संघकज्जेसु वा पविसेज्ज, तत्थ देवी दट्ठव्वा, सा रायाणं उवणेति ॥२५२०॥

जे भिक्खू रायंतेपुरियं वदेज्जा – "आउसो रायंतेपुरिए ! णो खलु अम्हं कप्पति रायंतेपुरं णिक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा इमण्हं तुमं पडिग्गहणं गहाय रायंतेपुराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दलयाहि" जो तं एवं वदति वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

नीहरिय निष्क्राम्य, गृहीत्वा आहृत्य मम ददातीत्यर्थः ।

जे भिक्खू वएज्जाहि, अंतेउरियं ण कप्पते मज्झं ।
अंतेउरमतिगंतुं, आहारपिंडं इहाणादी ॥२५२१॥

अंतेपुरवासिणी अंतेपुरिया रण्णो भारिया इत्यर्थः । इहेव बाहिं ठियस्स मम आहारादि आनय ॥२५२१॥

इमे दोसा –

गमणादि अपडिलेहा, दंडियकोवे हिरण्णसच्चित्ते ।
अभिओग-विसे हरणं, भिदे विरोधे य लेवकडे ॥२५२२॥

गच्छंती आगच्छंती य छक्कायविराहेज्ज, अपडिलेहिए य गमागमे भिक्खा ण कप्पति, अपडिलेहिए वा भायणे गेण्हेज्ज, दहिओ वा दट्ठु पदुसेज्ज, संकेज्ज वा अणायार, हिरण्णादि वा किंचि तेणियं पच्छा-तीया तत्थ छुभेज्ज, पलडादि वा सचित्तं छुभेज्ज, ओरालियसरीरस्स वा वसीकरणं देज्ज, अप्पणा पदुट्ठा अण्णेण वा पउत्ता विसं देज्ज, भायण वा हरेज्ज, अजाणंती वा भायणं भिंदेज्ज, खीरवि हवी विरोहिदव्वे एकत्तो गेण्हेज्ज, पोग्गलादि वा सजमविरुद्धं गेण्हेज्ज, लेवाडेज्ज वा पत्तगबंधं ॥२५२२॥

लोभे एसणघातो, संका तेणे चरित्तभेदे य ।
इच्छंतमणिच्छंते, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥२५२३॥

उक्कोसगलोभेण एसणघातं करेज्ज, णूणं से उब्भामगो सकितो ड्डा, णिस्संकिते मूल, तेणट्ठे वा संकेज्ज – किं पि हरिउं एयस्स पणामियं, आयपरोभयसमुत्थेहिं दोसेहिं चरित्तभेदो, अगारीए य बला गहिहे इच्छंते चरित्तभेदो, उड्डाहभया अणिच्छंतो ड्डा ।

दुविधे गेलण्णम्मि, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए सा कप्पते भणितुं ॥२५२४॥ पूर्ववत्।

जे भिक्खू नो वएज्जा, रायंतेपुरिया वएज्जा - "आउसंतो समणा ! णो खलु तुज्झं कप्पइ रायंतेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा आहरेयं पडिग्गहगं अतो अम्हं रायंतेपुराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दलयामि" जो तं एवं वदंतीं, पडिसुणेति, पडिसुणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

साहूण आयरगोयरं जाणमाणी भणेज्ज –

एसेव गमो णियमा, णायव्वो होति बितियसुत्ते वि ।
पुव्वे अवरे य पदे, दुविहे उवहिम्मि वि तहेव ॥२५२५॥

दुविहो उवही – ओहीओ उवग्गहितो । तत्थ वि एसेव गमो वत्तव्वो ॥२५२५॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं दुवारिय-भत्तं वा पसु-भत्तं वा भयग-भत्तं वा बल-भत्तं वा कयग-भत्तं वा हय-भत्तं वा गय-भत्तं वा कंतार-भत्तं वा दुब्भिक्ख-भत्तं वा दमग-भत्तं वा गिलाण-भत्तं वा वद्दलिया-भत्तं वा पाहुण-भत्तं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

रण्णो दुवारमादी, भत्ता वुत्ता य जत्तिया सुत्ते ।
गहणागहणे तत्थ, दोसा उ इमे पसज्जंति ॥२५२६॥
दोवारियपुव्वुत्ता, बलं पयादी पसु हयगयादी ।
सेवग-भोइगमादी, कयऽक्कयवित्ती णव पुराणा वा ॥२५२७॥

कंतार-णिग्गताणं, दुब्भिक्खे दमग वरिसवद्दलिया ।
पाहुणग अतिहियाए, सिया य आरोग्गसालितरं ॥२५२८॥

दोवारिया दारपाला । बल चउव्विहं—पाइक्कबलं आसबलं हत्थिबल रहबल । एतेसिं कयवित्तीण वा अकयवित्तीण वा णावालगाण वा जं रायकुलातो पेट्टगादि भत्तं णिग्गच्छति ।

कताराते अडविणिग्गयाण भुक्खत्ताण जं दुब्भिक्खे राया देति तं दुब्भिक्खभत्तं, दमगा रका तेसिं भत्तं दमगभत्त, सत्ताहवद्दले पडते भत्तं करेति राया अपुत्ताण वा अविधीण भत्तं करेति राया ।

अहवा – रण्णो को ति पाहुणगो आगतो तस्स भत्तं आदेसभत्त, आरोग्गसालाए वा "इतरम्मि" ति-विणावि आरोग्गसालाए जं गिलाणस्स दिज्जति तं गिलाण-भत्तं ॥२५२८॥

भद्दो तण्णिस्साए, पंतो घेप्पंत दट्ठुणं भणति ।
अंतो घरे न इच्छह, इह गहणं दुट्ठधम्म त्ति ॥२५२९॥

भत्तोवहिवोच्छेयं, णिव्विसिय चरित्त-जीवभेदं वा ।
एगमणेगपदोसे, कुज्जा पत्थारमादीणि ॥२५३०॥

तेसु अगिण्हंतेसू, तीसे परिसाए एवमुप्पज्जे ।
को जाणति किं एते, साहू घेत्तुं न इच्छंति ॥२५३१॥

दुविहे गेलण्णम्मी, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए व गहणं अणुण्णातं ॥२५३२॥ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छद्दोसाययणाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय परं चउराय-पंचरायाओ गाहावति-कुलं पिंडवायपडियाए निक्खमति वा पविसति वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति, तं जहा—कोट्ठागार-सालाणि वा भंडागार-सालाणि वा पाण-सालाणि वा खीर-सालाणि वा गंज-सालाणि वा महाणस-सालाणि वा ॥सू०॥७॥

"इमे" त्ति प्रत्यक्षीभावे, षडिति सख्या, दोसाण आययण ठाणं णिलए त्ति, अविज्ञाय भिक्षार्थं प्रविशति, चतुरात्रात् परतः, आदेशेन वा पंचरात्रात् परत. छा, सपरिखेवातो अंतो पविसति, अंतातो वा बाहिरिय णिगच्छति, धण्णभायणं कोट्ठागारो, "भाडागारो" – हिरण्ण-सुवण्णभायणं, जत्थ उदगादि पाणं सा पाणसाला भण्णति, खीरघर खीरसाला, जत्थ धण्णं दभिज्जति सा गंजसाला, उवक्खडणसाला महाणसो, पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वे गवेसणा, अपुच्छंतस्स छा ।

इमा णिज्जुत्ती –

छद्दोसायतणे पुण, रण्णो अविजाणिऊण जे भिक्खू ।
चउराय-पंचरायं, परेण पविसाणमादीणि ॥२५३३॥

कोट्ठागारा य तहा, भंडागारा य पाणगारा य ।
खीर-घर-गंज-साला, महाणसाणं च आयतणा ॥२५३४॥

जत्थ सण-सत्तरसाणि धण्णाणि कोट्ठागारो ।

भंडागारो जत्थ सोलसविहाइं रयणाइं ।

पाणागारं जत्थ पाणियकम्मं तो सुरा-मधु-सीधु-खडगं-मच्छंडिय-मुद्दियापभित्तीण पाणगाणि ।

खीरघरं जत्थ खीरं-दधि-णवणीय-तक्कादीणि अच्छंति ।

गंजसाला जत्थ सण-सत्तरसाणि-धण्णाणि कोट्टिज्जति ।

अहवा – गंजा जवा ते जत्थ अच्छंति सा गंजसाला ।

महाणससाला जत्थ असण-पाण-खातिमादीणि णाणाविहभक्खे उवक्खडिज्जंति ॥२५३४॥

एतेसु इमे दोसा –

गहणाईया दोसा, आयवणं संभवो त्ति वेगट्ठा ।
दिट्ठेयर पुच्छि गविसण गंजसाला उ कुट्टणिया ॥२५३५॥

गहणादियाणं दोसाणं आययण ति वा संभवट्ठाणं ति वा एगट्ठं, पुव्वदिट्ठे पुच्छा तत्थेव ताणि जत्थ पुरा आसीत्यर्थः, "इतरे" – अदिट्ठे गवेसणं – केवतियाणि ? कतोमुहाणि वा ? कम्मि वा ठाणे ? किं चिधाणि वा ? शेषं गतार्थम् ॥२५३५॥

पढमे वितिए ततिए, चउत्थमासावि चउगुरू अन्ते ।
उग्घातो पढमदिणे, वितिया एगेसि ता पंच ॥२५३६॥

जत्थ पढमदिवसे ण पुच्छति मासलहु, वितियदिवसे ण पुच्छति मासगुरुं, ततियदिवसे ण पुच्छति चउलहु ति । तिण्ह परेणं अते त्ति चतुर्थदिवसे चउगुरुं ।

एगे भणंति – पढमदिणे परिसतो वक्खेण वा अपरिसंतो ताहे वितियदिणातो आरब्भ पंचदिणे चउगुरुं, एवं चउराउ त्ति वुत्तं भवति ॥२५३६॥

अहवा पढमे दिवसे, भिण्णमासादि पंचमे गुरुगा ।
वीसादि व एगेसिं, परेण पंचण्ह दिवसाणं ॥२५३७॥

पढमदिवसे भिण्णमासे ॥२५॥०।०। ड्डा । पंचमे चउगुरुं ड्डा ।

अथवा – पढमदिणे वीसादि ॥२०।२५।०।०। ड्डा । छट्ठ दिवसे चउगुरुं, ड्डा । एवं सुत्ते वण्णियं पंच गता ॥२५३७॥

तो परं –

भद्देसु रायपिंडं, आवज्जति गहणमादिपंतेसु ।
असिवे ओमोयरिए गेलण्णपदे य वितियपदं ॥२५३८॥

भद्देसु रायपिंडदोसा, पंतेसु गेण्हणादयो दोसा, जे रक्खगा ते भद्दपंता ।

भद्दा भणति – किं अज्जो ! अतिगता ? पता चारिय चोर त्ति काउं पंतावणगेण्हणादी करेज्ज । वितियपदे असिवादिय पणगपरिहाणीए जइउं जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे गेण्हेज्ज ॥२५३८॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा णिग्गच्छमाणाण वा पयमवि चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेंति, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

अतियान प्रवेशः, बहिर्निर्गमो निर्याणं, चक्षुदसणाण दट्ठु प्रतिज्ञा ।

अधवा – चक्षुषा दर्शयामीति प्रतिज्ञा, एगपद पि गच्छति तस्स आणादिया दोसा ।

जे भिक्खू रातीणं, णिग्गच्छंताण अहव निंताणं ।
चक्खुपडियाए पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ॥२५३९॥

अतिंति प्रविशंति, एकमवि पद अभिधारेंतो आणादिदोसे पावति ॥२५३९॥

संकप्पुट्ठियपदभिंदणे य दिट्ठेसु चेव सोही तु ।
लहुओ गुरुगो मासो, चउरो लहुगा य गुरुगा य ॥२५४०॥

मणउट्ठियपदभेदे, य दंसणे मासमादि चतुगुरुगा ।
गुरुओ लहुगा गुरुगा, दंसणवज्जेसु य पदेसु ॥२५४१॥

पडिपोग्गले अपडिपोग्गले य गमणं नियत्तणं वा वि ।
विजए पराजए वा, पडिसेहं वा वि वोच्छेदं ॥२५४२॥

"रायाणं पासामि" त्ति मणसा चिंतेति मासलहुं, उट्ठिते मासगुरुं, पदभेदे चउलहु, दिट्ठे चउगुरु ।

अहवा – बितियादेसेण – मणसा चिंतेति मासगुरुं, उट्ठिते चउलहु, पदभेदे चउगुरुं, एगपदभेदे वि चउगुरुगा किमंग पुण दिट्ठे । आणादि विराहणा भद्दपंता दोसा य ।

जो भद्दतो सो पडिपोग्गले त्ति - साधुं दृष्ट्वा ध्रुवा सिद्धि· अच्छिउकामो वि गच्छइ ताहे अधिकरणं भवति, ज च सो जुज्झाति-करेस्सति, जति से जयो ताहे णिच्चमेव सजए पुरतो काउं गच्छति ।

"अपडिपोग्गले" त्ति - इमेहिं लुत्तसिरेहिं वि दिट्ठेहिं कतो मे सिद्धि, गंतुकामो वि णियत्तेति ।

अह कह वि गतो पराजिओ ताहे पच्चागतो पदूसति, पउट्ठो य जं काहिति भत्तोवकरणपव्वयंताण य पडिसेह करेज्ज, उवकरणवोच्छेदं वा करेज्ज । अपहरतीत्यर्थ ॥२५४२॥

अहवा – इमे दोसा हवेज्ज –

दट्ठूण य रायड्ढिं, परीसहपराजितोऽत्थ कोती तु ।
आसंसं वा कुज्जा, पडिगमणादीणि वा पदानि ॥२५४३॥

आसंसा णिदाण कुज्जा ।

अहवा – तस्समीवे अलकियविभूसियाओ इत्थीओ दट्ठु पडिगमणं – अण्णतित्थिणी सिद्धपुत्ति संजतीं वा पडिसेवति, हत्थकम्म वा करेति ।

अहवा – कोइ ईसरपुत्तो कुमारो पव्वइतो, सो तं रायाणं थी-परिवुडं दट्ठूण चिंतेइ – लद्धं लोइयं अम्हेहिं एरिसीणं णाणुभूतं, ताहे पडिगच्छेज्जा ।।२५४३।।

भवे कारणं –

> त्रितियपदमणप्पज्झे, अभिधारऽत्रिकोविते व अप्पज्झे ।
> जाणंते वा वि पुणो, कुल-गण-संघाइकज्जेसु ।।२५४४।।

कुलादिकज्जे जइ राया पधाविओ ताहे ण अल्लियति मग्गतो गच्छति । एवं पडियरिऊण जतिते पडिपुग्गलादयो दोसा न भवंति तो जहिं ठिओ तहिं अल्लियंति ।।२५४४।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इत्थीओ सव्वालंकार-विभूसियाओ पयमवि चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेति, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

> जे भिक्खू इत्थियाए, सव्वलंकारभूसियाए उ ।
> चक्खुवडियाए पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ।।२५४५।। पूर्ववत् ।

> मणउड्डियपयभेदे, य दंसणे मासमादि चतुगुरुगा ।
> गुरुओ लहुगा गुरुगा, दंसणवज्जेसु य पदेसु ।।२५४६।।

> केइत्थ भुत्तभोगी, अभुत्तभोगी य केइ निक्खंता ।
> रमणिज्जलोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसि ।।२५४७।।

भुत्तभोगिणो सति विभवे निक्खता पुणो सभवंता वच्चति ।।२५४७।।

> पडिगमण अण्णतित्थिय, सिद्धी संजति सलिंगहत्थे य ।
> वेहाणस ओहाणे, एमेव अभुत्तभोगी वि ।।२५४८।।

पेढे पूर्ववत् । अभुत्तभोगी वि उप्पण्णकोउओ पडिगमणादी पदे करेज्ज ।।२५४८।।

किं चान्यत् –

> रीयाति अणुवओगो, इत्थी-णाती-सुहीणमचियत्तं ।
> अजितिंदिय उड्डाहो, आवडणे भेद पडणं च ।।२५४९।।

तण्णिरिक्खंतो रीयाए अणुवउत्तो भवति, इत्थीए जे सयणा सयणाण वा जे सुहीणो तेसिं अचियत्तं भवति, जहा से अणुरत्ता दिट्ठी लक्खिज्जति तहा से अतगओ वि भावो णज्जति अजिइंदिओ एवं उड्डाहो । तं निरिक्खतो खाणगादिसु आवडेज्ज, भायणं वा भिंदेज्ज, सयं वा पडेज्ज, हत्थ पादं वा लूसेज्ज, आयविराहणा ।।२५४९।।

> त्रितियपदमणप्पज्झे, अभिधारऽत्रिकोविते व अप्पज्झे ।
> जाणंतो वा वि पुणो, मोह-तिगिच्छाइ-कज्जेसु ।।२५५०।।

मोहतिगिच्छाए वसभेहिं समं अप्पसागारिए ठितो णिरिक्खति ।।२५५०।।

सो इमं विधिमतिक्कंतो पासइ –

णिव्वीयमायतीए, दिट्ठीकीवो असारिए पेहे ।
अद्धाणांणि व गच्छति, संवाहणमणादि दच्छंति ॥२५५१॥

णिव्वीतियाविय जाहे आतीतो ताहे अप्पसारिए दिट्ठितो दिट्ठीए कीवो पासति, जइ से पोग्गल-परिसाडो जाओ तो लट्ठं, अणुवसमते संबाधादिए वा देच्छति, अद्धाणं गच्छेज्ज, तत्थ दंच्छति पदभेदे वि णत्थि पच्छित्त ॥२५५१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं मंस-खायाणं वा मच्छ-खायाणं वा छवि-खायाणं वा बहिया निग्गयाणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१०॥

मिगादिपारद्धिणिग्गता मसखादगा – दह-णइ-समुद्देसु मच्छखादगा, छवी कलमादिसगा, ता खामो त्ति णिग्गया उज्जाणियाए वा णियकुलाण ।

मंस छवि भक्खणट्ठा, सव्वे उड्डणिग्गया समक्खाया ।
गहणागहणे सत्थउ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५५२॥

तेसु छसु उड्डसु राइण णिग्गताणं तत्थेव असण-पाण-खाण-सातिमं उवकरेंति तडियकप्पडियाण वा तत्थेव भत्त करेज्ज । तत्थ भद्दपतादयो दोसा पूर्ववत् । अण्णेसिं गहणे, रण्णो अग्गहणे इम वक्खाण ॥२५५२॥

मंसक्खाया पारद्धिणिग्गया मच्छ-णति-दह-समुद्दे ।
छवि-कलमादीसंगा, जे य फला जम्मि उ उडुम्मि ॥२५५३॥

तत्थ गया पगते कारवेंति ॥२५५३॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अण्णयरं उववूहणियं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए जो तमण्णं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

क्षतात् त्रायन्तीति क्षत्रिया, अण्णतरग्गहणेन भेदवर्शन, शरीर उपबृंहयतीति उपबृंहणीया, समीहिता समीपमतिता, तं पुण पाहुडं, पेहाए प्रेक्ष्य ।

उववूहणिय त्ति अस्य पदस्य व्याख्या –

मेहा धारण इंदिय, देहाऊणि विवज्जए जम्हा ।
उववूहणीय तम्हा, चउव्विहा सा उ असणादी ॥२५५४॥

शीघ्र ग्रन्थग्रहणं मेधा, गृहीतस्याविस्मरणेन धृति धारणा, सोतिंदियमाइंदियाणं सविसए पाडव-जणणं, देहस्सोपचओ, आउसवट्टणं, जम्हा एते एव उववूहति तम्हा· उववूहणिया । सा य चउव्विहा–असणादि ॥२५५४॥

"तीसे परिसाए अणुट्ठिए" त्ति अस्य व्याख्या –

आसण्णमुक्का उट्ठिय, भिण्ण उ विणिग्गया ततो केई ।
वोच्छिण्णा सव्वे णिग्गया उ पडिपक्खओ सुत्तं ॥२५५५॥

जेमंतस्स रण्णो उववूहणिया आगिया, पिट्ठओ त्ति वुत्तं भवति, तं जो ताए परिसाए अणुट्ठिताए गेण्हति तस्स ङ्का। रायपिडो चेव सो । आसणाणि मोत्तुं उद्धट्ठिताए अच्छति, ततो केति णिग्गता भिण्णा, अणेगेसु णिग्गतेसु वोच्छिण्णा, एरिसे ण रायपिडो । पडिपक्खे सुत्त – अणुट्ठिताए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए-त्यर्थं ॥२५५५॥

रण्णो उववूहणिया, समीहितो वक्खडा तु दुविहा तु ।
[2]छिन्नाच्छिन्ने तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५५६॥

उवक्खडा अणुवक्खडा य । [1]ओदणकुसणादि उवक्खडा य, खीरदहिमादि अणुवक्खडा, सव्वेसु परिविट्ठेसु छिण्णा परिविस्समाणी अच्छिण्णा सा उववूहणिया । तीए परिसाए अणुवट्ठिताए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए उववूहणियाए घेप्पमाणीए ते चेव भद्दपते दोसा तं चेव वितियपदं ॥२५५६॥

अह पुण एवं जाणेज्ज – "इहज्ज रायखत्तिए परिवुसिए" जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पयसाए ताए उवासंतराए विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥११॥

"अथे" त्यय निपात, उक्त· पिंड, वसहिविसेसणो पुण सद्दो यथावक्ष्यमाणं एवं जाणेज्जा – "ज्ञा" अवबोधने, "इह" भूप्रदेशे "अज्जे" त्ति वर्तमानदिने, परिवुसे पर्युषिते वसतेत्यर्थं । जे भिक्खू तस्मिन् गृहे निकृष्टतरो अपवरकादि प्रदेश., तस्मिन्नपि निकृष्टतर· खट्वास्थान अवकाश: विहारादि करेज्ज, तस्स ङ्क ।

राया उ जहिं उसिते, तेसु पएसेसु वितियदिवसादि ।
जे भिक्खू विहरेज्जा, अहवा वि करेज्ज सज्झायं ॥२५५७॥

असणादी वाहारे, उच्चारादीणि वोसिरेज्जा वा ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५५८॥

आणादिणो दोसा, तस्मिन् गृहे यस्मिन् राजा स्थित· आसीत्, ततो रायोच्चरियाओ रक्खिज्जति, तत्थ गहणादयो दोसा । अह उच्चारपासवणं परिट्ठवेति ताहे तमेव छन्नाऽऽविज्जति ॥२५५८॥

अहवा –

पम्हुट्ठ अवहए वा, संका अभिचारुगं च किं कुणति ।
इति अभिनववुत्थम्मि, चिर वुत्थऽचियत्तगहणादी ॥२५५९॥

---

१ व्यजनम् । २ गहणागहणमच्छिन्ने, इति पूनासत्कभाष्यप्रती पाठः ।

तत्थ किं चि पम्हुट्ठं। पम्हुट्ठं णाम पडियं, वीसरियं वा किं चि होज्ज, अण्णेण वि अवहरिते संकिज्जति, पम्हुट्ठस्स हरणबुद्धीए इदियठिया उच्चाटण-वसीकरणाणि, एस एत्थ ठितो अभिचारुअ करेति। अहिणवपवुत्थे एते दोसा, चिरपवुत्थे अपत्तियं, गहणादिया दोसु वि।

अहवा सचित्तकम्मे, दट्ठूणोधारिते तु ते दिव्वे।
अत्थाणी वासहरे, णिवण्णसंवाहिओ व ईह ॥२५६०॥

तासु सचित्तकम्मासु वसहीसु अण्णारिसो भावो समुप्पज्जति-एत्थ अत्थाणि मडवो, एत्थ से वास-घरं, एत्थ णिवण्णो, एत्थ संबाधितो, एवमादि ठाणा दट्ठुं ॥२५६०॥

भुत्तभुत्ताण तहिं, हवंति मोहुब्भवेण दोसा उ।
पडिगमणादी तम्हा, एए उ पए वि वज्जेज्जा ॥२५६१॥

भुत्तभोगीण तं सुमरिउं मोहुब्भवो भवे, इतरेसिं कोउएण ॥२५६१॥

कारणेण –

बितियपदमणप्पज्झे, उस्सण्णाइन्न-संभमभए वा।
जयणाएऽणुण्णवेत्ता, कप्पंति विहारमादीणि ॥२५६२॥

अणवज्झो सव्वाणि वि करेज्ज, उस्सण्णं णाम ण तत्थ कोति वावार वहति, प्रोज्झितमित्यर्थः, आइण्ण – सव्वलोगो आयरति, अण्णवसहीए अभावे अग्गिमादिसंभमे वा बोहिगादिभये वा जयणाए तप्पडियरगे अणुण्णवेत्ता विहारमादीणि करेति ॥२५६२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं वहिया जत्ता-संठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं वहिया जत्ता-पडिणियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जाहे परविजयट्ठा गच्छति ताहे मंगलसतिणिमित्त दियादीण-भोयणं काउं गच्छति, पडिणियत्ता वि विजए सखडि करेंति।

जत्तुग्गतरादीणं, अहवा जत्ता उ पडिणियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५६३॥

गहणागहणे भद्दपंतदोसा, रण्णो ण गेण्हति अण्णेसिं गेण्हति, अण्णेहिं वा अत्तट्ठियं गेण्हंति, ते चेव दोसा, त चेव बितियपद ॥२५६३॥

मंगलममंगलिच्छा, णियत्तमणियत्तमे य अहिकरणं।
जावंतिगमादी वा, एमेव य पडिनियत्ते वी ॥२५६४॥

जत्ताभिमुहस्स णियत्तस्स वा मंगलबुद्धीए अमंगलबुद्धीए वा। मंगलबुद्धीए गच्छति पविसति वा, अमंगलबुद्धीए ण गच्छति ण वा गिहं पविसति। दुहा वि अधिकरणं। जावंतियमादीणि वा दोसेण दुट्ठं भत्तं गेण्हेज्जा ॥२५६४॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं णइ-जत्ता-पट्ठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं णइ-जत्ता-पडिणियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं गिरि-जत्ता-पट्ठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं गिरि-जत्ता-पडिनियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

गिरिजत्तपट्ठियाणं, अहवा जत्ताओ पडिनियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५६५॥
गिरिजत्ता गयगहणी, तत्थ उ संपट्ठिया नियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५६६॥

चारिबंध हत्थिगहणी तीए गच्छति ॥२५६६॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि
णिक्खमति वा पविसति वा, णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति॥१८॥

जे त्ति निद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णिओ, "राजृ दीप्तौ", ईसरतलवरमादियाणं अभिसेगाणमहततरो अभिसेयो महाभिसेओ, अधिरायत्तेण अभिसेयो, तम्मि वट्टते जो तस्समीवेण मज्झेण वा णिक्खमति वा तम्म आणादी दोसा ड्ड।

रण्णो महाभिसेगे, वट्टंते जो उ णिक्खमे भिक्खू।
अहवा वि पविसेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥२५६७॥
मंगलममंगले वा, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे।
विजए पराजए वा, वोच्छेयं वा वि पडिसेहं ॥२५६८॥

मगलवुद्धीए पवत्ताण अधिकरणं, अमगलवुद्धीए णियत्तणे अधिकरणदोसा, वोच्छेदादिया य, जइ से थिररज्ज विजओ वा जातो पुणो पुणो मगलिएसु अत्थेसु साहवो तत्थ ठविज्जंति अधिकरणं च। अथिरे पराजए वा वोच्छेदं पडिसेह् वा, णिव्विसयादि करेज्ज।

अहवा –

दट्ठूण य रायड्ढिं, परीसह-पराजिओऽत्थ कोई तु।
आसंसं वा कुज्जा, पडिगमणाईणि व पयाणि ॥२५६९॥ पूर्ववत्।

वितियपदमणप्पज्झे, अभिचारऽविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, अणुण्णवणादीहिं कज्जेहिं ॥२५७०॥

काए विधीए अणुण्णवितव्वो ? किं पुव्विं पच्छा मज्झे अणुण्णवेयव्वो ?

उच्यते –

णाउणमणुण्णवणा, पुव्विं पच्छा असंगलमवण्णा।
उवओगपुच्छिऊणं, न णाए मज्झे अणुण्णवणे ॥२५७१॥

ओहादीयाभोगिणि, णिमित्तविसएण वा वि णाऊणं।
भद्दे पुव्वाणुण्णा, पंतमणाए य मज्झम्मि ॥२५७२॥

ओहिमादिणा णाणविसेसेण आभोगिणिविज्जाए वा अवितहनिमित्ते वा उवउज्जिऊण, अप्पणो असति अण्णं वा पुच्छिऊण थिरत्ति रज्ज णाऊणं अणुण्णवणा पुव्विं भवति। अथिर वा रज्ज णाऊण पुव्विं अणुण्णाविज्जतो अमगलवुद्धी वा से उप्पज्जति, पच्छा अवज्ञावुद्धी उप्पज्जति, ओहिमादिणाणाभावे वा मज्झे अणुण्णवेति ॥२५७२॥

अणुण्णविते दोसा, पच्छा वा अप्पियं अवण्णो वा।
पंते पुव्वममंगल, णिच्छुभण पओस पत्थारो ॥२५७३॥

मम रज्जाभिसेए अट्ठारस पगतीओ सव्वपासंडा य अग्घे घेत्तूमागया इमे सेयभिक्खुणो णागता तं एते अप्पथद्धा अलोकज्ञा।

अहवा – अहमेतेसिं अप्पिओ, णिव्विसयादी करेज्ज, पच्छा वि अवज्ञादोसा भवति, पुव्व अमगलदोसो, तम्हा ते अणुण्णवेयव्वा ॥२५७३॥

आभोएत्ताण विदू, पुव्विं पच्छा णिमित्तविसएण।
राया किं देमि त्ति य, जं दिण्णं पुव्वरादीहिं ॥२५७४॥

धम्मलाभेत्ता भणति – अणुजाणह पाउग्ग, ताहे जइ जाणति पाउग्गं, भद्दगो वा ताहे भणाति – जाव अणुण्णाय। अयाणगो राया भणति – किं देमि ? ताहे साहवो भणति – ज दिण्ण पुव्व-रातीहिं ॥२५७४॥

जाणंतो अणुजाणति, अजाणतो भणति तेहि किं दिण्णं।
पाउग्गं ति य वुत्ते, किं पाउग्गं इमं सुणसु ॥२५७५॥

किं दिण्णं पुव्वरातीहिं ? साहवो भणंति – इमं सुणसु –

आहार उवहि सेज्जा, ठाण णिसीयण तुयट्ट-गमणादी ।
थी-पुरिसाण य दिक्खा, दिण्णा णे पुव्वरादीहिं ॥२५७६॥

एवं भणिए –

भद्दो सव्वं वितरति, दिक्खावज्जमणुजाणते पंतो ।
अणुसट्ठातिमकाउं, णिंते गुरुगा य आणादी ॥२५७७॥

पंतो भणाति–मा पव्वावेह, सेसं अणुण्णायं, जइ तुब्भे सव्वं लोग पव्वावेह, किं करेमो ? एवं पडिसिद्धा अणुसट्ठादी अकाउं ततो रज्जातो णिंति चउगुरुं, आणादिणो ॥२५७७॥

इमे य दोसा –

चेइय-सावग-पव्वतिउकामअतरंत-बाल-वुड्ढा य ।
चत्ता अजंगमा वि य, अभत्ति तित्थस्स हाणी य ॥२५७८॥

एते सव्वे परिचत्ता भवति, चेतियतित्थकरेसु अभत्ती, पवयणे हाणी कता, एत्थ पडिसिद्धं अन्नत्थ वि पडिसिद्ध, एवं ण कोति पव्वयति एवं हाणी ॥२५७८॥

अच्छंताण वि गुरुगा, अभत्ति तित्थे य हाणि जा वुत्ता ।
भणमाण भाणवेंता, अच्छंति अणिच्छे वच्चंति ॥२५७९॥

पडिसिद्धे वि अच्छंताण चउगुरुं । अण्णत्थ वि भविय जीवा बोहियव्वा । ते ण बोहेंति । अउ तत्थ अच्छंता सयं भणंता अण्णेहि य भणाविता किं चि काल उ दिक्खंति, सव्वहा अणिच्छते अण्णरज्जं गच्छंति ॥२५७९॥

संदिसह य पाउग्गं, दंडिगो णिक्खमण एत्थ वारेति ।
गुरुगा अणिग्गमम्मी, दोसु वि रज्जेसु अप्पबहुं ॥२५८०॥

"[1]पुव्वभणिय तु जं भण्णति – कारग-गाहा"–

एत्थ पडिसेहे देसाणुण्णा । का अणुण्णा ? इमा, "दोसु वि रज्जेसु अप्पबहु" त्ति – तस्स दो रज्जे हवेज्ज ॥२५८०॥

एक्कहि विदिण्ण रज्जे, रज्जे एगत्थ होइ अविदिण्णं ।
एगत्थ इत्थियाओ, पुरिसज्जाता य एगत्थ ॥२५८१॥

अहवा – सो भणेज्ज-मम दो रज्जे, एगत्थ पव्वातेह, एगत्थ मा । तत्थ साहवो रज्जेसु अप्पबहु जाणिऊण जत्थ बहुया पव्वयंति तत्थ गच्छति ।

अहवा – एगत्थ रज्जे इत्थियाओ अब्भणुण्णाया, एगत्थ पुरिसा, दोसु वि रज्जेसु एगतरं वा ॥२५८१॥

---

१ पिठिकायां तृतीय पृष्ठे ।

तरुणा थेरा य तहा, दुग्गयगा अड्डगा य कुलपुत्ता ।
जणवयगा णागरगा, अब्भंतरबाहिरा कुमरा ॥२५८२॥

अहवा – भणेज्ज – थेरे पव्वावेह, मा तरुणे ।

अहवा – मा थेरा, तरुणा । दुग्गए पव्वावेह, मा अड्डे ।

अहवा – अड्डे मा, दुग्गते । कुलपुत्ते – कुलपुत्तगहणाओ सुसीला, सुसीले पव्वावेह, मा दुस्सीले ।

अहवा – दुस्सीले, मा सुसीले । एवं जाणपदा, णागरा, णगरब्भतरा, बाहिरा, कुमारा अकतदारसंगहा ॥२५८२॥

ओहीमाती णातुं, जे दिक्खमुवेंति तत्थ बहुगा उ ।
ते बेंति समणुजाणसु, असती पुरिसे य जे य बहू ॥२५८३॥

असति त्ति ओहिमादीण, पुरिसे पव्वावेंति जो वा थी-पुरिसादियाण बहुतरो वग्गो त पव्वावेंति ॥२५८३॥

एताणि वितरति तहिं, कम्मघण कक्खडो उ णिव्विसए ।
भरहाहिवो णऽसि तुमं, पभवामी अप्पणो रज्जे ॥२५८४॥

कोति एयाणि वितरति, कोति पुण अतिपंतो "कम्मघणो" त्ति - कम्मबहुलो "कक्खडो" - तिव्वकम्मोदए वट्टमाणो णिव्विसए आणवेज्ज । तत्थ पुलागलद्धिमादिणा वत्तव्व – भरहाहिवो णऽसि तुम । सो भणति – जइ वि णो भरहाहिवो तहावि अप्पणो रज्जे पभवामि ॥२५८४॥

सो पुण णिव्विसए इमेण कज्जेण करेति –

दिक्खेहिं अच्छंता, अमंगलं वा मए इमे दिट्ठा ।
मा वा ण पुणो देच्छं, अभिक्खणं चेति णिव्विसए ॥२५८५॥

मा अच्छता दिक्खेहिति, अमगल वा, इमे मए दिट्ठा मा पुणो अभिक्खण देच्छामि, एतेण कारणेण णिव्विसए ॥२५८५॥

भणति तत्थ –

अणुसट्ठी धम्मकहा, विज्जणिमित्ते पभुस्स करणं वा ।
भिक्खे अलब्भाणे, अद्धाणे जा जहिं जयणा ॥२५८६॥

अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा-मंत-णिमित्तादिएहिं उवसामिज्जति । अणुवसमंते जति पभू तो करण करेति ॥२५८६॥

वेउव्वियलद्धी वा, ईसत्थे विज्जओरसबली वा ।
तवलद्धि पुलागो वा, पेल्लेति तमेतरे गुरुगा ॥२५८७॥

जहा भगवया "विण्हुणा" अणगारेण, ईसत्थे वा जो कयकरणो, विज्जासमत्थो वा जहा "अज्जखउडो", सहस्सजोही वा उरस्सबलेण जुत्तो, तवसा वा जस्स तेओलद्धी उप्पणा, पुलागलद्धी वा, एरिसो समत्थो वधिता पुत्त सरज्जे ठवेति ।

अहवा – अप्पणा वट्टावेति जाव रायपुत्तो जोग्गो लद्धो। इतरो पुण असमत्थो जइ पेल्लेति तो चउगुरुगा। अणुवसमते णिग्गंतव्व, णिगएहिं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं भुजतेहिं गतव्वं, जाहे ण लब्भइ ताहे पणगपरिहाणीए जतितु घेप्पति, अद्धाणे जा जयणा वुत्ता सा जयणा इहा वि दट्ठव्वा ॥२५८७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इमाओ दसअभिसेयाओ रायहाणिओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खूत्तो वा णिक्खमति वा पविसति वा, णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति। तं जहा-चंपा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिल्लं कोसंबी मिहिला हत्थिणपुरं रायगिहं वा ॥सू०॥१९॥

"इमा" प्रत्यक्षीभावे, दस इति सख्या, राईण ठाणं रायधाणि त्ति उद्दिट्ठातो, गणियाओ दस, वजियाओ णामेहिं, अतो मासस्स दुक्खुत्तो तिक्खुत्तो वा णिक्खम-पवेसं करेंतस्स ङ्क।

दसहिं य रायहाणी, सेसाणं सूयणा कया होइ।
मासस्संतो दुग-तिग, ताओ अतितम्मि आणादी ॥२५८८॥

अन्नाओ वि णयरीओ वहुजणसंपगाढाओ णो पविसियव्व ॥२५८८॥

इमा सूत्रस्य व्याख्या –

इम इति पच्चक्खम्मी, दस संखा जत्थ राइणो ठाणा।
उद्दिट्ठ-रायहाणी, गणिता दस वंज चंपादी ॥२५८९॥

णामेहिं वंजियाओ चपादि ॥२५८९॥

चंपा महुरा वाणारसी य सावत्थिमेव साएतं।
हत्थिणपुर कंपिल्लं, मिहिला कोसंवि रायगिहं ॥२५९०॥

वारसचक्कीण एया रायहाणीओ ॥२५९०॥

संती कुंथू य अरो, तिण्णि वि जिणचक्की एकहिं जाया।
तेण दस होंति जत्थ व, केसवजाया जणाइण्णा ॥२५९१॥

जासु वा णगरीसु केसवा अण्णा वि जा जणाइण्णा सा वि वज्जणिज्जा ॥२५९१॥

तत्थ को दोसो?

तरुणा वेसित्थि विवाहरायमादीसु होति सतिकरणं।
आउज्ज-गीयसद्दे, इत्थीसद्दे य सवियारे ॥२५९२॥

तरुणे ण्हातविलित्ते थीगुम्मपरिवुडे दट्ठूण, वेसित्थीओ उत्तरवेउव्वियाओ, वीवाहे य विवाहरिद्धिसमिद्धे आहिंडमाणो, रायाऽणेयविविहरिद्धिजुत्ते णिंताणिंते दट्ठुं, भुत्तभोगीणं सतिकरणं, अभुत्ताणं कोउयं पडिगमणादी दोसा। आदिसद्दातो वहु नडनट्टादि आओज्जाणि वा ततविततादीणि गीयसद्दाणि वा ललिय-विलास-हसिय-भगियाणि, मंजुलाणि य इत्थीसद्दाणि, सविगारग्गहणातो मोहोदीरणा ॥२५९२॥

किं चान्यत् –

रूवं आभरणविहिं, वत्थालंकार भोयणे गंधे ।
मत्तुम्मत्तविउव्वण, वाहण-जाणे सतीकरणं ॥२५९३॥

सिंगारागाररूवाणि, हारऽद्धहारादिया आभरणविधी, वत्था "आजीनसहिणादिया" सत्तमुद्देसगाभिहिता, केसपुप्फादि अलकारो, विविध वजणोववेयं भोयणजाय भुजमाण पासित्ता, मिगड-कप्पूरागरु-कुंकुम-चंदण-तुरुक्खादिए गंधे, तहा मत्ते विलोलघोलतनयणे, उत् प्रावल्येन मत्ते उन्मत्ते दरमत्तो वा उन्मत्तो, विविधवेसेहिं विउव्विया, आसादिवाहणारूढा, सिबियादिएहिं जाणेहिं गच्छमाणे पासित्ता, सतिकरणादिएहिं दोसेहिं सजमाओ भज्जेज्ज ।

अहवा – वेहाणसं गद्धपट्ठं वा करेज्ज ॥२५९३॥

इमे य विराहणादोसा –

हय-गय-रह-सम्मद्दे, जणसम्मद्दे य आयवावत्ती ।
भिक्ख वियार विहारे, सज्झायज्झाणपलिमंथो ॥२५९४॥

हय-गय-रह-जाणसम्मद्देण आयविराहणा भवे, बहुजणसम्मद्देण रोहिय-रत्थासु दिक्खतस्स भिक्खवियारे विहारेसु सज्झाएसु य पलिमथो अच्चाउले झाणपलिमंथो ॥२५९४॥ जम्हा एते दोसा तम्हा एत्थ ण गतव्व ।

भवे कारणं –

बितियपदे असिवादी, उवहिस्स वा कारणे व लेवस्स ।
बहुगुणतरं च गच्छे, आयरियादि व्व आगाढे ॥२५९५॥

अण्णो असिवं तेण अतिगम्मति, उवही वा अण्णओ ण लब्भति, तत्थ सुलभो लेवो, गच्छवासीण वा त बहुगुणं खेत्तं, आयरियाण वा तत्थ जवणिज्ज पाउग्गं वा लब्भति । आदिसद्दाओ बाल-वुड्ढ-गिलाणाण वा अण्णतरे वा आगाढे पओयणे ॥२५९५॥

अहवा –

रायादि-गाहणट्ठा, पदुट्ठ-उवसामणट्ठ-कज्जे वा ।
सेहे व अतिच्छंता, गिलाण वेज्जोसहट्ठा वा ॥२५९६॥

रण्णो धम्मगाहणट्ठा । रण्णो अण्णस्स वा पदुट्ठस्स उवसमट्ठा । सेहो वा तत्थ ठितो सण्णायगाण य अगम्मो, तम्मज्झेण वा गच्छिउकामो, गिलाणस्स वा वेज्जोसह – णिमित्तं ॥२५९६॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा – खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा राय-संसियाण वा राय-पेसियाण वा ॥सू०॥२०॥

क्षतात् त्रायन्तीति क्षत्रिया आरक्षकेत्यर्थः, अधिवो राया, कुत्सितो राया कुराया ।

अहवा – पच्चंत-णिवो कुराया, जे एतेसिं चेव प्रेष्या पेसिता, एतेसिं णीहडं - णिसट्ठं - दत्तमित्यर्थः ।

खत्तियमादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५९७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा-णडाण वा णट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्ठियाण वा वेलंवगाण वा कहगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दोखलयाण वा छत्ताणुयाण वा ॥सू॥२१॥

णाडगादि णाडयता णडा, णट्टा अकेल्ला, जल्ला राज्ञः स्तोत्रपाठकाः, अणाहमल्लगाणं पविट्ठा – मल्ला, मुट्ठिया जुज्झणमल्ला, वेलवका खेल वा(?)अक्खातिगा कहाकारगा कहगा, णदीसमुद्दादिसु जे तरंति ते पवगा, जयसद्दपयोत्तारो लासगा भडा इत्यर्थः ।

नडमादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५९८॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा–आस-पोसयाण वा हत्थि-पोसयाण वा महिस-पोसयाण वा वसह-पोसयाण वा सीह-पोसयाण वा वग्घ-पोसयाण वा अय-पोसयाण वा पोय-पोसयाण वा मिग-पोसयाण वा सुण्ह-पोसयाण वा सूयर-पोसयाण वा मेंढ-पोसयाण वा कुक्कुड-पोसयाण वा तित्तिर-पोसयाण वा वट्टय-पोसयाण वा लावय-पोसयाण वा चीरल्ल-पोसयाण वा हंस-पोसयाण वा मयूर-पोसयाण वा सुय-पोसयाण वा ॥सू०॥२२॥

बृहत्तरा रक्तपादा वट्टा, अल्पतरा लावगा ।

पोसगमादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५९९॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स णीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा-आस-दमगाण वा हत्थि-दमगाण वा ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति। तं जहा – आस-मिंठाण वा हत्थि-मिंठाण वा ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स णीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति। तं जहा आस-रोहाण वा हत्थि-रोहाण वा॥सू०॥२५॥

दमगादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६००॥

इमं सुत्तवक्खाणं –

आसाण य हत्थीण य, दमगा जे पढमताए विणियंति।
परियट्टमेंठ पच्छा, आरोहा जुद्धकालम्मि ॥२६०१॥

जे पढम विणय गाहेंति ते दमगा, जे जणा जोगासणेहिं वावार वा वहेंति ते मेंठा, जुद्धकाले जे आरुहति ते आरोहा ॥२६०१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति। तं जहा – सत्थवाहाण वा संवाहावयाण वा अब्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मज्जावयाण वा मंडावयाण वा छत्त-ग्गहाण वा चामर-ग्गहाण वा हडप्प-ग्गहाण वा परियट्ट-ग्गहाण वा दीविय-ग्गहाण वा असि-ग्गहाण वा धणु-ग्गाहाण वा सत्ति-ग्गहाण वा कोंत-ग्गहाण वा ॥सू०॥२६॥

ईसत्थमादियाणि रायसत्थाणि आहृयति कथयति ते सत्थवाहा, पडिमद्दति जे ते परमद्दा शयन-काले परिपिट्टति, शतपाकादिना तैलेन अब्भगेति, पादेहिं, उवट्टेति, ण्हावेंति जे ते मज्जावका, मउडादिणा मंडेति जे ते मडावगा, वस्त्रपरावर्तं गृण्हन्ति जे ते परियट्टगा, आभरणभंडयं "हडप्पो", चाव धणुय, असी खग्ग।

सत्थवाहादि ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६०२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति। तं जहा – वरिस-धराण वा, कंचुइज्जाण वा दोवारियाण वा डंडारक्खियाण वा ॥सू०॥२७॥

वरिसधरट्ठाणादी, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६०३॥

गतार्था. –

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा – खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा वडभीण वा वव्वरीण वा पाउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा ईसणीण वा थारुगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा सिंहलीण वा आलवीण वा पुलिंदीण वा सवरीण वा परिसणीण वा, तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥२८॥

शरीरवक्का खुज्जा, पट्ठिवदुगाहारा (पट्ठी कुब्जागारा) णिग्गता वडभं, सेसा विसयाभिहाणेहिं वत्तव्वं ।

खुज्जाई ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६०४॥

अद्धाण-सद्दोसा, दुगुंछिता लोए संकसतिकरणं ।
आत-परसमुत्थेहिं, कड्ढणगहणादिया दोसा ॥२६०५॥

खुज्जादियासु गच्छतस्स अद्धा(द्धा)णदोसा । गीयादिया य सद्दोसा । दुगुंछिताओ य ताओ लोए, अणायारसेवणे सकिज्जति । भुत्ताण सतिकरणादिया दोसा । इतराण कोउयं । आय-पर-उभयसमुत्था य दोसा । सो वा इत्थिं, इत्थी वा त वला गेण्हेज्ज । गेण्हण-कड्ढणदोसा ॥२६०५॥

॥ इति निसीह-विसेसचुण्णीए नवमओ उद्देसओ समत्तो ॥

सागारियसरक्खणट्ठा उड्ढमहोतिरियं च दिसावलोगो कायव्वो, अह ण करेति तो दवअप्पकलुसादिएहिं उड्डाहो भवति, पढमं पदं ।

जत्थ वोसिरिउकामो तट्ठाणस्स पासे संडासगं पादे य पमज्जति, अह ण पमज्जति तो रयादिविणासणा भवति असमायारी य, च सद्दातो थंडिलं च, वितियपदं ।

"कायदुवे भयण" त्ति भयणासद्दो उभयदीपकः, इह कायदुवे भंगभयणा कज्जति –

जति पडिलेहेति, ण पमज्जति । एत्थ थावरे रक्खति, ण तसे ।

अध ण पडिलेहेति, पमज्जति । एत्थ ण थावरे, तसे रक्खति ।

पडिलेहेति, पमज्जति । एत्थ दो वि काये रक्खति ।

ण पडिलेहेति, ण पमज्जति । एत्थ दो वि न रक्खति ।

अधवा इमा चउव्विह भयणा –

थंडिल तसपाण-सहितं ।१। थंडिलं तसपाण-विरहितं ।२।

अथंडिलं तसपाण-विरहितं ।३। अथंडिल तसपाण-सहितं ।४।

एवं ततियपयं भयणा ।।१८७०।।

दिसि पवण गाम सूरिय, छायाए पमज्जितूण तिक्खुत्तो ।
जस्सुग्गहो त्ति कुज्जा, डगलादि पमज्जणा जतणा ।।१८७१।।

"छाय" त्ति असंसत्तगहणी उण्हे वोसिरति, ससत्तगहणी छायाए वोसिरति, अह उण्हे वोसिरति तो चउलहु । एयं चउत्थ पदं । दिसाभिग्गहो – दिवा उत्तराहुत्तो, राम्रो दक्खिणाहुत्तो । अह अण्णतो मुहो वइसइ तो मासलहु, दिसि-पवण-गाम-सूरियादि य सव्वं अविवरीयं कायव्वं, विवरीए मासलहुं ।।१८७१।।

संका सागारद्दे, गरहमसंसत्त असति दोसे य ।
पंचसु वि पदेसेते, अवरपदा होंति णातव्वा ।।१८७२।।

वितियपद दिसालोअं ण करेज्ज, तत्थ गामे तेणभय, दिसालोअं करेंतो संकिज्जति । एस तेणो चारिओ वा । पादे वि ण पमज्जेज्जा, सागारिय त्ति काउ । अद्दमिति आद्रं थंडिलं ण पमज्जति ।

अधवा – तं थंडिलं गरिहणिज्जं तेण ण पमज्जति । असंसत्तगहणी तेण ण छायाए वोसिरति । असति दोसाण दिसाभिग्गहणं ण करेज्ज । वट्टियसण्णो डगलगं पि ण गेण्हेज्जा । गाम-सूरियादीण व पिट्ठ देज्जा, जत्थ लोगो दोसं ण गेण्हेति । पचसु वि पदेसु एते अवरपता भणिता ।।१८७२।।

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिठवेत्ता न पुंछइ,
न पुंछंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०६।।

ण पुंछति ण णिट्ठुगलेति ।

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा पुंछति, पुंछंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०७।।

किलिंचो वसकप्परी, अण्णतरकट्ठघडिया सलागा, तस्स मासलहुं ।

उच्चारमायरित्ता, जे भिक्खू ण (य) पुंछती अहिट्ठाणं ।
पुंछेज्ज व अविधीए, सो पावति आणमादीणि ॥१८७३॥

आयरित्ता वोसिरित्ता, अविधी कट्ठातिया-वितियसुत्ते ॥१८७३॥

लित्थारणं दवेणं, जुत्तमजुत्तेण पावणा दोसा ।
संजम-आयविराधण, अविधीए पुंछणे दोसा ॥१८७४॥

अणिट्ठगलिते अतीव लेत्थरिय त दवेण जुत्तेण थोवेण ति भणियं होति, तेण ण सुज्झति । असुद्धे दिट्ठ उड्डाहो, सेहो वा विप्परिणमेज्ज ।

अह अजुत्तेण वहुणा दवेण धोवति तो प्लावनादि दोसा । एते अपुञ्छिते दोसा । अविधीपुछिते इम पच्छद्धं । लच्छिएहिं आयविराहणा, अह जीवकायो त्ति संजमविराहणा य ॥१८७४॥

इमा अविधी –

कट्ठेण किलिंचेण व, पत्त सलागाए अंगुलीए वा ।
एसा अविधी भणिता, डगलगमादी विधी ति-विधा ॥१८७५॥

पत्त पलासपत्तादि । डगलेण वा, चीरेण वा, अंगुलीए वा, एसा तिविधा विधी । डगला पुण दुविधा – सबद्धा भूमीए होज्जा, असंबद्धा वा होज्जा । जे असवद्धा ते तिविधा – उक्कोसति । उवला उक्कोसा, लेट्ठूमसिणा मज्झिमा, इट्टालं जहण्णं ॥१८७५॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा पुव्वादाणं, कातूणं डगलगाण छड्डेज्जा ।
उत्थाणोसहपाणे, असती व ण कुज्ज आदाणं ॥१८७६॥

आयाणं डगलगादीण, छड्डेज्ज उच्चारं वोसिरिज्जा । वितियपदं गाहापच्छद्धं । उत्थाणं-अतिसारो, ओसहपीतो वा ण गेण्हति, असती वा ण गेण्हति ॥१८७६॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता णायमति,
णायमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता तत्थेव आयमति,
आयमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०९॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता दूरे आयमति,
आयमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११०॥

तिण्णि सुत्ता उच्चारेयव्वा । उच्चारे वोसिरिज्जमाणे अवस्स पासवणं भवति त्ति तेण गहित । पासवणं पुण काउ सागारिए णायमंति जहा उच्चारे । तत्थेव त्ति थंडिले, जत्थ सण्णा वोसिरिया । अविदूरे हत्थसयमाणमेत्ते ।

उच्चारं वोसिरित्ता, जे भिक्खू णेव आयमेज्जा हि ।
दूरे वाऽऽसण्णे वा, सो पावति आणमादीणि ॥१८७७॥

आयमणं णिल्लेवणं, आसण्णं तत्थेव थंडिले ॥१८७७॥

अणायमंते इमे दोसा –

अयसो पवयण-हाणी, विप्परिणामो तहेव य दुगुंछा ।
दोसा अणायमंते, दूरासण्णायमंते य ॥१८७८॥

अयसो – इमे असोइणो त्ति, ण एते णिल्लेवेंति त्ति ।

ण पव्वयति, अण्णे वि पव्वयंते वारेति, पवयण - हाणी ।

दसणे चरित्ते वा अब्भुवगम काउकामस्स विप्परिणामो भवति ।

सेहाण वा मा एतेहिं विट्टलेहिं सह संफासं करेहि, एसा पुच्छा । दूरे वि एते दोसा । आसण्णे वि एते चेव दोसा ।

कह ? सागारिओ पासति, संजओ सण्णं वोसिरिउं दूरं गतो, सागारिओ वि जोविउ पराभग्गो 'ण णिल्लेवित" ति लोगस्स कहेति । आसण्णे तत्थेव सजतो णिल्लेवेउं गतो, सागारिए आगतु पलोइयं जाव मुत्तियं देक्खति, एतं से कातियं ति ण णिल्लेवितं, पच्छा लोगस्स कहेति ।

उत्थाणोसहपाणे, दव असतीए व णायमेज्जाहिं ।
थंडिल्लस्स व असती, आसण्णे वा वि दूरे वा ॥१८७९॥

अन्नस्स थंडिलस्स असति तत्थेव निल्लेवेति, थडिलट्ठा दूरं गंतु निल्लेवेति, सागारिओ पुण वोलावेति ॥१८७९॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता नावा पूराणं आयमति,
आयमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

"नाव" त्ति पसती, ताहिं तिहिं आयमियव्वं ।

अण्णे भणंति –

अजलि पढमणावापूरं तिहा करेत्ता अवयवे विगिंचति, वितिय णावपूरं तिहा करेत्ता तिण्णि कप्पे करेति सुद्ध, अतो परं जति करेति तो मासलहुं ।

उच्चारमायरित्ता, परेण तिण्हं तु णाव-पूरेणं ।
जे भिक्खू आयमती, सो पावति आणमादीणि ॥१८८०॥

इमे दोसा –

उच्छोलणुप्पिलावण, पडणं तसपाण-तरुगणादीणं ।
कुरुकुयदोसा य पुणो, परेण तिण्हायमंतस्स ॥१८८१॥

"[१]उच्छोलणा पधोइस्स, दुल्लभा सोग्गति तारिसयस्स" उच्छोलणादोसा भवंति, पिपीलिगादीणं वा पाणाण उप्पिलावणा हवइ, खिल्लरंधे तसा पडंति, तरुगणपत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा पडति, आतिग्गहणेणं पुढवि-आऊ-तेउ-वाऊण य, यत्राग्निस्तत्र वायुना भवितव्यमिति कृत्वा, कुरुकयकरणे य वाउस्सत्तं भवति ॥१८७१॥

कारणे अतिरित्तेण वि आयमे –

वितियपद सेह रोधण, हरिसा आगार-सोयवादीसु ।
उत्थाणोसहपाणे, परेण तिण्हायमेज्जासि ॥१८८२॥

जेण वा णिल्लेवं णिग्गंधं भवतीत्यर्थः ॥१८८२॥

जे भिक्खू अपरिहारिएण परिहारियं वदेज्जा – "एहि अज्जो ! तुमं च अहं च एगओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता, तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा" जो तं एवं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ।
तं सेवमाणे आवज्जति मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥११२॥

पायच्छित्तमणावण्णो अपरिहारिओ, आवण्णो मासाति-जाव-छम्मासियं सो परिहारिओ, बूया-ब्रवीति, अज्ज इति आमंत्रणे, एगतओ संघाडएण भत्तं भोक्खामो, पाणग पाहामो, उग्घाएति-मासलहु ।

सीसो भणति - भगवं ? सो किहमाउत्तो आवण्णो ?

आयरिओ आह –

कंटगमादीसु जहा, आदिकडिल्ले तधा जयंतस्स ।
अवसं छलणाऽऽलोयण, ठवणा णाते जुत्ते य वोसग्गे ॥१८८३॥

णाणादि तिगकडिल्लं, उग्गम-उप्पादणेसणा वा वि ।
आहार उवधि सेज्जा, पिंडादि चतुव्विधं वा वि ॥१८८४॥

जहा कंटगाकिण्णे पहे उवउत्तस्सापि कंटगो लग्गति, आदिसद्दातो विसमे आउट्टे वि आगच्छतो पडति, कयपयत्तो वा णतिपूरेण हरिज्जति, सुसिक्खिओ वि जहा असिणा लछिज्जति, एवं-कंटगस्थानीय आइकडिल्लं । त च उग्गम उप्पादणा एसणा । णाण-दंसण-चरित्ता । एतेसु सुट्ठु वि आउत्तस्स अवस्सं कस्स ति छलणा भवति, छलिएण अवस्स आलोयणा दायव्वा, संघयणातीहिं जुत्त णाउ ततो से ठवणा ठविज्जति । ततो स साहूण जाणावणट्ठा सव्वेसिं पुरओ णिरुवसग्गणिमित्तं मंगलट्ठ च काउस्सगो कीरति ॥१८८४॥

"[२]ठवणा णाते जुत्त" पयाण इमा वक्खा –

ठवणा तू पच्छित्तं, णाते समत्थो य होति गीतो य ।
आवण्णो वा जुत्तो, संघयण-धितीए जुत्तो वा ॥१८८५॥

---

१ दसवैकालिक - चतुर्थाध्ययने । २ गा० १८८३ ।

"ठवणे" त्ति - सव्वसाधूहिं समाणं पच्छित्तठवणा ठविज्जति, णाते त्ति समत्थो गीयत्थो वा णातो, आवण्णति पच्छित्तेण जुत्तो, संघयणधितीए वा जुत्तो ॥१८८५॥

आयरिओ काउस्सग्गकरणकाले इमं भणइ –

एस तवं पडिवज्जति, ण किं चि आलवति मा (एनं) आलवहा ।
अत्तट्ठ-चिंतगस्सा, वाघातो भे ण कातव्वो ॥१८८६॥

पडिहारतवं पडिवज्जति ॥१८८६॥

इमे वाघातकारणा –

आलवणं पडिपुच्छण, परियट्टुट्ठाण - वंदणग-मत्ते ।
पडिलेहण संघाडग, भत्तदाण संभुंजणा चेव ॥१८८७॥

"आलवणं" त्ति - आलावो । हे भगवं ! सुत्तत्थं पुच्छति, पुव्वाधीयं परियट्टेति, तेण समकालस्स उट्ठेति वंदण देति, मत्तगं से देति, उवकरणं से पडिलेहेति, भिक्खं अडंतस्स संघाडगो भवति, भत्तं पाणं वा देति, तेण समाणं एगमंडलीए भुंजति ॥१७८७॥

संघाडगा उ जावं, लहुगो जा उ दसण्ह उ पयाणं ।
लहुगा य भत्तदाणे, संभुंजणे होंतऽणुग्घाता ॥१८८८॥

एतेसिं आलवणाइयाण दसण्हं पदाण – जाव – संघाडगपतं ताव पारिहारियस्स आलवणाति करेंतस्स अट्ठसु पतेसु मासलहु । पच्छद्ध कठं ॥१८८८॥

सुत्तणिवातो एत्थं, णायव्वो आदिमट्ठसु पदेसु ।
एतेसामण्णतरं, सेवंताऽऽणादिणो दोसा ॥१८८९॥

आलवणाती करेंतेण तित्थकराणाइक्कमो, पमत्तं वा देवता छलेज्ज, आतविराहणा ।

अण्णेण वा भणितो – कीस आलवणातीणि करेसि त्ति ? सुट्ठु त्ति भणंते अधिकरणं, एव चरणभेदो, तम्हा ण करेज्ज । एताणि पदाणि ॥१८८९॥

कारणे करेज्जा वि –

विपुलं च अण्णपाणं, दट्ठूणं साधुवज्जणं चेव ।
णाऊण तस्स भावं, संघाडं देंति आयरिया ॥१८९०॥

सखडीए छणूसवेसु वा विउल भत्तपाणं साधूहि लद्ध, तं दट्ठूण ईसिं तदभिलासो, साधूहिं वज्जितो ऽहं सदुच्चरितेहिं स (अ) चेलओ, एव आयरिया णाउ संघाडग देंति ॥१८९०॥

अधवा आयरिया चेव इमं णाउ संघाडगं देंति –

देहस्स तु दोब्बल्लं, भावो ईसिं च तप्पडीबंधो ।
अगिलाइ सोधिकरणेण वा वि पावं पहीणं से ॥१८९१॥

आयरिया अतीव देहदुब्बल्ल दट्ठु अतिसएण आगारेण वा भावं ईसिं विपुल-भत्ताभिलासि णच्चा पावं च मे खीणपायं ताहे संघाड देंति ।

इमेण विहिणा – आयरिया भणंति –

एज्जाहि अज्जो अमुगघरं, तत्थ य पुव्वगता आयरिया सो पच्छा वच्चति, ताहे से विरूवं रूव ओगाहिमगादिभत्तं दव्वावेंति । एतेहिं कारणेहिं उवलक्खित्ता, अण्णहा ण देंति ॥१८८९॥

"१णाऊण तस्स भावं" ति अस्य व्याख्या –

आगंतु एतरो वा, भावं अतिसेसिओ से जाणिज्जा ।
हेतूहि वा स भावं, जाणित्ता अणतिसेसी वि ॥१८९०॥

"इयरो" त्ति वत्थव्वो, अइसएण हेऊहिं वा स अणतिसती वि भावं णाऊण संघाडगं ददंतीत्यर्थः ॥१८९०॥

कारणाभावे पुण इमं करेंति –

भत्तं वा पाणं वा, ण देंति पारिहारियस्सिमं करेंति ।
कारण उट्ठवणादी, चोदग गोणीए दिट्ठंता ॥१८९३॥

सेसकाले सघाडय भत्त वा आणेउं न देंति । इमं पुण करेंति - जाहे खीणो ण तरति उट्ठेउ पडिलेहणं वा काउं ताहे सो भणति उट्ठिज्जामि, निसिज्जामि, भिक्खं हिंडिज्जामि, भंडगं पडिलेहिज्जामि, ताहे अणुपडिहारिओ बाहाए गहाय उट्ठवेति, णिसियावेइ वा, धरेइ वा बाहुं पडिलेहावेति, धरिय वा भिक्खं हिंडावेति, एव जं ज ण तरति, तं त से कीरति ।

चोयगो भणति – किं पच्छित्तं ? अवसो व रायदडो तुब्भ त्ति ? एयावत्थस्स जेण आणेउ ण - दिज्जति ?

एत्थ आयरिओ दिट्ठंतं करेइ – जहा णवपाउसे जा गोणी ण तरति उट्ठेउं त गोवो उट्ठवेति, अडविं चरणट्ठा णेति, जा ण तरति गंतु तस्स गिहे आणेउ पयच्छति, एवं परिहारिओ वि ज तरति काउं तं कारविज्जति । जं ण तरति तं किज्जति ॥१८९३॥

इमो गुणो –

एवं तु असढभावो, विरियायारो य होति अणुचिण्णो ।
भयजणणं सेसाणं, य तवो य सप्पुरिसचरियं च ॥१८९४॥

एवं असढभावो भवति, वीरियं च ण गूहित भवति, सेससाहूण य भयं जणियं भवति, तवो य कतो, सप्पुरिसचरियं च कत भवतीति ॥१८९४॥

---

१ गा० १८८८ ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए चउत्थो उद्देसओ समत्तो ॥

पंचम उद्देशकः

इदानी उद्देसकस्स उद्देसकेन सह संबंधं वक्तुकामो आचार्य भद्रबाहुस्वामी निर्युक्ति-गाथामाह –

परिहारतवकिलंतो, रुक्खमधिट्ठाणमादिचिंतेंतो ।
अभिघातिमरक्खट्ठा, पलोयए एस संबंधो ॥१८६५॥

चउत्थस्स अंतसुत्ते परिहारतवो भणितो। तेण किलंतो रुक्खस्स अहे ठिओ ठाण-णिसीयणाति करेंतो लउडादिअभिघायातिमरक्खट्ठा उवरि पलोएति। एस संबधो ॥१८६५॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा
आलोएंतं वा पलोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

सह चित्तेण सचित्तो । रुक् पृथिवी त खातीति रुक्खो। मूलं रुक्खावग्गहो । तम्मि ठिच्चा आलोयणं सकृत, अनेकशः प्रलोकन । एस पचमउद्देसगे आदिसुत्तस्स सखेवतो अत्थो ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूलं, खंधातो जाव रतणिमेत्तं तु ।
तेण परं अच्चित्तं, सुत्तणिवाओ उ सच्चित्ते ॥१८६६॥

जस्स सचित्तरुक्खस्स हत्थिपयप्पमाणो पेहुल्लेण खंधो तस्स सव्वतो जाव रयणिप्पमाणा ताव सचित्ता भूमी, एत आणासिद्ध सेस कठ ॥१८६४॥

रयणिप्पमाणातो अतो बाहिं वा ।

अहवा – सचित्तं अचित्तं वा –

सपरिग्गहं अपरिग्गहं च एक्केक्कगं भवे दुविधं ।
सपरिग्गहं चतुद्धा, दिव्व-मणुय-तिरिक्ख-मीसं च ॥१८६७॥

सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा एक्केक्क दुविध । स परिग्गहं चउव्विहं – देवपरिग्गह मणु-तिरिय-मीस च । मीसस्स चउरो भेया – दुगसंजोगे तिण्णि, तिगसंजोगे एगो ॥१८६५॥

एक्केक्कं तं दुविहं, पंतग-भद्देहि होइ नायव्वं ।
गुरुया गुरुओ लहुया, लहुओ पढमम्मि दोहि गुरू ॥१८६८॥

देवातिपरिग्गहं एक्केक्कं दुभेय कज्जति, भद्दग - पंतेहिं। एतेसु एवंकप्पिएसु ठायंतस्स इमं पच्छित्तं। "गुरुगा" पच्छद्ध। दिव्वे पंतपरिग्गहे अंतो चउगुरु। ङ्क। दिव्वे भद्दपरिग्गहे अंतो मासगुरु। दिव्वे पंतपरिग्गहे बाहिं चउलहु, दिव्वे भद्दपरिग्गहे बाहिं मासलहुं। एवं दिव्वे तवकालगुरुं पच्छित्तं। मणुएसु वि एवं चेव। णवरं – तवगुरुं। तिरिएसु वि एवं चेव। णवरं – कालगुरुं ॥१८९८॥

एतं तु परिग्गहितं, तव्विवरीतमपरिग्गहं होति।
सच्चित्त-रुक्ख-मूलं, हत्थिपदपमाणतो हत्थं ॥१७९९॥

एयं सपरिग्गहं सपच्छित्तं भणियं, तव्विवरीयं अपरिग्गहं। पच्छद्धं। गतार्थं ॥१८९९॥

मीसे इमं पच्छित्त–

ति-परिग्गह-मीसं वा, पंते अंतो गुरुगा बहिं गुरुगो।
भद्देसु य ते लहुगा, अपरिग्गह मासो भिण्णो य ॥१९००॥

पंत-सुर-परिग्गहिते, चतुगुरु अंतो बहिं तु मासगुरू।
भद्दे वा ते लहुगा, णर-तिरिय-परिग्गहे चेवं ॥१९०१॥

एतं चिय पच्छित्तं, दुगाइसंजोगतो (जा) लता चउरो।
अपरिग्गह-तरुहेट्ठा, मासो भिण्णो य अंतो बहिं ॥१९०२॥

दिव्व - मणुय - तिरिय - तिहिं वि परिग्गहियं मीस।
तत्थ दिव्व-मणुय - मीस - पंत - परिग्गहे अंतो चउगुरुगं।
एतेसु चेव पतेसु बाहिं मासगुरुं।
एतेसु चेव भद्देसु अंतो चउलहुग।
एतेसु चेव भद्देसु बाहिं मासलहुं।
एयं उभयलहु दिव्व - तिरिय - परिग्गहे एव चेव, णवरं – कालगुरुं।
माणुस - तिरिय - परिग्गहे एव चेव, णवर – तवगुरुं।
दिव्व - मणुय - तिरिए परिग्गहे एयं चेव, णवरं – उभयगुरुं।
अपरिग्गहे अंतो मासलहुं, बाहिं भिण्णमासो ॥१९०२॥

एक्केक्कपदा आणा, पंता खेत्तादि चउण्हमण्णयरं।
णर तिरि गेण्हणाहण, अपरिग्गह संजमाताए ॥१९०३॥

सपरिग्गहं एतेसिं एक्केक्कातो पदातो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराहणा भवति। तत्थ पंतदेवता खित्तचित्त दित्तचित्त जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं – एतेसिं चउण्हं एगतरं कुज्जा।

अहवा – उवसग्गाण वा चउण्हं – हासा पओसा वीमंसा पुढोवेमाया एतेसिं एगतर कुज्जा। णरा गेण्हणादी करेज्ज। तिरिया आहणण - मारणाती करेज्जा। अपरिग्गहेवि आय - संजमविराहणा ॥१९०३॥

इमा संजमे –

हत्थादिपादघट्टण, सहसाऽवत्थंभ अथवऽणाभोगा ।
गातुम्हा उस्सासो, खेलादिविगिंचणे जं च ॥१६०४॥

एतेहिं पगारेहिं खंधस्स पिंडं करेज ॥१६०४॥

इमा आयविराहणा –

अट्ठिं व दारुमादी, सउणग-परिहार-पुप्फ-फलमादी ।
जीवोवघात देवत-तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥१६०५॥

अट्ठिं वा दारुगं वा पडति, [1]ढकातियाण सण्णाए लेवाडिज्जति, पुप्फफलाणं अण्णेसिं च खंधेया-तियाण जीवाणं उवघातो भवति, देवय-तिरिक्ख-मणुया वा दुट्ठा सपरिग्गहापरिग्गहे दट्ठव्वं । एते सपरिग्गह-अपरिग्गहेसु दोसा ॥१६०५॥

कारणेण य पलोयणं करेज्जा –

बितियपय गेलण्णे, अद्धाणे चेव तह य ओमम्मि ।
रायदुट्ठ-भए वा, जतणाए पलोयणादीणि ॥१६०६॥

एतीए गाहाए सखेवओ इमं वक्खाणं –

रायदुट्ठऽभएसु, दुरूहणा होज्ज छायणट्ठाते ।
अहवा वि पलंबट्ठा, सेसे छायं पलंबट्ठा ॥१६०७॥

रायदुट्ठे बोधिगादिभये य अप्पणो छायणट्ठा दुरुहतो पलोएज्ज, अलभंतो भत्तपाणं एतेसु चेव पलंबट्ठा पलोएज्ज । सेसा गिलाणादिदारा तेसु णियमा पलबट्ठा पलोएज्ज । गिलाणो वा णिज्जतो छायाए वीसमति त्ति पलोएज्ज ॥१६०७॥

"[2]जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

अपरिग्गहिते बाहिं, भद्दग-पंते व ऽणुण्णविय बाहिं ।
अपरिग्गहं तो भद्दे, अंतो पंते ततो अंतो ॥१६०८॥

पढम अपरिग्गहे बाहिं, ततो भद्दगपरिग्गहिएसु अणुण्णविय बाहिं, ततो पंतेसु अणुण्णविय बाहिं, ततो अपरिग्गहे अन्तो, ततो भद्दएसु अणुण्णविय अंतो, ततो पतेसु अणुण्णविय अंतो ॥१६०८॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा तुयट्टणं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

ठाण काउस्सग्गो, वसहि णिमित्त सेज्जा, वीसम-ट्ठाण-णिमित्त णिसीहिया ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूले, ठाण-णिसीयण-तुयट्टणं वा वि ।
जे भिक्खू चेतीते, सो पावति आणमादीणि ॥१६०९॥

---

१ काकादीनाम् । २ गा० १६०६ ।

हत्थादि पायघट्टण, सहसाऽत्थंभ अहवऽणाभोगा ।
गातुम्हा उस्सासे, खेलादिविगिंचणा जं च ॥१६१०॥

अट्ठिं व दारुगादी, सउणग-परिहार-पुप्फ-फलमादी ।
जीवोवघात देवत-तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥१६११॥

पूर्ववत् ।

असिवोम-दुट्ठ-रोधग, गेलण्णऽद्धाण संभम भए वा ।
वसधीवाघातेण य, असती जतणा य जा जत्थ ॥१६१२॥

असिवेण गहिता अण्णत्थ वसहिं अलभंता रुक्खमूले अच्छता जा जा रुक्खाओ छाया णिग्गता तत्थ ठायंति, रुक्खमूले ठिता कागादी णिवारेंति, पडमंडवं वा करेंति ॥१६१०॥

सेसेसु इम वक्खाणं –

रायदुट्ठ-भए वा, दुरूहणा होज्ज छादणट्ठाए ।
अहवा वि पलंबट्ठा, सेसे ठाही पलंबट्ठा ॥१६१३॥

पूर्ववत् ।

"[1]वसहिवाघाएण" अस्य व्याख्या –

इत्थी णपुंसको वा, खंधारो आगतो त्ति णिग्गमणं ।
सावय मक्कोडग तेण वाल मसगा ऽयगरे साणे ॥१६१४॥

गामबहिट्ठा देवकुले ठिताण सुण्णघरे इत्थी णपुंसगो वा उवसग्गेति, खंधावारो वा आगतो तत्थ ठितो, दीविगादिसावय वा पइट्ठं, तत्थेव पतितं विगाले कहियं, मक्कोडगा वा राओ उच्छुआणा, तेणगा वा वा रातो आगच्छति, सप्पो व रातिं उवसग्गेति, मसगा वा राओ भवंति, अयगरो वा राओ आगच्छति, साणो वा राओ पत्तए अवहरति। एतेहिं वसहिवाघातेहिं णिग्गता अण्णवसहिं अलभता सचित्तरुक्खमूले ठाएज्जा ॥१६१२॥

इमा जयणा –

अपरिग्गहम्मि वाहिं, भद्दगपंते वऽणुण्णविय वाहिं ।
अपरिग्गहन्तो भद्दे वि, अंतो पंते ततो अंतो ॥१६१५॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

सचित्त-रुक्ख-मूले, असणादी जो उ भुंजए भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६१६॥

---

१ गा० १६१२ ।

(अत्र गाथाः १६०६ । १६१० । १६१२ । १६१३ । संख्याकाः पुनरपि पठनीयाः)

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा उच्चार-पासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

सचित्त-रुक्ख-मूले, उच्चारादी आयरेइ जो भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, विराहणं अट्ठिमादीहिं ॥१६१७॥

पूर्ववत् ।

थंडिल्ल असति, अद्धाण रोधए संभमे भयासण्णे ।
दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरणं होति जतणाए ॥१६१८॥

असति त्ति अण्ण थंडिल्ल णत्थि, रोहए तं अणुण्णाय, आसण्णे भावा सण्णा ते दूर ण सक्केति गतु ॥१६१६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं उद्दिसइ,
उद्दिसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं समुद्दिसइ,
समुद्दिसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं अणुजाणइ,
अणुजाणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं वाएइ,
वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं परियट्टेइ,
परियट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

अणुप्पेहा धम्मकहा पुच्छाओ सज्झायकरणं । उद्देसो अभिनव अधीतस्स, अथिरस्स समुद्देसो, थिरीभूयस्स अणुण्णा । सुत्तत्थाण वायणं देति, सुत्तमत्थ वा आयरियसमीवा पडिपुच्छति, सुत्तमत्थ वा पुव्वाधीतं अब्भासेति परियट्टेइ ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूले, उद्देसादीणि आयरे जो तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६१६॥

पूर्ववत् ।

बीयं जोगागाढे, सागर मते व असति वोच्छेदो ।
एतेहिं कारणेहिं, उद्देसादीणि कप्पंति ॥१६२०॥

जोगी आगाढो, इह वसहीए असज्झायं, तेण रुक्खमूले उद्देसातीणि करेज्ज ।

अहवा – वसहीए सागारियं, रहस्स सुत्तं वा, अपरिणया बहू. ताहे बाहिं गम्मति । मतो वा सो जस्स पासतो तं गहियं, वसहीए य असज्झातियं ताहे अज्झयणट्ठा बाहिं रुक्खमूलातिसु अब्भसेज्ज, आसण्णे वा मतं, वोच्छेदो णाम एगस्स तं अत्थि सो वि अतिमहल्लो ताहे वसहिं असज्झातिते बाहिं रुक्खमूलादिसु करेंति तुरिता ॥१६१८॥

जे भिक्खू अप्पणो संघाडिं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सागारिएण वा सिव्वावेइ, सिव्वावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अप्पणो अप्पणिज्जं, संघाडी णाम सवडी सण्हसति त्ति काऊणं दोहिं अंतेहिं मज्झे य जति अणउत्थिएण ससरक्खातिणा, गिहत्थेण तुण्णागातिणा, संसिव्वावेइ अप्पणेण ।

णिक्कारणम्मि अप्पणा, कारणे गिहि अहव अण्णतित्थीहिं ।
जे भिक्खू संघाडिं, सिव्वावे आणमादीणि ॥१६२१॥

(अत्र १६०६ अंक मिता गाथाः पुन पठनीयाः) ।

जति णिक्कारणे अप्पणा सिव्वेति, कारणे वा अण्णउत्थिय-गारत्थिएहिं सिव्वावेति तस्स मासलहुं । आणाइया य दोसा ॥१६१६॥

इमे दोसा –

णिक्कारणम्मि लहुगो, गिलाणआरोवणा य विद्धम्मि ।
छप्पइकाई संजमे, कारणे सुद्धो खलु विधीए ॥१६२२॥

विद्धे आयविराहणा, छप्पतियवहे य संजमविराहणा, कारणे विधीए सयं सिव्वतो सुद्धो ॥१६२२॥

चोदग आह – पढमुद्देसगे परकरणे मासगुरुं वण्णियं, इह कह मासलहुं भवति ?

आयरिय आह –

कामं खलु परकरणे, गुरुओ मासो तु वण्णिओ पुव्विं ।
कारणियं पुण सुत्तं, सयं च णुण्णायते लहुओ ॥१६२३॥

कामं अणुमयत्थे, खलु पूरणे, पुव्वं पढमुद्देसए, इह तु कारणिए सुत्ते अप्पणो अणुण्णाते, परेण सिव्वावेंतस्स मासलहुं ॥१६२३॥

सिव्वावणे इमे दोसा –

णेगगुणसमुंचंते, बंधमुयंते य होंति पलिमंथो ।
एगस्स वि अक्खेवे ऽवहारो होइ सव्वेसिं ॥१६२४॥

जति बद्धं पडिलेहेति अणेगरूवघुणणदोसो। अह बंधे मोत्तु पडिलेहेति य बंधति ततो सुत्तत्थ-पलिमंथो भवति, पडच्छोडग-तेणगेण अक्खित्ते एगे वि सव्वेसिं अवहारो भवति ॥१९२४॥

अकारणा सिव्वणे य इमे दोसा –

सयसिव्वणम्मि विद्धे, गिलाण आरोवणा तु सविसेसा।
छप्पतियऽसंजमम्मी, सुत्तादी अकरणे इमं च ॥१९२५॥

अप्पणो सिव्वंतो सूतीए विद्धो ताहे गिलाण आरोवणा सविसेसा सपरितावमहादुक्खा। छप्पतियवधे असंजमो भवति। तत्थ लग्गो सुत्तत्थपोरिसिं ण करेति। जहासखं सुत्तं नासेति छ्क, अत्थं णासेइ ॥१९२५॥

इम च परकारवणे दोसदंसणं –

अविसुद्ध ठाणे काया, पप्फोडण छप्पया य वातो य।
पच्छाकम्मं व सिया, छप्पति-वेधो य हरणं च ॥१९२६॥

अविसुद्धे ठाणे पुढविकायादियाणं उवरिं ठवेति कायविराहणा, पप्फोडणे छप्पया पडंति, वाउसंघट्टणा य, धाणावडियंविलिएण देस-सव्वण्हाणं करेज्ज, छप्पयाओ वा विंधेति, अप्पणो वा उरुय विंधति, हरेज्ज वा तं संघाडिं ॥१९२६॥

इदाणिं अप्पणो सिव्वणे कारणं भण्णति –

वितियं च वुड्ढुड्ढोरगे य गेलण्ण विसमवत्थे य।
एतेहिं कारणेहिं, संसिव्वणमप्पणा कुज्जा ॥१९२७॥

वुड्ढो तस्स हत्था वा पाया वा कंपति, ण तरति पुणो पुणो संठवेउं।

अधवा – उड्ढोरगो गिलाणो वा, ण तरति पुणो पुणो संठवेउं, विसमवत्थाणि वा एगट्ठं सीविज्जति, एतेहिं कारणेहिं सयं सीवंतो सुद्धो। जहण्णेण तिण्णि बंधा, एक्को दसते, बितिओ पासते, ततीतो मज्झे। बितीयदिसा ए वि तिण्णि, उक्कोसेण छ भवंति ॥१९२७॥

कारणे अण्णउत्थिएण सिव्वावेति –

वितियपदमनिउणे वा, णिउणे वा होज्ज केणती असहू।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताधे ॥१९२८॥

अप्पणा अणिउणो वा, णिउणो वा असहू, ग्लानवाघातो गिलाणाति-पओयणेण वावडो, एवं परो कारवेउ कप्पति ॥१९२८॥

इमाए जयणाए –

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य अस्सण्णी।
गिहि अण्णतित्थिएहिं च, असोय-सोए गिही पुव्वं ॥१९२९॥

पच्छाकडो पुराणो, पढम तेण। ततो अणुव्वतसपन्नो सावओ साभिग्गहो। ततो दंसणसावतो णिरभिग्गहो। ततो असण्णी भद्दओ। एते चउरो गिहिभेदा। अण्णउत्थिए एते चउरो भेदा। एक्केक्के असोय-सोयभेया कायव्वा। पुव्वं गिहीसु असोएसु, पच्छा सोयवादिसु, पच्छा अण्णतित्थिएसु ॥१९२९॥

जे भिक्खू अप्पणो संघाडीए दीह-सुत्ताइं करेति;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे ते संघाडिबंधणसुत्ता ते दीहा ण कायव्वा, अह दीहे करेति तो मासलहु, आणादिणो य दोसा ।

जे भिक्खू दीहाइं, कुज्जा संघाडिसुत्तगाइं तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१९३०॥

इमे दोसा –

अंछणे सम्मद्दा, पडिलेहा चेव णेगरूवाणं ।
सुत्तत्थतदुभएसु य, पलिमंथो होति दीहेसु ॥१९३१॥

अंछण णाम कड्ढणं, तत्थ सम्मद्दा णाम पडिलेहणदोसो अणेगरूवधुणणदोसो य भवति, मूढेसु उम्मोहेंतस्स वलेंतस्स य सुत्तत्थपलिमंथो ॥१९३१॥

जम्हा एते दोसा तम्हा इम पमाणं –

चतुरंगुलप्पमाणं, तम्हा संघाडिसुत्तगं कुज्जा ।
जहण्णेण तिण्णि बंधा, उक्कोसेणं तु छब्भणिता ॥१९३२॥

चतुरंगुलप्पमाणा कायव्वा, छब्बंधा दोसु विदिसासु ॥१९३२॥

तेसिं मूले इमेरिसो पडिबधो –

सउणग-पाय-सरिच्छा, तु पासगा दोण्णि अंतो मज्झेगो ।
तज्जातेण गहेज्जा, मोत्तूण य होति पडिलेहा ॥१९३३॥

सउणगो पक्खी, तस्स जारिसो तिप्फडो पातो भवति तारिसो कायव्वो । तज्जाएण उण्णियं उण्णिएण, खोमियं खोमिएण । जया पडिलेहेति तता ते बंधे मोत्तूण पडिलेहेइ ॥१९३३॥

बितिय पद वुड्ढुमुड्ढोरगे य गेलण्ण विसमवत्थे य ।
एतेहिं कारणेहिं, दीहे वि हु सुत्तए कुज्जा ॥१९३४॥

वुड्ढो ते दीहे बंधिउंन सक्केइ पूर्ववत् ॥१९३४॥

जे भिक्खू पिउमंद-पलासयं वा पडोल-पलासयं वा बिल्ल-पलासयं वा
सीतोदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा संफाणिय संफाणिय
आहारेति; आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

पिचुमंदो लिंबो, पलास पत्तं, "सफाणिय" ति धोविउं ।

अहवा – "संफोडिउ" मेलितुमित्यर्थः ।

आहारमणाहारस्स मग्गणा णि (य) म सा कता होति ।
निंबपडोलादीहि य, दिय-राओ चउक्कभयणाओ ॥१९३५॥

को आहारो, को वा अणाहारो, एतेहिं लिंबपडोलाइएहिं मग्गणा कता भवति, आहार-अणाहारे य दियराइं चउभंगो कायव्वो। दिया गहितं दिया भुत्तं, एव चउभंगो ॥१९३५॥

जो हट्ठस्साहारो, चउव्विधो परिगासियं तं तु।
णिंबपलोलादीयं, सति लाभे जं च परिभुंजति ॥१९३६॥

हट्ठो णिरोगो णिव्वाधितो समत्थो, तस्स जो 'आहारो असणाइ-चउव्विहो तं परियासिउं जो भुजति। चउभगेण तस्स पच्छित्तं। लिंबपडोलाइयं च जं सति लाभे परियासियं भुजति ॥१९३६॥

चउभंगे तस्स य पच्छित्तं इमं –

चतुभंगे चतुगुरुगा, आहारेतरे य होंति चतुलहुगा।
सुत्तं पुण तद्दिवसं, जो धुवति अचेतणा पलासे ॥१९३७॥

आहारे परियासिते चउसु वि भगेसु चउगुरुगं, 'इतरे' अणाहारिमे, चउसु वि भगेसु चउलहु इमं पुण सुत्तं जो तद्देवसियं अचित्तं धुविउं भुजति तस्स भवति ॥१९३७॥

अणाहारिमं परियासिय पडुच्च भण्णति –

भयणपदाण चतुण्हं, अण्णतराएण जो तु आहारे।
णिंब पडोलादीयं, सो पावति आणमादीणि ॥१९३८॥

चउरो भगा भयणा पदा, तेहिं जो आहारेति तस्स आणादि दोसा ॥१९३८॥

संफाणं ति सुत्तपदं, तस्सिमा वक्खा –

सीतेण व उसिणेण व, वियडेणं धोवणा तु संफाणि।
अहवा जायं धोवति, संफाहो उण णेगाहं ॥१९३९॥

णेगाहा णेगाह, अणेगदिवसपिंडिताणि धोवति ॥१९३९॥

इमा विराहणा –

छट्ठवत-विराधणता, पाणादी तक्कणायि संमुच्छे।
तद्देवसिते वि अणट्ठा तण्णिस्सितघात भुंजंते ॥१९४०॥

छट्ठु रातीभोयणवयं, त विराहिज्जति, मच्छियातिपाणा तत्थ निलेंति, ते गिहकोइलियातिणा तक्किज्जंति। तेसु वा पिंडिएसु कुंथुमाति समुच्छंति, आदिशब्दः तर्कणादिदोष प्रतिपादक, यथा गवादीन् आह्मणान् परिभोजयेत्। एते परिवासते दोसा।

इमे "तद्देवसिते" तद्देवसिते वि लिंबपत्ताति अणट्ठा धेत्तु धोविउं भुंजतस्स तण्णिसियपाणिघातो भवति, धोवतस्स य प्लावणदोसो, अतो तद्देवसियं पि ण कप्पति भुजिउं ॥१९४०॥

कारणा कप्पति –

वितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे य दुल्लभे दव्वे।
तद्दिवसं जतणाए, वीयं गीयत्थ संविग्गे ॥१९४१॥

गिलाणकारणे वेज्जुवदेसेण संफाणे, दुल्लभदव्वं वा अणेगदिवसे संफाणेति। तद्दिवसियं पुण परसंफाणियं गेण्हति। असति अप्पणा वि संफाणेति, तद्दिवसियम्मि अलभंते वितियमिति आगाढे पओयणे गीतत्थो संविग्गे [1]सविगरणं पि करेज्ज ॥१९४१॥

तं पुण पित्तादिरोगाणं पसमणट्ठा इमं गेण्हे –

पउमप्पल मातुलिंगे, एरंडे चेव णिंबपत्ते य।
वेज्जुवदेसे गहणं, गीतत्थे विकरणं कुज्जा ॥१९४२॥

पित्तुदए य पउमुप्पला, सण्णिवाए माउलिंगं, वाते एरंडो, सिंभे णिंबपत्ता।
"[2]तद्दिवसं जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या – "वेज्जुवएसे गहणंति"।
"[3]बितियं संविग्ग" त्ति अस्य व्याख्या – "गीयत्थे विकरणं कुज्जा" ॥१९४२॥

एतदेवार्थं स्फुटतरं करोति –

संफाणितस्स गहणं, असती घेत्तूण अप्पणा धोवे।
तद्दिवसिगि लंभासति, णेगा विणिसा तु संफाणे ॥१९४३॥

तद्देवसियस्स अलाभे अणेगदिवसे वि धरेति ॥१९४३॥

जे भिक्खू पाडिहारियं पायपुंछणं जाइत्ता "तामेव रयणीं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

प्रतीपं हरणं प्रातिहार्यं, तं अज्ज अमुयवेलाए रातो वा आणीहामि त्ति सुए कल्ले आणेति तस्स मासलहुं आणातिया य दोसा।

जे भिक्खू पाडिहारियं पायपुंछणं जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अर्थः पूर्ववत् –

पाउंछणगं दुविधं, बितिओद्देसम्मि वण्णितं पुव्वं।
तं पाडिहारियं तू, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ॥१९४४॥

उस्सग्गियं अववातियं च पुव्वं बितिओद्देसे सभेयं वण्णियं। तं जो पाडिहारियं गेण्हति, तस्स आणादिया दोसा ॥१९४४॥

इमे पाडिहारियदोसा –

णट्ठे हित विस्सरिते, अणप्पिणंतम्मि होइ वोच्छेओ।
पच्छाकम्म पवहणं, धुवावणं वा तयट्ठस्स ॥१९४५॥

---

१ सधिकरणं-संविगरणं पा०। २ गा० १९४१। ३ गा० १९४१।

भिक्खाइ अडंतस्स पडियं णट्ठं, तेणगेण हरियं, सज्झायाति-भूमीगयस्स कतो विस्सरियं, एतेहिं कारणेहिं अणप्पिणंतस्स तदण्णदव्वस्स साहुस्स वा वोच्छेओ हवेज्ज, गिहत्थो वा अण्णं पाउंछणं करेज्ज, पच्छाकम्मं वा ठविय ज अच्छति पवहणं करेज्ज। तस्स घुवावणं दवावणं तदट्ठस्स पादपुछणस्स अण्णट्ठं वा मुल्लं दवावेज्ज तम्हा पाडिहारिय ण गेण्हेज्जा ॥१९४५॥

उव्वत्ताए पुव्वं, गहणमलंभे उ होइ पडिहारी।
तं पि य ण छिण्णकालं, दोसा ते चेव छिण्णम्मि ॥१९४६॥

जं पाडिहारियं गिण्हेज्जं तं उव्वत्ता गहणं पुव्व तारिसं घेत्तव्वं, तारिसस्स अलभे पाडिहारियं अज्जं वा कल्ले वा छिण्णकाल ण करेति। गेण्हंतेण भाणियव्वं — कता वि ' कए कज्जे आणेहामि। दोसा छिण्णम्मि ते चेव अज्ज सुए वा अप्पेहामि त्ति। छिण्णकाले कताति वाघातो हवेज्ज ततो अणप्पिणतो माया मोसं अदत्तं भवति ॥१९४६॥

सो साहू इमेहिं कारणेहिं पाडिहारियं गेण्हति —

णट्ठे हित विस्सरिते, झामिय वूढे तहेय परिजुण्णे।
असती दुल्लभपडिसेहओ य गहणं पडिहारिए चउहा ॥१९४७॥

झामित दड्ढं, वूढं णंतिउत्तरणेण, कालेण वा खुत्थं परिजुण्णं, असति पाडिहारियं ण लब्भति, दुल्लभे वा जाव लब्भति, पडिणीएण वा पडिसेहितो इमं चउव्विहं पाडिहारियं गेण्हति —

उस्सग्गुस्सग्गियं। उस्सगिय-अववाइयं।

अववाइयं, उस्सग्गियं। अववायाववातियं ॥१९४७॥

अणाभोगेण कते छिण्णकाले, अलब्भते वा छिण्णकाले कते।

दोण्ह वि सुत्ताण विवच्चासकरणे जहा गाहा —

तं पाडिहारियं पायपुंछणं गिण्हिऊण जे भिक्खू।
वोच्चत्थमप्पिणादी, सो पावति आणमादीणि ॥१९४८॥

तं पाडिहारियं छिण्णकालं गेण्हित्तु तम्मि चेव काले अप्पेयव्वं ॥१९४८॥

विवरीयमप्पिणंतस्स इमे दोसा —

मायामोसमदत्तं, अपच्चओ खिसणा उवालंभो।
वोच्छेद-पदोसादी, वोच्चत्थं अप्पिणंतस्स ॥१९४९॥

पूर्ववत्।

बितियपदे वाघातो, होज्जा पहुणो वि अप्पणो वा वि।
एतेहिं कारणेहिं, वोच्चत्थं अप्पिणिज्जाहि ॥१९५०॥

पभुणो णिव्विसयाती वाघायकारणा होज ॥१९५०॥

अप्पणो इमे –

गेलण्ण वास महिता, पडिणीए रायसंभम-भए वा ।
अह समणे वाघातो, णिव्विसगादी य इतरम्मि ॥१६५१॥

गिलाणो जातो, वास महिता वा पडति, पडिणीओ वा अंतरे, रायदुट्ठ बोहियादिभय वा, अग्गिमातिसभम वा जातं, एते समणे वाघातकरणा ॥१६५१॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं पादपुंछणं जाइत्ता "तामेव रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं पादपुंछणं जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणिति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१८॥

सागारिओ सेज्जातरो ।

जे भिक्खू पाडिहारियं दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "तामेवं रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "तामेव रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

सूत्रार्थः पूर्ववत् ।

पडिहारिए जो तु गमो, णियमा सागारियम्मि सो चेव ।
दंडगमादीसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१६५२॥

पाउंछणगं दुविधं, वितिओद्देसम्मि वण्णितं पुव्विं ।
सागारिय-संतियं तं, गेण्हंताणादिणो दोसा ॥१६५३॥

णट्ठे हिय विस्सरिए, अणप्पिणंते य होइ वोच्छेओ।
पच्छाकम्म पवहणं, धुवावणं वा तयट्ठस्स ॥१९५४॥

उव्वत्ताए पुव्वं, गहण अलंभे य होज्ज पडिहारि।
तं पिय ण छिण्णकालं, ते च्चिय दोसा भवे छिण्णे ॥१९५५॥

णट्ठे हित विस्सरिते, झामिय वूढे तहेव परिजुण्णे।
असती दुल्लभपडिसेवतो य गहणं सागारिए चउहा ॥१९५६॥

सागारिय-संतियं तं, पायपुंछणं गेण्हिऊण जे भिक्खू।
वोच्चत्थमप्पिणेइ, सो पावति आणमादीणि ॥१९५७॥

मायामोसमदत्तं, अप्पच्चओ खिंसणा उवालंभो।
वोच्छेद-पदोसादी, वोच्चत्थं अप्पिणंतस्स ॥१९५८॥

गेलण्ण वास महिया, पडिणीए रायसंभम-भए वा।
अह समणे वाघातो, णिव्विसगादी य इयरम्मि ॥१९५९॥

भाष्य-ग्रन्थः अविशेषेण पूर्ववत् ॥१९५४–१९५९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता दोच्चं पि अणणुन्नविय अहिट्ठेइ, अहिट्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३

सेज्जा एव संथारओ सेज्जा-संथारओ।

अहवा – सेज्जा सव्वंगिया, संथारओ अड्ढाइज्ज हत्थो।

अहवा – सेज्जा वसही, संथारओ पुण परिसाडिमेतरो वा। सामिणो अप्पेउ अणणुण्णवेत्ता पुणो अधिट्ठेति परिभुंजति तस्स मासलहुं।

सेज्जा-संथारदुगं, णिज्जाजेतुं गतागते संते।
दोच्चमणणुण्णवेत्ता, तमधिट्ठंतम्मि आणादी ॥१९६०॥

परिसाडि अपरिसाडी णिज्जायमाणा अप्पेउं गता अवसउणेहिं पच्चागता। सो य संथारओ तहेव अच्छति। त दोच्चं अणणुण्णवेत्ता पुणो अधिट्ठेति परिभुंजति, मासलहुं आणाइया य दोसा ॥१९६०॥

मायामोसमदत्तं, अपच्चओ खिंसणा उवालंभो।
वोच्छेदपदोसादी, अणणुण्णातं अधिट्ठंतो ॥१९६१॥

-पूर्ववत्।

कारणे अधिट्ठेति –

बितियपदमणाभोगा, दुट्ठादी वा पुणो वि तक्कज्जं।
आसण्णकारणम्मि व अधिट्ठे अद्धाणमादिसु वा ॥१९६२॥

अणाभोगेण वा अधिट्ठेति, दुट्ठादि वा सो अधिट्ठेति, पुण ण किं चि भणाति, तेण कज्जं तक्कज्ज, संथारगसामिम्मि पविसते तक्कज्जे य उप्पण्णे अधिट्ठिते, आसण्ण तुरियं तुरिए अधिट्ठेत्ता पच्छा अणुण्णवेंति। अद्धाण पवण्णा वा ॥१९६२॥

इमं वसहीए बितियपदं –

अद्धाणे गेलण्णे, ओमऽसिवे गामाणुगामि वि-वेले ।
तेणा सावय मसगा, सीतं वा तं दुरहियासं ॥१९६३॥

अद्धाणादिएहिं कारणेहिं अणणुण्णवेंता अहिट्ठेंति, वहिं रुक्खमूलातिसु ण वसति ॥१९६३॥

तेणातिएहि कारणेहिं जं पुण संथारयं वसही वा अणणुण्णातं अधिट्ठेति त इमेसिं –

सण्णी सण्णाता वा, अहभद्दा ऽणुग्गहो त्ति णे मण्णे ।
सुण्णे य जहा गेहे, अणणुण्णवितुं तदा ऽधिट्ठे ॥१९६४॥

सण्णी सावओ, सयणा वा, अहाभद्दओ वा अणुग्गहं भणति जो तस्स संथारगो वा वसही वा अधिट्ठिज्जति ॥१९६४॥

जे भिक्खू सण-कप्पासओ वा उण्ण-कप्पासओ वा पोंड-कप्पासओ वा अमिल-कप्पासओ वा दीहसुत्ताइं करेति, करेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२४॥

दीर्घ-सूत्रं करोति, दीहसुत्तं णाम कत्तति, तस्स मासलहुं ।

पोंडमयं वागमयं, वालमयं वा वि दीह सुत्तं तु ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावति आणमादीणि ॥१९६५॥

सुत्तत्थे पलिमंथो, उड्डाहो झुसिरदोस सम्मद्दो ।
हत्थोवघाय संचय, पसंग आदाण-गमणं च ॥१९६६॥

तं करेंतस्स सुत्तत्थपरिहाणी, गारत्थिएहिं दिट्ठे गिहिकम्म ति उड्डाहो, झुसिरं च तं, तम्मि झुसिरे दोसा भवंति, मसगादि-संपातिमा सवज्झंति, पिंजिज्जंते वाउकायवधो, संम्मद्दोसो य।

अवि य भणियं –

"[1]जीवेणं भंते ! सता समितं एयति वेयति चलति घट्टति फदति ताव णं बंधति" – संजमविराहणा, हत्थोवघातो आयविराहणा, संचए पसंगो ।

अहवा – अतिपसगो तणवुणणादियं पि करेज्ज, सेहस्स य उण्णिक्खिउकामस्स आयाणं भवति, आदाणे य गमणं भवति ॥१९६६॥

भवे कारणं करेज्जा वि –

अद्धाण णिग्गतादी, झामिय वूढे तहेव परिजुण्णे ।
दुब्बलवत्थे असती, दीहे वि हु सुत्तए कुज्जा ॥१९६७॥

---

१ भग० श० ३ उ० ३। किन्तु तत्र "ताव णं बधति" इत्यश. नोपलभ्यते ।

"अद्धाणे" त्ति दारं ।

चोदगाह् – अद्धाणं किं दार-गाहा गम्मति ?

आयरियाह् - सुणेहि –

उद्दद्दरे सुभिक्खे, अद्धाण पवज्जणा तु दप्पेणं ।
लहुया पुण सुद्धपदे, जं वा आवज्जती तत्थ ॥१९६८॥

दुविधा दरा वण्णदरा य पोट्टदरा य, ते उद्धं पुरेंति जत्थ तं उद्दद्दरं । जत्थ पुण सुलभ भिक्खं तं सुभिक्ख ।

उद्दद्दरगहणातो णणु सुभिक्ख गहिय ?

आयरिय आह् – णो ।

कुत. ? चउभंगसंभवात् ।

उद्दद्दरं, सुभिक्खं । णो उद्दद्दरं, सुभिक्खं ।

उद्दद्दरं, णो सुभिक्खं । णो उद्दद्दर, णो सुभिक्खं ।

पढम-तइयभगेसु जो अद्धाण दप्पेण पडिवज्जति तस्स चउलहुयं। सुद्धपदे अह् आय-संजमविराहणं किं चि आवज्जति तो तण्णिप्फण्णं भवति ॥१९६८॥

कारणेण गच्छेज्जा –

णाणट्ठ दंसणट्ठा, चरित्तट्ठा एवमादि गंतव्वं ।
उवगरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण जयणाए ॥१९६९॥

णाणादि-कारणेहिं जता गम्मति तता अद्धाणोवकरणोग्गाहितेण पडिलेहितेण सत्थेण सुद्धेण जयणाए गंतव्व । एसा गाहा उवरिं सवित्थरा वण्णिज्जेहिति ॥१९६९॥

सत्थे वि वच्चमाणे, अस्संजत-संजते तदुभए य ।
मग्गंते जयणदाणं, छिण्णं पि हु कप्पती घेत्तुं ॥१९७०॥

णाणाति-कारणेहिं गम्ममाणे अतरा तेणा भवति, ते य चउव्विहा –

अस्संजय-पंता पढमो भगो, सजय-पंता बितियभंगो ।

तदुभयपंता-ततिय भगो, तदुभयभद्दा चउत्थो भगो ॥१९७०॥

एतेसिं भंगाण फुडीकरणत्थं इमा गाहा –

संजत-भद्दा गिहि-भद्दगा य पंतोभए उभय-भद्दा ।
तेणा होंति चउद्धा, विगिंचणा दोसु तु यतीणं ॥१९७१॥

सजयभद्दा णो गिहिभद्दा, णो सजयभद्दा गिहिभद्दा ।

उभयपंता, उभयभद्दा । बितिय-ततिएसु जतीण विकिंचणा भवति ॥१९७१॥